दास्तान ईमान फ़रोशों की

3

Maktabe Ashraf

अलतमश

दास्तान ईमान फ़रोशों की

तीसरा हिस्सा

सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर की हक़ीक़ी कहानियाँ औरतों और मर्दों की मारका आराइयाँ

लेखक

अलतमश

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

NEW DELHI-110002

नाम किताबः

दास्तान ईमान फ़रोशों की

(तीसरा हिस्सा)

लेखकः **अलतमश**

सफ़हातः 304

पहला एडीशनः जौलाई 2004

पेशकशः

मुहम्मद नासिर ख़ान

(प्रकाशकः)

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones: 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

Dastan Iman Faroshon ki (Part III)

Author: Altamash
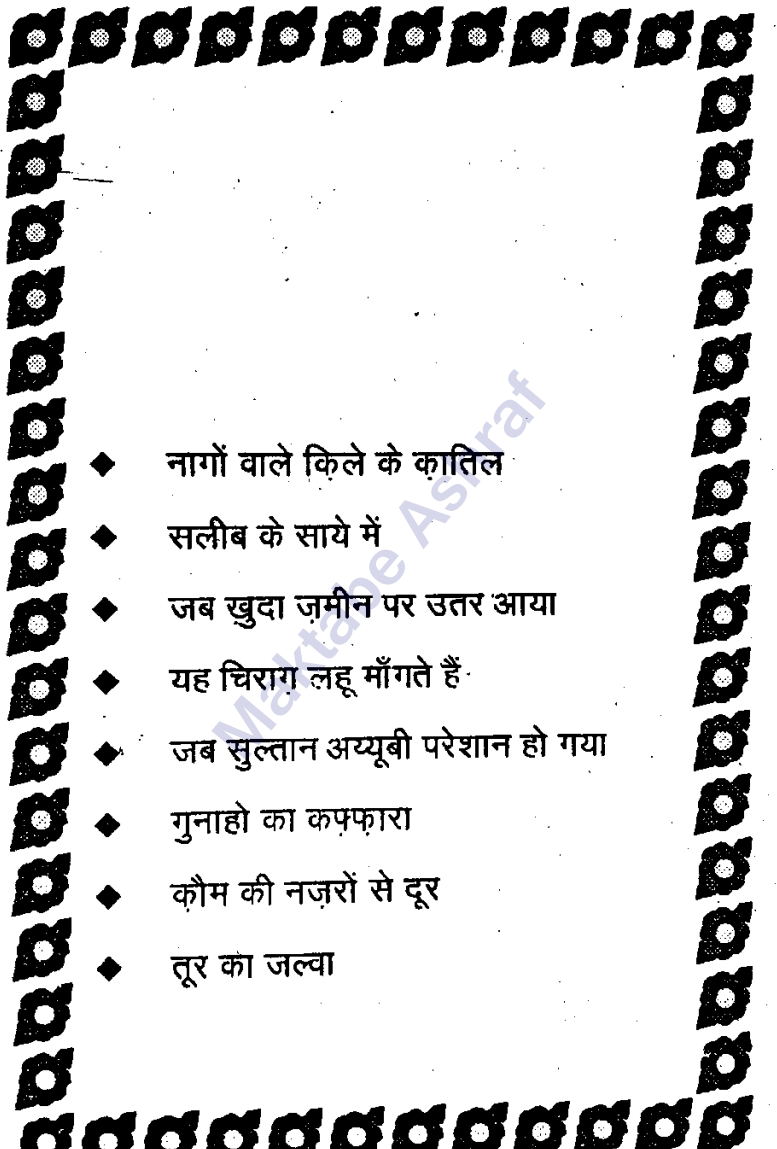
Ist Edition: **July 2004**

Pages: 304 Size: 20x30/16

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

आ़लमे इस्लाम के नौजवानों के नाम

तआरुफ़

"दास्तान ईमान फरोशों की" का तीसरा हिस्सा पेश किया जाता है।

आप इस हकीकत से बेख़बर नहीं होंगे कि हमारी उभरती हुई नस्ल का किरदार मजरूह हो चुका है। इस कौमी अल्मिया के अस्बाब से भी आप वाकिफ़ होंगे। अगर नहीं तो हम बताते हैं। एक सबब तो यह है कि बच्चों को अपने आबाव अजदाद की रिवायात से बेख़बर रखा जा रहा है। उन्हें मालूम नहीं कि उनकी तारीख़ शुजाअत के कारनामों से भरपूर है। उनकी निसाबी किताबों में भी उन रिवायात का ज़िक्र नहीं मिलता।

दूसरा सबब यह है कि हमारे बच्चे और नौजवान ऐसी कहानियों के आदी हो गये हैं जिन में तफ़रीही और लज़ीज़ मवाद ज़्यादा होता है और जिनमें सन्सनी, सस्पेंस, हंगामा आराई और जिन्सीयात होता है और जो जज़बात में हलचल बपा कर देती है। यह दर असल इन्सानी फ़ितरत का मुतालिबा है जिसे पूरा करना ज़रूरी है लेकिन बड़ी एहतियात की ज़रूरत है।

हमारे दुश्मन ने जो यहूदी भी हैं और दूसरे भी, इन्सान की उस फ़ितरी ज़रूरत को इस्लाम दुश्मन मकासिद और मुसलमान दुश्मन अज़ाइम की तकमील के लिए इस्तेमाल किया है। यह जो फहश, उरियां, मारधाड़ और जराईम से भरपूर कहानियां, रिसाले और फ़िल्में मकबूल हुई हैं, उनका ख़ालिक़ हमारा दुश्मन है और उन्हें हमारे कौम में फैलाने का काम दुश्मन ही कर रहा है। यह ज़हरीला अदब हमारे हां इस हद तक मकबूल हो गया है कि ग़ैर इस्लामी नज़रियात की हामिल कहानियां भी मुसलमानों ने दिल व जान से कबूल कर ली हैं। दुनिया के ज़बरदस्त नाशिरों, रिसालों के मालिकों और कलमकारों ने देखा कि इन कहानियों से तो दौलत कमाई जा सकती है, चुनांचे उन्होंने भी कौमी सूद व ज़्यां को नज़र अन्दाज़ करके फहाशी को ज़रिआ बना लिया है।

इसमें किसी शक व शूबहा की गुंजाइश नहीं रही कि इसाई और यहूदी ने और हमारे मुफ़ाद परस्त नाशिरों ने हमारी नस्ल की किरदार कुशी के लिए उन अख़्लाकसोज़ कहानियों को ज़रिया बना रखा है।

हम ने अपनी उभरती हुई नस्ल के इन्फ़िरादी और कौमी किरदार के तहफ़्फ़ुज़ और नशुअ नुमा के लिए "हिकायत" में सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर की सच्ची कहानियों का सिलसिला शुरू कर दिया था। इस सिलसिले में हम दो हिस्से किताबी सूरत में पेश कर चुके हैं। तीसरा हिस्सा पेश ख़िदमत है। इन कहानियों में आप को वह तमाम लवाज़मात मिलेंगे जो आप के और आपके बच्चों के फ़ितरी मुतालिबात की तस्कीन करेंगे। इनमें सन्सनी

भी है सस्पेंस भी और यह कहानियां आप को कदम कदम पर चौंकायेंगी मगर इनकी बुनियादी खूबी यह है कि यह उस क़ौमी जज़्बे और ईमान को ज़िन्दा व बेदार करेंगी जिसे हमारा दुश्मन फहश और अख़्लाक सोज़ कहानियों के ज़रिए कमज़ोर बल्कि मुर्दा करने की कोशिश कर रहा है।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने एक जंग मैदान में लड़ी जिसे सलीबी जंगों का सिलसिला कहा जाता है। दूसरी जंग ज़मीन दोज़ मुहाज़ पर लड़नी पड़ी। यह जासूसी और कमाण्डो फोर्स की जंग थी। यह मुख़्तलिफ औकात की तफसील और ड्रामाई वारदातें हैं, जिन में आप को सुल्तान अय्यूबी के और सलीबियों के जासूसों, सुराग़रसानों तख़रीबकारों, गोरेलों और कमाण्डो असकरियों के सन्सनी खेज़, वलवला अंगेज़ और चौंका देने वाले तसादुम, ज़मीन दोज़ तआकुब और फरार मिलेंगे।

सलीबियों ने मुसलमानों के हां तख़रीबकारी, जासूसी और किरदार कुशी के लिए ग़ैर मामूली तौर पर हसीन और चालाक लड़कियां इस्तेमाल की थीं, इसलिए यह औरत और ईमान की मार्का आराईयां बन गयीं।

अगर आप सच्चे दिल से फहश और मुख़र्बे अख़्लाक कहानियों से अपने बच्चों को महफूज़ करना चाहते हैं तो उन्हें "दास्तान ईमान फरोशों की" के सिलसिले की कहानियां पढ़ने को दें।

इनायत उल्लाह
अलतमश

नागों वाले क़िले के क़ातिल

दमिश्क़ में जब सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी दाख़िल हुआ था तो उसके साथ सात सौ सवार थे। तमाम मोअर्रिख़ीन ने यही तादाद लिखी है लेकिन तारीख़ सुल्तान अय्यूबी के उन जांबाजों से बेख़बर है जिन में से कोई ताजिरों के बहरूप में, कोई बे ज़रर मुसाफ़िरों के भेस में और कोई शामी फ़ौज के मामूली सिपाहियों के लिबास में एक-एक भी, दो-दो और चार-चार की टोलियों में दमिश्क़ में दाख़िल हुए थे। उन में ज़्यादा तर सुल्तान अय्यूबी के ख़ामोश हमले से पहले ही यहां आ गये थे और कुछ उस वक़्त दाख़िल हुए थे जब दमिश्क़ के दरवाज़े सुल्तान अय्यूबी के लिए खुल गये थे। यह जासूस का दस्ता था जिन्हें जांबाज़ जासूस कहा जाता था क्योंकि यह हर क़िस्म की लड़ाई, हर हथियार के इस्तेमाल, हर तरह की तबाहकारी के माहिर थे और दिमाग़ी लिहाज़ से मुस्तइद और ज़हीन। उनकी सबसे बड़ी ख़ूबी यह थी वह जान की परवाह नहीं करते थे। ऐसे-ऐसे ख़तरे मोल लेते थे जिन के तसव्वुर से ही आम सिपाही बिदक जाते थे। ऐसा जज़्बा सिर्फ़ ट्रेनिंग से पैदा नहीं होता। उसके लिए ऐसे जवान मुन्तख़ब किये जाते थे जिन के दिलों में अपने मज़हब का इश्क़ और दुश्मन की नफ़रत भी होती थी। यह जांबाज़ जुनूनी क़िस्म के मुसलमान होते थे। सुल्तान अय्यूबी ने ऐसे जांबाज़ों के कई दस्ते तैय्यार कर रखे थे।

सुल्तान अय्यूबी जब सात सौ सवारों के साथ दमिश्क़ को रवाना हुआ था तो उसने मुन्तख़ब लड़का जासूस का एक दस्ता ख़ुसूसी हिदायात के साथ दमिश्क़ को रवाना कर दिया था। उनमें एक हिदायत यह थी कि अगर दमिश्क़ की फ़ौज मुक़ाबले पर उतर आये तो यह जासूस शहर के अन्दर अपनी समझ और ज़रूरत के मुताबिक़ तख़रीबकारी करें, और वह दरवाज़े खोलने की भी कोशिश करें। उनमें ऐसे भी थे जिन्हें शहरियों में दहशत, भगदड़, अफ़रा-तफ़री और अफ़वाहें फैलाने की ट्रेनिंग दी गयी थी। उन तमाम जांबाज़ों की तादाद दो और तीन सौ के दर्मियान थी।

उस वक़्त के वक़ाए निगारों ने सही तादाद नहीं लिखी। सिर्फ़ यह लिखा है कि सुल्तान अय्यूबी की आमद के वक़्त दमिश्क़ में दो तीन सौ जासूस और तबाहकार मौजूद थे। एक फ़्रांसिसी वक़ाए निगार ने सलीबी जंगों के हालात और वाक़िआत क़लम बन्द करते हुए सुल्तान अय्यूबी के लड़का जासूसों के मुतअल्लिक़ बहुत कुछ लिखा है। उसने जांबाज़ों के इस्लामी जज़्बे को मज़हबी जुनून भी कहा है और यह भी लिखा है कि यह जासूस नफ़्सियाती मरीज़ थे। उस फ़्रांसीसी ने तो मज़हबी जुनून की तौहीन की है कि उसे नफ़्सियाती मर्ज़ कहा है लेकिन नफ़्सियाती कैफ़ियत ही थी। मुसलमान साहबे ईमान सिर्फ़ उस सूरत में बनता है

जब मज़हब उसकी नफ़्सियात का जुज़ बन जाता है।

इन जांबाज़ों को जासूसी और तबाहकारी की ट्रेनिंग अली बिन सुफ़ियान और उसके दो नायबीन हसन बिन अब्दुल्लाह और ज़ाहदान ने दी थी। और माअरका आराई की ट्रेनिंग तजुर्बाकार फ़ौजियों के हाथों मिली थीं। अब जब कि सुल्तान अय्यूबी दमिश्क मे था अली बिन सुफ़ियान काहिरा में था। वहां के अन्दरूनी हालात पूरी तरह नहीं संभले थे। सुल्तान अय्यूबी की ग़ैर हाज़िरी, दमिश्क पर उसके कब्ज़े और ख़िलाफ़त की माज़ूली की सूरत में मिस्र में सलीबी तख़रीबकारी का ख़तरा बढ़ गया था। इसलिए अली बिन सुफ़ियान को वहीं रहने दिया गया था। दमिश्क में उसका एक नायब हसन बिन अब्दुल्लाह आया था।

वही जासूस जांबाज़ों के दस्ते का कमाण्डर था। दमिश्क पर सुल्तान अय्यूबी ने कब्ज़ा कर लिया तो वहां की बेशतर फ़ौज सालार तौफ़ीक जव्वाद की ज़ेरे कामन सुल्तान अय्यूबी से मिल गयी थी। बाक़ी फ़ौज और ख़लीफ़ा के बॉडी गार्ड दस्ते, ख़लीफ़ा और उसके हवारी उमरा के साथ दमिश्क से भाग गये थे। तवक्को थी कि सुल्तान अय्यूबी उन्हें गिरफ़्तार करने के लिए फ़ौज उनके तआकुब में भेजेगा लेकिन उसने ऐसी कोई हरकत नहीं की। दो तीन सालारों ने उसे कहा भी कि उन उमरा वग़ैरह को पकड़ना ज़रूरी है जो भाग गये हैं। वह कही इकट्ठे हो जायेंगे और इत्मिनान से सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ जंगी तैय्यारी करेंगे।

"और मैं यह भी जानता हूं कि वह सलीबियों से भी मदद मांगेगे जो उन्हें मिल जायेगी" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "लेकिन मैं अंधेरे में भी नहीं पला। पहले यह मालूम करना है कि वह गये कहां है और उनका मरकज़ कौन सा बनेगा। आप लोग परीशान ना हों मेरी आंखें और मेरे कान भागने वालों के साथ ही चले गये हैं। वह बदबख़्त इतनी जल्दी हमला करने के लिए तैय्यार नहीं हो सकते। मैं सिर्फ़ यह देख रहा हूं कि सलीबी क्या करेंगे। वह मिस्र पर भी यल्ग़ार कर सकते हैं। वह शाम पर भी हम्ला कर सकते हैं। वह शायद इस इन्तेज़ार में हैं कि मैं क्या करूंगा। हो सकता है वह मेरी चाल के बाद अपनी चाल चाहते हों। आप फ़ौज को मेरी बताई हुई तन्ज़ीम में लाकर उनकी तरबियत और जंगी मश्कें जारी रखें।

❖

सुल्तान अय्यूबी ने जिन्हें अपनी आंखें और अपने कान कहा था वह यही जासूस थे जो मिस्र से यहां आये थे। उन में कुछ ऐसे भी थे जो उन्हीं इलाकों के रहने वाले थे। जब अल्मलकुस्सालेह और उसके उमरा वुज़रा दमिश्क से भागे तो उनके साथ सुल्तान अय्यूबी के बहुत से जासूस भी चले गये थे। भागने वालों की तादाद कम नहीं थी। तमाम उमरा और वुज़रा और कई एक जागीरदारों और हाकिमों का अमला भी था, फ़ौज की भी कुछ नफ़री थी और बड़ों के ख़ुशामदी लोग भी थे, यह तितर बितर होकर भागे थे। उनके साथ जासूसों का चले जाना आसान था। यह जासूस उस मिशन पर साथ गये थे कि देखें दरूसत है और ऊसके पालने वाले उमरा क्या जवाबी कार्रवाई करेंगे और उन्हें सलीबियों की कितनी कुछ और कैसी मदद हासिल होगी। यह जासूस जो दमिश्क से बाहर गये थे हसन बिन अब्दुल्लाह के ख़ुसूसी मुन्तख़ब अफ़राद थे। वह उस सूरते हाल के सियासी पसे मंज़र को अच्छी तरह

समझते थे।

उनमें एक माजिद बिन मोहम्मद हिजाज़ी थी। खुबरू नौजवान, जिस्म निहायत मौजू और गठा हुआ और उसे खुदा ने जुबान की ऐसी चाशनी दी थी जिस में तिलिस्माती असर था। तक़रीबन हर जासूस की शकल व सूरत और औसाफ़ ऐसे ही थे लेकिन माजिद बिन मोहम्मद उनमें सबसे बरतर लगता था। उन जासूसों की इतनी अच्छी सेहत का राज़ गालिबन यह था कि उन्हें किसी क़िस्म के नशे की आदत नहीं थी और वह अय्याशी को भी पसन्द नहीं करते थे। उनके अख़लाक़ मे जो पुख़्तगी थी उसने उन में फ़ौलाद जैसी कुव्वते इरादी पैदा कर रखी थी। उनका कौल व फ़ेल मज़हब का पाबन्द था। माजिद बिन मुहम्मद हिजाज़ी अपने साथियों की तरह उस फ़ौलादी किरदार का नमूना था और रूह की जो पाकिज़गी थी उसने चेहरे को हसीन बना रखा था। दमिश्क़ से भागा जा रहा था। उसके नीचे अरब की आला नस्ल का घोड़ा था। उसके पास तलवार थी और घोड़े की ज़ीन के साथ चमकती हुई अन्नी वाली बरछी थी।

वह वीराने में अकेला जा रहा था। उसने हलब की सिम्त जाते हुए बहुत से लोगों को देखा था। उसे कोई एक भी ऐसा नज़र नहीं आया था जिसके साथ वह जाये। वह अपने लिए कोई, हमसफ़र ढूंढ रहा था जो उसके मिशन के लिए सूद मन्द हो सके। ऐसा हमसफ़र फ़ौज का कोई आला अफ़सर हो सकता था या कोई ऐसा अमीर जिसे अस्सुआलेह का कुर्ब हासिल होता। उसकी सुरागरसां आखें अस्सुआलेह को ढूंढ रही थीं। उसने चन्द एक लोगों से पूछा भी था कि वह किस तरफ़ गया है मगर उसे अस्सुआलेह का कोई सुराग़ नहीं मिला था। उसे मालूम था कि अस्सुआलेह नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम की उम्र या उसके ख़ूबियों जैसा कोई आदमी नहीं बल्कि वह ग्यारह साल की उम्र का बच्चा है जिसे मुफ़ाद परस्त उमरा ने अपने मक़ासिद के लिए सल्तनत की गद्दी पर बिठाया है और अमलन हुक्मरान यह उमरा खुद बने हुए हैं। वह तसव्वुर में ला सकता था कि वह बच्चा अकेला नहीं जा रहा होगा। उसके साथ अमीरों वज़ीरों और दरबारियों का क़ाफ़ला होगा और उस क़ाफ़ले के साथ ज़र व जवाहरात और माल दौलत से लदे हुए ऊंट होंगे।

माजिद हिजाज़ी ने सोंचा था कि यह क़ाफ़िला उसे नज़र आ गया तो वह अल्मकुस्सालेह का मुरीद बन कर क़ाफ़िले में शामिल हो जायेगा। यह क़ामयाबी हासिल होने की सूरत में उसे अच्छी तरह मालूम था कि उसे क्या करना है और सीनों से राज़ किस तरह निकालने हैं मगर उसे अपने शिकार का कोई सुराग़ न मिला। आगे चट्टानी इलाक़ा आ गया जहां हरियाली भी थी। ज़रा सुस्ताने के लिए वह चट्टानों के अन्दर चला गया......एक जगह उसे दो घोड़े नज़र आये। उनसे ज़रा परे हरी भरी घास पर एक आदमी लेटा हुआ था और उस के साथ एक औरत थी। वह सोये हुए मालूम होते थे। वह ज़रा फ़ासिले पर रूक गया और घोड़े से उतर कर एक दरख़्त के नीचे लेट गया। एक घोड़ा हिनहिनाया तो वह आदमी उठ बैठा, लिबास से वह ऊंचे दर्जे का फ़र्द मालूम होता था। उसने माजिद हिजाज़ी को देखा तो उसे अपने पास बुलाया। माजिद उसके पास चला गया और उससे हाथ मिलाया। औरत भी उठ बैठी। वह

औरत नहीं जवान लड़की थी और बहुत खूबसूरत। उसके गले का हार बता रहा था कि यह लोग मामूली हैसियत के नहीं। उस आदमी की उम्र चालिस के लगभग थी और लड़की पचीस साल से कम लगती थी। माजिद ने उन दोनों को एक नज़र में भांप लिया।

"तुम कौन हो?" उस आदमी ने माजिद से पूछा– "दमिश्क से आये हो?"

"मैं दमिश्क से ही आया हूं।" माजिद ने जवाब दिया– "लेकिन मैं यह नहीं बता सकता कि मैं कौन हूं। आप कैसे सफर में हैं?"

"ग़ालिबन हम एक ही सफर के मुसाफ़िर हैं।" उस आदमी ने मुस्कुरा कर कहा– "तुम शरीफ़ आदमी मालूम होते हो।"

"क्या आप यकीन करना चाहते हैं कि मैं शरीफ़ हूं या बदमाश?" माजिद हिजाज़ी के होंठों पर मुस्कुराहट थी उस ने कहा– "जिसके साथ इतनी हसीन लड़की हो और लड़की के गले में इतना किमती हार हो और साथ माल और दौलत भी हो वह हर राही को बदमाश और डाकू समझता है। मैं डाकू नहीं हूं। आप को डाकूओं से बचा ज़रूर सकता हूं ख़्वाह मेरी जान चली जाये।" उसके दिमाग़ में अचानक एक बात आ गयी जो उस ने तीर की तरह मुंह से निकाल दी। उसने कहा– " दमिश्क से भागे हुए कुछ लोग डाकुओं का शिकार हो गयें हैं। मैं ने रास्ते में दो लाशें भी देखी हैं। यह मौका डाकुओं के लिए निहायत अच्छा है कि लोग माल व दौलत के साथ दमिश्क से भाग रहे हैं।"

लड़की का इतना दिलकश रंग उड़ गया। वह अपने आदमी के साथ लग गयी। कुछ ऐसी ही हालत आदमी की हो गयी। माजिद हिजाज़ी जान गया कि यह लोग कौन हैं और क्या हैं। उनपर खौ़फ़ व ह्रास ग़ालिब करके उसने अपनी ज़ुबान के करिश्मे दिखाने शुरू कर दिये। उसने सलाहुद्दीन अय्यूबी को बुरा भला कहा और सुल्तानुल्मुल्क सालेह की मदह सराइयां की जैसे वह ज़मीन व आसमान का वाहिद बरगुज़िदा इन्सान हो। माजिद ने उस पर वहशत का ग़ल्बा और ज़्याद पुख़्ता करने के लिए कहा–"सलाहुद्दीन अय्यूबी ने दमिश्क से भागे हुए आप जैसे लोगों को लूटने और उनसे जवान बेटियां और बीबियां छीनने के लिए अपनी फौज के दस्ते इधर भेज दिये हैं.. यह लड़की आपकी क्या लगती है?"

"यह मेरी बीवी है।"

"और दमिश्क में आप कितनी बीवियां छोड़ आये हैं? " माजिद ने पूछा–

"चार"

"ख़ुदा करे यह पांचवीं ख़ैरियत से आपके साथ मंज़िल पर पहुंच जायें।" माजिद ने कहा–

"अय्यूबी की फौज कितनी दूर है?" उस आदमी ने पूछा– "तुम ने सिपाहियों को लूट मार करते हुए देखा है?"

"हां देखा है।" माजिद हिजाज़ी ने कहा– "अगर मैं आप से कहूं कि मैं भी सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज का सिपाही हूं तो आप क्या करेंगे?"

वह कांपने लगा, मुस्कुराया भी मगर मुस्कुराहट ग़ायब हो गयी। उसने कहा– "मैं तुम्हे

कुछ दे दूंगा और तुम से इल्तिजा करूंगा कि मुझे कंगाल न करो, और मैं तुम से यह इल्तिजा करूंगा कि इस बेचारी को मेरे साथ रहने देना।"

माजिद हिजाज़ी ने कहकहा लगाय और कहा– "दौलत और औरत से ज़्यादा मुहब्बत इन्सान को बुजदिल और कमज़ोर बना देती है। अगर मुझे कोई कहे जो कुछ पास है वह मेरे हवाले कर दो मैं तलवार खेंच कर उसे कहूं कि पहले मुझे कत्ल करो, फिर मेरी लाश से तुम्हे जो कुछ मिलेगा वह ले जाना.....मोहतरम! मुझे यह बतायें कि आप कौन हैं?" दमिश्क में आप क्या थे और अब आप कहां जा रहे हैं?. अगर आप ने सच बता दिया तो हो सकता है आप को मुझ से ज़ियादा मुख़लिस और जांबाज़ न मिले। मालूम होता है हमारी मंज़िल एक है। मैं अय्यूबी की फौज का सिपाही ज़रूर हूं लेकिन भगौड़ा हूं।"

उस आदमी ने अपने मुतअल्लिक सब कुछ बता दिया। वह दमिश्क के मुज़ाफ़ाती इलाके का जागीरदार था। उसे सरकारी दरबार में ऐसी सरकारी हैसियत हासिल थी कि सल्तनत की शहरी और जंगी पालिसियों में भी उसका अमल दख़ल था सुल्तान के बॉडी गार्ड दस्ते के ज़्यादा तर सिपाही उसी के दीये हुए थे। दूसरे लफ़्ज़ों में यह कह लें कि सल्तनत के बालाई हिस्से का अहम क़िस्म का दरबारी था। उसे घर से निकलते ज़रा देर हो गयी थी। अस्सुआलेह ने अपने तमाम हाशिया बरदारों से कहा था कि हलब पहुंच जायें। चुनांचे यह जागीरदार हलब जा रहा था। उसने यह भी बता दिया कि वह सल्तनत से ज़र व ज़वारात साथ ले जा रहा है। चारों बिवियां पीछे छोड़ आया है। यह चूंकि सबसे छोटी और ख़ूबसूरत थी इसलिए उसे साथ ले आया है। उसने बड़े अफ़सोस के साथ ज़िक्र किया कि उस के मुहाफ़िज़ और तमाम मुलाज़िम दमिश्क में ही उसका साथ छोड़ गये थे। उन्होंने उसका घर लूट लिया होगा। यह उस की अपनी हिम्मत थी कि वह सल्तनत से अपना बेशकीमत ख़ज़ाना लेकर निकल आया। वह अब अस्सुआलेह के पास जा रहा था।

माजिद हिजाज़ी को उस की दास्तान सुन कर ख़ुशी हुई। यह जागीरदार उसके काम का आदमी था। उसके साथ वह हलब के दरबार तक पहुंच सकता था। उसने अपने मुतअल्लिक बताया कि वह उस सवार दस्ते का कमाण्डर था जो सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने साथ दमिश्क लाया था लेकिन वह अस्सुआलेह का मुरीद है। उस लिए वह इसके ख़िलाफ़ हाथ नहीं उठा सकता। इस अकीदत मन्दी का नतीजा है कि वह अय्यूबी की फौज से भाग आया है और सुल्तान के दरबार में जा रहा है। अगर उसने पसन्द किया तो उसके मुहाफ़िज़ दस्ते में शामिल हो जायेगा।

"अगर मैं अभी से तुम्हे अपना मुहाफ़िज़ बना लूं तो तुम्हारी उजरत की शर्त क्या होगी?" उसने माजिद हिजाज़ी से पूछा– "मैं जैसे दमिश्क में बादशाह था उसी तरह वहां भी बादशाह रहूंगा जहां जा रहा हूं। मेरे मुहाफ़िज़ बन कर तुम्हे अफ़सोस नहीं होगा।"

"अगर आप मुझे अपना बनायेंगे तो आप को फ़ौजी मुशीर की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।" माजिद हिजाज़ी ने उसे कहा – "मेरी उजरत आप मेरी क़ाबिलियत देखकर ख़ुद ही मुकर्रर कर देंगे। मैं अभी कुछ नहीं बताऊंगा।"

माजिद हिजाज़ी उसका बॉडीगार्ड बन गया। यूं कहिए कि एक दरबारी जागीरदार के साथ सुल्तान अय्यूबी का एक जासूस लग गया। उस जागीरदार के पास बेअन्दाज़ा ज़रो जवाहरात थे जो उसने ऐसे सामान में छुपा रखे थे जो बज़ाहिर मामूली सा था। उसे फ़ौरी तौर पर एक मुहाफ़िज़ की ज़रूरत थी। माजिद के डराने से यह ज़रूरत और शदीद हो गयी। उस वक़्त सूरज गुरूब हो रहा था और फ़िज़ा ख़ुनक होने लगी थी। माजिद के मश्वरे पर उन्होंने वहीं क़याम किया....रात गुज़र गयी तो जागीरदार को यक़ीन आ गयाकि माजिद काबिल एतमाद आदमी है।

लम्बी मुसाफ़त के बाद वह हलब पहुंचे। उस वक़्त हलब का अमीर शमसुद्दीन था जिस ने थोड़ा ही अर्सा पहले सलीबियों को तावान देकर उस से सुलह कर ली थी। अलमलकुस्सालेह दमिश्क से भाग कर वहां पहुंच चुका था। उसके तमाम उमरा व वुज़रा उसके साथ थे और उसके बॉडी गार्ड के दस्ते भी वहां पहुंच रहे थे। अल्सालेह ने हलब की इमारत पर कब्ज़ा कर लिया था और उसके उमरा वग़ैरह फ़ौज को नये सिरे से मुनज़्ज़म करने लगे थे। सूरते हाल ऐसी थी कि फ़ौज को हर उस आदमी की ज़रूरत थी जिस में थोड़ी सी जंगी सूझ बूझ हो। अल्मलकुस्सालेह के पास सोने और ख़ज़ाने की कमी नहीं थी, कमी फ़ौज, कमाण्डरों और मुशीरों की थी। वह और उसका टोला सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ने और ख़िलाफ़त बहाल करने को बेताब था। उनकी बेताबियों से यूं पता चलता था जैसे उन के दुश्मन सलीबी नहीं सुल्तान अय्यूबी है उन्हों ने ख़लीफ़ा की मुहर के साथ इधर उधर के उमरा को पैग़ाम भेजे कि वह सल्तनत के दिफ़ाअ के लिए सुल्तान अल्मलकुस्सालेह के साथ फ़ौजी तआवुन करें। उन उमरा में हमिस, हिमात और मुसिल के हुक्मरान ख़ास तौर पर काबिल ज़िक्र हैं। किसी की तरफ़ से उमीद अफ़ज़ा जवा मिला और किसी ने तआऊन का सिर्फ़ वादा किया।

यह जागीरदार हलब पहुंचा तो अल्सालेह ने उसे ख़ुश आमदीद कहा। वह भी अल्सालेह की जंगी मजलिसे मुशविरत का अहम रूक्न था। उसे हलब में ऐ मकान दे दिया गया। वह आते ही इस कदर मसरूफ़ हो गया कि सुबह का गया आधी रात को घर आता था।

उसकी ग़ैर हाज़िरी में उसकी बीवी माजिद हिजाज़ी में दिलचस्पी लेने लगी। माजिद ने उसके साथ ऐसी बेतकल्लुफ़ी पैदा कर ली कि जिसमें बद नीयती का शायबा तक न था। माजिद ने पुरवकार अन्दाज़ अख़्तियार किये रखा जिस से लड़की मुतासिर हुई और वह जैसे भूल गयी हो कि माजिद उसके ख़ाविन्द का मुहाफ़िज़ है। माजिद अपने मिशन पर काम कर रहा था। उसने दो तीन दिनों में लड़की के दिल पर कब्ज़ा कर लिया। उसने लड़की से पूछा कि उसके ख़ाविन्द की बाकी चार बीवियां कैसी थीं। उसने बताया कि ऐसी बुरी नहीं थीं। उस शख़्स ने उन्हें पुरानी समझ कर धोखा दिया और उस लड़की को साथ लेकर भाग आया।

"और एक रोज़ यह तुम्हे भी छोड़ कर किसी और को ले आयेगा।" माजिद हिजाज़ी ने कहा— " इन अमीरों का यही फ़ेल है।"

"अगर मैं तुम्हें दिल की बात बतादूं तो मेरे ख़ाविन्द को तो नहीं बता दोगे?" लड़की ने पूछा— "मुझे धोखा तो नहीं दोगे?"

अगर मेरी फ़ितरत में धोखा और फ़रेब होता तो मैं तुम्हारे ख़ाविन्द को वहीं जहां मै तुम्हे मिला था आसानी से कत्ल करके तुम पर और तुम्हारे माल पर हाथ साफ़ कर सकता था।" माजिद ने कहा– "मैं मर्द हूं। औरत को फ़रेब देना मर्द की शान के ख़िलाफ़ है।"

"मैं अब उस राज़ को अपने दिल में ज़्यादा देर नहीं रख सकती कि मुझे तुमसे ऐसी मुहब्बत है जिस पर मेरा काबू नहीं रहा।" लड़की ने कहा– "और यह भी एक राज़ है कि मुझे उस ख़ाविन्द से नफ़रत है। मैं बिकी हुई लड़की हूं। कई बार दिल में आई कि अपने आप को ख़त्म कर दूं। शायद बुजदिल हूं। अपनी जान लेने से डरती हूं। मेरे इरादे कुछ और थे, मेरे ख़यालात कुछ और थे। तुमने मेरे इरादों और ख़यालों पर मिट्टी डाल दी है और मेरा यह इरादा पक्का कर दिया है कि अपने आप को ख़त्म कर दूं।"

"क्या तुम यह कहना चाहती हो कि तुम्हें चुंकि मुझ से मुहब्बत है इसलिए ख़ुदकुशी करना चाहती हो?"

"नहीं!" लड़की ने कहा– "मेरे ज़ेहन में सलाहुद्दीन अय्यूबी का तसव्वुर नुरूद्दीन ज़ंगी से ज़्यादा मुकद्दस और प्यारा था। तुम ने उस तसव्वुर को तोड़ फोड़ दिया। क्या सलाहुद्दीन अय्यूबी इतना ही बुरा है जितना तुम ने बताया है?"

"मैं तुम्हारे राज़ को अपना राज़ समझूंगा।" माजिद हिजाज़ी ने कहा– "उसके एवज़ तुम्हें अपना एक राज़ देता हूं। मैं तुमसे कोई वादा नहीं लूंगा कि मेरे राज़ की हिफ़ाज़त करना।अगर मेरा राज़ फाश हो गया तो न तुम ज़िन्दा रहोगी न तुम्हार ख़ाविन्द...मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी का जासूस हूं। मैंने दो चार दिनों में भांप लिया है कि तुम असल में क्या हो। मैं तुम्हे बताता हूं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी का तसव्वुर उससे कहीं ज़्यादा मुकद्दस है जो तुम ने अपने ज़ेहन में बना रखा है। वह उन अमीरों और बादशाहों का दुश्मन है जिन्होंने लड़कियों को अपने हरमों में कैद कर रखा है। वह उसके सख़्त ख़िलाफ़ है कि मर्द औरत को सिर्फ़ तफ़रीह और अय्याशी का ज़रिया बनाये। वह मर्द और औरत की बराबरी का और एक ख़ाविन्द और एक बीवी का काइल है। वह औरतों को फ़ौजी तरबियत देना चाहता है। मैं ने तुम्हारे ख़ाविन्द का एतमाद हासिल करने के लिए यह झूठ बोला था कि अय्यूबी ने अपनी फ़ौज के चन्द दस्तों को दमिश्क से भागने वालों को लूटने और उनकी लड़कियों को उठा लाने के लिए भेजा है। वह सच्चे इस्लाम का अलमबरदार है। मैं उसी इस्लाम के ख़ातिर और उसी सलाहुद्दीन अय्यूबी की ख़ातिर यहां एक काम के लिए आया हूं।"

लड़की की आंखों में चमक सी पैदा हुई। उसने माजिद हिजाज़ी का एक हाथ अपने दोनों हाथों में लेकर चुम लिया और कहा– "तुम्हारा यह राज़ कभी फ़ाश नहीं होगा। मुझे मत बताओ कि तुम यहां क्यों आये हो और मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकती हूं! मुझे मत बताओ कि सलाहुद्दीन अय्यूबी असल में क्या है और तुमने मेरे ख़ाविन्द को क्या बताया था। मैं औरतों की उस जमाअत की लड़की थी जो नुरूद्दीन ज़ंगी की ज़िन्दगी में हमने बनायी थी। हम सलीबियों के ख़िलाफ़ मुहाज़ कायम कर रही थीं। ज़ंगी की बेवा हमारी सरपरस्त और निगरां थी। मेरा बाप पसन्द नहीं करता था कि मैं इस जमाअत में रहूं। वह लालची और ख़ोशमदी

इन्सान है। उसके लिए सलीब और हिलाल में कोई फ़र्क़ नहीं। वह उसी का ग़ुलाम है जिस से उसे कुछ रकम हाथ आ जाये। उसने मुझे इस आदमी के हाथ बेच दिया। इस सौदे को लोग शादी कहते हैं। तुम जानते हो कि मुसलमान की बच्ची मैदाने जंग में हो या उसे कोई भी जंगी और क़ौमी काम दे दो वह मर्दों को हैरान कर देती है और दुश्मन का मुंह फेर सकती है। मगर यही बच्ची जब हरम में क़ैद कर ली जाती है तो वह चींटी बन जाती है। यही हालत मेरी हुई। अगर मेरा यह ख़ाविन्द मामूली हैसियत का होता तो मैं बग़ावत करती। उस से निजात हासिल करने की कोशिश करती मगर इस आदमी के पास ताक़त है, दौलत है और अस्सुआलेह का जो मुहाफ़िज़ दस्ता है उसके आधे सिपाही उसके इलाक़े के हैं जो उसी के भर्ती कराये हुए हैं....।

"मैं चूंकि उसकी पहली चार बीवियों से ज़्यादा ख़ूबसूरत और जवान हूं इसलिए मैं ही उसका खिलौना बन गयी। मेरी रूह मर गयी। मेरा सिर्फ़ जिस्म ज़िन्दा रहा। बाहर की दुनिया से मेरा रिश्ता टूट चुका था और मैं जिस दुनिया में क़ैद थी वहां शराब और नाच गाने के सिवा कुछ न था। अगर कुछ और था तो नुरूद्दीन ज़ंगी और सलाहुद्दीन अय्यूबी के क़त्ल के मंसूबे थे....." वह बोलते-बोलते चुप हो गयी। उसने माजिद हिजाज़ी को झिंझोड़ कर कहा— "क्या तुम मेरी बातें सुन रहे हो?" मैंने यह यक़ीन किए बग़ैर कि तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी के जासूस हो या मेरे ख़ाविन्द के, तुम्हे अपने दिल की सारी बातें सुना रही हूं। अगर तुम मेरे ख़ाविन्द के जासूस हो तो उसे यह सारी बातें सुना देना जो मैं तुम्हे सुना रही हूं। वह मुझे सज़ा देगा। मैं अब हर क़िस्म की सज़ा बर्दाश्त करने के लिए तैय्यार हूं। मेरे पास अब जिस्म रह गया है। यह जिस्म पत्थर बन गया है, रूह मर गयी है।"

"तुम्हारी रूह ज़िन्दा है।" माजिद हिजाज़ी ने कहा—"मेरी निगाहें गहराईयों से ज़्यादा गहराईयों तक देख लिया करती हैं। मैं ने देख लिया था कि तुम्हारी रूह ज़िन्दा है वरना मैं अपना राज़ कभी तुम्हारे आगे न खोलता। मैं हुस्न और जवानी से मग़लूब होने वाला इन्सान नहीं हूं, मर्द हूं। अपनी जान इस्लाम के नाम पर वक़्फ़ कर दी है। तुम बोलो अपना दिल हल्का करती जाओ। मैं सुन रहा हूं, तुम्हारी दास्तान मेरे लिए नई नहीं। यह हर मुसलमान औरत की दास्तान है।

इस्लाम का ज़वाल उसी रोज़ शुरू हो गया था जिस रोज़ एक मुसलमान ने हरम खोला और उसमें ख़ूबसूरत लड़कियां ख़रीद कर क़ैद की थीं। सलीबियों ने कहा कि अब इस क़ौम को औरत के हाथों मरवाओ। उन्होंने हमारे बादशाहों के हरम अपनी बेटियों से भर दिये हैं।"

"यह मेरे ख़ाविन्द के घर भी हुआ।" लड़की ने कहा— "मैं ने अपनी आंखों सलीबी लड़कियों को अपने ख़ाविन्द के पास आते और शराब पीते देखा है। मैं सिवाये रोने के और कर ही क्या सकती थी। मैं इसलिए नहीं रोती थी कि उन लड़कियों ने मुझ से मेरा ख़ाविन्द छीन लिया था बल्कि इसलिए कि मुझसे मेरा इस्लाम छिन गया था, वह इस्लाम जिस की ख़ातिर मैंने तुम्हारी तरह अपनी जान वक़्फ़ की थी।"

"आओ जज़्बाती बातों से हट कर उस काम की बातें करें जिस के लिए मैं यहां आया हूं।"

माजिद ने कहा और उससे पूछा— "अपने ख़ाविन्द पर तुम्हारा कितना कुछ असर है? क्या तुम उसके दिल से राज़ की बातें निकाल सकती हो?"

"शराब के दो प्याले पिलाकर और उसका सर अपने सीने से लगाकर मैं उससे हर राज़ ले सकती हूं।" लड़की ने जवाब दिया— "तुम क्या मालूम करना चाहते हो?— उसने कुछ सोंच कर और मुस्कुरा कर कहा— "मेरी एक ज़ाती शर्त मान लोगे?...अगर मैं तुम्हारा काम कर दूं तो मुझे यहां से ले जाओगे? मेरी मुहब्बत को ठुकरा तो नहीं जाओगे?"

माजिद हिजाज़ी ने उसका दिल रख लिया और उसकी शर्त मान ली। उसने उसे बताया कि अस्सालेह ग्यारह साल का बच्चा है वह अमीरों के हाथ में खिलौना है। यह अमीर और वज़ीर सलाहुद्दीन अय्यूबी को ख़त्म करके सल्तनते इस्लामिया को टुकड़ों टुकड़ों में तक़सीम करना चाहते हैं। अगर ऐसा हो गया तो उन टुकड़ों को सलीबी हज़म कर जायेंगे और इस्लाम का नाम व निशान मिट जायेगा। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी कहता है कि जिस कौम ने मुल्क के टुकड़े किए वह कभी ज़िन्दा नहीं रहे। हमारे यह अमीर सलीबियों तक से मदद लेने को तैय्यार हैं। सलीबी उन्हें ज़रूर मदद देंगे और उस के एवज़ वह उन्हें अपना महकूम बनायेंगे। मैं यह मालूम करने आया हूं कि ख़लीफ़ा के हां क्या मंसूबे बन रहे हैं और सलीबी उन्हें क्या मदद दे रहे हैं। मुझे यह ख़बर बहुत जल्दी सलाहुद्दीन अय्यूबी तक पहुंचानी है ताकि उसके मुताबिक़ कार्रवाई की जाए, और कहीं ऐसा न हो कि सुल्तान अय्यूबी बे ख़बरी में सलीबियों के हमले की ज़द में आ जाये।"

"क्या सलाहुद्दीन अय्यूबी मुसलमान अमीरों पर हम्ला करेगा?" लड़की ने पूछा।

"अगर ज़रूरत पड़ी तो वह देर नहीं करेगा।"

लड़की बहुत ही जज़्बाती थी और वह ज़हीन भी थी। उसके आंसू निकल आये। उसने कहा— "इस्लाम को यह दिन भी देखने थे कि एक रसूल सल्ल0 की उम्मत आपस में लड़ेगी।" उसके सिवा कोई और इलाज नहीं।" माजिद हिजाज़ी ने कहा— "सलाहुद्दीन अय्यूबी बादशाह नहीं, अल्लाह का सिपाही है, वह कहता है कि मुल्क और कौम को ख़तरों और तबाही से बचाने का फ़र्ज़ फ़ौज के सुपुर्द है। यह ख़तरा बाहर के दुश्मन का हो या अन्दर के ग़द्दारों और मुफ़ाद परस्त हुक्मरानों का, उन से मुल्क और कौम को बचाना सिपाही का फ़र्ज़ है। वह कहता है कि वह फ़ौज को हुक्मरानों के हाथों में खिलौना नहीं बनने देगा। फ़ौज हुक्मरानों की आलयकार बनी हुई है। वह मुसलमान काफ़िरों से ज़्यादा ख़तरनाक होता है जो काफ़िरों को दोस्त समझ कर उन्हें अपनी जड़ों में बिठाता है....अब तुम्हारा काम यह है कि अपने ख़ाविन्द से यह राज़ लो कि यहां क्या मंसूबा बन रहा है।"

"मैं राज़ भी दूंगी और दुआ करूंगी कि जब तुम यहां से दमिश्क जाओ तुम्हारे साथ यह राज़ भी हो और मैं भी रहूं।" लड़की ने कहा।

❖

"त्रिपोली के सलीबी बादशाह रिमाण्ड की तरफ़ एक एल्ची इस दरख़्वास्त के साथ भेज दिया गया है कि वह अस्सुआलेह की मदद को आये।" दूसरे ही दिन लड़की ने माजिद

हिजाज़ी को बताया– "मैं ने रात को शराब पिलाकर सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ बहुत बातें की और उसे कहा कि तुम बुज़दिल हो जो दमिश्क से भाग कर हलब में आ पनाह ली है। कोई मुसलमान हुक्मरान की यह तौहीन बर्दाश्त नहीं कर सकता जो सलाहुद्दीन अय्यूबी ने की है.....ऐसी बहुत सी बातें कीं तो वह भड़क उठा और मेरे साथ बेहुदा हरकते करते हुए बोला– "अय्यूबी चन्द दिनों का मेहमान है। फ़िदाई क़ातिलों के मुर्शिद शेख़ सन्नान से भी दरख़्वास्त की गयी है कि वह सलाहुद्दीन अय्यूबी के क़त्ल का बन्दोबस्त करे और मुंह मांगा इनाम ले। वह अपने तजुर्बाकार आदमी दमिश्क भेज रहा है।" उसने यह भी बताया कि अपनी फ़ौज की तैय्यारी के लिए बहुत वक़्त मिल जायेगा क्योंकि सर्दियों का मौसम शुरू हो गया है पहाड़ी इलाक़ों में बर्फ़ पड़ने लगेगी। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी सेहराई फ़ौज को इतनी सर्दी और बर्फ़ में नहीं लड़ा सकेगा।

यह इब्तेदा थी। शराब और औरत एक मर्द के सीने से राज़ निकलवा रही थी। लड़की ने हर रात ख़ाविन्द से दिन भर की कारगुज़ारी मालूम करना शुरू कर दी और यह राज़ माजिद हिजाज़ी के सीने में महफ़ूज़ होते गए। एक रोज़ ख़ाविन्द ने माजिद से कहा– "मुलाज़िमों ने तुम्हारे मुतअल्लिक़ एक क़ाबिले एतराज़ बात बतायी है।" माजिद कांप उठा। वह समझा कि उसका भांडा फूट गया है मगर ख़ाविन्द ने कहा– "तुम मेरी बीवी को वरग़ला रहे हो। मेरी ग़ैर हाज़िरी में तुम उसके पास बैठे रहते हो। मैं जानता हूं कि मेरे मुक़ाबिले तुम ख़ुबरू हो और नौजवान भी। मेरी बीवी तुम्हे पसन्द कर सकती है। मगर मैं तुम्हे ज़िन्दा नहीं छोड़ूंगा।"

माजिद हिजाज़ी ने उसे यक़ीन दिलाने की कोशिश की कि उसकी ग़लतफ़हमी है लेकिन उसके दिल में वहम पैदा हो चुका था। उसने अपनी बीवी से भी यही बात कही और उस पर पाबन्दी आयद कर दी कि वह माजिद हिजाज़ी से नहीं मिल सकती।

माजिद हिजाज़ी अभी वहां से निकलना नहीं चाहता था क्योंकि उसे अभी वहां का पूरा मंसूबा नहीं मिला था। उस ने उस लड़की के ख़ाविन्द की डांट डपट सह ली और उस की धमकियों से अपने ऊपर मस्नूई ख़ौफ़ की कैफ़ियत भी तारी कर ली। उसकी मिन्नत समाजत भी की। उस शख़्स ने उसे माफ़ तो कर दिया लेकिन उसी रोज़ छः बॉडीगार्ड ले आया। उस दौर में अमीर कबीर लोग अपने घर में बॉडीगार्ड रखने को इज़्ज़त की निशानी समझते थे। उस आदमी ने माजिद हिजाज़ी समेत सात बॉडीगार्ड रख लिये और उस में से एक को कमाण्डर बना दिया। उस कमाण्डर ने माजिद को यह खुसूसी हुक्म दिया कि वह चूंकि आक़ा की नज़रों में मुश्तबह है, इसलिए वह मकान के दरवाज़े तक भी नहीं जा सकता और रात को थोड़ी सी देर के लिए भी ग़ैर हाज़िर नहीं हो सकता। माजिद ने उस हुक्म के आगे भी सरे तस्लीम ख़म कर दिया और उसने ऐसा रवैया अख़्तियार कर लिया जैसे मर गय हो।

दो तीन राते ही गुज़री होंगी, आधी रात के वक़्त यह लड़की बाहर निकली। बड़े दरवाज़े पर एक बॉडीगार्ड पहरे पर खड़ा था। लड़की ने उससे आक़ाओं और जलाल के रोब में पूछा– "तुम यहीं खड़े रहते हो या मकान के इर्द गिर्द चक्कर भी लगाते हो?" उसने कुछ जवाब दिया तो लड़की ने कहा– "तुम नये आदमी हो। हमारे दमिश्क वाले मुहाफ़िज़ बहुत

होशियार और चौकस थे। तुम यहां नौकरी करना चाहते हो तो तुम्हे उसी तरह होशियार औ चौकस बनना पड़ेगा। आका बड़ी सख़्त तबियत के मालिक हैं।" पहरेदार ने एहतराम से स झुका लिया।

लड़की बॉडीगार्डों को देखने निकली थी। वह उन दो ख़ेमों के तरफ़ चल पड़ी जिन दूसरे बॉडीगार्ड सोये हुए थे। दरवाज़े वाले पहरेदार ने दौड़कर कमाण्डर को जगा दिया औ बताया कि मलिका मुआइने के लिए आई है। कमाण्डर घबरा कर उठा था और लड़की आगे झुक गया। लड़की ने उसे भी हिदायत दीं और एक ख़ेमे के आगे रूक कर बुलन्द आवाज़ में से बातें करने लगी। माजिद हिजाज़ी उसी ख़ेमें में सोया हुआ था उसकी आंख खुल गयी वह बाहर आ गया। लड़की ने उससे यूं बात की जैसे उसे अच्छी तरह जानती न हो। उसर पूछा– "तुम शायद पहले वाले मुहाफ़िज़ हो?" माजिद ने ताज़ीम से जवाब दिया तो लड़क ने कमाण्डर से कहा– "इस आदमी को जल्दी तैय्यार करो। यह मेरे साथ कसरे सल्तनत तव जायेगा। दो घोड़े फ़ौरन तैय्यार करो।"

"अगर आका आपके मुतअल्लिक पूछें तो मैं क्या जवाब दूं।? कमाण्डर ने पूछा।

"मैं सैर सपाटे के लिए नहीं जा रही।" लड़की ने तहककुमाना लहजे में कहा– "आका व ही काम से जा रही हूं। हुकूमत के कामों में मत दख़ल दो, जाओ घोड़े तैय्यार करो।"

कमाण्डर ने एक आदमी को अस्तबल की तरफ़ दौड़ा दिया। माजिद हिजाज़ी तलवार मुसल्लह होकर तैय्यार हो गया था। लड़की उसे अस्तबल की तरफ़ ले गयी। कमाण्डर व उस लड़की के ख़ाविन्द ने बता रखा था कि माजिद पर नज़र रखे और उसे घर के अन्दर जाने दे। अब लड़की ने माजिद को ही अपने साथ ले जाने के लिए मुन्तख़ब किया थ कमाण्डर ने देखा कि वह दोनों अस्तबल की तरफ़ चले गये हैं तो वह दौड़ कर अन्दर लड़ के ख़ाविन्द को इत्तलाअ देने चला गया। वह यकीन करना चाहता था कि ख़ाविन्द व मालूम है कि उसकी बीवी मुश्तबा बॉडीगार्ड के साथ जा रही है। वह लड़की को रोक भी न सकता था क्यों कि वह उसकी मालकिन थी...वह अन्दर गया और डरते–डरते अपने मालि के कमरे के दरवाज़े पर हाथ रखा। दरवाज़ा खुल गया। अन्दर कन्दील जल रही थी अ कमरा शराब की बदबू से भरा हुआ था। उसने अपने आका को देखा। वह बिस्तर पर इस तर पड़ा था कि उसका सर और एक बाज़ू पलंग से लटक रहा था। एक ख़ंजर उसके सीने उतरा हुआ था। उसके सीने पर ख़ंज़र के कई ज़ख़्म थे कमाण्डर ने उसकी नब्ज़ देखी। व मरा हुआ था। उसके कपड़े ख़ून से लाल हो गये थे।

माजिद हिजाज़ी को लड़की बता चुकी थी कि उसने अपने ख़ाविन्द से सारा मंसू मालूम कर लिया है और अब उस मंसूबे पर अमल शुरू हो रहा है। उस ने ख़ाविन्द व रोज़मर्रा की तरह शराब पिलायी और इतना पिलायी कि वह बेहोश हो गया। लड़की उ बेहोशी की हालत में छोड़कर आ सकती थी लेकिन इन्तकाम के जज़्बे ने उसे पागल व दिया। उसने उसी के ख़ंजर से उसका सीना छलनी कर दिया और ख़ंजर उसके सीने में र रहने दिया.... माजिद हिजाज़ी घबराया नहीं। वह तो हर लम्हा किसी न किसी अचानक पैद

होने वाली सूरते हाल के लिए तैय्यार रहता था। उसने लड़की के उस इक़दाम को सराहा और उससे कहा वह इत्मिनान से घोड़े पर सवार हो जाये।

ज्योंहि घोड़ों पर सवार होने लगे रात की ख़ामूशी में एक आवाज़ बड़ी ही बुलन्द सुनाई देने लगी– "घोड़े मत देना। उन्हें रोक लो। वह आक़ा को क़त्ल करके जा रही है।"

छः के छः बॉडीगार्ड तलवारें और बरछियां उठाये बाहर आ गये। माजिद और लड़की घोड़ों पर सवार हो चुके थे। उन्हें उसी रास्ते से गुज़रना था जहां बॉडीगार्ड थे। माजिद ने लड़की से कहा अगर घुड़सवारी नहीं कर सकती तो उसके घोड़े पर पीछे बैठ जाये। घोड़ा सरपट दौड़ाना पड़ेगा। लड़की ने ख़ुद एतमादी से कहा कि वह घोड़ा दौड़ा सकती है। माजिद ने उसे कहा कि वह घोड़ा उस के पीछे रखे। माजिद ने घोड़े को ऐड़ लगादी। उसके पीछे लड़की ने भी घोड़ा दौड़ा दिया। कमाण्डर की आवाज गरजी– "रूक जाओ मारे जाओगे।" चांदनी रात थी। माजिद ने देख लिया था कि बॉडीगार्ड बरछियां ऊपर किये उसकी तरफ़ आ रहे हैं। उसने घोड़े का रूख़ उनकी तरफ़ कर दिया और आगे होकर तलवार घूमाने लगा। घोड़े की रफ़तार उसकी तवक़्क़ो से ज़्याद तेज़ थी। दो बॉडीगार्ड उसके सामने आ गये और घोड़े तले कुचले गये। एक बरछी उसकी तरफ़ आई जो उसने तलवार के वार से बेकार कर दी।

"कमाने निकाल लो।" कमाण्डर ने चिल्ला कर कहा। बॉडीगार्ड तजुर्बाकार मालूम होते थे। ज़रा सी देर में दो तीर माजिद हिजाज़ी के क़रीब से गुज़र गये। उसने घोड़ा दायें बायें घुमाना शुरू कर दिया ताकि तीर अन्दाज़ निशाना न ले सकें। इतने में वह तीरों की ज़द से निकल गये। अब यह ख़तरा था कि बॉडीगार्ड घोड़ों पर तआक़्क़ुब करेंगे लेकिन उसे पकड़े जाने का डर नहीं था क्योंकि घोड़ों पर ज़ीने कसने के लिए जो वक़्त सर्फ़ होना था वह उसके लिए दूर निकल जाने के लिए काफ़ी था और हुआ भी यही। आबादी से दूर निकल जाने तक उसे तआक़्क़ुब में आते घोड़ों की आवाज़ें सुनाई न दीं। उसने लड़की से कहा कि अब घोड़ा उसके पहलू में कर ले।

लड़की का घोड़ा जब उसके पहलू में आया तो माजिद ने पूछा कि वह घबराई या डरी तो नहीं? लड़की ने जवाब दिया कि वह बिल्कुल ठीक है। लड़की ने उसे दौड़ते घोड़ों के साथ बुलन्द आवाज़ से सुनाना शुरू कर दिया कि उसने कौन सा राज़ अपने ख़ाविन्द से हासिल किया है। माजिद ने उसे कहा कि आगे चल कर रूकेंगे तो सारी बात सुनूंगा लेकिन लड़की बोलती थी। माजिद ने जब बार–बार उसे कहा कि चुप हो जाये, उसे कुछ समझ नहीं आ रही कि वह क्या कह रही है तो लड़की ने कहा– "फिर रूक जाओ मैं ज़्यादा देर इन्तज़ार नहीं कर सकूंगी।" माजिद अभी रूकना नहीं चाहता था और लड़की बोलती जा रही थी। आख़िर लड़की ने हाथ लम्बा करके माजिद के घोड़े की बागें पकड़ लीं। उसके लिए उसे आगे झुकना पड़ा। तब माजिद ने देखा कि लड़की के दूसरे पहलू में तीर उतरा हुआ है। माजिद ने फ़ौरन घोड़ा रोक लिया।

"यह तीर मुझे वहीं लग गया था।" लड़की ने कहा– "मैं इसीलिए तुम्हे दौड़ते घोड़े से

असल बात सुना रही थी कि मरने से पहले यह राज़ तुम्हे दे दूं।" माजिद हिजाज़ी ने उसे घोड़े से उतारा और ज़मीन पर बैठ कर उसे अपनी आग़ोश में ले लिया। उसने तीर को हाथ लगाया। वह ख़ासा अन्दर चला गया था। निकाला नहीं जा सकता था। यह जर्राह का काम था। जो पूठ्ठा चीर कर निकाल सकता था। "उसे रहने दो, मेरी बात सुन लो।" लड़की ने कहा– "और उसने माजिद को सारा मंसूबा सुना दिया जो उस ने ख़ाविन्द से सुना था। "मेरा ख़याला है कि यह शक किसी को नहीं होगा कि हम कोई राज़ लेकर हलब से भागे हैं। वह मंसूबे में कोई तबदीली नहीं करेंगे। मुहाफ़िज़ों तक को मालूम है कि मेरे ख़ाविन्द को शक है कि मेरे और तुम्हारे ग़लत तअल्लुकात हैं। वह यहीं कहेंगे कि मैं तुम्हारे साथ मोहब्बत की ख़ातिर भागी हूं।"

लड़की सारी बात सुना चुकी तो उसने माजिद का हाथ चुम कर कहा– "अब सकून से मर सकूंगी।" और उस पर ग़शी तारी होने लगी।

माजिद ने दूसरे घोड़े को अपने घोड़े के पीछे बांध दिया और लड़की को अपने घोड़े पर डाल कर उसके पीछे बैठ गया और उसे ऐसी पोजीशन में साथ लगा लिया कि तीर उसे तकलीफ़ न दे। मगर तीर अपना काम कर चुका था।

❖

वह जब दमिश्क़ में अपने कमाण्डर हसन बिन अब्दुल्लाह के पास पहुंचा उस वक़्त लड़की को शहीद हुए कम व बेश बारह घंटे गुज़र गये थे। उसने कसरे हलब का तमाम तर मंसूबा सुना कर बताया कि यह कारनामा इस लड़की का है। हसन बिन अब्दुल्लाह उसी वक़्त माजिद हिजाज़ी को और लड़की की लाश को सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास ले गया, माजिद हिजाज़ी ने बताया कि लड़की क्या थी और उसे बाप ने किस तरह एक जागीरदार के हाथ फ़रोख़्त किया था। माजिद ने लड़की की सारी बातें सुल्तान अय्यूबी को सुनाईं। बाद में मालूम हुआ था लड़की का बाप भी दमिश्क़ से भाग गया था। सुल्तान अय्यूबी ने लड़की की लाश नुरुद्दीन ज़ंगी की बेवा के हवाले कर दी और हुक्म दिया कि लड़की को फ़ौजी एज़ाज़ के साथ दफ़्न किया जाये।

लड़की ने मरने से पहले माजिद हिजाज़ी को जो मंसूबा बताया था वह यह था कि सुल्तानुल मुल्क अल्सालेह तमाम मुसलमान ममलिकतों के उमरा को सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ मुत्तहिद कर रहा था, और उन की फ़ौजों को एक कमाण्डर के तेहत लाना चाहता था। त्रीपोली के सलीबी हुक्मरान रिमाण्ड को मदद के लिए आमादा कर लिया गया था। यह लड़की नयी ख़बर लाई थी, यह थी कि रिमाण्ड अपनी फ़ौज को इस तरह इस्तेमाल करेगा कि मिस्र और शाम के दर्मियान सुल्तान अय्यूबी के लिए रस्द और कुमक के रास्ते रोक देगा। उसने यह महसूस कर लिया था कि सुल्तान अय्यूबी जंग की सूरत में मिस्र से कुमक मंगवायेगा। उसके अलावा रिमाण्ड सुल्तान अय्यूबी को घेरे में लेने के लिए अपने तेज़ रफ़्तार दस्ते हरकत में रखेगा।

ज़रूरत महसूस हुई तो रिमाण्ड दूसरे सलीबी हुक्मरानों को भी मदद के लिए बुला

लेगा। हसन बिन सबाह के पैरोकार फ़िदाइयों के साथ सलाहुद्दीन अय्यूबी के क़त्ल का सौदा तय कर लिया गया था। फ़िदाई फ़ौरी तौर पर दमिश्क पहुंच रहे थे। उस तमाम तर मंसूबे का हर हिस्सा अहम था। लेकिन सुल्तान अय्यूबी ने उसके जिस हिस्से पर ज़्यादा तवज्जोह दी वह यह था कि दुश्मन सर्दियों का मौसम गुज़र जाने के बाद जंग शुरू करेगा। उन इलाकों में सर्दी ज़्याद पड़ती थी, बारिशें होती थीं और बाज़ जगहों पर बर्फ़ भी पड़ती थी। ऐसे मौसम में जंग नहीं लड़ी जा सकती थी और न ही कभी लड़ी गई थी। यहां जिस ने भी हम्ला किया खुले मौसम में।

लड़की की हासिल की हुई मालूमात के मुताबिक़ मंसूबे में शामिल किया गया था कि फ़ौजें किलाबन्द हो जायें। फ़ौजों की नफ़री में इज़ाफ़ा किया जाये और हम्ले की तैय्यारी की जाये। मौसम खुलते ही उन फ़ौजों को शाम पर हमला करना था। सलीबी हुक्मरान रिमाण्ड को जंगी मदद का मुआविज़ा पेश किया गया था जो सोने के सिक्कों की सूरत में था। रिमाण्ड ने शर्त पेश की थी कि उसे यह मोआविज़ा पहले अदा कर दिया जाये। अस्सुआलेह के [illegible] उमरा ने फ़ैसला किया कि मुआविज़ा फ़ौरन भेज दिया जाये।

"मुसलमानों की बदनसीबी" सुल्तान ने आह लेकर कहा– "आज मुसलमान कुफ़्फ़ार से कंधे से कंधा मिलाकर इस्लाम के ख़िलाफ़ उठे हैं।" मेरे रसूल सल्ल0 की रूह को इससे ज़्यादा और अज़ीयत क्या मिलेगी।"

काज़ी बहाउद्दीन शद्दाद अपनी याद दाश्तों की दूसरी जिल्द में लिखते हैं– "मेरा अज़ीज़ दोस्त सलाहुद्दीन अय्यूबी इतना जज़्बाती कभी नहीं हुआ था जितना उस वक़्त हुआ जब उसे बताया गया कि सुल्तान अस्सुआलेह जिसे इस्लाम की अज़मत की निशानी समझा जाता और मुसलमान उमरा मिल कर उसके अज़्म को तबाह करना चाहते हैं कि सलीबियों को सरज़मीने अरब से निकाल कर सल्तनते इस्लामिया को वुसअत दी जाये। उस की आंखों में आंसू आ गये थे। वह कमरे में टहल रहा था। रुक गया और ऐसे जोश में बोला जिसमें जज़्बतीयत ज़्यादा थी कहने लगा– "यह हमारे भाई नहीं हमारे दुश्मन हैं। अगर मुर्तद भाई का क़त्ल गुनाह है तो मैं यह गुनाह करूंगा अगले जहांन दोज़ख़ की आग कुबूल कर लूंगा, लेकिन इस जहान में अपने रसूल के मज़हब को रूस्वा नहीं होने दूंगा। मेरा ज़मीर पाक है। उस हुकूमत पर लानत, उस हुक्मरान पर लानत, जो कुफ्फ़ार से दोस्ती के मुआहिदे करे और कुफ़्फ़ार से मदद मांगे। मैं जानता हूं यह सब दौलत और हुकूमत की लालच है। यह लोग ईमान नीलाम करके हुकूमत का नशा पूरा करना चाहते हैं। उसने तलवार के दस्ते पर हाथ मार कर कहा– "वह सर्दी में नहीं लड़ना चाहते। वह बर्फ़ानी वादियों में लड़ने से डरते हैं। मैं सर्दी में लड़ूंगा, बर्फ़ से लदी चोटियों पर और यख़ दरियाओं में लड़ूंगा।

सलाहुद्दीन अय्यूबी हक़ीक़त पसन्द था। जज़्बात से मग़लूब होकर उसने कभी कोई फ़ैसला नहीं किया था। जंग के मुतअल्लिक़ उसने कभी नारा नहीं लगाया था। दो टोक हिदायत दिया करता था। हर दस्ते के कमाण्डर को दफ़्तर में कागज़ पर लकीरें डाल कर और मैदाने जंग में ज़मीन पर उंगली से लकीरें खेंच कर हिदायत दिया करता था मगर उस

दिन उसे अपने ऊपर काबू न रहा। उसने ऐसी बातें भी कह दीं जो वह आम महफ़िल में नहीं कहा करता था। वह शायद यह जानता था कि उस महफ़िल में फौज के काबिल एतमाद सालारों और मेरे सिवा और कोई नहीं।"

"तौफ़ीक़ जव्वाद!" – सुल्तान अय्यूबी ने दमिश्क की फौज के सालार जव्वाद से कहा– "मैं अभी तक नहीं जान सका कि तुम्हारी फौज सर्दियों में लड़ सकेगी या नहीं। जवाब देने से पहले यह सोंच लो कि मैं रात को छापा मारों को ऐसे जगहों पर छापा मारने के लिए भेजूंगा कि जहां उन्हें दरिया में से गुज़र कर जाना पड़ेगा, बारिश भी होगी और बर्फ़ भी हो सकती है।"

"मैं आप को यकीन दिला सकता हूं कि मेरी फ़ौज में जज़्बा है" सालार तौफ़ीक़ जव्वाद ने कहा– "उसका सबूत यह है कि फ़ौज मेरे साथ है। अस्सुआलेह के साथ भाग नहीं गयी। मेरे सिपाही जंग की ग़र्ज़ व ग़ायत को समझते हैं।"

"अगर सिपाही में जज़्बा हो और वह जंग की ग़र्ज़ व ग़ायत को समझता है तो वह जलते हुए रेगिस्तान में भी लड़ सकता है और जमी हुई बर्फ़ पर भी।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "अल्लाह के सिपाही को न रेगिस्तान की तपिश रोक सकती है न बर्फ़ की सर्दी।" उसने महफ़िल के हाज़ेरीन पर निगह दौड़ाई और कहा– "तारीख़ शायद मुझे पागल कहेगी लेकिन मैं इस फ़ैसले से टल नहीं सकता कि मैं दिसम्बर के महीने में जंग शुरू करूंगा। उस वक़्त मौसमे सरमा का उरूज़ होगा। पहाड़ियों का रंग सफ़ेद होगा। यख़ झक्कड़ चलते होंगे और रातें ठिठुर रही होंगी। क्या तुम सब मेरे इस फ़ैसले को कुबूल करोगे?"

सब ने बएक ज़ुबान कहा कि वह अपने सुल्तान का हर हुक्म बजा लायेंगे। तब उस के होंठों पर मुस्कुराहट आ गयी और वह ऐसे एहकाम देने लगा जिस में जज़्बात का अमल दख़ल नहीं था। उसने कहा – "आज ही रात से तमाम फौज इस हालत में जंगी मश्क़ें करेगी कि हर एक फ़र्द, सालार से सिपाही तक, कपड़ों के बग़ैर होगा। सिर्फ़ कमरजामा पहना जायेगा जिस की लम्बाई घुटनों तक होगी। बाकी जिस्म नंगा होगा। ईशा की नमाज़ के फ़ौरन बाद फ़ौज कपड़े उतार कर बाहर निकल जाया करेगी। यहां करीब ही झीलें हैं। फ़ौज को उनमें से गुज़ारा जायेगा। मैं तुम्हे उस तरबीयती मंसूबे की तफ़सीलात दूंगा। तमाम तबीब फ़ौज के साथ होंगे। इब्तेदा में सिपाही ठंड से बिमार पड़ेंगे। तबीब फ़ौरन, उसी जगह उन्हें गर्म कपड़ों में लपेट कर और आग के करीब लिटा कर इलाज करेंगे। मुझे उम्मीद है कि बिमारों की तादाद ज़्यादा नहीं होगी। दिन के वक़्त तबीब सिपाहियों का मुआइना करते रहेंगे। अगर तबीबों की तादाद कम हो तो मिस्र से बुलालो, यहां से यह ज़रूरत पूरी कर लो।"

यह नवम्बर 1174 ई0 का आग़ाज़ था। रात को सर्दी ख़ासी ज़्यादा हो जाती थी। सुल्तान अय्यूबी ने रातों की ट्रेनिंग का प्रोग्राम मुरतब कर लिया और अपने सालारों और जुनियर कमाण्डरों को बुलाया। उसने मुख़्तसर सा लिक्चर दिया– "अब तुम जिस दुश्मन से लड़ोगे उसे देख कर तुम्हारी तलवारें म्यानों से बाहर आने से गुरीज़ करेंगी क्योंकि तुम्हारा दुश्मन भी, अल्लाहु अक्बर, के नारों से तुम्हारे सामने आयेगा। उस के अलम पर भी वही चांद तारा है

जो तुम्हारे अलम पर है। वह भी वही कलमा पढ़ता है जो तुम पढ़ते हो। तुम उन्हें मुसलमान समझोगे मगर वह मुर्तद हैं। वह अपनी न्यामों में सलीब की तलवारें ला रहे हैं। उनकी तरकश में सलीब के तीर हैं। तुम ईमान के पासबान हो, वह ईमान के व्यापारी हैं खुद साख़्ता सुल्तान अस्सुआलेह बैतुलमाल का सोना और ख़ज़ाना अपने साथ ले गया है और उसने कौम की यह दौलत त्रीपोली के सलीबी हुक्मरान को इस मकसद के लिए दे दी है कि वह उसे जंगी मदद दे कर तुम्हे शिकस्त दे। यह शिकस्त तुम्हारी नहीं इस्लाम की शिकस्त होगी। यह ख़ज़ाना कौम का है। कौम की दी हुई ज़कात का है। यह ख़ज़ाना शराब और अय्याशी में बह रहा है और उसी ख़ज़ाने से कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ताने गांठे जा रहे हैं। क्या कौमी ख़ज़ाने के चोर को अपना सुल्तान तस्लीम करोगे।"

"नहीं नहीं" के साथ कुछ आवाज़ें "लानत लानत" की भी सुनाई दीं। सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मैं ने जिस उसूलों पर मिस्र की फौज को तैय्यार की है वही उसूल तुम्हे बताना चाहता हूं। बुनियादी उसूल यह है कि दुश्मन के इन्तज़ार में अपने घरों में न बैठे रहो। यह कोई उसूल नहीं कि दुश्मन हम्ला करे तो तुम हम्ला रोको। तुम्हे यह उसूल कुरआन ने दिया है कि जंग हो तो लड़ो, जंग न हो तो जंग की तैय्यारी में मसरूफ रहो। ज्योंहि तुम्हें पता चले कि दुश्मन तुम पर हम्ला करने की तैय्यारी कर रहा है उस पर हम्ला करदो। याद रखो जो मुसमलान नहीं वह तुम्हारा दोस्त नहीं। काफिर तुम्हारे कदमों में आकर सज्दा करे तो भी उसे अपना दोस्त न समझो। दूसरी बुनियादी उसूल यह है कि सल्तनते इस्लामिया और कौम की आबरू के पासबान तुम हो। अगर तुम्हारे हुक्मरान बे ग़ैरत हो जायें, कौम बदकारी में तबाह हो जाये और दुश्मन ग़ालिब आ जाये तो आने वाली नस्लें कहेंगी कि उस कौम की फ़ौज नाअहल और कमज़ोर थी। यह होता आया है और होता रहेगा कि हुक्मरानों की बद अमालियां फ़ौज के हिसाब में लिखी जाती हैं क्या कि फतह व शिकस्त का फैसला मैदाने जंग में होता है। हुक्मरान की ऐश पसन्दी और मुफ़ाद परस्ती फ़ौज को कमज़ोर कर चुकी होती है, फिर शिकस्त की ज़िम्मेदारी फ़ौज के कंधो पर डाल दी जाती है....

"फिर क्यों न तुम अभी अपने ख़लीफ़ा और हुक्मरानों को ठीकाने लगा दो जो तुम्हारी और कौम की ज़िल्लत व रुस्वाई का बाइस बन रहे हैं। मैं नहीं बता सकता कि मैं जिस जंग की तैय्यारी कर रहा हूं वह कैसी होगी। सिर्फ़ यह जानता हूं कि वह बड़ी ही सख़्त जंग होगी। सख़्त उन मानों में कि मैं तुम्हे इन्तेहाई दुश्वार हालत में लड़ा रहा हूं। दूसरी मुश्किल यह है कि तुम्हारी तादाद कम होगी। इस कमी को तुम जज़्बे और ईमान की कुव्वत से पूरा करोगे।"

सुल्तान अय्यूबी ने उन्हें यह भी बताया कि दुश्मन के जासूस उन के दर्मियान मौजूद हैं और उन जासूसों का तरीकाएकार क्या है।

"और तुम यह मत सोचो कि सलाहुद्दीन अय्यूबी मुसलमान है। ख़लीफ़ा का दर्जा पैग़म्बर जितना होता है। नजमुद्दीन अयुब के उस मुरतद बेटे ने ख़लीफ़ा को कसे ख़िलाफ़त से निकाल दिया है और शाम पर ग़ासियाना कब्ज़ा करके मिस्र और शाम का बादशाह बन गया है। अगर तुम ख़ुदा के कहर से बचना चाहते हो, ज़लज़लों और तूफ़ानों से महफ़ूज़ रहना

चाहते हो तो सलाहुद्दीन अय्यूबी को शर्मनाक शिकस्त देकर सल्तनत की गद्दी बहाल करो।" यह आवाज़ एक अमीर की थी जो हलब में अपनी फ़ौज को सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ भड़का रहा था। उसने कहा– "सर्दियों का मौसम निकल जायेगा तो हम दमिश्क पर हम्ला करेंगे। इस दौरान हम फौज में इज़ाफा करेंगे और तुम जंग की तैय्यारी करते रहोगे।"

"ज़ेहनी तख़रीब कारी के बग़ैर जंग जीतना बहुत मुश्किल है।" यह आवाज़ सलीबी फ़ौज के एक मुशीर की थी जिसे रिमाण्ड ने अस्सुआलेह के पास भेजा था। वह कह रहा था – "हम तुम्हारे किसी शहर में आकर नहीं लड़ेंगे। हम मिस्र से आने वाली कुमक को रोकेंगे और मौका देख कर सुल्तान अय्यूबी को कहीं घेरे में ले लेंगे। आप की फ़ौज दमिश्क पर हम्ला करेगी। सर्दियों के मौसम में न आप हम्ला कर सकते हैं न सलाहुद्दीन अय्यूबी। आप उस वक़्त तक फायदा उठायें। मुझे जो ख़तरा नज़र आ रहा है वह यह है कि आप की कौम आपस में लड़ने से गुरीज़ करेगी। आप उन इलाकों में जो आप के कब्ज़े में हैं, अपनी कौम को सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ भड़कायें। उसका बेहतरीन हर्बा अप का मज़हब और कुरआन है। इस मकसद के लिए मज़हब, कुरआन और मस्जिद को इस्तेमाल करें। हम ने मुसलमानों में यह कमज़ोरी देखी है कि मज़हब के नाम पर जल्दी भड़कते हैं। अगर आप हमारी मदद करें तो हम आप को यह तख़रीबकारी दमिश्क में भी करके दिखायेंगे।

"यह देखकर मेरा सर शर्म से झुक जाता है कि पांच साल गुज़र गये हैं हम से अभी सलाहुद्दीन अय्यूबी कत्ल नहीं हुआ।" यह आवाज़ फ़िदाई कातिलों (हशीशीन) के मुर्शिद शेख़ सन्नान की थी। वह उन फ़िदाइयों से जिन्हें सुल्तान अय्यूबी के कत्ल के लिए भेजा जा रहा था कि अय्यूबी पर हमारे चार हम्ले नाकाम हो चुके हैं। नाकाम भी ऐसे कि हमारे आदमी मारे गये और ज़िन्दा भी पकड़े गये। हसन बिन सबाह की रूह मुझसे जवाब मांग रही है। क्या तुम उसे ज़हर नहीं दे सकते? कहीं छुप कर उसे तीर का निशाना नहीं बना सकते? क्या तुम अपनी मौत से ख़ौफज़दा हो गये हो? अपने हलफ़ के अल्फ़ाज़ भूल गये हो? मैं अब यह नहीं सुनना चाहता कि सलाहुद्दीन अय्यूबी अभी ज़िन्दा है।"

"वह ज़्यादा देर ज़िन्दा नहीं रहेगा।" एक फ़िदाई ने कहा और उसके साथियों ने उस की ताइद की।

सुल्तान अय्यूबी की जो फ़ौज मिस्र में थी उस की कमान सुल्तान अय्यूबी के भाई अलआदिल के पास थी। सुल्तान अय्यूबी को उसे यह हुक्म दे दिया था कि भरती तेज़ कर दे और जंगी मश्कें जारी रखे। उस ने अलआदिल को सूडान के तरफ से ख़बरदार किया था और उसे बताया था कि सूडान की तरफ़ से मामूली फौजी हरकत हो तो वसीअ पैमाने पर जंगी कार्रवाई करे और सुल्तान अय्यूबी ने यह भी कहा था कि वह कुमक और रस्द तैय्यार रखे। दमिश्क के मुहिम के मुतअल्लिक कुछ नहीं कहा जा सकता था कि कैसी सूरते हाल पैदा कर दे। अब उसने जो मंसूबा बनाया था उसके लिए कुमक की ज़रूरत थी।

जासूस और लड़की ने उसे बता दिया था कि रिमाण्ड मिस्र और शाम के दर्मियान हाइल

होकर सुल्तान अय्यूबी की कुमक और रस्द रोक लेगा। उस इत्तलाअ के पेशे नज़र उस ने कुमक कबल अज़ वक़्त मंगवाकर अपने हाथ में रख लेना ज़रूरी समझा।

उस कुमक को सर्दियों की जंग की ट्रेनिंग की भी ज़रूरत थी। उसने एक तवील पैग़ाम के साथ एक क़ासिद क़ाहिरा भेज दिया।

उसने अलआदिल को प्यादा और सवार दस्तों की तादाद लिखी जो उसे दरकार थी और यह हिदायत भेजी कि तमाम फ़ौज इकट्ठी कूच न करे बल्कि छोटे छोटे दस्ते रात के वक़्त एक दूसरे से दूर दूर नकल व हरकत करें दिन के वक़्त सफ़र न किया जाए। हत्तलइम्कान कुमक के कूच को ख़ुफ़िया रखा जयेगा..... अलआदिल अपने भाई का ही तरबियत याफ़्ता था। उसने पैग़ाम मिलते ही कुमक रवाना कर दी और उसे ख़ुफ़िया रखने का यह इन्तज़ाम किया कि फ़ौज के चन्द अफ़राद आम मुसाफ़िरों के लिबास में ऊंटों पर सवार करके इस हिदायत के साथ कुमक के रास्ते में भेज दिया कि वह दायें बायें, दूर दूर चलते रहें और कोई मशकूक आदमी नज़र आये तो उसकी छान बीन करें और ज़रूरत महसूस हो तो उसे पकड़ लें।

कुमक के दस्ते चन्द दिनों बाद दमिश्क पहुंचने लगे और सुल्तान अय्यूबी ने उन्हें भी रात की ट्रेनिंग में शामिल कर दिया। उसके साथ नई भर्ती का हुक्म भी दिया।

❖

दमिश्क के मुज़ाफ़ात में उस दौर में जंगल और खड नालों का इलाक़ा हुआ करता था। यहां एक सदियों पुराने क़िले के खण्डहर थे। उसके अन्दर कभी कोई नहीं गया था। रात को लोग उसके क़रीब से भी नहीं गुज़रते थे। यह चूंकि फ़ौजी इस्तेमाल के क़ाबिल नहीं रहा था और था भी बेमौक़ा, इसीलिए फ़ौज ने उसकी तरफ़ कभी तवजह नहीं दी थी। सुल्तान अय्यूबी के दौर में दमिश्क की दिफ़ाअ के लिए एक और जगह क़ीला तामीर कर लिया गया था। वह पुराना किला नागों वाला क़िला कहलाता था। मशहूर था कि उस में नागों का एक जोड़ा रहता है। नाग और नागिन की उम्र एक हज़ार साल हो चुकी है। यह भी कहा जाता था कि यह क़िला सिकन्दरे आज़म ने बनाया था और यह भी कि यह दारा ईरानी का बनवाया हुआ है। बाज़ उसे बनी इस्राईल की तामीर कहते हैं।

इस में तो इख़्तेलाफ़ पाया जाता है कि यह किस की तामीर थी। एक रिवायत को सब सच मानते थे। कहते थे सदियां गुज़रीं यहां फ़ारस का एक बादशाह आया था। यह जगह उसे इतनी पसन्द आई कि यहां उसने यह क़िला तामीर किया। उसके अन्दर अपने लिए एक ख़ुश्नुमा महल बनाया मगर उसे आबाद करने को उसकी बीवी नहीं थी। उसे किसी गडेरिये की बेटी पसन्द आ गयी। उस लड़की का मंगेतर भी था। बादशाह ने लड़की के मां बाप को बेबहा दौलत दी और उनसे लड़की ले ली। मंगेतर ने बादशाह से कहा कि यह उस क़िले में कभी आबाद नहीं हो सकेगा। बादशाह ने उसे क़िले में ले जाकर क़त्ल कर दिया और लाश अन्दर ही कहीं दफ़न कर दी। लड़की ने बादशाह से कहा कि उसने उसका जिस्म ख़रीद लिया है, उसकी रूह आज़ाद हो गयी है। पहले रोज़ ही बादशाह जब गडेरिये की बेटी को

शाहाना लिबास पहनाकर महल में दाख़िल हुआ तो फ़र्श बैठ गया और दीवारों के साथ छत नीचे आ गयी। बादशाह और लड़की मलबे में दफ़्न हो गये। बादशाह की फ़ौज मलबा हटाने लगी तो मलबे में से दो नाग निकले। फ़ौज ने उन्हें बरछियों, तीरों और तलवारों से मारने की कोशिश की लेकिन नागों को बरछी लगती थी न तलवार न तीर। उनके क़रीब जाकर रूख़ बदल लेते थे। फ़ौज डर कर भाग गई। यह भी मशहूर था कि अब भी रात को किले के क़रीब से गुज़रो तो एक लड़की गडेरिये की लिबास में भेंड़ बकरियां चराते हुए नज़र आती है। कभी कभी एक जवान आदमी भी नज़र आता है। बहरहाल सब मानते थे कि अब किले में जिन और परियां रहती हैं।

जिन दिनों सुल्तान अय्यूबी ख़लीफ़ा और उमरा के ख़िलाफ़ जंग की तैय्यारियां कर रहा था दमिश्क में यह बात मशहूर हो गयी कि नागों वाले किले में एक बुज़ुर्ग नमूदार हुआ है जो दुआ करता है तो सब रोग दूर हो जाते हैं और वह आने वाले वक़्त की ख़बरें भी देता है। शहर में किसी ने उसकी करामात सुनाई थी जो फ़ौरन मशहूर हो गयी। बाज़ ने उसे इमाम मेंहदी भी कहा था। लोग वहां जाने को बेचैन होने लगे लेकिन डरते थे कि यह गड़ेरिये की बेटी और उसके मंगेतर या फ़ारस के बादशाह की बद रूह ही न हो, और यह जिन्नों और भूतों का फ़रेब भी हो सकता था। बाज़ लोगों ने ज़रा दूर खड़े होकर किले को देखा था। तीन चार आदमियों ने बताया कि उन्होंने स्याह दाढ़ी और सफ़ेद चुगे वाले एक आदमी को किले से बाहर आते और फ़ौरन ही अन्दर जाते देखा था। लोगों को उस बुज़ुर्ग की करामात तो सुनाई देती थीं, मगर ऐसा कोई आदमी नहीं मिलता था जिसने यह कहा हो कि वह किले के अन्दर गया और उसके लिए बुज़ुर्ग ने दुआ की थी।

एक रोज़ सुल्तान अय्यूबी के मुहाफ़िज़ दस्ते का एक सिपाही ड्यूटी का वक़्त पूरा करके कहीं बाहर घूम फिर रहा था। वह वजीह और ख़ूबरू जवान था। मुहाफ़िज़ दस्ते के तमाम जवान ऐसे ही थे। सामने से नूरानी चेहरे वाला एक आदमी आ रहा था जिसकी स्याह दाढ़ी थी और सलीके से तराशी हुई थी। उसका चुग़ा सफ़ेद था और सर पर निहायत दिलकश अमामा। उसके हाथ में तस्बीह थी। मुहाफ़िज़ सिपाही के सामने आकर वह रूक गया। सिपाही की ठोड़ी को थाम कर ज़रा ऊपर उठाया और धीमी आवाज़ में कहा– "मुझे ग़लती नहीं लग सकती तुम कहां के रहने वाले हो दोस्त?"

"बग़दाद का" सिपाही ने बड़े मीठे लहजे में कहा– "आप मुझे पहचानते हैं?"

"हां दोस्त मैं तुम्हे पहचानता हूं।" स्याह दाढ़ी वाले ने हैरत के लहजे में कहा– "मगर तुम शायद अपने को नहीं पहचानते।"

सिपाही उसकी हैरत पर हैरान हुआ और उस के बोलने के अन्दाज़ से मुतासिर भी हुआ। अगर उस आदमी का चेहरा ऐसा नूरानी, उसकी दाढ़ी इतनी अच्छी और चुग़ा इतना सफ़ेद न होता तो सिपाही उसे कोई दिवाना या मजज़ूब समझ कर टाल देता लेकिन उस शख़्स की आंखों, हाल हुलिए और सरापा ने उसे रूके रहने पर मजबूर कर दिया।

"अपने परदादा को जानते हो कौन था और क्या था?" उस शख़्स ने सिपाही से पूछा।

"नहीं" सिपाही ने जवाब दिया।

"और दादा को?"

"नहीं"

"तुम्हारा बाप ज़िन्दा है?"

"नहीं" सिपाही ने जवाब दिया– "मैं दूध पीने की उम्र में था जब वह मर गया था।"

"उनमें बादशाह कौन था?" स्याह दाढ़ी वाले ने पूछा– "परदादा? दादा, बाप?"

"कोई भी नहीं" सिपाही ने जवाब दिया। "मैं किसी शाही ख़ानदान का फ़र्द नहीं हूं। सुल्तान अय्यूबी के मुहाफ़िज़ दस्ते का सिपाही हूं। आप को शायद ग़लत फ़हमी हुई है। मेरी शकल व सूरत शायद आप के किसी पुराने दोस्त से मिलती जुलती है।"

उस शख़्स ने उसकी बात जैसे सुनी ही न हो। उसका हाथ पकड़ कर उसकी दायें हथेली की लकीरों को ग़ौर से देखने लगा, फिर उसकी आंखों में चेहरा उसके क़रीब करके झांका और बड़ी संजीदा और किसी क़दर हैरतज़दा आवाज़ में बोला– "मुझे तख़्त किसका नज़र आ रहा है। यह ताज किसका नज़र आ रहा है! तुम्हारे आंखों में वह जाह व जलाल महफ़ूज़ है जो तुमने नहीं देखा। तुम्हारे दादा के मुहाफ़िज़ दस्ते में चालिस जवान तुम जैसे थे। आज तुम उस इन्सान के मुहाफ़िज़ दस्ते के सिपाही हो जो तुम्हारे दादा के तख़्त पर बैठा है। तुम्हे किस ने बताया है कि तुम शाही ख़ानदान के फ़र्द नहीं हो? मेरा इल्म मुझे धोखा नहीं दे सकता। मेरी आंखे ग़लत नहीं देख सकतीं....तुमने शादी कर ली है?"

"नहीं!" सिपाही ने मरऊब होकर जवाब दिया– "अपने ख़ानदान की एक लड़की के साथ मंगनी हो गयी है।"

"नहीं होगी" उस शख़्स ने कहा– "यह शादी नहीं होगी।"

"क्यों?" सिपाही ने घबराकर पूछा।

"तुम्हारी रूह का मिलाप कहीं और है।" स्याह दाढ़ी वाले ने कहा– "मगर वह कहीं और क़ैद है.....सुनो दोस्त! तुम मज़लूम हो। किसी के फ़रेब का शिकार हो। तुम गुमराह हो। तुम्हारे ख़ज़ाने पर सांप बैठा है। वह शहज़ादी है जो तुम्हारी राह देख रही है। तुम्हें कोई बता दे कि वह कहां है तो तुम जान की बाज़ी लगाकर उसे आज़ाद करा लोगे।" वह चल पड़ा।

सिपाही ने उसके पीछे जाकर उसे रोका और कहा– "मुझे बता कर जाओ कि आप ने मेरे हाथ में और मेरी आंखों में क्या देखा है। आप कौन हैं? कहां से आये हैं? आप मुझे गुमराह और परीशान कर चले हैं।"

"मैं कुछ भी नहीं" उस शख़्स ने जवाब दिया। "जो कुछ है वह मेरे अल्लाह की ज़ात है। तीन चार बड़ी पाक रूहें मेरे हाथ में हैं। यह ख़ुदा के उन बर्गुज़ीदा लोगों की रूहें हैं जो माज़ी को जानते और मुस्तक़बिल को पहचानते थे। में कुछ विर्दे वज़ीफे किया करता हूं। एक रात मुझे इशारा मिला कि नागों वाले किले में चले जाओ। तुम्हे कोई मिलने को बेताब है। वहीं विर्दे वज़ीफ़े करना। मैं वहां जाने से डरता था लेकिन इशारा ख़ुदा का हो तो डर कैसा! मैं चला गया और पहली रात ही वज़ीफ़े के दौरान मुझे रूहें मिल गयीं। उन्होंने मुझे यह ताक़त दे दी

कि इन्सान का चेहरा और आखें देखकर उसके दादा परदादा तक की तस्वीरें नज़र आ जाती हैं। मगर यह कैफ़ियत मुझ पर कभी कभी तारी होती है। तुम्हे देखा तो मैं उस आलम में था। कान में एक रूह की सरगोशी सुनायी दी। उस जवान को देखो। शहज़ादा है मगर अपनी लौहे तक़दीर से बेख़बर है और सिपाहियों के लिबास में दूसरों की हिफ़ाज़त के लिए पहरा देता रहता है.....यह कैफ़ियत गुज़र गयी है। अब तुम मुझे सिर्फ़ सिपाही नज़र आते हो।"

यह इन्सानी फ़ितरत की कमज़ोरी है कि हर कोई ख़ज़ाने और जाह व हशमत के ख़्वाब देखता है। यह सिपाही था। उसे ख़ज़ाने और शहज़ादी का इशारा मिला तो स्याह रेश की मिन्नत की कि उसे उस के मुतअल्लिक़ कुछ और बताये। स्याह रेश ने मुस्कुरा कर कहा– "मेरे पास नजुम का इल्म नहीं, ग़ैबदान भी नहीं हूं। अल्लाह अल्लाह करने वाला दुर्वेश हूं। कोशिश करूंगा कि तुम्हें कुछ बता सकूं, लेकिन जहां तुम्हे बुलाऊंगा वहां आओगे नहीं।"

"जहां आप कहेंगे आ जाऊंगा।"

"नागों वाले किले मे आ जाओगे?"

"ज़रूर आऊंगा।"

"आज रात।" स्याह दाढ़ी वाले ने कहा– "गुस्ल करके ज़ेहन को दुनिया के ख़यालों से ख़ाली करके आ जाना और याद रखो। किसी से ज़िक्र न करना। किसी को न बताना कि मैं तुम्हें मिला था और तुम रात को कहीं जा रहे हो या नहीं...चोरी चोरी आना।"

❖

अगर ख़ज़ाने का, शहज़ादी और तख़्त व ताज का ख़याल न होता तो यह सिपाही कितनी ही दिलेर क्यों न होता रात के वक़्त नागों के किले में न जाता। सुल्तान अय्यूबी के मकान के पिछले दरवाज़े पर उसका पहरा रात के आख़िरी पहर था। वक़्त से पहले वह घूम फिर सकता था। वह जब किले के दरवाज़े पर पहुंचा तो ख़ौफ़ ने उसके दिल पर क़ब्ज़ा कर लिया। उसने बुलन्द आवाज़ में कहा– "मैं आ गया हूं आप कहां हैं?" उसे ज़्यादा देर इन्तज़ार न करना पड़ा था कि एक मशअल कहीं से आई और उसकी तरफ़ बढ़ने लगी। उसके दिल पर ख़ौफ़ का शिकन्जा और ज़्यादा मज़बूत हो गया। मशाल एक आदमी ने उठा रखी थी। उसने क़रीब आकर सिपाही से पूछा– "तुम ही हो जिसे हज़रत ने आज रास्ते में कहीं देखा था?" सिपाही ने बताया कि वही है तो मशाल बरदार ने कहा– "मेरे पीछे आओ।"

"क्या तुम इन्सान हो?" सिपाही ने उससे पूछा।

"तुम्हे जो कुछ नज़र आ रहा हूं वही हूं।" उसे जवाब मिला– "दिल से ख़ौफ़ निकाल दो। ज़ेहन से हर ख़्याल निकाल दो। ख़ामोशी से चलते आओ।" मशाल बरदार चलता और बोलता जा रहा था। "हज़रत से कोई सवाल न पूछना। वह जैसे हुक्म दें वैसे करना।"

तारीक गुलाम गर्दिशों और छतों से ढके कई एक रास्तों से गुज़र कर मशालबरदार एक दरवाज़े के आगे रूक गया और बुलन्द आवाज़ में बोला– "या हज़रत इजाज़त हो तो उसे पेश करूं जिसे आप ने बुलाया है।" अन्दर से जाने क्या जवाब आया। मशाल बरदान एक तरफ़ हट गया और सिपाही को इशारा किया कि अन्दर चला जाये। सिपाही अन्दर गया इस क़दर

हैबतनाक खण्डहर में ऐसे ख़ुश्नूमा सामान से आरास्ता कमरे को देखकर वह हैरान भी हुआ और डरा भी। यह इन्सानों को नज़र न आने वाली मख़लूक़ का मस्कन हो सकता था। कालीन बिछा हुआ था जिस पर गाव तकीये से पीठ लगाये स्याह रेश बैठा था। वह आंखे बन्द किये तस्बीह कर रहा था। उसी हालत में उसने सिपाही को बैठने का इशारा किया। वह बैठ गया कमरे में खुश्बू थी।

स्याह दाढ़ी वाले हज़रत ने आंखें खोलीं। सिपाही को देखा और तस्बीह उसकी गोद में फैंक कर कहा– "गले में डाल लो।" सिपाही ने तस्बीह को चुमा और गले में डाल ली। कमरे में एक कन्दील जल रही थी। हज़रत ने अपने हाथ पर हाथ मारा तो दूसरे कमरे से जिस का दरवाज़ा उस कमरे में खुलता था एक लड़की निकली। उसके बाल खुले हुए और शानों पर बिखरे हुए थे। उसने इतनी ख़ूबसूरत लड़की पहले कभी नहीं देखी थी। उस के हाथ में एक ख़ुश नुमा प्याला था जो उस ने सिपाही के हाथ में दे दिया। स्याह दाढ़ी वाला उठा और दूसरे कमरे में चला गया। सिपाही प्याला हाथ मे लिये कभी लड़की को और कभी प्याले को देखता था। लड़की ने उसे कहा– 'हज़रत कुछ देर बाद आयेंगे। यह पी लो" लड़की के होठों पर ऐसी मुस्कुराहट थी जिसमें अपनाइयत और बेतकल्लुफ़ी थी। सिपाही ने प्याला होठों से लगाया और एक घूंट पी कर लड़की को देखा।

"मुझे तुम जैसा ख़ूबसूरत जवान कभी कभी नज़र आता है।" लड़की ने उसके कंधो पर हाथ रख कर कहा– "पीयो। मैं यह शरबत बड़े प्यार से लाई हूं। हज़रत ने कहा था कि आज तुम्हारी पसन्द का एक नौजवान आ रहा है, जिसे मालूम नहीं कि वह कौन है।"

सिपाही ने दो तीन घूंट शरबत पी लिया। उसके बाद शरबत घूंट–घूंट उसके हलक़ से उतरता रहा और लड़की उसके क़रीब होती गयी और फिर सिपाही ने यूं महसूस किया जैसे लड़की अपने तिल्सीमाती हुस्न और सेहराआगीं जिस्म के साथ शरबत की तरह उसके हलक़ में उतर गयी और रग रग में समा गयी हो। स्याह रेश हज़रत आ गया। उसके हाथ में शीशे का एक गोला था जिस का साइज़ नासपाती जितना था। उसने गोला सिपाही के हाथ में दे कर कहा– "अपनी आंखो के सामने रखो और उसमें से कंदील के लौ को देखते रहो।"

सिपाही ने शीशे के गोले में से कन्दील को देखा तो उसे अपनी आंखों के सामने कई रंग शोलों की तरह थिरकते नज़र आने लगे। लड़की के रेशमी बाल उसके गालों को छू रहे थे और लड़की ने इस तरह उसे अपनी बाज़ूओं के घेरे में ले रखा था वह लड़की के जिस्म की हरारत और ख़ूश्बू महसूस कर रहा था। उसके कानों में एक सूरीली और पुराअसर आवाज़ पड़ने लगी। "मुझे तख़्ते सुलैमान नज़र आ रहा है।" ज़रा सी देर उसका यह एहसास ज़िन्दा रहा कि यह आवाज़ स्याह दाढ़ी वाले की है। फिर यह उसकी अपनी आवाज़ बन गयी और फिर वह उस दुनिया का हिस्सा बन गया जो उसे शीशे में से नज़र आने लगी थी। उसे तख़्ते सुलैमान नज़र आ रहा था जिस पर नूरानी चेहरे वाला एक बादशाह बैठा था। उस के दायें बायें और पीछे चार पांच लड़कियां खड़ी थीं। वह इतनी ख़ूबसूरत थीं कि वह परियां हो सकती थीं।

"हां–हां" सिपाही ने कहा– "मुझे तख़्ते सुलैमान नज़र आ रहा है।"

लड़की के बिखरे हुए बाल उसके ऊपर फैल गये। सिपाही को शीशे में से नज़र आते हुए तख़्त के करीब खड़े एक आदमी की आवाज़ सुनाई दी। "यह बादशाह तुम्हारा दादा है जो हफ़्त अक्लीम का बादशाह है। शाह सुलैमान की परियां और जिन्नात उस दरबार में सज्दे करते हैं। अपने दादा को पहचानों। यह तुम्हारा विर्सा है। तख़्त जा रहा है।"

सिपाही ने हड़बड़ा कर कहा– "वह तख़्त ले जा रहा है। यह देव हैं। बहुत बड़े बड़े। बहुत डरावने। उन्होंने तख़्त उठा लिया है।"

और शीशे के गोले में कई रंगों के शोले रह गये जो थिरक रहे थे जैसे वजद में आये हुए रक्स करते हों। सिपाही ने महसूस किया जैसे कोई चीज़ उसकी नाक के साथ लगी हुई हो। शीशे का गोला उसकी आखों के आगे से खुद ही हट गया और उस पर ग़ुनूदगी तारी हो गयी। वह उस वक़्त अपने आप में आया जब लड़की उसके सर पर हाथ फेर रही थी। उसने आंख खोली तो अपने आप को कालीन पर पड़े पाया। लड़की का एक बाज़ू उसके सर के नीचे था और लड़की उसके पास नीम दराज़ थी। सिपाही उठ बैठा। वह हैरान था और परीशान भी। उसके मुंह से पहली बात यह निकली– "वह कहते थे यह तख़्त तुम्हारे दादा का है और यह तुम्हारा विर्सा है।"

"हज़रत ने भी यही फ़रमाया है।" लड़की ने बड़ी प्यारी आवाज़ में कहा।

"हज़रत कहां हैं?" सिपाही ने पूछा।

"वह अब नहीं मिल सकेंगे।" लड़की ने जवाब दिया। तुमने कहा था कि रात के आख़िरी पहर तुम्हारा पहरा है, इसलिए मैं ने तुम्हें जगा दिया है। रात आधी गुज़र गयी है। तुम अब चले जाओ।"

वह वहां से निकलना नहीं चाहता था। वह पूछ रहा था कि उसने ख़्वाब देखा था या यह हकीकत थी। लड़की ने उसे बताया कि यह ख़्वाब नहीं था। यह हज़रत की ख़ुसूसी करामात थी। उनके लिए हुक्म है कि वह इस किस्म के कोई राज़ अपने पास न रखें। यह उस तक पहुंचा दें जिसका यह राज़ है, मगर यह कैफ़ियत हज़रत पर किसी किसी वक़्त तारी होती है। अब मालूम नहीं कब हो। सिपाही ने लड़की की मिन्नत समाजत शुरू कर दी। लड़की ने उसे कहा– "तुम मेरे दिल में उतर गये हो। मैं ने अपनी रूह तुम्हारे हवाले कर दी है। तुम्हारे लिए अपनी जान भी कुर्बान कर दूंगी। मैं तुम्हे कभी जाने न दूं लेकिन तुम्हारे फ़र्ज़ की आदायगी ज़रूरी है। अब चले जाओ। कल रात आ जाना, मैं हज़रत से दरख़्वास्त करूंगी कि वह तुम्हारा राज़ तुम्हें दे।"

वह जब किले से निकला तो उसके कदम उठ नहीं रहे थे। उसके ज़ेहन पर अपने दादा का तख़्ते सुलैमान ग़ालिब था और दिल पर लड़की का कब्ज़ा था। तारीक रात में किले के खण्डहर उसे महल की तरह ख़ुश्नूमा नज़र आ रहे थे। वह मस्रूर भी था। दिल में कोई ख़ौफ़ और कोई परेशानी नहीं थी।

❖

सलाहुद्दीन अय्यूबी की तमाम तवज्जोह फ़ौज की ट्रेनिंग और मंसूबा बन्दी पर मरकूज़ थी। उसने अपने लिए और मरकज़ी कमान के आला फ़ौजी हुकाम के लिए आराम हराम कर रखा था। इन्टेलिजेंस का इन्चार्ज हसन बिन अब्दुल्लाह जहां अपने कामों में मसरूफ़ था वहां उसे यह भी फ़िक्र था कि सुल्तान अय्यूबी अपनी हिफ़ाज़त का ख़्याल नहीं रखता था। उसके बॉडीगार्ड के कमाण्डर ने हसन बिन अब्दुल्लाह से कई बार शिकायत की थी कि सुल्तान उसे बताये बग़ैर पिछले दरवाज़े से निकल जाते हैं और वह उनके ख़ाली कमरे का पहरा इस ख़्याल से देता है कि सुल्तान अन्दर है। कमाण्डर सुल्तान अय्यूबी के साथ अपने दो चार गार्ड साये की तरह लगाये रखना चाहता था। कमाण्डर को यह भी बता दिया गया था कि अब फ़िदाई पूरी तैयारी से सुल्तान अय्यूबी को क़त्ल करने आ रहे हैं। उस इत्तलाअ ने कमाण्डर को और ज़्यादा परेशान कर दिया था, मगर सुल्तान अय्यूबी की बेपर्वाइ का यह आलम था कि हसन बिन अब्दुल्लाह ने उसे कहा कि वह बॉडीगार्ड्ज़ के बग़ैर बाहर न निकल जाया करें, तो सुल्तान अय्यूबी ने मुस्कुरा कर उसके गाल पर थपकी दी और कहा– "हम सबकी जान अल्लाह के हाथ में है। मुहाफ़िज़ों की मौजूदगी में मुझ पर चार कातिलाना हमले हो चुके हैं। अल्लाह को मंज़ूर था कि ज़िन्दा रहूं। मैं अल्लाह की राह पर चल रहा हूं। अगर उस की ज़ातेबारी मुझे उससे सुबुकदोश करना चाहेगी तो उसकी रज़ा को न मैं रोक सकूंगा न मेरे मुहाफ़िज़।"

"फिर भी सुल्ताने मोहतरम!" हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा– "मेरे और मुहाफ़िज़ के फ़राइज़ ऐसे हैं कि आप के अक़ीदों और जज़्बे से मैं मुतासिर नहीं हो सकता। मुझे फ़िदाइयों के मुतअल्लिक जो ख़बर मिल रही हैं उस के पेशे नज़र मुझे रात को भी आप के सिरहाने खड़ा रहना चाहिए।"

"मैं तुम्हारे और मुहाफ़िज़ों के फ़राईज़ का एहतराम करता हूं हसन!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मगर मैं मुहाफ़िज़ों के साथ बाहर निकलता हूं तो महसूस करता हूं जैसे मुझे अपनी क़ौम पर भरोसा नहीं। उमूमन हुक्मरान अपनी क़ौम से डरा करते हैं। वह दियानतदार और मुख़्लिस नहीं होते।"

"डर क़ौम का नहीं।" हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा– "मैं फ़िदाइयों की बात कर रहा हूं।"

"मैं एहतयात करूंगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा।

नागों वाले किले से आकर मुहाफ़िज़ सिपाही अपनी ड्यूटी पर चलागया। उसने वह दिन उस ज़ेहनी कैफ़ियत में गुज़ारा कि वह तसव्वुरों में तख़्ते सुलैमान और लड़की को देखता रहा। शाम गहरी होते ही वह किले की तरफ़ चल पड़ा। उसके दिल पर कोई ख़ौफ़ नहीं था। वह दरवाज़े में दाख़िल होकर अंधेरे में कुछ दूर अन्दर चला गया और रूक गया। उसने गुज़िश्ता रात की तरह पुकारा! "मैं आ गया हूं। क्या मैं आगे आ सकता हूं?" उसे ज़्यादा देर इन्तज़ार न करना पड़ा। मशाल की रौशनी नज़र आने लगी और मशाल उस से कुछ दूर आकर रूक गयी। मशाल बरदार ने कहा– "हज़रत के क़दमों में सज्दा ज़रूर करना। वह

आज किसी से मिलना नहीं चाहते। तुम आ जाओ।"

गुज़िश्ता रात की तरह वह गुलाम गर्दिशों वगैरह से गुज़रता मशाल बरदार के साथ हज़रत के दरवाजे पर जा रूका। हज़रत ने अन्दर आने की इजाज़त दे दी। सिपाही ने उसके कदमों में जाकर सर रखा और इल्तिजा की– "या हज़रत! मुझे मेरा राज़ दे दो। में कौन हूं? मुझे आप क्या दिखायेंगे?"

स्याह रेश हज़रत ने अपने हाथ पर हाथ मारा तो वही लड़की दूसरे कमरे से आई। वह सिपाही को देखकर मुस्कुराई। सिपाही उसे अपने पास बिठाने को बेताब हो गया। स्याह रेश ने लड़की से कहा– "यह आज फिर आ गया है। क्या मैं यहां तमाशा दिखाने के लिए बैठा हूं?"

"इस गुनहगार को बख़्श दें या हज़रत!" लड़की ने कहा– "बड़ी दूर से उम्मीद लेकर आया है।"

थोड़ी देर बाद कल वाला शीशा उस के हाथ में था। लड़की ने उससे पहले उसे शरबत पिलाया था और उसके पीछे बैठ कर उसकी पीठ अपने सीने से लगाली और बाज़ू उसके गिर्द लपेट दिए जैसे मां ने अपने बच्चे को गोद में ले रखा है। सिपाही को स्याह रेश हज़रत की सुरीली अवाज़ सुनाई देने लगी। "मुझे शाह सुलैमान का महल नज़र आ रहा है। मुझे शाह सुलैमान का महल नज़र आ रहा है।" यह आवाज़ दबती चली गयी जैसे बोलने वाला दूर ही दूर होता जा रहा हो।

"ओह!" सिपाही ने चौंक कर कहा– "ऐसा महल इस दुनिया के किसी बादशाह का नहीं हो सकता।"

"मैं इस महल में पैदा हुआ था।।" उसे किसी की आवाज़ सुनाई देने लगी जो यही अल्फ़ाज़ दूहरा रही थी। "मैं इस महल में पैदा हुआ था।" फिर यह उसकी अपनी आवाज़ बन गयी और फिर उसने यूं महसूस किया जैसे उसके वजूद के अन्दर यही एक आवाज़ गूंजने लगी है। "मैं इस महल में पैदा हुआ था।" फिर वह आवाज़ों से लातअल्लुक हो गया। उसे एक महल नज़र आ रहा था और वह ख़ुद उसके बाहर एक बाग़ में घूम फिर रहा थ। अब यह उसे शीशे के गोले में नज़र नहीं आ रहा था बल्कि यह महल हकीकत बन गया था जिस की हर चीज़ को, बाग़ को, पौधों को हाथ लगाकर महसूस कर सकता था और सूंघ सकता था वह वहां सिपाही नहीं शहज़ादा था।

यह महल फ़िज़ा में तहलील हो गया और सिपाही ने बहुत देर बाद अपने आप को लड़की के आग़ोश में पाया। उसने लड़की से बहुत कुछ पूछा। लड़की ने उसे बताया कि हज़रत कह गये हैं कि यह शख़्स शहज़ादा था, और यह अब भी शहज़ादा बन सकता है। हज़रत यह मालूम करने की कोशिश कर रहे थे कि सिपाही के तख़्त व ताज पर किसका कब्ज़ा है। लड़की ने उसे कहा– "हज़रत कह गये हैं कि तुम अगर सात आठ रोज़ यहीं रहो तो वह सब कुछ मालूम कर सकेंगे और तुम्हें सब कुछ दिखा देंगे।"

❖

अगली रात वह फिर किले के उसी कमरे में बैठा था। उस ने चार रोज़ की छुट्टी ले ली

थी। उसे लड़की ने उसी प्याले में शरबत पिलाया और उसके हाथ में शीशे का गोला दे दिया गया। उसने किसी के बताये बग़ैर गोला अपनी आंखों के आगे रख लिया और कंदील की लौ को देखता रहा। उसे उसमें रंगा रंग शोले नाचते नज़र आये। स्याह रेश ने अपने तिल्सीमाती अन्दाज़ से कुछ बोलना शुरू कर दिया। उससे पहले वह दो बार उस अमल से गुज़र चुका था। दोनों बार ऐसे हुआ था कि उसे शीशे के गोले में तख़्ते सुलैमान और अगली रात महल नज़र आया था मगर उसके बाद गोला उसके हाथ में नहीं होता था। उसे जब गोले में कोई मंज़र नज़र आने लगता था तो स्याह रेश या लड़की सिपाही के हाथ से गोला लेकर अलग रख देती थी। अब तीसरी रात भी यही हुआ। स्याह रेश उसके सामने बैठ गया और उसकी आंखों में आखें डाल कर पुरअसर लहजे में जो धीमा–धीमा सा था कह रहा था– "यह फूल है, यह बाग़ है, मैं बाग़ में मौजूद हूं।" वह यही अल्फ़ाज़ दूहरा रहा था और लड़की सिपाही के साथ लगी बैठी उसके बालों में उंगलियां फेर रही थी।

सिपाही को बाग़ नज़र आ गया। ज़मीन ऊंची नीची थी और हरियाली से ढकी हुई। हर तरफ़ रंग बिरंगे फूल थे और उनकी महक नशा तारी करती थी। सिपाही ने बाग़ में एक ऐसी लड़की टहलते और गुनगुनाते देखा जो उस लड़की से बहुत ही ज़्यादा ख़ूबसूरत थी जो उसके साथ लगी बैठी थी। उसका लिबास एक ही रंग का था और यह रंग उन रंगों में नहीं था जो वह इस दुनिया में देखा करता था। सिपाही अब नागों वाले किले के कमरे में नहीं था। स्याह रेश हज़रत और उसके साथ की लड़की से वह बेख़बर और लातअल्लुक़ हो चुका था। वह किले से निकल ही गया था। उसने बाग़ में लड़की को देखा तो उसकी तरफ़ दौड़ पड़ा। लड़की भी दौड़ी और उसके गले का हार बन गयी। लड़की के जिस्म से फूलों की महक उठ रही थी। सिपाही शाह सुलैमान के ख़ानदान का शहज़ादा था। वह दोनों बाग़ के उस गोशे में चले गये जो एक ग़ार की मानिन्द था लेकिन यह ग़ार रंगा रंग बेलों और उनके फूलों ने बना रखा था। उसके फ़र्श पर मख़मल जैसी घास थी।

लड़की ने फूलों के उस ग़ार के एक कोने से एक ख़ुश्नुमा सुराही उठाई और प्याला भर कर सिपाही के हाथ में दे दिया। यह मिठी शराब थी। सिपाही पर लड़की के हुस्न और मोहब्बत का नशा तो पहले ही तारी था, शराब के नशे ने उसे उस से भी ज़्यादा हसीन और तिलिस्माती दुनिया में पहुंचा दिया और फिर लड़की ने उसे कहा वह अभी आती है। वह चली गयी। सिपाही को उसकी चींखे सुनाई दीं। वह बाहर को दौड़ा। उसे लड़की कहीं नज़र नहीं आई। वह दौड़ता ही रहा। उसे लड़की की दिलदोज़ चीख़ें सुनाई देती है मगर वह सिपाही को कहीं नज़र नहीं आती थी। उसने गुस्से से पागल होकर तलवार निकाल ली और लड़की की तलाश में बावला होता रहा। आख़िर उसे एक बुढ़िया मिली। उसने उसे बताया कि लड़की अब तुम्हें नहीं मिल सकेगी। वह जो लड़की को ले गया है, वह तुमसे ज़्यादा ताक़तवर है। तुम अब उसे कभी नहीं देख सकोगे। वह जो लड़की को ले गया है, अब उस तख़्त पर बैठेगा जिस पर तुम्हे बैठना था। उसके पीछे मत भागो। ज़िन्दा रहो और कभी मौक़ा पाकर उसे क़त्ल कर देना। लड़की तुम्हारी याद में हलकान होती रहेगी।

"वह कौन था जो उस लड़की को ले गया है?" सिपाही जब नागों वाले किले के उस कमरे में लौट कर आया तो उसने पूछा– "और मैं ने यह क्या देखा था?"

"तुमने अपनी गुज़री हुई ज़िन्दगी देखी है।" स्याह रेश ने उसे बताया– "मैं तुम्हे वापस ले आया हूं।"

"मैं वहां से वापस नहीं आना चाहता।" सिपाही ने बेताबी और बेचैनी से कहा– "मुझे वहीं भेज दो।"

"क्या करोगे वहां जाकर?" स्याह रेश ने उससे पूछा– "जिसकी ख़ातिर जाना चाहते हो वह किसी और के कब्ज़े में है। उसे जब तक कत्ल नहीं करोगे वह तुम्हें नहीं मिल सकेगी। मैं नहीं चाहता कि तुम किसी को कत्ल करो और मैं यह भी जानता हूं कि तुम उस इन्सान को कत्ल भी नहीं कर सकोगे।"

"या हज़रत! " सिपाही ने कहा– "अगर कत्ल करने से मुझे मेरा विर्सा और मेरी बीवी मिल सकती है तो मैं सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी से भी ऊंचे रुत्बे के आदमी को कत्ल कर दूंगा।"

"फिर यह ख़ून मेरी गिर्दन पर होगा मेरे दोस्त!" दुर्वेश ने कहा।

"सिपाही उसके कदमों में गिर पड़ा और उसके पांव पर सर रगड़ने लगा। वह "या हज़रत!, या हज़रत" का विर्द किये जा रहा था और वह रोने भी लगा था।

स्याह रेश हज़रत ने उसे फिर उसी दुनिया में पहुंचा दिया जहां तख़्ते सुलैमानी था, महल और बाग़ था। उसके कानों मे आवाज़ें पड़ती रहीं। "यह तुम्हारे दादा का कातिल, तुम्हारे बाप का कातिल, तुम्हारे तख़्त व ताज का ग़ासिब और उस लड़की की जो तुम्हे चाहती है उसी के कैद में है।"

"नहीं–नहीं" सिपाहीने घबरा कर कहा– "यह नहीं हो सकता। यह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी है।"

"यही तुम्हारी किस्मत का कातिल है।" उसके कानों में आवाज़ें पड़ रही थीं। "यह तुम्हारा सुल्तान नहीं हो सकता यह कुर्द है। तुम अरब हो। कहो– "सलाहुद्दीन अय्यूबी मेरे दादा का कातिल है। मेरे बाप का कातिल है। मेरे तख़्त व ताज का ग़ासिब है।" अब राज़ खुल गया है। इन्तकाम लो। ग़ैरतमन्द मर्द इन्तकाम लिया करते हैं।"

और सिपाही इस तिलिस्माती माहौल में घूमते फिरते यही विर्द करता रहा।

"सलाहुद्दीन अय्यूबी मेरे दादा का कातिल है। मेरे बाप का कातिल है। मेरे तख़्त व ताज का ग़ासिब है। मेरी मोहब्बत का कातिल है। मेरी किस्मत का कातिल है।"

❖

फिर यूं हुआ कि उसकी नज़रों के आगे सिर्फ़ सलाहुद्दीन अय्यूबी रह गया। वह उसे चलता फिरता नज़र आता था। सिपाही हाथ में ख़ज़र लिए उस के पीछे पीछे जा रहा था मगर कत्ल का मौका नहीं मिलता था। सिपाही को लड़की नज़र आ गयी। वह पिंजरे में बन्द थी। सलाहुद्दीन अय्यूबी पिंजरे के पास खड़ा कहकहे लगा रहा था। लड़की सिपाही को उदास

और मज़लूम नज़रों से देख रही थी। सुल्तान अय्यूबी के चेहरे पर सफ़्फ़ाकी और बर बरियत के साये गहरे होते जा रहे थे। सिपाही की जुबान ख़ामोश होती थी तो उसे फ़िज़ा से सरगोशियां सुनाई देती थीं। "सलाहुद्दीन अय्यूबी मेरे दादा का क़ातिल है। मेरे बाप का क़ातिल......"

सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने कमरे में अपने मुशीरों और आला हुकाम से जंग की बातें कर रहा था। जासूस जो नई इत्तलाएं लाये थे जिन के मुताबिक़ अपने प्लान पर नज़र सानी कर रहा था, और उस वक़्त यही मुहाफ़िज़ सिपाही बाहर पहरे पर खड़ा था जिसे स्याह रेश बुज़ुर्ग ने नई दुनिया दिखाई थी। मुशीर वग़ैरह बहुत देर बाद कमरे से निकले और सुल्तान अय्यूबी अकेला रह गया। सिपाही कमरे में चला गया और उसने तलवार सूंत कर कहा– "तुम मेरे दादा के क़ातिल हो, मेरे बाप के क़ातिल हो।" सुल्तान अय्यूबी ने चौंककर उसे देखा– "उसे आज़ाद कर दो वह मेरी है।" और उसके साथ ही उसने क़हर और ग़ज़ब से सुल्तान अय्यूबी पर तलवार का वार किया। सुल्तान ख़ाली हाथ था। वह फुर्ती से वार बचा गया। उसने बॉडीगार्ड के कमाण्डर को आवाज़ दी और लपक कर अपनी तलवार उठा ली। सिपाह ने और ज़्याद ग़ज़बनाक होकर उसपर हम्ला किया। अगर उसके मुक़ाबिले का तेग़ ज़न सुल्तान अय्यूबी न होता तो उस तजुर्बेकार सिपाही का वार ख़ाली नहीं जाता। सुल्तान अय्यूबी ने उसके वार सिर्फ रोके वार एक भी न किया जब कमाण्डर दौडता अन्दर आया तो सुल्तान अय्यूबी ने उसे कहा– "इस पर वार न करना। जिन्दा पकड़ो।"

सिपाही ने घूम कर कमाण्डर पर वार किया। इतने तीन चार बॉडीगार्ड अन्दर आ गये। सिपाही के कहर का यह आलम था कि उसने तलवार के वार पे वार करके किसी को क़रीब न आने दिया। वह चूंकि सुल्तान अय्यूबी को क़त्ल करना चाहता था। इसलिए वह उसी की तरफ लपकता और ललकारता था। "तुम मेरे दादा के क़ातिल हो। मेरे बाप के क़ातिल हो। मेरे तख़्त ताज के ग़ासिब हो।" आख़िर उसको पकड़ लिया गया। उससे तलवार छीन ली गयीं।

"ज़िन्दाबाद मेरे मुहाफ़िज़।" सुल्तान अय्यूबी ने ग़ुस्से का इज़हार करने के बजाय उसे ख़िराज तहसीन पेश किया और कहा– "सल्तनते इस्लमिया को तुम जैसे तेग़ ज़नों की ज़रूरत है।" बॉडीगार्ड कमाण्डर और दूसरे सिपाही हैरान थे कि यह किस्सा क्या है। सुल्तान अय्यूबी ने कमाण्डर से कहा– "तबीब को और हसन बिन अब्दुल्लाह को जल्द बुलाओ।" सिपाही को चार बॉडीगार्ड्ज़ ने जकड़ रखा था और वह चिल्ला रहा था। "यह मेरी मोहब्बत का क़ातिल है, यह मेरी किस्मत का क़ातिल है।"

एक बॉडीगार्ड ने उसके मुंह पर हाथ रखा लेकिन सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "उसे बोलने दो। हाथ हटा लो।" उसने सिपाही से कहा– "बोलो मेरे दोस्त बताओ तुम मुझे क्यों क़त्ल करने लगे थे?"

"उसे आज़ाद कर दो" सिपाही ने चिल्लाकर कहा– "तुम ने उसे पिंजरे में बंद कर रखा है। हज़रत ने मुझे कहा था कि मैं तुम्हे क़त्ल नहीं कर सकूंगा। आओ, मेरा मुक़ाबला करो। बुज़दिलों की तरह इतने आदमियों को अपनी जान बचाने के लिए तुम ने बुला लिया है।

तलवार निकालो। मेरी तलवार मुझे दो। मैदान में आओ।"

सुल्तान अय्यूबी उसे बड़ी ग़ौर से देखता रहा। बॉडीगार्ड सुल्तान अय्यूबी के इस हुक्म का इन्तज़ार कर रहे थे कि इस सिपाही को कैद खाने में डाल दिया जाये। उसका जुर्म मामूली नहीं था। उसने कातिलाना हम्ला किया था। अगर सुल्तान अय्यूबी बेख़बरी में बैठा होता या वह उस मुहाफ़िज़ को अन्दर आते देख न लेता तो उसका कत्ल हो जाना यक़ीनी था मगर सुल्तान अय्यूबी ने उसे कैद में डालने का हुक्म न दिया। मुहाफ़िज़ हिज़्यानी कैफ़ियत में बोल रहा था.....इतने में तबीब आ गया और उससे ज़रा बाद हसन बिन अब्दुल्लाह आ गया। अन्दर का मंज़र देखकर वह घबरा गया।

"इसे ले जायें।" सुल्तान अय्यूबी ने तबीब से कहा– "यह ग़ालिबन अचानक पागल हो गया है।"

"यह आज ही चार रोज़ की छुट्टी काट कर आया है।" बॉडीगार्ड कमाण्डर ने कहा– "जब से आया है ख़ामोश है।"

उसे घसीट कर बाहर ले गये। तबीब भी साथ ही चला गया। सुल्तान अय्यूबी ने हसन बिन अब्दुल्लाह को बताया कि इस सिपाही ने उस पर कातिलाना हम्ला किया है। हसन बिन अब्दुल्लाह ने इस शक इज़हार किया कि यह फ़िदाई होगा। सुल्तान अय्यूबी ने कहा कि यह सिपाही किसी वजह से दिमाग़ी तवाज़ुन खो बैठा है। हसन बिन अब्दुल्लाह को सुल्तान अय्यूबी ने कहा कि उस के मुतअल्लिक अच्छी तरह छान बीन की जाये।

❖

बहुत देर बाद तबीब सुल्तान अय्यूबी के पास आया और इन्कशाफ़ किया कि उस सिपाही को कई रोज़ मुसलसल नशे की हालत में रखा गया है और उसपर अमले तन्वीम (हिप्नाटिज़्म) किया गया है। तबीब ने उस की सांस सूंघ कर मालूम कर लिया था कि उसे नशा आवर चीज़ें खिलाई या पिलाई गयी हैं। उसने सुल्तान अय्यूबी को बताया– "यह अमले तिब के लिए कोई अजूबा नहीं। इसका मुज्जिद हसन बिन सबाह है। आप को मालूम होगा कि उसने एक नशाआवर शरबत तैय्यार किया था जिसमें ये असर था कि जो पी ले उसे निहायत हसीन और दिल नशीन मनाज़िर नज़र आते थे। उस कैफ़ियत में उसके कान में जो बात डाल दी जाये वह उसी को हक़ीक़ी रूप में देखने लगता था जो दरअसल तसव्वुर होता था। हसन बिन सबाह ने उसी नशे और अमले तन्वीम की बुनियादों पर एक जन्नत बनाई थी जिस में दाख़िल होने वाले वहां से निकलने पर आमादा नहीं होते थे। वह मुंह में मिट्टी और कंकरियां डाल कर समझते थे कि मुर्ग़िन खा रहे हैं। कांटों पर चलते तो समझते थे कि मख़मल पर चल रहे हैं। हसन बिन सबाह तो मर गया उसका यह शरबत और अमल पीछे रह गया। उसका गिरोह कातिलो का गिरोह बन गया। अपने मकासिद के लिए यह गिरोह हसीन लड़कियों और उस शरबत का इस्तेमाल करता है। इस सिपाही को आप के कत्ल के लिए उस अमल का शिकार बनाया गया है।"

तबीब ने यह तशख़ीस करके सिपाही को दवाइयां पिला दी थीं जिन्होंने उसकी हिज़्यानी

कैफियत पर काबू पा लिया था और वह गहरी नींद सो गया था। हसन बिन अब्दुल्लाह ने पहले ही तबीब से मालूम कर लिया था कि यह सिपाही अपनी हकीकी हालत में नहीं। वह सुराग़रसां था। उसने बॉडीगार्डों से यह मालूम कर लिया था यह सिपाही चार दिन की छुट्टी गया था लेकिन किसी को मालूम नहीं था कि उसने छुट्टी कहां गुज़ारी है। शहर में नागों वाले किले के मुतअल्लिक जो बातें मशहूर हो गयी थीं वह हसन बिन अब्दुल्लाह तक उसके जासूस के ज़रिए पहुंची थी। लोग कहते थे कि किले में एक बुज़ुर्ग नमुदार हुआ है जो गैब का हाल बताता है और मुरादें पूरी करता है। हसन बिन अब्दुल्लाह ने इन बातों की तरफ़ तवज्जो नहीं दी थी। उस किस्म के बुज़ुर्गों और पीरों पैग़म्बरों की आमद व रफ़्त लगी ही रहती थी। मज्ज़ूब और दिवाने आदमी को भी लोग बर्गुज़ीदा इन्सान कह कर उनसे मुरादें पूरी कराने लगते थे। हसन बिन अब्दुल्लाह को एक जासूस ने बताया कि उसने एक स्याह रेश आदमी को दो बार किले के अन्दर जाते देखा है।

किले के इर्द गिर्द घूमने फिरने वालों से पूछ गछ की गयी तो एक आदमी ने बताया कि स्याह दाढ़ी वाला और सफेद चुग़े वाला एक आदमी किले के अन्दर आता जाता देखा गया है। ऐसी चन्द और शहादतें हासिल करके हसन बिन अब्दुल्लाह ने सूरज गुरूब होने से पहले फौज के एक दस्ते से छापा मारा। मशालें साथ थीं। किला अन्दर से कुछ पेचीदा सा था। गिरी हुई दिवारों और छतों का मलबा भी था। कई कमरे सलामत थे। फौजियों को हर तरफ फैला दिया गया। किसी गोशे से शोर उठा। कुछ सिपाही उधर दौड़ गये। वहां दो सिपाही पड़े तड़प रहे थे। उनके सीनों में तीर उतरे हुए थे। कहीं से तीन चार तीर आये। तीन चार सिपाही और गिर पड़े। बाज़ सिपाही इस डर से पीछे हट आये कि यहां कोई इन्सान नहीं हो सकता। यह जिन भूत होंगे। हसन बिन अब्दुल्लाह हकीकत पसन्द इन्सान था। उसने सिपाहियों का हौसला बढ़ाया और उन्हें बताया कि यह तीर इन्सानों के चलाए हुए हैं। उसने घेरे की तरतीब बदल दी और घेरा तंग करने लगा। वहां कोई इन्सान नज़र नहीं आ रहा था। कहीं से दो चार तीर आते और दो चार सिपाही ज़ख्मी हो जाते थे।

हसन बिन अब्दुल्लाह ने फौज का एक और दस्ता मंगवा लिया। रात गहरी हो गयी थी। बेशुमार मशाले मंगवा ली गयीं। एक दस्ते का कमाण्डर उस कमरे तक पहुंच गया जहां सिपाही आता रहा था। उस डरावने खण्डहर में ऐसे सजे सजाये कमरे को देखकर सिपाही डर गये। यह जिन्नों का ही मस्कन हो सकता है। हसम बिन अब्दुल्लाह को बुलाया गया, उसने अन्दर जाकर सामान देखा तो उसपर राज़ खुलने लगे। इतने में चन्द एक सिपाहियों ने स्याह रेश वाले आदमी को कहीं से पकड़ लिया। उसके साथ एक ख़ूबसूरत लड़की थी। उनके बाद छः और आदमी कोनों खदरों में छुपे हुए पकड़े गये। उनके पास कमानें और तीर थे। स्याह रेश ने ख़ुदा का बर्गुज़ीदा इन्सान और तन्हाई में चिल्ला काटने वाला तारुकुद्दुनिया बनने की बहुत कोशिश की लेकिन इतनी हसीन और जवान लड़की और तीर व कमान से मुसल्लह अफ़राद और उनका फ़ौज के साथ मुकाबला उसे झुठला रहा था। उसके सामान पर कब्ज़ा कर लिया गया और उन सब को ले गये।

तीन चार मर्तबान, सुराहियां और प्याले भी बरामद हुए थे। यह चीज़ें रात को तबीब को दे दी गयीं। उसने मर्तबानों और सुराहियों को सूंघ कर ही बता दिया कि उनमें वह शरबत है जो हसन बिन सबाह की इजाद थी। इन तमाम आदमियों और लड़की को कैद ख़ाने में ले गये।

सुबह तुलूअ हो रही थी जब लड़की ने अज़ीयतों के पहले मरहले में ही बता दिया किय यह गिरोह फिदाइयों का है औ यह लोग नया हलफ़ लेकर आये थे कि सुल्तान अय्यूबी को कत्ल करके लौटेंगे वरना मर जायेंगे। लड़की ने बताया कि उस मुहाफ़िज़ सिपाही को स्याह रेश ने फांसा था और उसे नशा पिला कर उस पर अमल तन्वीम किया जाता था। सिपाही के ज़ेहन में उस नशे पर अमल के ज़रिए सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ ऐसी नफ़रत पैदा की गयी कि वह सुल्तान अय्यूबी को कत्ल करने के लिए चल पड़ा। इन लोगों को तवक्को थी कि सुल्तान अय्यूबी उस सिपाही के हाथों कत्ल हो जायेगा इसलिए वह इत्मिनान से किले में बैठे रहे। स्याह रेश जासूसी के लिए गया था लेकिन उसे कुछ पता नहीं चल सका, न उसे वह सिपाही कहीं नज़र आया। शाम के वक़्त अचानक फ़ौज आ गयी।

स्याह रेश बड़ा सख़्त जान निकला। उसने साफ़ कह दिया कि इस लड़की के साथ उसका कोई तअल्लुक नहीं। वह उस खण्डहर में एक वज़ीफ़े का चिल्ला करने आया था। उसके दूसरे साथियों ने भी पहले इन्कार किया लेकिन हसन बिन अब्दुल्लाह ने जब उन्हें तह ख़ाने में ले जाकर अज़ीयत रसानी के अमल में डाला तो उन्होंने बारी बारी अपने जुर्म का एतराफ़ कर लिया। स्याह रेश को जब उन के सामने खड़ा किया गया तो उस के लिए इन्कार की कोई सूरत न रही। उसने जब अपने साथियों की हालत देखी तो उस पर लरज़ा तारी हो गया। उसे कहा गया कि वह तमाम तर वाक़िआत पूरी तफ़सील से सुना दे तो उसे बा इज्ज़त तरीके से रखा जायेगा वरना उसे मुसलसल अज़ीयतों में डाल कर मरने भी नहीं दिया जायेगा और ज़िन्दा रहने के काबिल भी नहीं रहने दिया जायेगा। उसने तहख़ाने में अज़ीयत रसानी के सामान और तरीके देखे तो वह सब कुछ बताने पर रज़ामन्द हो गया।

उसके बयान के मुताबिक वह फ़िदाई कातिलों के गिरोह का आदमी था। फ़िदाइयों के सरग़ना शेख़ सन्नान का वह ख़ुसूसी तजुर्बाकार कातिल था, लेकिन वह अपने हाथों कत्ल नहीं करता था। उस का तरीकएकार इसी किस्म का था जो उसने इस वारदात में इस्तेमाल किया था। यह हसन बिन सबाह की इजाद थी। अगर उस फ़िर्के के मुतअल्लिक किताबें पढ़ी जायें तो उनमें इस तरीके की तफ़सीलात वाज़ेह हो जाती है। तमाम मुसन्नीफ़ीन ने राय दी है कि हसन बिन सबाह को ख़ुदा ने ग़ैर मामूली अक्ल अता की थी जो उसने शैतानी कामों में इस्तेमाल की। उस सिपाही को जिस तरह सुल्तान अय्यूबी के कत्ल के लिए इस्तेमाल किया गया वह उस फ़िर्के का एक आम तरीकाए कत्ल था। उस सिपाही की मिसाल से उस अनोखे तरीकए कत्ल की वज़ाहत हो जाती है। अगर इन्सानी नफ़सियात का मुतालआ किया जाये तो किसी को यूं अपना आला कार बनाना हैरान कुन नहीं लगता। उस सिपाही के लाशऊर पर कब्ज़ा करके उस में सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ नफ़रत डाली गयी फिर उसे जज़बए इन्तकाम में बदला गया।

स्याह दाढ़ी वाले ने बताया कि चूंकि सुल्तान अय्यूबी पर पहले चार कातिलाना हम्ले नाकाम हो चुके थे इस लिए इस शख़्स को भेजा गया था कि वह अपना ख़ुसुसी तरीका इस्तेमाल करे। सुल्तान अय्यूबी पर पहले चार हम्ले बराहे रास्त किये गये थे। यह देख लिया गया था कि सुल्तान अय्यूबी को सीधे तरीके से कत्ल नहीं किया जा सकता। स्याह रेश (जिसका नाम वकाअ निगारों के हां महफूज़ नहीं) अपने गिरोह के छः तजुर्बाकार आदमियों और एक लड़की को दमिश्क ले गया। उसने नागों वाले वीरान किले को अपना मस्कन बनाया। उस में यह गिरोह रात के अंधेरे में दाख़िल हुआ। उन्होने अपना सामान भी रात को वहां पहुंचाया। उस गिरोह के आदमियों ने शहर में यह अफवाह फैलाई कि किले में एक दुर्वेश नमुदार हुआ है जिस के हाथ में गैबी ताकत है और वह मुस्तकबिल की बातें बताता है। उन अफवाहों का मकसद यह था कि लोग किले में आयें और स्याह दुर्वेश को गैब से नमूदार होने वाला दुर्वेश या पैगम्बर तस्लीम कर लें। अपनी यह हैसियत मन्वा कर वह किसी एक या एक से ज़्याद आदमियों को कब्ज़े में लेकर सुल्तान अय्यूबी के कत्ल के लिए इस्तेमाल करना चाहता था, मगर ख़िलाफ़े तवक्को लोग किला में न आये जिस की वजह यह थी कि किले के मुतअल्लिक बड़ी डरावनी रिवायात मशहूर थीं। उन में यह रिवायत सबसे ज़्यादा ख़तरनाक थी दोनों नागों की उम्र एक हज़ार साल हो चुकी है और अब इन्सानों के रूप में ज़ाहिर होते हैं और कोई उन के करीब जाये तो उसे निगल लेते हैं।

गिरोह का सरग़ना मंझा हुआ कातिल था। उसके दिमाग़ में यह स्कीम आई कि सुल्तान अय्यूबी के दस्ते के किसी सिपाही को इस्तेमाल किया जाये। चुनांचे वह कई रोज़ यह देखता रहा कि मुहाफ़िज़ दस्ते के सिपाही कहां रहते हैं और उनकी ड्यूटी किस तरह लगती है। वह सुल्तान अय्यूबी के दफ़्तर तक और घर तक न पहुंच सका क्योंकि उन दोनों के करीब कोई शहरी या फौजी नहीं जा सकता था। यह मम्नूआ इलाका था। ताहम उस उस्ताद ने इस मुहाफ़िज़ सिपाही को देख लिया और किसी तरह यह भी मालूम कर लिया कि वह सुल्तान अय्युबी के दफ़्तर के मुहाफ़िज़ों में से है। यानीयह आसानी से सुल्तान अय्यूबी तक पहुच सकता था। उसने इस सिपाही पर नज़र रखी। उस वक़्त स्याह रेश का हुलिया कुछ और था। एक रोज़ यह सिपाही उसे बाहर जाता नज़र आ गया। स्याह रेश ने उसे रास्ते में रोक लिया और उसके साथ ऐसी बातें कीं जिन्हें कोई इन्सान ख़्वाह वह कितनी ही मज़बूत शख़्सियत का हो नज़र अन्दाज़ नहीं कर सकता। उन बातों के लिए जो लब व लहजा इख़्तियार किया गया जो आदाकारी की गयी वह इन्सानी फ़ितरत पर तिल्सिमाती असर करती है। यह सिपाही मामूली से ज़ेहन का पसमान्दा आदमी था, जाल में आ गया और रात को किले में पहुंच गया।

किले के एक कमरे में जो एहतमाम किया गया था वह पत्थरों को मोम करने के लिए काफी था। एक तो कमरे की सजावट थी, और बेश किमत कालीन। दूसरे यह लड़की थी जिस के हुस्न में और जिस्मानी साख़्त में जादू था। उस का लिबास ऐसा था जिस में वह नीम उरियां थी और उसके खुले हुए रेशमी बालों की तासिर नशा तारी करता था। स्याह रेश के कहने के मुताबिक यह लड़की, उस का लिबास और अन्दाज़ ज़ाहिदों और परहेज़गारों में भी

हैवानी जज़्बा बेदार कर देता था। तीसरी और असल चीज़ वह शरबत था जो वह लोग अपने शिकार को पिलाते थे। शीशे का गोला फ़रेबे नज़र पैदा करने के लिए था। उस सिपाही के ज़ेहन में यह डाला गया कि वह शाही ख़ानदान का फ़र्द है और उसका ख़ानदान तख़्ते सुलैमान का वारिस है। तख़्ते सुलैमान का वजूद था या नहीं, दिलचस्प कहानियों में उस का बहुत ज़िक्र आता है और ऐसे अन्दाज़ से आता है कि यह एक हसीन और पुर इसरार तसव्वुर की तरह लोगों के ज़ेहनों पर सवार हो जाता है।

यह सिपाही जब उस कमरे में दाख़िल हुआ तो कमरे की रिहाईश और क़ीमती सामान ने उसे मुतासिर किया। स्याह रेश मुराक़बे की हालत में था। उसका भी असर था। उसने जब इतनी हसीन लड़की देखी तो मरऊब हो गया। लड़की ने उसे जो शरबत पिलाया उसमें नशा था। उस नशे का असर यह था कि इन्सान हक़ीक़ी दुनिया से लातअल्लुक़ हो कर हसीन तसव्वुरात की दुनिया में चला जाता है। उस कैफ़ियत में उस पर अमले तन्वीम किया जाना यानी उसे हिप्नोटाइज़ कर लिया जाता और उस के ज़ेहन में अपने मतलब के तसव्वुरात डाले जाते थे। उसके हाथ में जो शीशे का गोला दिया जाता था उसमे क़न्दील की लौ के कई रंग नज़र आते थे। जो कोई अजूबा नहीं था। शीशे की साख़्त ऐसी थी कि उसमें से गुज़रती रौशनी अपने सातों रंगों में नज़र आती थी। उन रंगों का ज़ेहन पर असर होता था। उसके साथ एक इन्तेहाई हसीन लड़की सिपाही के साथ लग कर बैठ जाती और बातों में यह ज़ाहिर करती थी कि वह उसे दिल व जान से चाहती है। स्याह रेश सुरीली और पुर असर आवाज़ में बोलने लगता था। उसके अल्फ़ाज़ सिपाही के कान में पड़ते और उसके ज़ेहन में मतलूबा तसव्वुर आरास्ता करते थे। स्याह रेश भांप लेता था कि सिपाही अपने आप में नहीं रहा। उस वक़्त वह उस के हाथ से शीशे का गोला लेकर उसकी आंखों में आंखे डाल देता और उसे हिप्नोटाइज़ कर लेता था।

सिपाही जिसे अपनी आवाज़ समझता था वह स्याह रेश की आवाज़ होती थी। फिर वह उस मरहले में दाख़िल हो जाता था जहां वह अपने तसव्वुर को हक़ीक़ी समझ कर उस का हिस्सा बन जाता था। कमज़ोर शख़्सियत के सिपाही ने यह असरात क़ुबूल कर लिए। स्याह रेश उसे हक़ीक़ी दुनिया में वापस ले आया। उस मक़सद के लिए उसे कुछ सूंघाया जाता था। स्याह रेश दूसरे कमरे में चला जाता और लड़की सिपाही के साथ अकेली रह जाती। वह सिपाही के असाब और दिमाग़ पर ग़ालिब आ जाती। उस मक़सद के लिए वह ऐसी हरकात और ऐसी बातें करती थी जिसके असर से कम अज़ कम यह सिपाही बच नहीं सकता था। सिपाही को सिर्फ़ तख़्ते सुलैमान दिखाकर रूख़सत कर दिया गया और उस के ज़ेहन में यह डाल दिया गया कि राज़ अभी बाक़ी है। सिपाही के दिल में तजस्सुस पैदा हो गया। दूसरी बार उस पर यही अमल किया और उसे कुछ और दिखा दिया गया। उन्होंने यह देख लिया था कि सिपाही पूरी तरह उनके जाल में आ गया और वह उस के ज़ेहन पर क़ब्ज़ा करने में कामयाब हो गये थे। वह अब उन की मिन्नत समाजत करता था कि उसे सारा राज़ बता दिया जाये। उसे कहा गया कि वह कई रोज़ उनके पास रहे। उसने छुट्टी ले ली। वह यही चाहते थे।

उन चार दिनों और चार रातों के अर्से में मुसलसल नशे और हिप्नोटिज़्म के ज़ेरे असर रखा गया और उसके ज़ेहनी लाशऊर में सलाहुद्दीन अय्यूबी का तसव्वुर पैदा करके यह बात डाल दी गयी कि सुल्तान अय्यूबी सिपाही के दादा और बाप का क़ातिल है और उसके तख़्त पर भी उसने कब्ज़ा कर रखा है। सिपाही को एक हसीन लड़की का तसव्वुर दिखाया गया, फिर यह दिखाया गया कि सुल्तान अय्यूबी ने उस लड़की को पिंजरे में बन्द कर दिया है। चार रोज़ बाद उसे उसी हालत में क़िले से निकाल दिया गया। वह अपनी ड्यूटी पर हाज़िर हो गया। उसे ज्योंहि मौक़ा मिला उसने सुल्तान अय्यूबी पर हम्ला कर दिया।

❖

सिपाही बेहोश पड़ा था। तबीब ने उसके ज़ेहन से नशाआमर शरबत का असर ज़ाइल करने के लिए दवाई दी थी। वह हक़ीक़त और तसव्वुरात के दर्मियान भटक रहा था। मालूम नहीं उसके असाब पर कैसे कैसे असरात थे कि असरात उतरते ही असाब जवाब दे गये। तबीब ने उसे होश में लाने के कुछ तरीक़े इख़्तियार किये और दो रोज़ बाद सिपाही ने आंख खोली। वह इस तरह उठा जैसे गहरी नींद सो गया था और ख़्वाब देखता रहा था। अपने इर्द गिर्द खड़े आदमियों को हैरत से देखने लगा। तबीब ने उसे पूछा कि वह कहां था? उसने कहा कि वह सोया हुआ था। बहुत देर बाद वह अपने आप में आया तो वह ज़्यादा कुछ न बता सका। उसने बताया कि स्याह दाढ़ी और चुग़े वाला एक आदमी उसे क़िले में ले गया था। वहां उसने कुछ और बातें भी बतायीं लेकिन उसे बिल्कुल याद नहीं था कि उसने तख़्त सुलैमानी वग़ैरह देखा है। उसे यह भी याद नहीं था कि उसने सुल्तान अय्यूबी पर तल्वार से हम्ला किया था।

यह यक़ीन करने के लिए कि सिपाही धोखा नहीं दे रहा, उसे सुल्तान अय्यूबी के सामने ले जाया गया। उस ने फ़ौजियों की तरह सुल्तान को सलाम किया। सुल्तान अय्यूबी ने उसके साथ शफ़क़त और प्यार से बात की मगर वह हैरान था कि उन लोगों को क्या हो गया है और यह क्या कर रहे हैं। आख़िर उससे बताया गया कि उसने क्या किया है तो वह चिल्ला उठा— "यह झूठ है। मैं अपने सुल्तान पर हम्ला नहीं कर सकता।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा यह बेगुनाह है। इसे याद ही न कराया जाये कि उसने क्या किया है।

❖❖

सलीब के साये में

कत्ल का यह तरीका सलाहुद्दीन अय्यूबी के फ़ौजी हाकिमों वग़ैरह के लिए बड़ा ही अजीब था कि सुल्तान अय्यूबी पर जान कुर्बान करने वाले एक मुहाफ़िज़ के ज़ेहन को अपने कब्ज़े में ले कर सुल्तान अय्यूबी पर ही क़ातिलाना हम्ला कराया। अल्लाह ने करम किया कि सुल्तान अय्यूबी बाल बाल बच गया। उस वाक़िआ के फ़ौरन बाद सुल्तान अय्यूबी ने जो कान्फ्रेंस बुलाई उसमें दमिश्क़ की इन्तेज़ामिया और फ़ौज के हुक्काम बुलाये गये थे। उन सब के मिज़ाज उखड़े हुए थे। सब ग़ुस्से से भरे हुए थे। वह सब सुआलेह और उसके उमरा वुज़रा से बहुत जल्द इन्तक़ाम लेने को बेताब हुए जा रहे थे जिन्होंने सुल्तान अय्यूबी को क़त्ल करने की साज़िश की थी। वह समझते थे कि सुल्तान ने उन्हें क़ातिलाना हम्ले पर ग़ौर व ख़ौज़ करने के लिए बुलाया है लेकिन सुल्तान आया तो उसने उस वाक़िआ का ज़िक्र ही न किया जैसे उसकी कोई अहमियत ही नहीं थी। उसे उस वक़्त तक जासूस ने दुश्मन की सरगर्मियों की जो इत्तलाआत दी थीं वह उनके मुताबिक़ अपने प्लान की तबदीली के मुतअल्लिक़ सब को आगाह कर रहा था। उसका रवैया और अन्दाज़ सर्द था।

ज्योंहि उसने अपना लेक्चर ख़त्म किया सब भड़क उठे। वह इन्तकाम की बातें कर रहे थे। सुल्तान अय्यूबी ने बे नेयाज़ी से मुस्कुरा कर वही बात कही जो वह पहले भी कई बार कह चुका था। "इशतआल, ग़ुस्से और जज़्बात से बचो। दुश्मन आप को मुशतअिल करके ऐसी कार्रवाई पर मजबूर करना चाहता है जिस में अक़ल की बजाये जज़्बात और ग़ुस्सा हो। मेरा तमाम तर मन्सूबा एक किस्म की इन्तक़ामी कार्रवाई है लेकिन इन्तक़ाम अपनी ज़ात का नहीं अपने मज़हब का। मेरी जान और मेरी ज़ात और तुम में से हर किसी की जान और ज़ात की इससे बढ़ कर कोई अहमियत नहीं कि तुम इस्लाम और सल्तनते इस्लामिया के पासबान हो तुम सब को जाने कुर्बान करनी हैं। मैदाने जंग में मारे जाओ ख़्वाह धोखे में दुश्मन के हाथों क़त्ल हो जाओ हुक्मरान और मुजाहिद में यही फ़र्क़ है। हुक्मरान अपनी हुकूमत की और अपनी ज़ात की हिफ़ाज़त करता है। मुजाहिद अपने मुल्क व मिल्लत पर कुर्बान होता है। अस्सुआलेह और उसके अमीर वज़ीर अपनी बादशाही की हिफ़ाज़त कर रहे हैं। यह इहकामे ख़ुदावन्दी की ख़िलाफ़ वर्ज़ी है इस लिए वह नाकाम होंगे।"

उसने अपनी इन्टेलीजेंस के नायब सरबराह हसन बिन अब्दुल्लाह से कहा कि वह ऐसे तमाम खण्डहरों और पुरानी इमारतों को जिनका कोई मस्रफ़ नहीं मिस्मार करा दे। उसने यह हिदायात भी जारी कीं कि मस्जिदों में इस मौज़ूअ पर ख़ुत्बे दिये जाएं कि दोनों जहां का हाकिम ख़ुदा है और ग़ैब का हाल उसके सिव किसी को मालूम नहीं। ख़ुदा का कोई बन्दा

ख़ुदा और बन्दों के दर्मियान राब्ते का ज़रिआ नहीं बन सकता। ख़ुदा हर किसी की सुनता है और किसी इन्सान के आगे सज्दा जाइज़ ही नहीं गुनाह है। तौहुम परस्ती से लोगों को बचाओ। उसने कहा– "अपने सिपाहियों को समझाओ कि जिस तरह मैदाने जंग मे अपने जिस्म को दुश्मन की तलवार से बचाते हो, उसी तरह ज़ेहन और दिल को दुश्मन की वार से बचाओ। यह वार तलवार का नहीं ज़ुबान का होता है। जिस्म के ज़ख़्म मिल जाते हैं। जिस्म ज़ख़्मी हो कर भी लड़ता रहता है मगर ज़ेहन और दिल पर ज़ख़्म आ जाये तो जिस्म बेकार हो जाता है। तुमने नशे का असर देख लिया। मेरे अपने मुहाफ़िज़ ने मुझ पर ही हम्ला कर दिया। जब नशा उतरा तो वह मान नहीं रहा था कि उसने मुझ पर हम्ला किया है। इस नशे में एक ख़ूबसूरत लड़की का नशा भी शामिल था। यह भी याद रखो कि यह हालत सिर्फ़ उन लोगों की होती है जिन्हें तुम अपना गुलाम और मवेशी बना लेते हो। उन में ज़िम्मादारी का और मुसलमान की अज़्मत का एहसास बेदार करो। उन पर ज़िम्मादारियों और क़ौमी वक़ार का नशा तारी कर दो। मुल्क व मिल्लत का वक़ार और उस वक़ार का दिफ़ाअ उन के ईमान में शामिल कर दो, फिर उन पर कोई और नशा तारी नहीं हो सकेगा।"

सुल्तान अय्यूबी ने हम्ले का जो प्लान बनाया था उसके मुताबिक़ किला ब किला आगे बढ़ना था। मज़बूत और मशहूर किले हमिस, हलब और हमात के थे। हलब शहर अलग था। उसके दिफ़ाई इन्तेज़ाम मज़बूत थे और शहर से कुछ दूर किला था जिसे किला हलब कहा जाता था। उन के अलावा कई और किला बन्दिया थीं जिन में ज़्यादा तर पहाड़ी और दुशवार गुज़ार इलाक़े में थीं। सब से बड़ी दुश्वारी उस इलाक़े की सर्दी थी। पहाड़ियों पर बर्फ़ बारी भी होती थी जो सर्दी में इज़ाफ़ा कर देती थी। चूंकि वहां सर्दियों में कभी लड़ाई नहीं होती थी इस लिए मुख़ालेफ़िन ने अपनी फ़ौज जो मुख़्तलिफ़ उमरा के ज़ेरे कमान थी किला बन्द कर दी थी। उनके सलीबी मुशीरों ने भी उन्हें यही मश्वरा दिया था। इधर सुल्तान अय्यूबी ने सर्दियों मे ही लड़ने का अहद कर लिया था। उसे जासूस मुसलसल ख़बरें दे रहे थे।

इन ख़बरों में एक इत्तलाअ यह भी थी कि हलब की मस्जिदों में इमाम और ख़तीब लोगों को इस मौज़ूअ पर वाअज़ और ख़ुत्बे दे रहे हैं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी वह गुनहगार इन्सान है जिसने बादशाही के लालच और नशे में और जंगी ताक़त के घमण्ड में ख़लिफ़ा का नाम ख़ुत्बे से निकाल दिया है। सुल्तान अय्यूबी को अय्याश और बदकार कहा जा रहा था, और यह भी कि ख़ुत्बे में ख़लीफ़ा का नाम न लिया जाये तो ख़ुत्बा नामुकम्मल होता है और नामुकम्मल ख़ुत्बा गुनाह है। सरायों, मुसाफ़िरख़ानों और बाज़ारों में भी यही अल्फ़ाज़ सुने और सुनाये जा रहे थे कि सलाहुद्दीन अय्यूबी अय्याश और बदकार है और नाम का मुसलमान है।

उसके साथ ही जासूसों की इत्तलाअ के मुताबिक़ लोगों में सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ जंगी जुनून पैदा किया जा रहा था अस्सुआलेह की फ़ौज थोड़ी थी। आधी फ़ौज सिपाहसालार जव्वाद के ज़ेरे कमान सुल्तान अय्यूबी के साथ मिल गयी थी। लिहाज़ा अस्सुआलेह के मुफ़ाद परस्त मुसलमान उमरा और हुदमरान शहरियों को लड़ने के लिए तैय्यार कर रहे थे। इन मंसूबों में सलीबियों ने इस तरह जान डाल दी थी कि जिन इलाक़ों पर

उनका कब्ज़ा था वहां के सलीबी बाशिन्दों की ख़ासी तादाद को हलब, मुसिल और दिगर क़स्बों और देहातों में इन हिदायात के साथ आबाद कर दिया था कि वह वहां के मुसलमानों को सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ भड़काते और उक्साते रहें।

जासूसों ने बताया था कि हलब में शहरियों ने जंगी तरबियत का इन्तेज़ाम कर लिया है। हर कोई हथियारों की ज़ुबान में बात कर रहा था। जंगी जुनून के साथ लोगों पर इज़्तरारी और हिज़्यानी कैफ़ियत भी तारी हुई जा रही थी। अलबत्ता पुराने उम्र के मुसलमान बहुत ही परेशान थे और कहते थे कि यह कयामत की निशानी है कि मुसलमान मुसलमान से टकरायेगा मगर उन की आवाज़ सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ नारों और बुहतान तराशी के शोर व ग़ुग़ा में दबी जा रही थी। यह आवाज़ सलीबियों के अज़ाइम के ख़िलाफ़ थी इसलिए उन्होंने उसे दबाने का ख़ास इहतमाम किया था। यह सारा मंसूबा दर असल था ही सलीबियों का। कई एक मस्जिदों से पुराने इमामों और ख़तीबों को निकाल दिया गया था क्योंकि वह मेम्बर पर खड़े होकर मुसलमान को मुसलमान के ख़िलाफ़ भड़काने का गुनाह नहीं करना चाहते थे।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि अस्सुआलेह ने त्रीा .ली के सलीबी हुक्मरान रिमाण्ड को ज़र व जवाहरात और बे अन्दाज़ा ख़ज़ाना इस काम की उजरत के लिए भेज दिया था कि सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ जंग की सूरत में वह उसे जंगी मदद देगा। रिमाण्ड ने यह उजरत वसूल करके अपने चन्द एक फ़ौजी कमाण्डर मुशीरों की हैसियत से हलब भेज दिये थे। उनमें इन्टेलीजेंस का एक माहिर था जो तख़रीबकारी में भी महारत रखता था। उन मुशीरों ने आते ही हलब में मुसलमान फ़ौजों की मुश्तरका हाई कमाण्ड बना दी थी। फ़ौजें मुख़्तलिफ़ किलों में थीं। उन फ़ौजों के कमाण्डरों में सैफ़ुद्दीन वालिये मुसिल, एक किलादार गुमश्तग़ीन जिसे गर्वनर का दरजा हासिल था, सुल्तानुलमुल्क अस्सुआलेह और अज़ीज़ुद्दीन क़ाबिले ज़िक्र हैं। रिमाण्ड ने उन्हें यक़ीन दिलाया था कि जंग की सूरत में वह मिस्र से सलाहुद्दीन अय्यूबी की कुमक और रस्द को रोके रखेगा और वह जहां कहीं मुहासिरा करेगा, सलीबी फ़ौज बाहर से हम्ला करके मुहासिरा तोड़ देगी।

❖

दमिश्क़ में सुल्तान अय्यूबी दूसरे तीसरे दिन तमाम कमाण्डरों की कान्फ्रेंस बुलाता था। फ़ौजों की ट्रेनिंग ख़ुद भी देखता और कमाण्डरों से रिपोर्ट भी लेता था। रातों को कपड़ों के बेग़ैर ट्रेनिंग देकर उसने अपनी फ़ौज को सर्दियों में लड़ने के लिए तैय्यार कर लिया था। क़रीब चट्टानें थीं। उसने सेहरा में भागने दौड़ने वाले घोड़ों को चट्टानों पर चढ़ने और उतरने का आदी बना दिया था। उधर हलब में भी दो तीन कान्फ्रेंसें हो चुकी थीं वहां के कमाण्डरों को यह इत्तलाअ मिल चुकी थी कि सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज रात को जंगी मश्क़ें करती है लेकिन उन्होंने उसे कोई अहमियत नहीं दी थी। वह कहते थे कि अय्यूबी का दिमाग़ ख़राब हो गया है। हमारे सामने आयेगा तो उस के होश ठिकाने आ जायेंगे। उन कमाण्डरों में कोई एक भी इन्टेलीजेंस की सूझ बूझ नहीं रखता था। यह इहतमाम भी सलीबियों ने किया

था कि दमिश्क़ में जासूस भेजे थे और शेख़ सन्नान ने फ़िदाई क़ातिल और तख़रीबकार भेजे थे, मगर रिमाण्ड ने अपना एक माहिर भेज दिया तो उसने इस इत्तलाअ पर तवज्जो दी कि सुल्तान अय्यूबी रातों को क्यों जंगी मश्क़े करा रहा है। उसने हलब के कमाण्डरों की कान्फ्रेंस में अभी यह मसला पेश नहीं किया था। वह अभी उस की वजह मालूम नहीं कर सका था।

सुल्तान अय्यूबी ने तो हलब और मुसिल वग़ैरह में जासूसों का जाल बिछा दिया था। उनकी जमीन दोज़ मरकज़ी कमाण्ड हलब में थी और कमाण्डर एक आलिम फ़ाज़िल के बहरूप में था जो तमाम जासूसों से ख़बरे लेता और दमिश्क़ भेजने का इन्तज़ाम करता था। वह अपने जासूसों की हिफ़ाज़त का और उन्हें ख़तरे के वक़्त रूपोश करने का बन्दोबस्त भी करता था। सलाहुद्दीन अय्यूबी को बुरा भला कहने में वह पेश पेश था। जहां लोग उसका एहतराम करते थे वहां अमीर, वज़ीर, और ऊंची हैसियत के शहरी भी उसे इज़्ज़त की निगाह से देखते थे। उस के जासूसों का गिरोह हर ज़रूरी जगह मौजूद था अल्मलकुस्सालेह के महल के बॉडीगार्ड्ज़ में भी जासूस मौजूद थे। दो जासूस ख़ुसूसी पहरेदारों की हैसियत से ख़लीफ़ा की मरकज़ी कमाण्ड की उस इमारत तक भी पहुंच गये थे जहां उन की जंगी कान्फ्रेन्स मुनअक़िद होती थीं।

सलीबी जासूसों के कमाण्डर ने आते ही एक तो इस पर तवज्जोह दी कि दमिश्क़ में जासूसी के निज़ाम को मज़बूत और कारगर बनाया जाय और हलब में सुल्तान अय्यूबी के जो जासूस हैं उसका सुराग़ लगाया जाये।

सुल्तान अय्यूबी ने उन दो जासूसों में जो हलब की हाई कमाण्ड के पहरेदारों में शामिल हो गये थे एक ख़िल्लत नाम का जासूस था। एक इमारत के कई छोटे कमरे थे और उस में एक हॉल था जो ज़ियाफ़तों, नाच गाने और दरबार मुनअक़िद करने के काम आता था। ख़ूब सजा हुआ था। जब से हलब के अमीरों वज़ीरों ने सलीबियों के साथ दोस्ताना गांठा था, उस हाल को और ज़्यादा सजा दिया गया था। नाच गाने का ख़ुसूसी इहतमाम किया गया था। नाचने वालियां जो रखी गयी थी वह चुनी हुई ख़ूबसूरत, जवान और फ़न की माहिर थीं। उन रक़्क़ासाओं में सलीबियों ने अपनी लड़कियों का इज़ाफ़ा कर दिया था। यह पेशावर लड़कियां थीं जो अस्सुआलेह के अमीरों वज़ीरों को उंगलियों पर नचाती रहती थीं। उनका काम यह था कि उस के ख़ुसूसी दरबारियों, उमरा और फ़ौज के आला कमाण्डरों पर नज़र रखें और भांपती रहें कि उनमें कोई सुल्तान अय्यूबी का वफ़ादार तो नहीं। इसके अलावा यह लड़कियां उन आला हुक्काम वग़ैरह के दिलों में सलीबियों की मोहब्बत और सलीब की वफ़ादारी पैदा करने की कोशिश करती थीं।

कभी-कभी उस हाल में ज़्याफ़त होती थी जिस में शराब के मटके ख़ाली होते, रक़्स होता और जब शराब अपना रंग दिखाती तो बदकारी इन्तेहा को पहुंच जाती थी। उस बड़े कमरे में जंगी कान्फ्रेंस भी होती थीं। उसके बड़े दरवाज़े पर बॉडीगार्ड्ज़ के दो पहरेदार कमर से तलवारें और हाथों में बरछियां लिए मुस्तैद रहते थे। तीन चार घंटों बाद पहरेदार बदलते थे। ख़िल्लत सुल्तान अय्यूबी का जासूस था। उस के साथ एक और पहरेदार भी जासूस था।

उन दोनों का पहरा इकट्ठा लगा करता था। उन्होंने यहां से बहुत सी मालूमात हासिल कीं और दमिश्क भेजी थीं। एक शाम एक नई रक़्क़ासा आई। उस शाम हाल में ज़्याफ़त थी। मेहमान भी आ रहे थे। नाचने गाने वालियां और दूसरी लड़कियां भी आ रही थीं। ख़िल्लत और उसका साथी उन सब को जानते पहचानते थे। दूर दूर के किलादार भी आये हुए थे। मेहमानों में एक आदमी नया था। यह रिमाण्ड का भेजा हुआ जासूस का कमाण्डर था। ख़िल्लत ने मालूम कर लिया था कि यह कौन है। उसे अब उस की सरगर्मियां देखनी थीं।

इसके अलावा उसने एक और नया चेहरा देखा। यह एक लड़की थी जिसे वह तीन चार दिनों से देख रहा था। यह नयी आई थी। ख़िल्लत अपने साथी के साथ ड्यूटी ख़त्म करके जा रहा था कि यह लड़की सामने आ गयी। वह ठिठक गया। यह चेहरा उसे जाना पहचाना लगा मगर वह समझा कि चेहरों में मुशाबेहत भी होती है। उसने तवज्जा हटा ली लेकिन उस लड़की ने उसे कुछ ज्यादा ही ग़ौर से देखा और उसे देखती आगे निकल गयी। ख़िल्लत ने घूम कर देखा तो लड़की रुक कर उसे देख रही थी। दूसरे दिन भी ऐसे ही हुआ। ख़िल्लत ने यह मालूम कर लिया था कि यह रक़्क़ासा है। वह कोई शहज़ादी मालूम होती थी। ख़िल्लत सिपाही था। उस का ऐसी लड़की के साथ कोई तअल्लुक़ नहीं हो सकता था। यह शहज़ादी किस्म की रक़्क़ासा तो अमीरों की मिल्कियत थी। अलबत्ता ख़िल्लत को एक और लड़की की याद आ गयी थी जिस की शकल व सूरत उस रक़्क़ासा से मिलती जुलती थी।

❖

वह ग्यारह बारह साल पहले की बात थी जिसकी याद ख़िल्लत के ज़ेहन से महव होती जा रही थी। उस वक़्त ख़िल्लत सतरह अठ्ठारह साल का नौजवान था। वह दमिश्क से थोड़ी दूर एक गांव में रहता था और अपने बाप के साथ खेती बाड़ी करता था। वह ख़ूबरू भी था और उस की तबीयत बहुत शगुफ़्ता थी। हँसी मज़ाक़ ज़्यादा करता था और हाज़िर जवाब भी था। इसीलिए गांव में बच्चे से बूढ़े तक उसे सब बहुत चाहते थे। हिजरत का सिलसिला तो चलता ही रहता था जिन इलाक़ों पर सलीबी क़ाबिज़ थे वहां से मुसलमान कुम्बे सलीबियों के ज़ौर व सितम से तंग आकर मुसलमानों की हुक्मरानी के इलाक़ों में आते रहते थे। मुक़ामी लोग उनकी मदद इमदाद करते और उन्हें आबाद कर लेते थे। ऐसा ही एक कुम्बा कहीं से हिजरत करके ख़िल्लत के गांव में आ गया। उस में हमीरा नाम की एक बच्ची थी जिस की उम्र उस वक़्त ग्यारह बारह साल थी। ख़ूबसूरत बच्ची थी।

गांव वालों ने उस कुम्बे को आबाद कर लिया और खेती बाड़ी के लिए ज़मीन और सामान भी मुहैया कर दिया। हमीरा के बहन भाई छोटे थे। काम करने के क़ाबिल सिर्फ़ बाप था। ख़िल्लत ने उसका हाथ बटाना शुरू कर दिया। हमीरा को ख़िल्लत की बातें अच्छी लगती थीं और ख़िल्लत को यह बच्ची अच्छी लगती थी। वह ख़िल्लत के घर आ जाया करती। घर हो या खेत हमीरा उससे कहानियां ज़रूर सुनती थी। ख़िल्लत दिलचस्प किस्से गढ़ लिया करता था। दो चार माह बाद हमीरा के बाप ने खेती बाड़ी में दिलचस्पी लेनी छोड़ दी। दमिश्क करीब था। वह शहर में चला जाता और शाम को वापस आता था। एक साल गुज़रा तो उसने

खेती बाड़ी ख़त्म कर दी। किसी को मालूम नहीं था कि उसने कौन ज़रिया मआश इख़्तियार कर लिया है। अलबत्ता उस कुम्बे की हालत बेहतर होती जा रही थी।

हमीरा ख़िल्लत में घुल मिल गयी थी। वह खेतों में काम करने जाता तो हमीरा वहां चली जाती। घर में होता तो वहां आ जाती। अब वह तेरह साल की हो गयी थी और अच्छा बुरा समझने लगी थी। एक रोज़ ख़िल्लत ने उससे पूछा कि उस का बाप क्या काम करता है। हमीरा ने बातया कि उसे यह तो मालूम नहीं कि वह क्या करता है और पैसे कहां से लाता है। उसे सिर्फ़ यह पता है कि उसका बाप अच्छा आदमी नहीं। वह शहर से कोई नशा करके आता है। हमीरा ने एक नई बात बताई। उसने कहा– "यह शख़्स मेरा बाप नहीं है। मेरे मां–बाप मर गये थे। मैं पांच छः साल की थी। उसने मुझे संभाल लिया और अपने घरले आया। फिर मैं उसी को अपना बाप कहने लगी। मेरे साथ यह अपनी बेटियों जैसा सलूक करता है। मगर अच्छा आदमी नहीं।"

डेढ़ दो साल गुज़र गये। ख़िल्लत में हमीरा की बचपने की दिलचस्पी मोहब्बत में बदल गयी। शबाब ने हमीरा के चेहरे पर बड़ा ही दिलकश निखार पैदा कर दिया था और क़द भी बढ़ कर ज़ाज़िबे नज़र हो गया था। एक रोज़ वह ख़िल्लत से मिली। बहुत परेशान थी। उस ने ख़िल्लत को बताया कि उसे शक है कि उसका बाप उसे शादी के बहाने किसी अजनबी के हवाले करना चाहता है। यह शक उसे इस तरह हुआ था कि उसके बाप के साथ एक आदमी आया था। बाप ने उस आदमी की बहुत ख़ातिर तवाज़ेअ की थी और कुछ देर बाद हमीरा को अपने पास बुलाया था। उस अजनबी ने हमीरा को बड़ी ग़ौर से देखा था। हमीरा ने बाप से पूछा कि उस ने क्यों बुलाया है तो बाप ने कोई ऐसा बहाना पेश किया था जिसने हमीरा के दिल में शक पैदा कर दिया था। हमीरा ने ख़िल्लत से कहा कि वह उसके सिवा किसी और के पास नहीं जाना चाहती। ख़िल्लत ने उसे कहा कि वह अपने मां बाप के साथ बात करके उसके साथ शादी की कोशिश करेगा।

यह तो अलग बात है कि हमीरा जिसे बाप कहती थी वह उसका बाप नहीं था, लिहाज़ा उस शख़्स को हमीरा के मुस्तकबिल के मुतअल्लिक कोई फ़िक्र नहीं था, लेकिन उस दौर में औरत की कोई हैसियत नहीं थी। बहुत सी रकम लेकर लड़कियों को किसी के साथ ब्याह देने का रिवाज आम था। अमीर कबीर लोगों ने हरम बना रखे थे जिनके लिए वह नयी से नयी लड़कियां ख़रीदते रहते थे। अगर हमीरा को उसका बाप फ़रोख़्त कर रहा था तो यह कोई जुर्म या कोई अनोखा वाक़िआ नहीं था। ख़िल्लत अमीर मां बाप का बेटा नहीं था। वह यही कर सकता था कि हमीरा को भगा ले जाये और कहीं गायब हो जाये। वह सोंच में पड़ गया कि क्या करे। हमीरा के साथ उसे इतनी मोहब्बत ज़्यादा थी कि वह आसानी से उस से नज़रें नहीं फेर सकता था।

उसने सोंचने में ज़्यादा ही वक़्त सर्फ़ कर दिया। तीसरे दिन वह खेतों में था कि हमीरा उसे पुकारती और दौड़ती आ रही थी। उसने देखा कि तीन आदमी उसके पीछे दौड़ते आ रहे थे जिन में एक हमीरा का बाप था। दूसरे दोनों को वह नहीं पहचानता था। गांव के बहुत से

आदमी बाहर आ गये थे मगर वह सब तमाशाई थे। वह इसलिए हमीरा की मदद को आगे नहीं आते थे कि उसके पीछे भागने वालों में उसका बाप भी था। हमीरा ख़िल्लत के पीछे हो गयी। उसने रोते हुए उसे बताया कि यह दो आदमी उसे अपने साथ ले जाने आये हैं और उसके बाप ने इन के साथ सौदा कर लिया है।

हमीरा के बाप ने ख़िल्लत के पीछे से हमीरा को पकड़ने की कोशिश की तो ख़िल्लत ने उसे धक्का दे कर कहा– "ख़बरदार! इसे हाथ न लगाना। पहले मेरे साथ बात करो।"

"यह मेरी बेटी है" बाप ने कहा– "तुम कौन हो मुझे रोकने वाले?"

"यह तुम्हारी बेटी नहीं है।" ख़िल्लत ने कहा।

दूसरे आदमी हमीरा की तरफ़ बढ़े। एक ने तलवार निकाल ली थी। ख़िल्लत के हाथ में कुदाल की किस्म की कोई चीज़ थी। उसने घुमाकर मारी तो यह हथियार तलवार वाले के सर पर पड़ा। उसकी तलवार गिर पड़ी, फिर वह ख़ुद भी चकरा कर गिरा। ख़िल्लत ने तलवार उठा ली। दूसरे आदमी ने भी तलवार निकाल ली। ख़िल्लत को तेग़ ज़नी की कोई मश्क नहीं थी, फिर भी उसने वार रोके। दूसरा आदमी तेग़ज़न मालूम होता था। ख़िल्लत को लड़ने का ज़्यादा मौका न मिला। उसके सर पर कोई वज़नी चीज़ पड़ी। उसकी आंखों के आगे अंधेरा आ गया और वह गिर पड़ा.....उसके होश ठिकाने आये तो वह अपने घर में था। वह जोश में आकर उठा लेकिन उसके बाप और दो तीन आदमियों ने उसे जकड़ लिया। उसे बताया गया कि वह बहुत देर से बेहोश पड़ा है और हमीरा उस गांव से रूख़सत हो चुकी है। ख़िल्लत चिल्लाने लगा कि लड़की को फ़रोख़्त किया जा रहा है, मगर उसे बताया गया कि उसका निकाह पढ़ाकर रूख़सत कर दिया गया है।

ख़िल्लत के सर की हालत यह थी कि वह उठता था तो उसका सर चकरा जाता था। उसे शदीद चोट आई थी। बड़ों ने उसे नसीहत की कि हमीरा के मुआमिले में उसका बोलना जायज़ नहीं क्योंकि अगर बेचा भी गया है तो उसका बकायदा निकाह किया गया है। बहरहाल ख़िल्लत के लिए यह हादसा था। वह जब ठीक होकर बाहर निकला तो हमीरा का बाप अपने सारे कुम्बे के साथ गांव से हमेशा के लिए जा चुका था।

❖

ख़िल्लत पर दिवानगी सी तारी हो गयी। उसे हमीरा की मोहब्बत और इन्तकाम का जज़्बा परेशान रखता था। काम काज से उसका दिल उचाट हो गया। वह कभी–कभी दमिश्क चला जाता और हमीरा के बाप को ढूंढता रहता। मा–बाप ने उसे अच्छी–अच्छी लड़कियां दिखायीं लेकिन उसने किसी को भी कूबूल नहीं किया। उसके दिलो दिमाग़ पर हमीरा ग़ालिब रही....डेढ़ एक साल तक उसकी यही हालत रही। एक रोज़ दमिश्क में घूमते फिरते उसे पता चला कि फ़ौज की भर्ती हो रही है। उसने इस ख़्याल से कि इस बहाने वह गांव से दूर रहेगा फ़ौज में भर्ती हो जाना बेहतर समझा और भर्ती हो गया। उसे ट्रेनिंग दी गयी। घुड़सवारी सिखाई गयी। तीर अन्दाज़ी और मुख़्तलिफ़ हथियारों का इस्तेमाल सिखाया गया। उसके ज़ेहन को मसरूफ़ियत मिल गयी तो उसके दिल से हमीरा का दुख कम होने लगा। अपने जैसे

हज़ारों सिपाहियों के साथ रहते, गपशप लगाते और हंसते खेलते उसके दिल की ज़िन्दगी ऊद कर आई और वह एक बार फिर शगुफ़्ता मिज़ाज जवान बन गया।

यह उन दिनों का ज़िक्र है जब सलाहुद्दीन अय्यूबी का नाम अभी मशहूर नहीं हुआ था। लोग अभी नूरूद्दीन ज़ंगी को जानते थे। उसे एक बार जंग में जाने का मौक़ा मिला। यह एक ख़ूंरेज़ लड़ाई थी। उसने पहली बार अपने दुश्मन को देखा। उसने वह लुटे पुटे मुसलमानों को देखा जो सलीबियों के ज़ुल्म व सितम का निशाना बने थे। उसे यह भी बताया गया कि सलीबी बहुत सी मुसलमान लड़कियों को अपने कब्ज़े में रखे हुए हैं। यह सब कुछ देख सुन कर उसके अन्दर कौमी जज़्बा और इस्लाम की लगन् बेदार हो गयी। उस जज़्बे और लगन ने जुनून की सूरत इख़्तियार कर ली और उस जुनून ने उसे उन सिपाहियों के सफ़ में खड़ा कर दिया जो तन्ख़्वाह और माले ग़नीमत की ख़ातिर नहीं अल्लाह के नाम पर लड़ा और जाने कुर्बान किया करते हैं।

तीन चार साल बाद जब सलाहुद्दीन अय्यूबी को मिस्र का अमीर बनाकर काहिरा भेजा गया तो सलीबियों ने सूडानियों के साथ ख़ुफ़िया मुआहिदा करके समुन्दर की तरफ़ से मिस्र पर हम्ला किया तो सुल्तान अय्यूबी ने नुरूद्दीन ज़ंगी से कुमक मांगी। ज़ंगी ने अपने मुन्तख़ब दस्ते काहिरा रवाना कर दिये। उन में ख़िल्लत भी था। उसका शुमार उन ज़हीन अस्करियों में होता था जो तलवार के साथ दिमाग़ भी इस्तेमाल करते थे। उसे पचास सिपाहियों के एक जैश का कमाण्डर बना दिया गया था। मिस्र में उसका ज़ेहन पूरी तरह बेदार हो गया। सुल्तान अय्यूबी ने अपनी इन्टेलीजेन्स के सरबराह अली बिन सुफ़ियान से कहा कि वह लड़ाका (कमाण्डो) जासूसों का इन्तख़ाब करे तो ख़िल्लत को हाज़िर दिमाग़ी, ज़ेहानत, जिसम और ज़ुबान की मुस्तैदी और फुर्ती, जिस्म और शकल व सूरत की दिलकशी की बदौलत लड़ाका जासूसों में मुन्तख़ब कर लिया गया। उसे कमाण्डो और गुरिल्ला किस्म के शबख़ून मारने के लिए चन्द बार भेजा गया था लेकिन जासूसी के लिए मुल्क से बाहर न भेजा गया। मुल्क के अन्दर जासूसों की सुराग़रसानी तआक्कुब और गिरफ़्तारी के लिए उसे इस्तेमाल किया जाता रहा। जासूस को वह ख़ूब पहचाता था।

अब 1174 ई0 में जब सुल्तान अय्यूबी नूरूद्दीन ज़ंगी की वफ़ात के बाद सात सौ सवार लेकर दमिश्क़ पर कब्ज़ा करने और अल्मलकुस्सालेह की माअज़ूली की मुहिम पर रवाना हुआ तो उसने अपने जासूसों को पहले ही दमिश्क़ भेज दिया था जो मुख़्तलिफ़ बहरूप धार कर दमिश्क़ में दाख़िल हुए और फैल गये थे और जब दमिश्क़ पर सुल्तान अय्यूबी का कब्ज़ा हो गया और अस्सुआलेह, उस के अमीर वज़ीर और उसके बॉडीगार्ड्ज़ दमिश्क़ से भागे तो अली बिन सुफ़ियान के मुआविन हसन बिन अब्दुल्लाह ने जो जासूसों के साथ दमिश्क़ गया था, कई एक जासूस दमिश्क़ से उस तरफ़ रवाना किये जिस तरफ़ अस्सुआलेह और उके बॉडीगार्ड्ज़ दस्ते गये थे। उन जासूसों को ख़ुसूसी हिदायात और मुख़्तलिफ़ मिशन दिये गये थे। ख़िल्लत भी उनके साथ गया था। उसके साथ एक और साथी भी था।

हलब पहुंचे तो वहां अफ़रा तफ़री का आलम था। अस्सुआलेह के हवारियों को फ़ौरी तौर

पर फ़ौज की ज़रूरत थी। उन्हें ख़तरा था कि सुल्तान अय्यूबी उन का तआक़ुब करेगा और हम्ला करेगा। इस सूरतेहाल में उन्हें जैसा कैसा सिपाही मिला उन्होंने रख लिया। ख़िल्लत और उसके साथी ने अपने आप को उसकी फ़ौज के सिपाही ज़ाहिर किया जो दमिश्क़ से भाग आये थे। कमाण्डरों में से किसी को होश नहीं था कि छान बीन करते कि कोई मशकूक अफ़राद फ़ौज में न आ गये हों। सुल्तान अय्यूबी के जासूसों ने कई अहम जगहें संभाल लीं और हलब में ज़मीन दोज़ अड्डा भी कायम कर लिया। चूंकि ख़ुबरू और तनू मन्द नौजवान था और ज़ुबान की चाशनी से भी माला माल था इसलिए उसे क़सरे सल्तनत के मुहाफ़िज़ों के लिए मुन्तख़ब कर लिया गया। उसने अपने एक साथी को भी अपने साथ रख लिया।

❖

इस्लाम का अस्करी जज़्बा उसकी रूह में उतर गया था। उस ने हमीरा को कभी याद नहीं किया था। उसे इतनी मुहलत ही नहीं मिली थी, मगर उस नयी रक़्क़ासा ने उसे हमीरा की याद दिला दी। हमीरा से जुदा हुए सात आठ साल गुज़र गये थे। उस वक़्त हमीरा पन्द्रह सोलह साल की थी। यह रक़्क़ासा बहुत ख़ूबसूरत थी। उसके चेहरे पर हमीरा वाली मासूमियत और सादगी नहीं थी। उसने जो लिबास पहन रखा था वह इतना बारीक था कि सीने का थोड़ा सा हिस्सा और सतर ढंपा हुआ था। आधे से ज़्यादा जिस्म उरियां था। यह नामुम्किन था कि यह रक़्क़ासा हमीरा हो। तीसरी बार रक़्क़ासा उसके क़रीब से गुज़री तो भी ख़िल्लत ने उसे टिकटिकी बांध कर देखा। रक़्क़ासा भी उसे देख रही थी। अब के वह रूक गयी।

"तुम्हारा नाम क्या है?" रक़्क़ासा ने पूछा।

ख़िल्लत ने अपना फ़र्ज़ी नाम बताया जो उसने वहां लिखवा रखा था और पूछा— "आप ने नाम क्यों पूछा है?"

"तुम मुझे घूर घूर कर देखा करते हो इसलिए नाम पूछ रही हूं।" रक़्क़ासा ने ऐसे लहजे में कहा जिस में शरीफ़ औरतों वाली ज़रा सी भी झलक नहीं थी कहने लगी— "तुम सिपाही हो। अपने काम पर तवज्जो रखा करो।"

ख़िल्लत को कोफ़्त तो हुई लेकिन उसे ख़ुशी भी हुई कि यह हमीरा नहीं। हमीरा तो भोली भाली लड़की थी।

उसी शाम हाल में ज़्याफ़त थी। रिमाण्ड के जासूस का कमाण्डर तीन चार रोज़ पहले आया था। उसका नाम विन्डसर था। यह ज़्याफ़त उसी के एअज़ाज़ में दी जा रही थी। ख़िल्लत ने मालूम कर लिया था कि यह जासूसी का माहिर है और जासूसी के निज़ाम को बेहतर बनाने के लिए आया है। शाम का अंधेरा गहरा हो गया था। हाल में मेहमान आ रहे थे। खाने चुने जा रहे थे और शराब के दौर चल रहे थे। अभी विन्डसर नहीं आया था। ख़िल्लत और उसके साथी की ड्यूटी हाल के दरवाज़े पर थी। कुछ देर बाद विन्डसर आ गया। उसने दोनों पहरेदारों को ग़ौर से देखा फिर उसने ख़िल्लत के चेहरे पर नज़रें गाड़ दीं।

"तुम ख़लीफ़ा के मुहाफ़िज़ दस्ते में कब आये हो?" विन्डसर ने ख़िल्लत की ज़ुबान में पूछा।

"यहां आकर मुझे मुहाफ़िज़ दस्ते में बदल लिया गया है।" ख़िल्लत ने जवाब दिया। इससे पहले मैं दमिश्क की फ़ौज में था।"

"तुम मिस्र भी गये थे?" विन्डसर ने पूछा।

"नहीं।"

विन्डसर ने दूसरे पहरेदार से ख़िल्लत के मुतअल्लिक पूछा– "तुम इसे कबसे जानते हो?"

"हम दोनों दमिश्क की फ़ौज में इकठ्ठे रहे हैं।" उसने जवाब दिया। "एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं।"

"और मैं शायद तुम दोनों को अच्छी तरह जानता हूं।" विन्डसर ने मुस्कुरा कर कहा– "ज़रा मेरे साथ आओ।"

वह उन्हे पहरे से हटा कर अपने साथ ले गया। वह घाघ सुरागरसां और जासूस था। यहां पहुंचते ही उसने बॉडीगार्ड्ज़ की ख़ुफ़िया छान बीन शुरू कर दी थी। ख़िल्लत को देखते ही उसे कुछ याद आ गया था और उसने जब उसके साथी को देखा तो उसका शक पक्का हो गया। शक ग़लत भी नहीं था। ख़िल्लत और उसका साथी तीन चार साल से इन्टेलीजेंस में थे और वह इकठ्ठे रहते थे। उनकी जोड़ी पक्की हो गयी थी। विन्डसर उन्हें अपने कमरे में ले गया जो उसी इमारत में बड़े हाल से थोड़ी दूर था। कमरे में लेजाकर उसने मशाल की रौशनी में दोनों को एक बार फिर ग़ौर से देखा।

"अगर तुम मुझे यक़ीन दिला दो कि तुम यहां के वफ़ादार हो और सलाहुद्दीन अय्यूबी को अपना दुश्मन समझते हो तो मैं तुम्हे छोड़ ही नहीं दूंगा बल्कि ऐसे काम पर लगा दूंगा जहां ऐश करोगे।" विन्डसर ने कहा– "झूठ न बोलना। पछताओगे।"

"हम यहीं के वफ़ादार हैं।" ख़िल्लत ने कहा।

"तुम ने वफ़ादारी कब से बदली है?" विन्डसर ने पूछा– "और क्यों बदली है?"

"ख़ुदा और रसूल के बाद ख़लीफ़ा का रुत्बा है।" ख़िल्लत ने कहा। "सलाहुद्दीन अय्यूबी का कोई रुत्बा नहीं।"

"मिस्र से कब आये हो?" विन्डसर ने पूछा और जवाब का इन्तज़ार किये बग़ैर कहा– "तुम शायद मुझे नहीं जानते मैं भी तुम्हारी तरह जासूस हूं। नाम चाहे भूल जाऊं चेहरे नहीं भूला करता। अली बिन सुफ़ियान कहां है? मिस्र में या दमिश्क में?"

"हम उसे नहीं जानते।" ख़िल्लत के साथी ने जवाब दिया। "हम सीधे सादे सिपाही हैं।"

विन्डसर ने दरवाज़े में जाकर देखा और किसी मुलाज़िम को आवाज़ दी। मुलाज़िम आया तो उसने किसी लड़की का नाम लेकर मुलाज़िम से कहा कि उसे बुलाओ। वह लड़की करीब ही किसी कमरे में थी। ज़रा सी देर में एक बड़ी ही हसीन लड़की आ गयी। ख़िल्लत को मालूम था कि यह सलीबी लड़की है। उसके साथ नयी रक़्क़ासा थी जिसे देखकर ख़िल्लत को हमीरा याद आ जाया करती थी। विन्डसर ने सलीबी लड़की से अरबी ज़ुबान में बात की। उससे हंस कर पूछा कि इस रक़्क़ासा को क्यों साथ ले आई हो। लड़की ने जवाब दिया कि ये

मेरे कमरे में तैय्यार होकर आ गयी थी और मैं तैय्यार हो रही थी। आपका बुलावा आया तो समझी कि आप ने मुझे ज़याफ़त में साथ चलने के लिए बुलाया है। मैं इसे भी साथ ले आई।"

"कोई बात नहीं।" विन्डसर ने कहा– "अच्छा हुआ यह भी आ गयी है। तमाशा देख लेगी।" उसने सलीबी लड़की से कहा– "मैंने तुम्हे किसी और काम के लिए बुलाया है।" दोनों पहरेदारों की तरफ़ इशारा करके उसने लड़की से कहा– "इन दोनों के चेहरे को देखो शायद तुम्हे कुछ याद आ जाये।"

लड़की ने दोनों को बड़ी ग़ौर से देखा। माथे पर शिकन डाल कर सोंचा। फिर देखा और उसके होंठो पर मुस्कुराहट आ गयी। उसने ख़िल्लत और उसके साथी से पूछा– "तुम किस वक़्त होश में आये थे?"

दोनों ने एक दूसरे की तरफ़ देखा, फिर लड़की को देखा। ख़िल्लत हाज़िर दिमाग़ था। वह जान गया कि उन्हें पहचान लिया गया है। वह बचने के तरीके सोंचने लगा। यह अब अक़्ल और होश का खेल था। उसने भोला बन कर कहा– "मैं समझ नहीं सकता कि पहरे से हटा कर आपने हमारे साथ क्यों मज़ाक शुरू कर दिया है। हमारे कमानडर ने देख लिया तो हमें सज़ा देगा।"

"तुम पहरेदार नहीं हो" विन्डसर ने कहा– "तुम दोनों को वहां खड़ा करने की बजाये बेहतर है कि वहां कोई भी खड़ा न हो। वहां तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं।" उसने ख़िल्लत के कंधे पर हाथ रखकर कहा– "यहां आकर अपना हुलिया ज़रा सा बदल लिया होता। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी और अली बिन सुफ़ियान जासूसी के माहिर हैं लेकिन हम भी आनाड़ी नहीं। अपने आप को मुसीबत में न डालो। फ़ौरन बता दो कि तुम दोनों मिस्र से आये हुए जासूस हो। तुम्हारे साथ मेरी और इस (सलीबी) लड़की की मुलाकात पहले भी हो चुकी है। तुम मुझे नहीं पहचान सके क्योंकि मैं बिगड़े हुए हुलिये में था। मैंने तुम्हे पहचान लिया है क्योंकि तुम आज भी उसी हुलिए में हो जिस में ढाई साल पहले थे। ज़रा ज़ेहन पर ज़ोर दो। तुम्हें याद आ जायेगा। मिस्र के शुमाल में तुम दोनों एक क़ाफ़िले के साथ चल पड़े थे क्योंकि तुम्हे शक था कि यह क़ाफ़िला मशकूक है। तुम ने एक क़ाफ़िले के साथ सफ़र किया था। एक रात भी क़ाफ़िले के साथ गुज़ारी थी मगर तुम्हारी बद किस्मती कि तुम्हारी जब आंख खुली तो तुम सेहरा में अकेले पड़े थे। क़ाफ़िला बहुत दूर निकल गया था।

❖

विन्डसर ने उन्हें याद दिलाया।

ख़िल्लत और उसका यही साथी जासूसों की सुराग़रसानी की ड्यूटी पर थे। यह ढाई साल तीन साल पहले का वाक़िआ है.... सूडानियों को शिकस्त तो दी जा चुकी थी लेकिन वह सलीबियों की मदद से मिस्र पर हम्ले की तैयारियों में मसरूफ़ थे। मिस्र के अन्दर सलीबी जासूस और तख़रीबकार सरगर्म थे। उनकी सुराग़रसानी के लिए अली बिन सुफ़ियान का जासूसी का निज़ाम काम कर रहा था। सरहदों पर गश्ती दस्ते भी थे। मिस्र के अपने जासूस मुसाफ़िरों वग़ैरह के भेस में सरहदी इलाकों में घूमते फिरते रहते थे। एक बार ख़िल्लत अपने

उस साथी के साथ मिस्र के शुमाल में गश्त पर था। दोनों ऊंटो पर सवार थे और दोनों ग़रीब से सेहराई मुसाफ़िरों के भेस में थे। उन्हें एक क़ाफ़िला जाता नज़र आया जिस में बहुत से ऊंट और चन्द एक घोड़े थे। क़ाफ़िले वालों में बूढ़े भी थे, जवान भी थे, बच्चे और औरतें भी थीं।

ख़िल्लत और उसका साथी जासूस थे। वह क़ाफ़िले को रोक कर नहीं देख सकते थे। उन्हें हिदायत यह थी कि आते जाते क़ाफ़िलों को देखें और ज़रा सा भी शक हो तो क़रीबी सरहदी चौकी को इत्तला दे। यह चौकी वालों का फ़र्ज़ था कि क़ाफ़िले को रोक कर छान बीन करें और सामान की तलाशी भी लें। सरहदी दस्ते फ़ौजी ताक़त के ज़ोर पर यह काम कर सकते थे। दो जासूसों से इतनी ज़्यादा तादाद का क़ाफ़िला नहीं रुक सकता था। ख़िल्लत और उसके साथी ने हिदायत और ट्रेनिंग के मुताबिक़ क़ाफ़िले वालों पर यह ज़ाहिर किया कि वह मुसाफ़िर हैं और आगे जा रहे हैं। उस ज़माने में यही तरीक़ा था कि मुसाफ़िर इकठ्ठे चला करते थे क्योंकि सफ़र बहुत तवील और लूट मार का ख़तरा ज़्यादा था। क़ाफ़िले वालों ने उन दोनों को अपने साथ मिला लिया।

उन दोनों ने गप शप के अन्दाज़ से मालूम करना शुरू कर दिया कि यह क़ाफ़िला कहा से आया है और कहां जा रहा है। उन्हें मालूम था कि अगली सरहदी चौकी कहां है, मगर उन्होने देखा कि क़ाफ़िला ऐसी सिम्त जा रहा था जिस तरफ़ कोई चौकी नहीं थी। वह इलका ही ऐसा था कि गश्ती पहरे और चौकी से बच कर निकला जा सकता था। ऊंटों पर जो सामान लदा हुआ था वह भी मश्कूक-सा मालूम होता था। पता नहीं चलता था कि उन बडे बड़े मटकों और लिपटे हुए ख़ेमों वग़ैरह में क्या है। बहरहाल सामान मामूली नहीं था।

ख़िल्लत और उसके साथी सेहराई ख़ाना बदोशों के अन्दाज़ से मालूम करने की कोशिश कर रहे थे। क़ाफ़िले में चार जवान लड़कियां भी थीं। उनके लिबास तो ख़ना बदोशों बल्कि बद्दुओं की तरह थे। उनके बालों का अन्दाज़ भी बताता था कि तहज़ीब व तमद्दुन से दूर रहने वाली लड़कियां हैं लेकिन उनके चेहरों और आंखों के रंग और ख़द व ख़ाल की दिलकशी बता रही थी कि मुआमिला कुछ और है और यह बहरूप है।

क़ाफ़िले में एक बूढ़ा आदमी था। उसका रंग गोरा था और चेहरे पर झुर्रियां मगर उसके दांत बताते थे कि उसकी उम्र इतनी ज़्यादा नहीं जितनी चेहरा बता रहा था। उस बूढ़े ने ख़िल्लत और उसके साथी को अपने साथ कर लिया और बड़े प्यारे अन्दाज़ से उन से पूछने लगा कि वह कहा से आये हैं और कहां जा रहे हैं। ख़िल्लत अपने मुतअल्लिक़ ग़लत बातें बताता रहा और उससे मालूम करने की कोशिश करता रहा कि क़ाफ़िला कहां से आया है और कहां जा रहा है और सामान क्या है। वह बूढ़ा इतनी अच्छी बातें करता था कि ख़िल्लत और उसका साथी उसकी बातों में उलझ गये। चलते—चलते शाम हो गयी फिर रात गहरी हो गयी और क़ाफ़िला चलता रहा। ख़िल्लत ने क़ाफ़िले का रुख़ बदलने के लिए बूढ़े से कहा कि फ़लां तरफ़ से चलें तो मंज़िल क़रीब आ जायेगी। उसका मक़सद यह था कि क़ाफ़िले को चौकी के क़रीब से गुज़ारा जाये। साफ़ पता चल रहा था कि क़ाफ़िला चौकी से बचने की

कोशिश में है।

शकूक पुख़्ता होते गये। कुछ और आगे गये तो पड़ाव करने के लिए निहायत मौज़ूं जगह आ गयी। काफ़िला रूक गया और पड़ाव कर लिया गया। ख़िल्लत और उसका साथी ज़रा अलग हट कर बैठे और सोंचने लगे कि सब सो जायें तो सामान की तलाशी लें या उन दोनों में से एक ख़ामोशी से निकल जाये और किसी करीबी सरहदी चौकी को इत्तलाअ कर दे, ताकि काफ़िले पर छापा मारा जाये मगर ख़तरा यह था कि काफ़िले वालों को शक हो जायेगा और वह पीछे रहने वाले अकेले जासूस को कत्ल करके या अग्वा करके तेज़ रफ़्तारी से ग़ायब हो जायेंगे। उन्होंने सोने की नहीं बल्कि जागते रहने की कोशिश की। काफ़िले वाले खा पीकर सो गये।

इतने में दो लड़कियां जो काफ़िले के साथ थीं, उस तरफ़ उनके पास आयीं जैसे चोरी छिपे आई हों। वह उस इलाके की सेहराई ज़ुबान बोल रही थी। उन्होंने ख़िल्लत और उसके साथी से कहा कि वह उन्हें राज़ की एक बात बतायें तो क्या वह उनकी मदद करेंगे?" "राज़" एक ऐसा लफ़्ज़ था जिसने सलाहुद्दीन अय्यूबी के उन दोनों जासूसों को चौंका दिया। वह राज़ हासिल करने के लिए ही रेगज़ारों में मारे मारे फिर रहे थे और उस काफ़िले के साथ वह राज़ की ख़ातिर ही चले थे। उन्होंने बताया कि यह काफ़िला बुर्दा फ़रोश है और यह चारों लड़कियां अग्वा करके लाई जा रही हैं। उन्हें मालूम नहीं था कि उन्हें कहां ले जाया जा रहा है। लड़कियों ने बताया कि वह मुसलमान हैं और उन लोगों से आज़ाद होना चाहती हैं।

बातों बातों में एक लड़की ख़िल्लत को अलग ले गयी। लड़की की बातों में सादगी भी थी और जाज़बीयत भी। उस ने ख़िल्लत से कहा कि वह उसे अपने साथ ले जाये तो उसके साथ शादी करेगी और सारी उम्र उसकी वफ़ादार रहेगी। उसने कुछ ऐसी बातें कीं जैसे वह ख़िल्लत को दिल दे बैठी हो। उसने मोहब्बत और मज़लूमियत का इज़हार ऐसे अल्फ़ाज़ में और ऐसे अन्दाज़ से क्या कि ख़िल्लत उस की और बाकी लड़कियों की रिहाई के मुतअल्लिक सोंचने लगा। दूसरी लड़की ख़िल्लत के साथी के साथ अलग बैठी थी और वह भी उसी किस्म की बातें कर रही थी। किसी औरत का महज़ औरत होना उसकी कुव्वत होती है और जब औरत ख़ूबसूरत और जवान हो और मज़लूम भी हो तो मर्द पिघल जाते हैं। यह कैफ़ियत उन दोनों मर्दों की हो गयी। दोनों में जवानी का जोश था। उन में ग़ैरत भी थी और अपनी फ़ौज का यह उसूल भी कि औरत की पासबानी करनी है, ख़्वाह वह अपनी हो ख़्वाह किसीऔर की।

दोनों लड़कियों ने अलग अलग उन दोनों मिस्री जासूसों को ख़ुश करने के लिए उन्हें कोई बड़ी ही लज़ीज़ चीज़ खाने को दी। एक लड़की दबे पांव गयी और छोटा सा एक मशकीज़ा उठा लाई। उसमें से उसने दोनों को कुछ पिलाया जो कोई शरबत था। उसका ज़ायका इतना अच्छा था कि दोनों ख़ासा ज़्यादा पी गये थोड़ी ही देर बाद दोनों की आंख लग गयी और जब उनकी आंख खुली तो अगले दिन का सूरज उफ़क से थोड़ा ही दूर रह गया था। वह हड़बड़ा कर उठे। वहां काफ़िला भी नहीं था और उन दोनों के ऊंट भी नहीं थे और वह उस जगह भी नहीं थे जहां उन्होंने रात पड़ाव किया था। यह कोई और जगह थी। ईर्द

गिर्द मिट्टी और रेत के टीले थे। दोनों दौड़ते हुए एक बुलन्द टीले पर चढ़े। इधर उधर देखा। उन्हें टीलों की चोटियों और उसमें दूर सेहरा की रेत के सिवा कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था।

❖

"वह बूढ़ा आदमी मैं था जिस के साथ तुम सफ़र के दौरान बातें करते रहे थे।" रिमाण्ड के जासूसों के कमाण्डर विन्डसर ने उन्हें कहा– "मैं तुम्हारी बातों से जान गया था कि तुम जासूस हो और मालूम करना चाहते हो कि हम कौन हैं और कहां जा रहे हैं।"

"वह तुम नहीं थे।" ख़िल्लत ने कहा– "वह कोई बूढ़ा आदमी था।"

"वह मेरा बहरूप था।" विन्डसर ने कहा– "मुझे खुशी है कि तुम मान गये हो कि तुम दोनों जासूस हो।"

और अब भी जासूस हो और मैं तुम्हे यह भी बता दूं कि तुम्हे बेहोश करने वाली लड़कियों में से एक यह थी।"

"हम अब जासूस नहीं हैं।" ख़िल्लत ने कहा– "अब हम ख़लीफ़ा के वफ़ादार हैं।"

"तुम बकवास करते हो।" विन्डसर ने कहा– "अली बिन सुफ़ियान की मैंने हमेशा तारीफ़ की है, मगर तुम्हारी तरबियत मुकम्मल नहीं। तुमने अभी तक अपने आप को छुपाना और अपना हुलिया बदलना नहीं सीखा।"

विन्डसर ने उन्हें बताया कि वह जंगी सामान और बहुत सी रक़म सूडान ले जा रहे थे। काफ़िले में जो अफ़राद सेहराई लिबास में थे, वह फ़ौजी मुशीर थे। वह सब सलीबी थे और सूडान जा रहे थे। उन्होंने ही सूडानी फ़ौज तैय्यार की और सलाहुद्दीन अय्यूबी के भाई तक़ीउद्दीन को ऐसी बुरी शिकस्त दी थी कि वह अपनी आधी फ़ौज वहीं छोड़ आया था।

अगर सलाहुद्दीन अय्यूबी अक़्ल इस्तेमाल न करता तो तक़ीउद्दीन बाक़ी फ़ौज वहां से नहीं निकाल सकता था। उन लड़कियों ने भी तुम्हारी शिकस्त में बहुत काम किया था। विन्डसर ने उन्हें बताया कि उन की मुलाक़ात जब मिस्र के शुमाल में हुईथी तो रात पड़ाव के दौरान उन में से कोई भी नहीं सोया था और उन दोनों लड़कियों को उसी मक़सद के लिए ख़िल्लत और उसके साथी के पास भेजा गया था कि उन्हें बातों में उलझा कर बेहोश कर दें। उन की तरकीब कामायाब रही। उन के बेहोश होते ही काफ़िला रवाना हो गया।

ख़िल्लत को वह वाक़िआ अच्छी तरह याद था और यह वाक़िया उसके दिल में कांटे कीतरह उतरा हुआ था। इतने ख़तरनाक जासूसों का काफ़िला उसके हाथ से निकल गया था। उसके साथ ऐसा कभी भी नहीं हुआ था। उस ख़लिश का एक पहलू यह भी था कि उसने उस वाक़िआ की रिपोर्ट अपने हेडक्वार्टर को दी ही नहीं थी क्योंकि उसे दुश्मन के जासूस धोखा दे गये थे। उसमें उसकी और उसके साथी की बेइज़्ज़ती थी। उन्हें दो लड़कियां बेवक़ूफ़ बना गयी थीं।

अब उन में से एक लड़की और एक आदमी उसके सामने खड़ा था। ख़िल्लत अपने साथी समेत उसका क़ैदी था।। अब वह हथियार डालना नहीं चाहता था। उसने यहां से निकलने

या मर जाने का फैसला कर लिया।

"मेरी एक पेशकश कुबूल कर लो।" विन्डसर ने उन्हें कहा– "मैं तुम पर ऐसा रहम कर रहा हूं जो मैं ने कभी किसी पर नहीं किया। तुम मेरे गिरोह में शामिल हो जाओ। जितनी उजरत मांगोगे दूंगा। कहोगे तो दमिश्क भी भेज दूंगा और अगर काहिरा जाना चाहो तो वहां भी भेज दूंगा। वहां तुम दोनों सलाहुद्दीन अय्यूबी के जासूस बने रहना लेकिन काम हमारे लिए करना। तुम्हारा काम यह होगा कि हमारे जो जासूस वहां काम कर रहे हैं उनकी मदद करो। अगर कोई उनकी निशानदेही करदे तो उन्हें क़ब्ल अज़ वक़्त ख़बरदार करके इधर उधर कर देना।" वह बोलता जा रहा था और यह दोनों ख़ामोशी से सुन रहे थे।

उसे तवक्क़ो थी कि यह दोनों मान जायेंगे। उसने कहा– "यह पेशकश कुबूल करने से पहले मेरी यह शर्त है कि यहां तुम्हारे जितने जासूस हैं वह पकड़वा दो। यह बता दो कि वह कहां कहां हैं।"

"हमें तुम्हारी पेशकश के साथ कोई दिलचस्पी नहीं।" ख़िल्लत ने कहा– "हमें यह भी मालूम नहीं कि यहां कोई जासूस है या नहीं।"

"तुम्हें शायद मालूम नहीं कि मैं तुम्हारे जिस्मों की क्या हालत बना दूंगा।" विन्डसरने कहा– "अगर तुम्हे यह तवक्क़ो है कि तुम्हें फ़ौरन क़त्ल कर दिया जायेगा तो तुम्हारी यह तवक्क़ो पूरी नहीं होगी। मैं तुम्हे जिस तन्नूर में फेंकूंगा उसमें इतनी जल्दी निजात नहीं पा सकोगे।" उसने मुस्कुराकर कहा– "क्या तुम मुझसे मनवा लोगे कि तुम जासूस नहीं? क्या मैं अभी शक में हूं? तुम में इतनी अकल नहीं कि मुझे धोखा दे सको। तुम में इतनी अकल होती तो इस लड़की के हाथों बेवकूफ़ न बनते। उसने तुम्हे अपनी जवानी और ख़ूबसूरती के जाल में फांस लिया था।"

"सुनो ऐ सलीबी दोस्त!" ख़िल्ल्त खरी बातों पर आ गया। बोला– "हम दोनों जासूस हैं मगर यह झूठ है कि मेरा यह रफ़ीक़ लड़कियों के हुस्न के फ़रेब में आ गया था। मैं पत्थर हूं लेकिन मुझमें एक कमज़ोरी है। बहुत अर्सा गुज़रा पन्द्रह सोलह साल की उम्र की एक लड़की मेरे सामने फ़रोख़्त हो गयी थी। मैंने उसे बचाने की कोशिश में एक आदमी की तलवार छीन ली थी.....और एक को ज़ख़्मी भी कर दिया था। वह तीन थे और मैं अकेला। उन्होंने मुझे गिरा लिया। अगर मैं बेहोश न हो जाता तो उस लड़की को बचा लेता। वह उसे ले गये और मुझे लोग बेहोशी की हालत में उठाकर घर ले गये।"

"तुम कहां के रहने वाले हो?" विन्डसर ने पूछा।

"दमिश्क समझ लो।" ख़िल्लत ने जवाब दिया– "मैं अब कुछ नहीं छुपाऊंगा। दमिश्क के करीब एक गांव है, मैं वहां का रहने वाला हूं और मेरा रफ़ीक़ बग़दादी है। मैं यह बातें तुम्हारे डर से नहीं बता रहा। तुम मुझे इतनी आसानी से पकड़ नहीं सकोगे। हिम्मत है तो हमारे हाथों से बरछियां ले लो। हम से तलवार लो। जिस तनूर का तुम ज़िक्र करते हो, उस में हमारी लाशें जायेंगी।"

विन्डसर के होठों पर तन्ज़ीया मुस्कुराहट थी। सलीबी लड़की ने हंस कर कहा– "इन्हें

खुश फहमी मरवायेगी।" और नयी रक़्क़ासा ख़िल्लत को गहरी नज़रों से देख रही थी।

"मैं तुम्हें बता रहा हूं कि मैं उस लड़की को नहीं बचा सका था।" ख़िल्लत ने कहा– "उस लड़की की याद कांटा बनकर मेरे दिल में उतर गयी। उस रात जब हम दोनों तुम्हारे काफ़िले के साथ थे तो तुम्हारी दो लड़कियों ने मुझे कहा कि उन्हें बेचने के लिए अग़वा करके ले जाया जा रहा है तो मेरी आंखों के सामने वह लड़की आ गयी जिसे मैं बचा नहीं सका था। मैंने उन दोनों लड़कियों के चेहरों पर उसी लड़की का चेहरा देखा। मेरे दिल मे जो कांटा था उसने मेरी अक्ल पर पर्दा डाल दिया। अगर मुझे वह लड़की याद न आती तो मैं कभी बेवकूफ़ न बनता।"

नई रक़्क़ासा का जिस्म बड़ी ज़ोर से कांपा। वह पीछे हट गयी और पलंग पर बैठ गयी। उसका रंग ज़र्द हो गया था।

"और अब तो मौत भी बेवकूफ़ नहीं बना सकती।" ख़िल्लत ने कहा– "और तुम्हारा कोई लालच मुझे अपने फ़र्ज़ से गुमराह नहीं कर सकता।"

उधर ज़्याफ़त के हाल में विन्डसर का इन्तज़ार हो रहा था। जिन्हें पता चल चुका था कि कोई नई रक़्क़ासा आई है वह रक़्क़ासा के इन्तज़ार में थे। यह तो किसी ने भी न देखा कि दरवाज़े के बाहर जो दो संतरी खड़े रहते थे वह कहां चले गये हैं।

बरछियां और तलवारें अभी तक ख़िल्लत और उसके साथी के पास थीं। विन्डसर ने जब देखा कि वह उसकी पेशकश ठुकरा चुके हैं और दोनों अपने अक़ीदे और फ़र्ज़ के पक्के मालूम होते हैं तो उसने उन्हें कहा कि हथियार उसके हवाले कर दें। दोनों ने साफ़ इन्कार कर दिया। विन्डसर उनसे जबरदस्ती हथियार लेने के लिए दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा। वह बॉडीगार्ड्ज़ को बुलाना चाहता होगा। ख़िल्लत ने तेज़ी से दरवाज़ा बन्द कर दिया और ज़ंजीर चढ़ा कर बरछी की नोक विन्डसर की तरफ़ करके कहा– "जहां हो वहीं खड़े रहो।" उसने आगे बढ़ कर बरछी की नोक विन्डसर की शाह रग पर रख दी।

ख़िल्लत के साथी ने अपनी बरछी की नोक सलीबी लड़की की शहरग पर रखी। विन्डसर और लड़की पीछे हटते–हटते दिवार के साथ जा लगे। ख़िल्लत और उसके साथी ने दोनों को वहीं दबा लिया। ख़िल्लत ने नयी रक़्क़ासा से कहा– "तुम इनके साथ खड़ी हो जाओ। अगर तुमने शोर मचाया तो जान से हाथ धो बैठोगी।"

"अगर तुम ख़िल्लत हो तो मेरा नाम हमीरा है।" नयी रक़्क़ासा ने कहा– "मैंने तुम्हें पहले दिन ही पहचान लिया था और तुम मुझे पहचानने की कोशिश कर रहे थे।"

थोड़ी देर पहले ख़िल्लत ने अपने नाम के सिवा बाकी निशानियां बता दी थीं। हमीरा जब से यहां आई थी वह ख़िल्लत को देख रही थी मगर ख़िल्लत की तरह वह भी शक में थी। वह भी यही सोचती रही थी कि इन्सानों की सूरतें एक जैसी भी हो सकती हैं।

"क्या तुम भी जासूस हो?" ख़िल्लत ने पूछा।

"नहीं।" हमीरा ने जवाब दिया। "मैं सिर्फ़ रक़्क़ासा हूं मुझ पर कोई शक न करना। मैं तुम्हारे साथ हूं और तुम्हारे साथ जाऊंगी। मरना है तो तुम्हारे साथ मरूंगी।"

❖

अस्सुआलेह ज़्याफत में आ गया। उसके तमाम उमरा वुज़रा और दूसरे मेहमान भी आ गये। उनमें सलीबी फौज के अफ़सर भी थे जो मुशीरों की हैसियत से यहां आये थे। उनका अन्दाज़ बादशाहों जैसा था। उनमें रिमाण्ड का फ़ौजी नुमाइन्दा भी था। वह सब विन्डसर को ढूंढ रहे थे। वह अभी तक ग़ैर हाज़िर था। तमाम सलीबी लड़कियां हाल में पहुंच गयी थीं। सिर्फ़ एक नहीं थी। नाचने वालियां भी आ गयी थीं, नयी रक़्क़ासा ग़ैर हाज़िर थी। अस्सुआलेह के आ जाने से सब की बेताबी बढ़ गयी। एक मुलाज़िम से कहा गया कि वह विन्डसर और दोनों लड़कियों से कहे कि सब आ गये हैं।

"इन्हें बांध कर यहीं फेंक चलते हैं।" ख़िल्लत के साथी ने कहा।

"क्या तुम सांपो को ज़िन्दा रखना चाहते हो?" ख़िल्लत ने कहा और बरछी जिस की नोक विन्डसर की शहेरग को छू रही थी पूरी ताकत से दबाई। विन्डसर का सर दिवार के साथ लगा हुआ था। बरछी की अन्नी उसकी शहेरग में दाख़िल होकर पीछे निकल गयी। विन्डसर का हल्का सा ख़र्राटा सुनाई दिया।

उसके फ़ौरन बाद ऐसा ही एक ख़र्राटा सलीबी लड़की के मुंह से निकला। उसके शहेरग को चीरती हुई बरछी की अन्नी ख़िल्लत के साथी ने पार कर दी थी। दोनों ने बरछियां निकालीं। विन्डसर और लड़की गिरने पड़ने लगे। ख़िल्लत और उसके साथी ने दोनों के दिलों पर बरछियां रख कर ऊपर से पूरा वज़न डाला। दोनों के दिल चिर गये और वह ठंडे हो गये। दोनों के लाशों को पलंग के नीचे फेंक दिया गया। यह कमरा विन्डसर का था। दिवार के साथ उसका चुग़ा लटक रहा था जिस के साथ सर को ढांपने वाला हिस्सा भी था। हमीरा ने ख़ुद ही यह चुग़ा पहन लिया और सर भी ढांप लिया। वहां से कपड़े उठाकर उसने रक़्स वाला घाघरा उतार दिया और मर्दाना लिबास कमर से नीचे तक चढ़ा लिया। पापोश भी बदल लिए और हमीरा ने चेहरा भी छुपा लिया। उसे अब एक नज़र में कोई नहीं पहचान सकता था कि यह लड़की है।

ख़िल्लत ने दरवाज़ा खोला। बाहर देखा। बरामदे में मुलाज़िमों की आमद व रफ़्त और भाग दौड़ थी। वह तीनों बाहर निकले। दरवाज़ा बन्द किया और एक तरफ़ चल पड़े। फ़ौरन बाद वह अंधेरे में हो गये। इधर एक घाटी थी। उससे उतरे और ख़तरे के इलाक़े से निकल गये। ख़िल्लत और उसके साथी को मालूम था कि उन्हें कहां जाना है। उनका कमाण्डर एक आलिम फ़ाज़िल के रूप में जहां रहता था वहां छुपने की जगह भी थी और वहां निकलने का बन्दोबस्त भी हो सकता था। उस वक़्त शहर से निकलना ख़तरे से ख़ाली न था। घोड़े भी नहीं थे। उन्हें हलब से फ़रार होकर दमिश्क़ पहुंचना था। उन्हें यह अन्दाज़ा भी था कि क़त्ल का पता चलते ही शहर में क्या उधम बपा होगा।

क़त्ल का इंकशाफ होते ज़्यादा देर नहीं लगी। किसी ने विन्डसर के कमरे का दरवाज़ा खोला। पलंग के नीचे से जो ख़ून बहर रहा था वह फ़र्श पर फैलता हुआ दरवाज़े तक पहुंच गया था। हंगामा बपा हो गया। वहां एक नहीं दो लाशें थीं। दोनों ज़ख़्म एक जैसे थे। फ़ौरी

तौर पर पहरेदारों का ख़्याल आया। उनकी मौजूदगी में बऐक वक़्त दो क़त्ल कौन कर सकता था? जिन संतरियों की ड्यूटी थी उन्हें बुलाया गया। दोनों ग़ायब थे। इस इमारत में किसी का बग़ैर इजाज़त दाख़िला मम्नूअ था।

यहां चीदा चीदा लोग जो हाकिम या मुअज़्ज़िज शहरी थे आ सकते थे। उन की भी चैकिंग होती थी। बॉडीगार्ड्ज़ के कमाण्डर के लिए मुसीबत खड़ी हो गयी। यह क़त्ल पेशावरों का काम था या सुल्तान अय्यूबी के जासूसों का, और यह काम फ़िदाई क़ातिलों का भी हो सकता था। किसी ने कहा कि किराये के यह क़ातिल किसी से भी उजरत लेकर क़त्ल कर सकते हैं।

दरवाज़े के दोनों संतरी न मिले तो यह शक पुख़्ता हो गया कि वह सुल्तान अय्यूबी के आदमी होंगे और उन्होंने विन्डरूर को इस वजह से क़त्ल किया है कि वह जासूस का सरबराह बन कर आया था। रात देर तक ख़िल्लत और उसका साथी न मिले तो शहर में उनकी तलाश शुरू हो गयी। यह इन्कशाफ़ बहुत देर बाद हुआ कि नयी रक़्क़ासा भी ग़ायब है। शहर की नाका बन्दी कर दी गयी।

ख़िल्लत, उसका साथी और हमीरा अपने ठिकाने पर पहुंच गये थे। उन्होंने अपने कमाण्डर को अपना कारनामा सुनाया तो उसने उन्हें छुपा लिया और कहा कि वह बाहर के हालात के मुताबिक़ उन्हें बतायेगा कि वह कब यहां से निकलें। उस पर किसी को शक नहीं हो सकता था क्योंकि उसे लोग आलिम और बरगुज़ीदा इन्सान समझते थे। अदाकारी में उसे महारत हासिल थी। उसने अपने जो दो शागिर्द अपने साथ रखे हुए थे वह भी जासूस थे। हलब से दमिश्क तक वही इत्तलआत पहुंचाते थे। उसने दोनों शगिर्दों को हुक्म दिया कि वह बाहर की ख़बर रखें कि क्या हो रहा है।

हमीरा ने उस "आलिम" के सामने ख़िल्लत को सुनाया कि उसपर क्या गुज़री थी। वह वाक़िआ सात आठ साल पुराना हो चुका था। उसने सुनाया कि ख़िल्लत जब हमीरा को उसके बाप (जो असल में उसका बाप नहीं था) और उन दो आदमियों से बचाने के लिए लड़ा था तो हमीरा के बाप ने पीछे से कुदाल ख़िल्लत के सर पर मारी थी। उस से वह बेहोश हो गया था। वह दोनों हमीरा को घर ले गये। एक निकाह ख़्वान को बुलाया गया। जिसने उससे पूछे बेग़ैर निकाह पढ़ दिया और दोनों आदमी हमीरा को अपने साथ ले गये। एक रात वह दमिश्क में ठहरे फिर उसे उन इलाक़ों में ले गये जो सलीबियों के क़ब्ज़े में थे। उसे नाच की तरबियत दी जाने लगी। इब्तेदा में उसने मज़ाहमत की मगर उस पर इस क़दर तशद्दुद किया गया कि वह बेहोश हो जाती थी। उस दौरान उसे ख़ुराक निहायत अच्छी दी जाती थी। उसे कोई बड़ा ही लज़ीज़ शरबत पिलाया जाता था जिसके असर से वह हंसने और नाचने लगती थी।

तशुद्दुद और नशे से उसे रक़्क़ासा बना लिया गया। बहुत ऊंचे दर्जे के लोग उसे दाद देने लगे। वह ऐसे क़ीमती तोहफ़े लाते थे कि वह दंग रह जाती थी। उसे योरूशलम भी ले जाया गया था जहां दो आदमियों ने उसके मालिकों से कहा था कि वह मुंह मांगी क़िमत ले लें

और यह लड़की उन्हें दे दें। उन्होंने साफ बता दिया था कि वह उसे जासूसी वग़ैरह के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं। उसके मालिकों ने सौदा क़ुबूल नहीं किया था। उसे अग़वा करने की कोशिश भी की गयी थी जो नाकाम बना दी गयी थी। अब उसे हलब में किसी और अमीर की फ़रमाईश पर बुलाया गया था। उसने बताया कि पहले दिन उसने ख़िल्लत को देखा तो उसने बिला शक वह शुबहा दिल से कहा कि यह ख़िल्लत है लेकिन यह शक भी होता था कि हो सकता है यह ख़िल्लत की शकल व सूरत का कोई और आदमी हो। वह उसे ग़ौर से देखती थी। आख़िर यह इत्तेफ़ाक़ हुआ कि विन्डसर ने ख़िल्लत और उसके साथी को पहचान लिया। विन्डसर ने अपनी लड़की को बुलाया तो हमीरा भी उसके साथ चली गयी। ख़िल्लत ने जब अपने मुतअल्लिक़ चन्द एक बातें बतायीं तो हमीरा के शकूक रफ़ा हो गये।

उसने कहा– " मैं इस ज़लील ज़िन्दगी की आदी हो गयी थी। मेरे दिल में जज़्बात मर गये थे मैं एक पत्थर की तरह इधर उधर लुढ़कती फिर रही थी, लेकिन ख़िल्लत को देखा तो मेरे सारे जज़्बात ज़िन्दा हो गये। मुझे यक़ीन नहीं था कि यह ख़िल्लत ही है मगर उस की सूरत ने मुझे वह वक़्त याद दिला दिया जब मेरे दिल में उसकी मोहब्बत थी और उसके बच्चों की मां बनने की ख़्वाहिश। मैंने फ़ैसला कर लिया था कि किसी वक़्त उससे पूछूंगी कि तुम ख़िल्लत हो? अगर यह ख़िल्लत निकला तो उसे कहूंगी कि आओ भाग चलें और सेहरा की ख़ाना बदोश की तरह ज़िन्दगी बसर करेंगे।"

उसे ख़िल्लत तो मिल गया और वह उसके साथ भाग भी आयी लेकिन हलब से बच कर निकलना एक मसला था।

❖

ख़लीफ़ा की ज़्याफ़त अैर रक़्स की महफ़िल वीरान हो चुकी थी। वहां विन्डसर का इन्तज़ार हो रहा था मगर विन्डसर की लाश पहुंची। वहां सलीबी फ़ौज के जो आला अफ़सर थे वह सख़्त गुस्से में थे। रिमाण्ड का फ़ौजी नुमाइंदा तो सब से ज़्यादा भड़का हुआ था। विन्डसर बहुत क़ीमती अफ़सर था। फ़ौजी नुमाइंदा अल्मलकुस्सालेह और उसके उमरा और उसके फ़ौजी कमाण्डरों पर टूट–टूट पड़ता था और सब उससे दुबक रहे थे। उनके दिलों में सलाहुद्दीन अय्यूबी की दुश्मनी इतनी ज़्यादा थी कि वह सलीबी अफ़सरों को फ़रिश्ते समझ बैठे थे। उन्हीं की मदद से वह जंग की तैय्यारी कर रहे थे, लिहाज़ा उनकी ख़ुशामद को वह ज़रूरी समझते थे। फ़ौजी नुमाइंदा जो कुछ कहता था सब उसके आगे सर झुका लेते और हां में हां मिलाते थे।

उसने कहा– "क़ातिल रात ही रात शहर से नहीं निकल सकते। सुबह सवेरे एलब एक घर की तलाशी ली जाये। यहां की सारी फ़ौज को उस पर लगा दो। फ़ौज लोगों के जागने से पहले घरों में दाख़िल हो जाये। यहां के बाशिन्दों को इतना परेशान किया जाये कि वह क़ातिलों को ख़ुद ही हमारे हवाले कर दें।"

"ऐसा ही होगा।" एक मुसलमान अमीर ने कहा– "हम फ़ौज को अभी हुक्म दे देते हैं कि सेहर के अंधेरे में शहर मे फैल जाएं।"

"ऐसा नहीं होगा।" यह आवाज़ एक मुसलमान क़िलादार की थी। उसने एक बार फिर गरज कर कहा– "ऐसा नहीं होगा। तलाशी सिर्फ़ उस घर की ली जायेगी जिस पर पुख़्ता शक और कोई शहादत वाज़ेह होगी।"

इतने सारे आला हुक्काम के हुजूम पर उस गरज़दार आवाज़ ने सन्नाटा तारी कर दिया। किसी को तवक्को नहीं थी कि रिमाण्ड के फ़ौजी नुमाइंदे के हुक्म को कोई मुसलमान ऐसे जोश से टोकेगा। सबने देखा कि यह कौन है वह हिमात का क़िलादार था जिस का नाम जोरदीक था (तारीख़ में उसका नाम जोरदीक ही लिखा गया है पूरे नाम का इल्म नहीं हो सका। उसके मुतअल्लिक तारीख़ इतना ही बताती है कि वह सलाहुद्दीन अय्यूबी का दोस्त था) लेकिन वक़ाअ निगारों के मुताबिक़ उस वाक़िआ तक वह सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुख़ालिफ़ कैम्प में था और अस्सालेह के वफ़ादारों में से था। उसका सबूत यह है कि वह सिर्फ़ ज़्याफ़त में ही शरीक नहीं था बल्कि जंगी कान्फ्रेन्सों में शरीक होता था। सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ जंग का जो मंसूबा बना था वह उसमें भी शरीक था।

उसने जब एक सलीबी के मुंह से यह अल्फ़ाज़ सुने कि हलब की हर घर की तलाशी ली जाये तो उसमें इस्लामी वक़ार बेदार हो गया। उसने कहा– "यहां सब मुसमलान घराने हैं जिन में पर्दा नशीन ख़्वातीन भी हैं। हम उनकी बे इज़्ज़ती बर्दाश्त नहीं करेंगे। शरीफ़ घरानों में फ़ौजी दाख़िल नहीं होंगे।"

"क़ातिल इसी शहर के थे।" एक सलीबी अफ़सर ने कहा– "हम तमाम शहरियों से इन्तक़ाम लेंगे। विन्डसर जैसा क़ाबिल अफ़सर क़त्ल हो गया है। हमें किसी की इज़्ज़त और किसी पर्दे की परवा नहीं।"

"और मुझे तुम्हारे एक अफ़सर के क़त्ल की परवाह नहीं।" जोरदीक ने क़हर से कांपती हुइ आवाज़ में कहा।

"जोरदीक! ख़ामोश रहो।" नौ उम्र और ना तजुर्बाकार सुल्तान ने हुक्म के लहजे में कहा– "यह लोग इतनी दूर से हमारी मदद के लिए आये हैं। क्या तुम मेहमान नवाज़ी के आदाब से नावाक़िफ़ हो? एहसान फ़रामोश न बनो। हमें क़ातिल को पकड़ना है।" ख़लीफ़ा की ताईद में कई आवाजें सुनाई दीं।

" मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ हो सकता हूं, और हूं भी।" जोरदीक ने कहा– "अपने क़ौम के ख़िलाफ नहीं हो सकता। मोहतरम सुल्तान! अगर आप ने शहरियों को परेशान किया तो सब आप के ख़िलाफ़ हो जायेंगे। आप सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ जो मुहाज़ बना रहे हैं वह कमज़ोर हो जायेगा।"

"हमने क़ौम की कभी परवाह नहीं की।" रिमाण्ड के फ़ौजी नुमाइंदे ने कहा– " हम क़ातिलों को ढूंढेंगे। वह किसी घर में ही होंगे। हम उन्हें बाहर निकाल लेंगे। यह क़त्ल सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कराया है।"

"मेरे दोस्त!" जोरदीक ने कहा– "तुम्हारे एक अफ़सर का क़त्ल कोई बड़ी बात नहीं। तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी को क़त्ल कराने की कितनी बार कोशिश कर चुके हो। यह अलग

बात है कि तुम उसे क़त्ल नहीं कर सके। मैं यह नहीं कहूंगा कि तुम ने कोई जुर्म किया था। दुश्मन एक दूसरे को हर जायज़ नाजायज़ तरीके से मारने और मरवाने की कोशिश करते है। अगर तुम्हारे विन्डसर को अय्यूबी ने क़त्ल कराया है। तो फ़र्क़ सिर्फ़ यह पड़ा है कि तुम उसे क़त्ल कराने में कामयाब नहीं हो सके और वह तुम्हारे एक अहम अफ़सर को क़त्ल कराने में कामयाब हो गया है। तुम उसके कई एक अहम अफ़सरों को क़त्ल कर चुके हो। उसने शहरियों को कभी परेशान नहीं किया।"

तमाम मुसलमान उमरा और हुक्काम जोरदीक के ख़िलाफ़ बोलने लगे। वह सलीबियों को नाराज़ नहीं करना चाहते थे, लेकिन जोरदीक ने सबका मुक़ाबला किया और उसी बात पर डटा रहा कि शहर के किसी घर की तलाशी नहीं ली जायेगी!

"तो क्या हम यह समझें कि तुम भी इस क़त्ल में शरीक हो?" एक सलीबी मुशीर ने कहा– "मुझे शक है कि तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी के दोस्त हो।"

"अगर हलब के मुसलमान घरानों को परेशान किया गया तो मैं किसी के भी क़त्ल में शरीक हो सकता हूं।" जोरदीक ने कहा– "और मैं अय्यूबी का दोस्त भी हो सकता हूं।"

"हम जब तक यहां हैं हमारा हुक्म चलेगा।" सलीबी नुमाइंदे ने कहा।

"तुम यहां उजरत पर आये हो।" जोरदीक ने कहा– "यहां हमारा हुक्म चलेगा। हम मुसलमान हैं। हालात हमें आपस में लड़ा रहे हैं। मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम की कभी दोस्ती नहीं हो सकती। अगर तुम बिला उजरत आये हो तो मैं तुम्हारी मदद से दस्तबरदार होता हूं। मैं क़िलादारी के ओहदे से भी दस्तबरदार होता हूं और मैं तुम सब को यह भी बता देना चाहता हूं कि मेरी क़ौम के किसी एक भी बेगुनाह फ़र्द को तकलीफ़ दी गयी तो मैं इन्तक़ाम लूंगा।"

किसी के इशारे पर दो आदमी जोरदीक को बाहर ले गये। उसकी ग़ैर हाज़िरी में सलीबी नुमाइंदे ने सब से कहा कि हालात ऐसे हैं कि क़िलादार को नाराज़ नहीं किया जा सकता। यह शख़्स इतनी दिलेरी से बातें कर रहा है तो इससे यह ज़ाहिर होता है कि इसके क़िले में जो फ़ौज है वह उसकी मुरीद है। अगर ऐसा है तो सूरते हाल अच्छी नहीं। आपस में सलाह मश्वरा करके जोरदीक को अन्दर बुलाया गया और उसे बताया गया कि शहरियों को परेशान नहीं किया जायेगा मगर क़ातिलों को तलाश ज़रूर किया जायेगा। जोरदीक ने कहा कि वह दो तीन दिन वहीं रहेगा।

❖

तीन चार दिनो बाद जोरदीक हलब से रवाना हुआ। वह अपने क़िले हमात को जा रहा था। उसकी मौजूदगी में क़ातिलों की तलाश और सुराग़रसानी होती रही। उसकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ किसी घर की तलाशी नहीं ली गयी थी। वह मुत्मईन हो कर जा रहा था, मगर सलीबियों को उसके मुतअल्लिक़ इत्मीनान नहीं था। उसके साथ दस बारह मुहाफ़िज़ थे। जोरदीक समेत सब घोड़ों पर सवार थे। रास्ते में टीलों और चट्टानों का इलाक़ा आता था। जोरदीक उस इलाक़े में दाख़िल हुआ तो बऐक वक़्त कहीं से दो तीर आये। दोनों उसके घोड़े के सर में पेवस्त हो गये। तीर अन्दाज़ों ने तीर जोरदीक पर चलाये होंगे। घोड़ा बेलगाम

होकर दौड़ पड़ा। दो तीर और आये। वह भी घोड़े को लगे। अब के निशाना ख़ता होने की वजह यह हो सकती थी कि घोड़ा बिदक कर इधर उधर दौड़ रहा था।

जोरदीक शहसवार था। वह दौड़ते घोड़े से कूद कर एक चट्टान की ओट में हो गया। उस के मुहाफ़िज़ इधर उधर बिखर गये। वह तीर अन्दाज़ो के तआकुब में गये थे। इलाक़ा ऐसा था कि किसी को पकड़ना आसान नहीं था। जोरदीक समझ गया कि यह किराये के क़ातिल हैं जिन्हें सलीबियों ने उसे क़त्ल करने के लिए भेजा है। उन्हें यह शक था कि जोरदीक सुल्तान अय्यूबी का दोस्त है। वह जंगजू था। चट्टान की ओट से ऊपर चला गया। उसे सिर्फ़ चट्टाने नज़र आयीं या अपने मुहाफ़िज जो इधर उधर तीर अन्दोज़ों को ढूंढते फिर रहे थे।

"इधर आ जाओ!" किसी ने चिल्लाकर कहा– "इधर आ जाओ पकड़ लिये हैं।"

मुहाफ़िज़ उधर को भागे मुहाफ़िजों ने तीन आदमियों को घेरे में ले रखा था। तीनों नक़ाब पोश थे मगर उनके पास कमाने नहीं थीं। तरकश भी किसी के पास नहीं थी। उनके साथ घोड़े थे। उन्हें उस हालत में पकड़ा गया था कि वह घोड़ों पर सवार हो रहे थे। तीनों ने चेहरे छुपा रखे थे। उनकी सिर्फ़ आंखे नज़र आती थीं। उन्हें पकड़ कर जोरदीक के पास ले गये।

"तुम्हारी कमाने और तरकश कहां हैं?" जोरदीकने उनसे पूछा।

"हमारे पास सिर्फ़ तलवारे हैं।" एक ने जवाब दिया।

"सुनो भाईयों!" जोरदीक ने बड़े तहम्मुल से कहा– "तुम्हारे चारों तीर ख़ता हो गये। तुम मुझे क़त्ल नहीं कर सके। तुम पकड़े भी गये हो। तुम हार गये हो। अब झूठ से बचो।"

"कैसे तीर?" एक ने हैरतज़दा होकर कहा– "हमने किसी पर तीर नहीं चलाये। हम मुसाफ़िर हैं। ज़रा आराम करने के लिए रुके हुए थे। अब जा रहे थे कि इन लोगों ने पकड़ लिया।"

जोरदीक हंस पड़ा और जवाब देने वाले नक़ाबपोश से कहने लगा। मैं तुम्हे अपना दुश्मन नहीं समझता। अगर ऐसा होता तो अब तक मैं तुम तीनों की गर्दनें उड़ा चुका होता। तुम किराये के क़ातिल हो। सिर्फ यह बता दो कि मेरे क़त्ल के लिए तुम्हे किस ने भेजा है? साफ़ बतादो और जाओ।"

दो नाकाबपोश ने क़स्में खायीं। तीसरा ख़ामोश रहा।

"अपने आपको आज़ाब में न डालो।" जोरदीक ने कहा– "किसी के लिए अपनी जानें ज़ाया न करो। मैं तुम्हें कोई सज़ा नहीं दूंगा। फ़ौरन आज़ाद कर दूंगा।"

नकाबपोश ने फिर पश व पेश की।

"इनके नक़ाब उतार दो।" जोरदीकक ने अपने मुहाफ़िज़ों से कहा– "इनसे तलवारे ले लो।"

दो नक़ाबपोश ने म्यान से तलवारें निकाल लीं और फुर्ती से पीछे हट गये। तीसरा नकाबपोश उन दोनों के पीछे हो गया। उसके पास तलवार नहीं थी। जोरदीक ने क़हक़हा लगाकर कहा– "क्या तुम इतने सारे मुहाफ़िज़ों का मुक़ाबला कर सकोगे जबकि तुम्हारे

तीसरे साथी के पास तलवार ही नहीं है? मैं तुम्हे एक और मौका देता हूं। मैंने अभी अपने मुहाफिजों को हुक्म नहीं दिया कि वह तुम्हारी बोटियां उड़ादें।" मुहाफ़िज़ों ने उनके गिर्द घेरा डाल लिया था।

"और मैं तुम्हें आख़िरी बार कहता हूं कि हम में से किसी ने तीर नहीं चलाये।" एक नकाब पोश ने कहा।

मुहाफ़िज़ों का कमाण्डर उन तीनों के पीछे खड़ा था। उसे जाने किस तरह कुछ शक हुआ। उसने उस तीसरे नाकबपोश जिसके पास तलवार नहीं थी का चुग़ा ऊपर से खींचा तो उसके सर का हिस्स पीछे हो गया। उसने उसका नकाब भी नोच लिया, और जब चेहरा बेनकाब हुआ तो सब यह देखकर हैरान रह गये कि वह एक ख़ुबसूरत लड़की थी। जोरदीक ने कहा कि उसे उसके पास लाया जाये। दोनों नकाबपोशों ने हैरानकुन फुर्ती से पीछे को मुड़कर लड़की को पकड़ने वाले मुहाफ़िज़ के सीने पर तलवारें रख दीं। एक ने ललकार कर कहा– "जब तक हमें पूरी बात नहीं बताओगे और हमारी नहीं सुनोगे इस लड़की को हाथ नहीं लगा सकोगे। हम जानते हैं कि हमें तुम्हारे हाथों मरना है लेकिन हम इनमें से आधे मुहाफ़िजों को मार कर मरेंगे। तुम्हे यह लड़की ज़िन्दा नहीं मिल सकती।"

जोरदीक एक ठंडे मिज़ाज का आदमी मालूम होता था। उसने मुहाफ़िज़ों को पीछे हटा दिया और नकाबपोशों से कहा– "तुम मुझसे और क्या बात सुनना चाहते हो? बात इतनी सी है कि तुम किराये के कातिल हो और यह लड़की तुम्हें इनाम के तौर पर मिली है।"

"दोनों बातें ग़लत हैं।" एक नकाबपोश ने कहा– "एक सलीबी हाकिम और एक जासूस सलीबी लड़की को कत्ल करना गुनाह नहीं। यह हमारी बदकिस्मती है कि हम फ़रार में पकड़े गये हैं लेकिन हम खुश हैं कि हमने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया है। यह लड़की मुसलमान है। मज़लूम है। इसे हम सलीबियों के पंजे से छुड़ा कर ला रहे हैं और दमिश्क जा रहे हैं।"

"क्या विन्डसर और सलीबी लड़की को तुमने कत्ल किया है?" जोरदीक ने पूछा।

"हां!" एक नकाबपोश ने जवाब दिया– "हमने उस दोनों को कत्ल किया है।"

"और क्या तुमने मुझ पर इसलिए तीर चलाये हैं कि हम सुल्तान अय्यूबी के दुश्मन हैं।" जोरदीक ने पूछा।

"हम अच्छी तरह जानते हैं कि तुम्हारा नाम जोरदीक है और तुम हमात के किलेदार हो।" नकाबपोश ने कहा– "और हम यह भी जानते हैं कि तुम सुल्तान अय्यूबी के दुश्मन हो लेकिन तुम्हें कत्ल करने की कोई ज़रूरत नहीं। अल्लाह हमारे साथ है। उसकी मदद से हम बहुत जल्द तुम से हथियार डलवा कर तुम्हारे तुम्हारी फौज समेत अपना कैदी बना लेंगे। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी हसन बिन सबाह और शेख़ सन्नान नहीं। वह ललकार कर लड़ा करता है चोरों की तरह कत्ल नहीं कराया करता। विन्डसर और लड़की का कत्ल हमारा ज़ाती फ़ेल था। हालात का तकाज़ा था कि वह कत्ल कर दिये जायें। हम ने कत्ल का इरतकाब किया। यह सुल्तान अय्यूबी का हुक्म और मंशा नहीं था।" उसने जोरदीक के घोड़े की तरफ़ देखा जो कुछ दूर मरा पड़ा था। दो तीर उसकी पेशानी में और दो पहलू में उतरे

हुए थे। नकाबपोश ने कहा– "घोड़े पर सवार हो जाओ। हम दोनों में से किसी को तीर व कमान दो।

तुम घोड़ा दौड़ाओ जिस तरह भी दौडा सकते हो दौड़ाओ। दायें बायें होते जाओ। हम दोनों में से कोई एक घोड़े पर सवार होकर तुम पर तीर चलायेगा। अगर पहला तीर ख़ता हो जाये तो तीर अन्दाज़ की गर्दन उड़ा देना। यह तीर हमारे चलाये हुए नहीं थे जो तुम्हारी बजाये तुम्हारे घोड़े को लगे।"

"तुम मामूली सिपाही नहीं लगते?" जोरदीक ने कहा– "क्या तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज के आदमी हो?"

"और तुम कौन हो?" नकाबपोश ने कहा– "क्या तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी के फ़ौज के आदमी नहीं हो? क्या तुम इस्लाम के सिपाही नहीं हो?.......तुम अपनी असलियत को भूल गये हो। किलादारी के ओहदे ने तुम्हारा दिमाग़ ख़राब कर दिया है। तुमने इससे ज़्यादा रुत्बा हासिल करने के लिए काफ़िरों से दोस्ताना गांठ लिया है।"

"तुम दरख़्त से टूटी हुई वह टहनी हो जिस की क़ीमत में सूख कर तिनका तिनका हो जाना लिख दिया गया है।" दूसरे नक़ाब पोश ने कहा– "तुम इतने अहम इन्सान नहीं हो कि सुल्तान अय्यूबी तुम्हारे क़त्ल की ज़रूरत महसूस करे। तुम अपने किये की सज़ा भुगतने के लिए ज़िन्दा रहोगे। तुम मरोगे तो सलीबियों के हाथों मरोगे।"

"तुम हलब शराब पीने और ऐश करने गये थे।" पहले नक़ाबपोश ने कहा– "तुम इस लड़की के नाच से लुत्फ़ अन्दोज़ होने गये थे।"

"मैं मुसलमान लड़की हूं।" लड़की बोली– "मुझे सलीबियों की महफ़िलों में नचाया गया और मेरे जिस्म के साथ खेलते रहे। ज़रा सी देर के लिए तसव्वुर करो कि मैं तुम्हारी बेटी हूं। मैंने वहां मुसलमान बेटियों को नंगा नाचते देखा है। तुम इतने बे ग़ैरत हो गये हो कि अपनी बेटियों की आबरू रेज़ी भी तुम में ग़ैरत बेदार नहीं कर सकती। मैं सलीबियों में सात आठ साल गुज़ार कर आई हूं। मैंने उन सलीबी हाकिमों के साथ वक़्त गुज़ारा है जिन्हें तुम ने अपना दोस्त बनाकर यहां बुलाया है। मैंने उन की बातें सुनी हैं। वह दोस्ती का फ़रेब दे कर मुसलमानों को आपस मे लड़ा रहे हैं।"

जोरदीक पर ख़ामोशी तारी हो गयी थी। उसके मुहाफ़िज़ हैरान थे कि इतना ख़ुद सर और दिलेर क़िलादार उन तीनों की इतनी सख़्त बातें बर्दाश्त कर रहा है....वह गहरी सोच में खो गया था। उसे वह झड़प याद आ रही थी जो उसने रिमाण्ड के फ़ौजी नुमाइंदे से उस मसले पर की थी कि हलब के बाशिन्दों के घरों की तलाशी ली जायेगी। उसे यह ख़्याल आया कि उस पर तीर चलाने वाले सलीबियों के आदमी होंगे। उसने नर्म लहजे मे नक़ाब पोशों से कहा– "मैं तुम्हें अपने क़िले में ले जाना चाहता हूं।"

"क़ैदी बनाकर?"

"नहीं!" जोरदीक ने यह कह कर सब को हैरना कर दिया। "मेहमान बनाकर। मुझ पर भरोसा रखो। अपनी तलवारें अपने पास रखो।"

सब घोड़ों पर सवार हो गये। जोरदीक का घोड़ा मर चुका था। उसने एक मुहाफ़िज़ का घोड़ा ले लिया और काफ़िला चल पड़ा।

❖

वह चट्टानी इलाके से निकलने वाले थे कि सरपट दौड़ते घोड़ों के टाप सुनाई दिये। सब ने अपने घोड़ों को ऐड़ लगायी और नज़र आ गया कि दो घोड़ा पूरी रफ़तार से हलब की सिम्त भागे जा रहे थे। उनकी कमाने और तरकश साफ़ नज़र आ रहे थे। वह यक़ीनन यहां से भागे थे।

"यह हो सकते हैं तुम्हारे कातिल।" एक नक़ाबपोश ने कहा और घोड़े को ऐड़ लगा दी। दूसरे नक़ाबपोश ने भी घोड़ा दौड़ा दिया। दोनों ने तलवारें निकाल लीं। लड़की वहीं रही।

तमाम मुहाफ़िज़ों ने घोड़े तआक्क़ुब में डाल दिये। उनमें से सबसे ज़्यादा तेज़ घोड़े नक़ाबपोशों के थे। आगे कुछ इलाका रेत की ढेरों और घाटियों का था। भागने वाले सवारों ने घोड़े मोड़े। नक़ाब पोश तजुर्बाकार सवार मालूम होते थे। उन्होंने घोड़ों का रूख़ मोड़ कर फ़ासिला कम कर लिया। भागने वालों ने कंधों से कमाने उतार लीं और उन में एक-एक तीर डाल लिया। घोड़ों के रूख़ बदल कर उन्होंने तआक़ुब करने वालों पर तीर चलाये। तीर ख़ता कर गये मगर तआक़ुब में ख़तरा पैदा कर गये। नक़ाब पोश पहुंच गये। फ़ासिला चन्द गज़ रह गया तो भागने वालों ने तीर चलाने की कोशिश की मगर नक़ाबपोशों ने उन्हें मुहलत न दी। एक ने भागने वाले घोड़े के पिछले हिस्से में तलवार मार दी। घोड़ा बे क़ाबू हो गया। दूसरे ने दूसरे भागने वाले पर तलवार का वार किया तो उसका एक बाज़ू साफ़ काट दिया। दूसरे का घोड़ा ज़ख़्मी होकर बेलगाम हो गया था। उसे मुहाफ़िज़ों ने पकड़ लिया।

उन्हें जब जोरदीक के सामने ले जाया गया तो असल सूरत वाज़ेह हो गयी। नक़ाब पोशों ने नक़ाब उतार दिये और उन्होंने बता दिया कि वह सुल्तान अय्यूबी के जासूस हैं। उनमें एक ख़िल्लत था और दूसरा उसका साथी और जो भागते हुए पकड़े गये थे वह मुसलमान ही थे लेकिन जोरदीक को क़त्ल करने आये थे। उनमें से जिसका बाज़ू कट गया था, उसे बड़ी बे रहमी से कुछ दूर फैंक दिया गया। दूसरे से कहा गया कि वह ज़िन्दा वापस जाना चाहता है तो बतादे कि उसे किसने भेजा था, वरना उसका भी बाज़ू काट कर यहीं फैंक दिया जायेगा। उसने बताया कि उन दोनों को रिमाण्ड के फ़ौजी नुमाइंदे ने दो मुसलमान उमरा की मौजूदगी में कहा था कि फलां दिन फलां वक़्त जोरदीक हलब से रवाना हो रहा है और वह फ़लों वक़्त चट्टानी इलाक़ों से गुज़रेगा। दोनों को बेसाख़्ता इनाम पेश किया गया था।। उन्हें जोरदीक के क़त्ल की यह तरकीब बतायी गयी थी कि चट्टानी इलाके मे छुप जायें और जोरदीक को तीरों का निशाना बना कर भाग आयें।

मुक़र्ररह वक़्त पर दोनों इस इलाके में पहुंच गये और गुज़रने वाले रास्ते को देख कर एक बुलन्द चट्टान पर छुप गये। बहुत से इन्तज़ारके बाद जोरदीक आ गया। दो मुहाफ़िज़ घोड़ा सवार आगे थे। एक उसके दायें और दूसरा उसके बायें। बाक़ी पीछे थे। तीर अन्दाज़ों ने निशाने तो ठीक लिये थे लेकिन पहलू वाला मुहाफ़िज़ आगे आ जाता था। जोरदीक और

करीब आया तो तीर चलाते वक़्त आगे वाला मुहाफ़िज़ आगे आ गया। तीर चला दिये गये लेकिन निशाना ज़रा नीचे हो गया था। दोनों तीर घोड़ों की पेशानी में लगे।

दूसरे दो तीर इसलिए ख़ता हो गयेकि घोड़ा दो तीर खाकर बिदक गया था और जब तीर चलाये गये तो वह बहुत ज़ोर से उछल पड़ा था। इससे तीर जोरदीक को लगने के बजाये घोड़े के पहलू में लगे।

वहां छुपने की जगहें बहुत थीं और मौज़ूं भी थी। उन्होंने घोड़े ऐसी ही एक जगह छुपा दिये थे। और उनके मुंह बांध दिये थे ताकि हिनहिना न सकें। तीर अन्दाज़ भाग कर कहीं छुप गये। उन्होंने मुहाफ़िज़ों को देखा जो बिखरकर उन्हें ढूढते रहे थे। वह छुप कर उन्हें देखते रहे फ़िर एक तरफ़ से शोर उठा कि इधर आ जाओ पकड़ लिये हैं।

तीर अन्दाज़ों ने देखा कि मुहाफ़िज़ तीन नक़ाब पोशों को पकड़ कर ले जा रहे थे। तीर अन्दाज़ बहुत ख़ुश हुए कि उनकी जान बची, मगर वह अभी वहां से भागना नहीं चाहते थे क्योंकि अभी पकड़े जाने का ख़तरा था। एक मुहाफ़िज़ एक चट्टान पर खड़ा रहा। उसे वहां देख भाल के लिए खड़ा किया गया था। बहुत देर बाद उस मुहाफ़िज़ को वहां से बुलाया गया। दोनों तीर अन्दाज़ अपने घोड़ों के पास गये। उनके मुंह खोले और सवार होकर फ़रारा हुए। उन्हें मालूम नहीं था कि जोरदीक अपने मुहाफ़िज़ों के साथ वहां से चल पड़ा है।

इस तीर अन्दाज़ को जोरदीक अपने साथ ले लिया और सब हमात की सिम्त रवाना हो गये। दूसरा तीर अन्दाज़ कटे हुए बाज़ू से ख़ून बह जाने के वजह से तड़प तड़प कर मर चुका था। रास्ते में ख़िल्लत ने उससे हमीरा के मुतअल्लिक़ सारी बात सुनाई और यह भी सुनाया कि उसने विन्डसर को किस तरह क़त्ल किया था। जोरदीक के लिए हैरान कुन यह था कि वह हलब से निकल कर किस तरह आये। ख़िल्लत ने उसे बताया कि वहां उनका एक कमाण्डर भी था। जिसका वह नाम और हुलिया नहीं बताना चाहता था। उस ने यह तरीक़ा इख़्तियार किया कि कपड़े वग़ैरह लपेट कर नौज़ाइदा बच्चे के क़दबुत की शकल बना दी और उस पर कफ़न चढ़ा दिया।

चार पांच जासूसों ने इधर–उधर बताया कि फ़लां (जासूस) का बच्चा मर गया है। कफ़न में लपेटे हुए कपड़ों को कमाण्डर ने हाथों पर उठाया। ख़िल्लत, उसके साथी, हमीरा (मर्दाना लिबास में) और चार पांच आदमी जनाज़े की शकल में साथ चल पड़े।

क़ब्रिस्तान शहर से बाहर था। वहां तीन घोड़े खड़े थे। यह घोड़े एक ऐसा जासूस लाया था जो हलब की फ़ौज में था। यह चुराये हुए घोड़े थे। "जनाज़ा" फ़ौजियों के सामने से गुजरा और क़ब्रिस्तान में गया। वहां क़ब्र खोदी गयी। जनाज़ा पढ़ा गया। ख़िल्लत, उस का साथी और हमीरा घोड़ों पर सवार हुए और निकल गये।

क़िले में जोरदीक का क़ाफ़िला रात को पंहुचा। ख़िल्लत वग़ैरह को उसने बाइज़्ज़त मेहमानों की तरह रखा। उसने ख़िल्लत से पूछा– "मुझे अब अपना दोस्त समझो। मुझे यह बताओ कि सलाहुद्दीन अय्यूबी क्या कर रहा है। तुम्हे ज़रूर मालूम होगा। उसने अस्सुआलेह का तआक्कुब क्यों नहीं किया था?"

"मैं अगर सुल्तान का मंसूबा जानता भी हूं तो आप को नहीं बताऊंगा।" ख़िल्लत ने जवाब दिया— "और मैं आप को यह भी नहीं बताऊंगा कि मैंने हलब से क्या—क्या मालूमात हासिल की हैं।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ मेरी ज़ाती दुश्मनी थी।" जोरदीक ने कहा— "फिर मैं उसके ख़िलाफ़ हो गया। उस की वजह जो कुछ भी थी, मैं ग़लती पर था। मुझे इस ग़लती का एहसास दुश्मन ने दिलाया है। मैं ने सलीबियों की नीयत मालूम करली है। एक तरफ़ वह मरी फ़ौज और मेरे क़िले को इस्तेमाल करना चाहते हैं, दूसरी तरफ़ उन्होंने मुझे क़त्ल कराने की कोशिश की। मुझे नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम और सलाहुद्दीन अय्यूबी की बातें और उसूल याद आ गये हैं। उनका कहना है कि यह जंग हिलाल और सलीब की है। यह किसी इसाई बादशाह की किसी मुसलमान बादशाह के ख़िलाफ़ जंग नहीं। अय्यूबी कहा करता था कि जब तक दुनिया में एक भी मुसलमान जिन्दा है सलीबी उसे ख़त्म करने की कोशिश में लगे रहेंगे। ग़ैर मुस्लिम ख़्वाह किसी भी मज़हब का हो मुसलमान का दोस्त नहीं हो सकता। ग़ैर मुस्लिम दोस्ती का हाथ बढ़ायेंगे तो उसमें दुश्मनी का ज़हर मिला हुआ होगा। नूरूद्दीन ज़ंगी भी इसी उसूल का पाबन्द था। वह हमेशा कहा करता था कि जिस रोज़ मुसलमान किसी ग़ैर मुस्लिम से दोस्ती करेंगे, उस रोज़ इस्लाम का ख़ात्मा शुरू हो जायेगा।"

"तो क्या आप सलाहुद्दीन अय्यूबी का साथ देने पर आमादा हो गये हैं?" ख़िल्लत ने पूछा और यह भी कहा— "मैं एक छोटा सा आदमी हूं। मामूली सिपाही हूं मुझे ऐसी जुर्रत नहीं करनी चाहिए कि एक क़िलादार से यह पूछूं कि वह क्या सोच रहा है और उसके इरादे क्या हैं, लेकिन मुसलमान की हैसियत से मुझे यह हक़ हासिल है कि कोई मुसलमान गुमराह हो जाये तो उसे इतना कह सकूं कि तुम गुमराह हो गये हो।"

"हां!" जोरदीक ने कहा— "तुम्हें यह हक़ हासिल है। मैं तुम्हें एक पैग़ाम देना चाहता हूं। यह सुल्तान अय्यूबी के कानों में डाल देना। मैं तहरीरी पैग़ाम नहीं देना चाहता। मैं अपना कोई एल्ची भी नहीं भेजना चाहता। तुम अय्यूबी से कहना कि हमात के क़िले को अपना समझो मगर अपने किसी मोअतमद सालार को भी पता न चलने देना कि मैं ने यह पेशकश की है। यह एक बड़ा ही नाज़ुक राज़ है। उसे कहना कि सलीबी दोस्ती के पर्दे में हमारे इलाकों में क़दम जमाते जा रहे हैं। तुम सर्दियों के बाद शायद हम्ला करो, मगर यह ख़्याल रखना कि इधर से तुम पर पहले ही हम्ला न हो जाए। अगर तुम ने पेशक़दमी की तो हमात के रास्ते से आना। मैं इन्शाअल्लाह पुरानी दोस्ती का हक़ अदा करूंगा।"

दूसरे दिन जोरदीक ने ख़िल्लत, उसके साथी और हमीरा को रूख़सत कर दिया।

❖

सलीबी इन्टेलीजेंस के कमाण्डर विन्डसर का क़त्ल बेशक इत्तेफ़ाक़िया था। उसने सुल्तान अय्यूबी के दो जासूसों के लिए ऐसे हालात पैदा कर दिये थे कि वह उनके हाथों क़त्ल हो गया, लेकिन यह बहुत बड़ा कारनामा था। उसके क़त्ल से सुल्तान अय्यूबी को फ़ायदा पहुंचा कि उसके दुश्मन की इन्टेलीजेंस जो पहले ही कमज़ोर थी मुन्ज़िम न हो सकी। उसके

मुकाबले में सुल्तान अय्यूबी का निज़ाम जासूसी ज़्याद मुन्ज़िम और ज़हीन था। उसके जासूस सिर्फ़ जासूस नहीं थे जो पकड़े जायें, तो ख़ामोशी इख़्तियार कर लें। उसने जासूसों को बड़ी सख़्त कमाण्डो ट्रेनिंग दे रखी थी ताकि वह पकड़े जाने की सूरत में लड़कर निकलें और जिसे कत्ल करना ज़रूरी हो उसे कत्ल भी करें और उनके जिस्म इतने सख़्त हों कि ज़्यादा से ज़्यादा अज़ीयत भूख, प्यास और थकन बर्दाश्त कर सकें। यह ख़ुबियां ख़िल्लत और उसके साथियों में भी थीं। उन्होंने न सिर्फ़ सलीबियों के इतने अहम अफ़सर को मार कर दुश्मन को अंधा कर दिया बल्कि जोरदीक जैसे सख़्त मिज़ाज किलादार के साथ ऐसी बातें कीं कि उसे सुल्तान अय्यूबी का हामी बना आये।

ख़िल्लत ने सुल्तान अय्यूबी को जब जोरदीक का पैग़ाम दिया तो सुल्तान को यूं सकून महसूस हुआ जैसे सेहरा में ठंडी हवा का एक झोंका भूले भटके आ गया हो। उसे हर तरफ़ दुश्मन ही दुश्मन नज़र आते थे। अपने भी दुश्मन पराये भी दुश्मन। जोरदीक के पैग़ाम ने उसे सकून तो दिया लेकिन वह किसी खुशफ़हमी में मुब्तला न हुआ। यह धोखा भी हो सकता था। लिहाज़ा उस ने अपने हम्ले के प्लान में कोई रद्दो बदल न किया। इतना ही पेशे नज़र रखा कि हमात से हिमायत की तवक्क़ो है।

अब दुश्मन के कैम्प (हलब) से जो इत्तलाअें आ रही थीं उनमें कोई नई बात नहीं थी। वहां कोई तबदीली नहीं आयी थी। वहां के कमाण्डरों और मुशीरों को यही तवक्क़ो थी कि सर्दियों में जंग का इम्कान नहीं। एक इत्तलाअ यह भी मिली थी कि सलीबी बज़ाहिर सब के दोस्त बने हुए हैं मगर वह दर पर्दा बड़े-बड़े उमरा को एक दूसरे के ख़िलाफ़ उकसा रहे हैं। यह तो सुल्तान अय्यूबी को मालूम ही था कि सालेह के तमाम हवारी एक दूसरे के दुश्मन हैं। वह इकट्ठे सिर्फ़ इसलिए हो गये थे कि सुल्तान अय्यूबी को वह अपना मुश्तरका दुश्मन बना बैठे थे और इस दुश्मनी की वजह यह थी कि सुल्तान अय्यूबी उन्हें ऐश व इशरत की और मनमानी की इजाज़त नहीं दे सकता था। उन्हें सुल्तान अय्यूबी का यह मिशन भी अच्छा नहीं लगता था कि सल्तनते इस्लामिया की तौसी और इस्तेहकाम को जुनून या सही अल्फाज़ में ईमान बना लिया जाये। वह उन हुक्मरानों में से नहीं था जो आराम और सकून से हुकूमत और ऐश करने की ख़ातिर दुश्मन को दोस्त बना लिया करते थे।

इस हिदायात के बाद उसने कहा — "हमारे ऐश परस्त और ईमानफ़रोश भाई इस्लाम की तारीख़ को इस मोड़ पर ले आये हैं जहां तुम्हारा अपने ही अज़ीज़ों के ख़िलाफ़ लड़ना तुम पर फ़र्ज़ हो गया है। क्या किसी ने कभी सोंचा था कि मैं अपने पीर व मुर्शिद नूरूद्दीन जंगी मरहूम के बेटे के ख़िलाफ़ लडूंगा? मगर सूरत यह पैदा हो गयी है कि बेटे की मां भी मुझ पर लानत भेज रही है कि उसका मुर्तद बेटा अभी ज़िन्दा क्यों है। मेरे रफ़ीक़ों तुम जिस फ़ौज से लड़ने जा रहे हो, उसमें तुम्हारे चचाज़ाद भाई भी होंगे, मामू ज़ाद और ख़ाला ज़ाद भी होंगे। मुझे दो भाई ऐसे भी अपने फ़ौज नज़र आये हैं जिन का एक भाई इमानफ़रोशों की फ़ौज में है। अगर तुम ख़ून के रिश्तों को दिल में जगह दोगे तो इस्लाम के साथ जो तुम्हारा रिश्ता है वह टूटता है। कूच करने से पहले तुम्हे अहद करना होगा कि तुम यह नहीं देखोगे कि तुम्हारा

मद्दे मुकाबिल कौन है। तुम्हारी नज़रें अपने अलम पर रहेंगी। दिल में यह हकीकत बैठा लो कि तुम्हारे सामने तुम्हारे कलमा गो भाई हैं मगर उन की पीठ पर सलीबी हैं। मैं उस भाई को भाई नहीं समझता जो अपने मज़हब के दुश्मन को अपना दोस्त समझता है।"

एक वकाअ निगार की तहरीर से पता चलता है कि इस लेक्चर के दौरान सलाहुद्दीन अय्यूबी की आवाज़ भर्रा गयी। उसने ख़ामोश होकर सर झुका लिया। यह देखना किसी के लिए मुश्किल न था कि उसकी आंखों में आंसू आ गये थे। वह कुछ देर सर झुका कर ख़ामोश बैठा रहा। कान्फ्रेन्स के शुरका पर सकूत तारी हो गया। सुल्तान अय्यूबी ने सर उठाया और दोनों हाथ दुआ के लिए उठाये और आसमान की तरफ मुंह करके गिड़गिड़ाया। – "ख़ुदाये अज़्ज़ो व जल्ल! मैं तेरे नाम की ख़ातिर तेरे रसूल सल्ल० के नामूस के ख़ातिर अपने भाइयों के ख़िलाफ़ तलवार उठा रहा हूं। अगर गुनाह है तो मुझे बख़्श देना मेरे ख़ुदा! मुझे तेरी रहनुमाई की ज़रूरत है। मुझे इशारा दो। मैं गुमराह हूं। गुनहगार हूं।" उसने सर फिर झुका लिया और जाने उसे अपनी ज़ात से कोई इशारा मिला या ख़ुदा ने उसे कोई इशारा दे दिया, उसने गरजदार आवाज़ में कहा– "हमें क़िब्ला अव्वल को आज़ाद कराना है। तुम्हें बैतुलमुकद्दस पुकार रहा है। मेरे रास्ते में मेरा बाप आया तो उसे भी कत्ल कर दूंगा। मेरे बच्चे रास्ते में हाइल हुए तो उन्हें भी कत्ल कर दूंगा।"

उसका चेहरा दमकने लगा। जज़्बातियत का ग़ल्बा ख़त्म हो चुका था। वह फिर वही सलाहुद्दीन अय्यूबी बन गया जो सिर्फ़ हकाइक के मुतअल्लिक मुख़्तसर सी बात किया करता था। उसने कमाण्डरों को बताया कि दो रोज़ बाद रात को कूच होगा। उसने प्लान के मुताबिक फ़ौजों की जो तकसीम की थी वह सब को बताई और हर हिस्से के कमाण्डर को कूच का वक़्त बताया। हरावल के कमाण्डर को ज़रूरी हिदायत दीं। छापा मार (कमाण्डो) जैशों की तकसीम बताई। पहलूओं पर जिन दस्तों को रखना था उनके कमाण्डरों को कूच का अन्दाज़, रास्ता और वक़्त बताया और उसने सब को यह भी बताया कि उसका अपना हैडक्वार्टर घूमता फिरता रहेगा। उससे पहले उसने मिस्र के रास्ते पर मुतहरिक रहने वाले छापामार दस्ते को भेज दिये थे और मुसाफ़िरों और ख़ानाबदोशों के बहरूप में उसने अपनी इन्टेलीजेंस की बहुत सी नफ़री उन इलाकों में भेज दी थी जहां रिमाण्ड की फ़ौज के आने की तवक्को थी।

रस्द के मुतअल्लिक उसे कोई परेशानी नहीं थी। कमो व बेश एक साल तक मिस्र से रस्द और कुमक मंगवाने की ज़रूरत नहीं थी। अस्लेहा और जानवरों का स्टाक भी उसने दमिश्क में जमा कर लिया था। उसने घोड़ा सवार छापा मारों को मिस्र के रास्ते के इर्द गिर्द के इलाकों में इस हिदायत के साथ भेज दिया था कि रिमाण्ड की फ़ौजें इधर आये तो उस पर शबख़ून मारने हैं और अगर ज़रूरत महसूस हो तो फ़ौरन इत्तलाअ दें ताकि सलीबियों को घेरे में लेने का इन्तज़ाम किया जाये।

❖

6/7 दिसम्बर 1174 ई० की रात को हरावल दस्ते ने दमिश्क से कूच किया। वह रात

बहुत सर्द थी। झकड़ चल रहे थे जो जिस्म को काटते थे। सिपाही और घोड़े उन झकड़ों के आदी हो चुके थे। हरावल के कमाण्डर को बता दिया गय था कि देख भाल का जैश सिपाही पहले रवाना हो चुका है। उसके सिपाही वर्दी में नहीं थे। वह मुसाफिरों के भेस में गये थे। सुल्तान अय्यूबी ने उन्हें यह हिदायत दी थी कि तेज़ रफ्तार कासिद पीछे आकर हरावल के कमाण्डर को आगे की इत्तलाअें देते रहें। हरावल को हमात के किले तक जाना था जहां किलादार जोरदीक था। कमाण्डर को सुल्तान अय्यूबी ने बताया था कि हमात का किला बग़ैर लड़े मिलने का इम्कान है लेकिन वह किसी धोखे में न आये। वह किले से मौजूं फ़ासिले पर रूक जाये और देखे कि किले वालों का रवैया किया है। अगर जोरदीक सुलह करना चाहे तो उसे किले से बाहर बुलाया जाये और सुल्तान अय्यूबी के आने तक उसके साथ कोई समझौता न किया जाये।

सुल्तान अय्यूबी ने दिवार तोड़ने वाले तजुर्बाकार आदमियों की एक जमाअत को आगे भेज दिया था। हरावल की रवानगी से तीन चार घंटो बाद दो ज़्याद नफ़री के दस्ते इस तरह रवाना किये गये कि एक को हरावल के दायें और दूसरे को बायें रहना था। उनके लिए हिदायत यह थी कि अगर हमात के किले से हरावल का मुकाबला हो जाये तो यह दोनों दस्ते दोनों तरफ से आगे बढ़कर किले का मुहासिरा कर लें और उस पर इस कदर तीर बरसायें कि दिवार तोड़ने वाली जमाअत दिवार तक पहुंच जाये।

उन दोनों हिस्सों के दर्मियान सुल्तान अय्यूबी जा रहा था। हरावल और दोनों पहलूंओ के दस्ते सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज का चौथा हिस्सा था। उसने बाकी तमाम फ़ौज पीछे रखी थी। उसने कम से कम नफ़री से दुश्मन से झड़प लेने का प्लान बनाया था। रस्द के लिए उस ने छापामार दस्ते को फैला दिये थे। ऐसे छोटे-छोटे दस्ते हमात से बहुत आगे भी भेज दिये थे.... ताकि हमात से कोई कासिद हलब तक न जा सके, और अगर कहीं से कुमक आ जाये तो छापा मार उसे शबख़ून से परेशान करते रहें और पेश कदमी रोके रखें।

अगला दिन गुज़र गया। रात गहरी हो चुकी थी। जब हरावल के दस्ते हमात से दो तीन मील दूर तक पहुंच चुके थे। 9 दिसम्बर 1174 की सुबह तुलूअ हुई तो किले पर खड़े संतरियों को कुहरा और धुंध में ऐसे साये नज़र आये जैसे बहुत से इन्सान और घोड़े हों। कोई काफिला हो सकता था। ज्यों-ज्यों सूरज उपर उठता गया धुंध छटती गयी और साये निखरते गये। संतरियों ने देखा कि यह फ़ौज है। उन्हें अभी यह मालूम नहीं था कि किले के दायें बायें भी फ़ौज मौजूद है जो उन्हें नज़र नहीं आ सकती। नकारा बजा दिया गया। एक कमाण्डर दौड़ता ऊपर आया। उसने फ़ौज देखी तो दौड़ता गया और किलादार जोरदीक को इत्तलाअ दी।

"घबराओ नहीं" जोरदीक ने कमाण्डर से कहा- "यह किसी हम्लावर की फ़ौज नहीं हो सकती। सलीबी मुझे कत्ल नहीं करा सके उन्होंने कोई और साज़िश की होगी। उन्हों ने अस्सुआलेह से यह हुक्म ले लिया होगा कि हमात का किला मुझ से लेकर किसी और को दे दिया जाये। यह फ़ौज किले के लिए आई होगी। तुम बाहर जाओ और देखो कि यह किसका

दस्ता है और यह लोग क्या चाहते हैं।"

कमाण्डर घोड़े पर सवार बाहर निकला और सुल्तान अय्यूबी सुल्तान अय्यूबी के हरावल दस्ते की तरफ़ गया। उसने अलम देखा तो यह सुल्तान अय्यूबी का था। वह ज़रा पीछे ही रूक गया। हरावल दस्ते का कमाण्डर उस तक गया। दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया। दोनों नुरूद्दीन ज़ंगी के फ़ौज में इकठ्ठे रह चुके थे।

"ऐसा भी होना था कि हम आपस में लड़ेंगे।" हरावल दस्ते के कमाण्डर ने उसके साथ हाथ मिलाकर कहा– "ज़ंगी ज़िन्दा था तो हम दोस्त और रफ़ीक़ थे। वह मर गया तो हम दुश्मन बन गये।"

"तुम क्यों आये हो?" किले के कमाण्डर ने पूछा।

"तुम किले को नहीं बचा सकोगे।" हरावल के कमाण्डर ने कहा– "मैं तुम्हे मश्वरा देता हूं कि किलादार से कहो कि किला हमारे हवाले कर दे और ख़ून ख़राबा न होने दे। हम तुम्हे ज़्यादा मुहलत नहीं देंगे। थोड़ी देर में किला मुहासिरे में आ चुका होगा। तुम्हारी कुमक वग़ैरह के रास्ते बन्द किये जा चुके हैं। हथियार डाल दो।"

किले का कमाण्डर कोई जवाब दिये बेग़ैर वापस चला गया और जोरदीक को बताया कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने हम्ला कर दिया है और वह हथियार डालने को कह रहे हैं। यह दस्ते उसी के हैं......जोरदीक ने चिल्लाकर कहा– "किले से झंडा उतार लो। सफ़ेद झंडा चढ़ा दो। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी आया है।"

वह दौड़ता बाहर निकला। घोड़े पर बैठा और किले से निकल गया। हरावल दस्ते के कमाण्डर के पास पहुंचा। सुल्तान अय्यूबी बहुत पीछे था। जोरदीक एक रहनुमा और अपने मुहाफ़िज़ों को साथ लेकर सुल्तान अय्यूबी के हैडक्वार्टर की तरफ़ रवाना हो गया।

❖

सुल्तान अय्यूबी ने जोरदीक को गले लगा लिया। जोरदीक ने उससे मांफी मांगी। कुछ जज़्बाती बातें कीं और किला अपनी फ़ौज समेत सुल्तान अय्यूबी के हवाले कर दिया। सुल्तान अय्यूबी अपनी मरकज़ी कमान के साथ किले में दाख़िल हुआ तो उसने सफ़ेद झंडे की जगह अपना झंडा चढ़ाने का हुक्म दिया। जोरदीक ने किले में मुक़ीम फ़ौज के छोटे बड़े कमाण्डरों को सुल्तान अय्यूबी के सामने बुलाया और कहा कि तुम से हथियार नहीं डलवाये गये। तुम्हे किसी ने शिकस्त नहीं दी। अपने सिपाहियों से भी कह दो कि अपने आप को शिकस्त ख़ुरदा न समझें। हम सब मुसलमान हैं। अब हम सलीबियों और उस के दोस्तों के ख़िलाफ़ लड़ेंगे।

सुल्तान अय्यूबी जिस मुहिम पर निकला था, उस की पहली मंज़िल उसे किसी काविश के बेग़ैर मिल गयी। वह ख़ुदा के हुज़ूर सज्दे में गिर गया। उसके बाद उसने जोरदीक के साथ आगे का प्लान बनाना शुरू कर दिया। मुश्किल एक ही थी कि जोरदीक के दस्तों को सर्दी में लड़ने की मश्क़ें नहीं करायी गयी थीं। ताहम इस किले को अड्डा (बेस) बना लिया गया। जोरदीक के दस्तों को ऐसे तरीक़े से तक़सीम किया गया जिस से यह दुश्वारी ख़त्म हो गयी कि वह सर्दी में नहीं लड़ सकेंगे, मगर सिपाहियों को पता चला तो उन्होंने इहतेजाज किया

और मुतालिबा किया कि वह सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज के साथ आगे जायेंगे और लड़ेंगे।

आगे हमिस का किला था। सुल्तान अय्यूबी ने कूच का वक़्त ऐसा रखा कि हमिस तक रात को पहुंचा जाये। उसने उसी हरावल को आगे भेजा लेकिन अब के उसने डीप्लाये में कुछ रद्दोबदल कर दिया क्यों कि हमिस में उसे कोई तवक्को नहीं थी कि किला बग़ैर लड़े ही उसके हवाले कर दिया जायेगा। उसने देख भाल के लिए एक पार्टी आगे भेज दी थी जिस ने रास्ते में इत्तलाअ दी थी कि किले का महले वकूअ क्या है और गिर्द व पेश के अहवाल व कवाइफ़ क्या हैं। सुल्तान अय्यूबी ने चन्द दस्ते उस तरफ़ भेज दिये, जिधर से मदद वग़ैरह आने की तवक्को थी। उसने अपनी रस्द हमात के किले में जमा कर ली और रस्द आगे ले जाने के रास्ते को कई गश्ती पार्टियों और छापामारों के ज़रिए महफ़ूज़ कर लिया। उसके साथ हमात का एक दस्ता भी था। सुल्तान अय्यूबी की कोशिश यह थी कि हलब तक उसके हमले की ख़बर न पहुंचे ताकि वह दुश्मन को बेख़बरी में जा दबोचे। उसने उस का इन्तेज़ाम कर दिया था। अपने आदमी हलब के रास्ते पर फैला दिये थे जिन के लिए यह हुक्म था कि वह किसी भागे हुए फ़ौजी को या किसी ऐसे ग़ैर फ़ौजी को जिसे यह मालूम हो कि हम्ला शुरू हो चुका है, रोक लें।

रात गहरी हो चुकी थी। किलादार और उसके कमाण्डर एक वसीअ कमरे में शराब से दिल बहला रहे थे। उन्होंने दो नाचने वालियां बुला रखी थीं। कमरे में तबल व सारंग और रक़्स व सुरूद का पुर रौनक़ हंगामा बपा था। सिपाही बे फ़िक्री की नींद सो गये थे और जो ड्यूटी पर थे वह सर्दी से बचने के लिए किसी न किसी ओट में खड़े थे। रात यख़ थी। कमाण्डरों ने सबको बता रखा था कि सर्दियों के मौसम में ज़ंग का कोई ख़तरा नहीं।

"हम इसी लिए नुरूद्दीन ज़ंगी के मरने की दुआएं करते थे कि इसी दुनिया में जन्नत देख लें।" किलादार ने शराब का प्याला ऊपर करके कहा— "अब सलाहुद्दीन अय्यूबी आया है। ख़ुदा उसे भी जल्दी उठा लेगा।"

"उसे हम उठायेंगे।" एक कमाण्डर ने कहा— "ज़रा मौसम खुल जाने दो।"

किले के दिवार पर खड़े एक संतरी ने अपने साथी से कहा— "वह देखो आग जल रही है।"

"जलने दो।" उसके साथी ने कहा— "कोई क़ाफ़िला होगा।"

इतने में आग के तीन चार गोले हवा में बुलन्द हुए जो किले की तरफ़ आये और उन दोनों संतरियों के ऊपर से गुज़र कर किले के अन्दर जा गिरे। उनके पीछे और गोले आये। यह शोलों के गोले थे। फिर कई गोले आये। उनमें से कुछ सामान पर पड़े और आग लग गयी। नक़्क़ारे और घड़िया बज उठे। किलादार की महफ़िल में उधम बपा हो गया। सब दौड़ते किले की दिवार पर गये। उन पर तीरों का मेंह बरसने लगा। दरवाज़े के संतरियों ने शोर बपा कर दिया कि दरवाज़ा जल रहा है। सुल्तान अय्यूबी के हम्लावर दस्ते ने दरवाज़े पर आतिशगीर मादा फेंक कर आग लगा दी थी। चीख़ कर किले के अन्दर की फ़ौज को बेदार किया गया। किले से भी मुज़ाहमत शुरू हो गयी लेकिन बाहर से इतने तीर आ रहे थे कि सर उठाना

मुहाल हो रहा था। सुल्तान अय्यूबी के फौजियों ने किले को जहन्नम बना दिया था। किले के कमाण्डर चिल्ला–चिल्लाकर अपने सिपाहियों का हौसला बढ़ा रहे थे। सिपाही अंधाधुंध तीर चला रहे थे।

"हथियार डाल दो।" सुल्तान अय्यूबी की तरफ़ से कोई ललकार रहा था– "हथियार डाल दो। तुम्हे कहीं से भी मदद नहीं मिल सकती। जाने बचाओ।" यह एलान भी किया गया– "सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के आगे हथियार डाल दो। किसी को जंगी कैदी नहीं बनाया जायेगा। इताअत कुबूल कर लो। हमारी फौज में शामिल हो जाओ।"

रात भर एलान होते रहे और तीरों का तबादला भी होता रहा। सुबह की रौशनी फैली तो किलादार ने बाहर का मंज़र और किले की दिवार पर अपने सिपाहियों की लाशें देखकर सफेद झंडा चढ़ाने का हुक्म दे दिया। यह किला भी सर कर लिया गया। किला दार और कमाण्डरों ने हथियार डाल दिये। सुल्तान अय्यूबी किले में गया तो किलादार और कमाण्डरों से इतना ही कहा– "खुदा तुम्हे मांफ करे।" और हुक्म दिया कि इन सब को उनके सिपाहियों के साथ दमिश्क भेज दिया जाये। सुलतान अय्यूबी उन्हें अपनी फौज में शामिल नहीं कर सकता था क्योंकि उन की वफ़ादारी अभी मशकूक थी। इस किले में अस्लेहा और रस्द का ख़ासा ज़ख़ीरा था। वहां शराब भी थी और दो नाचने वालिया भी। शराब बाहर उंड़ेल दी गयी और नाचने वालियों को भी उनके आदमियों के साथ दमिश्क भेज दिया गया। सुल्तान अय्यूबी ने हमिस के किले को दूसरा अड्डा बना लिया और हमात के किला का एक दस्ता वहां लगा दिया।

अगला किला हलब का था जो हलब शहर से ज़रा ही दूर था वहां भी वही हुआ जो हमिस में हुआ था। सुल्तान अय्यूबी का हम्ला नागहानी था। उसने किले वालों को बे ख़बरी में जा लिया था। उसके सिपाहियों के मुराल दो किले सर कर लेने से और ज़्यादा मज़बूत हो गया था। उन्होंने हलब का किला भी सर कर लिया और उसके दस्तों को कमाण्डरों समेत दमिश्क भेज दिया गया मगर इस मरहले पर आकर राज़ दारी ख़त्म हो गयी। हथियार डालने वाले सिपाहियों में से कोई फ़रार हो गया या किसी और ने हलब इत्तलाअ दे दी कि सुल्तान अय्यूबी ने हमात, हमिस और हलब के किले ले लिए हैं और वह हलब की तरफ़ बढ़ रहा है। सुल्तान अय्यूबी को मालूम न हो सका कि उसका राज़दारी वाला हरबा बेकार हो चुका है। उसने पेश कदमी की रफ़्तार भी कम कर दी जिस की वजह यह थी कि जो दस्ते हमिस और हलब के किलों को मुहासिरे में लेकर रातों को लड़े थे, उन्हें आराम के लिए पीछे भेजना और उनकी जगह ताज़ा दम दस्ते लाना ज़रूरी था। उसे अब फ़ौज को बदली हुई तरतीब में आगे बढ़ाना था, क्योंकि हलब शहर की लड़ाई किले के मुहासिरे से मुख़्तलिफ़ थी। नयी तरतीब में भी कुछ वक़्त लग गया। सुल्तान अय्यूबी बहुत मुहतात था क्योंकि असल लड़ाई तो अब आ रही थी और सलीबी फौज के आने का इम्कान भी था।

हलब ख़बर जल्दी पहुंच गयी थी। सलीबी मुशीर वहां मौजूद थे। पहले तो वह इस पर हैरान हुए कि सुल्तान अय्यूबी ने सर्दियों में हम्ला किया है। फिर वह खुश हुए कि उसकी

फौज सेहराई जंगों की आदी है। वह उन चट्टानी इलाकों में लड़ नहीं सकेंगे। उन्हें यह एहसास था कि हलब की फ़ौज भी इस इलाके में नही लड़ सकेगी। उन्होंने दो तरकीबें सोंचीं। एक यह कि सुल्तान अय्यूबी को अपनी पसन्द के मैदान में लड़ायें दूसरी यह कि यहां सलीबियों की वह फ़ौज लाई जाये जो यूरोप से आई है। रिमाण्ड की फ़ौज में ऐसे सिपाहियों की अक्सरियत थी। चुनांचे फौरी तौर पर रिमाण्ड को तेज़ रफ़तार क़ासिदो के ज़रिए इत्तलाअ भेज दी गयी कि सुल्तान अय्यूबी हलब की तरफ़ बढ़ रहा है। उसे अक़ब से घेरे में लिया जाये।

❖

वक़्त हासिल करने के लिए उन्होंने यह इन्तज़ाम किया कि सुल्तान अय्यूबी को हलब के मुहासिरे में ज़्यादा देर तक उलझाये रखा जाये ताकि रिमाण्ड को अपनी फ़ौज लाने के लिए वक़्त मिल जाये। सलीबी मुशीरों ने राज़दारी पर पूरी तवज्जह दी। उन्हें मालूम नहीं था कि शहर में सुल्तान अय्यूबी के जासूस मौजूद हैं। चुनांचे उन्होंने शहर की नाकाबन्दी कर दी।

फौरन एलान कर दिया गया कि सुल्तान अय्यूबी जंगी ताकत और बादशाही के नशे में हम्लावर हुआ है। सलीबी ज़ेहनी तख़रीबकारी के माहिर थे। उन्होंने प्रोपेगण्डे की नई मुहिम चला दी। घर–घर, गली–गली, मस्जिद–मस्जिद इस क़िस्म की अफ़वाहें फ़ैला दीं कि सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज जिस शहर को फ़तह करती है वहां की तमाम लड़कियों को जमा करके आबरू रेज़ी करती है। शहर को लूट कर आग लगा देती है और यह भी कि सुल्तान अय्यूबी ने नबूवत का दावा कर दिया है और वह नया मज़हब ला रहा है जो कुफ़्र है। ऐसी बहुत सी अफ़वाहें फैलाई गयीं। सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ नफ़रत पैदा करने का अमल तो छः महीनों से जारी था। लोगों में सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ जंगी जुनून पैदा कर दिया गया था। आख़िर कार उन ताज़ा अफ़वाहों ने लोगों को आग बगूला कर दिया और वह मरने मारने के लिए तैय्यार हो गये।

शहर की नाका बन्दी ने सुल्तान अय्यूबी के जासूसों को बेकार कर दिया। उन्होंने शहर के बाशिन्दों में जो क़हर और ग़ज़ब देखा उस के सामने भी वह बेबस हो गये। एक जासूस शहर से निकलने की कोशिश में मारा गया। वह सुल्तान अय्यूबी को इत्तलाअ देना चाहता था कि शहर की कैफ़ियत क्या है और वह किसी ख़ुश फहमी में मुब्तला होकर न आये। जासूस ने सरपट घोड़ा भगाया मगर दो तीरों ने उसे गिरा दिया। जासूसों के कमाण्डर ने (जो आलिम के बहरूप में था) शहरियों में सलीबी प्रोपेगण्डे के ख़िलाफ़ मुहिम चलाया मगर उसके आदमियों ने जहां भी बात की मुंह की खाई।

अस्सुआलेह ने सलीबी मुशीरों के मश्वरे पर वाली– ए–मुसिल सैफुद्दीन को भी इत्तेलाअ भेज दी कि मदद के लिए आये। हसन बिन सबाह के फिदाइयों के पीरो मुर्शिद शेख़ सन्नान को इत्तलाअ भेजी गयी कि वह जो उजरत मांगेगा उसे दी जायेगी, सलाहुद्दीन अय्यूबी को क़त्ल करा दे ख़्वाह उसके कितने ही आदमी क्यों न मारे जायें। शेख़ सन्नान का एक हम्ला नाकाम हो चुका था जो उसने सुल्तान अय्यूबी के एक मुहाफ़िज़ पर नशा तारी करके उससे

कराया था। अब उसने उन फ़िदाइयों को बुलाया जो जिन्दगी और मौत को कुछ समझते हीं नहीं थे। वह बराये नाम के इन्सान थे। मर जाना और किसी को मार देना उनके लिए कोई मतलब नहीं रखता था। उनमें मफ़रूर क़ातिल भी थे। शेख़ सन्नान ने उन्हें कहा कि उन्हें मुंह मांगी उजरत मिलेगी वह सुल्तान अय्यूबी को क़त्ल कर दें। उनमें से नौ आदमी तैय्यार हो गये। अस्सुआलेह के हामियों में सबसे ज़्यादा कीना परवर और शैतान फ़ितरत आदमी गुमश्तगीन था जिसे गवर्नर का दरजा हासिल था। वह बज़ाहिर सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ था मगर वह दोस्त किसी का भी नहीं था। अस्सुआलेह को ख़ुश करने के लिए उसने उसकी हिमायत की और सलीबियों के साथ दोस्ती का इज़हार इस तरह किया कि उसके क़िले में बहुत से सलीबी जंगी क़ैदी थे, उन सब को रिहा कर दिया। अब हलब की इस इत्तलाअ पर कि सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज आ गयी है, उसने अपनी फ़ौज भेज दी और ख़ुद भी लड़ने का वादा किया।

यह तूफ़ान था जो सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ था। इतने ज़्यादा दुश्मनों के मुक़ाबिले में उसकी नफ़री थोड़ी थी और अब उसके जासूस बेकार हो जाने की वजह से उसे पता नही चल रहा था कि दुश्मन के कैम्प में क्या हो रहा है। अभी तक इस ख़ुश फ़हमी में मुब्तला था कि वह हलब वालों को भी बे ख़बरी में जा लेगा। ताहम वह मामूली क़िस्म का जंगजू नहीं था। उसने अक़ब और पहलूओं की हिफ़ाज़त का इन्तज़ाम कर रखा था। उसने कम से कम तादाद से हम्ला करने का फ़ैसला किया। उसके देख भाल के दस्ते आगे चले गये। आगे इलाक़ा चट्टानी, पथरीला और नशीब व फ़राज़ का था और रास्ते में एक दरिया भी था।

❖

जनवरी 1175 ई० का महीना शुरू हो चुका था। सर्दी ज़्यादा बढ़ गयी थी। सुल्तान अय्यूबी ने फ़ौज की एक चौथाई नफ़री हमले के लिए मुन्तख़ब की। महफ़ूज़ा में उसने ज़्यादा दस्ते रखे। उसने जब पेश क़दमी की तो देख भाल करने वाले दस्तों ने इत्तलाअ दी कि दरिया के उस तरफ़ एक वसीअ व अरीज़ नशीब है वहां दुश्मन की फ़ौज तैय्यारी की हालत में मौजूद है। यही वह मुक़ाम था जहां से दरिया उबूर किया जा सकता था। सर्दियों के मौसम में दरिया में पानी गहरा नहीं था। उस मुक़ाम पर पाट फ़ैल जाने से पानी और भी कम था। घोड़े और इन्सान आसानी से गुज़र सकते थे। यहीं दुश्मन ने अपनी फ़ौज फ़ैला रखी थी। सुल्तान अय्यूबी को बताया गया कि रात को उस फ़ौज के चन्द एक संतरी बेदार होते हैं और उनके दर्मियान गश्ती पार्टियां हर तरफ़ घूमती फिरती हैं।

इस इत्तलाअ से शक हुआ कि हलब वालों को उसकी आमद की इत्तलाअ मिल गयी है और वह उन्हें बेख़बरी में नहीं ले सकेगा। उसने देख भाल के लिए इस मुक़ाम से दूर के इलाक़े में अपने आदमी भेजे ताकि मालूम किया जा सके कि दरिया किसी और जगह से उबूर किया जा सकता है या नहीं। उसके साथ ही उसने यह फ़ैसला किया कि वह नशीब में दुश्मन की फ़ौज को धोखे दे कि हमला और पेश क़दमी उसी तरफ़ से होगी। उसने उसी रात

छापामार रवाना कर दिये। उसका अपना हैडक्वार्टर वाहं से पांच छ: मील दूर था। दरिया के किनारे दुश्मन की जो फ़ौज थी वह भी इस ख़ुशफ़हमी में मुब्तला थी कि इतनी सर्द रातों को हम्ला नहीं हो सकता।

निस्फ़ शब के करीब सिपाही ख़ेमों में दुबके पड़े थे। कमाण्डर बे ख़बर सो रहे थे। सिर्फ़ संतरी जाग रहे थे। एक संतरी सर्दी में ठिठुरा खड़ा था। पीछे से किसी ने उसकी गर्दन दबोच ली। किसी और ने उसे उठा लिया। यह सुल्तान अय्यूबी के दो छापामार थे। वह संतरी को उठा कर ले आये और उससे पूछा कि घोड़े कहां बंधे हुए है। उसके सीने पर दो तलवारों की नोंके रखी हुई थीं। संतरी को मालूम था कि यह सुल्तान अय्यूबी के सिपाही हैं। उसने उनसे इल्तजा की कि मैं तुम्हारा मुसलमान भाई हूं। यह बादशाहों के झगड़े हैं। हम एक दूसरे का ख़ून क्यों बहायें। इसने बताया कि घोड़े एक जगह नहीं बंधे हुए। चूंकि फ़ौज तैयारी की हालत में है, इसलिए घोड़े, सवारों के ख़ेमों के साथ दो दो तीन तीन करके बंधे हुए हैं। छापामार उसे उसके कैम्प के करीब ले गये और पूछा कि दस्तो के कमाण्डर कहां कहां हैं। उसने अन्दाज़ा करके उनके ख़ेमों की सिम्ते बता दीं।

उसे साथ ही पीछे ले आये और उसे कहा कि यहां खड़े रहो और तमाशा देखो। वहां छोटे साइज़ की एक मिन्जनिक रखी थी। उसमे छापा मारों ने एक हांडी सी रखी। चार आदमियों ने उसे पीछे खींचा और छोड़ दिया। हांडी ग़लीले की तरह उड़ गयी। दूसरी हांडी किसी और तरफ़ फैंकी गयीं। यह सब दुश्मन के कैम्प में गिरीं। संतरियों ने "कौन है, कौन है" की सदायें लगायीं। कहीं से जलते हुए फलीतों वाले तीर आये जो ज़मीन पर लगे। हांडियां वहीं गिर कर टूटी थीं। उन के अन्दर से सय्याल मादा निकल कर बिखर गया था। यह आतिश गीर था। तीरों के फलीतों ने उसे आग लगा दी। दो ख़ेमों को भी आ लग गयी। ज़मीन शोले उगल रही थी। कैम्प में भगदड़ मच गयी। घोड़े रस्सीयां तुड़ाने लगे। सिपाही उठ कर इधर उधर दौड़े तो छापा मारों ने तीर बारसाने शुरू कर दिये। यह ख़ेमागाह एक मील से ज़्याद लम्बे चौड़े इलाके में थी। पेशतर इसके कि कमाण्डर जवाबी कार्रवाई करते छापामार तबाही मचाकर ग़ायब हो चुके थे।

सेहर अभी नीम तारीक थी। कैम्प की हालत ख़ासी बुरी थी। आग ने भी नुकसान किया था लेकिन छापामारों के तीरों से और बिदके हुए घोड़ों तले आके बहुत से सिपाही हलाक और ज़ख़्मी हो चुके थे। सेहर तक उन्हें उठाते और संभालते रहे। अचानक एक तरफ़ से किसी ने चिल्लकर कहा?– "होशियार–होशियार" एक बार फिर कयामत बपा हो गयी, मगर अब के छापामार नहीं थे यह सुल्तान अय्यूबी के एक दस्ते का बकायदा हम्ला था। दुश्मन इस जगह हर लम्हा तैय्यारी की हालत में रहता था, लेकिन रात को छापामार उसकी हालत ऐसी बदल आये थे कि तैय्यारी ख़त्म हो गयी थी। दुश्मन के सिपहियों ने जम के लड़ाई की बहुत कोशिश की लेकिन उनके पांव जम न सके। सुल्तान अय्यूबी उनका दम ख़म पहले ही ख़त्म करा चुका था। फिर भी दोनों फरीकों का ख़ासा नुकसान हुआ। दुश्मन के सिपाही पस्पा होने लगे। कमाण्डरों ने उन्हें बहुत ललकारा मगर दूसरी तरफ़ की ललकार उनके लड़ने के जज़्बे को

तबाह कर रही थी। सुल्तान अय्यूबी के सिपाही उन पर चिल्ला रहे थे– "तुम काफ़िरों के दोस्त हो। खुदा हमारे साथ है। अपना हश्र देखो। तुम पर खुदा का कहर नाज़िल हो रहा है।"

सुल्तान अय्यूबी ने अपनी फ़ौज के निहायत मामूली से सिपाही के ज़ेहन में भी उतार दिया था कि तुम हक़ पर हो और कुफ़्फ़ार के दोस्त मुर्तद हैं। उसके मुक़ाबिले में ख़लीफ़ा की फ़ौज के पास ऐसा कोई मक़सद और कोई नारा नहीं था।

दुश्मन के सिपाही बिखर गये। बहुत से पस्पा होकर दरिया पार कर गये और कुछ इधर उधर वादियों और नशीबी जगहों में जा छुपे। सुल्तान अय्यूबी ने हम्लावर दस्ते के कमाण्डर को हुक्म दे रखा था कि दुश्मन की पस्पाई की सूरत में अपना कोई दस्ता जैश या कोई सिपाही दरिया पार न करे। उसने इस कैम्प पर हम्ला करके दर असल दुश्मन को धोखा दिया था। वह तआकुब नहीं करना चाहता था। वह आगे के तफ़सीली जाइज़े और मुशाहदे के बेग़ैर कभी पेश क़दमी नहीं करता था। वह दरिया कहीं दूर से पार करना चाहता था लेकिन दुश्मन ने यहीं से उसे रास्ता दे दिया तो उसने यहीं से दरिया पार करने का फ़ैसला कर लिया। वह ख़ुद आगे गया। उसके सिपाही इधर उधर छुपे हुए दुश्मन को ढूंढ ढूंढ कर ख़त्म कर रहे थे। हथियार डालने वालों की तादाद ज़्यादा थी। उसने एक बुलन्द चट्टान पर जाकर मैदाने जंग का मंज़र देखा तो ख़ुशी की बजाये उसके चेहरे पर उदासी छा गयी।

"यह नज़ारा देखकर ख़ुदा भी रो रहा होगा।" सुल्तान अय्यूबी ने अपने पास खड़े नायबीन से कहा– "दोनों तरफ़ किस का ख़ून बह गया है?.....मुसलमान का। यह है इस्लाम के ज़वाल की निशानी। अगर मुसलमान होश में न आये तो कुफ़्फ़ार उन्हें इसी तरह लड़ा लड़ा कर ख़त्म कर देंगे। मेरे रफ़ीक़ों! मुझे कोई यक़ीन दिलादे कि मैं हक़ पर नहीं हूं तो मैं तलवार सालेह की क़दमों में रख दूंगा।"

"आप हक़ पर हैं सुल्तान ने मोहतरम!" किसी ने कहा– "हम हक़ पर हैं। दिल से अब वसवसे निकाल दें।"

हलब शहर में हर आदमी आग का शोला बना हुआ था। सुल्तान अय्यूबी के दस्ते दरिया पार कर गये। हलब सामने नज़र आ रहा था। सुल्तान अय्यूबी ने शहर को देखा। उसकी वुसअत, साख़्त और दिफ़ाई इन्तज़मात देखे और जायज़ा लिया कि मुहासिरा किया जाये या सीधा हम्ला करके शहर के अन्दर लड़ा जाये। उसे अभी तक मालूम नहीं था कि शहर के अन्दर की जज़्बाती कैफ़ियत क्या है। उसे तवक्क़ो थी कि शहरी चूंकि मुसलमान हैं इसलिए वह दो मुसलमान फ़ौजों की जंग के ख़िलाफ़ होंगे। ग़ालिबन इसी तवक्क़ो ने उससे वह कार्रवाई कराई जिसने उसे परेशान कर दिया। उसने नफ़री से नीम मुहासिरे की तरतीब में अपने दस्ते आगे बढ़ाये। लड़ाई की इब्तेदा तीरों के तबादले से हुई लेकिन कुछ ही देर बाद उसने महसूस किया जैसे उसके दस्ते पीछे हट रहे हैं। हलब के दिफ़ाअ में लड़ने वालों का यह आलम था कि एक तरफ़ से कम व बेश दो सौ घोड़सवार निकले। उन्होंने सुल्तान अय्यूबी के एक दस्ते के एक पहलू पर हम्ला कर दिया। यह बड़ी तेज़ और दिलेराना हम्ला था जो प्यादा दस्ते पर किय गया था।

उसके सवारों ने जवाबी हल्ला बोल कर अपने प्यादा दस्ते को बचाने की निहायत अच्छी कोशिश की लेकिन घोड़ों के तसादुम में अपने ही प्यादे कुचले गये। फिर यूं होने लगा कि शहर से एक जैश प्यादा या सवार निकलता। उनके पीछे से शहर की मुंडरों और बुलन्द जगहों से तीरों की बौछारें आती और हम्ला करने वाले जैश सुल्तान अय्यूबी की सफ़ों में घुस जाते। हलब का यह मार्का बड़ा ही ख़ूंरेज़ था।

इस कैफ़ियत में सुल्तान अय्यूबी के दो तीन जासूस बाहर निकल आये और सुल्तान अय्यूबी को ढूंढते उसतक पहुंच गये। उन्होंने बताया कि शहरियों को किस तरह उसके ख़िलाफ़ भड़काया गया है और शहर के दिफ़ाअ में लड़ने वाले इतने फ़ौजी नहीं जितने शहरी हैं। सुल्तान अय्यूबी को यह तो पहले से ही मालूम था कि हलब के बाशिन्दों पर उसके ख़िलाफ़ जंगी जुनून तारी किया जा रहा है लेकिन उसे अन्दाज़ा नहीं था कि शहरी इस पागलपन से लड़ेंगे। वह उन की दीलेरी पर अश–अश कर उठा लेकिन बड़े अफ़सोस के साथ कहने लगा– "यह है मुसलमान की शान। उनका अस्करी जज़्बा देखो। कुफ़्फ़ार मुसलमान के इसी जज़्बे को ख़त्म कर रहे हैं।"

सुल्तान अय्यूबी ने अपने दस्तों को पीछे हटा लिया। उसे किसी नायब ने मश्वरा दिया कि शहर पर मिन्ज़निकों से आग फैंकी जाये। सुल्तान अय्यूबी ने यह मश्वरा कुबूल करने से इन्कार कर दिया। उसने कहा कि शहरियों के घर तबाह हो जायेंगे। उनकी औरतें और बच्चे मारे जायेंगे। इसीलिए मैं ने तबाह कार छापामारों को नहीं भेजा। अगर यह शहर सलीबियों का होता तो अब तक शोलों की लपेट में और मेरे छापामारों की ज़द में होता। जो मुसलमान मैदाने जंग में आकर लड़ते और मरते हैं उन्हें मैं रोक नहीं सकता और जो घरों में बैठे हैं उन्हें मारना नहीं चाहता। उसने चन्द और दस्ते आगे बुलाकर शहर को मुकम्मल मुहासिरे में ले लिया और हुक्म दिया कि दिफ़ाअ में लड़ा जाये। हम्ला हो तो रोका जाये हम्ला न किया जाये और मुहासिरा मज़बूत रखा जाये। नफ़री की भी कमी थी और शहर को तबाही से बचाने का ख़्याल भी था।

जनवरी 1175 का पूरा महीना मुहासिरा जारी रहा। हलब की फ़ौज और शहरियों ने मुहासिरा तोड़ने के लिए हम्ले किये लेकिन अब वह कामयाब नहीं हो सके थे क्योंकि सुल्तान अय्यूबी ने अपने दस्तों की तरतीब और स्कीम बदल दी थी।

एक फरवरी 1175 ई की सुबह सुल्तान अय्यूबी को इत्तलाअ मिली कि त्रीपोली से सलीबी हुक्मरान रिमाण्ड हमात की तरफ़ बढ़ रहा है। उसे रिमाण्ड की फ़ौज की नफ़री (प्यादा और सवार) की इत्तलाअ भी दी गयी। सुल्तान को पहले ही तवक्क़ो थी कि यह सूरत भी पैदा होगी। उसके लिए वह तैयार था। उसने उसके लिए दस्ते महफ़ूज़ रखे हुए थे और ऐसी जगह रखे हुए थे जहां से वह रिमाण्ड के इस्तक़बाल के लिए हर वक़्त पहुंच सकते थे। उसने यह इत्तलाअ मिलते ही अपने क़ासिद को इस पैग़ाम के साथ उन दस्तों की तरफ़ दौड़ा दिया कि जिस क़दर जल्दी हो सके अलिरस्तान के इलाक़े में पहुंच कर बुलन्दियों पर तीर अन्दाज़ बैठा दो। सवार दस्ते पीछे रखो। मैं आ रहा हूं। अगर सलीबी फ़ौज मुझ से पहले आ जाये तो

सामने की टक्कर न लेना। घात लगाना और शबखून मारना।

अल्रिस्तान एक पहाड़ी सिलसिले का नाम था। रिमाण्ड को इसमें से गुज़रना था। रिमाण्ड की पेश कदमी का रास्ता उसके प्लान के मुताबिक़ मौज़ूं था। वह हमात तक पहुंच कर सुल्तान अय्यूबी के अकब के लिए और रस्द वग़ैरह के रास्तों के लिए ख़तरा बन सकता था। फिर सूरत वह हो जाती कि सुल्तान अय्यूबी हलब की फ़ौज और रिमाण्ड की फ़ौज (जो यक़ीनन बरतर और ज़्यादा थी) के दर्मियान पिस जाता। उसने दूसरा इक़्दाम यह किया कि हलब का मुहासिरा उठा दिया और उसने उन दस्तों को किसी और सिम्त रवाना कर दिया। ख़ुद अल्रिस्तान की तरफ़ चला गया। वहां की चोटियों पर बर्फ़ पड़ी हुई थी। रिमाण्ड ख़ुश था कि इस मौसम में सुल्तान अय्यूबी के सेहराई सिपाही उसके यूरोपी और उसी इलाक़े के रहने वाले ईसाई सिपाहियों से नहीं लड़ सकेंगे। मगर वह आगे आया तो बर्फ़ पोश पहाड़ी सिलसिलाए कोह से उस पर तीर बरसने लगे। यह उस के लिए बलाये नागहानी थी।

उसने लड़े बेग़ैर अपनी फ़ौज पीछे हटाली। उसे हर जगह घात का ख़तरा था। वह सुल्तान अय्यूबी के लड़ने के अन्दाज़ से अच्छी तरह वाक़िफ़ था। उसने बहुत पीछे हट कर पड़ाव डाल दिया। वह अपने रास्ते पर नज़रसानी करना चाहता था।

मौसम बिगड़ गया। बारिश शुरू हो गयीं। सात आठ दिनों में घोड़ों का ख़ुश्क चारा ख़त्म हो गया। अनाज की भी ज़रूरत महसूस हुई। उसने रस्द का इन्तज़ाम निहायत अच्छा रखा था। वहां तक उसे बकायदगी से रस्द पहुंच रही थी मगर कई दिन पीछे से न रस्द आई न कोई इत्तलाअ। उसने क़ासिद भेजा जो वापस आ गया और यह पैग़ाम लाया कि सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज ने रास्ता रोक रखा है। रिमाण्ड बहुत हैरान हुआ कि सुल्तान अय्यूबी इतनी जल्दी यहां कैसे पहुंच गया? — उसने अपने दो अफ़सरों को पीछे का जायज़ा लेने के लिए भेजा।

यह दो अफ़सर चार रोज़ बाद वापस आये। उन्होंने तसदीक़ की कि सुल्तान अय्यूबी ने रस्द का रास्ता रोक लिया है और यह भी कि उसने हलब का मुहासिरा उठा लिया है।

"इसका मतलब यह है कि हमारा फ़र्ज़ अदा हो गया है।" रिमाण्ड ने कहा— "फ़ौज को वापस त्रीपोली ले चलो।"

❖

यह इत्तलाअ सुल्तान अय्यूबी के लिए हैरानकुन थी कि रिमाण्ड लड़े बेग़ैर वापस कूच कर गया है। रिमाण्ड ने वापसी का जो रास्ता इख़्तियार किया था वह दुश्वार गुज़ार था लेकिन वह उस रास्ते से नहीं जाना चाहता था जिस से आया था। वह सुल्तान अय्यूबी से लड़ने का इरादा तर्क कर चुका था। यूरोपी मोअर्रिख़ों ने लिखा है कि वह लड़ना नहीं चाहता था, लेकिन हक़ीक़त यह थी कि सुल्तान अय्यूबी ने उसे लड़ने की पोज़ीशन में नहीं रहने दिया था वह उसी से घबरा गया था कि मुसलमान फ़ौज इतनी सर्दी में ऐसी ख़ुबी से लड़ रही है जैसे सेहरा में लड़ती है। दूसरी वजह यह थी कि सुल्तान अय्यूबी उसके अक़ब में और रस्द के रास्ते में जा बैठा था। तीसरी और सबसे बड़ी वजह कुछ और थी जिसका इन्कशाफ़ बाद में

हुआ। वह दरअसल अस्सुआलेह और उसके उमरा को धोखा दे गया था। उसने बेबहा ख़ज़ाने की शकल में उजरत ले ली थी। उसे अब लड़ने की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि उसका यह मकसद (जो सलीबियों का बुनियादी मकसद था) पूरा हो चुका था कि मुसलमान आपस में टकरा जायें। सलीबी मुसलमान कौम की फौज को दो हिस्सों में बांट चुके थे और उन दोनों हिस्सों में जंग शरू हो चुकी थी।

इस नीयत का पता उस वक़्त चला जब त्रीपोली से उसका एल्ची अस्सुआलेह के नाम यह पैग़ाम लेकर आया-- "मैंने वादा किया था कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने आप को मुहासिरे में लिया तो मैं मुहासिरा तोड़ दूंगा। मुझे ज्योंहि ख़बर मिली कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने हम्ला कर दिया है, मैं ख़ुद फौज लेकर आपकी मदद को आ गया। सलाहुद्दीन अय्यूबी ने फ़ौरन हलब का मुहासिरा उठा लिया। मैंने वादा पूरा कर दिया, लिहाज़ा हमारा वह फौजी मुआहिदा ख़त्म हो चुका है जिसके तेहत आप ने मुझे सोना वग़ैरह भेजा था और उसके एवज़ मैंने आप को मुहासिरे से बचाया। मेरे फ़ौजी नुमाइंदे और मुशीरों को फ़ौरन वापस भेज दिया जाये।"

हलब वाले सर पकड़ कर बैठ गये। सलीबी उन्हें डंक मार गये थे। दो मोअर्रिख़ों ने लिखा है कि रिमाण्ड को यह ख़तरा भी नज़र आने लगा था कि सुल्तान अय्यूबी उसके दारूलहुकूमत त्रीपोली पर हम्ला करेगा। चूनांचे उसने अपनी राजधानी का दिफ़ाअ मज़बूत करना शुरू कर दिय।

अस्सुआलेह अभी ना तजुर्बाकार था। उसके एक दो मुशीरों ने उसे मश्वरा दिया कि वह सुल्तान अय्यूबी से सुलह करले, मगर सैफुद्दीन और गुमशतगीन वग़ैरह ने उसे मदद का यकीन दिलाकर समझौते और सुलह पर आमादा न होने दिया। उन्हीं में से किसी ने उसे बताया कि सलाहुद्दीन अय्यूबी चन्द रोज़ का मेहमान है। नौ फ़िदाई आ चुके हैं। वह मज़हबी पेशवाओं और सूफ़ियों के बहरूप में सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास यह दरख़्वास्त लेकर जा रहे हैं कि वह आपस में न लड़ें और सुलह कर लें। सुल्तान अय्यूबी उनके एहतराम के लिए उन्हें अपने पास बिठायेगा। अकेले में उनकी बात सुनेगा और फ़िदाई उसे निहायत इत्मीनान से क़त्ल करके निकल जायेंगे।

उन्होंने अस्सुआलेह को यह ख़बर सुनाकर झांसा नहीं दिया था जिस वक़्त सुल्तान अय्यूबी अलरिस्तान के सिलसिलाए कोह में बैठा अपने अगले हम्ले का प्लान बना रहा था हलब में नौ पेशावर फ़िदाई कातिल यह सोंच रहे थे कि उसे कहां क़त्ल किया जाये।

जब ख़ुदा ज़मीन पर उतर आया

मिस्र में जहां आज अस्वान डीम है, आठ सौ साल पहले वहां एक ख़ुंरेज़ मार्का लड़ा गया था। मोअर्रिख़ों ने सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर की उस लड़ाई का ज़िक्र किया ही नहीं, अगर किया है तो सिर्फ़ इतना कि सुल्तान अय्यूबी का एक जरनल बाग़ी हो गया था। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने अपनी डायरी में इस जरनल का नाम भी लिख है। नाम अलकंज़ था, जिसका तलफ़्फ़ुज़ अलकंद है। वह मिस्री मुसलमान था। उसकी मां सूडानी थी। शायद यह सूडानी ख़ून था जिसने उसे सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ बग़ावत पर उकसाया था। उस दौर के वक़ाअ निगारों और कातिबों की जो ग़ैर मतबूआ तहरीरें मिली हैं, उन से इस बग़ावत का पसे मंज़र ख़ासी हद तक वाज़ेह हो जाता है।

यह 1174 के आख़िर और 1175 ई० का अव्वल अर्सा था जब सुल्तान अय्यूबी मिस्र से ग़ैर हाज़िर था। इससे पहले पूरी तफ़सील से सुनाया जा चुका है कि नुरुद्दीन ज़ंगी मरहूम की वफ़ात के फ़ौरन बाद शाम के हालात इस सूरत में बिगड़ गये थे कि मुफ़ाद परस्त उमरा ने ज़ंगी मरहूम के ग्यारह साला बेटे को गद्दी पर बैठा दिया और सलीबियों से गठजोड़ करके ख़ुद मुख़्तारी के रास्ते पर चल पड़े थे। सल्तनते इस्लामिया टूकड़े टूकड़े होकर सलीबियों के पेट में जा रही थी। सुल्तान अय्यूबी दमिश्क़ पहुंचा। थोड़ी सी मार्का आराई और दमिश्क़ के शहरियों के तआवुन से उसने दमिश्क़ पर क़ब्ज़ा कर लिया। ख़लीफ़ा और उसके हवारी उमरा और जरनल हलब को भाग गये जहां उन्होंने सलीबियों से जंगी मदद हासिल की। सलीबियों ने मदद का झांसा देकर मुसलमान फ़ौज को मुसलमान फ़ौज से टकरा दिया। सुल्तान अय्यूबी ने हमिस और हमात के क़िले को सर कर लिए। हलब के मुहासिरे में उसे ग़ैर मुतवक्क़ा मुज़ाहमत का सामना हुआ। उसके साथ त्रीपोली के सलीबी हुक्मरान रिमाण्ड ने हम्ला कर दिया। सुल्तान अय्यूबी को हलब का मुहासिरा उठाकर पीछे आना पड़ा ताकि सलीबी फ़ौज को रास्ते में रोका जा सके।

सुल्तान अय्यूबी के दस्तों की बर्क़ रफ़तारी ने इस चाल को कमायाब किया और रिमाण्ड लड़ाई से मुंह फेर गया।

मगर यही लड़ाई ख़त्म नहीं हुई थी। असल जंग तो यहीं से शुरू हुई थी। सुल्तान अय्यूबी अलरिस्तान सिलसिलाए कोह में अपनी फ़ौज को फैलाये हुए था। उसका मुकाबला तीन दुश्मनों के साथ था। एक अल्सालेह और उसके हवरी उमरा की फौज थी, दूसरे सलीबी फ़ौज और तीसरा मौसम। यह जनवरी फ़रवारी 1175 ई० के दिन थे। जब पहाड़ियों की चोटियां बर्फ़ से ढकी हुइ थीं। तेज़ झक्कड़ चलते थे और वादियां ठिठुर रही थीं। सुल्तान

अय्यूबी वहां इस तरह उलझ गया था जैसे जंज़ीरों में जकड़ा गया हो।

मिस्र के मुतअल्लिक वह मुत्मईन नहीं था। वहां की फ़ौज की कमान वह अपने भाई अलआदिल के सुपुर्द कर आया था। उस फ़ौज में से सुल्तान अय्यूबी ने कुमक भी मंगवा ली थी। मिस्र पर समुन्दर की तरफ़ से सलीबियों का और जुनूब से सूडानियों का हम्ले का ख़तरा तो था लेकिन ज़्याद ख़तरा सलीबियों और सूडानियों की ज़मीन दोज़ तख़रीबकारी का था जो मिस्र में जारी थी। दुश्मन की जासूसी और तख़रीबकारी को बहुत हद तक दबाया जा चुका था मगर यह कहना ग़लत था कि दुश्मन उस ज़मीन दोज़ मैदान से भाग गया है। सुल्तान अय्यूबी ने उन्हीं ख़तरों से नबुर्द आज़मा होने के लिए अपनी इन्टेलीजेंस के माहिर सरबराह अली बिन सुफ़ियान को क़ाहिरा में रहने दिया था। उसने अलआदिल को भी उस ज़िम्न में बहुत सी हिदायात दे दी थीं, मगर जो जगह सुल्तान अय्यूबी की ग़ैर हाज़िरी से ख़ाली हो गयी थी उसे अलआदिल और अलीबिन सुफ़ियान मिल कर भी पूर नहीं कर सकते थे।

मिस्र की सरहदों और साहिल की देख भाल के लिए सरहदी दस्तों की चौकियां और उनके पहरे थे। सुल्तान अय्यूबी ने अलआदिल को सरहदों के मुतअल्लिक यह हुक्म दे दिया था कि सूडानी सरहद पर ज़रा सी गड़बड़ करें तो शदीद जंगी नवैइयत की जवाबी कार्रवाई करो और सूडान के अन्दर जाकर लड़ो। मगर एक ज़रूरत ऐसी थी जिस की तरफ़ किसी ने भी तवज्जो न दी। यह थी सरहदी दस्तो की बदली। उन दस्तों में बेशतर सिपाही और बाज़ कमाण्डर ऐसे थे जो दो साल से ज़्यादा अर्से से सरहद की ड्यूटी पर थे। यह वह सिपाही थे जिन्होंने दुश्मन से मार्के लड़े थे, लिहाज़ा उनके दिलों में दुश्मन के ख़िलाफ़ नफ़रत भरी हुई थी। सूडानियों को तो वह कुछ समझते ही नहीं थे। उनसे पहले जो दस्ते सरहद पर थे वह अच्छे साबित नहीं हुए थे। उनकी मौजूदगी में मिस्र की मंडी से अनाज और दिगर ज़रूरी इश्या इसमगल होकर सूडान चली जाती थीं। सुल्तान अय्यूबी ने मुहाज़ से वापस आकर उन दस्तों को बदल दिया और वह दस्ते भेजे थे जो मुहाज़ से आये थे। उन दस्तों ने सरहद पर पहुंच कर उधम बपा कर दिया था। गश्ती पहरे वालों को कोई चीज़ हिलती नज़र आती थी तो उसे जा दबोचते थे। वह तेज़ रफ़तार थे और उन की नज़रें उक़ाबी थीं। उन्होंने सरहद सही मानों में सर ब मुहर और मुक़्फ़ल कर दी थी।

यह दो ढाई साल पहले की बात थी। इब्तेदा मे उन दस्तों में जोश और जज़्बा था और करने को एक काम भी था जो एक मुहिम थी। वह जांफ़िशानी से उसमे मगन रहे। चन्द महीनों में ही उन्होंने यह मुहिम सर कर ली और फ़ारिग़ हो गये। यह फ़रागत उनके जज़्बे को दीमक की तरह खाने लगी। सुल्तान अय्यूबी हर पहलू, हर गोशे और हर उन्सर पर नज़र रखता था, लेकिन सरहदी दस्तों की बदली इतनी मामूली सी बात थी जिस पर वह ज़ाती तवज्जो न दे सका। सरहदी दस्तों का शोबा अलग था जिस का कमाण्डर सालार (जरनल) के ओहदे का एक फ़र्द था और यह अल्कंद था। यह उस के फ़राइज में शामिल था कि वह साल में तीन बार नहीं तो दो बार सरहदी दस्तों को बदली करता रहता। उसने यह बेहद ज़रूरी कार्रवाई न

की। इस कोताही के असरात सामने आने लगे।

सिपाही एक ही किस्म के माहौल और फ़िज़ा में और एक ही किस्म की ज़मीन पर रहते और पहरे देते उक्ताहट महसूस करने लगे। सूडान ख़ामोश था। स्मगलिंग बन्द हो चुकी थी। फ़राग़त और काहिली सिपाहियों की नफ़सियात पर तख़रीबी असरात डाल रही थी। उनके लिए काम भी नहीं था और उन के लिए तफ़रीह भी कोई नहीं थी। मौसम में भी कोई तबदीली नहीं आती थी। रेत का समुन्दर और रेत के टीले एक ही जैसे सदियों से चले आ रहे थे। आसमान का रंग एक ही जैसा रहता था। इस कैफ़ियत और सिपाहियों की उकताहट का पहला असर यह देखने में आया कि वह गश्ती पहरे पर जाते तो राह जाते मुसाफ़िरों से यह पूछने की बजाये कि वह कौन है और कहां जा रहे हैं और उन के पास क्याहै, वह उन्हें रोक कर उनसे गप शप लगाते और उनसे इधर उधर की बाते पूछते। यह दिल बहलाने का एक ज़रिया था।

❖

जिन चौकियों की ज़िम्मादारी के इलाके मे कोई गांव था, सिपाही वहां चले जाते और गप बाज़ी से दिल बहलाते। सरहद के रखवालों का यह अन्दाज़ मुल्क के लिए ख़तरनाक था मगर वह सिपाहीथे और उक्ताये हुए। इन्सानी फितरत का तकाज़ा था कि वह कहीं न कहीं से तस्कीन हासिल करते। वहां आते जाते मुसाफ़िर थे, रात भर के लिए पड़ाव करने वाले क़ाफ़िले थे या कहीं कोई आबाद गांव। वह हर किसी के साथ घुल मिल गये। मिस्र के सरहदी लोगों पर उन का जो डर था वह दूर हो गया। उनके कमाण्डर भी सिपाहियों जैसे इन्सान थे। वह भी वक़्त गुज़ारने के और तफ़रीह के ज़राए ढूंढने लगे।

जब सुल्तान अय्यूबी दमिश्क़ के लिए रवाना होने लगा तो इतनी उज्लत में था कि सरहदों के मुतअल्लिक़ तमाम तर हिदायात देने के बावजूद उसके ज़ेहन में न आई कि पुराने दस्तों की बदली के एहकाम भी देता। उसे ग़ालिबन इत्मीनान होगा कि उनका कमाण्डर, अलकंद, तमाम तर ज़रूरियात पूरी करता रहता है। सुल्तान अय्यूबी के जाने के बाद अलआदिल ने फ़ौजों की कमान ली तो उसने अलकंद से पूछा कि सरहद पर जो दस्ते हैं वह कब से इस ड्यूटी पर हैं। अलकंद ने जवाब दिया कि वह बहुत अर्से से वहीं हैं।

"क्या सरहद पर मज़ीद दस्ते भेजने की ज़रूरत है?" अलआदिल ने पूछा– "और क्या पुराने दस्तों को क़ाहिरा बुलाकर नये दस्ते भेजने की ज़रूरत है?"

"नहीं।" अलकंद ने जवाब दिया– "यही वह दस्ते हैं जिन्होंने मुल्क से अनाज, मवेशी और हथियार वग़ैरह के चोरी छुपे बाहर जाने को रोका था। वह अब सरहद और इर्द गिर्द के इलाकों के आदी हो गये हैं। वह अब दूर से मुश्तबहा इन्सान की बू सूंघ कर उसे पकड़ लेते हैं। उनकी जगह अगर नये दस्ते भेजे गये तो पुराने दस्तों जैसा तजुर्बा हासिल करते उन्हें एक साल से ज्यादा अर्सा चाहिए। हमें ऐसा ख़तरा मोल नहीं लेना चाहिए।"

अलआदिल उस जवाब से मुत्मईन हो गया था। उसे बताने वाला कोई नहीं था कि यही अलकंद रात को अपने घर में बैठा कह रहा था– "यह सहदी दस्ते बेकार हो चुके हैं। मेरी यह

कोशिश कामयाब है कि मैंने उनकी बदली नहीं होने दी। उन्होंने सरहद के लोगों के साथ गहरे दोस्ताना तअल्लुक़ात पैदा कर लिए हैं। उनकी हालत यह हो गयी है कि उन के पेट तो भरे रहते हैं, खाने पीने की उन्हें कोई शिकायत नहीं, मैं उनके लिए ज़रूरत से ज़्याद ख़ुराक भेजता हूं लेकिन उन की हालत भूखे भेड़ियों की सी हो गयी है। कोई क़ाफ़िला गुज़रता है तो वह क़ाफ़िले वालों की औरतों को मुंह खोल कर देखते रहते हैं। अब हम अपना काम कर सकते हैं।"

वह जिस के साथ बातें कर रहा था वह कोई सूडानी था जो इसके यहां मेहमान के रूप में आया हुआ था। वह सूडान से उसके लिए तोहफे लाया था और उन तोहफों के साथ एक पैग़ाम ले कर आया था कि इस नफ़री को किसी तरह मिस्र में दाख़िल करके छुपा लिया जाये। उसके लिए पहली मुश्किल यह थी कि उन्हें सरहद पार किस तरह कराई जाये। उसी के जवाब में अलकंद ने कहा था कि मिस्र के सरहदी दस्ते बेकार हो चुके हैं....अलक़ंद उन चन्द एक सालारों में से था जिन पर सुल्तान अय्यूबी को भरोसा था। अलक़ंद ने कभी शक भी नहीं होने दिया था कि वह मिस्र की इमारत का वफ़ादार नहीं। अली बिन सुफ़ियान तक को उस ने धोखे में रखा हुआ था। उसका यह कारनामा कि उसने दो ढाई साल पहले स्मगलिंग रोक दी और सरहदें सर बमुहर कर दी थीं, उसे बहुत फ़ायदा दे रहा था। कोई भी न जान सका कि वह सरहदों का भेदी बन चुका है।

अब सुल्तान अय्यूबी मिस्र से चला गया था तो अलकंद ने अलआदिल को यक़ीन दिला दिया कि वह सूडान की तरफ़ से बे फ़िक्र हो जाये। सूडान का कोई परिन्दा भी मिस्र में दाख़िल नहीं हो सकता। ऐसी ही यक़ीन वह अली बिन सुफ़ियान को भी दिलाता रहा और सूडान में हब्शीयों की एक फ़ौज मिस्र पर इस अन्दाज़ से हम्ला करने के लिए तैय्यार होती रही कि जितनी छोटी छोटी टोलियों में मिस्र में दाख़िल होंगे, चोरी छुपे क़ाहिरा के क़रीब जायेंगे और एक रात हम्ला करके रात ही रात मिस्र की इमारत को क़ब्ज़े में ले लेंगे।

❖

दरियाए नील सूडान से गुज़रता मिस्र में दाख़िल होता है। आगे मिस्र के इलाक़े में एक वसीअ झील की सूरत इख़्तियार कर लेता है। उसके आगे ऐसे इलाके में दाख़िल होता है जो पहाड़ी है। उससे आगे आबशार की तरह गिरता है। उसके क़रीब उसवान है। सुल्तान अय्यूबी के दौर में उसवान के गिर्द व नवाह की जुग़राफ़ियाई कैफ़ियत कुछ और थी। दूर दूर तक चट्टानें और पहड़ियां थीं। उन पर फ़िरऔन की ख़ुसूसी नज़रे करम रही थी। उन्होंने पहाड़ों को तराश तराश कर बुत बनाये थे। उनमें से सबसे बड़े बुत अबु संबल के थे। बाज़ चट्टानों की चोटियां तराश कर किसी माअबद के गुंबद के शकल की या किसी फ़िरऔन का चेहरा बना दी गयी थीं। पहाड़ियों के दामन में ग़ारें बनाई थीं जो अन्दर से वसीअ व अरीज़ थीं। कुछ ऐसी थीं जिन के अन्दर कमरे, सुरंगो जैसे रास्ते और भूल भुलइया सी बना दी गयी थीं।

कुछ कहा नहीं जा सकता कि फ़िरऔन ने पुर असरारी दुनिया क्यों आबाद की थी। यह बुत तराशे और ग़ारें खोद का अन्दर कमरे वग़ैरह बनाते तीन नसलें ख़त्म हो गयी होंगी।

फ़िरऔन उस दौर के "ख़ुदा" थे। रिआया का काम सिर्फ़ यह था कि उनके आगे सज्दे करे और उन का हर हुक्म बजा लाये। यह पहाड़ उसी मज़लूम और फ़ाक़ाकश रिआया से कटवाये गये थे। आज वहां कोई बुत नहीं, कोई ग़ार नहीं, कोई पहाड़ नहीं। वहां उसवान की मील हा मील वसीअ झील है। उस डीम की तामीर से पहले अबु संबल के इतने बड़े बड़े बुत जो बजाये ख़ुद पहाड़ थे मशीनरी से वहां से उठाये गये और फ़िरऔन के दौर की यादगारों के तौर पर कहीं महफ़ूज़ कर लिए गये है। डायनामाइट से पहाड़ों को रेज़ा रेज़ा करके ज़मीन बोस कर दिया गया था। अगर फ़िरऔन इन्सान के हाथो पहाड़ों को यूं उड़ता और ज़मीन से मिलता देखते तो ख़ुदाई के दावे से दस्तबरदार हो जाते।

सुल्तान अय्यूबी के दौर में इस इलाक़े के ख़द व ख़ाल कुछ और थे। उन पहाड़ों की वादियों और ग़ारों में सारी दुनिया की फ़ौज को छुपाया जा सकता था। सुल्तान अय्यूबी ने ज़ाती तौर पर सरहद के इस इलाक़े पर ज़्यादा तवज्जो दी थी जहां से दरियाए नील मिस्र में दाख़िल होता था। सूडानी कश्तियों के ज़रिए मिस्र में दाख़िल हो सकते थे। इस दरियाई रास्ते पर नज़र रखने के लिए एक चौकी क़ायम की गयी थी जो दरिया से दूर थी चौकी से दरिया नज़र नहीं आता था और दरिया से चौकीनज़र नहीं आती थी। यह फ़ासिला दानिस्ता रखा गया था ताकि दरिया से चोरी छिपे गुज़रने वाले इस ख़ुशफ़हमी मे मुब्तला रहें कि उन्हें देखने और पकड़ने वाला कोई नहीं। दरिया पर कश्ती पहरे के ज़रिए नज़र रखी जाती थी। दो घोड़ सवार हर वक़्त गश्त पर रहते थे और उनकी ड्यूटी बदलती रहती थी।

मिस्र से सुल्तान अय्यूबी की ग़ैर हाज़िरी के दिनो का वाक़िआ है कि दिनों के वक़्त दरिया की देख भाल वाली सरहदी चौकी के दो घोड़ सवार गश्त पर निकले और मामूल के मुताबिक़ दूर तक निकल गये। एक जगह दरिया के किनारे सब्ज़ा ज़ार था।

सायादार दरख़्त थे और यह जगह बहुत ही ख़ुबसूरत थी। गश्त वाले संतरी उस जगह आराम किया करते थे। एक अर्सा से उन्होंने सूडानी को दरिया से आते नहीं देखा था। इब्देसा में उन्होंने बहुत से आदमी पकड़े थे जिसमें बाज़ तख़रीबकार और जासूस थे। उसके बाद यह दरियाई रास्ता वीरान हो गया था। अब संतरी सिर्फ़ ड्यूटी पूरी करने आते और चौकी की नज़रों से ओझल होकर बैठ जाते थे।

इन दो सवारों का भी यह मामूल था। उस मामूल से अब वह तंग आ गये थे। दरिया के किनारे इतनी सब्ज़ जगह थी उन्हें अच्छी नहीं लगती थी। हर रोज़ दरिया को देख देखकर वह उसके हुस्न से उकता गये थे। यहां उन्हें बाहर की दुनिया की अगर कोई चीज़ नज़र आती भी तो वह सेहराई लोमड़ी थी जो दरिया से पानी पीती और संतरियों को देख कर भाग जाती थी, या माही गीरों की एक आध कश्ती नज़र आती थी। वह माही गीरों से पूछते कि वह कहांके रहने वाले हैं। फिर उन्होंने यह पूछना भी छोड़ दिया था और उसके बाद माही गीरों ने भी वहां जाना छोड़ दिया था... उस रोज़ वह संतरी गश्त के इलाक़े में गये तो वह उक्ताई हुई सी बातें कर रहे थे जिन का लुबे लुबाब यह था कि उनके साथी क़ाहिरा, सिकन्दरिया और दूसरे शहरों में ऐश कर रहे हैं और वह इस जंगल बयाबान में पड़े हैं। उनके लब व लहजे में इहतजाज था

और बे इत्मीनानी भी।

वह इस सर सब्ज़ जगह से कुछ दूर थे तो उन्हें वहां चार पांच ऊंट बंधे नज़र आये। आठ दस आदमी बैठे हुए थे और चार आदमी दरिया में नहा रहे थे। दोनों सवार आगे चले गये मगर रुक गये। वह कोई इन्सान नहीं हो सकते थे। उनहें जिस चीज़ ने हैरत से ज़्यादा ख़ौफ़ में मुब्तला कर दिया वह यह थी कि दरिया में चार आदमी नहीं बल्कि चार जवान लड़कियां नहा रही थीं। उन्होंने सतर बारीक कपड़ों से ढांपे हुए थे वह दरिया में उस जगह डुबकियां लगा रही थीं जहां पानी उनकी कमर तक था। उनके जिस्मों के रंग मिस्रीयों की निस्बत ज़्यादा सुथरे और जाज़िब थे। वह कहकहे लगा रही थीं। घोड़ सवार यह समझ कर डर गये कि यह जल परियां हैं या आसमान से उतरी हुई परियां या फिरऔनों की शहज़ादियों की बद रूहें वह दोनों रुके रहे और उन्हें देखते रहे। उन्होंने वहीं से वापसी का इरादा कर लिया लेकिन जो आदमी बैठे हुए थे उन्होंने उनकी तरफ़ देखा।

दो आदमी उनकी तरफ़ उठ कर आये। लड़कियों ने भी उन्हें देख लिया। वह चारों दरियां से निकल कर किनारे की खुश्क ओट में चली गयीं। घोड़ सवारों का ख़ौफ़ ज़रा कम हुआ। वह आख़िर फ़ौजी थे। करीब जाकर उन्होंने उन आदमियों से पूछा कि वह कौन हैं और यहां क्या कर रहे हैं। दोनों आदमिों ने झुक कर सलाम किया। वह सेहराई लिबास मे थे।

उन्होनें बताया कि वह काहिरा के ताजिर हैं। बहुत से सरहदी देहात में माल फ़रोख़्त करके वापस जा रहे हैं।

"काहिरा जाने का यह रास्ता तो नहीं।" एक सवार ने कहा।

"लड़कियों का शौक़ है कि दरिया के किनारे किनारे जायेंगे।" एक ने जवाब दिया। हम अपने काम से फ़ारिग हो गये हैं। वापसी की कोई जल्दी नहीं। दो तीन रातें यहीं क़याम करेंगे. ....अगर आप को शक हो तो चल कर हमारा सामान देख लें। हमारे पास बहुत सारी रकम है। वह भी देख लें, ताकि आप को यक़ीन हो जाये कि हम वाक़ई मिस्र के ताजिर हैं।"

दोनों घोड़ सवार उनके साथ चल पड़े और क़याम की जगह पहुंचे तो सब उठकर खड़े हुए। सब ने झुक कर सलाम किया फिर दोनों के साथ मुसाफ़हा किया। एक आदमी ने पूछा कि वह उनका सामान खोल कर देखेंगे? घोड़ सवार संतरी घोंड़ो से उतर चुके थे। उन्होंने एक दूसरे की तरफ़ देखा और कहा कि वह सामान नहीं देखेंगे।

एक आदमी ने सुल्तान अय्यूबी के फ़ौज की तारीफ़े शुरू कर दीं। फिर उन्होंने उन दोनों की जवानी, दिलेरी और फर्ज़ की तरीफ़े कीं। उन्होंने ऐसी कोई बात न की थी जिस से उन दोनों को कोई शक होता। उस दौरान चारों लड़कियां कपड़े पहन कर और बाल झाड़ कर आ गयी थीं लेकिन वह शरमाई सी परे हट कर खड़ी रहीं। इस वीरानें में उन सिपाहियों ने दो ढाई साल बाद बाहर के चन्द आदमियों की महफिल देखी और उन्हें औरत ज़ात नज़र आई। उन लड़कियों में उन्होंने औरत का हर रूप देखा। मां, बहन, बीवी और वह औरत भी जो मां होती है न बहन न बीवी। दोनों की नज़रें उन लड़कियों ने गिरफ़्तार कर लीं। लड़कियां उन्हें देख कर शर्माती और मुंह छुपा कर मुस्कुराती थीं। उन के शर्म व हिजाब से पत चलता था कि

यह सब अच्छे ख़ानदान के लोग हैं।

यह दोनों सरहदी सिपाही उन आदमियों की बातों और खुसूसन लड़कियों में ऐसे महव हुए कि अपनी ड्यूटी भूल गये सरहदी इलाके में इतनी मुद्दत से पड़े रहने और फारिग होने के जो बुरे असरात थे, वह बड़ी ख़तरनाक नफ़सियाती तिश्नगी बन कर उन पर ग़ालिब आ गये। एक आदमी दरिया के किनारे बरछी लिए खड़ा मछलियां पकड़ रहा था। वह पानी पर दाने फेंकता था। मछलियां ऊपर आ जाती थीं। वह ऊपर से बरछी मारता तो एक मछली बरछी की अन्नी में पिरोई हुई बाहर आ जाती। वह बहुत सी मछलियां पकड़ चुका था। किसी ने लड़कियों से कहा कि वह मछलियां भूने। चारों लड़कियां दौड़ी गयीं। उन्हों ने आग जलाई और मछलियों को काट कर आग पर रख दिया।

❖

घोड़सवार सरहदी सिपाही अपने खाने से भी उक्ताये हुए थे। उनका खाना अच्छा होता था मगर हर रोज़ एक ही क़िस्म का खाना खा खा कर वह इस खाने से भी उक्ताए हुए थे। दरियाए नील के किनारे उनके सामने भूनी हुई मछली और खुश्क पका हुआ गोश्त रखा गया तो देख कर ही उन पर नशा तारी हो गया। सब मिल कर खाने लगे तो खाना और ज्यादा लज़ीज़ हो गया। खाने के दौरान दोनों ने देखा कि एक लड़की उनके एक घोड़े की गर्दन और ज़ीन पर हाथ फेरती और घोड़े को इश्तेयाक से देखती थी। लड़कियां मर्दों के साथ खाने पर नहीं बैठी थीं। घोड़े वाला सिपाही उस लड़की को देख रहा था जो घोड़े पर हाथ फेर रही थी। लड़की ने इधर देखा तो मुस्कुराकर उसने मुंह फेर लिया क्योंकि उस घोड़े का सवार उसे देख रहा था। इन सिपाहियों ने इतनी खूबसूरत लड़कियां पहले कभी नहीं देखी थी।

एक बूढ़े ने सिपाहियों से कहा– "इन लड़कियों ने कभी घोड़े की सवारी नहीं की, और यह जो लड़की घोड़े के क़रीब खड़ी है घोड़ सवारी की शौक़ीन है लेकिन उसे घोड़े पर बैठने का कभी मौक़ा नहीं मिला।"

"हम चारों का शौक पूरा कर देंगे।" एक सिपाही ने कहा।

खाने के बाद वह सिपाही उठा और अपने घोड़े के पास गया। लड़की झेंप कर परे हो गयी। सिपाही ने उसे कहा– "आओ मैं तुम्हे सवारी कराता हूं बारी बारी चारों को घोड़े पर बैठाऊंगा।"

किसी ने लड़की से कहा– "इनसे शर्माओ नहीं। यह तो तुम्हारी इज़्ज़त और मुल्क के रखवाले हैं। यह न हों तो सलीबी और सूडानी मालूम नहीं तुम्हारा क्या हश्र करें।"

लड़की झिझकती शर्माती घोड़े के क़रीब गयी। सिपाही ने उसका पांव उठा कर रिकाब मे डाला और उसे उठाकर घोड़े पर बैठा दिया। सिपाही को किसी ने आवाज़ दी और कुछ कहा। सिपाही उस तरफ़ मुतवज्जा हुआ। अचानक घोड़ा दौड़ पड़ा। लड़की की चीखें सुनाई दीं। सिपाही ने घूम कर देख। घोड़ा सरपट दौड़ा जा रहा था। उसके ऊपर लड़की इधर उधर गिरती और संभलने की कोशिश करती थी। सब ने शोर बपा कर दिया घोड़ा बेलगाम हो गया

है, लड़की गिर कर मर जायेगी। सिपाही के करीब उसके साथी का घोड़ा खड़ा था। वह उछल कर उस घोड़े पर सवार हुआ और ऐड़ लगा दी। लड़की वाला घोड़ा एक चट्टान से घूम कर नज़रों से ओझल हो गया। सिपाही ने अपने घोड़े की रफ़्तार इन्तेहा तक पहुंचा दी। उसे मालूम था कि लड़की और उसका पांव रकाब में फंसा रह गया तो उसकी हड्डियां टूकड़े टूकड़े हो जायेंगे और घोड़ा उसे घसीट घसीट कर हड्डियों से गोश्त उतार देगा।

सिपाही ने घोड़ा चट्टान से मोड़ा। आगे खुली वादी थी। लड़की को घोड़ा उठाये दौड़ा जा रहा था। कुछ आगे जाकर घोड़ा मुड़ा और फिर नज़रों से ओझल हो गया सिपाही को लड़की की चीख़ें और घोड़े के टाप सुनाई दे रहे थे। वह आगे जाकर मुड़ा। उसे घोड़ा नज़र न आया। अजीब बात यह थी कि उसे अब कोई आवाज़ नहीं सुनाई दे रही थी, न घोड़े के टाप न लड़की की चीखें। वह समझा घोड़ा किसी खड में जा गिरा है। उसने घोड़े की रफ़्तार कम कर दी। कुछ और आगे गया तो एक ओट से उसे लड़की की आवाज़ सुनाई दी– "इधर जल्दी से मेरे पास आ जाओ।"

सिपाही ने उधर देखा तो उस पर ख़ौफ तारी हो गया। घोड़ा खड़ा था और लड़की इत्मीनान से उस पर सवार थी। उसके चेहरे पर डर या घबराहट नहीं बल्कि होंठों पर मुस्कुराहट थी। सिपाही ने एक बार तो इरादा कर लिया कि घोड़े को ऐड़ लगाये और भाग जाये। उसे यक़ीन हो चुका था कि यह लड़की शर शरार या बद रूह है और उसे धोखे से इस ढकी छुपी जगह ले आई है और अब उसका ख़ून पी जायेगी लेकिन वह जैसे जकड़ लिया गया हो। लड़की की मुस्कुराहट और उसके सरापा में कोई ऐसी ताक़त थी जिसने सिपाही के घोड़े का रूख़ लड़की की तरफ़ कर दिया।

"तुम सिपाही हो, मर्द हो।" लड़की ने उसे कहा– "मुझ से डर रहे हो?" वह उस के करीब गया तो लड़की ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा– "घोड़ा बेलगाम नहीं हुआ था। मैंने उसे ख़ुद ऐड़ लगायी और भगाया था, और चीखें मार कर यह ज़ाहिर किया था कि घोड़ा बेलगाम हो गया है और मैं गिर पड़ूंगी। मुझे उम्मीद थी कि तुम मेरे पीछे आओगे मैं अनाड़ी नहीं शाहसवार हूं।"

"तुम ने यह धोखा क्यों दिया है?" सिपाही ने पूछा।

"मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है।" लड़की ने कहा– "मैं यह बातें सबके सामने नहीं कर सकती थी। तुम ने उन आदमियों में एक बूढ़ा देखा है। वह मेरा ख़ाविन्द है। उसकी उम्र देखो और मेरी जवानी देखो। मेरे साथ जो लड़कियां हैं, उनमें से एक मेरी तरह एक बूढ़े की बीवी बना दी गयी है। तुम जानते हो कि लड़की को जिसके साथ बांध दो वह बोल नहीं सकती। यह बूढ़ा मुझे ख़ुश करने के लिए अपने साथ लिए फिरता है। यह सब ताजिर हैं। हमें भी अपने साथ लिए फिरते हैं।"

"दूसरी दो लड़कियां कौन हैं?" सिपाही ने पूछा।

"वह दोनों शादीशुदा हैं।" लड़की ने जवाब दिया। "उनके ख़ाविन्द जवान हैं। वह उन्हें सैर सपाटे के लिए साथ लाते हैं। तुम मेरी मदद करो।"

"अगर यह लोग तुम्हे अग़वा करके लाये होते तो मैं उन सब को चौकी ले जाता।" सिपाही ने कहा– "तुम उसकी बीवी हो।"

"मैंने उसे अपना ख़ाविन्द तस्लीम नहीं किया।" लड़की ने कहा– "तुम्हे देखा है तो मेरे दिल में इस बूढ़े की नफ़रत और ज़्यादा हो गयी है।" उसने जज़्बाती लहजे में कहा– "तुम्हे पहली नज़र में देखकर मेरे दिल से आवाज आई कि यह है तुम्हारा ख़ाविन्द। ख़ुदा ने तुम्हें ऐसे ख़ुबरू जवान के लिए पैदा किया है।"

"मैं इतना ख़ुबसूरत नहीं जितना तुमने कहा है।" सिपाही ने कहा– "तुम मुझे क्यों धोखा दे रही हो? तुम्हारे दिल में क्या है?"

"ख़ुदा जानता है कि मेरे दिल में क्या है।" लड़की ने मायूस से लहजे में कहा– "वही तुम्हारे दिल में रहम डालेगा। अगर तुम मेरे दिल की आवाज़ को धोखा समझते हो तो मैं अपने ख़ाविन्द के पास नहीं जाऊंगी। घोड़े को ऐड़ लगाऊंगी और सीधी दरिया में घोड़े समेत कूद जाऊंगी। ख़ुदा से जाकर कहूंगी कि तुम मेरे क़ातिल हो।"

वह एक तिश्ना सिपाही था। सरहद की ड्यूटी से उक्ताया हुआ था। वह सलाहुद्दीन अय्यूबी, अली बिन सुफ़ियान या अल आदिल नहीं था। वह सिपाही था और यही उस की शख़्सियत थी। लड़की के हुस्न व शबाब और उसका अन्दाज़ और उसकी बातों ने उसे मोम कर दिया। अलबत्ता इस एहसास का उसने इज़हार कर दिया– "मैं कमतर सिपाही हूं और तुम शहज़ादियों से कम नहीं। तुम मख़मल से निकल मेरे साथ इस रेते पर और चट्टानों में जिन्दा नहीं रह सकोगी।"

"अगर ख़्वाहिश मख़मल और दौलत की होती तो उस बूढ़े ख़ाविन्द से बेहतर मेरे लिए कोई ख़ाविन्द नहीं हो सकता।" लड़की ने कहा– "उसने अपनी दौलत मेरे क़दमों में डाल रखी है लेकिन मैं किसी सिपाही की बीवी बनना चाहती हूं। मेरा बाप भी सिपाही है। दो बड़े भाई सिपाही हैं। वह दमिश्क और शाम के मुहाज़ पर सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज में हैं। मुझे बूढ़े के हवाले मेरी मां ने किया है। हम ग़रीब लोग हैं। मेरी ख़ूबसूरती मेरी बदकिस्मती का बाइस बनी है। मैं शाहसवार हूं। यह मेरे ख़ाविन्द को मालूम नहीं। हमारे ख़ानदान की दौलत यही अस्करी रवायात हैं। मैं ने हमेशा यह ख़्वाहिश की है कि सुल्तान की फ़ौज में शामिल हो जाऊं। अगर यह मुम्किन न होतो किसी सिपाही के साथ शादी कर लूं। तुम रेत और चट्टानों की बाते न करो। मैं इस रेत की पैदवार हूं और जब मेरा ख़ून इसी रेत में जज़्ब हो जायेगा तो मेरी रूह मुत्मईन हो कर ख़ुदा के हुज़ूर जायेगी।"

"मैं तुम्हारी मदद किस तरह कर सकता हूं?"

"आओ।" लड़की ने कहा– "आहिस्ता आहिस्त वापस चलते हैं। वह लोग हमारे पीछे आ रहे होंगे। रास्ते में तुम्हें बताऊंगी कि मैं ने क्या सोचा है।" वह चल पड़े। लड़की ने कहा– "मैं तुम्हें यह नहीं कहूंगी कि मुझे अपने साथ ले चलो। यह जुर्म होगा। मेरा ख़ाविन्द क़ाज़ी के पास चला जायेगा और हम दोनों सज़ा पायेंगे। पहले इस ख़ाविन्द से आज़ाद होना है। इसका एक ही तरीक़ा है कि उसे ऐसे तरीक़े से क़त्ल किया जाये कि यह क़त्ल न लगे। क़त्ल तुम

नहीं करोगे, मैं करूंगी। हो सकता है उसे शराब में कुछ मिलाकर पिलादूं और रात को दरिया के किनारे पर लेजाकर धक्का दे दूं और कहूं कि वह नशे में दरिया में उतर गया था। उसके लिए दो चार रोज़ इन्तज़ार करना पड़ेगा। मैं उसे यहीं रखूंगी।"

"तुम्हारे पास कोई ज़हर है?" सिपाही ने पूछा।

लड़की ने कहकहा लगाया और कहा– "तुम बुद्धू सिपाही हो। मैं काहिरा के दूर परे के इलाके की रहने वाली हूं जिसमें से यह दरिया गुज़रता है। हमारी ख़ुराक मछली है। मछली का पित्त ज़हर से भरा होता है। तुम ने देखा है कि हम यहां भी मछलियां पकड़ते हैं। मैं मछली का पित्त अलग करके छुपालूंगी और उस में से चन्द कतरे बूढ़े की शराब में मिला दूंगी, फिर उसे सैर के बहाने दरिया के किनारे ले जाऊंगी।"

"फिर मैं तुम्हें किस तरह ले जाऊंगा?"

वह मर गया तो मैं आज़ाद हूंगी।" लड़की ने जवाब दिया– "मैं सब से कह दूंगी कि तुममे से कोई भी मेरा वारिस नहीं जो मुझे अपनी मर्ज़ी की शादी से रोके। मैं तुम्हारे साथ चली जाऊंगी। तुम मुझे अपने घर भेज देना.... और सुनो। तुम मुझे मिलते रहना। अब चले जाओगे तो फिर कब आओगे?"

"मैं सिर्फ़ गश्त पर आ सकता हूं।" सिपाही ने जवाब दिया। "चौकी दूर है। गश्त के बेग़ैर हम घोड़ा इस्तेमाल नहीं कर सकते। मेरी गश्त इसी साथी के साथ कल रात के दूसरे पहर होगी। मैं यहीं आ जाऊंगा।"

"ज़रा दूर रहना।" लड़की ने कहा– "मैं तुम्हे रास्ते में मिलूंगी। कहीं छुप कर बैठ जायेंगे।" लड़की ने उसका हाथ पकड़ लिया। सिपाही ने उसकी तरफ़ देखा तो लड़की ने उसकी आंखों में आंखे डाल दीं। सिपाही के तमाम शकूक रफ़ाअ हो गये। उसने लड़की का हाथ अपने दिल पर रख कर दबाया।

❖

वह जब उस जगह पहुंचे जहां से लड़की का घोड़ा चट्टान की ओट में हो गया था, उन्हें तमाम आदमी नज़र आये वह उसी तरफ़ देख रहे थे। उन्हें देखकर वह उनकी तरफ़ दौड़ पड़े। दोनों घोड़ों से उतरे। लड़की का बूढ़ा ख़ाविन्द सिपाही के साथ लिपट गया। उसकी आवाज़ कांप रही थी। दूसरे आदमियों ने भी वालेहाना अन्दाज़ से उसका शुक्रिया अदा किया। लड़की ने उन्हें झूठ मूट की कहानी सुनादी और कहा कि इस सिपाही ने अपनी जान ख़तरे में डाल कर उसे बचाया है, वरना घोड़ा उसे किसी पत्थरीले खड में गिराकर मार देता।

दोनों सिपाही चौकी को वापस रवाना हुए। रास्ते में उस सिपाही ने अपने साथी को बता दिया कि असल वाक़िआ क्या हुआ है। उसके साथी के दिल में रश्क सा पैदा हुआ लेकिन उसने बताया कि उसकी ग़ैर हाज़िरी में एक लड़की अजीब नज़रों से उसे देखती थी। यह सिपाही अपने साथी के पीछे जाना चाहता था मगर पैदल पहुंचना मुम्किन नहीं था। बाकी आदमी पीछे खड़े रहे।। वह बहुत आगे चला गया। दो लड़कियां भी आगे गयीं जिन में से एक उस के साथ बातें करने लगी। बातों बातों में लड़की ने इस सिपाही के साथ मोहब्बत का

इज़हार किया और उस से पूछा कि वह उसे फिर कब मिलेगा। उसने लड़की को बताया कि वह कल रात के दूसरे पहर गश्त पर आयेगा। उस लड़की ने उसे बातया कि उसे एक बूढ़े के साथ ब्याह दिया गया है और वह उसके साथ भागना चाहती है।"

दोनों की कहानी एक जैसी थी। उन्होंने इस मसले पर ग़ौर करना शुरू कर दिया कि वह लड़कियों को किस तरह अपने साथ ले जायेंगे। वह दोनों इस पर भी ग़ौर करने लगे कि अगर लड़कियां अपने ख़ाविन्दों को क़त्ल न कर सकीं तो वह ख़ुद उन्हें क़त्ल कर देंगे और किस तरह करेंगे....दोनों सिपाही बड़े हसीन तसव्वुरात में खुमार की कैफ़ियत में अपनी चौकी पर पहुंचे। उन्होंने कमाण्डर को रिपोर्ट दी कि फलां जगह क़ाहिरा के ताजिरों का क़ाफ़िला रूका हुआ है जिस के सामान की तलाशी ली गयी और हर तरह इत्मीनान कर लिया गया है कि वह मुश्तबा और मशकूक लोग नहीं। उन सिपाहियों ने लड़कियों का ज़िक्र भी किया। चौकी के कमाण्डर ने रिपोर्ट के पहले हिस्से को तवज्जो से नहीं सुना। जब लड़कियों का ज़िक्र आया तो उसने दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी। लड़कियों की तादाद, उम्र,क़द बुत, रंग रूप, ग़र्ज़ उस ने कोई बात न रहने दी। सिपाहियों ने उसके रवैये को महसूस किया और ख़ामूश रहे।

चौकी में एक और चौकी का सिपाही बैठा था। वह चौकी वह' से आठ दस मील दूर थी। उसके कमाण्डर ने उस सिपाही को इस पैग़ाम के साथ भेजा कि आज शाम के बाद मेरी चौकी में आना, ज़रूरी काम है। कमाण्डर ने पैग़ाम लाने वाले सिपाही को यह कह कर रोक लिया था कि इकठ्ठे चलेंगे।

सूरज ग़ुरूब होते ही कमाण्डर सिपाही के साथ रवाना हो गया। दूसरी चौकी पर पहुंचा तो शाम गहरी हो चुकी थी यह चौकी हरी भरी जगह थी। वहां उस शाम कुछ और ही रौनक थी। चौकी के तमाम सिपाही जो ड्यूटी पर नहीं थे, चौकी के बाहर गोल दायरे में बैठे। मशाले जल रही थीं। चौकी कमाण्डर वहां नहीं था। उसके ख़ेमे में गये। वहां दो लड़कियां बैठी थीं और तीन सेहराई आदमी थे। उनके क़रीब साज़ दफ़ पड़े हुए थे। मेहमान कमाण्डर के आते ही खाना चुना गया....सब खा चुके तो चौकी के कमाण्डर के कहने पर साज़िन्दे और लड़कियां बाहर चली गयीं। दूसरी चौकी के कमाण्डर ने पूछा कि यह कौन लोग हैं और बाहर क्या हो रहा है।

"यह लड़कियां नाचने वाली हैं।" कमाण्डर ने जवाब दिया– "और उनके साथ साज़िन्दे हैं। यहां से गुज़र रहे थे। पानी पीने के लिए रूके तो मैंने उन्हें बैठा लिया। लड़कियां अच्छी लगीं। मैंने उन्हें खाना भी खिलाया। यह कहीं जा रहे थे। मेरे कहने पर रूक गये। आज रात उन्हें यहीं रखूंगा।"

"मुझे यह सिलसिला अच्छा नहीं लगा।" दूसरे कमाण्डर ने कहा। "सरहद पर आकर यह अय्याशी सिपाहियों को ख़राब करेगी।"

"इसके बेग़ैर सिपाही ज़्याद ख़राब हो रहे हैं।" मेज़बान कमाण्डर ने कहा– "एक हमारे वह साथी हैं जो शहरियों मे ऐश कर रहे हैं। एक हम हैं जो मालूम नहीं कब से यहां बूगीर कुत्ते की तरह आवारा फिर रहे हैं। क्या तुम्हे सिपाहियों ने कभी परेशान नहीं किया कि उनकी जगह

दूसरे दस्ते लाये जायें?"

"मेरी चौकी में तो दो सिपाही आपस में लड़ भी चुके हैं।" मेहमान कमाण्डर ने कहा– "अब तो सिपाहियों को मामूली सी बात पर ग़ुस्सा आ जाता है।"

"मैं अपने सालार अलकंद तक दरख़्वास्त भेजवा चुका हूं कि हम पर रहम करें और हमारी बदली करें।" मेज़बान ने कहा– उसने कोई जवाब नहीं दिया.... मैं कहता हूं हमें मुहाज़ पर भेज दें जहां बहुत ही सख़्त जंग हो रही है। यहां से हटा दें जहां कुछ भी नहीं। हम अपना फ़र्ज़ अदा कर चुके हैं। अब दूसरों को भेजें।"

दूसरी चौकी से आया हुआ कमाण्डर भी यही महसूस कर रहा था जो उसे बताया जा रहा था। बालाई कमान की मामूली कोताही बड़े ख़तरनाक नताइज सामने ला रही थी। दुश्मन पर बिजलियों की मानिन्द टूटने वाले मुजाहेदीन नफ़सियाती तिश्नगी और ख़ल्फ़शार का शिकार हो रहे थे। वह अब अपनी तस्कीन के ज़राए खुद पैदा कर रहे थे और फ़र्ज़ के दौरान रक़्स सुरूद से दिल बहला रहे थे।

❖

रात गुज़रती जा रही थी। लड़कियां बारी बारी नाचती थीं। वह थक गयीं तो उनके साज़िन्दों ने गाना सुनाया। सिपाही उन्हें चीख़ चीख़ कर दाद दे रहे थे। तीन चार सिपाहियों ने लड़कियों की तरफ़ पैसे फेंके जो लड़कियों ने यह कहकर वापस कर दिये कि वह वतन के मुहाफ़िज़ों से पैसे नहीं लेंगी। उनके साज़िन्दों ने भी सिपाहियों से कहा कि अगर वह नाच गाने से खुश होते हैं तो उन्हें जब भी बुलाया जायेगा वह बिला उजरत आ जाया करेंगे....उन तमाशाइयों में दो कमाण्डर थे। उनके ओहदे कोई ज़्यादा ऊंचे तो नहीं थे फिर भीर वह ज़िम्मेदार अफ़राद थे और वह दोनों अपनी जिम्मेदारियों को भूल चुके थे। उन्होंने यह मालूम करने की भी कोशिश न की कि नाचने गाने वाली यह पार्टी आई कहां से है और जा कहां रही है, और जो कुछ साज़िन्दों ने अपने मुतअल्लिक़ बताया है, वह सही भी है या नहीं। कमाण्डरों ने यह भी न देखा कि तमाशाइयों में मिस्र के सेहराई लिबास में जो चन्द एक आदमी आ बैठे है वे कौन हैं और कहां से आयें हैं– और उन कमाण्डरों ने यह भी न देखा कि चौकी के चार सिपाही गश्ती पहरे से जल्दी वापस आ गये हैं और उनकी जगह दूसरे चार सिपाही पहरे के लिए गये ही नहीं।

चौकी से कुछ दूर रात की तरह स्याह चेहरों वाले कम व बेश पचास आदमी एक दूसरे के पीछे सूडान की तरफ़ से आ रहे थे। दो आदमी उनसे बहुत आगे थे। पीछे वाले थोड़ा सा चल कर रूक जाते थे, आगे वाले दो आदमी अंधेरे में इधर उधर देखते, रात की आवाज़ों को सुनने की कोशिश करते और गिदड़ों की तरह बोलते, पीछे वाले इस आवाज़ पर चल पड़ते। आगे से लोमड़ी की कहकहा नुमा आवाज़ आती तो वह रूक जाते और कुछ देर बाद गीदड़ों की आवाज़ पर चल पड़ते। दूर चौकी से साज़ों की धीमे धीमे नग़मे सरहद की ख़ामोश फ़िज़ा में बिखर रहे थे...आगे चट्टानी इलाक़ा आ गया। स्याह चेहरों वाले काले काले साये चट्टानों में ग़ायब हो गये। उनके पास बरछियां थीं, तलवारे और खंज़र भी थे, और हर एक ने चार चार

पांच पांच कमाने और तीरों का वज़नी ख़ज़ाना उठा रखा था।

उनके इस्तक़बाल के लिए वहां तीन चार आदमी मौजूद थे। उनमें से किसी ने आने वाली पार्टी के सरदार से हंस कर कहा– "लड़कियों ने काम कर दिया ह।"

"हां।" सरदार ने कहा – "हम उनके साज़ों के नग़में सुनते आये हैं। मैंने दस बारह आदमी वहां तमाशइयों के भेस में भेज दिये थे। उन में से एक ने आकर इत्तलाअ दी थी महफ़िल गर्म हो गयी है और रास्ता साफ़ है। गश्ती संतरी भी नाच गाने में चले गये हैं।"

"नील से अच्छी इत्तलाअ मिली है।" इस्तक़बाल करने वालों में से एक ने कहा– "उन लोगां ने लड़कियों से सही काम लिया है। दो सिपाहियों को जो कल रात इस तरफ़ पहरे पर होंगे,फांस लिया गया है। मैंने इत्तलाअ भेज दी है। कल रात कम अज़कम तीन बड़ी कश्तियां आ जायेंगी।"

वह आगे चल पड़े। चट्टानें उंची होती गयीं। आगे पहाड़ियां आ गयीं। सरदार रूक गया और उसने सारी पार्टी को भी रोक दिया। उसने इस्तक़बाल करने वालों से सरगोशी में कहा– "यह न भूलना कि यह सब हबशी हैं। उनका मज़हब अजीब व ग़रीब है और उनकी आदतें और रसूमात तुम्हें हैरान कर देंगे।एहतियात यह करनी है कि यह जैसी कैसी मज़हका ख़ेज़ हरकत करें उसे एहतराम की निगाह से देखना। हम उन्हें मज़हब के नाम पर लायें हैं। उन्हें यह झांसा दिया है कि हम उन्हें उस जगह ले जा रहे हैं जहां ख़ुदा रहता है। वह ख़ुदा जो रेत को प्यासा रखता, सूरज को आग देता और आसमान से बिजली और पानी बरसाता है। एक मुश्किल पेश आयेगी। यह लोग जंग से पहले इन्सानी क़ुर्बानी देने के क़ाइल हैं।

यह उन का सरदार बतायेगा कि क़ुर्बानी मर्द की देनी है या औरत की या एक मर्द और एक औरत की। अगर हम ने उनकी यह रस्म पूरी कर दी तो फिर उन्हें लड़ाई में देखना, क़ाहिरा की ईट से ईट बजा देंगे। सलाहुद्दीन अय्यूबी की यह फ़ौज उनके सामने एक दिन से ज़्यादा न ठहर सकेगी।"

सरदार ने सबसे कहा– "सज्दे में गिर पड़ो। तुम ख़ुदा के घर में हो।" सब सज्दे में गिर पड़े। सरदार के कहने पर उठे और सरदार के पीछे चल पड़े।

यह सूडानी हबशी थे जिन्हें मिस्र में दाख़िल किय जा रहा था। उन्हें छुपाने के लिए उस पहाड़ी ख़ित्ते का इन्तख़ाब किया गया थ। फ़िरऔन की वक़्तों की ग़ारें जो दरअसल ज़मीन दोज़ इमारतें थीं, बहुत बड़ी फ़ौज को घोड़ों और ऊंटों समेत छुपा सकती थी। सूडान में ख़ूंखार हब्शियों को उनके मज़हब और तौहुम परस्ती के ज़रिए इकट्ठा करके फ़ौजियों के ख़िलाफ़ लड़ने की ट्रेनिंग दी जा रही थी। लड़ने के तो वह माहिर थे। उनके क़बीलों की जंगें होती रहती थीं। तीर अन्दाज़ी और निशाने पर बरछी फेंकने के वह माहिर थे। सूडान के हुक्मरानों ने सलीबियों से मुआहिदा करके बहुत से सलीबी फ़ौजी अफ़सरों को बुलया लिया था। वह उन हब्शियों को मुन्ज़िम और बाक़ायदा कमाण्डर के तेहत लड़ने की ट्रेनिंग दे रहे थे। उससे पहले सूडानी फ़ौज दो बार शिकस्त खा चुकी थी। तीसरी जंग उस वक़्त हुई जब सुल्तान अय्यूबी के भाई तक़ीउद्दीन ने सूडान पर हम्ला किया था। सूडानियों ने यह हम्ला

नाकाम करके तकीउद्दीन की फ़ौज को बुरी तरह बिखेर दिया था। तकीउद्दीन सुल्तान अय्यूबी के मदद से अपनी बची खुची फ़ौज को वापस ले आया था। उसमें सूडानियों की नाकामी यह थी कि उन्होंने तकीउद्दीन का तआक्कुब न किया और मिस्र पर हम्ला न किया। अगर सूडानी तआक्कुब और हम्ला करता तकीउद्दीन की फ़ौज इतनी थकी हारी थी कि मिस्र को सूडनियों से बचा न सकती थी।

उन नाकामियों को देखते हुए सलीबियों ने सुल्तान अय्यूबी का तरीकाकारे जंग आज़माने की स्कीम बनाई थी। उन्होंने देख लिया था कि सुल्तान अय्यूबी कम से कम नफ़री से ज़्यादा फ़ौज पर शब खून किस्म का हम्ला करता और जम कर लड़ने की बजाये अपने दस्तों को घुमा फिरा कर लड़ाता और बड़ी से बड़ी गठी हुई फ़ौज को बिखेर देता है। उन्हें यह भी मालूम था कि इस किस्म के हमले के लिए बड़ी ही सख़्त ट्रेनिंग और ख़ास किस्म के सिपाहियों की ज़रूरत होती है। आम किस्म की फ़ौज सिर्फ़ हुजूम की सूरत में लड़ सकती है, चुनांचे उन्होंने हब्शी कबाइल में जंगी जुनून पैदा करके थोड़ी सी फ़ौज को तैय्यार कर ली थी और उन्हें शब ख़ून की ट्रेनिंग दी थी। वह क़ाहिरा वालों को बे ख़बरी में दबोच लेना चाहते थे। अब सुल्तान अय्यूबी मिस्र में नहीं था उन्हें यकीन था कि सुल्तान अय्यूबी की ग़ैर हाज़िरी में वह मैदान मार लेंगे।

उन्हें इस हम्ले की कमान के लिए ऐसे जनरल की ज़रूरत थी जो मिस्र की फ़ौज का होता ताकि वक़्त और कुव्वत कम से कम सर्फ़ हो और हम्ला सही ठिकानों पर हो। उनकी यह ज़रूरत सुल्तान अय्यूबी के सालार अलकंद ने पूरी कर दी थी। सूडान के हब्शियों की फ़ौज को छुपाने के इन्तज़मात अलकंद ने ही किये थे। उसने मिस्री फ़ौज के चार पांच जूनियर कमाण्डर भी अपने साथ मिला लिए थे। जासूसों के ज़रिए उसका राब्ता सूडान के साथ था। अब यह फ़ौज मिस्र में दाख़िल हो रही थी।

❖

रात गये तक चौकी पर नाच गाना होता रहा। दूसरी चौकी का कमाण्डर वहां से अपनी चौकी के लिए रवाना होने लगा तो उसने उस चौकी के कमाण्डर से कहा कि वह इन लोगों से कहे कि कल रात उसकी चौकी पर आयें। साज़िन्दे मान गये। उन्हे और जाना ही कहां था। वह तो सूडानियों बल्कि अलकंद के भेजे हुए लोग थे। यह तो उन्होंने झूठ बोला था कि वह किसी के बुलावे पर उसके गांव जा रहे थे। उनके ज़िम्मे यही था कि उन दो चौकियों पर पानी पीने के बहाने रूकें और ऐसी बातें करें कि चौकियों के कमाण्डर उनके जाल में आ जायें। नाचने वाली लड़कियां दिलकश थीं। कमाण्डर उन के जाल में आ गया। उसने दरिया वाली चौकी के कमाण्डर को भी बुला लिया। और पचास हब्शी सरहद पार करके पहाड़ियों के पेट में ग़ायब हो गये।

अगली रात दोनों रक़्क़ासायें दरिया वाली चौकी पर जा पहुंची और वहां भी वही रौनक पैदा की गयी जो इस चौकी पर की गयी थी। रात के दूसरे पहर दरिया के साथ साथ गश्त करने वाले दो सिपाही वापस आ गये। उनकी जगह दूसरे सिपाही रवाना होने लगे। उन्हें

साथियों ने कहा कि वह यह रौनक़ छोड़कर न जायें। कमाण्डर इस वक़्त लड़कियों और उनके रक़्स में मस्त है लेकिन वह दोनों यह कह कर चल पड़े कि वह अपने फ़र्ज़ में कोताही नहीं करना चाहते। यह वही दो सिपाही थे जिन्हें दो लड़कियों ने मोहब्बत का इज़हार करके कहा था कि वह अपने बूढ़े ख़ाविन्दों से निजात हासिल करके उनके साथ जाना चाहती हैं। उन्हें फ़र्ज़ का इतना ख़्याल नहीं था जितना उन लड़कियों के पास पहुंचने का इश्तियाक़ था। लड़कियों ने उन्हें कहा कि वह उन्हें मिलेंगी।

इससे पहले वह आहिस्ता आहिस्ता चलते, रूकते और चलते थे मगर उस रात चौकी से ज़रा दूर होते ही उन्होंने घोड़े दौड़ा दिए। एक जगह घोड़े रोक कर उतरे और आहिस्ता आहिस्ता चलते अलग अलग हो गये। दोनों लड़कियां मुख़्तलिफ़ जगहों पर उनका इन्तज़ार कर रही थीं। वह दोनों को दरिया से दूर चट्टानों में ले गयीं। दोनों ने उन पर अपने हुस्न व जवानी और मोहब्बत का तिलिस्म तारी कर दिया और ख़ाविन्दों के क़त्ल की स्कीमें बनाती रहीं। दोनों ने कहा कि वह अपने ख़ाविन्दोंको शराब में ख़्वाब आवर सफ़ूफ़ पिला कर सुला आई हैं। दोनों सिपाही, एक चट्टान के इस तरफ़ दूसरा कहीं और, सिर्फ़ फ़र्ज को ही नहीं गिर्द व पेश को और दुनिया को भी फ़रामोश किये बैठे थे।

इस जगह से थोड़ी दूर आगे जहां उन सिपाहियों ने ताजिरों के क़ाफ़िले को बैठे देखा था, दरिया के किनारे चार साये इधर उधर हरकत कर रहे थे। दरिया की हल्की हल्की लहरें जल तरंग बजा रही थीं। यह आदमी पानी की सतह पर तारीकी में दूर देखने की कोशिश कर रहे थे। वह बेचैन हुए जा रहे थे। एक ने कहा– "उन्हें इस वक़्त तक आ जाना चाहिए।" दूसरे ने कहा– "उन्हें इत्तलाअ तो दी गयी थी।" एक ने आंखें सुकेड़ कर कहा– "वह बादबान मालूम होते हैं।" उसने एक दीया जला कर आहिस्ता आहिस्ता दायें बायें हिलाना शुरू कर दिया। दरिया में दूर दो दीये जलते नज़र आये और बुझ गये।

थोड़ी देर बाद एक बादबानी कश्ती किनारे के साथ आ लगी। किनारे पर खड़े आदमी ने कहा– "किसी की ऊंची आवाज न निकले।" मुकम्मल ख़ामोशी से स्याह काले हब्शी कश्ती से किनारे पर कूदने लगे। उसके पहलू में एक और कश्ती आ रूकी। उसमें से भी हब्शी उतरे। यह बहुत बड़ी कश्तियां थीं। उनमें कम व बेश दो सौ हब्शी उतरे। फिर उन में से सामान उतरने लगा। यह सब जंगी सामान था। ज्योंहि कश्तियां ख़ाली हुई मल्लाहों से कहा गया कि बहुत तेज़ी से कश्तियां वापस ले जाये। मल्लाहों ने बादबानों के रस्से खींचे, रूख़ बदले और कश्तियां साहिल से हट कर अंधेरे में ग़ायब हो गयीं। और हब्शियों की यह खेप चट्टानों में से होती हुई पहाड़ियों में गयी और ग़ायब हो गयी।

❖

यह दोनों सिपाही वापस आये तो चौकी पर नाच गाने की महफ़िल ख़त्म हो गयी थी। सिपाही अपने अपने ख़ेमों को जा रहे थे। नाचने गाने वालों के लिए कमाण्डर ने अलग ख़ेमा खड़ा कर दिया था। उसे एक लड़की कुछ ज़्याद ही अच्छी लगी। वह चेहरे मोहरे से मासूम लगती थी। कमाण्डर ने यह सोंच कर कि यह पेशावर लोग हैं। साज़िन्दों से कहा कि इस

लड़की को वह उसके ख़ेमे में भेज दें। यह लोग दर असल जासूस और तख़रीब कार थे। उन का मिशन ही यही था कि उन दो चौकियों को अपने जाल में उल्झाए रखें और उनके कमाण्डरों को अपने कब्ज़े में लेने की कोशिश करें ताकि सूडान से हब्शी फ़ौज मिस्र में दाख़िल होती रहे। उस कमाण्डर ने लड़की को अपने साथ रखने की ख़्वाहिश का इज़हार किया तो उसकी ख़्वाहिश फ़ौरन पूरी कर दी गयी। रक़्क़ासा उसके साथ ख़ेमें में चली गयी।

कमाण्डर अधेड़ उम्र था और लड़की नौजवान। ख़ेमे में जाकर लड़की की शोख़ी ख़त्म हो गयी। वह तो नाचने कूदने वाली और बड़ी ही प्यारी मुसकुराहट से तमाशाइयों का दिल बहलाने वाली रक़्क़ासा थी। बाहर की मशालें बुझ चुकी थीं। ख़ेमें में दीया जल रहा था। लड़की एक तरफ़ बैठ कर कमाण्डर को गहरी नज़रों से देखने लगी।

"मैं ने कभी शराब नहीं पी।" कमाण्डर ने कहा।

"मेरे बाप ने भी कभी शराब नहीं पी थी।" रक़्क़ासा ने कहा– "तुम ने शराब का नाम क्यों लिया है? मैं ने तो नहीं कहा था शराब पियो। तुम शायद यह कहना चाहते हो कि हमारे पास शराब भी होगी और मैं लाकर तुम्हें पिलाऊंगी।"

"कहते हैं शराब के बग़ैर औरत और औरत के बग़ैर शराब बेमज़ा और फीकी होती है।" कमाण्डर ने मुस्कुराकर कहा– "मैं शराब के ज़ायके से वाक़िफ़ नहीं और मैं ग़ैर औरत की चाशनी से भी आशना नहीं।"

"फिर तुम अनाड़ी गुनहगार हो।" रक़्क़ासा ने संजदीगी से कहा– "मैं तुम से कोई नक़द उजरत नहीं लूंगी मेरी एक बात मान लो तो उसी को सारी रात तुम्हारे साथ गुज़ारने की उजरत समझूंगी....बात यह है कि अगर गुनाह में वह चाशनी नहीं जो गुनाह करने में हैं। तुम मर्द हो। इस तन्हाई में जब एक जवान लड़की तुम्हारे पास है तुम्हे मेरी यह बात अजीब लगेगी। तुम मेरी बात मानोगे नहीं। ज़रा ग़ौर करो। तुम्हारा चेहरा बता रहा कि तुम ने आज पहली बार गुनाह का इरादा किया है। रात इतनी सर्द है मगर तुम्हारे माथे पर मुझे पसीने के क़तरे नज़र आ रहे हैं।"

"तुम ठीक कह रही हो।" अधेड़ उम्र कमाण्डर ने कहा– "हमें जब फ़ौजी तरबीयत दी गयी थी तो गुनाहों से बचने के तरीक़े भी बताये गये थे। जंगी और जिस्मानी तरबीयत के साथ रूहानी और अख़्लाक़ी तरबीयत भी शामिल होती है। यही वजह है कि सुल्तान अय्यूबी एक सौ सिपाहियों से एक हज़ार सलीबियों को ख़ून में नहला देता है।"

"लेकिन एक कमज़ोर सी लड़की ने तुम से हथियार डलवा लिए हैं।" रक़्क़ासा ने कहा– "तुम इतनी लम्बी रूहानी और अख़्लाक़ी तरबीयत से दस्तबरदार हो गये हो।"

कमाण्डर परेशान हो गया। उसने बे इख़्तियार सा होकर कहा– "मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी कि तुम यहां आकर इस क़िस्म की बातें करोगी। मैं ने सोंचा था कि तन्हाई में आकर तुम शोख़ अदाओं और नाज़ व अन्दाज़ से मुझे दिवाना बना दोगी। तुम्हारे होंठों की वह मुस्कुराहट कहां है जिसने मुझे मजबूर कर दिया था कि तुम्हारे आदमियों से तुम्हारी भीख मांगूं? मैं तुम्हारे एवज अरबी नस्ल के दो घोड़े देने के लिए तैय्यार हूं।"

"अपनी तलवार भी दोगे?" लड़की ने गर्दन ख़म देकर पूछा– "अपनी बरछी, अपनी ढाल और अपना ख़ंजर सभी दे दोगे?"

"हां!" लेकिन वह चुप हो गया। बेचैनी के आलम में बोला– "नहीं। सिपाही अपने हथियारों से दस्तबरदार नहीं हुआ करता। वह ख़ेमें में तेज़ तेज़ कदम उठाकर ज़रा सी टहला और अचानक गुस्से में पूछा– "एक रक़्क़ासा के मुंह से यह बातें मुझे अच्छी नहीं लग रहीं। क्या तुम मुझ से बचना चाहती हो? क्या तुम इस कोशिश में हो कि मैं तुम्हारे जिस्म को हाथ न लगाऊं?"

"हां!" रक़्क़ासा ने कहा– "मैं तुम से अपना जिस्म बचाना चाहती हूं।"

"क्या तुम अपने जिस्म को पाक समझती हो?"

"नहीं।" रक़्क़ासा ने कहा– "मैं अपने जिस्म को नापाक समझती हूं। मैं तुम्हारे जिस्म को नापाक नहीं करना चाहती।" कमाण्डर की अक़्ल में यह बात न पड़ी। वह अहमकों की तरह मुंह खोले हुए रक़्क़ासा को देखने लगा। रक़्क़ासा ने कहा– "कोई बेटी अपने बाप के जिस्म को नापाक नहीं करना चाहती।"

"ओह!" कमाण्डर ने आह भर कर कहा– "मैं बूढ़ा हूं तुम जवान हो।" वह बैठ गया और उसने सर झुका लिया।

रक़्क़ासा ने आगे बढ़कर उसके गाल हाथों मे थाम कर उसका सर ऊपर उठाया और कहा– "इतना मायूस होने की ज़रूरत नहीं। मैं कहीं भाग नहीं चली। तुम्हे कोई धोखा नहीं दे रही। अगर तुम सिर्फ मर्द के रूप में रहना पसन्द करते हो तो मैं रक़्क़ासा और फ़ाहशा बनी रहूंगी। फ़िर मैं कहूंगी कि एक और मर्द से वास्ता पड़ा था जिस पर ख़ुदा ने लानत भेजी थी। मैं तुम्हे बाप के रूप में देख रही हूं। मेरी एक दो बातें सुन लो फिर जो जी में आये करना। मैं पत्थर बन जाऊंगी। तुम उसके साथ खेलते रहना....तुम्हारी बेटी है?"

"एक है।" कमाण्डर ने जवाब दिया।

"उसकी उम्र कितनी है?"

"बारह साल।"

"अगर तुम मर जाओ और तुम्हारी बीवी गुर्बत से तंग आकर तुम्हारी बेटी को नाचने गाने वालों के हाथ फरोख़्त करदे तो तुम्हारी रूह का क्या हश्र होगा?.....इस सहराओं में और इस पहाड़ों में भटकती और चीखती नहीं रहेगी?"

कमाण्डर उसे फटी–फटी नज़रों से देखने लगा। उसके माथे पर पसीने के कई और कतरे फूट आये। रक़्क़ासा ने उसकी आखों को गिरफ़्तार कर लिया।

"ज़रा तसव्वुर में लाओ।" रक़्क़ासा ने कहा– "तुम मर गये हो और तुम्हारी बेटी एक गुनहगार मर्द के साथ ख़ेमे में बैठी है, और वह मर्द कह रहा हे कि शराब लाओ, शराब के बग़ैर औरत बेमज़ा और फीकी होती है।"

कमाण्डर के होंठ थिरके। उसने अचानक गरज कर कहा– "निकल जाओ यहां से, फ़ाहशा, बदकार!"

लड़की ने आह भरी और कहा– "अगर मेरा बाप ज़िन्दा होता तो वह मुझे तुम्हारे ख़ेमे में

देखकर मुझे भी और तुम्हे भी क़त्ल कर देता।" उसके आंसू निकल आये। कमाण्डर उठकर ख़ेमें में टहलने लगा। रक़्क़ासा ने उसकी ज़ेहनी कैफ़ियत और गुस्से को नज़र अन्दाज़ करते हुए कहा– "मैं तुम्हे बूढ़ा जान कर तुम से नफ़रत नहीं कर रही। मैं ने तो ऐसे ज़ईफ़–ऊल–उम्र आदमियों के ख़ेमों में भी रातें गुज़ारी हैं जिन्हें उम्र ने अन्दर से खोखला कर दिया था। वह दौलत से अपनी लाशों में जान डालना चाहते थे....मैं ने तुम्हें इतना बूढ़ा नहीं समझा। बात इतनी सी है कि तुम्हारी शकल व सूरत मेरे बाप से इतनी ज़्यादा मिलती है कि मैं रक़्क़ासा से बेटी बन गयी और मैंने जो बातें तुम्हें कही हैं यह मेरे दिमाग़ में पहले कभी नहीं आयी थीं। मैं सिर्फ़ नाचना और उंगलियों पर नचाना जानती हूं। तुम ज़रा सोंचो सही, मुझ जैसी फ़ाहशा रक़्क़ासा के दिमाग़ में इतनी बातें और ऐसी बातें क्यों आ गयी हैं जिन्होंने सिर्फ़ तुम्हें नहीं मुझे भी हैरान कर दिया है?"

कमाण्डर ने उसकी तरफ़ देखा। उसका गुस्सा बुझ गया था। रक़्क़ासा ने कहा– "मुझे अपने मां बाप का चेहरा और जिस्म अच्छी तरह याद है। मुझे उस के जिस्म की बू भी याद है। तुम्हारी बेटी की उम्र बारह साल है, मेरी उम्र नौ दस साल थी जब वह मर गया। वह मेरे साथ बहुत प्यार करता था। वह मिस्र की फ़ौज में सिपाही था। सलाहुद्दीन अय्यूबी के आने से पहले ही मर गया था। मेरी मां जवान थी और बहुत ग़रीब। उसने मुझे एक आदमी के हवाले कर दिया। उसने मेरे सामने रक़म ली थी और उस आदमी ने मेरी मां से कहा था कि उसकी शादी एक बड़े अच्छे आदमी से करा देगा। मैं रो पड़ी तो मां ने मुझे कहा था यह तुम्हारा चचा है और यह तुम्हारे बाप के पास ले जा रहा है....मैं बारह साल से अपने बाप को ढूंढ रही हूं। उन्होंने वादों पर मुझे नाच सिखाया कि मुझे बाप के पास ले जायेंगे। तो ज़रा बड़ी हुई तो मैं ने हक़ीक़त को क़ुबूल किया कि मेरा बाप मर चुका है। उस वक़्त रक़्स मेरी आदत बन चुका था। मुझे किसी ने मारा पीटा नहीं। मैंने बाप के नाम पर रक़्स की तरबियत ली थी। मेरे उस्ताद और मेरे आक़ा मेरे साथ बहुत अच्छा सलूक करते थे। बहु अच्छे अच्छे खाने खिलाते थे। फिर मैं जवान हो गयी तो मुझे अपनी क़ीमत का अन्दाज़ा हुआ। उस क़ीमत ने मेरे जज़्बात मार दिये और मैं ख़ूबसूरत पत्थर बन गयी, मगर तुम्हे देख कर मरे हुए जज़्बात जाग उठे हैं।" उसके आंसू निकल आये। आह लेकर कहने लगी– "यूं मालूम होता है जैसे मेरे बाप की रूह इस ख़ेमें के इर्द गिर्द घूम फिर रही है। इस ख़ेमें मे आने से पहले मैं ने ऐसा कभी महसूस नहीं किया था। कभी यूं लगता है, जैसे मेरा वजूद मेरे बाप की रूह है जो भटकती फिर रही है।"

"तुम अगर क़ीमती रक़्क़ासा थी तो इन सेहराओं में क्या लेने आई हो?" कमाण्डर ने पूछा।

"मैं उजरत पर आई हूं।" रक़्क़ासा ने जवाब दिया– "मैं इन लोगों को नहीं जानती। दूसरी रक़्क़ासा को भी मैं इससे पहले नहीं जानती थी। मुझे बताया गया था कि सरहद पर जाना है और वहां जिस चौकी वाले ख़्वाहिश करें, उन्हें बिला उजरत नाच गाने से ख़ुश करना है। मुझे उजरत की इतनी ख़ुशी नहीं थी जितनी इस की कि मिस्र की इज्ज़त की हिफ़ाज़त

करने वाले मुजाहिदों का दिल बहलाने जा रही हूं। मेरा बाप भी सिपाही था मैं दिल को धोखा देती हूं कि मेरे रक़्स से मेरे मुजाहिद बाप की रूह भी बहल जाती होगी......मैं एक धोखा हूं। अपने लिए भी दूसरों के लिए भी, लेकिन मैं वतन के मुजाहिदों को नापाक नहीं कर सकती। पिछली चौकी वाले कमाण्डर ने मुझे अपने खेमें मे बुलाया था मैं ने इन्कार कर दिया था। तुम्हारे पास सिर्फ़ इस लिए आई हूं कि तुम्हारे चेहरे मुहरे और कद काठ में मुझे अपना बाप नज़र आया था।"

रक़्क़ासा उसके सामने दो ज़ानू बैठ गयी। कमाण्डर का हाथ अपने हाथों में लेकर आंखों से लगाया फिर चूमा। क़माण्डर ने दूसरा हाथ उसके सर पर रख दिया और पूछा– तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरे आक़ा मुझे बर्क़ कहते हैं।" रक़्क़ासा ने जवाब दिया– "बाप मुझे ज़ोहरा कहा करता था।"

"जाओ ज़ोहरा!" कमाण्डर ने ऐसे प्यार से कहा जिस में शफ़क़त थी।" अपने ख़ेमें में चली जाओ।"

"तुम सो जाओ।" ज़ोहरा ने कहा– "तुम सो जाओगे तो चली जाऊंगी।"

❖

रात गुज़रती जा रही थी। साज़िन्दों में से दो अपने ख़ेमें में जाग रहे थे। दूसरी रक़्क़ासा और बाक़ी साज़िन्दे गहरी नींद सोये हुए थे। जागने वालों में से एक ने दूसरे से कहा– "हमारा तरीक़ा सही मालूम नहीं होता। हम इन लड़कियों को यह कह कर साथ ले आये हैं कि नाच गाने से फ़ौजियों का दिल बहलाने जा रहे हैं। ज़रूरत यह थी कि उन लड़कियों को बता देते कि हमारा असल मक़सद क्या है।"

"किसी रक़्क़ासा पर भरोसा नहीं किया जा सकता।" दूसरे ने कहा– "यह लड़की जो कमाण्डर के ख़ेमें में है, जज़्बात में आकर अलग थलग ईनाम लेकर उसे बता सकती है कि हम सरहदी चौकियों के लिए धोखा और फ़रेब बन कर आये हैं। हमें अपना राज़ किसी रक़्क़ासा को नहीं देना चाहिए। उन दोनों को अपनी उजरत से ग़र्ज़ है। हम उन्हें मुंह मांगी उजरत दे चुके हैं। हमारा काम हो गया है।"

"अगर हमने उसे बता दिया होता कि हमारा मकसद क्या है तो यह लड़की उस कमाण्डर को अच्छी तरह अंधा कर लेती, और यह भी मुम्किन था कि वह उसे इस हद तक फांस लेती कि उसी की मदद से हम हब्शियों को अन्दर ले आते।"

"हमारे उस्ताद हमसे ज़्याद अक़्ल रखते हैं। यह लड़कियां हमारे हथियार हैं। हथियारों को कभी किसी ने हमराज़ नहीं बनाया।"

कमाण्डर के ख़ेमें में यह हालत थी कि कमाण्डर इस इत्मीनान के साथ सो गया था कि रक़्क़ासा ने उसे गुनाह से साफ़ बचा लिया और उसके सीने में बाप को बेदार कर दिया था। रक़्क़ासा उसे बहुत देर देखती रही। कमाण्डर का चेहरा जब रक़्क़ासा के आंसूओं में छुप गया तो वह ख़ेमें से निकल गयी। अपने ख़ेमें में गयी और सो गयी। रात की एक ही साअत रही थी।

जो गुज़र गयी। नाचने गाने वाले जागे तो सूरज ऊपर आ गया था। लड़कियों को मालूम नहीं था कि उन्हें कहां जाना है साज़िन्दे उन्हें अपने साथ ले जाने लगे तो कमाण्डर बाहर खड़ा था। ज़ोहर दौड़कर उस तक गयी और कहा– "मेरे सर पर हाथ रखो।" कमाण्डर ने उसके सर पर हाथ रखा तो ज़ोहरा ने उसका दूसरा हाथ पकड़ कर आंखों से लगाया और वह भींगी आंखों से उससे रुख़सत हुई।

वह दरिया की तरफ़ चले गये। कहीं से दो शुतर सवार आये। वह ऊंटों से उतरे। ऊंटों को बैठाया। दोनों लड़कियों को सवार किया और चल पड़े। यह शुतर सवार उसी गिरोह के अफ़राद थे जो क़रीब ही कहीं उनके इन्तज़ार में छुपे हुए थे। यह गिरोह उस जगह पहुंचा जहां ताजिरों का काफ़िला चार लड़कियों के साथ ख़ेमा ज़न था। यह दोनों गिरोह एक दूसरे को यूं मिले जैसे अजनबी हों। लड़कियां नाचने वाली लड़कियों को मर्दों से अलग दरिया के किनारे ले गयीं। उन का मक़सद यही था कि उन्हें मर्दों से अलग कर दिया जाये। चारों लड़कियों ने ज़ोहरा और उसकी साथी रक़्क़ासा को अपने मुतअल्लिक़ बताया कि वह उन आदमियों की बहू बेटियां हैं और सैर के लिए उनके साथ आई हैं।

उधर मर्दों की मण्डली में असल मिशन पर गुफ़्तगू हो रहीर थी। साज़िन्दों ने अपनी दो रातों की कार गुज़ारी सुनाई। दूसरे गिरोह ने उन्हें बताया कि उनके दो रातों के नाच गाने से कम व बेश एक सौ हब्शी अन्दर गये हैं और उन लड़कियों ने दो सिपाहियों के साथ जो खेल खेला है उससे दो सौ से ज़्याद हब्शी आ गये हैं.....अपनी अपनी कार गुज़ारी सुनाने के बाद उन्होंने यह फ़ैसला किया कि नाच गाने से हब्शियों की ज़्यादा तादाद अन्दर नहीं आ सकती। दरिया का रास्ता ज़्याद बेहतर है। कश्तियों में ज़्यादा आदमी अन्दर आ सकते हैं। इस मक़सद के लिए उन्होंने तय किया कि लड़कियां इन दो सिपाहियों के अलावा दो या चार और गश्ती संतरियों के साथ यही खेल खेलें ताकि हर रात कश्तियां आ सकें। यह फ़ैसला भी हुआ कि ज़ोहरा और उसकी साथी रक़्क़ासा को यहीं कहीं क़रीब रखा जाये लेकिन इस राज़ में शामिल न किया जाये।

साज़िन्दों ने बाद में ज़ोहरा और उसके साथी से कहा कि उनका काम ख़त्म हो चुका है। यह जगह बहुत ख़ूबसूरत है इस लिए चन्द दिन यहीं फ़ारिग़ गुज़ारे जायें। उन्होंने लड़कियों को ऐसे अन्दाज़ से उकसाया कि वे रुक गयीं। दूसरे गिरोह की लड़कियों ने उन्हें अपने साथ बे तकल्लुफ़ कर लिया लेकिन उनके क़याम की जगह ज़रा दूर बनायी....उस रात ज़ोहरा सो न सकी। उसे कमाण्डर याद आ रहा था। उसकी शख़्सियत ज़ोहरा के दिल में उतर गयी थी। एक तो इस लिए कि कमाण्डर में उसे अपने बाप की तस्वीर नज़र आ रही थी और दूसरे इस लिए कि यह पहला मर्द था जिस ने खिलौना समझने की बजाये उसके सर पर हाथ रखा था और तीसरा इसलिए कि कमाण्डर ने उसे ज़ोहरा कहा बर्क़ नहीं कहा था।

उसकी साथी रक़्क़ासा सो गयी थी और उसके गिरोह के साज़िन्दे भी सो गये थे। वह उठी और ख़ेमें से बाहर निकल गयी। उसने रास्ता देखा हुआ था। वह तेज़ तेज़ क़दम उठाती चौकी की तरफ़ चल पड़ी। वह इतनी तेज़ और इतना ज़्यादा चलने की आदी नहीं थी लेकिन

उसके जज़्बात उसे कुव्वत दे रहे थे। वह चौकी तक पहुंच गयी। कमाण्डर के ख़ेमें से वह वाकिफ़ थी। वह खेमें में चली गयी। कमाण्डर गहरी नींद में सो रहा था....उसकी आंख खुल गयी। अंधेरे में उसने हाथ पकड़ लिया जो कोई उसके मुंह पर हाथ फेर रहा था। हाथ छोटा सा था जो मर्दाना नहीं हो सकता था। उसने हड़बड़ा कर पूछा– "कौन हो?"

"ज़ोहरा।"

वह उठ बैठा ज़ोहरा ने कहा– "तुम्हें देखने आई हूं...सो जाओ मैं जा रही हूं।"

कमाण्डर ने दीया जलाया और पूछा वह कहां से आई है। ज़ोहरा ने बताया तो कमाण्डर बाहर निकला। दो घोड़े तैय्यार किये और ज़ोहरा को बाहर ले जाकर एक घोड़े पर उसे सवार कराया। दूसरे पर खुद सवार हुआ और घोड़े चल पड़े। रास्ते में ज़ोहरा जज़्बाती बातें करती रही और कमाण्डर शफ़कत और प्यार से सुनता रहा। अपने ठिकाने से कुछ दूर ही थे कि ज़ोहरा ने उसे रोक कर वापस चले जाने को कहा। कमाण्डर ने उसके सर पर हाथ फेरा और वापस आ गया।

ज़ोहरा जब अपने ठिकाने पर पहुंची तो उसके साथ का एक आदमी जाग रहा था। उसने ज़ोहरा से पूछा वह कहां गयी थी। ज़ोहरा ने बताया कि वह वैसे ही घूमने फिरने निकल गयी थी। उस आदमी ने कुरेदना शुरू कर दिया। उसे शक था। ज़ोहरा नहीं बताना चाहती थी कि वह कहां गयी थी।

"तुम हमारी इजाज़त के बेग़ैर कहीं नहीं जा सकती।" उस आदमी ने हुक्म दिया।

"मैं तुम्हारी ज़र ख़रीद नहीं हूं।" ज़ोहरा ने कहा– "मैं ने जो उजरत ली थी उसके एवज़ का काम पूरा कर चुकी हूं। मैं किसी के हुक्म की पाबन्द नहीं।"

"तुम अपने मालिकों के पास शायद ज़िन्दा नहीं पहुंचना चाहती।" उस आदमी ने कहा– "अब हमसे पूछे बेग़ैर कहीं जाकर देखो।"

❖

दोनों सिपाही अपने गश्त के दौरान दरिया के किनारे जाते रहे। दोनों लड़कियां उन्हें अलग अलग ले जाती और उस दौरान हब्शियों से लदी हुई दो कश्तियां तारीकी में किनारे आ लगतीं और हब्शियों को पहाड़ियों में उगल कर तारीकी में ग़ायब हो जाती। उन चार लड़कियों ने दो और सिपाहियों को "बूढ़े ख़ाविन्दों की नौजवान बीवियां" बन कर और उसके साथ भाग जाने का झांसा देकर अपने जाल में फांस लिया था। पहाड़ी ख़ित्ते में इतने ज़्यादा हब्शी जमा हो चुके थे जो रात के वक़्त सरहदी चौकियों पर हम्ला करके वहां की नफ़री को सोते में आसानी से ख़त्म कर सकते थे, लेकिन उन के कमाण्डरों ने अक़्ल की बात सोची थी। सरहदी चौकियों पर हम्ले की ख़बर काहिरा पहुंच सकती थी। उस का नतीजा यह होता कि काहिरा से फौज आ जाती और सलीबियों की यह स्कीम तबाह हो जाती कि काहिरा पर अचानक और बेख़बरी में हम्ला करेंगे।

पहाड़ियों में हब्शियों की तादाद तेज़ी से बढ़ती जा रही थी और सूडान में सलीबी मुशीरों ने वह सलीबी कमाण्डर जिन्हें कहिरा पर हम्ला करना था मुकर्रर कर दिये। उन्हें चन्द दिनों

बाद मिस्र की सरहद में दाख़िल होकर उन पहाड़ियों मे आना और हम्ले की तैय्यारी करनी थी। सालार अलकंद अभी तक काहिरा में अपने फ़राइज़ सर अन्जाम दे रहा था। उसके किसी हरकत से किसी को शक नहीं होता था कि वह बहुत बड़ी ग़द्दारी का मुरतकिब होने वाला है। उसे रात को घर में पूरी रिपोर्ट मिल जाती थी कि कितने हब्शी गुज़िश्ता रात आ चुके हैं और उनकी तादाद कितनी हो गयी है। हम्ले की क़यादत उसी को करनी थी। उसने प्लान तैय्यार कर लिया था।

हब्शी हज़ारों की तादाद में इकट्ठे हो गये तो उन्होंने अपने मज़हब का मस्ला खड़ा कर दिया। पहले वह आपस में खुसुर फुसूर करते रहे। उनका मुतालबा यह था कि इन्सान की कुर्बानी दी जाये। अलकंद ने वहां जो आदमी भेज रखे थे, उन्होनें उन्हें टालने की कोशिश की लेकिन हब्शी अपने साथ जो मज़हबी पेशवा लाये थे वह टलते नज़र नहीं आते थे। हब्शियों ने उन्हें परेशान करना शुरू कर दिया था कि इन्सान की कुर्बानी दो, वरना वह वापस चले जायेंगे। मज़हबी पेशवाओं से कहा गया कि वह उन्हीं हब्शियों में से किसी को पकड़ कर ज़बह कर दें लेकिन वह कहते थे कि यह कुर्बानी कुबूल नहीं होती। कुर्बानी के लिए उसी ख़ित्ते का इन्सान होना चाहिए जिस पर हम्ला करना है, लड़ने वाले लोग अपनी कुर्बानी नहीं दिया करते।

आख़िर उन्हें कहा गया कि हम्ले से एक दिन पहले मिस्र का एक आदमी उनके हवाले कर दिया जायेगा। हब्शियों के पुरोहित ने कहा— "हमें वह इन्सान अभी चाहिए। हम बहुत दिनों तक उसे ख़ास ग़िज़ा देकर पालेंगे। उस पर अपना ख़ास अमल करेंगे। अपनी इबादत भी करेंगे... और अभी हमें यह हिसाब भी करना है कि कुर्बानी मर्द की देनी है या औरत की या दोनों की।"

उसी रात अलकंद को इत्तलाअ दी गयी कि हब्शी कुर्बानी के लिए इन्सान मांगते हैं। अलकंद ने कहा— "तो इस में सोचने की क्या बात है। कोई आदमी पकड़ो और उनके हवाले करदो।

"लेकिन वह अभी बतायेंगे कि उन्हें एक आदमी चाहिए या एक औरत या दोनों।"

"उनका जो भी मुतालबा है पूरा करो।" अलकंद ने कहा— "चन्द दिनों बाद जब हम काहिरा पर हम्ला करेंगे, तो मालूम नहीं काहिरा के कितने लोग हमारे हाथों मारे जायेंगे। दो को अगर पहले ही मार दोगे तो क्या कयामत आ जायेगी।"

अलकंद गहरी सोंच में गुम हो गया। इतने में एक सलीबी अन्दर आया। उसने मिस्री लिबास पहन रखा था। अन्दर आते ही उसने मस्नूई दाढ़ी उतार कर रख दी। उसने अलकंद से पूछा वह क्यों परेशान नज़र आ रहा है।

"हब्शी अपनी रस्म पूरी करना चाहते हैं।" अलकंद ने जवाब दिया— "वह अभी से इन्सानी कुर्बानी का मुतालबा कर रहे हैं।" "तो आप क्या सोंच रहे हैं?"

" मैं सोंच रहा हूं कि हम्ले से एक दिन पहले एक आदमी उनके हवाले कर देंगे।" अलकंद ने जवाब दिया।

"नहीं।" सलीबी ने कहा– "वह अभी कुर्बानी देना चाहते हैं तो अभी उनकी रस्म पूरी करने का इन्तज़ाम करें। आप सूडान नहीं गये। हम उन के मज़हब के साथ खेल कर उन्हें यहां ला रहे हैं। आप शायद इन्सानों का इस्तकबाल करना नहीं जानते। आप को सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सिर्फ़ लड़ना सिखाया है। इन्सानों को तलवार के बग़ैर मारना हम सलीबियों से सीखें। दूसरों के मज़हब को इस्तेमाल करें। उन पर उन्हीं मज़हब का जुनून ग़ालिब करके उन की अक्ल को अपने हाथों में ले लें। उनका बेहूदा और बे माना रस्मों की मुख़ालिफ़त करने की बजाये उनकी पैरवी करो बल्कि अपने हाथों यह रस्में अदा करो। आम इन्सान का ज़ेहन मज़हब और तौहुम परस्ती से ज़्यादा मुतासिर होता है। हम ने जितने मुसलमानों को अपने साथ मिलाया और सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया है वह मज़हब और तौहुम परस्तीर के हथियारों से किया है। मुसलमान मज़हब के नाम पर जल्दी हमारे जाल में आता है। यह हब्शी तो जंगली हैं। उन्हें हम एक साल से ज़्यादा अर्से से बेवकूफ़ बना रहे हैं। सूडान से रवानगी से पहले हमने दो सूडानियों को पकड़ कर उनके हवाले किया और बताया था कि यह मिस्री हैं। उन्होंने उन्हें ज़िबह किया तब वह मिस्र की तरफ़ रवाना हुए थे।"

"उनसे पूछो कि उन्हें कुर्बानी के लिए मर्द चाहिए या औरत।" अलकंद ने पूछा।

"और आपका वहां चलना बहुत ज़रूरी है।" सलीबी ने कहा– "लेकिन आप को मैं किसी और तरीके से उनके सामने ले जाऊंगा। मैं आप को यकीन दिलाता हूं कि उन हब्शियों से बढ़ कर आपको कोई और वहशी और ख़ूंख़ार जंगजू नहीं मिलेगा।

इस वक़्त उनकी तादाद चार हज़ार के करीब है। अगर हम ने इन पर उनके मज़हब का भूत सवार किये रखा और उन्हें यह यकीन दिलाये रखा कि यह हमारी नहीं उनकी अपनी जंग है तो उनके सिर्फ़ एक हज़ार तमाम फ़ौज को जो काहिरा में है कटी हुई लाशों में बदल देंगे। हम ने उन्हें यह बताया है कि हम उन के ख़ुदा के घर ले जा रहे हैं और यह कि उनके ख़ुदा की ज़मीन पर उन के दुश्मन ने कब्ज़ा कर रखा है।"

"मैं चलूंगा अलकंद ने कहा।

अलकंद मिस्र पर सूडानियों की हुकूमत चाहता था। कुछ अर्सा पहले वह किसी ग़द्दार से इस ख़्वाहिश का इज़हार कर बैठा, तो उसने उसकी ख़्वाहिश को अज़्म बना दिया और उसकी मुलाकात सलीबियों से करा दी थी। सलीबियों ने उस के साथ यह सौदा तय किया था कि मिस्र को दो हिस्सों में तकसीम करके एक हिस्सा उसे दे दिया जायेगा और बाकी निस्फ़ सूडान को जैसा कि कहा जा चुका है कि हब्शियों की फ़ौज का इहतमाम सलीबियों ने किया था। मोअर्रिख़ों ने अलकंद की बग़ावत को तफ़सील से बयान नहीं किया। उस दौर की अज़ीम शख़्सियत काज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने अपनी डायरी .... "सवानेह सलाहुद्दीन सुल्तान यूसूफ पर क्या अफ़ताद पड़ी?" मे तफ़सील से लिखा है कि अलकंद ने सलीबियों और सूडानी लीडरों की मदद से तहज़ीब व तमद्दुन से दूर जानवरों और दरिन्दों की सी जिन्दगी बसर करने वाले हब्शियों पर उनके मज़हब का भूत सवार करके उन पर जंगी जुनून तारी किया और अलकंद ख़ुद को पीर व मुर्शिद बना। हब्शियों को बताया गया कि यह उनके

ख़ुदा का वह एल्ची है जो सदियों से ख़ुदा के पास गया हुआ था (सुल्तान यूसूफ से मुराद सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी है इस मुजाहिद आज़म का पूरा नाम युसूफ सलाहुद्दीन था। काज़ी बहाउद्दीन शद्दाद उसे प्यार और शफ़कत से यूसूफ कहा करता था)।

❖

वह रात तारीक थी। मिस्र का आसमान आईने की तरह शफ़ाफ़ था। सितारे हिरों और सच्चे मोतियों की तरह चमक रहे थे। क़ाहिरा शहर गहरी नींद सोया हुआ था। किसी के वहम व गुमान में भी न था कि चन्द दिनों बाद उनपर क्या क़यामत टूटने वाली है। मिस्र के सरहदी दस्ते भी सोये हुए थे। सिर्फ़ गश्ती संतरी जाग रहे थे लेकिन वह सिर्फ़ जाग रहे थे, बेदार नहीं थे। दरियाए नील के साथ चौकी जो दरियाई रास्ता बन्द करने के लिए बनाई गयी थी और उस से चन्द मील दूर दूसरी चौकी जो पहाड़ियों के इलाके को सर ब मुहर रखने के लिए क़ायम की गयी थी, के गश्ती संतरी चार लड़कियों के हसीन और रूमानी जाल में उलझे हुए थे। लड़कियां उन्हें अलग अलग ले गयी थीं उस रात यह गिरोह बहुत ज़्यादा चौकन्ना था।

ज़ोहरा और उसकी साथी रक़्क़ासा उस गिरोह से कुछ दूर ख़ेमें में सोई हुइ थीं। साज़िन्दे बज़ाहिर सोये हुए थे लेकिन वह बेदार थे। उन्हें बता दिया गया था कि आज की रात बहुत अहम है और वह बेदार रहें। उन दोनों गिरोहों के लिए यह हुक्म था कि कोई बाहर का आदमी दरिया के किनारे और उस पहाड़ी सिलसिले के करीब न आये। कोई आये तो उसे पकड़ कर अन्दर ले आओ।

कुछ देर बाद साज़िन्दा उठा। पहले वह बाहर घूमा फिरा फिर उसने उस छोटे ख़ेमे में झांका जिस में दोनों लड़कियां सोई हुई थीं। अंधेरे में उसे कुछ नज़र न आया। अन्दर जाकर टटोला। उसे कुछ शक हुआ। दीया जला के देखा तो ज़ोहरा ग़ायब थी। दूसरी गहरी नींद सोई हुई थी। साज़िन्दे ने उसे न जगाया। उसे मालूम था कि ज़ोहरा कहां गयी है। वह चौकी के कमाण्डर के पास ही जा सकती थी। उसमें ख़तरा यह था कि कमाण्डर उसके साथ आ गया, तो अपने संतरियों को ग़ायब पाकर उन्हें ढूंढेगा और यह भी हो सकता था कि वह दरिया के किनारे इस जगह भी पहुंच जाये जिस जगह को उस रात बाहर की दुनिया से छिपा कर रखना था... साज़िन्दे ने अपने दो साथियों को जगाया और उन्हें बताया कि उनकी एक लड़की ग़ायब है। वह चौकी पर ही गयी होगी। उन्होंने यह फ़ैसला किया कि दरिया से दूर घात लगायी जाये और अगर कमाण्डर लड़की के साथ वापस आ रहा हो तो दोनों को पकड़ कर अपने कमाण्डर के हवाले कर दिया जाये, और अगर ज़रूरत पड़े तो दोनों को क़त्ल करके लाशें दरिया में फेंक दी जायें।

पहाड़ियों के अन्दर की दुनिया जाग रही थी। यह वसीअ व अरीज़ इलाका था जहां कोई नहीं जाता था। एक इस लिए कि यह जगह दूर दराज़ और रास्तों से हट कर थी और दूसरे इस लिए महशहूर था कि अन्दर फ़िरऔन की भी बद रूहें रहती हैं, और उनकी भी जो फ़िरऔनों के हाथों क़त्ल हुए थे। यह भी मशहूर था कि बद रूहें आपस में लड़ती रहती हैं और अगर कोई इन्सान उस इलाके में चला जाये तो उसके जिस्म का गोश्त ग़ायब हो जाता है

और पीछे हड्डियों का पंजर रह जाता है....यह बताया जा चुका है कि इस पहाड़ी ख़ित्ते के वस्त में फिरऔनों के बहुत बड़े–बड़े बुत पहाड़ियों को तराश कर बनाये गये थे। पहाड़ियों के अन्दर से खोखला करके अन्दर महल जैसे कमरे और गुलाम गर्दिशें बनाई गयी थीं।

उस रात उन ज़मीन दोज़ महल्लात में रौशनी ही रौशनी थी। हज़ारों हब्शी बाहर उस मैदान में जमा थे, जिसे हर तरफ़ से पहाड़ियों ने घेर रखा था। हब्शियों से कहा गया था कि वह ऊंची बात न करें। उन्हें उन का ख़ुदा दिखाया जाने वाला है। हब्शियों पर ख़ौफ़ और अक़ीदत मंदी के जज़्बात सवार थे। डर के मारे वह एक दूसरे के साथ सरगोशी में भी बात नहीं करते थें वह इस पहाड़ियों और चट्टानों से अच्छी तरह वाक़िफ हो चुके थे। उन्हें मालूम था कि जिस पहाड़ी की तरफ़ वह मुंह करके बैठे हैं उस की निस्फ़ बुलंदी पर एक बहुत बड़ा बुत है। यह अबु संबल का बुत था जिस के मुतअल्लिक़ इन हब्शियों को बताया गया था कि उन के ख़ुदा का बुत है और एक रात यह ख़ुदा एक इन्सान के रूप में उनके सामने आएगा।

अचानक ऐसी गरजदार अवाज़ आई जैसे घटायें गरजी हों। हब्शी पहले ही खामोश थे। उस गरज ने उनकी सांसे भी रोक दीं। उसके साथ ही उन्हें एक आ ज़ सुनाई दी– "ख़ुदा जाग रहा है। सामने पहाड़ी पर देखो– ऊपर देखो।" यह आवाज़ बड़ी बुलन्द थी जो पहाड़ियों और चट्टानों के दर्मियान गूंज बन कर कुछ देर सुनाई देती रही। फिज़ा में दो शरारे उड़ते नज़र आये जो सामने वाली पहाड़ी की तरफ़ गये और पहाड़ी से जहां टकराये वहां से एक शोला उठा। अबूसंबल का बुत इस शोले के पीछे और कुछ ऊपर था। शोले की नाचती थिरकती हुई रौशनी बुत के मुहीब चेहरे पर पड़ी तो ऐसे नज़र आने लगा जैसे बुत आंखे झपक रहा हो उसका मुंह खुलता और बन्द होता नज़र आता था और यूं लगता था कि जैसे उस का चेहरा दायें बायें हिल रहा हो।

हब्शियों का यह स्याह काला हुजूम सज्दे में गिर पड़ा। उनके मज़हबी पेशवा सज्दे से उठे। सबने बाज़ू फैला दिये। उनमें जो सबसे बड़ा था उसने बुत से बड़ी ही बुलन्द आवाज़ से कहा–"आग और पानी के ख़ुदा रेगिस्तानों के जलाने और दरियाओं को पानी देने वाले ख़ुदा! हम ने तुझे देख लिया है। हमें बता कि हम तेरे क़दमों में कितने इन्सान क़ुर्बान करें। मर्द लाएं या औरत।"

"एक मर्द एक औरत।" पहाड़ों में से आवाज़ आई– "तुम ने अभी मुझे नहीं देखा। मैं इन्सान के रूप में तुम्हारे सामने आ रहा हूं। अगर तुम ने मेरे दुश्मनों का ख़ून न बहाया तो सब को इन पहाड़ियों के पत्थरों की तरह पत्थर बना दूंगा। फिर तुम धूप में हमेंशा जलते रहोगे। तुम मे से जो लड़ाई से भागेगा उसे सेहरा की रेत चूस लेगी.... इन्तज़ार करो। मेरा इन्तज़ार करो।"

ख़ामोशी और गहरी हो गयी। शोला आहिस्ता आहिस्ता कम होने लगा। पहाड़ियों में से हब्शियों के मज़हबी तराने की आवाज़ आने लगी। यह उनका वह गीत था जो मज़हबी त्योहारों पर इबादत के दौरान गाया करते थे। बहुत से आदमी मिल कर गा रहे थे और साथ दफ़ बज रहे थे। नीचे बैठे हुए हज़ारों हब्शियों ने एक दूसरे की तरफ़ देखा। उनमें से कोई भी नहीं गा

रहा था। यह ग़ैब की आवाज़ मालूम होती थी।

ज़ोहरा चौकी के कमाण्डर के ख़ेमें में थी। उसकी बातें पहले से ज़्यादा जज़्बाती हो गयी थीं। उसने कमाण्डर से कहा– "अगर मैं तुम्हे न देखती तो बाकी उम्र नाचते और दूसरों का दिल बहलाते गुज़ार देती। तुम्हे देखकर मुझे याद आ गया है कि मैं बेटी हूं रक़्क़ासा और फ़ाहशा नहीं। या तुम अपने आप को मार लो ताकि यक़ीन हो जाये कि मेरा बाप मर गया है या मुझे क़त्ल कर दो। अगर यह नहीं कर सकते तो मुझे पनाह में ले लो। अपने घर भेज दो। आज मुझे वापस न जाने दो।"

"तुम आज चली जाओ।" कमाण्डर ने जवाब दिया– "मैं तुम्हे चौकी में नहीं रख सकता। मैं वादा करता हूं कि तुम्हे अपने घर भेजने का इन्तज़ाम कर दूंगा....और अगर तुम यहां से चली गयी तो मुझे क़ाहिरा मे अपना ठिकाना बता दो। वहां आकर तुम्हें ले जाऊंगा।"

थोड़ी देर बाद कमाण्डर नें दो घोड़े तैय्यार किये और ज़ोहरा से कहा कि चलें चलें। दोनों घोड़ों पर सवार हुए और चल पड़े। रास्ते में ज़ोहरा ने कमाण्डर से पूछा– "रात को कश्तियां यहां क्यों आया करती हैं?"

"कश्तियां?" कमाण्डर ने हैरान सा होकर पूछा– "किधर से आती हैं?"

"उधर से।" उसने सूडान की तरफ़ इशारा करके कहा– "मुझे अब रात को नींद कम आती है। आधी रात को उठ कर ख़ेमे से बाहर बैठ जाती हूं। मैंने दो रातें देखा है। एक रात तीन और एक रात दो बादबानी कश्तियां आई। उनके सफेद बादबान अंधेरे में भी नज़र आते थे। आगे जाकर कश्तियां किनारे लगीं। मुझे इस तरह की आवाज़ें सुनाई देती रहीं जैसे उन से बहुत से लोग उतर रहे हों। मुझे कुछ दूर दरख़्तों के पीछे साये से जाते और पहाड़ियों में ग़ायब होते नज़र आये।"

"तुमने हमारे दो सिपाहियों को कभी नहीं देखा?" कमाण्डर ने पूछा– "वह घोड़ों पर सवार होते हैं। उन्हें दरिया के किनारे मौजूद रहना चाहिए।"

"नहीं।" ज़ोहरा ने जवाब दिया– "मैने कभी कोई सिपाही नहीं देखा। दिन के दौरान सिपाही आते हैं। आगे एक काफिला उतरा हुआ है। उनके साथ खाते पीते हैं। एक रोज़ मैंने एक सिपाही को एक लड़की के साथ बेतकल्लुफ़ी से चट्टानों के पीछे जाते देखा था।"

ज़ोहरा को तो इल्म ही नहीं था कि सरहदों पर क्या होता है और क्या हो सकता है और सरहदी दस्तों के फ़राईज़ क्या हैं।

उसे यह भी मालूम नहीं था कि रात को या दिन को सूडान की तरफ़ से कश्तियों को आना चाहिए या नहीं। उसने तो ऐसे ही पूछ लिया था लेकिन कमाण्डर के लिए यह अहम ख़बर थी। ज़ोहरा अगर सही कह रही थी तो वह उसे राज़ की बात बता रही थी। वह बेशक उस ड्यूटी और सहरदी माहौल से उक्ता गया था मगर ज़ोहरा की बातों ने उसे बेदार कर दिया। उसने ज़ोहरा से कहा– "आओ, आज दरिया के किनारे चलते हैं।" उसने घोड़े का रुख़ मोड़ दिया।

वह दरिया तक पहुंचे और दरिया के किनारे के साथ साथ चलने लगे। कमाण्डर की

नज़रें दरिया पर तैर रही थीं। कुछ वक़्त गुज़रा तो उसे दरिया में दूर एक लौ नज़र आई जो दीये की मालूम होती थी। फिर एक और लौ नज़र आई और फिर दोनों रोशनियां बुझ गयीं। इधर किनारे पर भी दीया जला और बुझ गया। कमाण्डर ने उन गश्ती संतरियों को आवाज़ दी जिन्हें वहां गश्त पर होना चाहिए था। उसे कोई जवाब न मिला। उसने और बुलन्द आवाज़ से पुकारा। फिर भी कोई जवाब न मिला। उसने और ज़ोर से पुकारा। उसे अब दरिया में दो कश्तियों के बादबान दिखाई दिये। वह परेशान हो गया। वह ज़ोहरा की मौजूदगी को भूल गया और घोड़े को किनारे के साथ आगे चला दिया। ज़ोहरा भी उसके पीछे गयी। कमाण्डर संतरियों को पुकार रहा था।

संतरियों को उसकी आवाज़ें सुनाई दे रही थीं लेकिन वह दोनों एक दूसरे से अलग अलग चट्टानों की ओट में "बूढ़े ख़ाविन्दों की नौजवान बीवियों" के जाल में फंसे हुए थे। उन्होने अपने कमाण्डर की आवाज़ पहचान ली और वहां से उठे। जब वह वहां जाकर इकठ्ठे हुए जहां वह अपने घोड़े बांध गये थे तो देखा कि दोनों घोड़े गायब हैं। वह वहीं रूके रहे। उन्हें दूर दो घोड़े जाते दिखाई दिये।

कमाण्डर आगे जा रहा था। ज़ोहरा का घोड़ा उसके पहलू में था। उन्हें आवाज़ सुनाई दी– "तुम जिन्हें पुकार रहे हो वह बहुत दूर आगे हैं।"

"तुम कौन हो?" कमाण्डर ने पूछा– "आगे आओ।"

"हम मुसाफ़िर हैं।" उसे जवाब मिला और दो घोड़े कमाण्डर की तरफ़ बढ़ने लगे। फिर एक और आवाज़ आई– "आगे चलें हम आपके साथ चलेंगे।"

कमाण्डर ने तलवार निकाल ली। रात के वक़्त मुसाफ़िरों का घोड़ों पर सवार होना और उस इलाके मे होना मशकूक था। वह दोनों उनके करीब आ गये। एक ने कमाण्डर से कहा– "उधर देखो। वह आ रहे हैं।" ज्योंहि कमाण्डर ने उधर देखा उस आदमी ने एक बाज़ू कमाण्डर की गर्दन के गिर्द लपेट कर बाज़ू का शिकंजा तंग कर दिया और दूसरे हाथ से उसकी तलवार वाली कलाई पकड़ ली। दूसरे ने लड़की को दबोच लिया। कमाण्डर को जिसने पकड़ रखा था, उसने अपने घोड़े को ऐड़ लगा दी। घोड़ा तेज़ चला तो कमाण्डर अपने घोड़े से गिरने लगा। अंधेरे से दो और आदमी दौड़े आये उन्होने कमाण्डर को बेबस कर लिया।

यह साज़िन्दे थे जो दरअसल तरबीयतयाफ़्ता छापामार सिपाही थे। उनमे से दो तीन ज़ोहरा के पीछे गये थे और उन्हें रास्ते में देख कर अंधेरे से फायदा उठाते हुए उनके तआक्कुब में आ रहे थे। संतरियों के घोड़ों पर सवार होकर आने वाले उन के साथी थे। उनमें से किसी ने कहा– "इन्हें ज़िन्दा ले चलो यह हुक्म मिला था कि कोई मुश्तबा आदमी नज़र आये तो उसे ज़िन्दा ले आओ।"

कमाण्डर और ज़ोहरा को जब पहाड़ों की तरफ़ ले जाया जा रहा था तो उन्होंने देखा कि कश्तियों में हब्शी सामान उतार रहे थे। यह जंगी सामान और रस्द थी।

❖

पहाड़ियों में दूर अन्दर हज़ारों हब्शियों का हुजुम अभी तक ख़ामोश बैठा था। शोला कभी का बुझ चुका था। मज़हबी गीत की आवाज़े सुनाई दे रही थीं। हब्शियों पर तिलिस्म तारी था। उनकी जज़्बाती कैफ़ियत कुछ और हुई जा रही थी। वह अपने आप को उन हब्शियों से बरतर समझने लगे थे जो सूडान में रह गये थे...गीत गाने वाले ख़ामोश हो गये। अचानक सामने पहाड़ी पर चमक नज़र आई जैसे बिजली चमकी हो। चमक फिर पैदा हुई जो मुस्तक़िल रौशनी बन गयी। यह रौशनी अबूसंबल के चेहरे पर पड़ रही थी। कुछ पता नहीं चलता था कि रौशनी कहां से आ रही है। यूं लगता था कि जैसे अबूसंबल का चेहरा अपनी रौशनी से रौशन हो गया हो।

रौशनी बुझ गयी। ज़रा दे बाद रौशनी फिर नज़र आई। सब ने देखा कि अबूसंबल के पहाड़ जैसे बुत की गोद में से एक आदमी उतरा और आगे चल पड़ा। बुत के पीछे से चार आदमी नमूदार हुए। सब एक एक सफ़ेद चादर में मलबूस थे जिन्होंने कंधों से पांव तक जिस्म ढांप रखे थे। जो आदमी बुत की गोद से आया था वह कोई बादशाह मालूम होता था। उसके सर पर ताज था और ताज पर एक मस्नूई सांप के फन का साया था। उसका चुग़ा लाल रंग का था। रौशनी जो मालूम नहीं कहां से आ रही थी उस आदमी पर पड़ रही थी। उसके चुग़े पर सितारे थे जो रौशनी में चमकते और टिमटिमाते थे। उस के एक हाथ में बरछी और दूसरे हाथ में तलवार थी, तलवार भी चमकती थी। सफ़ेद चादरों वाले आदमी उसके के पीछे आये।

वह ढलान से उतर रहे थे और रौशनी उन के साथ साथ आ रही थी। अगला आदमी जो बादशाह लगता था रुक गया पीछे वाले चारों आदमियों ने इकट्ठे बड़ी ही बुलन्द आवाज़ में कहा— "ख़ुदा ज़मीन पर उतर आया है। सज्दा करो। उठो और ग़ौर से देखो।" सारा हुजूम सज्दे में गिर पड़ा। सबने सर उठाये और "ख़ुदा" को देखा। उस वक़्त "ख़ुदा" ने तलवार ऊपर उठा ली थी। वह ढलान से उतरने लगा। सन्नाटा ऐसा तारी हो गया जैसे वहां एक भी इन्सान न हो। वह उतरते उतरते ऐसी जगह आ खड़ा हुआ जो बुलन्द थी और हुजूम के करीब यह जगह चौड़ी थी। रौशनी सिर्फ़ उस पर और उन चार आदमियों पर पड़ रही थी जो उसके साथ थे। अचानक उस रौशनी में चार लड़कियां दाख़िल हुईं। उनके लिबास इतने से ही थे कि सिर्फ़ सतर ढांपे हुए थे। उनके जिस्मों के रंग गोरे थे। उनके पीठों पर कंधे से ज़रा नीचे परिन्दों की तरह पर फैले हुए थे। उनके बाल खुले हुए थे। वह यूं हरकत करती थीं जैसे उड़ रही हों। वह रक़्स की अदाओं से उस बादशाह (हब्शियों के ख़ुदा) के इर्द गिर्द घूम कर वहीं कहीं ग़ायब हो गयीं। शायद चट्टान के पीछे उतर गयी थीं।

उस वक़्त चार आदमी कमाण्डर और ज़ोहरा को वहां एक ग़ार में ले गये और एक कमरे में दाख़िल कर दिया। एक आदमी बाहर चला गया। वह वापस आया तो उसके साथ एक और आदमी था। उसे बता दिया गया कि यह चौकी का कमाण्डर है और यह रक़्क़ासा है और उन्हें दरिया के किनारे से उस वक़्त पकड़ा गया है जब कश्तिया सामान और मज़ीद हब्शियों को उतार रही थीं। उस आदमी ने कमाण्डर और ज़ोहरा को देखा। उसके होठों पर मुस्कुराहट

आ गयी। वह एक आदमी को साथ लेकर बाहर निकल आया।

"तुम उन्हें बड़े अच्छे वक़्त पर लाये हो।" उसने कहा– "यह बदबख़्त हब्शी इन्सान की कुर्बानी मांग रहे थे। हम ने अलकंद के कहने पर ख़ुदा की आवाज़ में एलान कर दिया था कि एक मर्द और एक औरत की कुर्बानी दी जायेगी। हमें कहीं से एक मर्द और एक औरत को अग़वा करके उनके हवाले करना था। तुमने हमारा मसला हल कर दिया है। मालूम होता है कि हम कामयाब होंगे। हर काम पूरी कामयाबी से हो रहा है। कुर्बानी के लिए अपने आप ही दो इन्सान आ गये हैं।"

"हब्शियों ने ख़ुदा को देख लिया है?" एक ने पूछा।

"अगर तुम होते तो देखते कि हम ने कैसी उस्तादी से उन्हें ख़ुदा दिखाया है।" उसने जवाब दिया– "बुत के सामने वाली पहाड़ी से जलते हुए फलीते वाले दो तीर चलाये गये तीर अन्दोज़ों ने अंधेरे में ऐसा निशाना बांधा कि सही जगह पर तीर गिरे। हम ने तेल और मादा ज़्यादा जगह फैलाया था। पहले ही दो तीरों ने आग लगादी। एन्डोरसन तजुर्बाकार आदमी है। उसने कहा था कि शोले में बुत हंसता मुस्कुराता और झपकता नज़र आयेगा। यह शोले का करिश्मा था कि ख़ुद हमें यकीन होने लगा था कि बुत न सिर्फ़ आंखों और होठों को हरकत दे रहा है बल्कि उसका चेहरा दायें बायें हरकत कर रहा है।

"और हब्शियों का रद्दे अमल क्या था?"

"सज्दे में गिर पड़े थे।" उसने जवाब दिया– "हमारे आदमियों की आवाज़ बड़ी गूंजदार थी। पहाड़ियों में उनकी गूंज कुछ देर तक सुनाई देती रही। मैं अंधेरे में देख नहीं सका। मुझे यकीन है कि हब्शी ख़ौफ़ से कांप रहे होंगे। अलकंद का नाटक तो बहुत ही कामयाब रहा। शोला बुझा तो हमने उसे पोशाक पहना कर बुत की गोद में बैठा दिया और चार आदमी पहले ही वहां छिपे बैठे थे। बुत पर सामने की पहाड़ी से रौशनी फेंकने का सिलसिला भी कामयाब रहा। साथ वाली पहाड़ी पर जो आग जलाई जा रही थी वह नीचे किसी को नज़र नहीं आई थी। उसके करीब बड़ा आइना रख कर बुत पर अक्स फैंका तो यूं लगता था जैसे यह बुत के चेहरे का नूर है। उसमें से अलकंद ख़ुदा बनके उतरा तो हमारी लड़कियों ने सब को यकीन दिला दिया कि यह ख़ुदा है और वह परियां है। हम किसी कदम पर नाकाम नहीं हुए। अब अलकंद को अन्दर बैठा कर तमाम हब्शियों को उसके सामने से गुज़ारा जायेगा और उन्हें कहा जायेगा कि यह है तुम्हारा 'ख़ुदा' जो जंग में तुम्हारे साथ होगा।

"इन दोनों (कमाण्डर और ज़ोहरा) को आज ही कुर्बान कर देंगे?"

"उसका फ़ैसला हब्शी करेंगे। वह शायद उन्हें तीन चार दिन पाले पोसेंगे और अपनी कुछ रस्में अदा करेंगे।" उन्हें किसी की आवाज़ सुनाई दी– "उसके बग़ैर इस हब्शियों को लड़ाना आसान नहीं था। बहरहाल आप को इस सवांग की बहुत ज़्यादा कीमत मिल रही है– पूरा मिस्र।"

यह अलकंद और उसके साथियों की आवाज़ें थीं। वह करीब आये तो उन दोनों ने बताया कि एक मर्द और एक औरत इत्तफाक से हाथ आ ही गये है। उन्हें हब्शियों के हवाले

किया जा सकता है। अलकंद ने यह न पूछा कि यह दोनों कौन हैं। वह सर से ताज उतार कर उस कमरे में चला गया जहां कमाण्डर और ज़ोहरा को रखा गया था। अलकंद कमाण्डर को पहचान न सका। कमाण्डर ने उसे पहचान लिया। कमाण्डर के कानों में वह बातें भी पड़ी थीं जो बाहर एक आदमी दूसरे आदमी को सुना रहा था। उसने उस के मुंह से कई बार अलकंद का नाम सुना था और उसे यह भी मालूम हो गया कि उसे और ज़ोहरा को कुर्बान किया जायेगा। अलकंद उसके सामने आया तो उसे उस पर हैरत न हुई कि उसका सालार यहां कैसे आ गया है।

अलकंद यह कह कर बाहर निकल गया कि इन दोनों को हब्शियों के पेशवाओं के हवाले कर दो।

❖

तीन चार रोज़ बाद क़ाहिरा में अलआदिल ने अली बिन सुफ़ियान को बुलाया और कहा– "तीन चार दिनों से सालार अलकंद नहीं मिल रहा है। मैं उसे जब भी बुलाता हूं जवाब आता है कि वह नहीं है। उसके घर से भी यही जवाब मिला है। वह कहां जा सकता है?"

"अगर सरहदी दस्तों के मुआइने के लिए सरहद के दौरे पर जाता तो आप से इजाज़त ले कर जाता।" अली बिन सुफ़ियान ने जवाब दिया– "फ़ौरी तौर पर मेरे ज़ेहन में यही आता है कि उसे तख़रीबकारों ने अग़वा या क़त्ल कर दिया होगा।" "यह भी हो सकता है कि वह तख़रीबकारों से ही जा मिला हो" अलआदिल ने कहा।

"कभी ऐसा शक हुआ नहीं था।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "मैं उसके घर से पता कराता हूं।"

वह ख़ुद उसके घर चला गया। अलकंद के बारह बॉडीगार्ड मौजूद थे। उनके कमाण्डर से पूछा गया कि सालार अलकंद कहां हैं? उसने लाइल्मी का इज़हार किया। किसी भी बॉडीगार्ड को मालूम नहीं था। मुलाज़िमा को बाहर बुलाकर कहा गया कि अलकंद की बीवियों से पूछे कि अलकंद कहां गया है। मुलाज़िमा उसे अन्दर ले गयी। कमरे में बैठाया। वह बूढ़ी औरत थी। उसने अली बिन सुफ़ियान से कहा– "इस घर से आप को पता नहीं चलेगा कि सालार कहां चले गये हैं। मैं एक अर्से से यहां जो कुछ देख रही हूं वह बता देती हूं। लेकिन मेरी जान की हिफाज़त आप के ज़िम्मे होगी। अगर मैं मर गयी तो कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा। ख़ाविन्द मुद्दत हुए मर गया था। एक ही बेटा था वह सूडान की लड़ाई में शहीद हो गया है। मैंने यहां नौकरी कर ली। यह लोग मुझे ग़रीब और सीधी सादी औरत समझते रहे। उन्हें मालूम नहीं था कि शहीद की मां इस मुल्क और इस मज़हब के ख़िलाफ़ कोई बात बर्दाशत नहीं कर सकती जिस की ख़ातिर उसने अपना बेटा शहीद कराया हो.....इस घर में मश्कूक से लोग आते रहते हैं। मैंने एक रात एक आदमी को अंदर आते हुए देखा। वह अरबी लिबास में था और उसकी दाढ़ी थी। मुझे अन्दर बुलाकर कहा गया कि मैं शराब लाने का इन्तेज़ाम करूं। शराब एक नई बेगम पिलाया करती है जो मिस्री या अरबी मालूम नहीं होती। मैंने देखा कि दाढ़ी वाला मेहमान दाढ़ी उतार रहा था। उसकी दाढ़ी और मुछें मस्नूई थीं। इससे पहले

भी यहां ऐसे लोग आते रहे हैं जिन पर मुझे शक है कि नेक नीयत लोग नहीं। मेरे कानों में इस किस्म के अल्फ़ाज़ भी पड़े हैं– "आधा मिस्र सूडान का....मिस्र की इमारत....एक ही रात में काम हो जायेगा।" सालार रात को निकले थे। उनके साथ दो अजनबी सूरत आदमी थे। मैंने यह भी देखा था कि सालार ने मुहाफ़िज़ों के क़माण्डर से कुछ बातें की थीं।"

बूढ़ी मुलाज़िमा ने कुछ और बातें बता कर अली बिन सुफ़ियान पर यह साबित कर दिया कि सालार अलकंद को न अग्वा किया गया है न क़त्ल और न ही वह कोई सरकारी ड्यूटी पर गया है। मिस्र में तख़रीबकारी और ग़द्दारी इतनी ज़्यादा हुई थी और हो रही थी कि किसी शरीफ़ इन्सान पर भी शक न करना बहुत बड़ी गल्ती थी। अलकंद ने कभी शक पैदा नहीं होने दिया था लेकिन अली बिन सुफ़ियान बाल की खाल उतारने वाला सुरागरसां था। उसके लिए मुश्किल यह थी कि किसी सालार के रुत्बे के आदमी के घर की तलाशी किसी शहादत के बग़ैर नहीं ले सकता था। उसके लिए मिस्र के कायेमुकाम सुप्रीम कमाण्डर अलआदिल की इजाज़त की ज़रूरत थी। उसने फ़ौरी तौर पर यह कार्रवाई की कि अपने मुहाफ़िज़ को भेज कर अपने शोबे के तीन चार सुरागरसां बुला लिए और उन्हें अलकंद के मकान पर नज़र रखने के लिए इधर उधर छुपा दिया। उन्हें हिदायत यह दी गयी कि कोई मर्द या औरत मकान से बाहर आये तो चोरी छिपे उसका तआक्कुब किया जाये।

बाहर आकर उसने बॉडीगार्ड के कमाण्डर को हुक्म दिया कि अपने और तमाम मुहाफ़िज़ों के हथियार अन्दर रख दो और सब मेरे साथ चलो। बारह आदमियों की गार्ड को निहत्ता करके अली बिन सुफ़ियान अपने साथ ले गया और अल आदिल को तफ़सीली रिपोर्ट दी। अलआदिल ने उसे अलकंद की घर पर छापा मारने की इजाज़ दे दी.... वक़्त ज़ाया किये बग़ैर सिपाहियों की एक टोली बुलाई गयी। इधर अलकंद के घर में कोई और ही सूरत पैदा हो गयी थी। अली बिन सुफ़ियान जब वहां से निकला था तो अलकंद की एक बीवी जो जवान थी मुलाज़िमा को अपने कमरे में ले गयी और उससे पूछा कि अली बिन सुफ़ियान ने उससे क्या पूछा और उसने क्या बताया है। बुढ़िया ने जवाब दिया कि वह सालार के मुतअल्लिक़ पूछ रहा था और मैंने बताया था कि मैं ग़रीब सी मुलाज़िमा हूं मुझे कुछ ख़बर नहीं कि वह कहां हैं।

"तुम्हे बहुत कुछ मालूम है।" बेगम ने कहा– "और तुमने बहुत कुछ बताया है।"

बूढ़िया अपनी बात पर क़ायम रही। बेगम ने एक मुलाज़िम को बुलाया और उसे सारी बात बता कर कहा– "इस नामुराद बुढ़िया की ज़ुबान खोलो। कहती है मैंने कुछ नहीं बताया।"

मुलाज़िम ने बूढ़िया के बाल मुठ्ठी में लेकर मरोड़े और ऐसा झटका दिया कि वह चकरा कर गिरी। मुलाज़िम ने उस की शहे रग पर पांव रख कर दबाया। बूढ़िया की आंखें बाहर निकल आई। मुलाज़िम ने दांत पीस कर कहा– "बता उसे क्या बताया है।" उसने पांव उठा लिया।

बुढ़िया में उठने की हिम्मत कम ही रह गयी थी। वह ख़ामोश रही। मुलाज़िम ने उस की पस्लियों में लात मारी। बूढ़िया तड़पने लगी। उसके बाद मुलाज़िम ने उसे तरह तरह की अज़ीयतें दे दे कर अधमरा कर दिया। तब उसने कहा– "जान से मार डालो। अपने शहीद

बेटे की रूह के साथ गद्दारी नहीं करूंगी। तुम ग़द्दार हो। ईमान फ़रोश की बदकार बीवी हो।"

इसे तहखाने में लेजाकर बन्द कर दो।" बेगम ने कहा–"रात को लाश ग़ायब कर देना। हमारे सर से अभी ख़तरा टला नहीं। वह हमारे मुहाफ़िज़ों को निहत्ता करके अपने साथ ले गया है। इस बदबख़्त बूढ़िया को बहुत कुछ मालूम है। उसे इस राज़ समेत ज़मीन में दबा दो।"

बूढ़िया फ़र्श पर पड़ी थी। उस पर नीम ग़शी की कैफ़ियत तारी थी। मुलाज़िम ने उसे हल्की सी गठरी की तरह उठाकर कंधे पर लिया दिया। कमरे से निकल कर वह बरामदें में जा रहा था कि आवाज़ आई– "रूक जाओ" उसने घूम कर देखा। सिपाही दौड़े आ रहे थे अली बिन सुफ़ियान के हुक्म पर वह सब बिखर कर कमरों और बरामदों वग़ैरह में फैल गये। मुलाज़िम भाग न सका। उसके कंधे से बूढ़िया को उतारा गया। बुढ़िया के मुंह से ख़ून निकल रहा था। उसने आंखें खोलीं– अली बिन सुफ़ियान को देखा तो उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आ गयी। उसने कहा– "इससे पहले मुझे मालूम नहीं था कि इस घर में क्या हो रहा है। तुम आये तो मेरा शक पुख़्ता हो गया कि यह तो गड़बड़ है।" उसकी आवाज़ उखड़ रही थी। उसने बड़ी मुश्किल से बताया नयी बेगम और उसके इस मुलाज़िम ने उससे यह उगलवाने के लिए कि अली बिन सुफ़ियान को क्या बताया है उसे बहुत मारा है।

अली बिन सुफ़ियान ने एक सिपाही से कहा कि बूढ़िया को फ़ौरन तबीब के पास ले जाओ। बूढ़िया ने रोक दिया और कहा– "मुझे कहीं न भेजो। मैं अपने शहीद बेटे के पास जा रही हूं। मुझे न रोको।" और वह हमेशा के लिए ख़ामोश हो गयी।

अलकंद के घर का कोना कोना छान मारा गया तहख़ाने में गये तो यह अस्लहाख़ाना बना हुआ था। घर से सोने के टुकड़ों और नकदी के अंबार बरामद हुए। एक मुहर भी बरामद हुई जिस पर अलकंद का पूरा नाम और उसके साथ "सुल्ताने मिस्र" कुंदा हुआ था। अलकंद को अपनी फ़तह का इतना यकीन था कि उसने अपने नाम की मुहर भी बनवा ली थी। इस मुहर ने शुकूक को यकीन में बदल दिया। अलकंद के घर में छः बीवियां थीं और शराब का ज़ख़ीरा भी था। अलकंद के मुतअल्लिक मशहूर था कि शराब नहीं पीता। अब उस के घर से पता चला कि रात को पिया करता था। अली बिन सुफ़ियान ने उसकी तामम बीवियों से पूछ गछ की तो कारआमद मालूमात हासिल हुई। अहम शहादत नई बेगम की थी जिसने मुलाज़िम के हाथों बूढ़िया को मरवा दिया था। बाकी तमाम बीवियों ने कहा कि सारा राज़ नयी बेगमे के सीने में है। उसके मुतअल्लिक यह भी बताया गया कि उसकी ज़ुबान मिस्री नहीं, सूडानी है और जब बाहर के आदमी आते हैं तो सिर्फ़ यही लड़की उनके साथ उठती बैठती और उनके साथ शराब पीती है। उन बीवियों के अन्दाज़ से पता चलता था कि उन्हें और कुछ भी मालूम नहीं।

नयी बेगम को अलग कर लिया गया। बूढ़िया को मारने वाले मुलाज़िम को अली-बिन सुफ़ियान ने कहा कि वह अब कुछ छुपाने की कोशिश न करे। वह जानता था कि यह कुछ नहीं बतायेगा तो उसका क्या हश्र किया जायेगा। उसने यह कह कर कि वह हुक्म का पाबन्द और

ईनाम व इकराम का तलबगार था, अली बिन सुफ़ियान को बताया गया कि अलकंद का मुसलसल राब्ता सलीबियों और सूडानियों के साथ था और वह उन्हीं के साथ गया है। यह तो हो नहीं सकता था कि एक घरेलू मुलाज़िम को एक सालार के ख़ुफ़िया प्लान का इल्म होता। मुलाज़िम ने बताया कि अलकंद ने जाते हुए कहा था कि बहुत दिनों के बाद आयेगा और जब तक मुम्किन हो सके इस ग़ैर हाज़िरी के मुतअल्लिक़ लाइल्मी का इज़हार करता रहे। मुलाज़िम को यह मालूम नहीं था कि अलकंद कहां गया है।

नयी बेगम को अली बिन सुफ़ियान ने अपने दो आदमियों के साथ मख़सूस तहख़ाने में भेज दिया और ख़ुद कुछ और तफ्तीश करके और अलकंद के घरपर पहरा लगाकर अपने दफ्तर में चला गया जहां अलकंद के बॉडीगार्ड निहत्ते बैठे थे। उन सबको अली बिन सुफ़ियान ने कहा – "तुम मिस्र और शाम के मुत्तहिदा सल्तनत के फ़ौजी हो कुछ छुपाओगे तो उसकी सज़ा मौत है और अगर तुम ने हुक्म की पाबन्दी करते हुए सालार अलकंद की सरगर्मियों पर पर्दा डाले रखा है तो शायद तुम्हें कोई सज़ा न दूं।"

गार्ड का कमाण्डर बोल पड़ा। उसने जो बयान दिया, उससे इस बात की तस्दीक़ हो गयी कि अलकंद के पास सलीबी और सूडानी आते थे और अलकंद ग़द्दारी का मुरतकिब हो रहा था। उन्हें भी यह मालूम नहीं था कि अलकंद कहां गया है।

आधी रात के क़रीब अली बिन सुफ़ियान तहख़ाने में गया। अलकंद की नयी बेगम तंग सी एक कोठरी मे बंद थी। उसे दहशत ज़दा करने के लिए उस कोठरी में एक ऐसे क़ैदी को डाल दिया गया जो मुसलसल अज़ीयतों से तड़पता और कराहता था। वह सलीबियों का जासूस था। अपने साथियों की निशानदेही नहीं करता था। नयी बेगम दोपहर से उसके साथ बन्द थी और उसे तड़पता देख रही थी। अब आधी रात हो गयी थी। वह तो शहज़ादी थी। तहख़ाने और कोठरी की सिर्फ़ बदबू ही उसे पागल करने को काफ़ी थी। उस आदमी की हालत देख देखकर उसका ख़ून ख़ुश्क हो गया था।

अली बिन सुफ़ियान जब उसके सामने गया तो लड़की चीखने चिल्लाने लगी। उसे बाहर निकाल कर अली बिन सुफ़ियान एक और कोठरी के सामने ले गया। सलाख़ों के पीछे तंग कोठरी में एक स्याह काला हब्शी बन्द था। हैबत नाक शकल और जिस्म भैंसे जैसा। उसने सरहदी दस्ते के एक कमाण्डर का क़त्ल किया था। अली बिन सुफ़ियान ने लड़की से कहा कि बाक़ी रात उसे इस के साथ बन्द किया जायेगा। लड़की चीख़ कर अली बिन सुफ़ियान के पांव में गिर पड़ी।

"पूछो मुझसे क्या पूछते हो!" उसने अली बिन सुफ़ियान के पांव से लिपट कर कहा।

"अलकंद कहां है? उसके इरादे क्या हैं? अली बिन सुफ़ियान ने पूछा– "और उसके मुतअल्लिक़ जो कुछ जानती हो बता दो।"

नाज़ूक सी लड़की ने सबकुछ ही बता दिया। उसे भी यह मालूम नहीं था कि अलकंद कहां गया है। उसने बताया कि सूडान से हब्शियों की फ़ौज लाई जा रही है जो किसी रात क़ाहिरा पर हम्ला करके सारे मिस्र पर क़ाबिज़ हो जायेंगी। यह लड़की चूंकि शराब पिलाने

का फ़र्ज़ अदा करती थी, इसलिए अलकंद के घर में आये हुए सलीबी और सूडानी मेहमान इसे अपना समझ कर उसके सामने भी बातें करते रहते थे। यह लड़की सूडान की किसी बड़े आदमी की बेटी थी। उसे अलकंद के लिए तोहफ़े के तौर पर भेजा गया था। अलकंद ने उसके साथ शादी कर ली थी। लड़की बहुत होशियार और तेज़ थी वह सूडान के मक़सद को अच्छी तरह समझती थी। उसके बताने के मुताबिक़ यह सोना और नक़दी जो उसके घर से बरामद हुई थी, सूडान से आई थी। यह जंग के अख़रजात के लिएऔर मिस्र की फ़ौज से ग़द्दार ख़रीदने के लिए थी। इस लड़की को उस मकाम का इल्म नहीं था जहां हब्शियों की बहुत सी फ़ौज आ चुकी थी, उसने बताया कि फौज कहीं दरिया के किनारे है और उसका हम्ला शब ख़ून की किसम का होगा।

जिस कदर मालूमात हासिल की जा सकती थीं कर ली गयीं। अली बिन सुफ़ियान ने अल आदिल को तफ़सीली रिपोर्ट दी और तज्वीज़ पेश की कि दो दो चार चार सिपाही देख भाल के लिए हर तरफ़ फैला दिये जायें जो देखें कि सुडानी फ़ौज का इजतमाअ कहां है और यह भी मालूम किया जाये कि हब्शियों की फ़ौज अगर वाकई अन्दर आ गयी है तो किधर से आई है। उसने यह तज्वीज़ भी पेश की कि सुल्तान को ख़बर न दी जाये क्योंकि वह सिवाये परेशान होने के कोई मदद नहीं कर सकेगा। अल आदिल सुल्तान अय्यूबी को इत्तलाअ देना ज़रूरी समझता था। उसे ख़द्शा था कि हालात ज़्यादा बिगड़ सकते हैं। इस सूरत में सुल्तान अय्यूबी की ज़रूरत पैदा हो सकती है। लिहाज़ा मुकम्मल रिपोर्ट लिखकर एक सीनियर कमाण्डर को चार मुहाफ़िज़ों के साथ दी गयी और उसे यह हुक्म दिया गया कि हर चौकी पर घोड़े तबदील करें और कहीं रुकें नहीं।

❖

मैदाने जंग में सुल्तान अय्यूबी का हैडक्वार्टर किसी एक जगह नहीं रहता था। वह दिन को कहीं और तो रात को कहीं होता और ख़ुद घूमता रहता था लेकिन उसने ऐसा इन्तज़ाम कर रखा था कि उसतक पहुंचते दिक्कत नहीं होती थी जगह जगह रहनुमा मौजूद रहते थे जिन्हें ख़बर पहुंचा दी जाती थी कि सुल्तान कहां हैं। यह एक राज़ होता था, इसलिए रहनुमा ज़हीन किस्म के अफ़राद होते थे जिस दिन तीन दिनों की मुसाफ़त के बाद पैग़ाम ले जाने वाला कमाण्डर चार मुहाफ़िज़ों के साथ दमिश्क पहुंचा उस वक़्त सुल्तान अय्यूबी अलरिस्तान के सिलसिलाए कोह में था। सर्दी का मौसम उरूज पर था। कमाण्डर और उसके मुहाफ़िज़ों की यह हालत थी कि भूख, नींद और मुसलसल सवारी से उनके चेहरे लाशों की तरह सूख गये थे, ज़ुबाने बाहर निकली हुई और सर डोल रहे थे। फिर भी वह फ़ौरन रवाना होने के लिए तैय्यार हो रहे थे। उन्हें जबरदस्ती खिलाया पिलाया गया और अलरिस्ता के लिए रवाना हो गये।

त्रीपोली का सलीबी हुक्मरान रिमाण्ड अल्मलकुस्सालेह की मदद के लिए आया और बग़ैर लड़े वापस चला गया था क्योंकि सुल्तान अय्यूबी ने आगे घात लगाई और अक़्ब से उसकी रस्द रोक ली थी। अक़्ब में भी सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज देखकर रिमाण्ड अपनी फ़ौज

को किसी और तरफ़ से निकाल कर ले गया था। सुल्तान अय्यूबी ने इस का तआक्कुब मुनासिब न समझा क्योंकि इससे वक़्त और ताक़त ज़ाया होती थी। उसने ज़्यादा नफ़री के छापा मार दस्ते रिमाण्ड की रस्द को पकड़ लाने या दूसरी सूरत में तबाह कर देने के लिए भेज दिए। मौसम सरमा की बारिशें भी शुरू हो गयी थीं। सलीबियों की रस्द का क़ाफ़िला बहुत ही बड़ा था। रात के वक़्त रस्द का मुहाफ़िज़ घोड़ा गाड़ियों के नीचे और ख़ेमों में पड़े थे। उन्हें रस्द वापस ले जानी थी। अगली सुबह उन्हे कूच करना था। उन्हें मालूम नहीं था कि दिन के वक़्त पहाड़ियों और चट्टानों की ओट से चन्द आंखें उन्हें देखती रहती थीं। उन्हें ग़ालिबन तवक्क़ो थी कि इतनी सर्दी में और बारिश के दौरान उन पर कोई हम्ला करने नहीं आयेगा।

रात को अचानक उनके कैम्प के एक तरफ़ शोर उठा। शोले भी उठे। खेमे जल रहे थे। यह सुल्तान अय्यूबी के छापामारों का शबख़ून था। उन्होंने पहले छोटी मिन्जनिकों से आतिश गीर माद्दे की हांडी फेंकी, फिर जलते हुए फलीतों वाले तीर चलाये। शोलों की रौशनी में उन्होंने हम्ला कर दिया। बरछियों और तलवारों से बहुत से सलीबियों को ख़त्म कर के छापामार पहाड़ियों में ग़ायब हो गये। कुछ देर तक करीबी चट्टानों से रस्द के कैम्प पर तीर बरसते रहे। उसके बाद छापामारों की दूसरी पार्टी ने हम्ला किया। सुबह तक डेढ़ दो मील के इलाके में फैले हुए कैम्प में रस्द रह गयी थी या लाशें या ऐसे ज़ख़्मी जो चलने के काबिल नहीं थे। बहुत से घोड़ों को सलीबी भगा ले गये थे। बहुत से पीछे भी रह गये थे। छापामारों के शबख़ूनों के दर्मियानी वक़्फ़े में सलीबी कुछ घोड़ा गाड़िया निकाल ले जाने में कामयाब हो गये थे। जो रस्द और घोड़े रह गये थे वह सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज ने क़ब्ज़े में ले लिए।

हलब का मुहासिरा उठा लिया गया था। सुल्तान अय्यूबी इस अहम शहर को एक बार फिर मुहासिरे में लेने के स्कीम बना रहा था। दिन के वक़्त जब छापामारों के कमाण्डर सुल्तान अय्यूबी को गुज़िश्ता रात के शबख़ूनों की रिपोर्ट दे रहा था, दरबान ख़ेमे में दाख़िल हुआ। उसने सुल्तान को इत्तलाअ दी कि क़ाहिरा से एक कमाण्डर पैग़ाम लाया है। पैग़ाम क़ासिद लाया ले जाया करते थे। कमाण्डर का नाम सुनकर सुल्तान अय्यूबी दौड़ कर बाहर आया और उसके मुंह से निकला– "ख़ैरियत?.......तुम क्यों आये हो?"

"पैग़ाम अहम है।" कमाण्डर नेकहा– "ख़ुदाये ज़ुलजलाल से ख़ैरियत की उम्मीद रखनी चाहिए।"

सुल्तान अय्यूबी ने पैग़ाम लिया और कमाण्डर को अन्दर ले गया। उसने पैग़ाम पढ़ा और गहरी सोंच में खो गया।

"अभी यह मालूम नहीं हो सका था कि सूडानियों की फ़ौज मिस्र में दाख़िल होकर कहां ख़ेमा ज़न हुई है।" सुल्तान अय्यूबी ने पूछा।

"देख भाल के दस्ते भेज दिये गये है।" कमाण्डर ने जवाब दिया।

"मुझे तवक्क़ो थी कि मेरी ग़ैर हाज़िरी में कोई न कोई गड़बड़ ज़रूर है।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मेरे भाई (अल आदिल) से कहना कि घबराये नहीं। क़ाहिरा के दिफ़ाअ को

मज़बूत करले लेकिन सिर्फ़ दिफ़ाई लड़ाई न लड़े। ज़्यादा तर दस्ते अपने पास रखे और उन में से जवाबी हम्ले के लिए तजुर्बाकार दस्ते अलग कर ले लेकिन उन्हें शहर में ही रहने दे। फ़ौज की कोई नकल व हरकत न करे ताकि दुश्मन को यह उम्मीद रहे कि वह तुम्हे बेख़बरी में ले लेगा। ज़ाहिर यह करते रहना कि काहिरा की फौज को इल्म नहीं कि काहिरा पर हम्ला होने वाला है। शहर को मुहासिरे में न आने देना। उससे पहले ही जवाबी हम्ला कर देना। कोशिश यह करो कि दुश्मन को हम्ले से पहले ही ढूंढ लो। अगर पता चल जाये कि वह कहां है तो ज़्यादा नफ़री से हम्ला न करना। शब्ख़ून मारना। सरहदी दस्तों की नफ़री ज़्यादा करो ताकि दुश्मन भाग कर न जा सके। मैं हैरान हूं कि इतनी फौज सरहद पर किस तरह आई है। किसी न किसी सरहदी चौकी की मदद या कोताही के बग़ैर यह मुम्किन नहीं हो सकता। अल्लाह तुम्हे कामयाबी अता फ़रमायेगा। दुश्मन रस्द और कुमक के बग़ैर नहीं लड़ेगा। सरहद को मज़बूती से बन्द कर देना। लड़ाई को तूल देना ताकि दुश्मन भूख से मरे। मैं तुम्हे अमलन बता चुका हूं कि दुश्मन को बिखेर कर किस तरह लड़ा जाता है। ज़्याद नफ़री के ख़िलाफ़ ज़्यादा नफ़री से आमने सामने आकर लड़ना कतअन ज़रूरी नहीं......

"मुझे तवक्क़ो नहीं थी कि अलकंद भी ग़द्दार निकलेगा। फिर भी मैं हैरान नहीं। ईमान की निलामी में कोई देर नहीं लगती। बादशाही का सिर्फ़ तसव्वुर ही इन्सान को ईमान से दस्त बरदार होने पर मज़बूर कर देता है। इक़्तेदार का नशा क़ुरआन को बन्द करके अलग रख देता है। मुझे अफ़सोस अलकंद पर नहीं, मैं इस्लाम के मुस्तक़बिल के मुतअल्लिक परेशान हूं। हमारे भाई सलीबियों के हाथों फ़रोख़्त होते जा रहे हैं। इधर मेरे भाई मेरे ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं। मेरा पीरो मुर्शिद नुरुद्दीन ज़ंगी इस दुनिया से उठ गया है। कल परसो हम भी उठ जायेंगे। इस के बाद क्या होगा? यही सवाल मुझे परेशान रखता है। कोशिश करना कि जब तक ज़िन्दा रहो इस्लाम का परचम सर निगों न होने पाये। अल्लाह तुम्हारे साथ है। मुझे बाख़बर रखना।"

उसने पैग़ाम लाने वाले कमाण्डर को बहुत सी हिदायत दे कर रुख़सत कर दिया।

❖

मिस्र की फौज के चन्द एक दस्तों को दो दो चार चार की टोलियों में तक़सीम करके भेज दिया गया कि वह घूम फिर कर दुश्मन के इज्तमाअ को ढूंढें। इस दौरान उस सरहदी चौकी से जिसका कमाण्डर ज़ोहरा के साथ ला पता हो गया था, एक सिपाही ने काहिरा आकर रिपोर्ट दी कि चौकी का कमाण्डर चन्द दिनों से लापता है। सिपाही ने यह न बताया कि उनकी चौकी पर नाच गाना हुआ था और एक रक़्क़ासा कमाण्डर के ख़ेमे में गयी थी। इस इत्तलाअ से शक हुआ कि वह दुश्मन के साथ मिल गया है और उसी की मदद से दुश्मन दरिया के रास्ते आया होगा। फ़ैसला हुआ कि किसी ज़हीन कमाण्डर को उस चौकी पर मुहाफ़िज़ों के एक दस्ते के साथ भेजा जाये।

चौकी का कमाण्डर और ज़ोहरा हब्शियों के क़ब्ज़े में थे लेकिन क़ैद होते हुए भी वह क़ैदी नहीं थे। उन्हें जो लिबास पहनाया गया था वह परिन्दों के रंग बिरंगे परों का बना हुआ था।

जिस कमरे में उन्हें रखा गया था, उसे परों और फूलों से सजाया गया था। उन्हें ख़ास किस्म की ग़िज़ा खिलाई जा रही थी। हब्शियों के मज़हबी पेशवा उन के आगे सज्दे करते और कुछ बड़ बड़ा कर चले जाते थे। किसी और को उन के करीब आने की इजाज़त नहीं थी। एक बार उन्हें दरख़्तों की मज़बूत टहनियों और पत्तों की बनी हुई पालकियों पर उठाकर दरिया में नहलाने के लिए ले जाया गया था। दोनों को मालूम था कि उन्हें ज़िबह किया जायेगा। रात को वह तन्हा होते थे लेकिन बाहर आठ दस हब्शी मौजूद रहते थे। कमाण्डर ने कई बार उठ कर देखा था कि फ़रार की कोई सूरत बन सकती है या नहीं। फ़रार मुम्किन नज़र नहीं आता था।

एक रात हब्शियों के दो मज़हबी पेशवा आये। कमाण्डर और ज़ोहरा सोये हुए थे। उन्हें जगाया गया। वह समझे के उनकी मौत आ पहुंची है। मज़हबी पेशवाओं ने उनके आगे सज्दा किया और दोनों को बाहर ले गये। बाहर पाल्कियां रखी थीं। एक पर कमाण्डर और दूसरे पर ज़ोहरा को बैठाया गया। दोनों हब्शियों ने एक एक पालकी उठा ली। मज़हबी पेशवा आगे आगे चल पड़े। वह दोनों मिलकर कुछ गुनगुनाने लगे। पाल्कियों के पीछे दो और हब्शी थे जिन के पास बरछियां थीं। वह मुहाफ़िज़ थे। कमाण्डर और ज़ोहरा ख़ामोश थे। पहाड़ियों से निकल कर वह लोग दरिया की तरफ़ चल पड़े। कमाण्डर ने देखा कि चांद उफ़क़ से निकल रहा है। उससे उसने अन्दाज़ा किया रात आधी गुज़र गयी है। उस वक़्त से पहले चांद नहीं होता था।

दरिया के किनारे ले जाकर पाल्कियां उतार दी गयीं। मज़हबी पेशवा आगे बढ़कर कमाण्डर और ज़ोहरा का लिबास उतारने लगे। चांद की रौशनी में कमाण्डर ने देखा कि बरछियों वाले दोनों मुहाफ़िज़ और पाल्कियां उठाने वाले दोनों हब्शी उनकी तरफ़ पीठ करके पहलू ब पहलू खड़े हो गये थे। उनके लिए शायद यही हुक्म था। कमाण्डर ने चीते की तरह जुस्त लगाई और एक हब्शी से बरछी छीन ली। वह तजुर्बाकार सिपाही था। उसने पीछे हट कर दूसरे के पहलू में बरछी उतार दी। उस हब्शी की बरछी गिर पड़ी। कमाण्डर ने चिल्ला कर कहा– "ज़ोहर भाग कर आओ और यह बरछी उठा लो!"

ज़ोहरा दौड़ी। कमाण्डर ने गिरी हुई बरछी को ठूड मारा ता वह ज़ोहरा तक पहुंच गयी। कमाण्डर ने कहा– "अब मर्द बन जाओ।" हब्शियों ने ख़ाली मुक़ाबला करने की कोशिश की लेकिन वह बरछियों का मुक़ाबला न कर सके। मज़हबी पेशवा भाग उठे। कमाण्डर ने उन्हें दूर न जाने दिया। ज़ोहरा भी उधर को ही दौड़ पड़ी। दोनों पेशवा ख़त्म हो गये। बाक़ी भी मरने से पहले ज़ोर ज़ोर से कराह और चिल्ला रहे थे। कमाण्डर की बरछी ने सबको ख़ामोश कर दिया और वह चौकी की तरफ़ दौड पड़े। बहुत आगे गये तो उन्हें दो गश्ती संतरी घोड़ों पर सवार नज़र आये। कमाण्डर ने उन्हें पुकार कर कहा जल्दी आगे आओ।

संतरियों ने अपने कमाण्डर को पहचान लिया। कमाण्डर ने उन्हें कहा– "घोड़े हमें दो। हम काहिरा जा रहे हैं। तुम दोनों वापस चौकी में चले जाओ। अगर कोई हमारे तलाश में आये तो कहना तुमने नहीं देखा।"

सिपाही पैदल वापस चले गये। कमाण्डर ने ज़ोहरा को घोड़े पर सवार किया और खुद दूसरे घोड़े पर सवार होकर ज़ोहरा से कहा कि अगर तुम ने कभी घोड़ सवारी नहीं की तो घबराना नहीं। घोड़ा तुम्हे गिरायेगा नहीं। डरना मत। उस ने घोड़े को ऐड़ लगायी। घोड़े सरपट दौड़े और उसके साथ ज़ोहरा ने डर के मारे चीखना शुरू कर दिया। कमाण्डर ने घोड़ा रोक लिया और ज़ोहरा को अपने घोड़े पर अपने पीछे बैठा लिया और दूसरे घोड़े की बागें अपने घोड़े के पीछे बांध कर ज़ोहरा से कहा कि वह उसके कमर के गिर्द बाज़ू डाल ले।

घोड़ा फिर दौड़ पड़ा। कमाण्डर पहाड़ी ख़ित्ते से दूर हटकर चक्कर काट कर जा रहा था। उसे सिम्त और रास्ते का इल्म था। वह अभी दो मील भी नहीं गया होगा कि एक तरफ़ से आवाज़ सुनाई दी-- "ठहर जाओ कौन हो?" कमाण्डर रुका नहीं। बऐक वक़्त चार घोड़े उसके तआक्कुब में दौड़ पड़े। कमाण्डर ने अपने घोड़े की रफ़्तार तेज़ करने की कोशिश की लेकिन उसका घोड़ा थक गया था। उसने कोशिश की कि दूसरे घोड़े को अपने पहलू में करके उसपर सवार हो जाये। वह घोड़ा बेग़ैर वज़न के भाग रहा था इसलिए ज़्यादा थका हुआ नहीं था। मगर ज़ोहरा के साथ भागते घोड़े से दूसरे घोड़े पर सवार होना मुम्किन नहीं था। चांद ऊपर आ गया था जिस से दूर तक नज़र आ सकता था। चारों घोड़े बहुत क़रीब आ गये थे।

दो तीर आये जो कमाण्डर के क़रीब से गुज़र गये। उनके साथ आवाज़ आई-- "अगर न रुके तो अब तीर खोपड़ी में उतर जायेंगे।"

कमाण्डर को मालूम था कि वह रुका भी तो मौत है। यह लोग हब्शियों के हवाले करके आज ही रात जबह कर देंगे। भागते रहने में बच निकलने की सूरत पैदा हो सकती है। उसने घोड़ा दायें बायें घूमा घूमा कर दौड़ाना शुरू कर दिया ताकि तीर निशाने पर न आये। यह उसकी ग़लती थी। उसके तआक्कुब में आने वाले सीधे आ रहे थे जिससे फ़ासिला कम हो गया और वह घेरे में आ गया। उसके जिस्म पर परों का लिबास था जिस से वह परिन्दा लगता था। यही हालत ज़ोहरा की थी। कमाण्डर ने उन चारों को देखा तो उसे कुछ शक हुआ। उनमें से एक ने पूछा-- "तुम कौन हो? यह लड़की कौन है?" दूसरे ने कहा-- "पूछते क्या हो, सूडानी है। यह देखो तो इन्होंने पहन क्या रखा है।" कमाण्डर हस पड़ा और बोला-- "मेरे दोस्तो, मैं तुम्हारी फौज का एक कमाण्डर हूं।" उसने ज़ोहरा का तआर्रुफ़ कराया और सारी वारदात सुना दी।

यह चार सवार देख भाल के किसी दस्ते के थे। वह यही देखते फिर रहे थे कि सूडान की फौज कहां हैं और कहीं है या भी नहीं। वह कमाण्डर और ज़ोहरा को साथ लेकर काहिरा की सिम्त चल पड़े।

❖

बड़ी ही लम्बी मुसाफ़त तय करके वह अगली रात काहिरा पहुंचे। उन्हें सब से पहले अली बिन सुफ़ियान के पास ले जाया गया और रात को ही अल आदिल को जगा कर बताया गया कि चार हज़ार से ज़्यादा हब्शी फौज फ़लां जगह छुपी हुई है और उसकी क़यादत सलार

अलकंद कर रहा है। अल आदिल ने उसी वक़्त अपनी फ़ौज को कूच का हुक्म दे दिया। सुल्तान अय्यूबी के तरीक़ए जंग के मुताबिक़ उसने हरावल में सवार दस्ते रखे, जिन की नफ़री ख़ासी थोड़ी थी। दो हिस्से पहलूओं में पीछे रखे। दर्मियान में अपना हैडक्वार्टर और अपने पीछे ज़्यादा से ज़्यादा दस्ते रिज़र्व में रखे। उसे मालूम था कि वह ख़ित्ता पहाड़ी है। उसने फ़ौज को किले का मुहासिरा करने की तरतीब में रखा और कमाण्डरों को वह जगह समझा कर मुहासिरे की ही हिदायात दी। पहाड़ों पर चढ़ने के लिए उसने छापामार दस्ते अलग से कर लिए जिन्हें उसने अपनी कमान में रखा।

उधर सुबह के वक़्त किसी ने देखा कि मज़हबी पेशवाओं और चार हब्शियों की लाशें दरिया के किनारे पड़ी हैं। अलकंद और उसके सलीबी मुशीरों को इत्तलाअ दी गयी। किसी हब्शी को पता न चलने दिया गया। अलकंद को यह भी बताया गया कि जिस मर्द और औरत को कुर्बानी के लिए रखा गया था वह लापता है। तब अलकंद ने पूछा कि वह आदमी कौन थे। उसे जब बताया गया कि वह उस करीबी चौकी का कमाण्डर था तो वह चौंका। उसे याद आ गया कि उस कमाण्डर ने उसे देखा था।

"वह सीधा काहिरा गया होगा।" अलकंद ने कहा– "उसे चौकी में जाकर देखना और पकड़ना बेकार है। अब एक लम्हा भी ज़ाया नहीं करना चाहिए। हम काहिरा पर बेख़बरी में हल्ला बोलना चाहते थे लेकिन हम ने वक़्त ज़ाया किया। अब हम बेख़बरी में मारे जायेंगे। मैं अपनी फ़ौज को जानता हूं। ख़बर मिलते ही उड़ कर पहुंचेगी....और एक काम फ़ौरन करो।

हब्शियों की लाशें दरिया में बहा दो। अगर हब्शियों को पता चल गया कि उनके मज़हबी पेशवा और उनके मुहाफ़िज़ मारे गये और जिन्हें कुर्बान करना था वह भाग गये हैं तो यह हुजूम काहिरा की बजाये ख़रतूम की तरफ़ चल पड़ेगा।"

फ़ौरन ही एलान कर दिया गया कि दरिया के किनारे कुर्बानी दे दी गयी है। ख़ुदा ने हुक्म दिया है कि मेरे दुश्मनों पर फ़ौरन हम्ला करो.....उनके जो कमाण्डर मुक़र्रर किये गये थे उन्होंने हब्शियों के तादाद के मुताबिक़ अलग–अलग कर लिया।

तीर अन्दाज़ अलग हो गये। जंगी स्कीम के मुताबिक़ उन्हें तरतीब मे कर लिया गया। उन्हें पहाड़ियों के अन्दर से निकाल कर दरिया के किनारे उस जगह के क़रीब गुज़ारा गया जहां हब्शियों का ख़ून बिख़रा हुआ था और पाल्कियां पड़ी थीं। वहां एक आदमी खड़ा एलान कर रहा था– "यह ख़ून उस मर्द और औरत का है जिन्हें कुर्बान किया गया है।"

यह फ़ौज दरिया के किनारे काहिरा की तरफ़ रवाना हुई। हब्शी जंगी तराना गाते जा रहे थे। दिन चलते गुज़र गया रात आई तो पड़ाव किया गया। अगली सुबह फिर कूच हुआ। पहाड़ी ख़ित्ता बहुत पीछे रह गया। यह दिन भी गुज़र गया। और एक और रात आई। हब्शियों मे हड़बुंग मच गयी। बहुत देर बाद ऐसा ही एक और हल्ला आया जो बहुत से हब्शियों को रौंदता कुचलता निकल गया। अलकंद सबसे आगे था। उसे इत्तलाअ दी गयी तो उसने अगले रोज़ की पेशक़दमी रोक दी।

"यह शबख़ून बताते हैं कि हम मिस्री फ ौज के नज़र में आ गये हैं।" उसने सलीबी

और सूडानी कमाण्डरों से कहा– "यह सलाहुद्दीन अय्यूबी का खुसूसी तरीकए जंग है। हम अब आगे नहीं बढ़ सकते। तुम हज़ार जतन करो मिस्री फौज से तुम खुले सेहरा में नहीं लड़ सकते और अब तुम भाग भी नहीं सकते। अब पीछे चलो और पहाड़ियों मे लड़ो। हमारा तमाम तर मन्सूबा नाकाम हो चुका है। काहिरा वाले न सिर्फ बेदार हो गये है। बल्कि उन्होंने फौज भेज दी है।"

"क्या हम सेहरा में मिस्री फौज को ढूंढ कर उससे लड़ नहीं सकते?" एक सलीबी ने कहा।

"अगर तुम लोग सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज को सामने लाकर लड़ा सकते तो आज मिस्र तुम्हारा होता।" अलकंद ने कहा– "मैं उसी फौज का सालार हूं। तुम मुझ से बेहतर नहीं समझते कि इस फौज से कैसे लड़ना है।"

❖

सेहर के वक़्त हब्शियों की फौज वापस चल पड़ी। हर तरफ हब्शियों की लाशे बिखरी हुई थीं। अलकंद ठीक कहता था कि उसकी फौज मिस्री फौज की नज़र में आ गयी है। मिस्री फौज का देख भाल का इन्तज़ाम अलकंद की एक एक हरकत देख रहा था। वह हब्शियों की फौज को पीछे ले चला तो अलआदिल फौरन समझ गया कि अलकंद पहाड़ियों में लड़ना चाहता है। उसने उसी वक़्त सवार तीर अन्दाज़ दस्ते दूर के रास्ते से पहाड़ी ख़ित्ते की तरफ रवाना कर दिये। प्यादा दस्ते भी भेजे गये और उस ने ज़्यादा तर दस्ते अपने पास रोके रखे। उन दस्तों के साथ वह हब्शी फौज से बहुत फासिला रख कर पीछे–पीछे चल पड़ा।

रास्ते मे रात आई हब्शियों का पड़ाव हुआ। रात को अलआदिल के छापामार दस्ते हरकत में आ गये। हब्शियों के एक जैश को बेदार रखा गया था। यह तीर अन्दाज़ थे। उन्होंने बहुत तीर चलाये जिन से कुछ सवार छापामार शहीद हुए लेकिन वह जो नुकसान कर गये वह बहुत ज़्यादा था। सब से बड़ा नुकसान यह था कि हब्शियों का लड़ने का जज़्बा मजरूह हो गया था। वह कुछ और सोच कर आये थे। वह आमने सामने लड़ने के आदी थे मगर यहां दुश्मन उन्हें नज़र नहीं आ रहा था और तबाही बपा कर जाता था। उसके अलावा वह आगे बढ़ते–बढ़ते पीछे हट रहे थे।

अगले दिन हब्शियों ने अपने साथियों की लाशें देखीं और पीछे को चल पड़े.....सूरज गुरूब होने में अभी बहुत देर बाकी थी जब वह पहाड़ी ख़ित्ते में दाख़िल हुए लेकिन अब उन्हें एक जगह जमा नहीं करना था, बल्कि पहाड़ियों के ऊपर, नीचे और दीवारों में लड़ने की तरतीब में रखना था। उन की आधी नफरी पहाड़ियों में पहुंच चुकी थी। जब उन पर बुलंदियों से तीर बरसने लगे। अल आदिल के बर्क़ रफ्तार दस्ते पहले ही वहां पहुंच कर मोर्चा बन्द हो गये थे। हब्शियों के कमाण्डर ने चीख़ चिल्ला कर उन्हें ओट में क्या और तीर अन्दाज़ी का हुक्म दिया। बाकी निस्फ फौज अभी बाहर थी। उसे पीछे हटाया गया। अलकंद ने उस नफरी को पहाड़ियों पर चढ़ाकर आगे जाने और ऊपर से तीर चलाने की चाल चली मगर हब्शी पहाड़ों पर चढ़ने ही वाले थे कि इधर से अलआदिल की फौज जो उनके अक़ब मे जा रही थी

पहुंच गयी।

हब्शियों की ख़ासी नफ़री बुलंदियों पर जाने में कामयाब हो गयी। जहां से हब्शियों ने निहायत कारगर तीर अन्दाज़ी की। अल आदिल को नुक़सान उठाना पड़ा, मगर उसकी स्कीम अच्छी थी। उसने इधर से दस्ते पीछे हटा लिए। उसकी पहली हिदायत के मुताबिक़ दसूरी तरफ़ से तीर अन्दाज़ और दीगर दस्ते पहाड़ी ख़ित्ते की बुलंदियों पर जा रहे थे। सवार दस्तों में एक को दरिया के किनारे भेज दिया गया।

उस्वान के इस सिलसिलाए कोह में ख़ुंरेज़ मार्का लड़ा गया। वादियों और बुलंदियों पर तीर बरस रहे थे। फिर सवार दस्तों को वादियों मे हल्ला बोलने का हुक्म मिला। रात को हब्शी तो दुबक गये लेकिन अल आदिल ने मिन्जनिक़ों के दस्तों को हुक्म दिया कि वह जगह—जगह आतिश गीर मादे की हांडी फैंक कर आग के गोले फेंके। थोड़ी देरे बाद पहाड़ियों की ढलानों पर आग के शोले उठे और हर तरफ़ रौशनी हो गयी। इस रौशनी में रात को भी मार्का जारी रहा। सुबह के वक़्त हब्शी ख़ामोश हो चुके थे। उनमें से कुछ ज़मीन दोज़ महलात में चले गये थे। उन्हें बड़ी मुश्किल से बाहर निकाला गया।

दिन के वक़्त अलकंद की लाश मिल गयी। वह किसी के तीर से या तलवार से नहीं अपनी तलवार से मरा था। उसकी अपनी तलवार उसके दिल के मुक़ाम पर उतरी हुई थी। साफ़ पता चलता था कि उसने ख़ुदकुशी की है। चन्द एक सलीबी और सूडानी कमाण्डर ज़िन्दा पकड़े गये और हब्शियों जंगी क़ैदियों की तादाद एक हज़ार से ज़्यादा थी।

अलआदिल ने वहीं से क़ासिद को सुल्तान अय्यूबी के नाम कामयाबी का पैग़ाम देकर रवाना कर दिया और उसे हुक्म दिया कि बहुत जल्दी सुल्तान तक पहुंचो। वह परेशान होंगे।

❖❖

यह चिराग़ लहू माँगते हैं

आलमे इस्लाम के उसी ख़ित्ते में जहां आज शामी मुसलमान लेबनानी सलीबियों के साथ मिल कर फ़िलिस्तीनी हुर्रीयत पसन्दों को पूरी जंगी कूव्वत से कुचल रहे हैं, वहीं आठ सौ साल पहले बहुत से मुसलमान उमरा और हाकिम और सुल्तान ज़ंगी मरहूम का नौ उम्र बेटा सलीबियों से मदद ले कर सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ सफ़आरा हो गये थे। मुसलमान मुसलमान का ख़ून बहा रहा था। उस वक़्त फ़िलिस्तीन सलीबियों के क़ब्ज़े में था और सुल्तान अय्यूबी क़िब्ला अव्वल के इस ख़ित्ते को कुफ़्फ़ार से आज़ाद कराने का अज़्म लेकर निकला था। सलीबी उस से फ़िलिस्तीन को नहीं बचा सकते थे मगर मुसलमान उसके रास्ते में हाइल हो गये। आज भी फ़िलिस्तीन पर कुफ़्फ़ार का कब्ज़ा है और फ़िलिस्तीनी हुर्रीयत पसन्द जो क़िब्ला अव्वल को आज़ाद कराने के लिए उठे थे, शामी मुसलमानों की तोपों और टैंकों से भस्म किये जा रहे हैं।

मार्च 1175 ई0 मे सुल्तान अय्यूबी उसी ख़ित्ते के अलरिस्तान कोह में किसी जगह अपने हैडक्वार्टर में बैठा अपने मुशीरों और कमाण्डरों के साथ अगले इक़्दाम के मुतअल्लिक़ बातें कर रहा था। जैसाकि पहले बयान किया जा चुका है कि उसने हलब का मुहासिरा इसलिए उठा लिया था कि अल्मलकुस्सालेह ने सलीबी बादशाह रिमाण्ड के साथ जो जंगी मुआहिदा किया था, उसके मुताबिक़ रिमाण्ड सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज पर अक़्ब से हम्ला करने के लिए आ गया था। सुल्तान अय्यूबी ने बर वक़्त मुहासिरा उठा लिया और ऐसी चाल चली कि रिमाण्ड की फ़ौज के अक़्ब में चला गया और रिमाण्ड ने लड़े बग़ैर भाग जाने में आफ़ियत समझी। हलब मुसलमानों का शहर था जो सुल्तान अय्यूबी के दुश्मन मुसलमान उमरा और अल्मलकुस्सालेह का जंगी मरकज़ बन गया था। हलब के मुसलमानों ने ख़लीफ़ा और उमरा के प्रोपेगंडे से मुतासिर होकर सुल्तान अय्यूबी का मुकाबला बे जिगरी से किया था।

वह हलब पर एक बार फिर हम्ला करके ग़द्दारों और ईमान फ़रोशों के इस मरकज़ को ख़त्म करने की स्कीम बना रहा था कि उसे मिस्र से इत्तलाअ मिली कि मिस्र में उसके एक जरनल अलकंद ने सलीबियों की मदद से सूडानी हब्शियों की फ़ौज इस मकसद के लिए तैय्यार कर ली है कि सुल्तान अय्यूबी की ग़ैर हाज़िरी से फ़ायादा उठाते हुए मिस्र पर हम्ला किया जाये और मिस्र की इमारत सुल्तान अय्यूबी से छीन ली जाये लेकिन सुल्तान अय्यूबी के भाई अलआदिल ने हब्शियों को उस्वान के मुक़ाम पर शिकस्त दी और अलकंद ने ख़ुदकुशी कर ली। उसकी इत्तलाअ अभी सुल्तान अय्यूबी तक नहीं पहुंची थी। इसलिए वह अलरिस्तान में परेशान बैठा था।

अज़्मते इस्लाम का यह पासबान हर तरफ़ से ख़तरों से घिरा हुआ था। कई एक मुसलमान उमरा की फौजें उसके ख़िलाफ मुत्तहिद थीं और सलीबियों का ख़तरा अलग था। इन सब के मुकाबले में सुल्तान अय्यूबी के पास बहुत थोड़ी फ़ौज थी। उसने ऐसा इक़्दाम कर दिखाया था जो किसी के वहम व गुमान में न था। उसके दुश्मनों को यह तवक्क़ो थी कि इस पहाड़ी ख़ित्ते में सर्दियों मे कोई जंग की सोंच भी नहीं सकता। पहाड़ियां जो बुलन्द थीं वहां बर्फ पड़ती थी। सुल्तान अय्यूबी ने अपनी फ़ौज को ट्रेनिंग दे कर उस वक़्त हम्ला किया जब सर्दी उरूज पर थी। इस दिलेराना और ग़ैर मुत्वक्क़ा इक़्दाम से उस ने क़लील फ़ौज से सब को ख़ौफ़ज़दा कर दिया और ऐसी पोजीशन हासिल कर ली कि दुश्मन की किसी भी फ़ौज को अपनी पसन्द की जगह घसिट कर लड़ा सकता था। उसकी फ़ौज इतनी थोड़ी थी कि उसे कभी--कभी नाकामी का ख़तरा भी महसूस होने लगता था लेकिन सभी उससे डर रहे थे। उसे यह डर था कि रिमाण्ड स्कीम और रास्ता बदल कर उस पर हम्ला करेगा लेकिन रिमाण्ड की हालत यह थी कि उसने अपने इलाक़े त्रीपोली का दिफ़ाअ उसके डर से मज़बूत कर लिया था कि सुल्तान अय्यूबी हम्ला करेगा।

सुल्तान अय्यूबी ने जिस तरह उसे भगाया था उससे सुल्तान उ .। सूरत में फ़ायदा उठा सकता था कि सलीबियों का तआक़्कुब करता मगर फ़ौज की क़िल्लत ने उसे आगे न जाने दिया और बड़ी वजह यह थी कि मिस्र में अलकंद की बग़ावत ने उसे रोक दिया था। उसे ख़तरा नज़र आ रहा था कि मिस्र के हालात बिगड़ जायेंगे। उस सूरत में उसे मिस्र चले जाना था। वह उस सूरते हाल से डरता था। अगर उसे मिस्र जाना पड़ता तो मुसलमान उमरा आलमे इस्लाम को सलीबियों के हाथ बेच डालते। उसका दारोमदार उस पर था कि मिस्र से उसे क्या इत्तलाअ मिलती है।

अपने मुशीरों और कमाण्डरों से वह मिस्र के मुतअल्लिक ही परेशानी का इज़हार कर रहा था जब उसे इत्तलाअ मिली कि काहिरा से क़ासिद आया है। सुल्तान अय्यूबी ने बादशाहों की तरह यह न कहा कि उसे अन्दर भेज दो। वह उठा और दौड़ता ख़ेमे से बाहर निकल गया। क़ासिद इतने लम्बे सफ़र की थकन से थूर घोड़े से उतर कर ख़ेमें की तरफ़ आ रहा था। सुल्तान अय्यूबी ने घबराहट के लहजे में पूछा– "कोई अच्छी ख़बर लाये हो?"

"बहुत अच्छी सुल्ताने आली मुकाम!" उसने जवाब दिया– "मोहतरम अल आदिल ने हब्शियों के लशकर को उस्वान की पहाड़ियों में ऐसी शिकस्त दी है कि अब सूडान की तरफ़ से लम्बे अर्से तक कोई ख़तरा नहीं रहा।"

सुल्तान अय्यूबी ने दोनों हाथ जोड़ कर आसमान की तरफ़ देखा और ख़ुदा का शुक्रिया अदा किया। ख़ेमे से दूसरे लोग भी बाहर आ गये थे। सुल्तान अय्यूबी ने उन्हें यह ख़ुशख़बरी सुनाई और क़ासिद को ख़ेमें में ले गया। उसके लिए खाना वहीं लाने को कहा और उस से उस्वान के मार्के की तफ़सील सुन कर पूछा– "अपनी फ़ौज की शहादत कितनी है?"

"तीन सौ सताइस शहीद।" क़ासिद ने जवाब दिया– "पांच सौ से कुछ ज़्यादा ज़ख़्मी। दुश्मन का तमाम तर जंगी सामान हमारे हाथ लगा है। एक हज़ार दो सौ दस हब्शी कैदी

पकड़े हैं। सलीबी और सूडानी सरदार और कमाण्डर जो कैद किये गये हैं अलग हैं।" कासिद ने पूछा– "मोहतरम अल आदिल ने पूछा है कि कैदियों के मुतअल्लिक क्या हुक्म है।"

"सलीबी और सूडानी सालारों और कमाण्डरों को कैद ख़ाने मे डाल दो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा और गहरी सोंच में पड़ गया। कुछ देर बाद फिर कहने लगा– "और वह जो एक हज़ार और कुछ हब्शी कैदी हैं उन्हें उस्वान की पहाड़ियों में ले जाओ। वह जिन ग़ारों में छिपे थे वह उनसे पत्थरों से भरवाओ। वहां फ़िरऔनों के जो ज़मीन दोज़ महल हैं उन्हें भी पत्थरों से भरवाओ। यह काम उन हब्शियों से करवाओ। अगर पहाड़ खोदने पड़े तो उन हब्शियों से खुदवाओ। वहां कोई ग़ार और पहाड़ों के अन्दर कोई महल न रहे। अल आदिल से कहना कि कैदियों के साथ इन्सानों जैसा सलूक करना। रोज़ाना उनसे इतना काम लेना जितना एक इन्सान कर सकता है। कोई कैदी भूखा और प्यासा न रहे और किसी पर सिर्फ़ इसलिए तशद्दुद न हो कि वह कैदी है। वहीं उस्वान के करीब खुला कैद ख़ना बनालो और खाने का इन्तज़ाम वहीं करो। उस काम मे कई साल लगेंगे। अगर तुम्हारे सामने और कोई काम हो वह उन कैदियों से करवाओ, और अगर सूडानी अपने कैदियों की वापसी का मुतालबा करें तो मुझे इत्तलाअ देना। ख़ुद उनके साथ सौदा करूंगा।"

इस पैग़ाम के बाद सुल्तान अय्यूबी ने कासिद से कहा– "अल आदिल से कहना कि मुझे कुमक की शदीद ज़रूरत है। अपनी ज़रूरत का भी ख़्याल रखना। भर्ती और तेज़ कर दो। जंगी मश्कें हर वक़्त जारी रखो। जासूसी का जाल और ज़्यादा फैला दो। अगर अलक़ंद जैसा काबिले एअतमाद सालार ग़द्दारी कर सकता है तो तुम भी ग़द्दार हो सकते हो और मैं भी। अब किसी पर भरोसा न करना। अली बिन सुफ़ियान से कहना कि और तेज़ और चौकन्ना हो जाये।"

❖

"मिस्र से कुमक आने तक मैं कोई जारेहाना कार्रवाई न करूं तो बेहतर होगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कासिद को वापस रवाना करके अपने सालारों वग़ैरह से कहा– "अभी हम उन कामयाबियों के दिफ़ाअ में रहें जो हम हासिल कर चुके हैं। अपनी मौजूदा सूरते हाल पर एक नज़र डालो। तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन अपना भाई है। तुम्हारे ताकतवर दुश्मन तीन हैं। हलब में अल्मलकुस्सालेह बैठा है। दूसरा उसका किलादार गुमश्तगीन है जो हरान में फ़ौज तैय्यार किये हुए है, और तीसरा सैफ़ुद्दीन है जो मुसिल का हाकिम है। यह तीनों फ़ौजें इकट्ठी हो गयीं तो हमारे लिए उनका मुकाबला आसान नहीं होगा। रिमाण्ड को तुम ने पस्पा कर दिया है लेकिन वह इस इन्तज़ार में है कि मुसलमान फ़ौजें आपस में उलझ जायें तो वह हमारे अक़्ब में आ जायें। मैं महसूर होकर भी लड़ सकता हूं लेकिन लड़ना चाहूंगा नहीं।"

क्या एक कोशिश और न की जाये कि मलकुस्सालेह, सैफ़ुद्दीन और गुमश्तगीन को इस्लाम और कुरआन का वास्ता देकर राहे रास्त पर लाया जाये?" एक सालार ने कहा।

"नहीं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "जो लोग अपने दिल और दिमाग़ को हक की

आबाज़ के लिए सर बमुहर कर लिया करते हैं, वह ख़ुदा के कहर और अज़ाब के बग़ैर अपने दिल और दिमाग़ नहीं खोला करते। क्या मैं कोशिश कर नहीं चुका? इसके जवाब में मुझे धमकियां मिलीं। अगर अब सुलह और समझौते के लिए एल्ची भेजूंगा तो कहेंगे कि सलाहुद्दी लड़ने से घबराता और डरता है। अब मैं उन पर ख़ुदा का वह अज़ाब और कहर बन कर जाना चाहता हूं जो केदिल और दिमाग़ की मुहरें तोड़ देगा। यह कहर तुम हो और तुम्हारी फ़ौज।" उसने आह भरी और कहा– "तुमने हलब का मुहासिरा किया तो हलब के मुसलमान जिस दिलेरी से लड़े वह तुम कभी नहीं भूलोगे। वह बेशक हमारे ख़िलाफ़ लड़े लेकिन मैं उनकी तारीफ़ करता हूं।

ऐसी बे जिगरी से सिर्फ़ मुसलमान लड़ सकता है। काश यह जज़्बा यह ताक़त इस्लाम के लिए इस्तेमाल होती। तुम जानते हो कि मैं बादशाह नहीं बनना चाहता। मेरा मक़सद यह है कि आलमे इस्लाम मुत्तहिद हो और यह ताक़त जो बिखर गयी है मरकूज़ होकर सलीबी अज़ाइम के ख़िलाफ़ इस्तेमाल हो और फ़िलिस्तीन आज़ाद कराके हम सल्तनते इस्लामिया की तौसीअ करें।"

"हम मायूस नहीं।" एक सालार ने कहा– "नयी भर्ती आ रही है। इस इलाक़े से जवान ख़ासी तादाद में भर्ती हो रहे हैं मिस्र से भी कुमक आ रही है। हम आप की हर तवक्क़ो पूरी करेंगे।"

"लेकिन मैं कब तक ज़िन्दा रहूंगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "तुम कब तक ज़िन्दा रहोगे? सलीबी कुव्वतें ज़ोर पकड़ रही हैं। उन का दायरा वसीअ होता जा रहा है। मेरे वह अज़ीज़ दोस्त जिन पर मुझे भरोसा और एअतमाद था सलीबियों के हाथों में खेले और मेरे हाथों क़त्ल हुए। अलकंद तुम्हारे साथ का मोअतमद सालार था। क्या तुम सुनकर हैरान नहीं हुए कि अलंकद ने सूडान से हब्शियों की फ़ौज बुलाई और मिस्र पर क़ाबिज़ होने की कोशिश की? उसने मुझ पर यह करम किया कि शिकस्त खाकर अपने हाथों अपनी जान ले ली है। मैं ने उसे सज़ाये मौत नहीं दी। हुकूमत का नशा, दौलत और औरत अच्छे –अच्छे इन्सानों को अंधा कर देती है। ईमान में क्या रखा है? ईमान सोने की तरह चमकता नहीं, औरत की तरह अय्याशी का ज़रिआ नहीं बनता और ईमान बादशाह और फ़िरऔन नहीं बनने देता। एक बार रूह के दरवाज़े बन्द कर लो तो ईमान बेकार शै बन जाता है, फिर अक़ल पर पर्दे पड़ जाते हैं.

...

"स्पेन से तुम्हारा परचम क्यों उतरा? तारीख़ कहती है कि कुफ़्फ़ार की साज़िश का नतीजा था मगर उनकी साज़िशें क्यों कामयाब हुईं? क्योंकि ख़ुद मुसलमानों ने अपने आप को कुफ़्फ़ार का आला कार बनाया और उजरत वसूल की। स्पेन उन का था जिन्होंने समुन्दर पार जाकर कश्तियां जला डालीं थी ताकि वापसी का ख़्याल ही दिल से निकल जाये। स्पेन की क़ीमत वही जानते हैं। जिन्होंने यह क़ीमत दी थी। स्पेन शहीदों का था। यह होता आ रहा है और मुझे डर है यही होता चला जायेगा कि ख़ून के नज़राने दे कर मुल्क हासिल करने वाले दुनिया से उठ जाते हैं तो वह लोग बादशाह बन जाते हैं जिन के ख़ून का एक क़तरा भी नहीं

बहा था। उन्हें चूंकि मुल्क मुफ़्त हाथ आ जाता है इसलिए उसे वह अय्याशी का ज़रिआ बनाते हैं और अपने तख़्त व ताज की सलामती के लिए दीन व ईमान वालों और दिल में कौम का दर्द रखने वालों की ज़ुबाने बन्द करते और उन का गला घोंट देते हैं। उन्हें अफ़लास और कानून की चक्की में पीस कर उनके जज़्बों को ख़त्म कर देते हैं.....

स्पेन में यही हुआ। कुफ़्फ़ार ने हमारे बादशाहों को ज़र व जवारात और यूरोप की हसीन लड़कियों से अपने हाथ में लिया। उन्हें उन्हीं की फ़ौज के ख़िलाफ़ किया। मुजाहिदीन को मुजिरम बनाया और स्पेन की इस्लामी मम्लीकत को दीमक खा गयी। हमारे रसूले अकरम सल्ल० के परवानों ने लहू के चिराग़ जलाकर आधी दुनिया को हक़ की आवाज़ से मनव्वर किया। कहां हैं वह चिराग़? एक-एक करके बुझते जा रहे हैं। यह चिराग़ लहू मांगते हैं मगर लहू देने वाले सलीबियों की शराब और औरत के तिलिस्म में गुम हो गये हैं। इन लोगों को यह सल्तनत मुफ़्त हाथ आई है। वह उन शहीदों को भूल चुके हैं जिन के ख़ून के एवज़ ख़ुदा ने कौम को यह सल्तनत अता की थी और ख़ुदा ने यह सल्तनत बादशहियां कायम करने और अय्याशी के लिए अता नहीं की थी, बल्कि इसलिए कि उसे मरकज़ बनाकर इस्लाम का नूर सारी दुनिया में फैलाया जाये और बनी नौअ इन्सान को शर की कुव्वतों से निजात दिलाई जाये मगर शर का जादू चल गया और आज जब किब्ला अव्वल पर कुफ़्फ़ार का कब्ज़ा है हम एक दूसरे का ख़ून बहा रहे हैं।"

"काफ़िर से पहले ग़द्दार का क़त्ल ज़रूरी है।" एक मुशीर ने कहा- "अगर हम हक़ पर हैं तो हम नाकाम नहीं होंगे।"

"मुझे यह नज़र आ रहा है कि यह ख़ित्ता ख़ून में ही डूबा रहेगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा- "हुकूमत शायद मुसलमानों की ही रहे मगर उनके दिल पर सलबियों की हुक्मरानी होगी।"

❖

जंगी नुक़्ताए निगाह से सुल्तान अय्यूबी ने अपनी फ़ौज को ऐसी पोज़ीश्नों में तक़सीम कर रखा था कि किसी भी ऐसे किले पर जो वह फ़तह कर चुका था दुश्मन बराहे रास्त हम्ला नहीं कर सकता था। उन किलों में उस ने मुख़्तसर सी नफ़री रखी थी क्योंकि वह किला बन्द होकर लड़ने का काइल नहीं था। पहाड़ी इलाके में उसने तमाम रास्तों और वादियों की बुलंदियों पर तीर अन्दाज़ बैठा दिये थे। जो रास्ते तंग थे उन के ऊपर पहाड़ियों पर उसने बहुत बड़े-बड़े पत्थर रख कर कुछ आदमी बैठा दिये थे, ताकि दुश्मन गुज़रे तो ऊपर से पत्थर लुढ़का दिये जायें। दमिश्क़ से आने वाले रास्ते को उसने कमाण्डो क़िस्म के गश्ती दस्तों से महफ़ूज़ रखा था ताकि रस्द दुश्मन से महफ़ूज़ रहे। एक जगह ऐसी थी जिसे "हमात के सींग" कहा जाता था यह एक वसीअ वादी थी जिस में एक टीकरी जो ख़ासी बुलन्द थी आगे जाकर सींगों की तरह दो हिस्सों में तक़सीम हो गयी थी। उसे सुल्तान अय्यूबी ने फंदे की हैसियत दे रखी थी। उसने अपने सालारों को टेकनिकी लिहाज़ से समझा दिया था कि दुश्मन बाहर आकर लड़ा तो उसे उस वादी में घसीट कर लड़ाया जायेगा।

सुल्तान अय्यूबी ने तमाम इलाके में ऐसी जगहों पर पोज़िशनें कायम कर ली थीं जिन से वह दुश्मन को किसी भी जगह लाने पर मजबूर कर सकता था। इस इहतमाम के अलावा उसके छापा मार जवान छोटी–छोटी टोलियों में दूर दूर तक घूमते फिरते रहते थे। जासूसी (इन्टलीजेंस) का निज़ाम ऐसा था कि दुश्मन के किलों के अन्दर भी सुल्तान अय्यूबी के जासूस मौजूद थे जो ख़बरें भेजते रहते थे। उसे यहां तक मालूम हो गया था कि सुल्तान के नाम निहाद दावेदार अल्मलकुस्सालेह ने अपने गवर्नर (हरान के किलेदार) गुमश्तगीन को और मुसिल के हाकिम सैफुद्दीन को मदद के लिए बुलाया है और मालूम होता है कि यह दोनो कुछ शर्त के बदले मदद देंगे, सिर्फ़ बुलावे पर नहीं जायेंगे। जासूस ने यह भी बताया था कि यह मुसलमान हुक्मरान और उमरा बज़ाहिर इत्तेहादी हैं लेकिन उन के दिल आपस में फ़टे हुए हैं। हर एक अपनी जंग लड़कर ज़्यादा से ज़्यादा इलाके पर काबिज़ होने की फ़िक्र में है और सलीबी उन्हें मदद कम और शह ज़्यादा दे रहे हैं और उन की बाहमी चपकलिश को हवा भी दे रहे हैं।

"शम्सुद्दीन और शादबख़्त की कोई इत्तेलाअ नहीं आई?" सुल्तान अय्यूबी ने हसन बिन अब्दुल्लाह से पूछा– "कोई ताज़ा इत्तलाअ नहीं।" हसन बिन अब्दुल्लाह ने जवाब दिया– "वह बड़ी कामयाबी से अपना काम कर रहे हैं। गुमश्तगीन ने कोई भी क़दम उठाया यह दोनों सालार अपना पूरा काम करेंगे उनका पैगाम भी यही था कि हालात के मुताबिक़ वह कार्रवाई करेंगे।"

हसन बिन अब्दुल्लाह अय्यूबी की इन्टेलीजेंस का सरबराह था। वह अली बिन सुफ़ियान का नायब था। अली बिन सुफ़ियान मिस्र में था क्यों कि दुश्मन की जासूसी और तख़रीबकारी का सबसे ज़्यादा ख़तरा मिस्र में था। सुल्तान अय्यूबी हसन बिन अब्दुल्लाह के साथ बाहर टहल रहा था। उसने शम्सुद्दीन और शादबख़्त का नाम लिया था। यह दोनों गुमश्तगीन के जरनल थे। गुमश्तगीन के मुतअल्लिक बताया जा चुका है कि शैतान फ़ितरत मुसलमान था। ओहदे और रूत्बे के लिहाज़ से वह गवर्नर था और हरान के किले में मुकीम था। उस किले में और बाहर उसने ख़ासी फ़ौज जमा कर रखी थी। वह ख़िलाफ़त के तेहत था और ख़लीफ़ा के एहकाम का पाबन्द, लेकिन उसने ज़ाती सियासत बाज़ी और चालबाज़ियों से फ़ौजी और सीयासी लिहाज़ से ऐसी पोज़ीशन हासिल कर ली जहां वह किसी को पल्ले नहीं बांधता था। उसने सलीबियों के साथ दरपरदा गठजोड़ कर रखा था। यहां तक कि उसके किले में नुरुद्दीन ज़ंगी के पकड़े हुए सलीबी कैदी थे जिनमें कमाण्डर भी थे। ज़ंगी फ़ौत हो गया तो गुमश्तगीन ने किसी के हुक्म के बेग़ैर तमाम कैदी रिहा कर दिये। उसने यह इक़दाम सलीबियों की ख़ुश्नूदी के लिए किया था क्योंकि वह अब सलबियों के ख़िलाफ़ नहीं बल्कि उनकी मदद हासिल करके सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ने की तैय्यारियां कर रहा था।

उसके दो सालार थे जो ज़ेहानत और जंगी अहलियत की बदौलत उसके मोअतमद थे। यह दोनों भाई थे। एक का नाम शम्सुद्दीन अली और दूसरे का नाम शादबख़्त अली था। यह दोनों हिन्दुस्तानी मुसलमान थे। इराक़ के उस वक़्त के एक मोअर्रिख़ कमालुद्दीन ने अरबी

में "तारीख़े हलब" के नाम से एक किताब लिखी थी। उसने उनका इतना ज़िक्र किया है कि यह दोनों सगे भाई थे और नुरूद्दीन ज़ंगी की ज़िन्दगी में हिन्दुस्तान से उसके पास आये थे। ज़ंगी ने उन्हें फौज में अच्छा रूत्बा दे कर हरान भेज दिया था। काज़ी बहाउद्दीन इब्ने शद्दाद ने भी उनका अपनी डायरी में ज़िक्र किया है। अरब मे चूंकि नाम के साथ बाप का नाम लिखा और बोला जाता है उसलिए उन दोनों भाईयों के नाम तहरीरों में इस तरह के आते हैं– "शम्सुद्दीन अली इब्नुलज़िया और शाद बख़्त इब्नुलज़िया।" यह इशारा कहीं भी नहीं मिलता कि ज़्या कौन था। तारीख़ में उन दोनों का नाम आने का बाइस एक वाक़िआ है जिसे उस दौर के वक़ाअ निगारों ने कलमबन्द किया है।

वाक़िआ इस तरह है क गुमश्तगीन मनमानी का क़ाइल था। हरान मे अमलन उसी की हुकूमत थी। उसने अपने एक ख़ुशामदी और बदतीनयत अफ़सर इब्ने अलख़ाशिब अबुलफ़ज़ल को काज़ी का रूत्बा दे दिया था। इस्लाम के काज़ी इन्साफ़ और दानिश की वजह से मशहूर थे लेकिन अबुलफ़ज़ल बेइन्साफ़ी और गुमश्तगीन की ख़ुश्नूदी की वजह से मशहूर था। उसकी बे इन्साफ़ी के क़िस्से शम्स और शादबख़्त तक भी पहुंचते रहते थे लेकिन वह ख़ामोशी इख़्तियार किये रखते थे। वह फौज के जरनल थे काज़ी के फ़ैसलों और शहरी उमूर के साथ उन का कोई तअल्लुक न था। तबअन भी वह ख़ामोश रहने वाले इन्सान थे। यह मशहूर था कि गुमश्तगीन पर उन का बहुत असर है और यह है भी हक़ीक़त कि उन्होंने गुमश्तगीन पर अपना असर पैदा कर रखा था।

उन दिनों जब सुल्तान अय्यूबी नुरूद्दीन ज़ंगी की वफ़ात के बाद सात सौ सवारों के साथ आया और शाम और मिस्र की वहदत का एलान किया था, उसने अपने बहुत से जासूस इस्लामी इलाक़ों में भेज दिये थे जो ख़िलाफ़त के तेहत होते हुए ज़ाती रियासतों की सूरत इख़्तियार कर गये थे। (इन जासूसों के चन्द एक कारनामें सुनाये जा चुके हैं) उन में सुल्तान अय्यूबी का भेजा हुआ अन्तानून नाम का एक तुर्क जासूस हरान चला गया। वह ख़ूबरू और वजीह जवान था। तुर्की के अलावा वह अरबी ज़ुबान रवानी से बोलता था। उसने गुमश्तगीन तक रसाई हासिल कर ली और यह कहानी सुनाई कि उसका ख़ानदान योरूशलम में आबाद है जो उस वक़्त सलीबियों के कब्ज़े में था। उसने बताया कि सलीबी वहां मुसलमों पर बेरहमी से ज़ुल्म व तशद्दुद करते हैं और बिला वजह जिसे चाहते हैं बेगार पर लगा देते हैं। उन्होंने उसकी दो जवान बहनों को अग़वा कर लिया और उसके भाइयों और बाप को बेगार के लिए पकड़ लिया है। वह फ़रार होकर यहां तक पहुंचा है और सलीबियों से इन्तक़ाम लेने के लिए सलाहुद्दीन अय्यूबी के फौज में शामिल होना चाहता है।

उसने अपना हाल हुलिया बिगाड़ रखा था और पता चलता था कि वह योरूशलम से पैदल आया है और भूख और थकन ने उसे अधमुआ कर रखा है। गुमश्तगीन ने उसे फ़ौजी नज़रों से देखा तो उसका क़द बुत उसे पसन्द आया। उससे पूछा कि वह घोड़सवारी और तीर अन्दाज़ी जानता है या नहीं। उसने कहा कि उसे ज़रा आराम और खाने की ज़रूरत है। उसके बाद दिखायेगा कि वह क्या कर सकता है। गुमश्तगीन ने उसे खिला पिला कर सुला

दिया। वह बहुत देर बाद उठा तो उसे गुमश्तगीन के दरबार में पेश किया गया। बाहर लेजाकर एक बॉडीगार्ड की कमान और एक तीर उसे दे कर कहा गया कि खुद ही कहीं निशाने पर तीर चलाकर दिखाओ फिर घोड़ा दौड़ाओ।

करीब एक दरख़्त था जिस पर परिन्दे बैठे थे। उनमें सबसे छोटा परिन्दा एक चिड़िया थी। उसने उसका निशाना लिया और तीर चिड़िया के जिस्म में उतर कर उसे अपने साथ ही ले गया। उसने एक और तीर मांगा जो लेकर वह घोड़े पर सवार हुआ कि वह करीब आये तो कोई चीज़ उपर फेंकी जाये। वहां गुमश्तगीन के बॉडीगार्ड खड़े थे। एक दौड़ गया और अपने खाने का प्लेट उठा लाया जो मिट्टी की थी। अन्तानून घोड़े को दूर ले गया। वहां से मोड़कर ऐड़ लगाई तो घोड़ा सरपट दौड़ा। अन्तानून ने कमान में तीर डाला। एक बॉडीगार्ड ने प्लेट हवा में उछाली। अन्तानून ने दौंड़ते हुए घोड़े से तीर चलाया और प्लेट के टुकड़े हवा में बिखेर दिये। उसने घोडा मोड़ कर सवारी के कुछ और करतब दिखाये। यह तो किसी को भी न मालूम था कि तजुर्बाकार जासूस और छापामार (कमाण्डो) है और उसे हर एक हथियार के इस्तेमाल और घोड़सवारी का माहिर बनाया गया है।

उसके कद बुत, गठे हुए जिस्म, गोरे चिट्टे रंग और करतब देखकर गुमश्तगीन बहुत मुतास्सिर हुआ और उसे अपने बॉडीगार्ड में रख लिया। दो बॉडीगार्ड्ज़ गुमश्तगीन के घर पर भी ड्यूटी दिया करते थे। कुछ दिनो बाद अन्तानून घरकी ड्यूटी पर गया जहां उसे आठ रातें रहना था। मुसलमान हुक्मरानों की तरह गुमश्तगीन का हरम भी बारौनक था। उसमे बारह चौदह लड़कियां थीं। अन्तानून ने पहले दिन जाकर घरके तमाम दरवाज़ों और कोनों खड्‌डरों को देखा। उसने वहां के तमाम मुलाज़िम मर्दों और औरतों से कहा वह चूंकि घर की हिफ़ाज़त के लिए आया है इसलिए सारे घर से वाकफ़ियत हासिल करना ज़रूरी समझता है। उसने कमरे तक देख डाले। वह बहुत चालाक था। बातों का जादू चलाना जानता था। हरम में जाने की उसे जुर्रत न हुई। एक जवान लड़की उसे बरामदे में मिल गयी। यह भी हरम की मिल्कियत थी। उसने अन्तानून से शहज़ादियों वाले रोब से पूछा कि वह कौन है और यहां क्या कर रहा है?

"मुहाफ़िज़ हूं।" उसने गर्दन तान कर जवाब दिया। लड़की ने कहा– "यह तरीका हमें पसन्द नहीं।"

"यह मेरा फर्ज़ है।" उसने जवाब दिया– "अगर हरम से कोई एक भी हसीना ग़ायब हो गयी तो मोहतरम किलादार उसकी जगह मेरी बहन को उठा लायेंगे।"

"इसका मतलब यह हुआ कि तुम अपनी बहन की हिफ़ज़त के लिए आये हो।" लड़की ने मुस्कुराकर कहा।

"अगर मैं उसकी हिफ़ाज़त कर सकता तो आज एक लड़की से यह न कहलवाता कि तुम कौन हो और यहां क्या कर रहे हो।" उसने चेहरे पर उदासी का तास्सुर पैदा करके कहा– "मैं अपनी बहन की हिफ़ाज़त नहीं कर सका था इसलिए आप की हिफ़ाज़त में पूरी–पूरी एहतियात कर रहा हूं।" उसने आह भर कर कहा–"वह भी आप जैसी थी। बिल्कुल आप

जैसी......मुझे रोकने की कोशिश न करें कि मैं क्या कर रहा हूं।"

उसने अंधेरे में जो तीर चलाया था वह निशाने पर लगा। उसने औरत की जज़्बातीयत पर तीर चलाया था। वह जो जवान लड़की थी। पूछे बेग़ैर न रह सकी कि वह अपनी बहन की हिफ़ाज़त नहीं कर सका तो क्या हुआ था? क्या उसकी बहन अग़्वा हो गयी थी?

"अगर अग़्वा करने वाले मुसमलान होते या वह ख़ुद किसी मुसलमान के साथ घर से भाग जाती तो मुझे इतना अफ़सोस न होता।" उसने कहा– "दिल को यह कह कर तसल्ली दे लेता कि कोई उससे शादी कर लेगा या उसे किसी मुसलमान अमीर के हरम में दे दिया जायेगा। उसे सलीबियों ने अग़्वा किया है। एक नहीं दो बहनों को। मैं उनकी हिफ़ाज़त नहीं कर सका।"

लड़की ने उससे पूछा कि वह कहां से और किस तरह अग़्वा हुई हैं। उसने वही योरूशलम वाली कहानी सुना दी और अपने फ़रार की कहानी ऐसी सनसनीख़ेज़ बनाकर सुनाई कि लड़की का चेहरा बताता था जैसे यह तीर उसके दिल में उतर गया है। उसने कहा– "मैं वहां से पैदल यह इरादा लेकर आया हूं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज में शामिल होकर सिर्फ़ अपनी बहनों का ही नहीं उन तमाम बहनों का इन्तक़ाम लूंगा जिन्हें सलीबियों ने अग़्वा किया है। किलादार ने मुझे अपने मुहाफ़िज़ दस्ते में रख लिया है।" उसने और भी बहुत जज़्बाती बातें की जो लड़की के दिल में उतर गयीं।

अन्तानून अच्छी तरह जानता था कि हरम की लड़कियों के जज़्बात नाज़ूक होते हैं लेकिन अख़्लाक़ी लिहाज़ से वह कमज़ोर होती हैं। वजह साफ़ है। एक आदमी की एक दर्जन या उससे भी अधिक बीवियां हों तो कोई भी दावा नहीं कर सकती कि यह आदमी उसी को चाहता है और जब बीवियां बेग़ैर निकाह के हरम में क़ैद रखी हुई हों तो उन्हें मुहब्बत का इशारा भी नहीं मिलता। जवान लड़की के कुछ जज़्बात भी होते हैं। हरम की जवान लड़की यह भी जानती है कि चन्द साल बाद उसकी क़द्र व क़ीमत ख़त्म हो जायेगी। अन्तानून को मालूम था कि हरम की लड़कियों ने अपने ख़्वाबों और रूमानों को दबा के रखा होता है और वह चोरी छिपे अपने ख़ाविन्द या आक़ा के किसी जवान दोस्त या किसी जवान और ख़ुबरू मुलाज़िम के साथ इश्क़ व मोहब्बत का नशा पूरा कर लेती हैं।

अन्तानून के सामने चूंकि यही लड़की इत्तफ़ाक़ से आ गयी थी उसने उसी के जज़्बात से खेलने की कोशिश की। अपने जासूसी के मक़ासिद के लिए उसे हरम की एक लड़की के सँदोस्ताने की ज़रूरत थी। उसे ट्रेनिंग में बताया गया था कि गुमश्तगीन जैसे अय्याश गवर्नर और उमरा रक़्स और शराब की महफ़िलें जमाते हैं जिन में हरम की लड़कियां भी शरीक होती हैं। शराब और औरत के नशे में इन लोगों की ज़ुबानें बे क़ाबू हो जाती हैं। लिहाज़ा राज़ उन्हीं महफ़िलों और ज़्याफ़तों मे बेनक़ाब होते हैं। अन्तानून और उसके साथी जासूस अली बिन सुफ़ियान के तरबियत याफ़्ता थे और सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उन्हें बे दरीग़ माली और दीगर मुराआत दे रखी थीं।

कोई जासूस दुश्मन के इलाक़े में पकड़ा या मारा जाता था तो सुल्तान अय्यूबी उसके

ख़ानदान को इतना ज़्यादा मुस्तकिल वज़ीफ़ा दिया करता था कि माली लिहाज़ से उसके ख़नदान को किसी की मुहताजी नहीं होती थी।

अन्तानून ने इस लड़की पर ऐसा असर पैदा कर दिया जो उसके चेहरे से अयां था। उसे उम्मीद नज़र आने लगी कि यह लड़की उसके जाल में आ जायेगी। वह वहां से हटने लगा तो लड़की ने उसे दबी ज़ुबन में कहा–

"पिछली तरफ़ एक बाग़ीचा है। रात के दूसरे पहर वहां भी आकर देख लेना। मकान में कोई उधर से भी दाख़िल हो सकता है।" लड़की के होंठों पर जो मुस्कुराहट थी उसने दिल की बात कह दी।

❖

बॉडीगार्ड्ज़ के फ़राइज़ में रात को पहरा देना नही होता था। वह बड़े दरवाज़े के सामने निहायत अच्छे लिबास में चमकती हुई बरछियां थामें नुमाईश के लिए मौजूद रहते थे। और जब बॉडीगार्ड्ज़ अपने आक़ा के साथ हो तो वह उसकी हिफ़ाज़त के ज़िम्मेदार होते थे। उनका असल काम मैदाने जंग में सामने आता था। जब वह अपने आक़ा के साथ–साथ रहते थे। अन्तानून रात के दूसरे पहर बाग़ीचे में चला गया और टहलता रहा। यह मकान महल जैसा था। अन्दर से गाने बजाने और नाचने की आवाज़ें आ रही थीं। अन्तानून ने उन मेहमानों को बड़ी ग़ौर से देखा था जो आये थे। इस में दो तीन सलीबी भी थे। वह बाग़ीचे में कुछ देर टहला तो पिछले दरवाज़े से लड़की निकली और उस के पास आ गयी।

"आप क्यों आई हैं?" अन्तानून ने अन्जान बनकर पूछा।

"और तुम क्यों आये हो?" लड़की ने पूछा।

"आप का हुक्म बजा लाने।" अन्तानून ने जवाब दिया– "आप ने हुक्म दिया था कि रात के दूसरे पहर बाग़ीचे मे आकर देख लेना। कोई इधर से भी दाख़िल हो सकता है।" उसने पूछा– "आप इतनी गर्मागर्म महफ़िल छोड़कर बाहर क्यों आ गयी हैं।"

"वहां दम घुटता है" लड़की ने जवाब दिया– "शराब की बू से मतली आने लगी है।"

"आप शराब की आदी नहीं?"

"नहीं।" लड़की ने जवाब दिया– "मैं यहां की किसी भी चीज़ की आदी नहीं हो सकी.... बैठ जाओ।"" उसने पत्थर के एक बैंच पर बैठते हुए कहा।

"मैं मलका के बराबरी की जुर्रत नहीं कर सकता।" अन्तानून ने कहा– "किसी ने देख लिया तो....."

"देखने वाले शराब में बदमस्त हैं।" लड़की ने कहा – "बैठो और अपने बहनों की बातें सुनाओ।"

अन्तानून ने अपने फ़न के कमालात दिखाने शुरू कर दिये और लड़की उसके क़रीब होती गयी। वह बात को बहनों से फेर कर अपने आप पर ले आई। उसमे जो झिझक थी अन्तानून ने ख़त्म कर दी। यह अन्तानून था जिसने कहा कि उसे अब चले जाना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि क़िलादार लड़की की तलाश के लिए नौकरों को दौड़ा दे और वह पकड़ी जाये।

लड़की ने कहा उसकी ग़ैर हाज़िरी को कोई महसूस नहीं करेगा। वहां लड़कियों की कोई कमी नहीं थी। अन्तानून ने अगली रात फिर मिलने का वादा किया और चला गया। लड़की ने उसे अपने मुतअल्लिक़ जो कुछ बताया था वह यह था कि उसे शराब से नफ़रत है। उसे जिस तरह अय्याशी का ज़रिआ बनाया गया है उससे भी उसे नफ़रत है। वह हलब की रहने वाली थी। उसके बाप के एक दोस्त ने उसे गुमश्तगीन के लिए मुन्तख़ब किया और बराये नाम निकाह पढ़ाकर बाप ने उसे रुख़सत कर दिया था। इसका मतलब यह था कि लड़की प्यार की प्यासी थी।

दूसरी रात उनकी वहीं मुलाक़ात हुई। लड़की अन्तानून के इन्तज़ार में बेहाल हो गयी थी। वह आया तो लड़की ने उसे पहली बात यह कही– "अगर तुम मुझे एक ख़ूबसूरत लड़की समझ कर किसी और नीयत से आये हो तो वापस चले जाओ। मुझे तुम से ऐसी कोई ग़र्ज़ नहीं।"

"जिस रोज़ मैंने बदतमीज़ी का इज़हार किया उस रोज़ मेरे मुंह पर थूक कर अन्दर चली जाना।" अन्तानून ने कहा– "मैं तुम्हे अपनी बहनों जैसी पाकिज़ा समझता हूं।"

"लेकिन मुझे अपनी बहन न कहना।" लड़की ने संजीदगी को मुस्कुराहट में बदल कर कहा– "मालूम नहीं मैं किस वक़्त क्या फ़ैसला कर बैठूं।"

"यानी तुम मेरे साथ कहीं भाग चलने का फ़ैसला करोगी?"

"यह तुम पर मुन्हसिर है।" लड़की ने कहा– " सारी उम्र चोरी छिपे मिलते तो नहीं गुज़रेगी। तुम यहां आठ दस दिनों के लिए आये हो। चले जाओगे तो मैं तुम्हारी सूरत को भी तरसती रहूंगी।"

उस रात वह एक दूसरे के दिल में उतर गये। अगले दिन लड़की इतनी बेक़ाबू हुई कि उसने अन्तानून को दिन के वक़्त अपने कमरे में बुलाया। उस दिन गुमश्तगीन हरान से कहीं बाहर चला गया था। यह मुलाक़ात दोनों के लिए ख़तरनाक थी। लड़की जज़्बात के जादू में भूल गयी थी कि इन महलात में साज़िशें भी होती हैं और हरम की लड़कियां एक दूसरी को ख़ाविन्द के नज़रों में गिराने के मौक़े ढूंढती रहती हैं। अन्तानून की शख़्सियत और उसकी बातों के तिलिस्म ने उसे अंधा कर दिया था। यह मोहब्बत की तिश्नगी का नतीजा था। अन्तानून ने उसे शक तक न होने दिया कि उसे उसके जिस्म के साथ कोई दिल चस्पी है। वह लड़की के लिए सरापा ख़ुलूस और प्यार बन कर गया था। वह जब उस के कमरे से निकला तो लड़की की यह कैफ़ियत थी कि जैसे उसके साथ ही निकल जायेगी। रात के दूसरे पहर उन्हें फिर मिलना था।

वह जब वहां से निकला तो हरम की एक और लड़की उसे देख रही थी। उस लड़की ने उसे कमरे में जाते भी देखा था।

❖

गुमश्तगीन रात को भी ग़ैर हाज़िर था। लड़की बाग़ीचे में चली गयी। अन्तानून भी आ गया। उनके दर्मियान न कोई हिजाब रहा न कोई पर्दा। लड़की ने उसे कहा– "तुमने कहा था

कि तुम अपनी बहनों का इन्तकाम लेने के लिए सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज में शामिल होने आये थे फिर तुम इस फौज मे क्यों भर्ती हो गये?"

"क्या यह सुल्तान की फौज नहीं?" अन्तानून ने ऐसे पूछा कि जैसे उसे कुछ भी न मालूम था। उसने कहा– "यह इस्लामी फौज है और यह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के सिवा और किस की हो सकती है?"

"यह फौज इस्लामी है लेकिन इसे सुल्तान के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए तैय्यार किया जा रहा है।" लड़की ने कहा।

"यह तो बहुत बुरी बात है।" अन्तानून ने कहा– "तुम्हारा क्या ख़्याल है? क्या मुझे ऐसी फ़ौज में रहना चाहिए जो सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए तैय्यार हो रही हो? मैं तुम्हे बताता हूं कि मैं और उन तामम इलाकों में जहां सलीबियों का कब्ज़ा है, मुसलमान सलाहुद्दीन अय्यूबी को इमाम मेहदी भी कहते हैं। वह सलीबियों के मुज़ालिम से ख़ौफ़ज़दा रहते हैं। मस्जिदों में इमाम भी कहते हैं कि यह कौम को गुनाहों की सज़ा मिल रही है। दमिश्क से इमाम मेहदी सलाहुद्दीन अय्यूबी के रूप में निजात दिलाने आ रहा है.... मुझे बताओ मैं क्या करूं?"

"अगर तुम में हिम्मत है तो मुझे साथ लो। यहां से निकलो।" लड़की ने कहा– "मैं तुम्हें सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज तक पहुंचा दूंगी। तुम्हें इस फौज में नहीं रहना चाहिए लेकिन मैं यह नहीं चाहूंगी कि तुम मुझे यहां छोड़ कर भाग जाओ।"

"क्या तुम अपने ख़ाविन्द से इसलिए भागना चाहती हो कि उसने तुम्हें ज़र ख़रीद लौंडी बना रखा है। या वह बूढा है या इसलिए कि वह सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ है?"

"मुझे इस शख़्स से नफ़रत है।" लड़की ने जवाब दिया– "वुजुहात तुमने खुद ही बता दी हैं।" उसने मुझे लौंडियों की तरह हरम में कैद कर रखा है। वह बूढ़ा भी है और नफ़रत की सबसे बड़ी वजह यह है कि सुल्तान अय्यूबी का दुश्मन और सलीबियों का दोस्त है। उसके हरम में आने से पहले जवानी की उमंगों के साथ मेरे दिल में एक और जज़्बा भी था जो मुझे मजबूर करता था कि शादी न करूं और नूरूद्दीन जंगी के पास जाकर कहूं कि मुझे कोई सा जंगी फर्ज़ सौंप दें। मैं सलीब के ख़िलाफ़ लड़ना चाहती थी। मैंने सलाहुद्दीन अय्यूबी का नाम सुन रखा था मैंने तीर अन्दाज़ी सीखी और निशाने पर बरछी फैंकने की भी मश्क की मगर मेरे जज़्बे को इस बदबख़्त के हरम में कैद करके उसे शराब से मार दिया गया। सच पूछो तो मैं इस किले में आई तो ख़ुश थी कि एक जंगजू की बीवी बन के आई हूं और यह जंगजू सलीबियों के ख़िलाफ़ लड़ेगा लेकिन सुल्तान नुरूद्दीन जंगी की वफ़ात के फौरन बाद उसने सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ जंगी तैय्यारियां शुरू कर दीं।"

" यह अभी तक सुल्तान अय्यूबी के मुकाबिले में आया है या नहीं?" अन्तानून ने पूछा।

"मुकाबले आने के लिए तैय्यार है।" लड़की ने जवाब दिया– "लेकिन यह बहुत गहरा आदमी है। ख़लीफ़ा अल्मलकुस्सालेह और उसके दरबारी उमरा का दोस्त है। वह सब सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं। गुमश्तगीन ने उन्हें वादा दे रखा है कि वह उन्हें अपनी फौज

देगा मगर यह सलीबियों के साथ याराना गांठ कर आज़ादाना तौर पर सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ने का इरादा रखता है। उसे उम्मीद है कि वह बहुत से इलाके पर कब्ज़ा कर लेगा। अगर ऐसा हुआ तो वह हरान और मफ़्तुहा इलाकों का बादशाह बन जायेगा।"

"तुमने उसके साथ कभी इस मसले पर बात की है?"

"की थी।" लड़की ने जवाब दिया-- "उसने मेरे दिल में सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ बातें डालने की कोशिश की। मैं सुल्तान अय्यूबी को अपना पीर और पैग़म्बर मानती हूं। गुमश्तगीन की किसी बात ने भी मुझ पर असर न किया तो उसने मेरे साथ तअल्लुक तोड़ लिया। मुझे मारता पीटता भी रहा। उसके बाद उसने मुझे कहा कि तुम सुल्तान अय्यूबी के इलाके में चली जाओ। तुम बहुत ख़ूबसूरत हो और नौजवान भी हो। सुल्तान अय्यूबी के तीन चार सालारों को अपने जाल में फांस कर सुल्तान के ख़िलाफ़ कर दो। उसने यह भी कहा कि तुम्हारे साथ दो बहुत होशियार और बहुत ख़ुबसूरत सलीबी लड़कियां होंगी। तुम तीनों मिल कर पहाड़ों को भी अपना मुरीद बना सकती हो। उसने मुझे तरीके बताये और कहा कि मैं जाकर जासूसी भी करूं, और अगर मैं उसके यह सारे काम कर दूंगी तो वह मेरे ख़ाविन्द को बेअन्दाज़ ज़र व जवाहरात देगा और मुझे आज़ाद करके मेरी पसन्द के आदमी के साथ मेरी शादी कर देगा। मैं ने कोई भी शर्त न मानी।"

"तुम मान लेती।" अन्तानून ने कहा-- "यहां से निकल कर सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास चली जाती।"

"इस मरदूद ने और उसके सलीबी दोस्तों ने ऐसा इन्तज़ाम कर रखा है कि उनके दुश्मनों के इलाके में जाकर कोई लड़की या जासूस ग़द्दारी करे तो उसे अग़वा करके ले आते हैं या वहीं कत्ल कर देते हैं। उनके तअल्लुक हसन बिन सबाह के कातिल फ़िदाइयों के साथ भी है। मेरी रूह मर गयी थी। यह जिस्म रह गया था मैंने यह सोचा था कि ऐसे ही करूं जैसे तुम ने कहा है लेकिन हिम्मत नहीं पड़ती थी। तुम्हें देखा और तुम मेरे करीब आये तो मेरी रूह जाग उठी मैं तुम्हारा एहसान सारी उम्र नहीं भूलूंगी कि तुम ने मुझे अपने दिल में बैठाया लेकिन इतना ही काफ़ी नहीं। आओ यहां से निकल चलें।"

"तुम यहीं, इसी किले में सलीब के ख़िलाफ़ और सुल्तान अय्यूबी के दुश्मनों के ख़िलाफ़ लड़ सकती हो।"

"वह कैसे?"

"जिस तरह तुम्हारा आका गुमश्तगीन तुम्हें सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के इलाके में जासूसी के लिए भेजना चाहता है उसी तरह सुल्तान को भी जासूसों की ज़रूरत है जो यहां रह कर उसे इन लोगों के इरादों और दूसरे राज़ों से आगाह करते रहें।"

"तुम्हें कैसे पता है कि सुल्तान अय्यूबी को जासूसों की ज़रूरत है?" लड़की ने पूछा।

"मैं ख़ुद सुल्तान अय्यूबी का भेजा हुआ जासूस हूं।" अन्तानून ने कहा। लड़की इस तरह चौंकी जैसे उसे किसी ने खंज़र घोंप दिया हो।" क्यों?" तुम हैरान क्यों हो गयी हो? यह सच है। मैं योरुशलम से नहीं, काहिरा से आया हूं। मेरी कोई बहन अग़वा नहीं हुई।"

"तुमने जहां इतने झूठ बोले हैं वहां यह भी झूठ होगा कि तुमने मुझे दिली मोहब्बत दी है।" लड़की ने कहा– "तुम्हारे प्यार और तुम्हारे वादे भी झूठे होंगे।"

"मेरी मोहब्बत का सबूत यह है कि मैंने तुम्हें अपना राज़ दे दिया है।" अन्तानून ने कहा– "यूं समझो कि मैंने अपनी ज़िन्दगी तुम्हारे क़दमों में रख दी है। तुम गुमश्तगीन को मेरी असलीयत बता कर मुझे मरवा सकती हो। कोई जासूस अपना राज़ ज़ाहिर नहीं करता। मुझे तुम्हारे जज़्बे ने और तुम्हारी मोहब्बत ने इतना मजबूर किया कि मैंने अपना आप तुम पर ज़ाहिर कर दिया है।

मोहब्बत को दूसरा सबूत उस वक़्त दूंगा जब यहां से अपना काम करके वापस जाऊंगा। मैं अकेला नहीं जाऊंगा, तुम मेरे साथ होगी, लेकिन एक बात साफ़–साफ़ सुन लो। अगर तुम्हारी मोहब्बत और मेरा फर्ज़ इकठ्ठे मेरे सामने आ गये और ख़ुदा ने मेरा इम्तेहान लेना चाहा कि मैं किसे पसन्द करता हूं तो मैं फर्ज़ का इन्तख़ाब करूंगा। तुम्हारी मोहब्बत को कुर्बान कर दूंगा।

धोखा नहीं दूंगा। तुम नहीं जानती कि जासूस से उसका फर्ज़ कैसी–कैसी कुर्बानियां मांगता है। सिपाही मैदाने जंग मे लड़ता है और मरता है। उसके दोस्त उसकी लाशें घर ले जाते हैं और बड़ी इज्ज़त से दफ़्न करते हैं। जासूस मारा नहीं पकड़ा जाता है। दुश्मन उसे क़ैद खाने में लेजाकर ऐसी–ऐसी अज़ीयतें देता है जो तुम सुनकर ही बेहोश हो जाओ।

जासूस मरता भी नहीं जिन्दा भी नहीं रहता। जासूस के लिए फ़ौलाद जैसे मज़बूत ईमान की ज़रूरत होती है। मैं ऐसा ही ईमान लेकर आया हूं। तुम से मोहब्बत की है तो फ़ौलाद की तरह मज़बूत रहूंगा मगर ईमान का हुक्म नहीं टाल सकूंगा।"

लड़की ने उसका हाथ अपने दोनों हाथों में ले लिया और घूम कर अपने मुंह पर फेरा। उसने कहा तुम मुझे भी उतना ही मज़बूत पाओगे। बताओ मैं क्या करूं।"

अन्तानून ने उसे बताना शुरू कर दिया कि वह क्या करे। उसके लिए ज़रूरी हिदायत यह थी कि वह गाने बजाने और पीने पिलाने के इन महफ़िलों से ग़ैर हाज़िर न हुआ करे जिसमें सलीबी भी शरीक होते हैं। अगर उसे शराब के दो घूंट पीने पड़े तो पी लिया करे और उन लोगों में घुल मिल कर उनकी बातें सुने। सुल्तान अय्यूबी को बुरा भला कहे और इन सलारों के सीनों से यह राज़ निकलवाये कि उन के जंगी इरादे क्या हैं। सलीबियों की बातें ग़ौर से सुने। अन्तानून ने उससे उन दो सालारों के मुतअल्लिक पूछा जिन के मुतअल्लिक बताया गया था कि हिन्दुस्तान के रहने वाले हैं।

"शम्सुद्दीन और शादबख़्त को मैं अच्छी तरह जानती हूं।" लड़की ने कहा– "गुमश्तगीन उनके बेग़ैर कोई क़दम नहीं उठाता। वह अकसर यहां आते हैं। राग रंग में भी शरीक होते हैं लेकिन शराब नहीं पीते।"

"तुम उनके क़रीब हो जाओ।" अन्तानून ने कहा– "बातों–बातों में उनसे पूछना, क्या अलरिस्तान में बर्फ पिघल रही है?' वह तुम से पूछेंगे– 'क्या तुम अलरिस्तान जा रही हो?' तुम मुस्कुरा कर कहना– 'इरादा तो यही है।' उसके बाद वह तुम्हारे साथ कुछ बातें करेंगे और

शायद यह भी पूछें कि उधर से कौन आया है। तुम बता देना कि तुम्हे मिल जायेगा।"

"मैं कुछ समझी नहीं।" लड़की ने कहा।

"सब समझ जाओगी।" अन्तानून ने कहा– "फातमा! मैं तुम्हे कभी इन झमेलों में नहीं डालता लेकिन फर्ज़ का तकाज़ा है कि अपनी अज़ीज़ तरीन शै को भी अपने फर्ज़ पर कुर्बान कर दें। तुम मुझे कुर्बान कर दो, मैं तुम्हें कुर्बान कर दूं। घबरा न जाना फातमा! आने वाला वक़्त मालूम नहीं हमारे लिए कैसे कैसे मुसायब और कैसी–कैसी आज़माईश ला रहा है। अगर हम दोनों कैद ख़ाने के जहन्नम में चले गये या मारे भी गये तो हमारा ख़ून ज़ाया नहीं होगा। खुदाये ज़ुलजलाल हमें फ़रामोश नहीं करेगा। इस्लाम की अज़मत की पासबानी ख़ून दिये बगैर नहीं हो सकती।"

"तुम मुझे साबित क़दम पाओगे।" फ़ातमा ने कहा– "तुमने मेरे उस जज़्बे को भी ज़िन्दा कर दिया है जो मैं समझती थी कि मर गया है।"

"मैं जा रहा हूं।" अन्तानून ने कहा– "अपना काम आज ही से शुरू कर दो।"

❖

अन्तानून चला गया। फ़ातमा उसे देखती रही। वह उस की नज़रों से ओझल हो गया तो फ़ातमा ने महसूस किया कि वह अकेली नहीं। उसके पास कोई खड़ा है। उसने बिदकर देखा। हरम की ही एक लड़की खड़ी थी। वह भी फ़ातमा की ही तरह जवान और ख़ूबसूरत थी। उसने कहा– "फातमा इस मोहब्बत का अन्जाम सोंच लो। तुम आज़ाद नहीं हो। मेरे जज़्बात भी तुम जैसे हैं। मैं भी पिंजरा तोड़ कर उड़ जाना चाहती हूं लेकिन यह मुम्किन नहीं। हमारी किस्मत में जो लिखा था वह हमें मिल गया है। दिल को कुचल डालो। अगर दिल की तस्कीन का सामान करना ही है तो और बहुत हैं। अपने मुहाफ़िज़ को इतना बड़ा दर्जा न दो।"

"कौन मुहाफ़िज़?" फ़ातमा ने हैरान सा होकर पूछा– "तुम क्या कह रही हो?"

"मैंने अभी वह नहीं कहा जो मैंने सुना है।" दूसरी लड़की ने कहा– "मुझे अब कुछ छुपाने की कोशिश न करो। तुमने उसके साथ जो सौदा किया है वह तुम्हे बहुत मंहगा पड़ेगा।" यह कहकर वह चली गयी और फ़ातमा वहीं खड़ी अंधेरे ख़लाओं में घूरती रही।

उसे याद आ गया कि अन्तानून कह रहा था कि तुम अपना काम आज ही शुरू कर दो। उसे यह भी याद आ गया कि उसने अन्तानून से कहा था कि तुम मुझे साबित क़दम पाओगे। उसने दिल ही दिल में उस लड़की पर लानत भेजी और अपने आप से कहा कि हरम में ऐसी बातें तो होती ही रहती हैं। कोई लड़की को हमदर्दी से कुछ समझाती है और बाज़ आका की नज़रों में एक दूसरी को गिराने की कोशिश करती हैं। उसे अब एक सहारा और कौमी जज़्बे की तस्कीन मिल गया था, वह ना तजुर्बाकार थी। उसे मालूम नहीं था कि हरम में कुछ भी किसी से छुपाया नहीं जा सकता और यह भी कि इस माहौल में अख़्लाक और किरदार नापैद है और यहां किसी भी वक़्त कोई भी अनहोनी हो सकती है। गुनाहों की इस पुर असरार दुनिया में वह बहुत बड़ा ख़तरा मोल ले रही थी।

दो तीन रोज़ बाद उसकी मुलाक़ात शम्सुद्दीन और शादबख़्त से हो गयी। उस रात भी गुमश्तगीन ने बज़्म ऐश व तरब मुनअक़िद की थी। अपने सालारों, सलीबी मुशीरों और आला अफ़सरों को अपने हाथ में रखने के लिए वह उन्हें ख़ूब ऐश कराता था। इन दो तीन दिनो की मुलाकातों में अन्तानून ने फ़ातमा को ट्रेनिंग दे दी थी। फ़ातमा इस ज़याफ़त में ख़ूब दिलचस्पी ले रही थी। गुमश्तगीन हैरान होता होगा और ख़ुश भी इस लड़की मे तब्दीली आ गयी है। वह हर किसी के साथ हंस–हंस कर बातें कर रही थी। वह शम्सुद्दीन के पास जा रूकी और इधर–उधर की बातें करते उसने कहा– "क्या अलरिस्तान में बर्फ़ पिघल रही है।"

सालार शम्सुद्दीन चौंक उठा। गुमश्तगीन जैसे चालाक और सख़्त मिज़ाज क़िलादार के हरम की किसी लड़की की ज़ुबान से ऐसे अलफ़ाज़ निकालने की उसे उम्मीद नहीं थी क्योंकि यह सुल्तान अय्यूबी के जासूस के ख़ुफ़िया अल्फ़ाज़ थे जो बोल कर जासूस एक दूसरे को पहचानते थे। इन अल्फ़ाज से को जासूस के सिवा और कोई वाक़िफ़ नहीं हो सकता था। शम्सुद्दीन को यह भी मालूम था कि इस क़िले में कोई जासूस क़ैद नहीं था जिसने यह अल्फ़ाज दिये हों। उसने कोड का अगला मुकालमा बोला।

"क्या तुम अलरिस्तान जा रही हो?"

"फ़ातमा ने मुस्कुरा कर कहा-- "इरादा तो यही है।"

शम्सुद्दीन बातें करते करते फ़ातमा को अलग ले गया। दूसरे लोग शराब और रक़्स में महव थे। शम्सुद्दीन ने उससे पूछा– "तुम जानती हो मैं सालार हूं।"

"मैं कुछ और भी जानती हूं।" फ़ातमा की मुस्कुराहट में तन्ज़ नहीं अपनाइयत और एक मलतब था। "कौन आया है?" शम्सुद्दीन ने राज़दारी से पूछा।

"वह आप को मिल जायेगा।" फ़ातमा ने जवाब दिया।

"तुम जानती हो कि मुझे धोखा देकर इसका अन्जाम क्या होगा?"

"धोखा नहीं।" फ़ातमा ने जवाब दिया– "आप टहलते–टहलते बड़े दरवाज़े तक चलें जायें। वहां दो मुहाफ़िज़ खड़े हैं। पूछना कि योरूशलम से कौन आया है।"

शम्सुद्दीन दरवाज़े पर चला गया। वहां दो मुहाफ़िज़ खड़े थे जिन्हें वह जानता था। उसने पूछा– "तुममें से योरूशलम से कौन आया है?" अन्तानून ने आगे बढ़कर बताया कि वह योरूशलम से आया है। शम्सुद्दीन ने पूछा-- "तुम अगर अलरिस्तान की तरफ़ से आये हो तो वहां बर्फ़ पिघल रही होगी।"

"क्या आप अलरिस्तान जा रहे हैं?" अन्तानून ने पूछा।

"इरादा तो यही है।" शम्सुद्दीन से मुस्कुराकर कहा।

जब उसे यकीन हो गया कि अन्तानून वाक़ई जासूस है तो उसने पूछा– "वह लड़की धोखा तो नहीं दे रही?"

"नहीं।" अन्तानून ने जवाब दिया-- "मुलाकात का मौका दें सारी बात बताऊंगा।"

❖

मुलाक़ात का मौका पैदा कर लिय गया। शम्सुद्दीन आख़िर सालार था। वह मौका पैदा

कर सकता था। उसने अन्तानून से पूछा कि उसने फ़ातमा को किस जाल में फांसा है और उसे वह किस तरह इतना काबिले एतमाद समझता है कि उसे खुफ़िया (कोड) अल्फ़ाज़ बता दिये हैं। अन्तानून ने उसे शुरू से आख़िर तक सुना दिया कि यह लड़की किस तरह उसे मिली और उनके दर्मियान क्या-क्या बातें हुई थीं।

"मैं ख़तरा महसूस कर रहा हूं।" शम्सुद्दीन ने कहा- "तुम जवान हो, ख़ुबरू और तन्दुमन्द हो। लड़की जवान है और उसकी खुबसूरती ग़ैर मामूली है। जज़्बात फ़र्ज़ पर ग़ालिब आने के इम्कानात मुझे साफ़ नज़र आ रहे हैं। तुम्हारा दिन के दौरान उसके कमरे में जाना जज़्बात के तेहत था। तुम ने इहतियात नहीं की। लड़की में मोहब्बत और ख़ुलूस की तिश्नगी है। तुम ने उसे मोहब्बत भी दी ख़ुलूस भी दिया है। ऐसी लड़कियों के जज़्बात नाज़ुक और ख़तरनाक होते हैं। मुझे डर है कि तुम अपने फ़र्ज़ को रूमानी जज़्बात के ग़ल्बे से तबाह न कर दोगे। जवानी और तिश्नगी मिल कर बारूद बन जाती हैं...क्या तुम मुझे यक़ीन दिला सकते हो कि तुम्हारे दिल में उस लड़की की मोहब्बत पैदा नहीं हो गयी? मैं तुम्हारे ईमान का इम्तेहान लेना चाहता हूं।"

"मैंने उसे अपने काम के लिए गिरविदा बनाया है।" अन्तानून ने कहा- "लेकिन मैं झूठ नहीं बोलूंगा। यह लड़की मेरे दिल में उतर गयी है। मैं आप को ख़ुदा और रसूल सल्ल० की क़सम खाकर यक़ीन दिलाता हूं कि यह मोहब्बत मेरे फ़र्ज़ पर ग़ालिब नहीं आयेगी।"

फिर उनके दर्मियान अपने काम की कुछ बातें हुई और शम्सुद्दीन ने उसे कुछ हिदायात दे कर रुख़्सत कर दिया। उसी रोज़ शम्सुद्दीन ने अपने भाई शादबख़्त को बताया कि सुल्तान अय्यूबी ने यहां एक और आदमी भी भेज दिया है जिसका नाम अन्तानून है और वह मुहाफ़िज़ दस्ते में शामिल होने में कामयाब हो गया है। उन दोनों भाइयों के दो ज़ाती मुहाफ़िज़, उनके अर्दली और दो मुलाज़िम भी सुल्तान अय्यूबी के लड़ाका जासूस थे। शम्सुद्दीन और उस के भाई ने उन्हें भी बताया कि उनका एक और साथी आ गया है जिस ने यहां आकर अपने आप को एक ख़तरे में डाल दिया है। उसका कारनामा है कि उसने क़िलादार की ज़ाती रिहाईशगाह में से एक मछली पकड़ ली है मगर उसमें ख़तरा भी है। शम्सुद्दीन ने अपने आदमियों को यह ख़तरा तफ़सील से बताया और कहा- "अभी तक हरान में हमारा कोई जासूस नहीं पकड़ा गया। मुझे डर है कि अन्तानून पकड़ा जायगा हम उस पर नज़र रखेंगे, ताहम तुम सबको तैय्यार रहना होगा। अगर वह पकड़ा गया तो हमारी बेइज्ज़ती होगी। यह डर भी है कि अज़ीयतों से घबरा कर वह हम सबकी निशानदेही कर दे लेकिन मुझे सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का ख़्याल आता है। वह कहेंगे कि दो सालार और छः लड़ाका जासूस एक आदमी की हिफ़ाज़त न कर सके।"

"आप और हम मौजूद थे तो एक और आदमी के भेजने की क्या ज़रूरत थी?" एक ने पूछा।

"यही ज़रूरत थी जो उसने पूरी कर ली है।" शम्सुद्दीन ने जवाब दिया- "गुमश्तगीन के हरम तक रसाई ज़रूरी थी। तुम इन बहसों में न पड़ो। मैं जानता हूं कि हसन बिन

अब्दुल्लाह का फ़ैसला है जो सही है। मैं तुम्हें उसके ख़तरों से आगाह कर रहा हूं। तैय्यार रहना, हो सकता है उस लड़की को अग़वा करके ग़ायब करना पड़े। इसके लिए भी तैय्यार रहो।"

"हम तैय्यार हैं।" लेकिन हमें बर वक़्त इत्तलाअ मिलनी चाहिए।"

"यह मुम्किन नहीं कि इत्तलाअ बर वक़्त मिले।" शम्सुद्दीन ने कहा– "हो सकता है मुझे भी उस वक़्त पता चले जब अन्तानून शिकन्जे में जकड़ा हुआ हो और उसकी हड्डियां तोड़ी जा रही हों।"

❖

"क्या तुम दोनों भाई पसन्द करोगे कि हम किसी से मदद लिए बग़ैर अपनी जंग आज़ादी से लड़ें?" गुमश्तगीन सालार शम्सुद्दीन और शादबख़्त से पूछ रहा था– "आप दोनों जानते है कि सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ हम कई एक लोग हैं। हम सब ने बज़ाहिर मुत्तहिदा मुहाज़ बना रखा है लेकिन हम दिल से एक दूसरे के साथ नहीं। अल्मलकुस्सालेह बच्चा है। वह जिन उमरा के हाथों में खेल रहा है, वह सलाहुद्दीन को शिकस्त देकर अस्सालेह को बाहर फ़ेंक देंगे और ख़ुद मुख़्तार हाकिम बन जायेंगे। मुसिल का हाकिम सैफ़ुद्दीन भी हमारा दोस्त है और सलाहुद्दीन का दुश्मन लेकिन वह भी अपनी रियासत अलग बनाना चाहता है। आप को मालूम है कि मैं ने हरान के गिर्दो नवाह से काफ़ी फ़ौज तैय्यार कर ली है। मैं ने सलीबी हुक्मरान ....को और उसके तमाम जंगी क़ैदियों को उस मुआहिदे के तेहत आज़ाद कर दिया था कि मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुक़ाबले में आऊं तो सलीबी अगर मेरी मदद बराहे रास्त न करे तो अक़्ब से या पहलू से सलाहुद्दीन पर हम्ला कर दें या उसे हम्ले का धोखा देकर उसकी तवज्जह मुझसे हटा दें। अगर हम कामयाब हो गये तो एक वसी व उरीज़ इलाक़ा आपकी अलमबरदारी में होगा मुझे उम्मीद है कि हम सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त दे सकेंगे। वह सलीबियों को पस्पा कर सकता है। सलीबी उस की जंगी चालों से वाक़िफ़ नहीं। हम वाक़िफ़ हैं और हम भी मुसलमान हैं। अगर उस की फ़ौज बे जिगरी से लड़ सकती है तो हम उससे ज़्यादा बहादुरी का सबूत दे सकते हैं। सलाहुद्दीन अय्यूबी पहली बार हलब में मुसलमानों पर हम्लावर हुआ था। हलब वालों ने उसके छक्के छुड़ा दिये। उससे मेरी हौसला अफ़ज़ाई हुई है।"

शम्सुद्दीन और शादबख़्त ने उसे बिल्कुल न कहा कि मुसलमान को मुसलमान के ख़िलाफ़ नहीं लड़ना चाहिए और सलीबी जो हम सबके दुश्मन हैं हमें मदद का धोखा देंगे मदद नहीं देंगे। उन दोनों भाईयों ने उसे यह भी याद न दिलाया कि अल्मुलक–ऊ–सालेह ने सलीबी हुक्मरान रिमाण्ड को सोने की शकल में मुआविज़ा दिया और यह मुआहिदा किया था कि सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ जंग की सूरत में रिमाण्ड उस पर अक़्ब से हम्ला करेगा। सुल्तान अय्यूबी ने हलब का मुहासिरा किया तो रिमाण्ड फौज लेकर आ गया मगर सुल्तान अय्यूबी के सिर्फ़ छापामार दस्तों ने उसे रोक दिया और रिमाण्ड लड़े बग़ैर वापस चला गया। शम्सुद्दीन और शादबख़्त ने गुमश्तगीन के साथ किसी भी नुक़्ते पर बहस न की। उस की

ताईद की और उसे मश्वरा दिया कि इस वक़्त सुल्तान अय्यूबी अलरिस्तान की पहाड़ियों में बैठा है। इस सिलसिलाए कोह में "हिमात के सींग" नाम की जो वादी है उसे मैदाने जंग बनाया जाये तो सुल्तान अय्यूबी को शिकस्त दी जा सकती है। उन्होंने यह मश्वरा भी दिया कि अपनी जंग आज़ादी से लड़ी जाये और सलीबियों से मदद ली जाये।

"मुझे कुछ ऐसी इत्तलाअ मिल रही हैं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी के जासूस हमारे दर्मियान मौजूद हैं, और हर एक ख़बर उसे पहुंचा रहे हैं।" गुमश्तगीन ने कहा– "आप दोनों मोहतात और चौकन्ने रहें और छान बीन करें।"

"कहने की ज़रूरत नहीं।" सलार शादबख़्त ने कहा– "हम जानते हैं कि सुल्तान अय्यूबी का निज़ामे जासूसी बहुत मज़बूत और तेज़ है हम ने यहां अपने जासूस छोड़ रखें हैं जो हमें मुश्तबा और मश्कूक अफ़राद से आगाह करते रहते हैं।"

"मैं इस मामले में बहुत सख़्त हूं।" गुमश्तगीन ने कहा– "अगर मुझे अपने बेटे के मुतअल्लिक़ भी शक हुआ कि जासूस है तो मैं उसे भी शिकन्जे में डाल दूंगा। ज़र्रा भर भी रहम नहीं करूंगा।"

गुमश्तगीन के वहम व गुमान में भी न था कि जिन दो सालारों से इतने नाज़ुक मश्वरे ले रहा है वह सुल्तान अय्यूबी के जासूस हैं। यह दोनों भाई तो बहुत ही ख़तरनाक जासूस थे क्योंकि वह दोनों उसकी फ़ौज के जरनल थे और फ़ौजों की कमान उन्हीं के पास थी। गुमश्तगीन से फ़ारिग़ होकर वह जब अकेले बैठे तो उन्होंने आपस में यह स्कीम बनाई कि वह जब फ़ौज लेकर सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ जायेंगे तो उसे अपनी पेशक़दमी के मुतअल्लिक़ पहले इत्तलाअ दे देंगे। वह उन की फ़ौज को घेरे में ले लेगा और हथियार डाल दिये जायेंगे। दोनों भाई देर तक स्कीम बनाते रहे और हर पहलू पर ग़ौर करते रहे। उन्हें अभी यह मालूम नहीं था कि गुमश्तगीन कब हम्ला करना चाहता है। उन्हें उसे उस पर आमादा करना था कि वह जल्दी हम्ला करे।

❖

अन्तानून अब गुमश्तगीन की रिहाईश की ड्यूटी से हट गया था क्योंकि उसकी ड्यूटी के आठ दिन पूरे हो चुके थे। फ़ातमा ने उसे काम की कुछ बातें बताई थीं। अब उसका फ़ातमा से मिलना मुश्किल हो गया था। वह हर लम्हा उसे मिलने के लिए बेताब रहता था जिस की एक वजह तो अपने फ़र्ज़ की अदायगी थी और दूसरी वजह जज़्बाती और रूहानी थी। फ़ातमा ने एक ख़ादिमा को हाथ में ले लिया था। एक शाम उसने ख़ादिमा के ज़रिए अन्तानून को इत्तलाअ भेजवाई कि रात उसी वक़्त वह बाग़ीचे में आ जाये। बड़े दरवाज़े से अन्दर जाना नामुम्किन था। बाग़ीचे के पीछे ऊंची दिवार थी। फ़ातमा ने कहला भेजा था कि दिवार के बाहर रस्सा लटक रहा होगा। उस रात वहां बहुत बड़ी ज़्याफ़त थी। गुमश्तगीन ने ऐसे तमाम बड़े बड़े लोगों को मदुअ किया था, जो जंग में उसके मददगार हो सकते थे। उनमें सलीबी कमाण्डर भी थे और चन्द एक मुसलमान फ़ौजी अफ़सर भी जो मुसिल से चोरी छिपे आये थे। गुमश्तगीन ने ऐसे ग़ैर फ़ौजी आदमियों को भी मदुअ किया था जिन के पास बेअन्दाज़ा दौलत

थी। उन सब मेमहमानों से वह जंग के लिए मदद लेना चाहता था। उनमें शम्सुद्दीन और शादबख़्त भी थे और उनमें गुमश्तगीन का क़ाज़ी इब्ने अलख़शिब अबुलफ़ज़्ल भी था।

यह इज्तमाअ फ़ातमा के लिए बहुत अच्छा था। उसे इस अहमियत का इल्म हो गया था। उसने अपने मिज़ाज के ख़िलाफ़ अपना बनाव सिंगार ऐसे तरीक़े से किया था जिसमें मर्दों के लिए बेपनाह कशिश थी। उसकी जवानी और ख़ुबसूरती की कश्शि अलग थी। वह फुदकती फिर रही थी। हर मेहमान के साथ हंस–हंस कर बाते करती थीं। उसे जहां भी कोई सलीबी और अपनी फ़ौज का कोई आला अफ़सर बातें करता नज़र आता वहां इस तरह पीठ करके खड़ी हो जाती कि उन्हें शक न होता। वह उन की तरफ़ कान लगा देती। वह शम्सुद्दीन और शादबख़्त के पास भी गयी। दोनों ने उसे कहा कि वह बहुत मोहतात रहे और उसके कान में कोई राज़ की बात पड़े तो उन्हें बता दे। अन्तानून से ज़्यादा मुलाक़ातें न करे लेकिन उसने यह राज़ उनसे छुपाये रखा कि उसने आज रात अन्तानून को बुलारखा है और थोड़ी ही देर बाद वह उससे बाग़ीचे में मिलने जायेगी फिर वापस आकर अपना काम करेगी। उसने शाम का अंधेरा गहरा होते ही ख़ादिमा से रस्सा दिवार से बंधवा कर पिछली तरफ़ लटकवा दिया था। दिवार के अन्दर के तरफ़ एक दरख़्त था। अन्तानून को बाहर से रस्से के ज़रिए ऊपर आना और उस रस्से को अन्दर की तरफ लटका कर दरख़्त की ओट में उतरना था।

उस ज़्याफ़त में बाहर से निहायत आला दर्जे की नाचने वालियां बुलाई गयी थीं। उनके अलावा लड़कियों जैसे ख़ूबसूरत नौ उम्र लड़के भी बुलाये गये थे जो नीम उरियां होकर ख़ास क़िस्म की रक़्स करते थे। हरम की सारी लड़कियां गुमश्तगीन की इस हिदायत या हुक्म के साथ मौजूद थीं कि मेहमानों को पूरी तरह अपनी गिरफ़्त में लेने की कोशिश करें। उन्हें बताया गया था कि इस इज्तमाअ का मक़सद क्या है। शराब के मटकों के मुंह खोल दिये गये थे। फ़ातमा भी उस में आज़ाद थी कि मेहमानों में से किसे मिलती है और उसके साथ कैसी बातें और हरकतें करती है।

महफ़िल की रौनक़ और साज़ों के हंगामें में इज़ाफ़ा होता जा रहा था और फ़ातमा बेचैन होती जा रही थी क्योंकि अन्तानून के आने का वक़्त हो गया था। उस वक़्त वह एक सलीबी कमाण्डर के साथ बातें कर रही थी। यह सलीबी रवानी से अरबी ज़ुबान बोलता था। फ़ातमा सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ बातें कर रही थी ताकि यह सलीबी अपने दिल की बातें उगल दे।

ऐसी ही हुआ। वह फ़ातमा को बताने लगा कि किस तरह सुल्तान अय्यूबी को ख़त्म करेंगे। इन बातों के दौरान उसने फ़ातमा के साथ बेतकल्लुफ़ी पैदा कर ली। फातमा ने मज़ाहमत न की। उसे कुछ क़ीमती राज़ हासिल हो रहे थे। सलीबी उसे बातों में लगाये महफ़िल से परे ले गया। चलते चलते वह अन्दर वाले बाग़ीचे में चले गये। वहां रौशनी नहीं थी। वहां जाकर फातमा ने महसूस किया कि अन्तानून आ गया होगा और उसके इन्तज़ार में परेशान हो रहा होगा। उसने सलीबी से कहा कि आओ वापस चलें लेकिन सलीबी अभी वापस नहीं जाना चाहता था। फ़ातमा कोई झूठ मूठ वजह बताये बग़ैर भाग भी नहीं सकती थी मगर भागने के सिवा चारा भी कोई न था। भागने की बज़ाहिर वजह भी कोई न थी।

सलीबी ने उसे बाज़ू से पकड़ कर अपने साथ घास पर बैठा लिया और उसके हुस्न की तारीफ़ें शुरू कर दीं। फ़ातमा ने उसे टालने की कोशिश की। सलीबी नशे में भी था। उसने दस्त दराज़ी की तो फ़ातमा ने हंस कर कहा– "यह सोंच लो कि मैं किसकी बीवी हूं।"

"उसी की इजाज़त से यह जुर्रत कर रहा हूं।" उसने कहा और फ़ातमा को अपने क़रीब घसीट लिया। कहने लगा– "तुम जिसे अपना ख़ाविन्द कह रही हो वह तुम्हारा ख़ाविन्द नहीं है।" सलीबी ने कहा– "इस हक़ीक़त से तुम भी वाक़िफ़ हो। अगर वह तुम्हरा ख़ाविन्द ही है तो उसने सलाहुद्दीन को शिकस्त देने और बादशाह बनने के लिए अपनी तमाम बीवियां आज रात के लिए हम पर हलाल कर दी हैं।"

"बे ग़ैरत है।" फ़ातमा ने ग़ुस्से को हंसी में दबा कर कहा, हालांकि वह जानती थी कि यह सलीबी जो कुछ कह रहा है ठीक कह रहा है।

"जो आदमी अपना ईमान बेच डालता है वह अपनी बीवी, अपनी बहन और अपनी बेटी की इज़्ज़त से भी दस्तबरदार हो जाता है। बेवकूफ़ लड़की हो। ऐश व इश्रत से क्यों बेज़ार हो? कहती हो मैं शराब भी नहीं पीती।"

फ़ातमा को दो बातें परेशान कर रही थीं। पहली यह कि अन्तानून आ गया होगा और दूसरी यह कि गुमश्तगीन अगर ग़ैरतमन्द होता तो वह दौड़ती उसके पास चली जाती और उसे बताती कि यह आदमी मुझ से दस्त दराज़ी करता है, मगर वहां सूरत यह पैदा कर दी गयी थी कि किसी मेहमान को ख़ुसूसन किसी सलीबी कमाण्डर को नाराज़ करना गुमश्तगीन के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी थी। वह अपनी बीवियों की इस्मत के एवज़ सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ जंगी मदद ले रहा था। फ़ातमा जाल में उलझ कर रह गयी। वह उस सलीबी के मुंह पर थूक नहीं सकती थी और उसे धुतकार भी नहीं सकती थी। इन मजबूरियों के बावजूद अपनी इज़्ज़त से भी दस्तबरदार नहीं हो सकती थी। उसके लिए फ़ैसला करना मुश्किल था कि क्या करे।

उसने ज़रा सुलझे हुए तरीक़े से टालने की कोशिश की जो महज़ बेकार साबित हुई। उसे बड़ी शिद्दत से ख़्याला आया कि अन्तानून आ गया होगा। वह पेच व ताब खाने लगी। इस ज़ेहनी कैफ़ियत में सलीबी ने एक बेहूदा हरकत की। फ़ातमा भड़क उठी। वह घास पर बैठे थे। उसने सलीबी को बड़े ज़ोर से धक्का दिया। वह पीठ के बल गिरा। औरत में ग़ैरत बेदार हो जाये तो वह चट्टान को धक्का दे कर गिरा सकती है। यह सलीबी तो नशे में था। उसने उसे फ़ातमा का मज़ाक़ समझा और क़हक़हा लगाया। क़रीब ही मिट्टी का एक बड़ा गमला रखा था। फ़ातमा को ग़ुस्से ने पागल कर दिया। उसने गमला उठाया। यह बहुत वज़नी था। गमला ऊपर को उठाकर उसने सलीबी के मुंह पर दे मारा। वह पीठ के बल लेटा क़हक़हे लगा रहा था। गमला उसकी पेशानी पर गिरा और उसके क़हक़हे ख़ामोश हो गये। फ़ातमा ने गमला फिर उठाया, सलीबी बेहोश होकर पहलू के बल हो गया था। फ़ातमा ने गमला अपने सर से ऊपर ले जाकर उसके सर पर फेंका और वहां से ग़ुलाम गर्दिश में चली गयी। किसी कमरे में दाख़िल हुई और अंधेरे में पिछले बाग़ीचे में चली गयी।

महफ़िल पर शराब का नशा तारी हो चुका था। रक़्स उरूज पर था। शराबियों की हाव हू ने महफ़िल को सर पर उठा रखा था। किसी को होश न था कि कौन ज़िन्दा है और कौन क़त्ल हो गया है। इस हंगामें से लातअल्लुक़ होकर फ़ातमा पिछले बाग़ीचे में गयी। अन्तानून की मोहब्बत के जोश और नशे में उसे अभी यह एहसास नहीं था कि वह एक इन्सान को क़त्ल कर आई है और मक़तूल सलीबी है। वह अन्तानून को फ़ख़्र से सुनाना चाहती थी कि उसने अपनी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त में सलीबी को क़त्ल कर दिया है, मगर अन्तानून वहां नहीं था। फ़ातमा का दिल इस ख़्याल से डरने लगा कि वह आकर चला गया है। उसने दरख़्त के पीछे जाकर देखा कि रस्सा बाहर है या अन्दर। रस्सा अन्दर था। इसका मतलब अन्तानून आया है। इसीलिए रस्सा अन्दर है, मगर वह है कहां? अगर वापस गया होता तो रस्सा बाहर को होता।

वह वहां खड़ी इधर उधर देख रही थी। उसे अंधेरे में एक साया सा हरकत करता नज़र आया। उसने ग़ौर से देखा। उसकी ख़ादिमा मालूम होती थी। फ़ातमा ने उसे आहिस्ता से अवाज़ दी। वह ख़ादिमा ही थी। फ़ातमा की तरफ़ दौड़ गयी। उसने फ़ातमा से पूछा—"उसे यहां न ढूंढो। वह आया था। मैं उसके इन्तज़ार में छुप कर खड़ी थी। मैंने उसे दिवार पर देखा। उसने रस्सा अन्दर फेंका और उतरने लगा। उधर से दो आदमी आते नज़र आये। उस वक़्त वह रस्से से उतर रहा था। दोनों आदमी करीब आ गये। मैं उसे ख़बरदार न कर सकी। वह दोनों दरख़्त के तने से लग गये। वह ज्योंहि उतरा उन दोनों ने उसे ऐसा जकड़ा कि वह उनके गिरफ़्त से आज़ाद न हो सका। मैं आप को ढूंढती रही लेकिन मैं मेहमानों में नहीं जा सकती थी।"

फ़ातमा को चक्कर आ गया और जब उसे यह ख़्याल आया कि वह एक सलीबी को क़त्ल कर आई है तो उसके होश उड़ गये। यह अलिफ़ लैला की पुर असरार और तिलसिमाती दुनिया थी जिसे फ़ातमा जैसी लड़की नहीं समझ सकती थी। उसे हरम की एक लड़की ने ख़बरदार किया भी था कि वह एक मुहाफ़िज के साथा मोहब्बत का खेल खेलकर ग़लती कर रही है। उसे अब यह मसला परेशान करने लगा कि अन्तानून को किसने गिरफ़्तार कराया है। उन दोनों आदमियों को पहले से मालूम होगा कि वह आ रहा है। अब फ़ातमा को यह ख़द्शा नज़र आने लगा कि उसे भी गिरफ़्तार किया जायेगा। उसे अपनी ख़ादिमा पर भी शक था। वह भी तो मुख़्बिरी कर सकती थी।

वह कुछ भी न समझ सकी। ख़ादिमा को साथ लेकर उसने ऊपर से रस्सा खुलवाया और उसे कहा कि इसे कहीं छुपा दे। वह ख़ुद इन्तेहाई घबराहट के आलम में सालार शम्सुद्दीन और शादबख़्त की तरफ़ दौड़ी गयी। रक़्स और शराब की महफ़िल गर्म थी। फ़ातमा को शादबख़्त नज़र आ गया। उसे महफ़िल के अन्दाज़ से मालूम हुआ कि सलीबी के क़त्ल का किसी को पता नहीं चला। वह ख़रामा ख़रामा शादबख़्त तक गयी और उसे इशारे से बुलाया। अलग जाकर उसे बताया कि वह एक सलीबी को क़त्ल कर आई है। उसने क़त्ल की वजह भी बताई।

शादबख़्त ने यह ख़तरा महसूस करते हुए कि फ़ातमा को किसी न किसी ने सलीबी के

साथ उधर जाते देखा होगा जहां उसकी लाश पड़ी है और उस के पकड़े जाने का इम्कान बड़ा वाजेह है, उसे कहा– "तुम्हें अब यहां नहीं रहना चाहिए। तुम अगर गिरफ़्तार हो गयी तो मैं ही बेहतर जानता हूं कि गुमश्तगीन तुम जैसी ख़ुबसूरत लड़की का कैदख़ाने में क्या हाल करायेगा। अगर उसका बाप मारा जाता तो वह परवा न करता। वह एक सलीबी कमाण्डर के क़त्ल का बड़ा भयानक इन्तक़ाम लेगा। "मैं कहा जाऊं।" फ़ातमा ने पूछा।

"थोड़ी देर यहीं घूमो फिरो।" शादबख़्त ने कहा– "मेरा भाई शम्सुद्दीन आ जाये तो उससे बात करूंगा।" "वह कहां चले गये हैं? फ़ातमा ने ख़ौफ़ से कांपती आवाज़ में पूछा।

कुछ देर गुज़री उन्हें इत्तलाअ मिली थी कि पिछवाड़े की दिवार रस्से से फलांग कर एक आदमी अन्दर गया था। मालूम नहीं वह कौन है और किस इरादे से अन्दर आया था। शम्सुद्दीन उसे देखने और उसे कैद ख़ाने मे डालने या जो भी कार्रवाई मुनासिब समझेगा करने के लिए गया है। अगर थोड़ी देर तक न आया तो मैं ख़ुद चला जाऊंगा। दिल मज़्बूत रखना। हम तुम्हें छिपा लेंगे।"

फ़ातमा के ज़ेहन में ख़्याल आया कि पकड़ा जाने वाला अन्तानून ही होगा। उसे इत्मीनान हुआ कि अन्तानून को सालार शम्सुद्दीन के हवाले किया गया है और वह उसे बचाने की कोशिश करेगा।

वह अन्तानून ही था। उसे दो सिपाहियों ने पकड़ा था। चूंकि यह शम्सुद्दीन की शोअबे की ज़िम्मेदारी थी कि इस क़िस्म के मुज्रिमों से पूछ गछ करके कार्रवाई करे इस लिए उसी को इत्तलाअ दी गयी कि एक आदमी दीवार फलांग कर अन्दर आते पकड़ा गया है। शम्सुद्दीन महफ़िल से उठकर बाहर गया तो सिपाहियों ने अन्तानून को पकड़ रखा था। शम्सुद्दीन ने यह ज़ाहिर करने के लिए वह इस मुज्रिम को नहीं जानता उससे पूछा– "तुम तो शायद मुहाफ़िज दस्ते के जवान हो। दिवार क्यों फलांगी है? सच सच बता दो वरना सज़ाये मौत से कम सज़ा नहीं दूंगा।"

अन्तानून ख़ामोश रहा। शम्सुद्दीन को इस ख़्याल से ग़ुस्सा आ रहा था कि उसने उसे कहा भी था कि मोहतात रहे और फ़र्ज पर जज़्बात को ग़ालिब न आने दे। उसने उस हिदायत पर अमल न किया। एक तरफ़ तो उसने फ़न का यह कमाल दिखाया था कि एक ही कोशिश मे मुहाफ़िज़ दस्ते में शरीक हो गया और फ़ौरन बाद उसने हरम तक रसाई हासिल कर ली मगर दूसरी तरफ़ उसने ऐसी हिमक़ात की कि एक ही हल्ले में पकड़ा गया। जासूस की हैसियत से यह उसका जुर्म था लेकिन उसकी सज़ा उसे यहां नहीं दी जा सकती थी, यहां उसे बचाना और निकालना था। उसके साथ ही फ़ातमा को भी वहां से निकालना ज़रूरी था क्योंकि इस इन्कशाफ़ का भी ख़तरा था कि अन्तानून को फ़ातमा ने बुलाया था और रस्सा लटकाने का इन्तज़ाम उसी ने किया था।

शम्सुद्दीन ने दोनों सिपहियों को एक जगह बता कर कहा कि उसे वहां ले जायें और वह उसे कैद खाने ले जाने का इन्तज़ाम करने जा रहा है। सिपाही उसे ले गये तो शम्सुद्दीन किसी तरफ़ चला गया। उसने अपनी बॉडीगार्ड को बुलाया जो वहीं कहीं मौजूद था। बॉडीगार्ड

चला गया। उसके बाद शम्सुद्दीन अन्दर चला गया और अपने भाई शादबख़्त को अपने पास बुलाया। रक़्स हो रहा था। मेहमान ईश ईश कर रहे थे। शराब बह रही थी। मशालों के शोलों और फ़ानूस की रंग बिरंगी रौशनियों ने नाचने वालियों के रंगा रंग लिबास से मिल कर ऐसी रौनक पैदा कर रखी थी जिस में अलिफ़ लैला का तिलिस्म था। सब मदहोश और मख़्मूर हो रहे थे सलीबी की लाश अभी वहीं पड़ी थी। इस तिलिस्माती माहौल और फ़िज़ा में शम्सुद्दीन और शादबख़्त के दर्मियान अन्तानून और फ़ातमा के मुतअल्लिक़ बातें हुई। शदबबख़्त ने शम्सुद्दीन को बताया कि फ़ातमा एक सलीबी को क़त्ल कर चुकी है।

उन्होंने फ़ातमा को अपने पास बुलाया और उसे अपने कमरे में लेजाकर लिबास और हुलिया बदल कर वहां से निकलने की तरकीब अच्छी तरह समझा दी। वह ख़रामा–ख़रामा वहां से ग़ायब हो गयी।

कुछ देर बाद दरबान ने अन्दर आकर शम्सुद्दीन को इत्तलाअ दी कि बाहर फलां कमाण्डर खड़ा है। शम्सुद्दीन बाहर गया। एक कमाण्डर घबराया हुआ खड़ा था। उसने रिपोर्ट दी– "अन्तानून नाम के जिन मुहाफ़िज़ को दीवार फलांगते पकड़ा गया था, वह फ़रार हो गया है।"

"क्या वह दो सिपाही मर गये थे जिनके हवाले मैं उन्हें करके आया था?" शम्सुद्दीन ने गरज कर पूछा।

"मालूम होता है कि यह अकेले अन्तानून का नहीं एक से ज़्यादा आदमियों का काम है।" कमाण्डर ने बताया– "दोनों सिपाहीं वहां बेहोश पड़े हैं। उनके सरो पर ज़रबों का निशान हैं।"

शम्सुद्दीन ने मौक़ाए वारदात पर जाकर देखा। दोनों सिपाही होश में आ चुके थे। उन्होंने बताया कि वह यहां खड़े थे। अंधेरे में पीछे से किसी ने उनके सरों पर एक एक ज़रब लगायी और वह बेहोश हो गये। शम्सुद्दीन ने भाग दौड़ शुरू कर दी। उस वक़्त एक औरत जिसने सर से पांव तक बुर्क़े की तर्ज़ का स्याह रेशमी लिबादा ले रखा था और उसमें उसकी सिर्फ़ आंखें नज़र आ रही थीं, गुमश्तगीन की रिहाईश गाह के बड़े दरवाज़े से निकली और जाने कहां चली गयी। उस रात मेहमानों का आना जाना तो जारी ही था। दरबान और मुहाफ़िज़ों ने यह देखने की ज़रूरत ही महसूस न की कि यह कौन है जो मस्तूर हो कर जा रही है।

आधी रात के बाद जब मेहमान रूख़्सत हुए तो किले का दरवाज़ा खोल दिया गया। घोड़े और बघियां गुज़रने लगीं। उन्हीं में एक घोड़ सवार गुज़रा जिसका चेहरा ढंका हुआ था। उसके साथ दूसरे घोड़े पर वही मस्तूर औरत थी जो गुमश्तगीन के घर से अकेली निकली थी। यह इन्तज़ाम शम्सुद्दीन और शादबख़्त ने किया था। उसने उन दो सिपाहियों को एक जगह बता कर कहा था कि अन्तानून को वहां लेजाकर मेरा इन्तज़ार करें। उसने अपने बॉडीगार्ड से कहा था कि वह अन्तानून को आज़ाद करायें और उसके घर में छिपादें। पहले बताया जा चुका है कि शम्सुद्दीन और शादबख़्त के बॉडीगार्ड, दो अरदली और दो मुलाज़िम

सुल्तान अय्यूबी के कमाण्डो जासूस थे। उन्होंने बर वक़्त हरकत की और अन्तानून को छुड़ाकर ले गये। इधर से फ़ातमा भी कामयाबी से निकल गयी और शम्सुद्दीन के घर पहुंच गयी। वहां इन्तज़मात मुकम्मल थे। जब मेहमान निकले तो उन्हें घोड़े देकर वहां से निकाल दिया गया।

यह रात तो शराब और रक़्स की मदहोशी में गुज़र गयी। अगली सुबह सलीबी की लाश देखी गयी और गुमश्तगीन को यह इत्तलाअ भी मिली कि उसका एक मुहाफ़िज़ और उसके हरम की एक लड़की लापता हैं। उसने हुक्म दिया कि जिन दो सिपहियों की हिरासत से अन्तानून भगा है उन दोनों को उम्र भर के लिए क़ैद ख़ाने में डाल दिया जाये।

❖

अन्तानून और फ़ातमा का फ़रार सबको भूल ही गया क्योंकि गुमश्तगीन के सलीबी दोस्तों ने अपने एक कमाण्डर के क़त्ल पर उधम बपा कर दिया था। उन्हें दर असल अपने कमाण्डर के मारे जाने पर इतना अफ़सोस नहीं था जितना उन्होंने गुल ग़पाड़ा मचाया था। वह दर असल गुमश्तगीन के साथ नाराज़गी का इज़हार करके उससे कुछ और मुराआत लेना चाहते थे और यह शह देना चाहते थे कि वह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी पर हम्ला कर दे। सलीबी जानते थे कि मुसलमान के हरमों में ऐसे ड्रामें खेले ही जाते रहते हैं जिन में लड़कियां अग़वा भी होती हैं, अज़ ख़ूद भी ग़ायब होती हैं और वह पुर असरार क़त्ल भी होते हैं, लेकिन वह गुमश्तगीन को मजबूर कर देना चाहते थे कि सर उनके क़दमों में रख दे। जिन से मदद मांगी जाती है वह अपनी हर शर्त मनवाते और ग़ुलाम बनाने की कोशिश करते हैं। सलीबियों की तो नवइयत ही कुछ और थी।

यह सूरते हाल छिपाई न जा सकी। हलब तक इसकी ख़बर पहुंच गयी। वहां के दरबारी उमरा जो सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे गुमश्तगीन को भी अपना इत्तेहादी बनाना चाहते थे। उन्होंने अल्मलकुस्सालेह की तरफ़ से एक एलची भेजा। उसके साथ रिवाज के मुताबिक़ बेश क़ीमत तहाईफ़ थे। तहाईफ़ में दो जवान लड़कियां भी थीं। गुमश्गतीन आराम कर रहा था। एलची और लड़कियों को शम्सुद्दीन के पास ले गये क्योंकि गुमश्तगीन के बाद वही सालार था जो सरकारी उमूर की देख भाल करता था। अपने घर में लड़कियों को अलग बैठा का उसने एलची से पूछा कि वह क्या पैग़ाम लाया है। उसने जो तवील पैग़ाम दिया वह मुख़्तसरन यूं था कि सुल्तान अय्यूबी ने हलब का मुहासिरा किया तो रिमाण्ड सलीबी फ़ौज ले कर आया भी जिससें सुल्तान अय्यूबी ने मुहासिरा उठा दिया मगर रिमाण्ड बग़ैर लड़े फ़ौज वापस ले गया। सलीबी आइंदा भी हमें धोखा देंगे। हम अगर अलग अलग होकर सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ेंगे तो हम सब शिकस्त खायेंगे। हमें मुत्तहिद हो जाना चाहिए ताकि अय्यूबी को हमेशा के लिए ख़त्म कर सकें।

इस पैग़ाम के साथ मुत्तहिदा मुहाज़ बनाने का एक मंसूबा था जो कुछ इस तरह था कि अलरिस्तान की पहाड़ियों की बर्फ़ पिघल रही है। जासूसों ने बताया है कि सुल्तान अय्यूबी के सिपाही बुलन्दियों पर नहीं रह सकते क्योंकि वहां पिघलती बर्फ़ का पानी उनके लिए रूकावट

पैदा करता है। हमारे लिए यह मौका अच्छा है। हम सब अपनी फौज़ों को इकठ्ठा कर लें तो अय्यूबी की फ़ौज को घेरे में लेकर उसे शिकस्त दे सकते हैं। इस मंसूबे में यह भी था कि सलीबी हुक्मरान ..... को अपने साथ लाया जा सकता है।

इसकी सूरत यह हो सकती है कि आप (गुमश्तगीन) उसे अपना मंसूबा बतायें और उसे अपना मुआहिदा याद दिलायें जिस के तेहत उसके जंगी कैदियों को रिहा किया गया था।

शम्सुद्दीन ने यह पैग़ाम शादबख़्त को सुनाया। दोनों भाइयों ने आपस में सलाह मश्वरा किया और सोंचने लगे कि यह पैग़ाम गुश्मगतीन तक न पहुंचने पाये। वह दोनों इस कोशिश में थे कि गुमश्तगीन अकेला सुल्तान अय्यूबी से लड़े क्योंकि इस तरह उस की शिकस्त का इम्कान था। उन्हें मालूम था कि सुल्तान अय्यूबी के पास फौज थोड़ी है। उससे वह अकेले–अकेले ग़द्दार हुक्मरान को आसानी से ख़त्म कर सकता था.....यह दोनों भाई अपनी असलियत के छुपाने के लिए पूरी पूरी एहतियात करते थे मगर इस मौका पर उन पर जज़्बात का ग़ल्बा हो गया। जज़्बात को मुश्तअिल उन लड़कियों ने किया। वह इस तरह कि उन्होंने लड़कियों से उनका मज़हब पूछा। उन्होंने बताया कि वह मुसलमान हैं। उम्र के लिहाज से वह नौजवान थीं। शम्सुद्दीन और शादबख़्त ने अफ़सोस सा महसूस किया कि एक तो मुसलमान ने अपने आप में यह कमज़ोरी पैदा कर ली है कि ख़ूबसूरत लड़की के एवज़ में अपना ईमान तक अलग फेंक देते हैं और दूसरे यह कि जिन मुसलमान लड़कियों को शरीफ़ घरानों में आबाद होना होता है उन्हें लालची वालिदैन उमरा के हरमों में दे देते हैं।

तुम कहां की रहने वाली हो और इन लोगों के हाथ किस तरह लगी हो? शादबख़्त ने पूछा– "तुम्हारे बाप ज़िन्दा हैं? भाई नहीं हैं?"

लड़कियों ने जो उन्हें जवाब दिया उससे दोनों भाईयों के जज़्बात भड़क उठे। जिन इलाकों पर सलीबी काबिज़ थे वहां के मुसलमानों का जीना हराम हो रहा था। किसी मुसलमान की इज्ज़त महफूज़ नहीं थी। पहले भी सुनाया जा चुका है कि वहां के मुसलमान बाशिन्दे काफिलों की सूरत में नकले मकानी करते थे। उनके साथ ताजिर भी चल पड़ते थे। इस तरह हर काफ़िले के साथ लड़कियां भी होती थीं और माल दौलत भी। सलीबियों ने काफ़िलों को लूटने का इन्तज़ाम भी कर रखा था। यह यूरोपी मोअर्रिख़ों ने भी लिखा है कि बाज़ सलीबी हुक्मरान जो मश्रिकी वुस्ता में किसी न किसी इलाक़ा पर क़ाबिज़ थे, उन क़ाफ़िलों को अपनी फ़ौज के हाथों लूटवाते थे। लूटने वाले कमसिन लड़कियों, जानवरों और माल दौलत को उड़ा ले जाते थे। लड़कियों को वह मंडी मे नीलाम करते या मुसलमान उमरा के हाथों फ़रोख़्त करते थे। कुछ लड़कियां सलीबी अपने लिए रख लेते और उन्हें जासूसी और अख़लाकी तख़्रीबकारी के लिए तैय्यार करते थे। उन्हें मुसलमानों के इलाकों में इस्तेमाल किया जाता था।

इन दोनों लड़कियों को एक काफ़िले से छीना गया था। उस वक़्त वह दोनों तेरह चौदह साल की थीं। वह फिलिस्तीन के किसी मकबूज़ा इलाक़े से अपने कुम्बों के साथ किसी महफूज़ इलाक़े को जा रही थीं। बहुत बड़ा काफ़िला था जिस पर सलीबी डाकूओं ने रात के

वक़्त हम्ला किया और बहुत सी लड़कियों को उठा ले गये। यह दोनों चूंकि ग़ैर मामूली तौर पर खुबसूरत थीं इसलिए उन्हें अलग करके उनकी खुसूसी परवरिश और तरबियत शुरू कर दी गयी। इन पर ग़ैर इन्सानी तशद्दुद किया गया फिर उनके साथ ऐसा अच्छा सलूक होने लगा कि जैसे वह शहज़ादियां हों। उन्हें फ़िलवाक़ेअ शहज़ादियां बनाया गया। शराब पिलाई गयी और निहायत ख़ुबी से उनके ज़ेहनों को सलीबियों ने अपने रंग में ढाल लिया। चार पांच साल बाद जब सुल्तान नुरूद्दीन ज़ंगी फ़ौत हो गया तो सलीबियों की तरफ़ से उन दोनों लड़कियों को तोहफ़े के तौर पर दमिश्क़ भेजा गया। उन्हें सलीबियों का एक मुसलमान एलची साथ लाया था। यह सलीबियों की ख़ैर सगाली का तोहफ़ा था। वह अल्मलकुस्सालेह और उसके उमरा को सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ और अपने हक़ में करना चाहते थे।

इन लड़कियों ने बताया— "हमारे ज़ेहनों से मज़हब और किरदार को निकाल दिया गया था। हम ख़ुबसूरत खिलौने बन गयी थीं लेकिन हमें जब दमिश्क़ भेजा गया तो हमारे ज़ेहनों में अपना मज़हब और किरदार बेदार हो गया। हमारे ख़ून में जो इस्लामी असरात थे वह उमड़ कर हमारी रूहों पर छा गये। हमें अपने मां बाप और बहन भाई तो नहीं मिल सके थे हम ने इन मुसलमान हाकिमों और बादशाहों को अपने बाप और भाई समझ लिया लेकिन उनमें से किसी एक ने भी हमें बेटी और बहन नहीं समझा। सलीबियों के हाथों बे आबरू होकर हमें इतना दुख नहीं हुआ जितना मुसलमान भाइयों के पास आकर हुआ क्योंकि सलीबियों से हमें ऐसे ही सलूक की तवक़्क़ो थी। हमने हर उस मुसलमान हाकिम के पांव पकड़े जिनके हवाले हमें किया गया। हाथ जोड़े, इस्लाम के, ख़ुदा और रसूल सल्ल0 के वास्ते दिये कि हम उनकी बेटियां हैं, मज़लूम हैं, उनकी इज्ज़त हैं मगर उन की आंखों में शराब और शैतान ने सलीब और सितारे में कोई फ़र्क़ नहीं रहने दिया था.....

"हमारे अन्दर इन्तक़ाम का जज़्बा बेदार हो गया। जब सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी दमिश्क़ में आया तो हम बहुत ख़ुश हुई। सलीबियों के इलाक़ों में मुसलमान सुल्तान अय्यूबी की राह देख रहे हैं। उसे वह इमाम मेंहदी भी कहते हैं। वह दमिश्क़ में आया तो हम ने तहइया कर लिया कि उसके पास चली जायेंगी और उसे कहेंगी कि हमें अपनी फ़ौज में रख ले और कोई सा काम हमें दे दे मगर हमें वहां से ज़बरदस्ती भगाकर हलब ले आये। अब उन्होंने हमें आपके पास भेज दिया है। हम आप से भी तवक़्क़ो नहीं रखती कि आप हमें बेटियां समझेंगे। हम इतना ज़रूर कहेंगी कि हमारी इस्मत तो हमारे हाथ से निकल गयी है इस्लाम हाथ से न जाये। हम सलीबियों के हां रहीं तो वहां भी सुल्तान अय्यूबी और इस्लाम के ख़िलाफ़ मंसूबे बनते देखे। मुसलमान के पास रहीं तो वहां भी सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ बातें सुनीं। आप हमें आज़मायें। हमने सुना है कि सलीबी लड़कियां यहां जासूसी के लिए आती हैं। आप हमें सलीबियों के इलाक़ों में भेजें। हमें यह डर तो नहीं रहा कि इस्मत लुट जायेगी। वह तो लुट ही चुकी है। हमें इस्लाम के दिफ़ाअ और फ़रोग़ के लिए और सलीबियों की शिकस्त के लिए कुछ करने का मौक़ा दें।"

इन लड़कियों की यह रूदाद ऐसी थी कि जिसने शम्सुद्दीन और शादबख़्त को शदीद

जज़्बाती झटका दिया। उन्होंने लड़कियों से कहा कि उन्हें अब किसी ऐश परस्त हुक्मरान के हवाले नहीं किया जायेगा।

❖

वह बातें कर ही रहे थे कि बॉडीगार्ड ने आकर उन्हें इत्तलाअ दी कि क़ाज़ी साहब आये हैं। दोनों भाई मुलाक़ात वाले कमरे में चले गये। वहां हरात का क़ाज़ी इब्ने अल ख़ाशिब अबुल फ़ज्ल बैठा था। अधेड़ उम्र आदमी था। उसने कहा– "सुना है हलब से एलची आया है और पैग़ाम के साथ तोहफ़े भी लाया है।"

"हां!" शादबख़्त ने कहा– "क़िलादार सोये हुए हैं। मैंने एलची को अपने पास रोक लिया है।"

"मैं वह तोहफ़े देखने आया हूं।" इब्ने अल ख़ाशिब ने आंख मार कर कहा– "उनकी एक झलक दिखादो।"

दोनों भाई जानते थे कि यह क़ाज़ी किस क़िमाश का इन्सान है। वह गुमश्तगीन पर छाया हुआ था। शम्सुद्दीन ने दोनों लड़कियों को उस कमरे में बुलाया। क़ाज़ी ने उन्हें देखा तो उसकी आंखें फटने लगी। उसके मुंह से हैरत ज़दा सरगोशी निकली– "आफ़रीन....ऐसा हुस्न?"

शम्सुद्दीन ने लड़कियों को दूसरे कमरे में भेज दिया। क़ाज़ी ने कहा– "उन्हें मेरे हवाले कर दो। मैं ख़ुद क़िलादार के सामने ले जाऊंगा। उसकी आंखों में शैतान झांक रहा था।

"आप क़ाज़ी हैं।" शम्सुद्दीन ने उसे कहा– "क़ौम की नज़रों में आपका मुक़ाम गुमश्तगीन से ज़्यादा बुलन्द है जिन के हाथ में अल्लाह का क़ानून और अदल व इन्साफ़ हुआ करता था। वह अपने हुक्मरान से नहीं ख़ुदा से डरा करते थे बल्कि हुक्मरान भी उनके डर से किसी के साथ बे इन्साफ़ी नहीं करते थे। अब हुक्मरान उसे क़ाज़ी बनाते हैं जो उनकी बे इन्साफ़ियों को जायज़ क़रार दे और जो क़ानून को नहीं हुक्मरान को ख़ुश रखे। मैं अपने ख़ुदा का नहीं हुक्मरान का क़ाज़ी हूं।"

"और यह उसी का नतीजा है कि कुफ़्फ़ार तुम्हारे दिलों पर क़ाबिज़ हो गये हैं।" शादबख़्त ने कहा– "ईमान फ़रोश हुक्मरान का क़ाज़ी ईमान फ़रोश ही होता है। तुम जैसे क़ाज़ियों और मुन्सिफ़ों ने उम्मते रसूलुल्लाह सल्ल0 को यहां तक पहुंचा दिया है जहां हमारे उमरा और हुक्मरान अपनी ही बेटियों की इस्मतों से खेल रहे हैं। यह आप की मुसलमान बच्चियां हैं जिन्हें आप अपने साथ ले जाना चाहते हैं।"

क़ाज़ी पर शैतान का इतना ग़ल्बा था कि उसने शम्सुद्दीन और शादबख़्त की बातों को मज़ाक़ में उड़ाने की कोशिश की और हंस कर कहा– "हिन्दी मुसलमान मुर्दा दिल होते हैं। तुम हिन्दुस्तान से यहां क्यों चले आये थे?"

"ग़ौर से सुनो मेरे दोस्त!" शम्सुद्दीन ने कहा– "मैं तुम्हारी इज्ज़त सिर्फ़ इस लिए करता हूं कि तुम क़ाज़ी हो, वरना तुम्हारी असलियत इतनी सी है कि तुम मेरे मातेहत कमाण्डर थे। तुमने ख़ुशामद और चापलूसी से यह मक़ाम हासिल कर लिया है। मैं तुम्हारी ग़ैरत को

बेदार करने के लिए तुम्हें बताता हूं कि हम हिन्दुस्तान से क्यों आये थे।

छः सौ साल गुज़र गये मुहम्मद बिन कासिम नाम का एक नौजवान जरनल एक लड़की की पुकार और फरियाद पर इस सर ज़मीन से जाकर हिन्दुस्तान पर हम्लावर हुआ था। तुम जानते हो हिन्दुस्तान कितनी दूर है। तुम अन्दाज़ा कर सकते हो कि उस लड़के ने फ़ौज किस तरह वहां पहुंचाई होगी। तुम ख़ुद फ़ौजी हो। अच्छी तरह समझ सकते हो कि उसने मरकज़ से इतनी दूर जाकर रस्द और कुमक के बग़ैर जंग किस तरह लड़ी होगी। जज़्बात से निकल कर उसके अमली पहलू पर ग़ौर करो.....

"उसने ऐसी मुश्किलात में फ़तह हासिल की जिन में शिकस्त के इम्कानात ज़्यादा थे। उसने सिर्फ फ़तह ही हासिल नहीं की हिन्दुस्तानियों के दिलों पर क़ब्ज़ा किया और किसी ज़ुल्म व तशद्दुद के बग़ैर उस कुफ़्रिस्तान में इस्लाम फैलाया। फिर वह न रहा। जिन्होंने इतनी दूर जाकर एक लड़की की इस्मत का इन्तक़ाम लिया और इस्लाम का नूर फैलाया था, दुनिया से उठ गये और वह मुल्क उन बादशाहों के हाथ आया जो मुजाहिदीन के क़ाफ़िले मे थे ही नहीं। उन्हें वह मुल्क मुफ़्त मिल गया। उन्होंने वहां वही हरकतें शुरू कर दीं जो आज यहां हो रही हैं। हिन्दू इस तरह मुसलमानों पर ग़ालिब आते गये जिस तरह यहां सलीबी ग़ालिब आ रहे हैं। सल्तनते इस्लामिया सिकुड़ने लगी और जब हम जवान हुए तो उस सल्तनत की जड़ें भी ख़ुश्क हो चकी थीं जिस से मुहम्मद बिन कासिम और उसके ग़ाज़ियों ने ख़ून से सींचा था। मुसलमान हुक्मरानों ने अरब से रिश्ता तोड़ लिया। हम दोनों भाई जिन के ख़ानदान को अस्करी रिवायात से पहचाना जाता था वहां से मायूस होकर यहां आ गये। हम हिन्दी मुसलमानों के एलची बन कर आये थे। टूटे हुए रिश्ते जोड़ने आये थे.....

"सुल्तान नुरूद्दीन ज़ंगी से मिले तो उसने बताया कि वह हिन्दुस्तान का रूख़ किस तरह कर सकता है। अरब की सरज़मीन ग़द्दारों से भरी पड़ी है। ज़ंगी मरहूम दूर के किसी मुहाज़ पर इस लिए नहीं जाता था कि उसकी ग़ैर हाज़िरी में इधर बग़ावत हो जायेगी जिस से सलीबी फ़ायदा उठायेंगे। हमें यह देखकर अफ़सोस हुआ कि हिन्दुस्तान में हिन्दूं मुसलमानों के किरदार पर ग़ालिब आ गया और यहां सलीबी ग़ालिब आ गया है। ज़ंगी ने हमें अपनी फ़ौज में रख लिया और जब गुमश्तगीन सैफुद्दीन और अज़्ज़ाउद्दीन वग़ैरह ने सलीबियों के साथ दरपर्दा गठजोड़ कर लिया तो सुल्तान अय्युबी ने हम दोनों को गुमश्तगीन की फ़ौज में इस मकसद के लिस भेज दिया कि हम उस पर नज़र रखें कि उसकी ख़ुफ़िया सरगर्मिया क्या हैं।"

"यानी तुम दोनों जासूस हो।" क़ाज़ी इब्ने अलख़शिब ने तन्ज़िया कहा।

"मेरी बात समझने की कोशिश करो।" शम्सुद्दीन ने कहा– "तुम देख रहे हो कि हमारे मुसलान उमरा उस मर्दे मुजाहिद के ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं जो इस्लाम को सलीब के अज़ाइम से महफ़ूज़ करना चाहता है। आज एलची बहुत ख़तरनाक पैग़ाम लाया है– "उसने पैग़ाम सुनाकर कहा– "गुमश्तगीन पर तुम्हारा असर है। तुम उसे रोक सकते हो। तुम अगर हमारा साथ दो तो आओ गुमश्तगीन को इस पर काइल करें कि वह ग़द्दारों के साथ इत्तेहाद करने

की बजाये सुल्तान अय्यूबी के साथ मिल जाये वरना उसे ऐसी शिकस्त होगी जो उसे सारी उम्र कैद खाने में बन्द रखेगी।"

"इससे पहले मैं तुम दोनों को कैद ख़ाने मे बन्द करवाता हूं।" इब्ने ख़ाशिब ने कहा– "दोनो लड़कियां मेरे हवाले कर दो।"

वह उठ कर उस कमरे की तरफ़ जाने लगा जिस में लड़कियां थी। शादबख़्त ने उसे बाज़ू से पकड़कर पीछे किया। उसने शादबख़्त को धक्का दिया। शादबख़्त ने उसे मुंह पर इतनी ज़ोर से घूंसा मारा कि वह पीछे को गिरा। शम्सुद्दीन वहां खड़ा था। उसने अपना एक पांव उसके शहे रग पर रख कर दबाया और ऐसा दबाया कि तड़प कर बेहिस हो गया। देखा तो वह मर चुका था। उन भाइयों का इरादा कत्ल का था या नहीं, वह मर गया। उन्होंने सोंचा अब पकड़े तो जाना ही है, उन्होंने दोनो अरदलियों को बुलाया। उन्हें चार घोड़े तैय्यार करने को कहा। घोड़े तैय्यार हो गये तो उन्होंने दो घोड़ों पर दोनो लड़कियों को बैठाया। अरदलियों को तलवार और तीर कमान देकर दूसरे घोड़े पर सवार होने को कहा। वह और शाद बख़्त उनके साथ गये और किले का दरवाज़ा खुलवा कर चारों को भाग जाने को कहा। उन्हें उन्होंने यह हिदायत दी थी कि सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज तक पहुंच जायें। उन्होंने इस अरदलियों को तफ़सील से बता दिया था कि गुमश्तगीन का मंसूबा क्या है।

चारों घोड़े बाहर निकलते ही सरपट दौड़ पड़े। दोनों भाइयों को भी निकल जाना चाहिए था। मालूम नहीं क्या सोंच कर वह वापस आये। गुमश्तगीन जागकर आ चुका था। उसने एलची को देखा तो उससे पूछा कि वह कौन है और कहां से आया है। उसने बता दिया मगर वहां लड़कियां नहीं थीं जो तोहफे के तौर पर लाया था। शम्सुद्दीन और शादबख़्त ने कहा कि लड़कियां जा चुकी हैं क्यों कि मुसलमान थीं। हमने उन्हें वहां भेज दिया जहां उनकी इज्ज़त महफूज़ रहेगी। उन्होंने यह भी बता दिया कि काज़ी की लाश अन्दर पड़ी है।

गुमश्तगीन ने लाश देखी। एलची दूसरे कमरे में उन दोनों भाइयों की वह बातें सुन रहा था जो काज़ी इब्ने ख़शिब से कर रहे थे। गुमश्तगीन जल उठा। उसने सालार शम्सुद्दीन और सालार शादबख़्त को कैद ख़ाने में डाल दिया।

हरान के क़िले से दूर चार घोड़सवार सरपट घोड़े दौड़ाते निहायत क़िमती राज़ सलाहुद्दीन अय्यूबी के लिए ले जा रहे थे, और उस वक़्त अलरिस्तान की पहाड़ियों में सलाहुद्दीन अय्यूबी हसन बिन अब्दुल्लाह से पूछ रहा था कि उन दोनों भाईयों की तरफ़ से कोई इत्तलाअ नहीं आई?

जब सुल्तान अय्यूबी परेशान हो गया

सालार शम्सुद्दीन और सालार शादबख़्त को जब काज़ी के कत्ल और तोहफ़े के तौर पर आई हुई दो लड़कियों को किले से भगा देने के जुर्म में कैदख़ाने में डाला जा रहा था, उस वक़्त ऐसा ही एक एलची जो इस किले में आया था मुसिल में ग़ाज़ी सैफुद्दीन के पास पहुंचा। ग़ाज़ी सैफुद्दीन ख़िलाफ़त के तेहत मुसिल और उसके गिर्द व नवाह के इलाक़े का गवर्नर मुकर्रर किया गया लेकिन नुरुद्दीन ज़ंगी की वफ़ात के बाद उसने अपने आप को वाली–ए–मुसिल कहलाना शुरू कर दिया। वह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़ानदान का ही फर्द था मगर किरदार और ज़ेहनीयत के लिहाज़ से सुल्तान अय्यूबी के मुख़ालिफ़ाना मुहाज़ में शामिल हो गया था। उसका भाई अज़ाउद्दीन तजुर्बाकार जरनल था। फ़ौज की आला कमाण्ड उसी के पास थी। सैफुद्दीन चुंकि अपने आप को बादशाह समझता था इसलिए उसकी आदात बादशाहों जैसी थी। उस ने हरम में मुल्क–मुल्क की लड़कियां और नाचने वालियां भर रखी थीं। उसका दूसरा शौक़ परिन्दे रखने का था जिस तरह उसने हरम में एक से एक ख़ुबसूरत लड़की रखी हुई थीं उसी तरह उस ने रंग बिरंगे परिन्दे भी पिंजरों में बन्द कर रखे थे। उसकी ज़ाती दिलचस्पियां हरम और परिन्दों के साथ थीं।

उसे अपने भाई अज़ाउद्दीन की अस्करी अहलियत पर एअतमाद था और उसे तवक्क़ो थी कि सुल्तान अय्यूबी को शिकस्त देकर अपनी रियासत अलग बनाये रखेगा। उस मक़सद के लिए उसने हरान के किलादार गुमश्तगीन की तरह और नाम निहाद सुल्तानुल मल्कुस्सालेह की तरह अपने पास सलीबी मुशीर रखे हुए थे जिन्होंने उसे उम्मीद दिला रखी थी कि सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ जंग की सूरत में सलीबी उसे जंगी मदद देंगे। इस तरह सुल्तान अय्यूबी के लिए सूरत यह पैदा हो गयी थी कि मुसलमानों की तीन फ़ौजें उसके ख़िलाफ़ लड़ने को तैय्यार और पाबरकाब थीं। एक हलब में, दसूरी हरान में और तीसरी मुसिल में। यह बड़े–बड़े मुसलमान हुक्मरान और उमरा थे। छोटे छोटे शेख़ और छोटी–छोटी मुसमलान रियासतों के नवाब जिनकी तादाद का इल्म नहीं उन तीन बड़े हुक्मरानों के हामी, मददगार और मुआविन थे। उन्होंने उन तीनों को फ़ौजी और माली मदद देने का वादा कर रखा था और मदद दे भी रहे थे। उन्हें कहा गया था कि अगर सुल्तान छा गया तो अपनी सल्तनत में मुदग़म करके सबको ग़ुलाम बनालेगा।

वह बज़ाहिर मुत्तहिद थे लेकिन अन्दर से फटे हुए थे। वह नहीं चाहते थे कि एक दूसरे से कमज़ोर रहें। उनकी हालत छोटी बड़ी मछलियों की मानिन्द थी। हर छोटी मछली बड़ी मछली से ख़ाएफ़ थी और ख़्वाहिशमन्द की वह भी बड़ी मछली बन जाये। सुल्तान अय्यूबी

अपने इन्टेलीजेंस के निज़ाम के ज़रिए अच्छी तरह जानता था कि उसके मुख़ालिफ़ीन में निफ़ाक़ है, ताहम वह कोई ख़तरा मोल नहीं लेना चाहता था। वह हर लम्हा इस हक़ीक़त को सामने रखता था कि तीन बड़ी फौजें उसके ख़िलाफ़ मुहाज़ आरा हैं। फ़ौज आख़िर फ़ौज होती है, भेड़ बकरियों का रेवड़ नहीं होती। उसे यह एहसास भी था तीनों अफ़वाज के कमाण्डर और जवान मुसलमान हैं और फ़न्ने सिपाहगिरी और शुजाअत जो मुसलमान के हिस्से में आई है वह ख़ुदा ने किसी और क़ौम को अता नहीं की। सलीबी चार पांच गुना ताक़तवर लश्कर ले के आये तो मुसलमान सिपाह ने क़सरी तादाद में उन्हें शिकस्त दी, और उन अहवाल व कवाएफ़ में शिकस्त दी कि सलीबियों का अस्लेहा बरतर था और फ़ौजें ज़िरहपोश थीं। घोड़ों की पेशानियां और पिछले हिस्से भी ज़िरहपोश थे।

सुल्तान अय्यूबी ने हलब का मुहासिरा करके देख लिया था। यह पहला मौक़ा था कि मुसलमान फ़ौज के मुक़ाबले में आई थी। हलब की मुसलमान फ़ौज और वहां के शहरियों ने जिस बे जिगरी से हलब का दिफ़ाअ किया था उस से सुल्तान अय्यूबी के पांव उखड़ने लगे थे। वह उस मार्के को ज़ेहन से उतार नहीं सकता था। सुल्तान अय्यूबी पर यह इल्ज़ाम आयद किया गया था कि वह मुसलमानो पर फ़ौज कशी कर रहा है। यह इल्ज़ाम आयद करने वाले फ़तमी ख़िलाफ़त के हामी थे जिसे उसने मिस्र में माज़ूल किया था लेकिन हक़ीक़त यह थी कि यह मुसलमान हुक्मरान और उमरा सुल्तान अय्यूबी के इस अज़म के रास्ते में आ गये थे कि वह फ़िलिस्तीन को आज़ाद करायेगा। उसे यह ख़्याल चैन नहीं लेने देता था कि क़िब्ला अव्वल पर कुफ़्फ़ार का क़ब्ज़ा रहे और यहूदियों के अज़ाइम से भी बेख़बर न था। वह जानता था कि यहूदी यह दावा लिए फिरते हैं कि फ़िलिस्तीन उनका वतन है और क़िब्ला अव्वल मुसलमानों की नहीं यहूदियों की इबादतगाह है। यहूदी फ़ौज लेकर सामने नहीं आ रहे थे, वह सलीबियों को माली इमदाद दे रहे थे और उन्होंने जो सब से ज़्यादा ख़तरनाक मदद सलीबियों को दे रखी थी वह ग़ैर मामूली तौर पर ख़ुबसूरत, जवान और निहायत होशियार और चालाक लड़कियों की सूरत में थी। उन लड़कियों को जासूसी के लिए इस्तेमाल किया जाता था और मुसलमानों की किरदार कुशी के लिए भी। सुल्तान अय्यूबी को यह हक़ीक़त और ज़्यादा परेशान करती थी कि सलीबी फ़ौजें भी मौजूद हैं जिनके आला कमाण्डर और हुक्मरान उसके मुसलमान मुख़ालिफ़ीन को शह दे रहे हैं। उन हालात में सुल्तान अय्यूबी चौकन्ना था। वह अपनी फ़ौज को निहायत अच्छे तरीक़े से डिप्लाई किये हुए था और उसने इन्टेलीजेंस के निज़ाम को दुश्मनों के इलाक़े में भेज रखा था। उसका जो जंगी प्लान था, उसमें उस ने ज़्यादा तर भरोसा छापामार (कमाण्डो) टोलियों और जासूसों पर किया था।

❖

मुसिल में भी हलब का एल्ची पहुंचा। अल्मलकुस्सालेह और उसके दरबारी उमरा ने वालीए मुसिल के लिए पैग़ाम के साथ जो तोहफ़े भेजे थे उन में उसी तरह की दो लड़कियां थीं जिस तरह हरान के क़िलादार गुमश्तगीन को भेजी गयी थीं।

हरान में तो हिन्दुस्तानी जरनलों, शम्सुद्दीन और शादबख़्त ने इन लड़कियों को फ़रार

करा दिया, क़ाज़ी को क़त्ल किया और क़ैदख़ाने में बन्द हो गये थे लेकिन मुसिल में जो लड़कियां गयीं उन्हें वहां के वाली सैफ़ुद्ददीन ने बसर व चश्म कुबूल किया। उसके हरम में यह नियाहत दिलनशींन इज़ाफ़ा था। हलब के एल्ची ने वही पैग़ाम दिया जो गुमश्तगीन को दिया गया था। वह यह था कि सलीबी हलब वालों को मदद के मामले में धोखा दे चुके हैं इसलिए उन पर ज़्यादा भरोसा नहीं करना चाहिए और उन की दोस्ती से हमें दस्तबरदार भी नहीं होना चाहिए। उनसे मदद हासिल करने का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि हम आपस में मुत्तहिद होकर अय्यूबी पर हम्ला कर दें। वह अलरिस्तान के सिलसिलाए कोह में कूरून हमात (हमात के सिंग) के मुक़ाम पर ख़ेमा ज़न हैं। हम हम्ला करेंगे तो सलीबी उस पर अक़्ब से हम्ला कर देंगे।

इस पैग़ाम में एक प्लान था जिस में कुछ इस क़िस्म की वज़ाहत की गयी थी कि वहां बर्फ़ पिघल रही हैं। जासूसों की इत्तलाआत के मुताबिक़ सुल्तान अय्यूबी की मोर्चा बन्दियां बर्फ़ के बहते हुए पानी की वजह से तहस नहस हो गयी हैं। हम तीन फ़ौजों सेउसे उन्हीं वादियों में मुहासिरे में लेकर आसानी से शिकस्त दे सकते हैं। पैग़ाम में कहा गया था कि गुमश्तगीन को भी पैग़ाम भेजा गया है। उम्मीद है कि वह मुत्तहिदा मुहाज़ में अपनी फ़ौज को शामिल कर देगा। आप (सैफ़ुद्दीन) भी मज़ीद वक़्त ज़ाया किये बेग़र अपनी फ़ौज को मुश्तर्का कमान मे ले आयें ताकि सलाहुद्दीन अय्यूबी को फ़ैसला कुन शिकस्त दी जाये।

सैफ़ुद्दीन ने पैग़ाम मिलते ही अपने भाई अज़ाउद्दीन को, दो सीनियर जरनलों को और मुसिल के एक नामी गिरामी ख़तीब इब्ने अलमख़्दूम को बुलाया। सब आ गये तो उसने इलिची का यह पैग़ाम सब को सुना कर कहा– "आप सब मेरे इस फ़ैसले और इरादे से अच्छी तरह आगाह हैं कि मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी की इताअत नहीं कुबूल करूंगा। मेरी रगों में भी वही ख़ून है जो उसकी रगों में है। आप लोग मुझे मश्वरा दें कि मै फ़ौरी तौर पर अपनी फ़ौज मुश्तरका कमान में दे दूं या नहीं। मेरा इरादा है कि हमारी फ़ौज ज़ाहिरी तौर पर मुश्तरका कमान में रहे लेकिन आप लोग उसे अलग थलग लड़ायें ताकि जो इलाक़ा हमारी फ़ौज फ़तह करे उसका मालिक मेरे सिवा कोई न बन सके।"

एक सालार ने कहा– "आप ने जो फ़ैसला किया है उससे बेहतर और कोई फ़ैसला नहीं हो सकता। आप के इरादे इतने बुलन्द हैं जो किसी और के नहीं हो सकते।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी सलीबियों और सूडानियों को शिकस्त दे सकता है हमे नहीं।" दूसरे सालार ने कहा– "आप अपनी फ़ौज मुत्तहिदा मुहाज़ में शामिल कर दें लेकिन कमान अपने हाथ में रखें। हम अपनी फ़ौज को इस तरह लड़ायेंगे कि हमारी कामयाबियां हलब और हरान की फ़ौज से अलग थलग नज़र आयेंगी।"

"हम आप के हुक्म पर जाने कुर्बान कर देंगे शहंशाहे मुसिल!" पहले सालार ने कहा– "हम आपको उस सल्तनते इस्लामिया का शहंशह बनायेंगे जिस के ख़्वाब सलाहुद्दीन अय्यूबी देख रहा है।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी का सर काट कर आपके क़दमों में रखूंगा।" दूसरे सालार ने

कहा– "उसकी फौज अलरिस्तान की वादियों से ज़िन्दा नहीं निकल सकेगी। आप फ़ौरी तौर पर कूच का हुक्म दें। फ़ौज तैय्यार है।"

दोनों सालार एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर अपनी वफ़ादारी और इसार का इज़हार कर रहे थे। अज़ाउद्दीन ख़ामोश बैठा अपनी बारी का इन्तज़ार कर रहा था और ख़तीब इब्ने मख़्दूम कभी इन सालारों को कभी सैफ़ुद्दीन को देखता और सर झुका लेता था।

"अज़ाउद्दीन तुम्हारा क्या ख़्याल है?" सैफ़ुद्दीन ने अपने भाई से पूछा।

"मुझे आप के इस फैसले से इत्तफाक़ है कि हमें सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ना है।" अज़ाउद्दीन ने कहा– "लेकिन हमारे सालारों को इस क़िस्म की जज़्बाती बातें ज़ेब नहीं देतीं जैसी उन दोनों ने की हैं। सिर्फ़ यह कह देने से कि अय्यूबी सलीबियों और सूडानियों को शिकस्त दे सकता है हमें नहीं, अय्यूबी को शिकस्त नहीं दी जा सकती। मैं यह कहूंगा कि जिसने कम तादाद में सलीबियों की कई गुना ज़्यादा फ़ौज़ को शिकस्त दी है वह आप को भी शिकस्त दे सकता है। जिस ने सेहर' (फ़ौज बर्फ़ानी वादियों में लड़ाकर क़िले को फ़तह कर लिए और रिमाण्ड की फ़ौज को पस्पा होने पर मजबूर किया है वह बर्फ़ पिघल जाने के बाद ज़्यादा अच्छी तरह लड़ेगा। हमें किसी ख़ुश फ़हमी में मुब्तला नहीं होना चाहिए। दुश्मन को कमतर नहीं समझना चाहिए। आप यह सोंचे कि वह हालात कैसे हैं जिन में आप को लड़ना है। उस मैदान की बात करें जहां आप लड़ेंगे और उस दुश्मन की फ़ौज की बात करें जो आप के मुक़ाबिल है।"

अज़ाउद्दीन ने सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज की ख़ुबियां बयान कीं, फिर सुल्तान अय्यूबी के लड़ने के तरीक़े बयान किये और जिस मैदान में लड़ाई मुतवक्का थी उसके कवालिफ़ पर रौशनी डाल कर कहा– "बर्फ़ पिघल रही है और बहार की बारिशें इस साल ताख़ीर से बरस रही हैं। सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज ख़ेमों में है लेकिन घोड़ों को ख़ेमों में नहीं रखा जा सकता। इस वक़्त उसकी फ़ौज के जानवर दरख़्तों के नीचे या खोहों और ग़ारों में रहते हैं। घोड़े और ऊंट इस हालत में ज़्यादा देर तन्दरूस्त नही रह सकते। यह तवक्को भी रखनी चाहिए कि अय्यूबी के सिपाही पहाड़ी इलाक़े से उकता चुके होंगे। यह भी पेशे नज़र रख लें कि हम ने अपनी फ़ौज हलब और हरान की फ़ौज से मिला दी तो अय्यूबी मुहासिरे में लिया जा सकेगा लेकिन यह भी न भूलें कि मुसलमान सिपाही जब मुसलमान सिपाही के आमने सामने आएगा तो इस्लाम का अबदी रिश्ता उन्हें गुत्थम गुत्था करने के बजाये उन्हें बग़लगीर कर सकता है। तलवारें जो वह एक दूसरे के ख़िलाफ़ निकालेंगे झुक भी सकती हैं और ख़ून बहाये बग़ैर न्यामों में वापस जा सकती हैं।"

"अज़ाउद्दीन!" सैफ़ुद्दीन ने उसकी बात काटते हुए कहा– "तुम सिर्फ़ फ़ौजी हो। तुम सिर्फ़ ख़ून, तलवार और न्याम की बातें सोंच सकते हो। यह चालें मुझ से सीखो कि मुसलमान सिपाही को मुसमलान सिपाही के ख़िलाफ़ किस तरह लड़ाया जा सकता है। परसों से माह रमज़ान शुरू हो रहा है। सलाहुद्दीन अय्यूबी नमाज़ रोज़े का जिस क़दर पाबन्द है इतनी ही पाबन्दी अपनी फ़ौज से कराता है। उस की तमाम फ़ौज रोज़े से होगी। हम अपनी फ़ौज से

कह देंगे कि जंग में रोज़े की कोई पाबन्दी नहीं। मोहतरम ख़तीब तुम्हारे पास बैठे हैं। मैं इन की जानिब से एलान करवादूंगा कि जंग में रोज़े मांफ़ हैं। हम हम्ला दोपहर के बाद करेंगे। अलस्सुबह हम्ला किया तो सलाहुद्दीन अय्यूबी के सिपाही तरो ताज़ा होंगे। दोपहर के बाद हमारे सिपाहियों के पेट में खाना होगा और सलाहुद्दीन अय्यूबी के सिपाही भूखे और प्यासे होंगे। मैं सिर्फ़ यह मालूम करना चाहता हूं कि मेरा यह फ़ैसला ग़लत तो नहीं कि हमें सलाहुद्दीन के ख़िलाफ़ लड़ना है।"

"आपका यह फ़ैसला बरहक़ है।" एक सालार ने कहा।

"आप के फ़ैसले को हम अमली शकल देकर साबित करेंगे कि यह फ़ैसला हर लिहाज़ से सही है।" दूसरे सालार ने कहा।

आपके फ़ैसले के ख़िलाफ़ मैं ने कोई बात नहीं कही।" अज़ाउद्दीन ने कहा– "एक मशवरा और दूंगा। मुझे आप महफ़ूज़ रखें। अगर ज़रूरत पड़ी तो मैं बाद में हम्ला करूंगा। पहले तसादुम की कमान आप अपने हाथ में रखें।"

"ऐसा ही होगा।" सैफ़ुद्दीन ने कहा– "फ़ौज को दो हिस्सों में तक़सीम कर लो और फ़ौरी तैय्यारी का हुक्म दे दो। महफ़ूज़! में जो हिस्सा रखना चाहते हो उसे अपने पास रखो।"

❖

वहां ख़तीब इब्ने अल्मख़दूम भी मौजूद था। सैफ़ुद्दीन ने उसकी तरफ़ देखा और मुस्कुरा कर कहा– "क़ाबिले सद एहतराम ख़तीब! आप ने कई बार कुर्आन से फ़ाल निकाल कर मुझे ख़तरों से अगाह किया है। आप ने मेरी कामयाबी और सलामती के वज़ीफ़े किये और ख़ुदा के हुज़ूर मेरे लिए दुआ भी की है। आप को मालूम है कि आप से बढ़ कर मैं किसी को बर्गुज़ीदा नहीं समझता। अगर किसी इन्सान के आगे सज्दे की इजाज़त होती तो मैं आप के आगे सज्दा करता। अब मैं ऐसी मुहिम पर जा रहा हूं जिस की कामयाबी मख़दूश है। मैं एक ताक़तवर दुश्मन के मुकाबले में जा रहा हूं। जंग में फ़तह होती है या शिकस्त। मुझे कुर्आन से फ़ाल निकाल कर बताइये कि मेरी क़िस्मत में फतह लिखी है या शिकस्त।"

"अमीरे मोहतरम!" ख़तीब उठ खड़ा हुआ कहने लगा– "यह सही है कि आप ने कई बार मुझ से कुर्आन में से फ़ाल निकलवाई है। सुल्तान नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम व मग़फ़ूर की ज़िन्दगी में आप डाकूओ के बहुत बड़े गिरोह के तआक्क़ुब में गये थे तो मैंने कुर्आन में से फ़ाल निकाल कर आप को कामयाबी का मुज़दा सुनाया और आप कामयाब लौटे थे। सलीबियों के ख़िलाफ़ आप जब भी गये मैं ने फ़ाल निकाली और आप को ख़तरों से ख़बरदार किया और कामयाबी की ख़बर दी। अल्लाह का शुक्र है कि मेरी निकाली हुई हर फ़ाल सही निकली, मगर.......ख़तीब ने पहले अज़ाउद्दीन की तरफ़ फिर दोनों सालारों को देखा और कहा– "मगर मुसिल के अमीर! अब बेग़ैर फ़ाल निकाले मैं आपको बताता हूं कि जिस मुहिम पर आप फ़ौज ले जा रहे हैं उसमें आप कामयाब लौटेंगे या नाकाम।"

"जल्दी बताइये मेरे मोहतरम उस्ताद!" सैफ़ुद्दीन ने बेताब होकर कहा।

"आप को ऐसी बड़ी शिकस्त होगी जिस में आप वक़्त पर न भागे तो आप हलाक हो जायेंगे।" ख़तीब ने कहा-- "इस मुहिम पर न ख़ुद जायें न अपने भाई को भेंजे न अपनी फ़ौज को भेंजे।"

सैफुद्दीन के चेहरे का रंग बदल गया। यह बताना मुश्किल था कि वह घबराया है या डरा हुआ है। अज़ाउद्दीन और सालारों पर भी ख़ामोशी तारी हो गयी। ख़तीब सैफुद्दीन पर नज़रें गाड़े हुए था।

"आप ने कुर्आन तो खोला नहीं।" सैफुद्दीन ने कहा-- "कुर्आन के बेग़ैर आपने ने फ़ाल कैसे निकाली? मैं कैसे मान लूं कि आप ने मुझे जो बुरी ख़बर सुनाई है वह सही है?"

"सुनो मुसिल के अमीर!" इब्ने मख़्दूम ने कहा-- "मैं आज आप को बताता हूं कि कुर्आन से जो फालें निकाल कर मैं आप को कमयाबी के मुज़दे सुनाता रहा हूं उन का कुर्आन के साथ कोई तअल्लुक नहीं था। कुर्आन किसी जादूगर की लिखी हुई किताब नहीं। कुर्आन सिर्फ़ यह फ़ाल बताता है कि जो इस मुक़द्दस किताब में एहकामाते ख़ुदावन्दी तहरीर हैं उन पर जो अमल नहीं करेगा। वह नाकाम और नामुराद रहेगा। इससे पहले आप सलीब के परस्तारों के ख़िलाफ़ लड़ने गये तो आप के कहने पर मैं कुर्आन की फ़ाल आप को बताई कि आप कामयाब लौटेंगे। इसके बाद आप जिस मुहिम पर भी गये मैंने आप को कामयाबी का मुज़्दा सुनाया और कहा कि यह कुर्आन की फ़ाल है। हर फ़ाल नेक थी जिस की वजह सिर्फ़ यह थी कि आप की हर मुहिम हर काम ख़ुदा के हुक्म के ऐन मुताबिक़ था, मगर यह मुहिम जिस पर जा रहे हैं ख़ुदाई एहकाम की सरीह ख़िलाफ़ वर्ज़ी है। आप कुफ्फार के हाथ मज़बूत कर रहे हैं। उन से मदद मांग कर रसूले मक़बूल सल्ल० की नामूस पर फ़िदा होने वालों के ख़िलाफ़ लड़ने जा रहे हैं।"

"आप कैसे कह सकते हैं कि सलाहुद्दीन रसूले मक़बूल की नामूस पर फ़िदा होने वाला है?" सैफुद्दीन ने भड़कर कहा--"मैं कहता हूं वह एक वसीअ सल्तनत की सुल्तानी का ख़्वाब देख कर आया है। हम उस का यह ख़्वाब पूरा नहीं होने देंगे। उसे मौत ले आई है। उसे मौत के हवाले करके हम सलीब के परस्तारों को ख़त्म कर देंगे।"

"आप मुझे खोखले नुक़्तों का फ़रेब दे सकते हैं, ख़ुदा को नहीं।" ख़तीब ने कहा-- "ख़ुदा वह सब कुछ जानता है जो हम सब ने अपने अपने दिलों में छिपा रखा है जिस ने अपने नफ़्स पर फतह पा ली। मैं आज आख़िरी पेशीनगोई कर रहा हूं। शिकस्त आप का मुक़द्दर हो चुकी है। अगर आप इस्लाम के परचम तले चले जायें और अल्लाह की राह में किताल और जिहाद के लिए निकल खड़े हों तो आप के मुक़द्दर का लिखा टल सकता है।"

"मोहतरम ख़तीब!" अज़ाउद्दीन बोल पड़ा-- "आप अपने मज़हब और अपनी मस्जिद से सरोकार रखें। जंगी उमूर और सल्तनतों के मुआमिलात को आप नहीं समझ सकते। आप हमारा दिल और हमारा जज़्बा तोड़ने की कोशिश न करें। हम उन अनासिर से माला माल हैं जिन से जंग जीती जा सकती है।"

"अगर आप जंग को मज़हब और मस्जिद से अलग करके लड़ेंगे तो न दिल आपका साथ

देगा न जज़्बा।" ख़तीब ने कहा– "आप ने सही फ़रमाया कि मैं जंगी उमूर से क़ासिर हूं लेकिन मैं यह ज़रूर जानता हूं कि जंग सिर्फ़ हथियारों और घोड़ों से नहीं जीती जा सकती, और जंग उस अस्करी क़ाबिलियत से भी नहीं जीती जा सकती जिस पर आप को नाज़ है और जिसके भरोसे पर आप क़ुर्आन के एहकाम की ख़िलाफ़ वर्ज़ी के मुर्तकिब हो रहे हैं। एक उन्सर और भी है जो फ़तह को शिकस्त में बदल दिया करता है।"

सबने चौंक कर उसकी तरफ़ देखा– "जिस कौम का हुक्मरान ख़ुशामद पसन्द हो जाये वह अपने साथ कौम और मुल्क को भी ले डूबता है। वह हुकूमत के उमूर ख़ुशामदियों और ग़ुलामाना ज़ेहीनियत रखने वालों के हवाले करदे तो वह एक आज़ाद ख़ुद्दार कौम को भूखी, नंगी और ग़ुलाम रिआया में बदल देते हैं और जब हुक्मरान फ़ौज की कमान ख़ुशामदी सलारों को दे देते हैं तो मुल्क को दुश्मन खा जाता है। ख़ुशामदी सालार अपने मातेहतों से ख़ुशमद करवाते हैं, फिर उनका मक़सद कौम और मुल्क के लिए लड़ना नहीं बल्कि हुक्मरान की ख़ुश्नूदी हासिल करना बन जाता है। मैंने आपके इस दरबार में देखा है कि दोनों सालारों ने आप की हां में हां मिलाई है और ऐसी जज़्बाती बातें की हैं जो जंगजू नहीं किया करते। दोनों ने आपके फ़ैसले और इरादों की तारीफ़ तो कर दी है लेकिन आप को ख़तरों से ख़बरदार नहीं किया। उन्होंने आपको यह मश्वरा नहीं दिया कि सलीबी तुम सबको घेरे में लिए हुए हैं। मस्जिदे अक़्सा पर कुफ़्फ़ार का क़ब्ज़ा है। लिहाज़ा इन हालात में बेहतर होगा कि आप गुमश्तगीन और हलब के उमरा वग़ैरह सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास जायें और अगर आप ही सच्चे हैं तो उसे झूठा और सुल्तानी का लालची साबित करें......

"मगर आप के सालारों ने आप को ऐसा कोई मश्वरा नहीं दिया। आप के सालारों ने आप को यह भी नहीं बातया कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अलरिस्तान के पहाड़ी इलाक़े को अड्डा बना कर अपने दस्ते दूर दूर तक इस तरह फैला दिये हैं कि आप उसे मुहासिरे में लेने के ख़्वाब भी नहीं देख सकते। आप उस के छापामारों से अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं लेकिन आप के सालारों ने आपकी आंखों पर पट्टी बांध कर यह पहलू आप की नज़रों से ओझल कर दिया है कि अय्यूबी के जासूस और छापामार आपके सीने से राज़ निकाल कर ले जा सकते हैं और आप के हरम की लड़कियां उठा ले जा सकते हैं। आप की फ़ौज यहां से कूच करेगी तो सलाहुद्दीन अय्यूबी को आप की फ़ौज की रफ़्तार, तादाद और कूच की सिम्त का इल्म हो जायेगा।"

"सुल्ताने मुसिल!" एक सालार ने ग़ुस्से में आकर कहा– "क्या हम अपनी तौहीन बर्दाशत करते रहें? मस्जिद में दिन रात बैठ कर अल्लाह हू, अल्लाह हू का विर्द करने वाला हमारा उस्ताद बनने की जसारत कर रहा है। यह आप के फ़ैसले की मुख़ालिफ़त करके हमारे सामने आपकी तौहीन कर रहा है।"

"मुझे सुन लेने दो।" सैफ़ुद्दीन ने तन्ज़िया कहा– "उसके बाद आप को यह भी बताना होगा कि आप की वफ़ादारी किसके साथ हैं। हमारे साथ या सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ।"

"मेरी वफ़ादारियां अल्लाह औरउसके रसूल सल्ल0 के साथ हैं।" ख़तीब ने अज़ाउद्दीन

से कहा– "मैं आप की तारीफ़ इतनी सी करूंगा कि आप ने अपने भाई को दो चार बातें तो हकीकत के रंग में बताई हैं। बाकी आप ने भी दिमाग़ और आंखें बन्द करके बात की है। इमादुद्दीन भी आपका भाई है। कभी सोंचा है आपने कि वह सलाहुद्दीन अय्यूबी का दोस्त क्यों है और आप की हिमायत के लिए क्यों नहीं आया?"

"आप हमारे ख़ानदानी मामिलात में दख़ल न दें।" अज़ाउद्दीन ने कहा– "आप दर असल यह हम पर साबित करना चाहते हैं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ख़ुदा का भेजा हुआ पैग़म्बर है और हम सब को उसके आगे सज्दे करने चाहिए। आप को सिर्फ़ यह कहा गया था कि कुर्आन से फ़ाल निकाल कर बतायें कि हमारी यह मुहिम कामयाब रहेगी या नाकाम।"

"कुर्आन अपना हुक्म सादिर कर चुका है।" ख़तीब ने आवाज़ में जोश पैदा करते हुए कहा– "अब मै। आप के सामने हकीकत पूरी तरह बेनकाब करता हूं। सलाहुद्दीन अय्यूबी ख़ुदा का भेजा पैग़म्बर नहीं, वह एक तूफ़ान है, एक सैलाब है जो कुफ़्र को घास की सुखी हुई पत्तियों की तरह बहा ले जाने के लिए दमिश्क से उठा है। आप सब दरख़्त से टूट कर गिरी हुई टहनियां हैं। आप के पत्ते मुरझा रहे हैं जो झड़कर उस तूफ़ान के साथ ग़ायब हो जायेंगे। अय्यूबी ने आप पर चढ़ाई नहीं की। अप उसके रास्ते में आ गये हैं। आप का हश्र वही होगा जो सैलाब के रास्ते में आने वालों का होता है।"

"ख़तीब!" सैफुद्दीन ने गरज कर कहा– "मेरे दिल से अपना एहतराम न निकालो।"

"तुम!........सैफुद्दीन!.......ख़तीब ने बारोब आवाज़ में कहा– "तुम ज़मीन के इस ज़रा से ख़ित्ते के बादशाह हो। डरो उस की ज़ात से जो दोनो जहां का बादशाह है। मेरा एहतराम न करो। मेरे मुंह पर थूक दो मगर अपने रसूल सल्ल० के रास्ते से न हटो। तुम पर बादशाही का नशा तारी है। इन बे वकार सालारों ने और तुम्हारी हुकूमत के ओहदेदारों ने तुम्हे ख़ुश रखने के लिए तुम्हें बादशाह बना डाला है। तुम नहीं समझते कि यह महज़ ख़ुशामद है और तुम बादशाह नहीं हो। तुम नहीं जानते कि यह बेवकार ख़ुशामदी तुम्हारे दुश्मन हैं, अपनी क़ौम के और अपने मुल्क के दुश्मन हैं। तुम पर ज़वाल आयेगा तो यह तुम्हें पहचानने से भी इन्कार कर देंगे और उस के पापोश चाटेंगे जो तुम्हारी गद्दी पर बैठेगा। मुझे ग़ुस्से से न देख सैफ़ुद्दीन! अपना घर दोज़ख़ में न बना। तारीख़ से इबरत हासिल कर। इन ग़ुलामों की ज़ेहीनियत वालों ने एक से एक जाबिर बादशाह को गदा किया है। तारीख़ बताती है कि यह होता आया है और होता रहेगा। अफ़सोस इस पर है कि रसूले मकुबूल सल्ल० की उम्मत भी इस तबाही के रास्ते पर चल पड़ी है। तेरे जैसे बादशाह उम्मते रसूलुल्लाह को तारीख़ की नज़रों से ओझल करके ही दम लेंगे।"

"ले जाओ इसे यहां से।" सैफुद्दीन ग़ुस्से से कांपती आवाज़ में गरजा– "इसे वहां बन्द कर दो, जहां से इसकी अवाज़ मेरी कानों तक न पहुंच सके।"

एक सालार के पुकारने पर दो बॉडीगार्ड आये। उन्हें हुक्म दिया गया कि ख़तीब को कैदख़ाने में ले जायें। उसे जब दोनों बाज़ूओं से पकड़ कर ले जा रहे थे तो सैफुद्दीन को उसकी आवाज़ सुनाई देती रहीं– "बादशाही का लालच मज़हब से बेगाना करता है। ख़ुशामद

पसन्द हुक्मरान मुल्क और क़ौम को बेच खाता है। काफ़िर की दोस्ती दुश्मनी से ज़्यादा ख़तरनाक है। फ़िलिस्तीन मेरे रसूल सल्ल0 का है। तुम्हें काफ़िर इसलिए आपस में लड़ा रहा है कि फ़िलिस्तीन पर उसका क़ब्ज़ा रहे। आपस में लड़ते रहोगे तो क़िब्ला अव्वल तुम पर लानत भेजता रहेगा।"

ख़तीब अलमख़्दूम को घसीट कर ले जा रहे थे और वह बुलन्द आवाज़ से बोलता जा रहा था। बहुत से फ़ौज़ी बाहर निकल आये और आन की आन में यह ख़बर तमाम तर मुसिल में फैल गयी– "ख़तीब अलमख़्दूम पागल हो गय है......ख़तीब को क़ैदख़ाने मे बन्द कर दिया है।" यह आवाज़ें शहर में घूमते फिरते ख़तीब के घर के दरवाज़े में दाख़िल हो गयीं। इस घर में ख़तीब की नौजवान बेटी थी। इस घर में यही दो अफ़राद थे। यह लड़की और उसका बाप ख़तीब। ख़तीब की यह वाहिद औलाद थी। उसकी बीवी अर्सा गुज़रा मर गयी थी। ख़तीब ने दूसरी शादी नहीं की थी। वह उस बेटी के सहारे जी रहा था और बेटी उसके ख़ातिर ज़िन्दा थी।

बहुत सी औरतें उसके घर में चली गयीं। यह घर सब के लिए बड़ा ही क़ाबिल एहतराम था क्योंकि यह ख़तीब का घर था। औरतों ने लड़की से पूछा कि उस के बाप को अचानक क्या हो गया है? क्या वाक़ई वह पागल हो गया है?

"ऐसा होना ही था।" लड़की ने कहा– "ऐसा होना ही था।" उसके अन्दाज़ में ठहराव सा था, अफ़सोस और घबराहट नहीं थी। उसके बाद उसके पास जो भी औरत आई लड़की ने यही कहा– "ऐसा होना ही था।"

❖

मुसिल में ख़तीब को क़ैदख़ाने में डाल दिया गया। हराज़ में दो सालारों शम्सुद्दीन और शादबख़्त को गुमश्तगीन ने क़ैदख़ाने में डाल दिया था। गुमश्तगीन को पहली बार पता चला कि उसके यह दोनों सालार दरअसल सलाहुद्दीन के आदमी हैं और जासूस। इन दोनों को क़ैदख़ाने में डाल कर गुमश्तगीन रात के वक़्त क़ैदख़ाने में गया। शम्सुद्दीन और शादबख़्त को उन काल कोठरियों से निकलवा कर उन्हें उस जगह ले गया जहां क़ैदियों से राज़ उगलवाने के लिए कई एक वहशियाना तरीक़े इख़्तियार किये जाते थे। वहां दो आदमी इस तरह लटके हुए थे कि छत के साथ बंधी हुई रस्सियों से उनकी कलाइयां बंधी हुई थीं। उनके पांव ज़मीन से कोई दो फिट ऊपर थे और टख़्नों के साथ कम व बेश दस दस सेर वज़न के लोहे के ठोस गोले बंधे हुए थे। मौसम सर्द होने के बावजूद उनके जिस्मों से पसीना इस तरह फूट रहा था जैसे उन पर पानी उंडेल दिया गया हो। बाज़ू कंधों से अलग हुए जा रहे थे। वहां ख़ून की बदबू थी और गली सड़ी लाशों का तअफ़्फ़ुन भी।

"इन्हें देख लो।" गुमश्तगीन ने दोनों भाईयों से कहा– "इस क़ैदख़ाने में आने तक तुम मेरी फ़ौजों के मालिक थे। शहज़ादे थे। अब तुम बेकार जज़्बात में उलझ कर इस दोज़ख़ मे आ गये हो। तुम ग़द्दार हो। तुम मेरी आस्तीन में सांपों के तरह पलते रहे हो। मैं तुम्हें अब भी बख़्श देने के लिए तैय्यार हूं। मुझे सिर्फ़ यह बता दो कि जिन लड़कियों को तुमने यहां से

भगया है और जो दो आदमी उनके साथ गये हैं वह कहा गये हैं और यहां से क्या क्या राज़ ले कर गये हैं।" शम्सुद्दीन और शादबख़्त मुस्कुरा दिये और ख़ाममोश रहे। गुमश्तगीन ने कहा– "वह सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास गये हैं। क्या यह झूठ है?" दोनों ने कोई जवाब न दिया। गुमश्तगीन ने कहा– "इन दोनों को देख लो। यह तो जवान हैं इसलिए अभी बर्दाश्त कर रहे हैं। तुम दोनों को मैं ने उनकी तरह लटका कर पांव के साथ वज़न बांध दिया तो तुम थोड़ी देर में अपना सीना खोल कर मेरे आगे रख दोगे। उसके बग़ैर ही मुझे सबकुछ बता दो।"

"वह कोई राज़ नहीं ले गये।" शम्सुद्दीन ने कहा– "यहां कोई राज़ नहीं। तुम्हारे मुतअल्लिक सुल्तान अय्यूबी अच्छी तरह जानता है कि तुम सलीबियों की मदद से उसके ख़िलाफ़ लड़ने की तैय्यारी में हो। अय्यूबी पूरी तैय्यारी करके तुम्हारी सरकोबी के लिए आया है। यहां से कोई क्या राज़ ले जायेगा। राज़ सिर्फ़ यह फाश हुआ है कि हम दोनों भाई तुम्हारी फ़ौज के सालार थे। तुम हमें अपना मुकमद समझते रहे लेकिन हम दरअसल सुल्तान अय्यूबी के आदमी हैं।"

"मैं दूसरा राज़ भी तुम्हें बता देता हूं।" शम्सुद्दीन के भाई शादबख़्त ने कहा– "यह इत्तफ़ाक ऐसा हो गया है कि दो मुसलमान लड़कियां तुम्हारे पास तोहफ़े के तौर पर आ गयीं। हमें पता चल गया कि वह मज़लूम हैं और मुसलमान हैं। तुम्हारा बनाया हुआ क़ाज़ी अबू अलख़ाशिब तुम से पहले लड़कियों को अपने साथ ले जाना चाहता था। हम ने लड़कियों को अपनी बेटियां समझ कर भगा दिया और अबू अलख़शिब ने हमारे लिए ऐसे हालात पैदा कर दिये कि हमने उसे क़त्ल कर दिया और तुम्हें पता चल गया। तुमने हमें क़ैद कर दिया। अगर हम क़ैद न होते तो हमारा इरादा यह था कि जब तुम सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ हमें भेजोगे तो हम पूरी फ़ौज को सुल्तान अय्यूबी के घेरे में ले जाकर हथियार डाल देंगे। हमारी यह आरज़ू पूरी न हो सकी।"

"हम फिर भी कामयाब हैं।" शम्सुद्दीन ने कहा– "तुम हमें सज़ाये मौत दे दो। हमें छत से लटका कर हमारे पांव के साथ बीस सेर वज़न बांध दो हमारे बाज़ू हमारे कंधों से अलग कर दो, हमें अज़ीयत का कुछ एहसास नहीं होगा। अल्लाह की राह पर चलने वालों के लिए तीर फूल बन जाते हैं। जिस्म फ़ना हो जाते हैं रूहें नहीं मरा करतीं। अल्लाह की राह में क़ुर्बान होने वालों की रूहें अल्लाह को अज़ीज होती हैं।"

"मुझे वाअज़ न सुनाओ।" गुमश्तगीन ने कहा– "मुझे वह राज़ बताओ गद्दारों, वह राज़ बताओ जो तुम ने सलाहुद्दीन अय्यूबी को भेजा है।"

"तुम ग़द्दार कहते हो?" शम्सुद्दीन ने कहा– "यही राज़ है तुम जिसे छिपाना चाहते हो कि ग़द्दार कौन है। तुम यह राज़ आने वाली नस्लों से और तारीख़ से भी नहीं छिपा सकोगे कि तुम ग़द्दार हो। तारीख़ पुकार पुकार कर कहेगी कि सलाहुद्दीन अय्यूबी फ़िलिस्तीन को सलीबियों से आज़ाद कराने के लिए निकला था मगर गुमश्तगीन नाम का एक मुसलमान क़िलादार उसके रास्ते मे हाइल हो गया था।"

"तुम इतने पक्के मुसलमान होते तो हिन्दुस्तान हिन्दुओं के हवाले करके नुरूद्दीन जंगी के पास न भागे आते।" गुमश्तगीन ने तन्ज़िया कहा– "तुम गुलाम मुल्क से आये हो।"

"हिन्दुस्तान को हमने हिन्दूओं के हवाले नहीं किया था।" शादबख़्त ने जवाब दिया– "वहां तुम जैसे मुसलमान मौजूद थे जिन्होंने हिन्दूओं से दोस्ती की और तुम्हारी ही तरह अपनी ज़ाती बादशाही के ख़्वाब देखे। बादशाही का नशा उन्हें ले बैठा और हिन्दू सारे मुल्क पर हाथ साफ़ कर गया। अगर मुल्क की क़िस्मत सालारों के हाथ में होती तो आज हिन्दुस्तान अरब की सरज़मीन के साथ मिला हुआ होता मगर वहां की फ़ौज को बादशाहों ने अपना गुलाम बना लिया था।"

"मैं तुम्हें दो दिन और सोंचने का मौका देता हूं।" गुमश्तगीन ने कहा– "अगर मेरे सवालों के जवाब मुझे दे दोगे तो हो सकता है तुम्हें इस जहन्नम से निकाल कर तुम्हारे घरों में तुम्हें नज़र बन्द कर दूं। अगर मुझे मायूस करोगे तो मैं तुम्हें सज़ाये मौत नहीं दूंगा। इन्हीं काल कोठरियों में पड़े गलते सड़ते रहोगे, सोंच लो।" और वह हुक्म देकर कि उन्हें कोठरियों में बन्द कर दिया जाये, चला गया।

❖

गुमश्तीन ने अपने किले में सलीबी मुशीर रखे हुए थे। उसने उन पर वाज़ेह कर दिया कि उनका एक साथी जो क़त्ल हो गया है वह किसी साज़िश का शिकार नहीं हुआ बल्कि वह हरम की एक लड़की के हाथों क़त्ल हुआ है। गुमश्तगीन ने उन्हें यह भी बताया कि उसने अपने दो सालारों को क़ाज़ी के क़त्ल के जुर्म में क़ैदख़ाने में डाल दिया है। उसने उन से मश्वरा लिया कि वह फ़ौरी तौर पर सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ फ़ौज भेजना चाहता है।

"मुझे मालूम नहीं कि उन दोनों सालारों ने कैसे–कैसे राज़ सलाहुद्दीन अय्यूबी को भेज दिये हैं।" गुमश्तगीन ने कहा– "पेश्तर इसके कि वह इन राज़ों से फ़ायदा उठाये हमें हम्ला कर देना चाहिए। उस सूरत में मुझे आपकी मदद की ज़रूरत होगी।"

सलीबी मुशीरों ने मदद का वादा किया और कहा कि वह अपने एक आदमी को आज ही रात सलीबियों के कैम्प को रवाना कर देते हैं। उसी रात एक सलीबी रवाना हो गया।

मुसिल में ख़तीब अल मख़्दूम क़ैदख़ाने की एक कोठरी में बन्द था और उसकी नौजवान बेटी जिसका नाम सायका था, घर में अकेली बैठी थी। दिन भर औरतें उसके पास जाती रही थीं और सायका सबसे यही कहती रही थी– "ऐसा होना ही था।" औरतों ने ग़ौर नहीं किया था कि उससे उसका मतलब क्या है। दो जवान लड़कियों ने उसके उन अल्फ़ाज़ और अन्दाज़ को नज़र अन्दाज़ न किया। उन्हें कुछ शक हुआ। रात जब सायका घर में अकेली थी यह दोनो लड़कियां उसके घर में दाख़िल हुयीं। सायका उन्हें अच्छी तरह नहीं जानती थी।

"तुम सारा दिन यह क्यों कहती रही हो कि ऐसा होना ही था?" एक लड़की ने पूछा।

"ख़ुदा को ऐसे ही मंज़ूर था।" सायका ने जवाब दिया– "इसके सिवा मैं और क्या कह सकती हूं।"

कुछ देर ख़ामोशी तारी रही। आख़िर दूसरी लड़की ने कहा– "अगर इससे तुम्हारा

मतलब कुछ और है तो साफ़ बतादो, हो सकता है कि हम कुछ मदद कर सकें।"

"ख़ुदा के सिवा मेरी कोई मदद नहीं कर सकता।" सायका ने कहा– "मेरे वालिद मोहतरम ने कोई इख़्लाकी जुर्म नहीं किया। उन्होंने अमीर मुसिल को कोई खरी बात कह दी होगी। वह हमेशा हक बात कहा करते हैं। इसी लिए मैं कहती हूं कि ऐसा होना ही था क्योंकि वह ख़ुशामद करने वाले इन्सान नहीं।'

"यह तो ख़ुदा ही बेहतर जानता है कि उन्होंने क्या कहा और क्या किया है।" दूसरी लड़की ने कहा– "हम यह कहना चाहती हैं कि उन्होंने सलाहुद्दीन अय्यूबी की हिमायत में कोई बात कह दी होगी। यह तो तुम ही बता सकती हो कि वह मुसिल के वाली के हामी थे या सलाहुद्दीन अय्यूबी के।"

"तुम जिसे सच्चा समझती हो वह उसी के हामी थे।" सायका ने मुस्कुराकर पूछा– "तुम किस की हामी हो?"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी की।" दोनों लड़कियों ने जवाब दिया।

"वह भी अय्यूबी के हामी थे।" सायका ने जवाब दिया–"सैफ़ुद्दीन को पता चल गया होगा।

"वह ज़ुबानी हिमायत करते थे या अमलन भी?" एक लड़की ने पूछा।

"क्या तुम जासूसी करने आयी हो?" सायका भड़क कर बोली– "क्या मुसिल का नौजवान ख़ून भी कुफ़्फ़ार का हामी हो गया है?"

"हां!" एक लड़की ने जवाब दिया– "हम दोनों जासूसी करने आयी हैं और तुम्हें यह यकीन दिलाने आई हैं कि मुसिल का नौजवान ख़ून कुफ़्फ़ार का हामी नहीं बल्कि कुफ़्फ़ार के पांव तले से अरब की ज़मीन निकालने के लिए बेताब है और इस अज़्म पर अमल करके दिखाने को उबल रहा है। तुम हमारी ज़ेहानत का अन्दाज़ा इससे करो कि तुम्हारे उन अल्फ़ाज़ को कि 'ऐसा होना ही था' हमारे सिवा कोई भी नहीं समझ सका। हम समझ गयी थीं कि तुम्हारे वालिद मोहतरम सुल्तान अय्यूबी के हामी होंगे और उनकी सरगर्मियों का इल्म वालिये मुसिल को हो गया होगा।"

कुछ देर के तबादला ख़्यालात के और बहस के बाद सायका को यकीन हो गया कि यह दोनों लड़कियां उसे धोखा नहीं दे रहीं। उसने उन से पूछा कि वह क्या करना चाहती हैं और वह क्या कर सकती हैं।

"सबसे पहले यह मालूम करना है कि मोहतरम ख़तीब को कैदख़ाने में परेशान तो नहीं किया जा रहा?" एक लड़की ने कहा– "अगर परेशान किया जा रहा है तो उन्हें कैदख़ाने से ग़ायब करने का इन्तज़ाम किया जायेगा।"

"यह कैसे मालूम किया जा सकता है कि कैदख़ाने में उनके साथ क्या सलूक किया जा रहा है।" सायका ने पूछा।

"हम अपने तौर पर मालूम करने की कोशिश करेंगी" दूसरी लड़की ने कहा– "तुम वालिये मुसिल के पास जाओ और अपने वालिद से मिलने की अर्ज़ करो। अगर उसने इजाज़त

न दी तो हम कुछ करेंगी।"

"मैं कल सुबह जाऊंगी।" सायका ने कहा– "और यह पूछूंगी कि मेरे बाप का जुर्म क्या है?"

लड़कियां जाने के लिए उठीं तो उन्हें ख़्याल आ गया कि सायका घर में अकेली है। उन्होंने उसे कहा कि वह रात उसके साथ गुज़ारेंगी लेकिन सायका तन्हाई मे कोई डर या ख़तरा महसूस नहीं कर रही थी। लड़कियों ने अपने घरवालों को जाकर बताया कि वह सायका के पास रहेंगी क्योंकि वह अकेली है। वह उसके पास चली गयीं....सर्दियों का मौसम था वह कमरे में सोयीं। आधी रात के वक़्त एक लड़की बैतुलख़ोला में जाने के लिए बाहर निकली तो सेहन से आगे जो बारामदा था, वहां उसे एक स्याह साया हरकत करता नज़र आया और वहीं कहीं ग़ायब हो गया। लड़की डरी नहीं। वह कमरे में चली गयी। अपनी सहेली को जगाया और उसे बातया। दोनों के पास ख़ंजर थे। ख़ंजर हाथों में लेकर वह बरामदे में गयीं। इधर उधर देखा उन्हें कुछ भी नज़र नहीं आया।

वह सेहन में आयीं। उन्होंने सायका को नहीं जगाया था लेकिन सायका की आंख खुल गयी। दोनों सहेलियों को कमरे से ग़ैर हाज़िर देख कर वह बाहर चली गयी। सहेलियों को पुकारा। वह आयीं तो उन्होंने उसे बताया कि बरामदे में एक साया हरकत कर रहा था। किसी इन्सान का मालूम होता था।

"चलो चल कर सो जाओ।" सायका ने उनसे कहा– "तुम जब भी बाहर निकलोगी तुम्हें एक साया हिलता डुलता नज़र आयेगा आगे जाकर किसी साये को ख़ंजर न मार देना।"

"साये कैसे हैं?" एक लड़की ने पूछा– "इन्सान नहीं यह?"

"यह जो कुछ भी हैं मुझे इन से कोई ख़तरा नहीं। सायका ने कहा– "तुम भी उनसे न डरो।"

मगर अब दोनों लड़कियां डरने लगीं थी। वह सिर्फ इन्सानों से नहीं डरती थीं। यह साये सायका के कहने के मुताबिक इन्सानों के नहीं तो फिर यह जिन्न ही हो सकते थे। सायका ने कहा– "यह मेरे वालिद मोहतरम के अक़ीदतमंदों के साये हैं। उन्हें जिन्न ही समझ लो। मैं उनके क़रीब कभी नहीं गयी। मुझे यकीन है कि यह मेरी हिफ़ाज़त के लिए यहां घूमते फिरते रहते हैं।"

"मोहतरत ख़तीब बर्गुज़ीदा शख़्सियत हैं।" एक लड़की ने कहा– "उनके अक़ीदतमंद जिन्न भी होंगे।"

"कुछ ऐसी ही बात है।" सायका ने कहा– "इनसे डरना नहीं, और इनके क़रीब भी न जाना।"

❖

उस रात ख़तीब कोठरी में बंद था। उसे अभी कुछ इल्म नहीं था कि उसके साथ कैसा सुलूक किया जायेगा। एक संतरी उसकी कोठरी के सामने से गुज़रा। ख़तीब ने उसे रोक कर कहा– "मुझे क़ुर्आन की ज़रूरत है। क़ैदख़ाने में क़ुर्आन तो ज़रूर होगा।"

"यहां?....कुर्आन?" संतरी ने तन्ज़िया लहजे में कहा– "यहां कुर्आन पढ़ने वाले नहीं आया करते, यह जहन्नम है। यहां गुनहगार आते हैं। सो जाओ" संतरी आगे चला गया।"

ख़तीब हाफ़िज़े कुर्आन नहीं था। उसे बहुत सी सूरतें और आयतें ज़ुबानी याद थीं। उसने सूरह अर्रहमान की तिलावत बुलन्द आवाज़ से शुरू कर दी। एक तो सूरह रहमान का अपना असर है जो पहाड़ों का भी जिगर चाक कर डालता है, उसके साथ ख़तीब इब्ने अल मख़्दूम की सुरीली आवाज़ का सेहर अंगेज़ सोज़। कैदख़ाने के मुकद्दस माहौल पर जैसे वज्द तारी हो गया हो। उसने सुरह मुबारक ख़त्म की तो उसे महसूस हुआ कि वह अकेला नहीं। दरवाज़े की तरफ़ देखा। वर्दी में जेल का कोई ओहदेदार खड़ा था। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे।

"तुम कौन हो?" ओहदेदार ने ख़तीब से पूछा– "छः साल से इस कैदख़ाने में नौकरी कर रहा हूं। कुर्आन की आवाज़ पहली बार सुनी है और ऐसी आवाज़ भी पहली बार सुनी है जो मेरे दिल में उतर गयी है। मैंने कुर्आन नहीं पढ़ा, हालांकि यह मेरी मादरी ज़ुबान में लिखा गया है।"

"मैं मुसिल का ख़तीब हूं।" ख़तीब ने जवाब दिया।

"और आप का जुर्म?" ओहदेदार ने हैरत से चौंक कर पूछा।

"सिर्फ यह कि कुर्आन की ज़ुबान में बात किया करता हूं।" ख़तीब ने जवाब दिया– "मेरा जुर्म यह है कि मैंने अपने बादशाह का हुक्म न माना और कुर्आन के हुक्म को मुकद्दम जाना।"

"फिर पढ़ो।" ओहदे दार ने इल्तिजा के लहजे में कहा– "मेरे अन्दर एक ज़हर है जो कुर्आन के अल्फ़ाज़ ने और आप की आवाज़ ने निकालना शुरू कर दिया है। मैं आप को हुक्म नहीं दे रहा। इल्तिजा है।"

ख़तीब ने पहले से ज़्याद वज्द आफ़रीन आवाज़ में सूरह रहमान पढ़ी। ओहदेदार कोठरी की मोटी–मोटी सलाख़ों को पकड़े खड़ा रहा और उसके आंसू बहते रहे। ख़तीब खामोश हुआ तो ओहदेदार ने आंखे बन्द करके धीमी आवाज़ में सूरह रहमान की बाज़ आयात दुहरानी शुरू कर दीं।

"अगर आप की आवाज़ में जादू है तो आप के मोतकिद जिन्नात भी होंगे।" ओहदेदार ने कहा– "मैं एक बात पूछना चाहता हूं। मैंने सुना है कि कुर्आन से फ़ाल निकाली जाती है। कोई सवाल पूछो तो जिन्नात कुर्आन के लफ़्ज़ों मे जवाब दे देते हैं।"

"लेकिन सवाल यह है कि तुम्हारा सवाल क्या है!" ख़तीब ने कहा– "कुर्आन सिर्फ़ ईमान वालों को मुज़्दा सुनाया करता है।"

"और जिसका ईमान पुख़्ता न हो?"

"उसके सीने में ईमान की कंदील रौशन करता है।" ख़तीब ने कहा– "तुम्हारा सवाल क्या है?"

"मेरी एक आरज़ू है।" ओहदेदार ने कहा– "मेरे सीने में आग जल रही है। मालूम नहीं यह ईमान की कंदील का शोला है या यह आग इन्तकाम की है मैं उस फौज में शामिल होना

चाहता हूं जो योरूशलम को फतह करेगी। मुझे इन्तकाम लेना है।"

अगर योरूशलम की फतह को तुम ईमान कहो तो वहां जल्दी पहुंचोगे।" ख़तीब ने कहा– "इन्तकाम ज़ाती फेल है, ईमान अल्लाह का हुक्म है.....तुम इन्तकाम क्यों कह रहे हो? और योरूशलम क्यों कह रहे हो? बैतुलमुकद्दस कहो।"

"मैंने किसी कैदी के साथ ऐसी बातें कभी नहीं की थीं।" ओहदेदार ने कहा– "आप ख़तीब हैं। आप के सामने अपना दिल खोल कर रखना चाहता हूं। मेरी रूह को तस्कीन की ज़रूरत है। मैं बैतुल मुकद्दस का रहने वाला हुं। वहां सलीबियों की हुक्मरानी है। मुसलमानों को वहां भेड़ बकरियां और जानवर समझा जाता है। सलीबी जिस मुसलमान को चाहें कत्ल कर दें, जिसे चाहें कैदखाने में डाल दें। बेगार का रिवाज तो आम है। जिस घर में लड़की जवान हो उनका दम तो खुश्क रहता है। वहां के मुसलमान सुल्तान अय्यूबी की राह देख रहे हैं। सात साल गुज़रे, एक रोज़ एक सलीबी ने मुझे पकड़ लिया और साथ ले गया। उसका कोई सामान उठाकर उसके घर तक ले जाना था। उसने मुझे सामान उठाने को कहा तो मैनें इन्कार कर दिया। उसने मेरे मुंह पर थप्पड़ मार कर कहा मुसलमान होकर तुम मेरा हुक्म न मानने की जुर्रत कर रहे हो? मैंने उसके मुंह पर घूंसा मारा। वह गिरा तो मैंने उसके सर के बाल मुठ्ठी में लेकर उसे उठाया और दूसरा घूंसा मारकर उसे फिर गिरा दिया...

"इतने में मुझे पिछे से किसी ने जकड़ लिया। फिर सलीबियों का हुजूम जमा हो गया। सिपाही भी आ गये और मुझे बेगार कैम्प में ले गये। मैनें वहां तीन दिन गुज़ारे और तीसरी रात मैंने एक संतरी को पीछे से दबोचा और उसी के खंजर से उसका पेट चाक करके भाग निकला। मैं घर पहुंचा ताकि रात ही रात सारे कुम्बे को बैतुल मुकद्दस से भगा कर ले जाऊं वरना सबके पकड़े जाने का ख़तरा था, मगर मेरा घर खण्डहर बन चुका था। अन्दर गया तो घर जला हुआ था। मैंने एक मुसलमान पड़ोसी के दरवाज़े पर दस्तक दी। वह डरता–डरता बाहर आया। मैंने पूछा कि मेरे घर वाले कहां भाग गये हैं? उसने यह ख़बर सुनाकर मेंरे पांव तले से ज़मीन निकाल दी कि मर्दो को सलीबी पकड़ ले गये हैं और मेरी दोनों कुंवारी बहनों को सलीबी फौजी ले गये थे फिर उन्होने घर को आग लगा दी.......

"मेरे दिल पर जो गुज़री उसका आप तसव्वुर कर सकते हैं। मुझे मालूम था कि मुझे बहने वापस नहीं मिल सकतीं और मैं यहां रूका रहा तो पकड़ा जाऊंगा और सलीबी मुझे कत्ल कर देंगे या कैद ख़ाने में बन्द करके सारी उम्र अज़ीयतें देते रहेंगे। मैं किसी मुसलमान के घर छिपने की गलती नहीं कर सकता था क्यों वह पूरा घराना मारा जाता। मैं रात को ही बैतुल मुकद्दस से निकल आया। ख़ून खौल रहा था मगर मैं बेबस था। मैंने इस तरफ का रूख़ कर लिया। सुबह तुलूअ हुई तो मैंने एक सलीबी को देखा जो घोड़े पर सवार मेरे रास्ते पर सामने से आ रहा था। वह सिपाही नहीं था। मैंने उसे रोक लिया और उसे बातों में उलझाकर घोड़े से उतार लिया। उसका एक पांव रिकाब में और दूसरा ज़मीन पर था कि मैंने पीछे से उसकी गर्दन अपने बाज़ू के घेरे में लेली। उसके कमरबंद के साथ छोटी तलवार थी वह खींच ली और उसे कत्ल कर दिया। उसके घोड़े पर सवार होकर मैंने घोड़े को ऐड़ लगा दी.......

"यह दूसरा सलीबी था जिसे मैंने कत्ल किया। उससे पहले मैं एक संतरी को कत्ल कर आया था लेकिन मेरे दिल को इत्मिनान न हुआ। मैं तमाम सलीबियों को कत्ल करने के लिए पागल हुआ जा रहा था। मुझे याद नहीं कि मैंने कितने दिन और कितनी रातें सफ़र किया और कहां–कहां मारा–मारा फिरता रहा। मुझे भूख महसूस न हुई, प्यास का एहसास तक न रहा। बहनें याद आती थीं और मैं घोड़ा रोक कर सलीबी से छीनी हुई तलवार हाथ में लेकर बैतुलमुकद्दस की तरफ़ देखने लगता था। मेरा जिस्म कांपने लग जाता था। मैंने कई बार ख़ुदा को पुकारा और ख़ुदा से पूछा कि उसने मुझे कौन से गुनाह की सज़ा दी है। अगर मैं गुनहगार था तो सज़ा मुझे मिलनी चाहिए थी, मेरी बहने और मेरा कमसिन छोटा भाई बेगुनाह थे। मुझे ख़ुदा ने कोई जवाब न दिया। मैंने सज्दे में गिर कर ख़ुदा को पुकारा और मायूस हुआ। मैंने ख़ुदा से यह इल्तिजा भी की कि मुझे सकून मिल जाये या मेरे अन्दर इन्तक़ाम की आग बुझ जाये। मेरा एहसास मुर्दा हो जाये.....

"मुसिल के एक गांव में पहुंच गया जहां यह ख़तरा नहीं था कि सलीबी मुझे पकड़ लेंगे लेकिन मेरे दिल को किसी बेरहम के हाथों ने ऐसा जकड़ रखा था कि मैं हर लम्हा बेक़रार और बेचैन रहता था। मैं मस्जिद में चला गया। इमाम से कहा कि वह मुझे दिखादे कि ख़ुदा कहां मिलेगा, मेरी रूह को सुकून कहां मिलेगा। उसने मेरी कोई मदद न की। मै वहां से एक और गांव में चला गया। फिर वहां से भी चला गया। उसके बाद यही याद आता है कि मैं मस्जिदों में ख़ुदा को ढूंढता फिरता रहा। इमामों से रूहानी सुकून मांगता रहा मगर किसी ने मेरी दस्तगीरी न की। मुझे किसी ने ख़ुदा का अता पता न बताया। किसी ने कोई तरीक़ा न बताया जिस से मैं ख़ुदा से हम कलाम हो सकूं और उससे रूहानी सुकून मांग सकूं। रातों को अक्सर बहनों को ख़्वाब में देखता था। वह रोती नज़र आती थीं। मुझे उनकी सिसकियां और हिचकियां उस वक़्त भी सुनाई देती थीं जब जाग उठता था। रोज़ बरोज़ मेरे अन्दर यह एहसास पैदा होता गया कि मेरी बहने मुझ पर लानत भेज रही हैं.....

"किसी ने बताया कि सलीबियों से इन्तक़ाम लेना है तो फ़ौज में भर्ती हो जाओ। सुल्तान नुरूद्दीन ज़ंगी फ़िलिस्तीन को आज़ाद कराने के लिए लड़ रहा है। यह तो मुझे मालूम था कि मुसलमान और सलबियों की लड़ाइयां हो रही हैं। हमें बैतुल मुकद्दस में मालूम हो जाता था कि कौन सी जंग में शिकस्त हुई है। बैतुल मुकद्दस में सलीबी जब वहां के मुसलमान बाशिन्दों पर ज़ुल्म व सितम अचानक ज़्यादा कर देते थे तो हम समझ जाते थे कि किसी मैदान में उन्हें शिकस्त हुई है जिस का इन्तक़ाम वह यहां के निहत्थे और बेबस मुसलमानों से ले रहे हैं। फिर हमें वहां सलाहुद्दीन अय्यूबी का नाम सुनाई देने लगा। यह नाम इतना मशहूर हुआ कि वहां के सलीबी बाशिन्दे इस नाम से डरते थे और उस से नफ़रत करते थे। यह भी पता चला कि सलाहुद्दीन अय्यूबी तूफ़ान की तरह आ रहा है मगर व न आया। उसकी बजाये मैं यहां सीने में एक ज़ख़्म लेकर आ गया। मै फ़ौज में भर्ती हो गया लेकिन मुहाज़ पर भेजने के बजाये मुझे यहां क़ैदख़ाने में भेज दिया गया, यहां मुझे तरक्क़ी भी मिल गयी...

यहां मैंने इन्सानों पर ज़ुल्म होते देखा उससे कांप–कांप उठता था। यहां इन्सानो की

हड्डियां तोड़ी जाती हैं। बैतुल मुकद्दस में सलीबी मुसलमान का यही हश्र करते थे, यहां मुसलमान को मुसलमानों पर वही ज़ुल्म करते देखा। मुझे बताया गया कि यहां बेगुनाहों को भी लाया और अज़ीयत में डाला जाता है। उन का गुनाह वही है जो आप ने किया है। मैं समझ गया हूं कि आप को यहां लाकर क्यों बन्द किया गया है। यह काम मुझे भी करना पड़ा। मैंने भी इन्सानों को ऐसी–ऐसी अज़ीयत दीं जो आपको सुनाऊं तो बेहोश हो जायें। मेरे साथी पूरी तरह वहशी दरिन्दे बन गये हैं। उनमें इन्सानियत सिर्फ़ इतनी रह गयी है कि वह इन्सानों की तरह चलते फिरते और बातें करते हैं। मैं उन से इस लिहाज़ से मुख़्तालिफ़ हूं कि मैं चोरी छिपे से कैदियों के साथ हमदर्दी की दो चार बातें कर लेता हूं। उनसे पूछता हूं कि उनका जुर्म क्या है, मगर हमदर्दी के इस जज़्बे ने मेरी रूह से बोझ उतारने की बजाये न जाने कैसा बोझ डाल दिया है। मुझे सकून नहीं मिलता। मुझे ख़ुदा नज़र नहीं आता, मेरी आंखों के सामने से मेरी बहनें हटती नहीं। मैं फिर यही महसूस करता हूं कि जब तक सलीबियों से इन्तक़ाम नहीं लूंगा मैं इसी तरह बेचैन रहूंगा......

"आज आप की आवाज़ में कुर्आन के यह अल्फ़ाज़ सुने– "गुनहगार अपने चेहरों से ही पहचान लिये जायेंगे, फिर वह बालों और पांवों से पकड़ लिये जायेंगे....तुम अपने परवर दिगार कि कौन कौन सी नैमत को झुठलाओगे।

यही जहन्नम है जिसे गुनहगार लोग झुठलाते थे। वह दोजख़ और खौलते हुए गर्म पानी के दर्मियान घूमते फिरेंगे। तो मालूम नहीं मेरे दिल में क्या हलचल बपा हो गयी है। मुझे ऐसे महसूस होने लगा है जैसे वह राज़ इन्हीं लफ़्ज़ों में है जो ढूंढता फिर रहा हूं।" उसने सलाख़ों में हाथ अन्दर करके ख़तीब इब्ने अल मख़्दूम का चुगा पकड़ लिया, और बेताब होकर बोला– "मुझे बताओ यह राज़ क्या है। क्या मेरे दिमाग़ पर ख़ून सवार है? अगर ऐसा है तो मैं इन्तक़ाम किस तरह लूंगा? मैं पागल तो नहीं हो जाऊंगा? अगर ख़ुदा है तो उस से पूछ कर मुझे बताओ कि मेरे सवालों का जवाब क्या है?"

"तुम्हारे दिमाग़ पर ख़ून सवार है।" ख़तीब ने कहा– "तुमने ख़ुदा की आवाज़ सुन ली है। मेरी आवाज़ में ख़ुदा बोल रहा था। तुम इन्तक़ाम लेने को बेताब हो लेकिन यहां तुम उसी तरह बेहाल और बेचैन रहोगे। तुम जिस फ़ौज के मुलाज़िम हो वह कभी बैतुलमुक़द्दस नहीं जायेगी।"

"क्यों?"

"क्योंकि यह फ़ौज पहले सुल्तान अय्यूबी को शिकस्त देगी।" ख़तीब ने जवाब दिया– "फिर सुल्तान अय्यूबी को क़त्ल किया जायेगा और फिर सलीबियों के साथ दोस्ती मिल जायेगी।"

ओहदेदार की आंखें खुलती गयीं। ख़तीब उसे बता रहा था कि मुसलमान हुक्मरान क्या कर रहे हैं। ओहदेदार ने कहा– "मैं कुछ अर्से से इस क़िस्म की बातें सुन रहा था लेकिन यक़ीन नहीं आता था। मैं तस्लीम करने को तैय्यार नहीं था कि हमारे हुक्मरान कौम की उन बेटियों को भूल जायेंगे जो सलीबियों की बर बरियत का निशाना बनी हैं और जिन्हें उन्होंने

अग़्वा करके न जाने कहां से कहां पहुंचा दिया है।"

"वह भूल चुके हैं।" ख़तीब ने कहा– "वह इस हद तक भूल चुके हैं कि अग़्वा की हुई मुसलमान लड़कियां उन्हें तोहफ़े के तौर पर पेश की जाती हैं और यह उन्हें अपने हरमों की ज़ीनत बनाते हैं। इसलिए सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के दुश्मन बन गये हैं क्योंकि वह कुर्आन के एहकाम का पाबन्द है और क़ौम की इस्मत का इन्तक़ाम लेना चाहता है।

उसे यह भी याद नहीं रहा कि उसका कोई घर है या नहीं। उसकी उम्र सेहराओं और पहाड़ियों में गुज़र रही है। मेरा भी जुर्म यही है कि मैंने वालिये मुसिल को कुर्आन के एहकाम याद दिला दिए थे और उसे कहा था कि एक मर्दे मुजाहिद के ख़िलाफ़ लड़ोगे तो शिकस्त खाओगे। कुर्आन के जिन मुक़द्दस अल्फ़ाज़ ने अभी–अभी तुम पर जादू किया है, मैंने यही अल्फ़ाज़ मुसिल के बादशाद सैफ़ुद्दीन को याद दिलाये थे। मैंने उसे कहा था कि तुम जैसे गुनहगार चेहरों से पहचाने जायेंगे और बालों और पांव से पकड़ लिए जायेंगे। मैंने उसे कुर्आन का यह हुक्म भी सुनाया कि तुम दिमाग़ से बादशही का नशा नहीं उतारोगे तो दोज़ख़ और खौलते हुए गर्म पानी में घूमते फिरोगे। मगर उसने ख़ुदा का हुक्म मानने से इन्कार कर दिया और अपने नफ़्स का हुक्म माना। उसने मुझे क़ैदख़ाने में बन्द करवा दिया।"

"आप को यहां बहुत तकलीफ़ होगी।" ओहदेदार ने कहा– "मैं जो ख़िदमत कर सका करूंगा।"

"यह दुनियावी और जिस्मानी अज़ीयतें मुझे कोई तकलीफ़ नहीं दे सकतीं।" ख़तीब ने कहा– "तुम ने मेरी आवाज़ में जो सोज़ और तासिर महसूस किया है वह मेरी रूह की आवाज़ थी। दुनिया के इस जहन्नम में मैं मुतमईन हूं। मेरी आवाज़ अल्लाह की आवाज़ है। मुझे कोई तकलीफ़ नहीं। हां, एक ग़म है जो मुझे परेशान करता है। मेरी बेटी जवान है और यह मेरी वाहिद औलाद है। मेरी बीवी मुद्दत हुई मर गयी। मैंने उस बच्ची की ख़ातिर दूसरी शादी नहीं की। हम एक दूसरे की ख़ातिर ज़िन्दा हैं। वह घर में अकेली है।"

"मैं उसकी हिफ़ाज़त करूंगा।" ओहदेदार ने कहा।

"सबकी हिफाज़त करने वाला ख़ुदा है।" ख़तीब ने कहा– "मैं तुम्हें अपने घर का पता बता देता हूं। मेरी बेटी सायक़ा से कह देना कि साबित क़दम रहे और मेरे मुतअल्लिक़ फ़िक्र न करे। अगर यहां कुर्आन पढ़ने की इजाज़त हो तो मेरी बेटी से मेरा कुर्आन ले आना।"

ओहदेदार अलस्सुबह ख़तीब के घर चला गया और उसकी बेटी को तसल्ली दी कि अपने बाप के मुतअल्लिक़ वह परेशान न हो। उसने साएक़ा को बताया कि वह उस के बाप से बहुत मुतासिर हुआ है, उस की जो मदद हो सकता है करेगा लेकिन ऊपर के हुक्म के ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं कर सकता क्योंकि क़ैदख़ाने का अदना मुलाज़िम है। उसने लड़की से कहा कि मोहतरम ख़तीब का कुर्आन दे दे। लड़की ने कुर्आन देने से पहले ओहदेदार के साथ बहुत सी बातें करके यक़ीन कर लिया कि वह तहे दिल से और जज़्बे के तेहत उसके बाप की मदद करना चाहता है। वह जज़्बाती लगता था। उसने जब यह कहा कि वह उसकी ख़ातिर और उसके बाप की ख़ातिर जान पर भी खेल जायेगा तो साएक़ा ने उसे

कहा– "आप को यह तो मालूम हो गया है कि मेरे वालिद को किस जुर्म में क़ैद किया गया है। मुझे डर है कि सैफुद्दीसन उन्हें अज़ीयत ख़ाने में डाल देगा ताकि उनके दिल से सलाहुद्दीन अय्यूबी की हिमायत निकल जाये। क्या यह मुम्किन नहीं हो सकता कि आप उन्हें क़ैदख़ाने से फ़रार होने में मदद दें? हम दोनों मुसिल से ग़ायब हो जायेंगे।"

ओहदेदार मुस्कुराया और बोला– "जो अल्लाह को मंजूर होगा। मैंने तुम्हारे वालिद की आवाज़ में अल्लाह की आवाज़ सुनी है और उनकी आंखों में ईमान का नूर देखा है। अल्लाह की आवाज़ और ईमान के नूर को कोई इन्सान क़ैदख़ाने में महबूस नहीं कर सकता, हो सकता है उस आवाज़ और उस नूर को अज़ाद कराने का नेक काम ख़ुदा ने मेरी किस्मत में लिख दिया हो और उसके एवज़ मेरे सीने की आग सर्द हो जाये। मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि मैं क्या करूंगा क्योंकि तुम औरत ज़ात हो और नौजवान हो। शायद राज़ को राज़ न रख सको।"

"मैं वालिदे मोहतरम के लिए कुर्आन ले आती हूं।" वह अन्दर चली गयी और बहुत देर बाद बाहर आई। उस के हाथ में कुर्आन था जो ओहदेदार को दे कर उस ने कहा– "मैं वालियेमुसिल के पास जा रही हूं कि वह मुझे बाप से मिलने की इजाज़त दे दे।"

"हां!" ओहदेदार ने कहा– "मुलाक़ात का यही तरीक़ा है।" और वह कुर्आन लेकर चला गया।

❖

साएका तैय्यार होकर सैफुद्दीन के दरबार में चली गयी। उसे बाहर रोक दिया गया। सैफुद्दीन, सलाहुद्दीन अय्यूबी नहीं था कि हर किसी को मिलने की खुली इजाज़त थी। सैफुद्दीन तो बादशाह था और उसके तरीक़े शाहाना थे। उसे शराब भी पीनी होती थी, हरम के लिए भी वक़्त निकालना होता था। रक़्स की महफ़िलें भी मुनअकिद करनी होती थीं और जो वक़्त बचता था वह अपनी बादशाही को सुल्तान अय्यूबी से बचाने के मंसूबे बनाते सर्फ़ होता था। उसे अपनी रिआया का कोई इल्म न था। हुकूमत के लिए रिआया को इस्तेमाल किया करते हैं, उन के नेक व बद की उन्हें कोई परवा नहीं होती। वह रिआया के पेट में सिर्फ़ इतना सा अनाज जाने देते हैं। जिस से रिआया सिर्फ़ ज़िन्दा रहे और उनके आगे सज्दा रेज़ रहे।

सायका उसी रिआया की एक लड़की थी। दरबान ने उससे पूछा कि वह कौन है तो उसने बताया कि वह मुसिल के ख़तीब इब्ने अल मख़्दूम की बेटी है। दूसरों की तरह दरबान को भी यही मालूम था कि ख़तीब अचानक पागल हो गया है और उसे क़ैदख़ाने में डाल दिया गया है। ख़तीब का एहतराम हर किसी के दिल में था और उसके पागल हो जाने की वजह से सबके दिलों में हमदर्दी भी पैदा हो गयी थी। दरबान ने किसी से कह कर सैफुद्दीन से इजाज़त ले ली कि साएका को उसके पास भेजा जाये।

साएका जब सैफुद्दीन के सामने गयी तो वह उस लड़की की ख़ुबसूरती देख कर चौंक उठा। वह लड़कियों का शिकारी था। उसने साएका को दिलचस्पी से अपने पास बैठाया। वह

समझ गया होगा कि लड़की अपने बाप की रिहाई की दरख़्वास्त लेकर आई है।

"सुनो लड़की!" उसने साएक़ा की बात सुने बग़ैर कहा– "मैं जानता हूं तुम क्यों आई हो लेकिन मैं ने बहुत मजबूर होकर तुम्हारे बाप को क़ैद में डाला है। अगर उसे एक दो दिन बाद ही रिहा करना होता तो मैं उसे गिरफ्तार ही न करता। मैं उसे रिहा नहीं कर सकूंगा।"

"उनका जुर्म क्या है।" साएक़ा ने पूछा।

"ग़द्दारी।" सैफ़ुद्दीन ने जवाब दिया।

"क्या उन्होंने आपके ख़िलाफ़ सलीबियों के हक़ में ग़द्दारी की है?"

"रियासत का दुश्मन सलीबी हो या मुसमलान।" सैफ़ुद्दीन ने जवाब दिया– "उसके साथ मिलकर रियासत को नुक़्सान पहुचाना जुर्म है। क्या तुम्हारा बाप सलाहुद्दीन अय्यूबी का हामी नहीं था?"

"मुझे कुछ इल्म नहीं।" साएक़ा ने जवाब दिया– "मेरा ख़्याल यह है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी का हामी होना जुर्म नहीं।"

"यही बात तुम्हारा बाप भी समझ सका।" सैफ़ुद्दीन ने कहा– "मैं हैरान हूं कि बहुत से लोग सलाहुद्दीन अय्यूबी को फ़रिश्ता समझते हैं। वह औरत के मामले में दरिन्दा है। दमिश्क और काहिरा में उसने अपना हरम तुम जैसी लड़कियों से भर रखा है। हर लड़की को तीन चार महीनो बाद अपने सालारों के हवाले कर देता है। उसकी फौज जहां हम्ला करती है वहां न मुसलमान घराना देखती है न ग़ैरमुस्लिम। हर घर को लूटती और हर लड़की को अपने साथ ले जाती है। तुम जैसी हसीन लड़की उससे कभी महफ़ूज़ नहीं रह सकती। यह मेरा फर्ज़ है कि तुम्हारी इज्ज़त की हिफ़ाज़त करूं, ख़्वाह मुझे तुम्हे अपने घर में रखना पडे।"

"मेरी हिफ़ाज़त ख़ुदा करेगा।" साएक़ा ने कहा– "मैं सिर्फ़ यह इल्तिजा करने आयी हूं कि मुझे थोड़ी देरे के लिए अपने बाप से मिलने की इजाज़त दी जाये।"

"जब तक क़ाज़ी उसे सज़ा नहीं सुना देता, इजाज़त नहीं दी जा सकती।"

"वह सज़ा क्या होगी?" लड़की ने पूछा।

"मौत।"

साएक़ा के आंसू बहने लगे। उसने लड़की को और ज़्यादा ख़ौफ़ज़दा करने के लिए कहा– "लेकिन यह मौत इतनी आसान नहीं होगी कि तलवार से तन से सर जुदा कर दिया जायेगा। उसे आहिस्ता–आहिस्ता अज़ीयतें दे–देकर मारा जायेगा। पहले उसकी आंख निकाली जायेगी, फिर उसका एक एक दांत ज़म्बूर से खींच कर निकाला जायेगा, फिर उसके हाथों और पांव की उंगलिया काटी जायेंगी और फिर वह ज़िन्दा ही होगा तो उसकी खाल उतारी जायेगी।"

लड़की का जिस्म बड़ी ज़ोर से कांपा। उसने होंठ दांतों में दबा लिए और उसका रंग पिला पड़ गया। उसनें लरज़ती हुई आवाज़ में पूछा– "क्या आप उन पर रहम नहीं कर सकते कि उनका सर तलवार से काट दिया जाये? अगर उन्हें सज़ाये मौत ही देनी है तो एक सानिए में उन्हें क्यों नहीं ख़त्म कर देते?"

"अगर तुम्हें अपनी क़यामत ख़ेज़ जवानी पर रहम आ जाये तो मैं तुम्हारे बाप पर रहम कर सकता हूं।"

साएका ने उसे सवालियां नज़रों से देखा तो सैफुद्दीन ने कहा– "बाप के मर जाने के बाद तुम एक आम सी और ग़रीब लड़की बन के रह जाओगी। क्या यह बेहतर न होगा कि तुम मेरे अक़्द में आ जाओ जिससे तुम्हारे बाप को भी फ़ायदा पहुंचेगा और तुम्हारी हैसियत मुसिल की मलिका की हो जायेगी?"

"अगर मेरे बाप ने मुझे ख़ुद्दारी की तालीम नहीं दी होती तो मलिका बनना तो बहुत बड़ी बात है, मैं आप के साथ एक रात गुज़ारने पर भी फ़ख़्र महसूस करती।" साएका ने कहा– "मेरा बाप मेरी इस्मत की हिफ़ाज़त में अपनी खाल हंसते खेलते उतरवा लेगा। यह सौदा मेरे बाप के साथ करें। उससे पूछें कि तुम जल्लाद के पास जाना चाहते हो या अपनी बेटी को मेरे पास भेजना चाहते हो। मेरा बाप यक़ीनन यह कहेगा– "जल्लाद के हवाले कर दो।" मैं सिर्फ़ यह दरख़्वास्त लेकर आई थी कि थोड़ी सी देर के लिए मुझे अपने बाप से मिलने दिया जाये। अब मैं अपनी दरख़्वास्त में यह इज़ाफ़ा करती हूं कि उसके लिए मैं कोई सौदा क़ुबूल नहीं करूंगी।"

"क्या तुम्हारा यह फ़ैसला है कि मेरे पास नहीं आओगी?" सैफुद्दीन ने पूछा।

"अटल फ़ैसला।" साएका ने जवाब दिया– "आप मुसिल के मालिक हैं। मुझे ज़बरदस्ती अपने हरम में दाख़िल कर लें।"

"मैंने ऐसा जुर्म कभी नहीं किया।" सैफुद्दीन ने कहा।

साएका उठ खड़ी हुई। उसे दरअसल मुलाक़ात की ज़रूरत नहीं रही थी। वह तो यह मालूम करना चाहती थी कि उसके बाप के साथ क़ैदख़ाने में क्या सुलूक हो रहा है। वह उसे क़ैदखाने के एक ओहदेदार से मालूम हो गया था और उसे यह उम्मीद भी थी कि यह ओहदेदार उसके बाप को फ़रार में मदद देगा। उसने सैफुद्दीन को सलाम किया और चल पड़ी। सैफुद्दीन ने उसे र। तं देखा तो बोला– "ठहरो, यह न कहना कि वालिये मुसिल ने एक लड़की की तमन्ना पूरी नहीं की थी। तुम आज रात अपने बाप से मुलाक़ात करने के लिए जा सकती हो। एक आदमी तुम्हारे घर आयेगा। वह तुम्हें अपने साथ क़ैदख़ाने में ले जायेगा। तुम जितनी देर चाहो अपने बाप से बातें कर सकती हो।"

साएका शुक्रिया अदा करके चली गयी। सैफुद्दीन के पीछे एक बॉडीगार्ड खड़ा था। साएका चली गयी तो सैफुद्दीन ने अपने बॉडीगार्ड से कहा– "इतना ख़ुबसूरत परिन्दा पिंजरे में आना चाहिए। मैंने उसे ख़ौफ़ज़दा करने के लिए कहा था कि उसके बाप को किस तरह अज़ीयतें देकर मारा जायेगा मगर लड़की दिल गुर्दे की पक्की मालूम होती है। जानते हो मैंने उसे क्यों कहा है कि एक आदमी तुम्हारे घर आयेगा, वह तुम्हे क़ैदख़ाने में बाप से मुलाक़ात कराने ले जायेगा?"

"क्या मैं अभी तक आपके इशारे समझने के क़ाबिल नहीं हुआ?" बॉडीगार्ड ने होठों पर शैतानी मुस्कुराहट लाते हुए कहा– "वह आदमी मैं ही हूंगा जो उसे शाम के बाद घर से

कैदखाने ले जाने के बहाने ले जाऊंगा?"

"और तुम जानते हो कि उसे कहां ले जाना है?" सैफुद्दीन ने पूछा– "उसे शक नहीं होना चाहिए कि मैंने उसे अग़वा कराया है।"

"सब जानता हूं।" बॉडीगार्ड ने कहा– "यह काम पहली बार तो नहीं कर रहा।" मैं उसे जिन भूल भूलइयों से गुज़ार कर और उसकी जो हालत करके आप के पास पहुंचाऊंगा उससे वह यह समझेगी कि दुनिया में आप वाहिद इन्सान हैं जो उस के मुनिस व ग़मख़्वार हैं। आगे आप जानते हैं कि उस किस्म के परिन्दें को पिंजरे में किस तरह बन्द करते हैं।"

सैफुद्दीन ने अपने बॉडीगार्ड के कान में कुछ कहा– बॉडीगार्ड की आंखों में शैतान मुस्कुराने लगा।

❖

कैदखाने का ओहदेदार साएका के पास आया और उसे तसल्ली दे कर और कुर्आन लेकर चला गया था रात की ड्यूटी पर था। शाम के बाद वह कैदखाने में दाख़िल हुआ। दिन की ड्यूटी वाले को रूख़सत किया और ख़तीब इब्ने अल मख़्दूम की कोठरी के सामने जा खड़ा हुआ। इधर उधर देख कर उसने कुर्आन ख़तीब को दे दिया और कहा– "अपनी बेटी के मुतअल्लिक आप कोई ग़म न करें। वह हर लिहाज़ से मुतमईन है, महफूज़ है और ख़ैरियत से है। उसने मुझे एक बात कही है। दुआ करें अल्लाह मुझे बच्ची की तमन्ना पूरी करने की तौफीक अता फरमाये।"

"वह बात क्या है?" ख़तीब ने पूछा।

ओहदेदार ने इधर–उधर देखा और मुंह सलाख़ों के साथ लगाकर कहा– "फरार....आप में इतनी हिम्मत है? ... मैं मदद करूंगा।"

"जिस काम में अल्लाह की ख़ुश्नूदी शामिल हो उस के लिए अल्लाह हिम्मत भी देता है।" ख़तीब ने कहा– "लेकिन मैं तुम्हारी मदद से फ़रार नहीं हूंगा। इसकी बजाये यहां मर जाना पसन्द करूंगा।"

"क्यों?" ओहदेदार ने हैरान होकर पूछा– "क्या आप मुझे गुनहगार समझ कर मेरी मदद कुबूल नहीं करना चाहते?"

"नहीं।" ख़तीब ने जवाब दिया– "मैं तुम्हारी मदद इस लिए कुबूल नहीं करना चाहता कि तुम गुनाहगार नहीं हो।

मैं तो तुम्हारी मदद से यहां से निकल जाऊंगा। तुम पीछे रह जाओगे और पकड़े जाओगे। मेरे जुर्म की और तुम्हारी नेकी की सज़ा तुम्हें मिलेगी जो बहुत ही भयानक होगी।"

"मैं भी आपके साथ ही जाऊंगा।" ओहदेदार ने कहा– "आप की कल रात की बातों ने यहां से मेरा दिल उचाट कर दिया है। मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी के फ़ौज में जा रहा हूं। मैं चूंकि कैदी नहीं इस लिए आसानी से फ़रार हो सकता हूं लेकिन अब आप को भी साथ ले जाऊंगा। मेरा इस दुनिया में कोई भी नहीं। दिल में वही आग है जो गुज़िश्ता रात आप को दिखाई थी। इस आग को सर्द करना है।"

"हां।" ख़तीब ने कहा– "मैं इस सूरत में तुम्हारी मदद कुबूल करता हूं।"

"आप की बेटी ने मुझे बताया था कि वह वालिये मुसिल के पास जा रही है।" ओहदेदार ने कहा– "वह आपसे मुलाकात की इजाज़त मांगेगी।"

"नहीं।" ख़तीब ने घबराकर कहा– "उसे सैफुद्दीन जैसे शैतान फ़ितरत इन्सान के पास नहीं जाना चाहिए। तुम उसे कह दो कि वह वहां न जाये।"

"मैं तो सुबह जा सकूंगा।" ओहदेदार ने कहा।

ओहदेदार कोठरी से हट कर चला गया। ख़तीब ने कुर्आन चूमा फिर सीने से लगा कर अपने आप से कहा– "अब मैं इस काल कोठरी में अकेले नही हूं।" उसने ग़िलाफ़ उतारा और दीये की रौशनी में बैठ कर कुर्आन खोला। वर्क़ उलटते–उलटते कुर्आन में से एक कागज निकला। उसकी बेटी के हाथ का लिखा हुआ था– "ख़ुदा साथ है। जिन्नात मौजूद हैं, पैग़म्बर बरहक़ है। पैग़म्बर का फरमान सुनें। ईमान तरोताज़ा है।" ख़तीब के चेहरे पर मुस्कुराहट फैल गयी।

उसने काग़ज का यह टुकड़ा दीये की लौ पर रखा और जला डाला। वह पैग़ाम समझ गया था पैग़म्बर से मुराद कैदखाने का यह ओहदेदार था। वह कहना चाहती थी कि यह आदमी सच्चा मालूम होता है। उसकी बात (फरार) पर अमल करें। "जिन्नात मौजूद हैं।" से मुराद थी कि साएका की हिफ़ाज़त के लिए आदमी मौजूद हैं।

जिस वक़्त ख़तीब यह पैग़ाम जला रहा था, उस वक़्त उसके घर के दरवाज़े पर दस्तक हुई। साएका ने दरवाज़ा खोला। उसके हाथ में कंदील थी। बाहर जो आदमी खड़ा था उससे उसे पहचान लिया। वह सैफुद्दीन का बॉडीगार्ड था जो साएका की मुलाकात के वक़्त वहां मौजूद था। उसने साएका से कहा कि वह उसे बाप की मुलाकात के लिए कैद ख़ाने ले जाने आया है और वह उसे घर वापस भी लायेगा।

साएका तैय्यार थी चलने लगे तो बॉडीगार्ड ने साएका से कहा– "बाप के साथ सिर्फ़ ख़ैर ख़ैरियत और घर की बातें करने की इजाज़त होगी। कोठरी की सलाख़ों से तुम्हें तीन क़दम दूर खड़ा किया जायेगा। कोई ऐसी बात न करना जो वालिये मुसिल ग़ाज़ी सैफुद्दीन के वक़ार के ख़िलाफ़ हो।"

❖

बॉडीगार्ड आगे–आगे जा रहा था। साएका उससे दो तीन क़दम पीछे थी। दोनों ख़ामोशी से चले जा रहे थे। रात तारीक थी। वह अंधेरी गलियों में से गुज़रते जा रहे थे। वह एक गली को मुड़े तो गार्ड रूक गया। उसने पीछे देखा। साएका ने कहा– "क्या बात है?"

"तुमने अपने पीछे किसी के क़दमों की आहट नहीं सुनी थी?" बॉडीगार्ड ने उससे पूछा।

"नही।" मैं ही तुम्हारे पीछे–पीछे आ रही हूं।"

"मैंने कोई और आवाज़ सुनी थी।" बॉडीगार्ड ने ज़ेरे लब कहा और आगे चल पड़ा।

"इतना डरने की क्या ज़रूरत है?" साएका ने पूछा– "कोई अगर पीछे से आता है तो आता रहे।"

बॉडी गार्ड ने कोई जवाब न दिया यह गली ख़त्म हो गयी। उससे आगे कोई आबादी नहीं थी। ज़मीन ऊंची नीची थी। खड्नाले भी थे। कैदखाना उसी तरफ़ आबादी से कुछ दूर था। दोनों खड्डों से बचते जा रहे थे। वहां झाड़ियां और दरख़्त थे। बॉडीगार्ड एक बार फिर रुक गया और पीछे को देखा। उसे पीछे आहट सुनाई दी थी। उसने तलवार निकाल ली और पीछे को गया। दो तीन झाड़ियों के इर्द गिर्द घूम कर देखा। वहां कुछ भी नहीं था।

"अब तो तुमने पीछे किसी के पांव की आवाज़ सुनी होगी।" बॉडीगार्ड ने साएका से कहा– "यह आवाज़ बड़ी साफ़ थी।" साएका ने यह आहट सुनी थी लेकिन उसने झूठ बोला। कहने लगी– "तुम्हारे कान बजते हैं। अगर यह किसी की आहट थी ही तो खरगोश या किसी ऐसे ही जंगली जानवर की होगी। तुम इन आहटों से क्यों डरते हो?"

मैं तुम्हें जो बात कहने से झिझकता था वह अब कह देता हूं।" बॉडीगार्ड ने जवाब दिया– "तुम बहुत ही ख़ुबसूरत और जवान लड़की हो। तुम्हें अपनी किस्मत का अन्दाज़ा नहीं। तुम्हें किसी ने अग़वा करके किसी अमीर या हाकिम के पास बेच डाला तो वह माला माल हो जायेगा। तुम मेरी ज़िम्मेदारी में हो। किसी ने तुम्हें मुझसे छीन लिया तो वालिये मुसिल मेरा सर तन से जुदा कर देगा। तुम मेरे साथ चलो। मेरे पीछे न रहो।"

साएका उसके साथ हो गयी। कुछ आगे जाकर पगडंडी शुरू होती थी। वह वहां तक चले गये और पगडंडी पर चलने लगे। थोड़ा आगे उस पगडंडी से एक और रास्ता निकलता था जो किसी और तरफ़ जाता था। बॉडीगार्ड साएका को उस रास्ते पर ले गया। चन्द ही कदम आगे गये होंगे कि उन्हें किसी के दौड़ते क़दमों की साफ़ आवाज़ सुनाई दी जो फौरन ही ख़ामोश हो गयी। कोई पीछे से दौड़ता आया और दायें को चला गया। बॉडीगार्ड ने एक साया एक दरख़्त के पीछे ग़ायब होता देख लिया था। वह तलवार सूंत कर उस दरख़्त की तरफ़ दौड़ा। पीछे उसे साएका की घुटी हुई चीख़ सुनाई दी। किसी ने साएका के उपर बोरी की तरह का थैला डाल दिया और उससे पहले उसके मुंह मे कपड़ा ठूंस दिया था। बॉडीगार्ड को अंधेरे में इतना ही नज़र आया कि जहां साएका अकेली थी वहां दो साये उछल कूद कर रहे हैं।

वह उसकी तरफ़ दौड़ने ही लगा कि अक़ब से किसी ने उसे बाज़ूओं में जकड़ लिया। उसके भी मुंह में कपड़ा ठूंस दिया गया और उपर से बोरी की तरह थैला उस पर चढ़ा दिया गया। वह तनूमंद जंगजू था लेकिन उसे जकड़ने वाले तादाद में ज़्यादा थे और वह भी ताकतवर अपने फ़न के उस्ताद थे। इधर साएका को दुहरा करके थैले में डाल कर थैले का मुंह बंद कर दिया गया। इधर बॉडीगार्ड को उसी तरह थैले में बन्द कर दिया गया। उन्हें पकड़ने वाले उन्हें उठाकर चल पड़े।

आगे चल कर एक थैला पीठ पर उठा लिया। अंधेरे में पास से गुज़रने वालों को भी शक नहीं होता था कि दो इन्सानों को अग़वा करके ले जाया जा रहा है। वह एक अंधेरी गली में चले गये और कुछ दूर जाकर एक तंग व तारीक मकान में दाख़िल हो गये।

अन्दर जाकर वह साएका को एक कमरे में और बॉडीगार्ड को दूसरे कमरे में ले गये।

अलग–अलग कमरों में थैलियों के मुंह खोल दिये गये। साएका थैले से निकली तो उसके मुंह से कपड़ा निकाल दिया गया। कमरे में दीया जल रहा था। साएका को दो आदमी खड़े नज़र आये। उसने ग़ुस्से से लरज़ती आवाज़ में कहा– "तुमने यह क्या तरीक़ा इख़्तियार किया है?" महफ़ूज़ तरीक़ा यही था।" कमरे में खड़े दो आदमियों में से एक ने जवाब दिया– "रास्ते में कोई भी तुम्हें हमारे साथ चलता देख सकता था। यह ज़रूरी था कि तुम्हें भी छिपा कर लाया जाये।"

"मुझे पहले क्यों नहीं बताया कि तुम यह तरीक़ा इख़्तियार करोगे?" साएका ने पूछा– "मैं तो यह समझी थी कि यह तुम नहीं हो कोई डाकू हैं और मुझे सममुच अग़्वा किया जा रहा है।"

"हमारे तरीक़े कुछ ऐसे ही होते हैं।" दूसरे आदमी ने कहा।

"क्या तुम्हे यक़ीन हो गया था कि वह मुझे कहीं और ले जा रहा था?" साएका ने पूछा।

"यक़ीन तो हमें उसी वक़्त हो गया था जब तुम उसके साथ घर से निकली थीं।" एक आदमी ने जवाब दिया– "अगर वह तुम्हें वाक़ई क़ैदख़ाने में ले जा रहा था तो छोटा और सीधा रास्ता दूसरी तरफ़ था। वह खड्नालों के वीराने में तुम्हें ले गया और पगडंडी से हट कर एक और रास्ते पर चल पड़ा। हमें पुख़्ता यक़ीन हो गया कि वह तुम्हें कहीं और ले जा रह है।"

"उसने कई बार तुम्हारे क़दमों की आहट सुनी थी।" साएका ने कहा– "ऐसी बे एहतयाती नही करनी चाहिए।"

"अंधेरे में फ़ासिले का अन्दाज़ा नहीं होता था।" उसे बताया गया कि– "हम तुम दोनों के तआक्क़ुब में दूर नहीं थे। दूर तक नज़र नहीं आता था इसलिए तुम्हारे क़रीब रहना ज़रूरी था।"

साएका के चेहरे पर इत्मीनान था। वह बॉडीगार्ड के हाथों लापता और ज़लील व ख़्वार होने से बाल–बाल बच गयी थी। दूसरे कमरे में बॉडीगार्ड को थैले में से निकाल कर उसके मुंह से कपड़ा निकाला गया। उसके सामने तीन नक़ाब पोश खड़े थे। उसकी तलवार उन्हीं नक़ाब पोशों के पास थी।

"कौन हो तुम?" उसने बड़े रोब से नक़ाब पोश से कहा– "मैं वालिये मुसिल का ख़ुसूसी मुहाफ़िज़ हूं। तुम सब को सज़ाये मौत दिलाऊंगा। मुझे जाने दो।"

"वालिये मुसिल की हिफ़ाजत अब ख़ुदा ही करे तो करे।" एक नक़ाब पोश ने कहा– "तुम अपनी हिफ़ाज़त की फ़िक्र करो। उस लड़की को तुम कहां ले जा रहे थे?"

"क़ैदख़ाने मे उसके बाप से मुलाक़ात कराने ले जा रहा था।" बॉडीगार्ड ने जवाब दिया– "याद रखो जिस लड़की को तुमने अग़्वा किया है उसे हज़्म नही कर सकोगे। यह ख़तीब इब्ने अल मख़्दूम की बेटी है और वालिये मुसिल ग़ाज़ी सैफ़ुद्दीन ने अपना ख़ुसूसी मुहाफ़िज़ उस के लिए भेजा था। इससे तुम अन्दाज़ा लगा सकते हो कि यह लड़की लापता हो गयी तो वालिये मुसिल शहर के घर–घर की तलाशी लेगा। तुम शहर से निकल नहीं सकोगे। थोड़ी

देर बाद ग़ाज़ी सैफुद्दीन को पता चल जायेगा कि उसका मुहाफ़िज़ और ख़तीब की बेटी लापता हैं। शहर की नाकाबन्दी फ़ौरन कर दी जायेगी। लड़की कहां है?"

"सुनो दोस्त!" एक नक़ाबपोश ने कहा– "लड़की यहीं है। उसे अग़्वा नहीं किया गया। उसे अग़्वा होने से बचाया गया है। हम जानते हैं कि वालिये मुसिल सैफुद्दीन के लिए यह लड़की बहुत अहम है और वह उसकी तलाश में अपनी पूरी फ़ौज लगादेगा क्योंकि लड़की ख़ुबसूरत और नौजवान है और उसका बाप क़ैदख़ाने में बन्द है। वह सैफुद्दीन को धुतकार आई थी। फिर उसने लड़की को मुलक़ात के लिए इजाज़त दे दी और कहा कि उसे एक आदमी अपने साथ क़ैदख़ाने में ले जायेगा। मुलाक़ात का वक़्त रात का रखा गया। तुम बता सकते हो कि मुलाक़ात दिन को क्यों न करायी गयी? लड़की ने हमें बताया तो हमने उसकी हिफ़ाज़त का इन्तज़ाम कर लिया। तुम उसे घर से ही ग़लत रास्ते पर ले चले तो हम तुम्हारे तआक्कुब में चल पड़े। तुम ने दो तीन बार पीछे देखा था। वह हम ही थे। तुमने जिसे झाड़ियों में तलाश करने की कोशिश की थी वह भी हम ही थे। हम तो दिन की रौशनी में भी किसी को नज़र नहीं आते।".

"तुमने उस लड़की पर ज़ुल्म किया है।" बॉडीगार्ड ने कहा– "मैं उसे उसके बाप के पास ले जा रहा थ।"

"तुम उसे अग़्वा करके ले जा रहे थे।" एक नक़ाबपोश ने तलवार की नोक उसकी शहेरग पर रख कर ज़रा सी दबाई और कहा– "तुम उसे सैफुद्दीन के लिए ले जा रहे थे। हम जानते हैं कि तुम्हारा वालिये मुसिल कितना कुछ रहम दिल है जिस ने ख़तीब तक को क़ैद करने से गुरीज़ न किया और अब उसी की बेटी को मुलाक़ात की इजाज़त दे रहा है। तुम अच्छी तरह जानते हो कि मोहतरम ख़तीब का कया जुर्म है मगर तुम यह नहीं जानते कि यह आलिम मुसिल मे तन्हा नहीं। वह क़ैद ख़ाने मे है तो उसकी बेटी तन्हा नहीं। मैं तुम्हें यह भी बता देता हूं कि हम सैफुद्दीन का तख़्ता पलट देंगे। उसके दिन थोड़े रह गये हैं। हम उसे किसी भी वक़्त क़त्ल कर सकते हैं लेकिन सुल्तान सलाहुद्दीन ने हमें सख़्ती से हुक्म दे रखा है किसी को हसन बिन सबाह की फ़िदाइयों की तरह क़त्ल न करना। हम मैदान में ललकारते और क़त्ल करते हैं।"

"तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी के आदमी हो?" बॉडीगार्ड ने पूछा।

"हां।" नक़ाबपोश ने जवाब दिया– "हम जांबाज़ दस्ते के सिपाही हैं।" उसने तलवार की नोक उसकी शहेरग पर और ज़्यादा दबाई तो बॉडीगार्ड की पीठ दिवार के साथ जा लगी। नक़ाबपोश ने कहा– "तुम सैफुद्दीन के ख़ुसूसी मुहाफ़िज़ हो और हर वक़्त उसके साथ रहते हो। तुम उसके राज़दां हो। लड़कियां अग़्वा करके उसे देते हो। पूरी तफ़सील से बताओ कि सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ उसके इरादे क्या हैं। अगर बताने से इन्कार करोगे या कहोगे कि तुम्हें कुछ इल्म नहीं तो तुम्हारा हाल वही किया जायेगा जो सैफुद्दीन क़ैदख़ाने में अपने मुख़ालिफ़ीन के साथ करता है।"

"अगर तुम सिपाही हो अच्छी तरह जानते होगे कि हाकिम और बादशाह के सामने एक

मुहाफ़िज़ की कोई हैसियत नहीं होती।"

बॉडीगार्ड ने जवाब दिया– "मैं उसके इरादों के मुतअल्लिक क्या बता सकता हूं।"

एक नकाबपोश ने उसका सर नंगा करके उसके बाल मुठ्ठी में ले कर मरोड़े और झटका दे कर उसे एक तरफ झटक दिया। दूसरे ने उसे टांगों से घसीट कर गिरा दिया। एक नकाबपोश उसके पेट पर खड़ा हो गया। वह दो तीन बार उसके पेट पर उछला तो बॉडीगार्ड के दांत बजने लगे। फिर उसे मुख़्तलिफ़ अज़ीयत का ज़रा–ज़रा ज़ायका चखाया गया और उसे कहा गया कि वह वहां से ज़िन्दा नहीं निकल सकेगा।

"मुझे उठने दो।" उसने ज़रा कराहते हुए कहा।

उसे उठाया गया। उसने कहा– "सैफुद्दीन सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ना चाहता है।"

"यह कोई राज़ नहीं।" एक नकाबपोश ने कहा– "बताओ वह कब और किस तरह लड़ना चाहता है। क्या वह हलब और हरान की फौजों के साथ अपनी फौज शामिल करेगा या अलग लड़ेगा।"

"फौज दूसरी फौजों में शामिल करेगा।" बॉडीगार्ड ने जवाब दिया– "लेकिन ऐसी चाल चलेगा कि उसकी फौज की फतह अलग थलग नज़र आये। हलब और हरान वालों पर उसे भरोसा नहीं।"

"अपने सालारों को उसने क्या हिदायात दी हैं।" एक नकाबपोश ने पूछा।

"उसका मंसूबा यह है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी को पहाड़ी इलाके में महसूर कर लिया जाये।" बॉडीगार्ड ने जवाब दिया।

"फौज किस रास्ते से जायेगी?"

"कूरुने हमात की तरफ से।" बॉडीगार्ड ने जवाब दिया।

"सलीबी कितनी मदद दे रहे हैं।"

"सलीबियों ने मदद का वादा किया है।" बॉडीगार्ड ने जवाब दिया– "लेकिन सैफुद्दीन उन्हें भी धोखा देगा। सलीबी फौज के चन्द एक कमाण्डर मुसिल की फौज को तरबीयत दे रहे हैं।"

यह नकाबपोश और वह दो आदमी जो दो दूसरे कमरे में साएका के साथ थे सुल्तान अय्यूबी के छापामार जासूस थे। उनका राब्ता ख़तीब इब्ने अल मख़्दूम के साथ था बल्कि ख़तीब उनका निगरान और सरबराह था। यह गिरोह सुल्तान अय्यूबी के लिए आंखो और कानों का काम करता था। मुसिल से जो भी इत्तलाअ वह हासिल करते थे सुल्तान अय्यूबी के जंगी हैडक्वार्टर को भेज देते हैं। मुसिल में वह मुख़्तलिफ काम धंधा, मुलाज़िमत और दुकानदारी करते थे। ख़तीब कैद हो गया तो यह रात को बारी–बारी ख़तीब के घर का पहरा देते थे। उन लड़कियों ने जो साएका के घर उसे तन्हा समझ कर सोने आई थीं उन्हीं के साये हरकत करते देखे थे। साएका ने इन लड़कियों को यह नहीं बताया था कि यह साये से इन्सान हैं। उसने ऐस तास्सुर दिया था जैसे यह जिन्नात हैं। इन आदमियों को मालूम था कि

साएका सैफुद्दीन के पास बाप से मुलाकात की इजाज़त लेने गयी है। वापस आकर उसने इन में से एक आदमी को बता दिया था कि रात को एक आदमी उसे कैद ख़ाने में ले जाने के लिए आयेगा। उसने यह भी बता दिया था कि सैफुद्दीन ने उसके साथ नारवा बातें कीं और उसे अपने अक़्द में लेने की पेशकश की थी।

उस आदमी ने अपने गिरोह को बताया। यह बहुत ज़हीन थे। उन्हें शक हुआ कि साएका को किसी और तरफ़ ले जा कर उसे ग़ायब कर दिया जायेगा। चुनांचे सूरज गुरूब होने के बाद पांच आदमी साएका के घर में जाकर छुप गये थे। साएका बॉडीगार्ड के साथ गयी तो यह आदमी उनके तआक्कुब में चल पड़े। आगे जाकर उन का शक सही साबित हुआ। उन्होंने कामयाबी से साएका को बचा लिया और बॉडीगार्ड को भी पकड़ लाये जो सैफुद्दीन का राज़दां था। उन्होंने फ़ौजी अहमियत के बहुत से राज़ उससे उगलवाये। उनमें यह राज़ अहम था कि सैफुद्दीन के भाई अज़ाउद्दीन ने फ़ौज को दो हिस्सों में तक़सीम करके एक हिस्से को अपनी कमान में रखा है। यह हिस्सा महफ़ूज़ के तौर पर इस्तेमाल होगा यानी उसे बाद में ज़रूरत के मुताबिक इस्तेमाल किया जायेगा। पहले हम्ले की क़यादत सैफुद्दीन को करनी थी। दूसरी अहम बात जो मालूम हुई वह यह थी कि हलब से गुमश्तगीन और सैफुद्दीन के हां एलची यह पैग़ाम ले कर गये हैं कि तीनों फ़ौजों को मुशतर्का कमान में रखा जाये और सलीबियों की मदद पर ज़्यादा भरोसा न किया जाये। बाकी मालूमात भी अहम थीं।

बॉडीगार्ड ने यह मालूमात उगल कर कहा कि उसे रिहा किया जाये। नक़ाबपोश ने उसे रिहाई के वादे पर टाल दिया। साएका को उसी कमरे में रहने दिया गया। उसे उस के घर रखना मुनासिब नहीं था। बॉडीगार्ड को उस मकान की एक अंधेरी कोठरी में बन्द कर दिया गया।

❖

हरान और हलब से तक़रीबन पचास मील दूर सलीबी फ़ौज का जंगी हैडक्वार्टर था जहां ज़्यादा सरगर्मिया जासूसी के मुतअल्लिक़ थीं वहां जो सलीबी हुक्मरान और कमाण्डर थे वह सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ खुली जंग लड़ने की बजाय उसके मुसलमान मुख़ालेफ़िन को मुत्तहिद करके उसके ख़िलाफ़ लड़ाने की स्कीमें बना रहे थे और उन पर अमल कर रहे थे पहले बताया जा चुका है कि उन्होंने मुसलमानों के बड़े--बड़े उमरा को अपने फ़ौजी मुशीर दे रखे थे जो उन्हें जंगी मश्वरे देने के अलावा फ़ौजों को जंगी तरबियत भी देते थे। अपनी असल नीयत पर पर्दा डाले रखने के लिए वह मुसलमान उमरा को ऐश व ईशरत का सामान भी मुहइया कराते रहते थे। उनके जासूस भी इन उमरा के दरबारों में मौजूद रहते और अपने हैडक्वार्टर को ख़बरें भेजते रहते थे।

हरान से गुमश्तगीन का एक सलीबी मुशीर अपने उस जंगी हैडक्वार्टर में पहुंचा। उस वक़्त सलीबियों के दो मशहूर जंगजू हुक्मरान रिमाण्ड और रिज्नॉल्ट वहां मौजूद थे। रिमाण्ड वह हुक्मरान था जिसे हाल ही में सुल्तान अय्यूबी ने एक बर वक़्त और बर्क़ रफ़्तार चाल चल कर भगा दिया था और रिज्नॉल्ट वह मशहूर सलीबी हुक्मरान था जिसे नुरूद्दीन ज़ंगी ने

एक मार्के में जंगी कैदी बना लिया था। उसे और दिगर सलीबी कैदियों को हरान में गुमश्तगीन के हवाले कर दिया गया था। उस वक़्त गुमश्तगीन ख़िलाफ़ते बग़दाद का एक किलादार था। ज़ंगी फौत हो गया तो उस किलादार ने खुद मुख़्तारी का एलान कर दिया और सलीबियों के साथ दोस्ती गहरी करने के लिए रिज्नॉल्ट जैसे कीमती कैदी को तमाम सलीबी कैदियों समेत रिहा कर दिया– नुरूद्दीन ज़ंगी ने कहा था कि रिज्नॉल्ट के एवज़ में सलीबियों से अपनी शर्तें मनवायेगा। ज़ंगी मर गया तो उमरा ने अय्याशी और हुकूमत के नशे में उसके तमाम तर मंसूबे उलट कर दिये और सलीबी सल्तनते इस्लामिया की बुनियादों में उतरना शुरू हो गये।

हरान से सलीबी मुशीर जो दरअसल जासूस था रिमाण्ड और रिज्नॉल्ट के पास पहुंचा और हरान के ताज़ा वाकियात की तफ़सीली रिपोर्ट दी। उसने कहा– "हलब से अल्मलकुस्सालेह ने गुमश्तग़ीन और सैफुद्दीन को तोहफों के साथ पैग़ाम भेजे हैं कि वह अपनी फ़ौजें उस की फौज के साथ मुश्तर्का कमान में दे दें। वहां यह अजीब वाकिआ हुआ है कि गुमश्तगीन के दो सालारों ने हरान के क़ाज़ी को कत्ल कर दिया और दो लड़कियां को जो हलब से अल्मलकुस्सालहे ने पैग़ाम के साथ तोहफ़े के तौर पर भेजी थीं भगा दिया। फिर उन्होंने एअतराफ़ किया कि वह सलाहुद्दीन अय्यूबी के हामी हैं और वह उसी के लिए ज़मीन हमवार कर रहे थे। यह दोनों सालार सगे भाई हैं और हिन्दुस्तान से आये हैं। दोनों को गुमश्तगीन ने कैदख़ाने में डाल दिया है। उससे एक ही रोज़ पहले हमारा एक साथी मुशीर गुमश्तगीन के घर में एक दावत के दौरान पुर असरार तरीके से कत्ल हो गया है। अगले दिन मालूम हुआ कि गुमश्तगीन के हरम की एक लड़की और उसका एक बॉडीगार्ड लापता हैं।"

सलीबियों की इस कान्फ्रेंन्स में कहकहा बुलन्द हुआ और कुछ देर तक सब हंसते रहे। रिमाण्ड ने कहा– "यह मुसलमान कौम इस कदर जिन्सीयत पसन्द हो गयी है कि उसके हुक्मारान और उमरा, वुज़रा जंग और सियासत के फैसले भी जिन्सी लज़्ज़त परस्ती से मग्लूब होकर करते हैं। ज़रा ग़ौर करो कि गुमश्तगीन जैसे जाबिर और जंगजू किलादार की फौज की आला कमान जिन दो सालारों के पास थी वह दोनों उसके दुश्मन सलाहुद्दीन अय्यूबी के कैम्प के सालार थे। मुझे यकीन है कि उन दोनों ने तोहफे में आई हुई लड़कियों की ख़ातिर क़ाज़ी को कत्ल किया होगा और लड़कियों को सलाहुद्दीन के पास भेज दियाहोगा और खुद कैद हो गये। गुमश्तगीन के हरम की लड़की लापता हो गयी है वह उस मुहाफ़िज़ ने भगाई होगी और हमारा आदमी मालूम नहीं किस कचक्कर में कत्ल हो गया। मुसलमान उमरा, किलादारों और हाकिमों के हरमों की मुकईद दुनिया बड़ी ही पुर असरार दुनिया है। मैं आप को यकीन दिलाता हूं कि यह कौम ऐश व ईशरत और लज़्ज़त परस्ती से तबाह होगी।"

"मैं दो बातें कहूंगा।" एक और सलीबी ने कहा– "यह सलीबी अपनी अफ़वाज की इन्टेलीजेंस का सरबराह था। उसने कहा– "आप ने कहा है कि तोहफे में आई हुई लड़कियां हरान से भगा कर सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास भेज दी गयी होंगी। मैं यह तस्लीम नहीं

करता। मैं जासूसी का माहिर हूं। दुश्मन के फ़ौजी राज़ हासिल करने के अलावा मेरे शोबे का यह काम भी होता है कि दुश्मन के फ़ौजी क़ायदीन और दीगर आला हुक्काम के ज़ाती किरदार और जंगी चलों के मुतअल्लिक़ भी मालूमात हासिल करे और अपनी फ़ौज को आगाह करे। मैं आप को पूरे वसूक़ से बताता हूं कि औरत और शराब के मामले में सलाहुद्दीन पत्थर है यही एक वजह है कि आप उसे ज़हर देकर नहीं मार सकते न उसे किसी हसीन लड़की के जाल में फांस कर फ़िदाइयों से क़त्ल करा सकते हैं। यह इन्सानी फ़ितरत का अटल उसूल है कि जो इन्सान ज़ेहनी अय्याशी का आदी न हो उस का अज़्म पुख़्ता होता है और जो मुहिम हाथ में लेता है उसे सर करके ही दम लेता है। आप के दुश्मन सलाहुद्दीन अय्यूबी में यही ख़ुबी है। यह उसी का असर है कि उसका दिमाग़ पूरा काम करता है और वह ऐसी–ऐसी चालें चलता है जो आप के वहम व गुमान में भी नहीं होती और आप के पांव उखड़ जाते हैं। जहां तक मैंने उसके मुतअल्लिक़ मालूमात हासिल कीं हैं उनसे मालूम होता है कि वह जिस्मानी ज़रूरियात से बे नेयाज़ है। उसने यही ख़ूबी अपनी फ़ौज में पैदा कर रखी है, वरना सेहरा में लड़ने वाले सिपाही बर्फ़ पोश वादियों में और पहाड़ियों पर इस यख़ मौसम में कभी न लड़ सकते। जब तक आप अपने यहां भी यही ख़ूबी पैदा नहीं करेंगे अपने उस दुश्मन के जिसे आप सलाहुद्दीन अय्यूबी कहते हैं कभी शिकस्त नहीं दे सकते......

"और दूसरी बात यह है कि दूसरे मुसलमान उमरा वुज़रा और हुक्मरानों में जो ज़न परस्ती पैदा हो गयी है वह मेरे शोबे का कमाल है। यहूदी दानिशवरों ने एक सदी से ज़्यादा अर्से से मुसलमानों की किरदार कुशी की मुहिम चला रखी है। यह दरअसल उनकी कामयाबी है कि हम ने लड़कियों और ज़र व जवाहरात के ज़रिए मुसलमान सरबराहों का किरदार ख़त्म कर दिया है। हम तो उन्हें इख़्लाक़ी लिहाज़ से तबाह करने के लिए हसीन और तेज़ तर्रार लड़कियां बक़ायदा तरबियत के साथ उनके हां तोहफ़े के तौर पर भेजते हैं। उन बदबख़्तों ने आपस में भी लड़कियों को बतौर तोहफ़ा भेजना शुरू कर दिया है। उनके हां क़ौमी किरदार ख़त्म हो चुका है। यह हमारी कामयाबी है कि हम ने उनके दर्मियान तफ़र्क़ा और बादशाही का लालच पैदा कर दिया है।"

"इस क़ौम को हम इसी तरह ख़त्म करेंगे।" रिजनॉल्ट ने कहा– "और यह क़ौम अपने किरदार के हाथों तबाह होगी। सलाहुद्दीन अय्यूबी ख़ुश हो रहा होगा कि उसने हमारे भाई रिमाण्ड को पस्पा कर दिया है। वह यह नहीं जानता कि रिमाण्ड इस जंग से पस्पा हुआ है। यह तो उसकी क़ौम के सीने में घुस गया है। ज़रूरी नहीं कि हम मैदान में ही लड़ें, हम किसी दूसरे मुहाज़ पर भी लड़ सकते हैं।"

"इस मुहिम को मज़ीद तेज़ करने की ज़रूरत है।" उस मुशीर ने कहा जो हरान से गया था–"मैंने आप को गुमश्तगीन के अन्दरूने ख़ाना के वाक़िआत सुनाए हैं। इन से यह साबित होता है कि वहां सलाहुद्दीन अय्यूबी के जासूस और तख़रीबकार सिर्फ़ मौजूद ही नहीं बल्कि गुमश्तगीन के घर के अन्दर और उसकी आला कमान में पूरी तरह सरगर्म हैं। हमें उनके ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई करनी चाहिए।"

"हमें क्या ज़रूरत है कि गुमश्तगीन और सैफुद्दीन और अल्मलकुस्सालेह और उनके मुत्तहिदा मुहाज़ के दूसरे उमरा वग़ैरह को सलाहुद्दीन अय्यूबी की जासूसी और तबाहकारी से बचाएं।" एक सलीबी कमाण्डर ने कहा– "हम तो उनकी तबाही के अमल को तेज़ करेंगे। यह तबाही हमारे हाथों या उनके अपने ही किसी भाई के हाथों हो। क्या आप इन मुसलमानों को जो सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं सच्चे दिल से अपना दोस्त समझ बैठे हैं? अगर ऐसा है तो इसका मतलब यह है कि आप सच्चे सलीबी नहीं। आप शायद अभी तक यह नहीं समझे कि हमारी दुश्मनी नुरूद्दीन ज़ंगी के साथ नहीं थी, न ही सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ है। अगर सलाहुद्दीन अय्यूबी कभी मेरे सामने आ गया तो मैं उसका एहतराम करूंगा। वह जंगजू है, मैदाने जंग का बादशाह है, तेग़ज़न है। हमारी दुश्मनी उस मज़हब के ख़िलाफ़ है जिसे इस्लाम कहते हैं। हम हर उस आदमी के ख़िलाफ़ लड़ेंगे जो उस मज़हब का दिफ़ाअ करेगा और जो उसे फ़रोग़ देगा। हमारे और सलाहुद्दीन अय्यूबी के मरने के बाद यह जंग ख़त्म नहीं हो जायेगी। इसीलिए हम मुसलमानों में ऐसी बुरी आदतें पैदा कर रहे हैं जो उनकी आइंदा नस्लों में भी मुन्तकिल होंगी। हम ऐसे तरीके इख़्तियार कर रहे हैं कि मुसलमान अपनी रिवायात को भूल जायें और हामरी पैदा कर्दा ख़ूबियों के दिलदादाह हो जायें।।"

"हमें उनके असल तहज़ीब व तमद्दुन को बिगाड़ना है।" रिमाण्ड ने कहा– "हम उस दौर मे ज़िन्दा नहीं होंग। हम देख नहीं सकेंगे। मैं पूरे यक़ीन से कहता हूं कि हम ने किरदार की तबाहकारी की मुहिम जारी रखी तो वह दौर आयेगा कि इस्लाम अगर ज़िन्दा रहा तो यह इस्लाम का बदरूह होगी जो भटकती फिरेगी। मुसलमान नाम के मुसलमान होंगे। उनकी कोई आज़ाद इस्लामी मम्लिकत रह भी गयी तो वह गुनाहों और बदी का घर होगी। यहूदी और ईसाई दानिश्वरों ने इस कौम में बदी की मोहब्बत पैदा कर दी है।"

"बहरहाल अब ज़रूरत यह है कि वह लोग हमारी मदद की तवक्को लिए बैठे हैं।" सलीबी मुशीर ने कहा– "गुमश्तगीन ने मुझे इसीलिए भेजा है।"

बहुत देर इस मस्ले पर तबादले ख़्यालात होता रहा। आख़िर यह फैसला हुआ कि फ़ौजों की सूरत में उन्हें कोई मदद न दी जाये, मदद का झांसा दिया जाये। उन्हें यह यकीन दिलाया जाये कि वह सलाहुद्दीन अय्यूबी पर हम्ला करके उसे अलरिस्तान के अन्दर ही लड़ाते रहें और हम अपनी फ़ौजें उसके किसी नाज़ूक मकाम पर लेजाकर मजबूर कर देंगे कि वह अलरिस्ता से पस्पा हो जाये। यह फ़ैसला भी किया गया कि हलब, हरान और मुसिल की फ़ौजों के लिए इस मुशीर के हमराह कमानों और तीरों का और आतिश गीर मादे का ज़ख़ीरा भेज दिया जाये। उसके अलावा पांच सो घोड़े भी भेज दिये जाएं लेकिन यह ख़्याल रखा जाये कि ज़्यादा तादाद ऐसे घोड़ों की हो जो हमारी फौज के काम के नहीं रहे। बज़ाहिर तन्दरुस्त हों।

"और आइन्दा यूं किया जाये कि उन उमरा वग़ैरह को थोड़ा–थोड़ा अस्लेहा दिया जाता रहे।" रिज्नॉल्ट ने कहा– "उस के साथ–साथ उन्हें अय्याशी की तरफ़ माइल किया जाये। उन्हें यह तससुर दिया जाये कि उन्हें जब कभी अस्लेहा और घोड़ों की ज़रूरत होगी वह हम

पूरी कर देंगे। इस तरह वह ख़ुद अपनी ज़रूरत पूरी करने से ग़ाफ़िल हो जायेंगे और हमारे मुहताज रहेंगे। इस मदद से और अपने मुशीरों की विसातत से हम उनके दिलों और दिमाग़ों पर ग़ालिब आ जायेंगे।"

"इन्तेहाई ज़रूरी बात रह गयी है।" एक कमाण्डर ने कहा– "शेख़ सन्नान के भेजे हुए नौ फ़िदाई चले गये हैं। अब के उम्मीद है कि वह सलाहुद्दीन अय्यूबी को कत्ल कर देंगे। वह जो हलफ़ उठा कर गये हैं उसमें उन्होंने यह भी कहा है कि वह जान पर खेल कर उसे कत्ल कर देंगे वरना ज़िन्दा वापस नहीं आयेंगे।"

उसी रोज़ पांच सौ घोड़े, हज़ारहां कमानों और लखुखहा तीर और आतिश गीर मादे के सर ब मुहर मटके हलब को पैग़ाम के साथ रवाना कर दिये गये कि इस ठोस मदद का सिलसिला जारी रहेगा, और सलाहुद्दीन अय्यूबी पर फ़ौरन हम्ला कर दिया जाये।

❖

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने हैडक्वार्टर में बैठा था। उसके पास सब से पहले अन्तानून और फ़ातमा पहुंचे। फ़ातमा गुमश्तगीन के हरम की वह लड़की थी जिस ने एक सलीबी मुशीर को कत्ल किया और अन्तानून नाम के मुहाफ़िज़ के साथ भाग गयी थी। अन्तानून सुल्तान अय्यूबी का भेजा हुआ जासूस जो जज़्बात से मग़्लूब हो गया था, इसीलिए वह गिरफ्तार हुआ था। यह तो सालार शम्सुद्दीन और सालार शादबख़्त की बदौलत था कि उसे धोखे से भगा दिया गया था। सुल्तान अय्यूबी की इन्टेलीजेंस का सरबराह हसन बिन अब्दुल्लाह था जो अन्तानून और फ़ातमा को सुल्तान अय्यूबी के पास ले गया था– अन्तानून ने अपनी वारदात मिन वअन सुना दी जो सुल्तान अय्यूबी को पसन्द न आई लेकिन उसे इस लिए मांफ कर दिया गया कि वह कामयाबी से गुमश्तगीन के मुहाफ़िज़ दस्ते में शामिल हो गया था। उसने दूसरा कारनामा यह किया था कि उसने फ़ातमा के साथ तअल्लुकात पैदा करके हरम तक रसाई हासिल कर ली थी। सुल्तान अय्यूबी ने अन्तानून के मुतअल्लिक हुक्म दिया कि उसे फ़ौज में भेज दिया जाये क्योंकि जासूसी के नाज़ुक काम के लिए उसके जज़्बात पुख़्ता नहीं हैं। फ़ातमा को दमिश्क भेज देने का हुक्म दिया गया।

"मैं अन्तानून के साथ शादी करना चाहती हूं।" फ़ातमा ने कहा।

"ऐसा ही होगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "लेकिन शादी दमिश्क में होगी। मैदाने जंग शहादत के लिए है शादी के लिए नहीं।"

"सुल्तान ने मोहतरम!" अन्तानून ने कहा– "मैंने आप को नाराज़ किया है। मैं अपने लिए यह सज़ा तजवीज़ करता हूं कि मैं जब तक सुल्तान को ख़ुश न कर लूं शादी नहीं करूंगा।" उसने फ़ातमा से कहा– "तुम सुल्तान के हुक्म के मुताबिक़ दमिश्क चली जाओ। वहां तुम्हारे रहने सहने का बहुत अच्छा इन्तज़ाम है। तुम्हारी शादी मेरे साथ ही होगी।" उसने सुल्तान अय्यूबी से कहा– "मेरी यह अर्ज़ मानी जाये कि मैं आप के किसी छापामार दस्ते में शामिल होना चाहता हूं। मैंने शबख़ून मारने की तरबियत हासिल कर रखी है।"

उसे एक छापामार दस्ते में भेज दिया गया। वहां से रूख़सत होते वक़्त उसने फ़ातमा की

तरफ देखा भी नहीं।

दूसरे दिन जब फातमा को दमिश्क भेजा जाने लगा तो वह लड़कियां पहुंच गयीं जो अल्लकुस्सालेह ने गुमश्तगीन के तोहफे के तौर पर भेजी थीं। उन के साथ सालार शम्सुद्दीन और शादबख़्त के भेजे हुए दो आदमी थे। उन्होंने सुल्तान अय्यूबी को बताया कि हरान में क्या हो रहा है। उन्हें मालूम नहीं था कि दोनों सालारों को गिरफ़्तार कर लिया गया है। लड़कियों ने सुल्तान अय्यूबी को अपनी कहानी सुनाई।

"क्या आप को मालूम है कि फ़िलिस्तीन के मुसलमान आपकी राह देख रहे हैं?" एक लड़की ने कहा– "वहां लड़कियां आप के गीत गाती हैं। मस्जिदों में आप की फ़तह की दुआएं मांगी जाती हैं।" उसने पूरी तफ़सील से सुनाया कि मक्बूज़ा इलाकों में सलीबियों ने मुसलमानों का जीना हराम कर रखा है और उन के लिए दुनिया जहन्नम बना डाली है।

"वहां हमारी बच्चियों की नहीं हमारी अज़्मत की इस्मत दरी हो रही है।" दूसरी लड़की ने कहा– "मैं तो यह कहूंगी कि कौम की अज़मत की अस्मत दरी हमारे अपने हुक्मरान कर रहे हैं। हमें उन के पास तोहफ़े के तौर पर भेजा गया। हम ने उन्हें ख़ुदा के वास्ते दिये और बताया कि हम उन की बेटियां हैं मगर उन्होंने एक न सुनी। उन्होंने हमें एक दूसरे की तरफ़ तोहफ़े के तौर पर भेजना शुरू अ कर दिया।"

"फ़िलिस्तीन के रास्ते में भी वही हाइल हैं।"सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मैं घर से फ़िलिस्तीन पहुंचने के लिए ही निकला था मगर मेरे भाई मेरा रास्ता रोक कर खड़े हो गये हैं। तुम अब महफ़ूज़ हो। एक लड़की पहले भी यहां आई है। उसे दमिश्क भेजा जा रहा है। तुम भी उसीके साथ दमिश्क जा रही हो।"

"हम अपनी इस्मत का इन्तक़ाम लेना चाहती हैं।" लड़की ने कहा– "हमें यहीं रखा जाये और हमें कोई फ़र्ज़ सौंपा जाये। हम अब किसी हरम में या किसी घर में कैद नहीं होना चाहती।"

"अभी हम ज़िन्दा हैं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "तुम दमिश्क चली जाओ। वहां तुम्हें कोई क़ैद नहीं करेगा। वहां लड़कियां कई और तरीकों से हमारी मदद कर रही हैं। वहां तुम्हें कोई फ़र्ज सौंप दिया जायेगा।"

लड़कियों को रुख़्सत करके सुल्तान अय्यूबी बेचैनी से इधर उधर टहलने लगा। उस वक़्त हसन बिन अब्दुल्लाह उसके साथ था। सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मिस्र से अभी कुमक नहीं पहुंची। अगर तीनों फ़ौजें हम पर हम्ले के लिए आ गयीं तो हमारे लिए मुश्किल पैदा हो जायेगी। मालूम होता है दुश्मन को मालूम नहीं कि मेरे पास फ़ौज कम है और मैं कुमक का इन्तज़ार कर रहा हूं। अगर उन की जगह मैं होता तो फ़ौरन हम्ला कर देता और दुश्मन की कुमक और रस्द का रास्ता रोक लेता।"

मिस्र की कुमक आ रही होगी।" हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा– "मोहतरम अल आदिल ऐसे तो नहीं कि वक़्त ज़ाया करेंगे। मुझे यह भी यकीन है कि दुश्मन ने हमारी कुमक का रास्ता रोका हुआ नहीं।"

तमाम मोअर्रिख़ लिखते हैं कि उस मौका पर सुल्तान अय्यूबी बड़ी नाज़ुक और पुर ख़तर सूरते हाल में था। वह मिस्र से कुमक का इन्तज़ार कर रहा था। अगर उस वक़्त अल्मलकुस्सालेह, सैफुद्दीन और गुमश्तगीन की मुश्तर्का फ़ौज उस पर हम्ला कर देती तो उसे आसानी से शिकस्त दी जा सकती थी क्योंकि उसके पास फ़ौज थोड़ी थी। पहाड़ी इलाके में सेहरा की चालें नहीं चल सकता था लेकिन उसके दुश्मन न जाने क्या सोंचते रहे। सलीबी उस पर हम्ला करने की बजाये मुसलमान उमरा को उसके ख़िलाफ़ लड़ाना चाहते थे। उन्होंने भी न देखा कि सुल्तान अय्यूबी मजबूरी की हालत में बैठा अल्लाह से दुआएं मांग रहा है कि उस हालत में दुश्मन उस पर हम्ला न बोल दे। वह तो इस काबिल भी नहीं था कि पानी की उस नदी की हिफाज़त कर सकता था जिस से उसकी फ़ौज के घोड़े और ऊंट पानी पीते थे। सलीबी या उसके मुसलमान दुश्मन अगर अक़्ल से काम लेते तो छापामारों के ज़रिए उसके कुमक और रस्द का रास्ता रोक सकते थे। या कुमक की रफ़्तार सुस्त कर सकते थे। सुल्तान अय्यूबी ने उस रास्ते को गश्ती छापामारों के ज़रिए महफ़ूज़ रखा हुआ था।

काज़ी बहाउद्दीन शद्दाद जो उस वक़्त का ऐनी शाहिद मुबस्सिर है अपनी याद दाश्तों में "सुल्तान युसूफ (सलाहुद्दीन अय्यूबी) पर क्या उफ़ताद पड़ं" में लिखता है– "अगर ख़ुदा उन्हें (दुश्मनों) को फ़तह देना चाहता तो वह सुल्तान अय्यूबी पर उस वक़्त हम्ला कर देते मगर ख़ुदा जिसे ज़लील करना चाहता है वह ज़लील हो के रहता है। (कुर्आन 43/8)। उन्होंने सुल्तान अय्यूबी को इतना वक़्त दे दिया कि मिस्र से कुमक पहुंच गयी। सुल्तान ने उसे अपनी फ़ौज में मुदग़म करके अपनी मोर्चाबन्दी की नयीं तरतीब दे ली और हम्ले से पहले उस ने तमाम तर घोड़ों को पानी भी पिलाया और पानी का ज़ख़ीरा भी कर लिया।"

सुलतान अय्यूबी की बेचैनी का यह आलम था कि रात को सोता भी नहीं था। उसने जहां–जहां अपनी मुख़्तसर फ़ौज मोर्चा बन्द रखी थी, वहां जाता, ग़ौर करता और अपनी स्कीम के मुताबिक यक़ीन कर लेता था कि उसके यह थोड़े से सिपाही दुश्मन का हम्ला रोक लेंगे। कूरूने हमात में जहां एक पहाड़ी सिंगों की तरह दो हिस्सों में बट गई थी उसने दुश्मन के लिए फंदा तैय्यार रखा हुआ था, मगर उसका मसला यह था कि उस जगह इतनी थोड़ी नफ़री से वह सिर्फ़ दिफ़ाई जंग लड़ सकता था, जवाबी हम्ला जो जंग का पांसा पलटने के लिए ज़रूरी होता है मुम्किन नज़र नहीं आता था। उसके जासूसों ने उसे यह भी बता दिया था कि सलीबी कोशिश करेंगे कि मुसलमान उमरा को सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ इस तरह लड़ाया जाये कि जंग तूल पकड़ जाये ताकि सुल्तान अय्यूबी पहाड़ी इलाके से बाहर न निकल सके और महसूर होकर दिफ़ाई जंग लड़ता–लड़ता ख़त्म हो जाये।

उस के जासूस उसे यह नहीं बता सके थे कि नौ फ़िदाई उसे क़त्ल करने के लिए आ रहे हैं।" उसकी नज़र अपनी जान पर नहीं मैदाने जंग पर थी। उसने देख भाल के लिए दूर दूर तक आदमी फैला रखे थे।

उसके दूसरे ही दिन हरान से सुल्तान अय्यूबी का एक जासूस आया जिसने इत्तलाअ दी कि सालार शम्सुद्दीन और शादबख़्त को कैदखाने में डाल दिया गया है क्योंकि उन्होंने

क़ाज़ी इब्ने अलख़सिब को क़त्ल कर दिया है।

जासूस को क़त्ल की वजह का इल्म नहीं था। सुल्तान अय्यूबी के चेहरे का रंग बदल गया। उन दोनों भाइयों के साथ उसने बहुत सी उम्मीदें वाबस्ता कर रखी थीं। उसे मालूम था कि गुमश्तगीन की फौज का कमान इन दोनों के हाथ होगी और उनकी फ़ौज लड़े बग़ैर तितर बितर कर दी जायेगी। जासूस ने यह इत्तलाअ भी की कि अब मैदाने जंग में फौज का कमान गुमश्तगीन ख़ुद करेगा और यह भी कि वह अपनी फ़ौज मुश्तर्का कमान में दे रहा है।

"हसन बिन अब्दुल्लाह!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "यह दोनों भाई ज़्यादा दिन क़ैद में न रहें। इस आदमी (जासूस) से मालूम करो कि हरान में अपने कितने आदमी हैं और क्या वह उन दोनों सालारों को क़ैद खाने से फ़रार करा सकते हैं? मुझे डर है कि उन दोनों को गुमश्तगीन क़त्ल करा देगा। उसे पता चल गया होगा कि यह दोनों सालार मेरे जासूस हैं। मैं इन्तज़ार नहीं कर सकता कि हरान को जाकर मुहासिरे में लूं और क़िला सर करके उन्हें रिहा कराऊं। पेश्तर इसके कि गुमश्तगीन कोई ओछा फ़ैसला कर बैठे उन्हें उस के क़ैदख़ाने से आज़ाद कराओ। मैं दो सालारों के लिए अपने दो सौ छापामारों का मरवाने के लिए तैय्यार हूं। हरान में अपने आदमियों की कमी हो तो यहां से छापामार भेजो।"

"बन्दोबस्त हो जायेगा।" हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा।

❖

हलब चुंकि सुल्तान अय्यूबी के मुख़ालिफ़ीन का मरकज़ बन गया था, इसलिए सलीबियों ने जो तीर कमान, आतिशगीर मादे के मटके और घोड़े मदद के तौर पर भेजे थे वह हलब ले जाये गये। हलब वालों में सलीबियों ने यह ख़ुबी भी देखी थी कि उन्होंने सुल्तान अय्यूबी के मुहासिरे का मुक़ाबला बड़ी ही बेजिगरी से किया था। इसके अलावा हलब सल्तनत की गद्दी भी बन गया था। सलीबी मुशीरों ने मुसिल में सैफ़ुद्दीन को और हरान में गुमश्तगीन को पैग़ाम भेजे कि उन की मुश्तर्का फौज के लिए मदद आ गयी है और वह फ़ौरन हलब में आ जायें। मोअर्रिख़ीन के मुताबिक़ उनकी मुलाक़ात हलब शहर से बाहर एक हरे भरे मुक़ाम पर हुई जहां तीनों में ऐसा मुआहिदा हुआ जो तहरीर में न लाया गया मुआहिदा को आख़िरी शक्ल सलीबी मुशीरों ने दी।

उस रात मुसिल के क़ैदख़ाने में जो ख़तीब इब्ने अल मख़्दूम हसबे मामूल दीये की रौशनी में बैठा क़ुर्आन पढ़ रहा था। उसकी बेटी साएका उसी मकान के एक कमरे में थी जहां उसे थैले में डाल कर ले जाया गया था। जिस बॉडीगार्ड को उसके साथ पकड़ा गयाथा वह दूसरे कमरे में बन्द था। इस मकान में उनमें से सिर्फ़ दो आदमी थे जो साएका और बॉडीगार्ड को उठा लाये थे। उनके बाक़ी साथी क़ैद ख़ाने की दिवार के साथ बाहर की तरफ़ लगे खड़े थे। दिवार का बालाई हिस्सा क़िले की दिवार की तरह था। जिस में मोर्चे से बने हुए थे। दिवार पर संतरी घूम फिर रहे थे। उनकी तादाद ज़्यादा नहीं थी। वह ओहदेदार जिसने ख़तीब को फ़रार कराने का वादा किया था, दिवार पर चला गया। वह संतरियों को देखता फिर रहा था। उसने उस दिवार वाले संतरी को जिस के नीचे आदमी खड़े थे बुलाया उसे अपने साथ ले

गया।

उसने कोई इशारा किया। नीचे छुपे हुए आदमियों ने रस्सा ऊपर फेंका। रस्से का सिरा एक मज़बूत डंडे के दर्मियान बंधा हुआ था और डंडे पर कपड़े लपेट दिये गये थे ताकि ऊपर दिवार पर गिर कर ज़्यादा आवाज़ न पैदा करे। डंडा ऊपर जाकर अटक गया। एक तो अंधेरा था दूसरे ओहदेदार संतरी को दूर ले गया था। चार आदमी रस्से के ज़रिए ऊपर चढ़ गये। यही रस्सा उपर खींच कर अन्दर की तरफ़ गिरा दिया गया। चारों ने ख़जंर निकाल कर अपने अपने मुंह में पकड़ लिए और रस्से से नीचे उतर गये। उन्हें ओहदेदार ने अन्दर का नक़्शा समझा रखा था। अन्दर कुछ रौशनी थी। कहीं कहीं मशाले जल रही थीं। कोठरी की एक क़तार के आगे बरामदा था जिस में एक संतरी टहल रहा था। चारों छुप गये। संतरी उनकी तरफ़ आया तो एक आदमी ने कहा– "इधर आना भाई।" वह ज्योंहि उधर गया दो आदमियों की गिरफ़्त में आ गया। दिल पर ख़ंजर के दो वार काम कर गये।

चारो आदमी छुप–छुप कर आगे बढ़ रहे थे। एक ख़ासा आगे था। बाक़ी तीन बिख़र कर छुपते छिपाते उसके पीछे जा रहे थे। वह क़ैदखाने के उस हिस्से में पहुंच गये जो गोलाई में था। ख़तीब की कोठरी उसी हिस्से में थी। आगे जाने वाला आदमी उस कोठरी तक पहुंच गया। ख़तीब ने दरवाज़े की तरफ़ देखा। उस ने क़ुर्आन बन्द किया और उठ कर दरवाज़े की तरफ़ आया। उस आदमी के हाथ में बड़ी सी चाबी थी। यह ओहदेदार ने एक लोहार से बनवाई थी। उसे क़ैदखाने की चाबियों से पूरी तरह वाक़फियत थी। उस आदमी ने ताले में चाबी लगाई तो ताला खुल गया। दूसरे लम्हे ख़तीब कोठरी से बाहर था। वह वापस चल पड़े।

दौड़ते हुए क़दमों की आहट सुनाई दी और यह आवाज़– "ठहर जाओ कौन है?" इधर से कहा गया– "भाग के आओ दोस्त।" यह आवाज़ अंधेरे से उभरी थी। वह ज्योंहि उस जगह पहुंचा एक ख़ंजर उसके दिल में उतर गया। वह आगे को झुका तो उसकी पीठ की तरफ़ से एक और ख़ंजर उसके दिल तक जा पहुंचा। ख़तीब को रस्से तक ले आये।

सबसे पहले एक आदमी उपर चढ़ा फिर ख़तीब ऊपर आया। ओहदेदार ने संतरी को अभी तक कहीं दूर बातों में उलझा रखा था। वह सब ऊपर आये फिर रस्सा खींच कर बाहर की तरफ़ फेंका और सब नीचे उतर गये। ओहदेदार को क़ैदख़ाने के बाहर से एक गड़ेड़िये की बोलने की आवाज़ सुनाई दी। उसने संतरी को दूसरी तरफ़ भेज दिया और ख़ुद वहां आया जहां रस्सा लटक रहा था। वह तेज़ी से रस्सा से उतर गया।

यह सब उस मकान में चले गये जहां साएका और बॉडीगार्ड थे। अपने बाप को देखकर साएका के जज़्बात बे क़ाबू हो गये। जब सुबह तुलूअ हुई तो मुसिल से मीलो दूर चार घोड़े जा रहे थे। एक पर ख़तीब सवार था, दूसरे पर साएका, तीसरे पर क़ैदख़ाने का ओहदेदार और चौथे पर एक और आदमी। यह आदमी सुल्तान अय्यूबी के जासूसों में से था। वह बॉडीगार्ड को पकड़ लाने वाली पार्टी में भी था। उसी ने बॉडीगार्ड से बड़ी क़ीमती राज़ उगलवाये थे। वह जब मुसिल से बहुत दूर पहुंच गये थे उस वक़्त बॉडीगार्ड की लाश उसी मकान में कहीं दफ़्न की जा चुकी थी। रात को जब यह पार्टी फ़रार हुई थी बॉडीगार्ड को क़त्ल कर दिया

गया था।

उस वक़्त तक कैदखाने में भी कयामत बपा हो चुकी थी। अन्दर दो संतरियों की लाशें पड़ी थीं। ख़तीब ग़ायब था। ओहदेदार का भी किसी को इल्म नहीं था कि कहां चला गया है और दिवार के साथ बाहर की तरफ़ एक रस्सा लटक रहा था। वालिये मुसिल के हां तो एक रोज़ पहले से ही कयामत बपा हो चुकी थी कि सैफुद्दीन ने यह हुक्म दे दिया था कि उसका बॉडीगार्ड साएका को कैदखाने के बहाने किसी और जगह ले जाने और उस तक पहुंचाने के लिए गया था, लेकिन लड़की इतनी खुबसूरत थी कि बॉडीगार्ड की नीयत ख़राब हो गयी और वह उसे कहीं भगा ले गया। यह तो वह सोच भी नहीं सकता था कि बॉडीगार्ड को लड़की समेत पकड़ लिया गया है।

❖

हरान के कैदखाने में शम्सुद्दीन और शादबख़्त कैद थे। सुल्तान अय्यूबी ने हुक्म दे दिया था कि उन्हें वहां से निकालने का बन्दोबस्त किया जाये लेकिन उन्होंने हरान में जो अपना गिरोह तैय्यार रखा था वह पहले ही बन्दोबस्त कर चुका था। उन सलारों ने फ़ौज और इन्तज़ामिया की हर सतह पर एक–एक दो–दो आदमी दाख़िल कर रखे थे। सालारों के फरार में दुश्वारी यह थी कि उन्हें कैदखाने के तहख़ाने में रखा गया था। वहां से निकालने के लिए कोई ख़ुसूसी तरीका इख़्तियार करने की ज़रूरत थी। ख़ुदा ने उनकी मदद की। गुमश्तगीन को हलब से बुलावा आ गया और वह अपने आला हुक्काम, मुशीरों और मुहाफ़िज़ों को साथ लेकर रवाना हो गया। शम्सुद्दीन और शादबख़्त की गिरफ़्तारी के मुतअल्लिक सिर्फ़ गुमश्तगीन के क़रीबी हल्कों को इल्म था। काज़ी के क़त्ल को भी शोहरत नही दी गयी थी। फ़ौज तक को अभी मालूम न था कि उनके दो आला कमाण्डरों को कैदख़ाने में डाल दिया गया है।

गुमश्तगीन के जाने के एक रोज़ बाद कैदख़ाने के दारोग़ा ने देखा कि तीन घोड़सवार घोड़े दौड़ाते आ रहे हैं। वह गर्द से बाहर आये तो उसने देखा कि उनके साथ दो घोड़े ख़ाली हैं। दिन का वक़्त था। घोड़े कैदखाने के दरवाज़े पर आकर रूक गये। एक सवार ने हरान की फ़ौज का झंडा भी उठा रखा था। यह झंडा मैदाने जंग में सालारे आला के साथ होता था। उन सवारों में एक कमानदार था और दूसरे दो सवार सिपाही थे। वह मुहाफ़िज़ दस्ते के मालूम होते थे। कैदखाने का दारोग़ा जो बड़े दरवाज़े के सलाख़ों मे से देख रहा था, उसके कमानदार को जानता था। वह बाहर आ गया। कमानदार से पूछा कि वह क्यों आयें हैं?

"बादशाहों के हुक्म निराले होते हैं।" कमानदार ने कहा– "शराब के नशे में उन सालारों को कैद खाने में डाल दिया जिनके बग़ैर फ़ौज एक कदम भी नहीं चल सकती। अब हुक्म मिला है कि दोनों को कैदखाने से निकाला जाये।"

"आप दोनों सालारों को लेने आये हैं?" दारोग़ा ने पूछा।

"हां।" कमानदार ने कहा– "उन्हें जल्दी ले जाना है।"

"आप के पास किलादार अमीर गुमश्तगीन का तहरीरी हुक्मनामा है?" दारोग़ा ने कहा।

"वह तो कहीं बाहर चले गये हैं।"

"मैं वहीं से आया हूं।" कमानदार ने कहा– "मैं रात को ही आ गया था। उन्हें अब तहरीरी हुक्मनामा जारी करने का होश नही रहा। हमारी फ़ौज हलब और मुसिल की फ़ौजों के साथ मिल कर सुल्तान पर हम्ला करने जा रही है। अगर हमने वक़्त ज़ाया कर दिया तो अय्यूबी हम्ला कर देगा। ख़तरा बढ़ गया है। गुमश्तगीन उसी सिलसिले में बाहर गया है। उसे जो ख़तरा नज़र आ रहा है, उसने उसके होश ठिकाने कर दिये हैं। उसे एहसास हो गया है कि उन दो सालारों के बग़ैर वह लड़ नहीं सकेगा। उसने मुझे हलब के रास्ते से वापस दौड़ा दिया कि उन दोनों को उनके झंडे के साथ पूरे एअज़ाज़ से लाओ। उसी हुक्म के तेहत हम उनका झंडा और घोड़े लाये हैं।"

दारोग़ा उसे अन्दर ले गया। दोनों सिपाही भी साथ चले गये। वह तहख़ाने में गये। सालार दो मुख़्तलिफ़ कोठरियों में बन्द थे। पहले एक सालार को निकाला गया। कमानदार ने उसे फ़ौजी अन्दाज़ से सलाम करके कहा– "अमीर हरान गुमश्तगीन ने आप की रिहाई का हुक्म भेजा है। आप का घोड़ा और आप का ज़ाती मुहाफ़िज़ हमारे साथ है। आप के लिए हुक्म है कि तैय्यार होकर फ़ौरन हलब पहुंचें।"

"मालूम होता है शराब का नशा उतर गया।" सालार ने कहा।

"मेरी हैसियत ऐसी नहीं कि आप की राय की तरदीद कर सकूं।" कमानदार ने कहा– "मेरा काम हुक्म पहुंचाने और आप के साथ जाने तक महदूद है।"

दारोग़ा ने उनकी बातें ग़ौर से सुनीं। उसे यक़ीन हो गया कि यह कोई गड़बड़ नहीं लेकिन दूसरे सालार को निकालने लगे तो दारोग़ा को शक हो गया। उस सालार ने कमानदार को देखा तो जज़्बात से मग़लूब होकर बोला– "तुम आ गये? सब ठीक है? । उसने दारोग़ा की मौजूदगी को नज़रअन्दाज़ कर दिया था। दारोग़ा अनाड़ी नहीं था। उसकी उम्र क़ैदख़ाने में गुज़री थी। उसने कोठरी का ताला खोल दिया था। दरवाज़ा खुलना बाक़ी था। उसने ताला फिर चढ़ा दिया और बोला– "तहरीरी हुक्मनामे के बग़ैर मैं इन्हें रिहा नहीं करूंगा।"

कमानदार ने उसके हाथ पर हाथ मारा और उससे चाबी छीन ली। दो सिपाही जो सालारों के बॉडीगार्ड बन कर आये थे, दारोग़ा की पीठ के साथ लग गये। दोनों ने ख़ंजर निकाल कर उनकी नोकें उसकी पीठ पर रख दिये। कमानदार ने उसे सरगोशी में कहा– "तुम सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के छापामार जांबाज़ो के कब्ज़े में हो। तुम जानते हो कि सुल्तान अय्यूबी के छापामार क्या करते हैं। ऊंची आवाज़ न निकले।"

कमानदार ने दरवाज़ा खोला। दारोग़ा को ढकेल कर इस तरह कोठरी में ले गये कि क़रीब से गुज़रने वालों को भी शक नहीं हो सकताथा कि यहां कोई जुर्म हो रहा है। अन्दर ले जाकर उसे सलाख़ों वाले दरवाज़े से परे कर लिया गया। एक सिपाही ने बड़ी तेज़ी से एक रस्सी जो बमुश्किल पौन गज़ लम्बी थी, उसकी गर्दन के गिर्द लपेट कर रस्सी को मरोड़ा और दो तीन झटके दिए। दारोग़ा की आखें बाहर निकल आयीं। वह ठंडा हो गया तो उसे पत्थर के उस चौड़े बेंच पर डाल दिया गया जिस पर क़ैदी सोया करते थे। लाश पर कम्बल डाल

दिया। उस सालार ने बेमौक़ा जज़्बाती होकर यह मुश्किल पैदा कर दी थी।

इन लोगों ने बाहर निकल कर दरवाज़े पर ताला चढ़ाया और चाबी अपने पास ले गये। बाहर के दरवाज़े की चाबियां दारोग़ा के पास थीं। वह भी उससे छीन ली गयी थीं। यह पार्टी वहां से चली। तहख़ाने से ऊपर आई तो नीचे के संतरी ने जाकर ख़ाली कोठरियों को देखना चाहा। वह दूर से देख रहा था कि क़ैदखाने के दारोग़ा दो क़ैदियों को रिहा कर रहा था। संतरी यह देखकर हैरान रह गया कि उसने दोनों क़ैदी सालारो को बाहर जाते देखा है, लेकिन एक कोठरी में एक क़ैदी पड़ा है। उस पर जो कम्बल पड़ा था, इस लिए वह पहचान न सका कि वह कौन है। दूसरी कोठरी खाली थी। उसने कम्बल में लिपटे हुए क़ैदी को आवाज दी मगर वह न बोला। दरवाज़ा बन्द था। संतरी ने सलाख़ों में से बरछी अन्दर की। उसकी नोक क़ैदी तक पहुंच गयी। उसने नोक क़ैदी को चुभोई। वह फ़िर भी न उठा। बरछी से उसने कम्बल हटा कर उसका चेहरा नंगा कर दिया। यह देख कर घबरा गया कि वह तो क़ैदखाने का दारोग़ा था। आंखों और चेहरे से साफ़ पता चलता था कि वह मरा हुआ है।

उसने वहीं से चिल्लाना शुरू अ कर दिया— "ख़बरदार, ख़बरदार क़ैदी निकल गये।" वह ऊपर को दौड़ा। उसकी पुकार पर नक्कारा बजने लगा। यह एलार्म था। उस वक़्त तक फ़रार होने वाली पार्टी बड़े दरवाज़े तक पहुंच चुकी थी। संतरी दौड़ा आ रहा था। बड़े गेट की चाबियां कमानदार के पास थीं। उन्होंने क़दम तेज़ कर दिये और अन्दरूनी ताले की चाबी लगाई। संतरी ने दूर से कहा— "उन्हें रोक लो। दारोग़ा कोठरी में मरे पड़े हुए हैं।

नक्कारे के अवाज़ पर क़ैदख़ाने के तमाम संतरी अपने अपने ड्यूटी पर पहुंच गये। बाहर की गार्दी आयी। दरवाज़ा खोल दिया गया। चूंकि यह ख़तरे का एलार्म था, इसलिए बाहर से आने वाली नफ़री ट्रेनिंग के मुताबिक़ बहुत तेज़ी से दरवाज़े में दाख़िल हुई। सबसे बड़ा ख़तरा यह हुआ करता था कि क़ैदियों ने बग़ावत कर दी होगी या कहीं आग लग गयी होगी। वह संतरी चीखता चिल्लाता आ रहा था, बाहर से आने वाली गार्द के सैलाब में गुम हो गया। इस हुड़दंग से फ़ाएदे उठाते हुए फ़रार होने वाले बाहर निकल गये। घोड़े बाहर खड़े थे। वह घोड़ों पर सवार हुए लेकिन घोड़े घूम कर चले तो किसी ने उन्हें ललकारा— "रूक जाओ मारे जाओगे।" उन्होंने घोड़ों को ऐड़ लगा दी।।

पीछे से एक ही बार तीरों की बौछार आई। दो तीर कमानदार की पीठ में उतर गये और एक तीर एक सालार के घोड़े के पीछले हिस्से में लगा। कमानदार ने जिस्म में दो तीर लेकर भी अपने आप को सम्भाले रखा। सालार शम्सुद्दीन का घोड़ा तीर खाकर बिदका। शम्सुद्दीन ने उसे संम्भालने की कोशिश की और उसे कमानदार के घोड़े के करीब लेजाकर उसके घोड़े पर कूद गया। कमानदार आगे को झुक गया। शम्सुद्दीन ने उसके हाथ से बागे ले लीं पीछे से और तीर आये लेकिन घोड़ों की रफ़्तार अच्छी थी, ज़द से निकल गये।"

उन्होंने पीछे देखा। क़ैदखाना दूर रह गया था लेकिन दस बारह घोड़सवार उनके तआक्कुब में घोड़े दौड़ा चुके थे। आगे इलाक़ा खुला था। आबादी दूसरी तरफ़ थी। फ़रार होने वालों ने घोड़ों को इन्तेहाई रफ़्तार पर डाल दिया। उनके पास हथियारों की कमी थी।

दोनों सालार निहत्थे थे। कमानदार शहीद हो रहा था। वह मुकाबला करने की हालत में नहीं थे। आगे चट्टाने और टीले आ गये। एक सलार ने कहा– "बिखर जाओ। अकेले–अकेले हो जाओ।" वह मंझे हुए सवार थे। तआक्कुब करने वाले अभी दूर थे। उन्होंने देखा कि फरार होने वाले एक दूसरे से दूर दूर होकर चट्टानों में ग़ायब हो गये हैं। वह सुस्त पड गये और निकलने वाले निकल गये।

❖❖

गुनाहो का कफ़्फ़ारा

उस वक़्त हलब के बाहर तीनों मुसलमान उमरा की जो कान्फ्रेन्स मुनअक़िद हुई थी बर्ख़ास्त हुई। उन्होंने सुल्तान पर हम्ले का प्लान बना लिया था। ज़्यादा तर अक्ल सलीबी मुशीरों की इस्तेमाल की गयी थी। उन्होंने यह भी तय कर लिया था कि तीनों फ़ौजों की तरतीब क्या होगी। हम्ले के लिए गुमश्तगीन की फौज को आगे रखना था। उसके पहलूओं की हिफाज़त की ज़िम्मेदारी हलब की फौज की थी और पहले हम्ले के बाद दूसरा हम्ला सुल्तान अय्यूबी के जवाबी हम्ले को रोकने के लिए करना था, सैफद्दीन के सुपुर्द किया गया था। सैफुद्दीन ने उस मुत्तहिदा मुहाज़ को यह धोखा दिया कि वह अपनी फ़ौज का एक हिस्सा अपने भाई अज़ाउद्दीन मस्ऊद की कमान में छोड़ आया था। मुश्तर्का कमान को उसने यह बताया था कि यह महफूज़ है जिसे वह हंगामी हालात में इस्तेअमाल करेगा, मगर अपने भाई को उसने कहा था कि वह हलब और हरान की फ़ौजों की कैफ़ियत देखकर आगे आये। अगर जंग की हालत हमारे ख़िलाफ हो गयी तो महफूज़ा को मुसिल के दिफ़ाअ में इस्तेमाल किया जाये और अगर जवाबी हम्ले में शरीक होना ही पड़ा तो यह शिर्कत ऐसी हो कि मुसिल का और अपने मुफाद का ज़्यादा ख़्याल रखा जाये।

माहे रमज़ान शुरू हो चुका था। उन तीनों फ़ौजों में एलान कर दिया गया था कि जंग के दौरान रोज़े की कोई पाबन्दी नहीं। तीन चार रोज़ बाद तीनों अफवाज अपने–अपने शहर से कूच कर गयीं। उन्हें कूरूने हमात के करीब आकर इकठ्ठे होना और हम्ले की तरतीब में आना था।

उस कूच से दो रोज़ पहले सुल्तान अय्यूबी अपनी मोर्चा बन्दी देख रहा था जब उसे इत्तलाअ मिली कि हरान से दो सालार मफ़रूर होकर आये हैं और उन के साथ एक लाश है। सुल्तान अय्यूबी ने घोड़े को ऐड़ लगादी।

वहां जाकर वह घोड़े से कूद कर उतरा और दोनों सालारों को गले लगाया। फिर दोनों सिपाहियों से गले मिला। यह दोनों उसके नामवर छापामार जासूस थे। कमानदार भी उसका जासूस था और एक अर्से से गुमश्तगीन की फ़ौज में था। सुल्तान अय्यूबी ने लाश के गालों का बोसा लिया और हुक्म दिया कि लाश दमिश्क़ भेज दी जाये और शहीदों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न की जाये।

आप यहां बैठे क्या कर रहें हैं?" सालार शम्सुद्दीन ने अपनी बिपता सुनाने से पहले जंगी बातें शुरू कर दीं।

"मैं कुमक का इन्तज़ार कर रहा हूं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "गुज़िश्ता रात इत्तलाअ

मिली है कि कुमक आज रात पहुंच जायेगी। उसे काहिरा से आना था, इसलिए इतने दिन लग गये हैं।"

सुल्तान अय्यूबी ने दोनों भाईयों को तफ्सील से बताया कि उस की नफरी कितनी है और उसे उसने किस तरह डिप्लाई कर रखा है। उसी वक़्त सुल्तान अय्यूबी ने अपने तमाम दस्तों के कमाण्डरों को बुलाया और शम्सुद्दीन और शादबख़्त से मिलाया। पुराने अफ़सर दोनों को जानते थे। सुल्तान अय्यूबी ने दोनों से कहा कि वह उसके कमाण्डरों को बतायें कि जो अफ़वाज हम्ला करने आ रही हैं उनकी जंगी अहलियत कैसी और जज़्बाती कैफ़ियत क्या है। उन्होंने बताया कि फ़ौज बहरहाल फ़ौज होती है। दुश्मन को अनाड़ी और कमज़ोर समझना एक जंगी ग़ल्ती तसव्वुर की जाती है। यह न भूलें कि मुसलमान अफ़वाज हैं जिनके सिपाही पीठ दिखाने के आदी नहीं। सिपाहियों में अस्करी रूह मौजूद है। वह पूरे जोश व ख़रोश से लड़ेंगे। उनके ज़ेहनों में यह डाला गया है कि आप लोग दरिन्दे, वहशी और औरतों के शिकारी हैं। और सुल्तान अय्यूबी अपनी सल्तनत को वुसअत देने आया है। सलीबियों ने उनके दिलों में आप के ख़िलाफ़ नफ़रत भर रखी है।

सलारों ने बताया कि जहां तक उनकी क़यादत का तअल्लुक़ है, वह काबिले तारीफ़ नहीं। उनमें कोई भी सुल्तान अय्यूबी नहीं— सैफ़ुद्दीन और गुमश्तगीन अपने ज़ाती मुफ़ाद के लिए लड़ने आ रहे हैं। दोनों अपने हरम और शराब के मटके साथ लायेंगे। हमारी जगह गमुश्तगीन अपने फ़ौज की कमान ख़ुद करेगा। यह क़यादत फ़ौज को तरीक़े से लड़ा नहीं सकेगी। फिर भी आप को मोहतात होकर लड़ना पड़ेगा। वह आप को इन पहाड़ियों में मुहासिरे में लेना चाहते हैं। तीनो फ़ौजों की कमान मुश्तर्क हो गी लेकिन वह दिल से मुत्तहिद नहीं।

यह बातें हो रही थीं कि ख़तीब इब्ने अल मख़्दूम, साएका, क़ैदख़ाने का ओहदेदार और एक जासूस पहुंच गये। वह रास्ता भूल गये थे इस लिए देर से पहुंचे। सुल्तान अय्यूबी को मालूम था कि ख़तीब उसका हामी है और वह मुसिल में उसके जासूसों की रहनुमाई और निगरानी करता रहा है। सुल्तान अय्यूबी ने उसे भी इज्लास में शामिल कर लिया और उसे कहा कि वह मुसिल की फ़ौज के मुतअल्लिक़ कुछ बताये।

"वह अमीर अपनी फौज को किस तरह लड़ायेगा जो शराब और औरत का रसिया हो और क़ुर्आन से फ़ाल निकाल कर फ़ैसले करता हो।" ख़तीब ने कहा— "जिसके सीने में ईमान ही नहीं वह मैदाने जंग में ज़्यादा देर नहीं ठहर सकता। उसने मुझ से कहा कि मैं क़ुर्आन से फ़ाल निकाल कर बताऊं कि सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ जंग में उसे फ़तह होगी या शिकस्त। मैंने उसे बताया कि चूंकि उसका यह इक़्दाम क़ुर्आनी एहकाम के ख़िलाफ़ है इसलिए उसे शिकस्त होगी। उसने मुझे क़ैदख़ाने में डाल दिया। वह क़ुर्आन को जादू की किताब समझता है। मैं आपको क़ुर्आन की करामात सुनाता हूं। मेरा फ़रार क़ुर्आन की बदौलत मुम्किन हुआ है। सैफ़ुद्दीन ने मेरी बेटी को अग़्वा करने की कोशिश की लेकिन मेरी बेटी बाल–बाल बच गयी। मैं आप सब को यह मुज़्दा सुनाता हूं कि अगर आप क़ुर्आनी एहकाम के पाबन्द रहे और जंग को क़ौमी और मज़हबी सतह पर रहने दिया तो फ़तह आप की होगी। यह

जंग का मज़हबी पहलू है। फन्नी पहलू के मुतअल्लिक मैं यह मश्वरा दूंगा कि छापामारों को ज्यादा इस्तेमाल करें। आपका तो तरीका ही यही है लेकिन इन मुसलमान भाइयो के खिलाफ़ यह तरीका ज़्यादा इस्तेमाल करें। उन्हें रातों को भी चैन न लेने दें।"

ख़तीब को जिस ओहदेदार ने फ़रार कराया था वह भी साथ था। उसकी दरख़्वास्त पर उसे फ़ौज में शामिल कर लिया गया और ख़तीब को उसकी बेटी साएका के साथ दमिश्क भेज दिया गया। सालार शम्सुद्दीन और सालार शादबख़्त को सुल्तान अय्यूबी ने अपने साथ रखा।

❖

हलब, हरान और मुसिल की अफ़वाज कूच करती आ रही थीं। इधर सुल्तान अय्यूबी के लिए मिस्र से जो कुमक आ रही थी वह करीब आ गयी थी। तारीख़ यह देख रही थी कि सुल्तान अय्यूबी तक दुश्मन की फ़ौज पहले पहुंचती है या कुमक। वह बहुत परेशान था। वह मुहासिरे से डरता था। कुमक के बग़ैर मुहासिरा तोड़ना आसान नहीं था। उसने दिफ़ाई कुव्वत का आख़िरी ज़र्रा भी उस मसले पर सर्फ़ कर डाला कि वह मुहासिरे में आ गया तो इतनी थोड़ी नफ़री से मुहासिरा किस तरह तोड़ेगा। वह इस कदर परेशान हो गया कि उसने अपनी आला कमान के सालारों से उसका इज़हार कर दिया। उसने कहा– "छापामार दस्तों को मुकम्मल तौर पर अपने काबू में और अपनी नज़र में रखना। कुमक का कुछ पता नहीं। मुहासिरे का ख़तरा है। मुहासिरा सिर्फ़ छापामार ही तोड़ सकेंगे।"

"अल्लाह को जो मंज़ूर होगा वह होकर रहेगा।" एक सालार ने कहा– "यह किला तो नहीं जिसमें महसूर होकर हम लड़ नहीं सकेंगे। इन चट्टानों पर हम घूम फिर कर लड़ेंगे।

उस रात भी वह अच्छी तरह सो नहीं सका। उसके खेमें में कंदील जलती रही। उसने मैदाने जंग और उस इलाके का जो नक़्शा बनाया था उसी को देखता और उस पर निशान लगाता रहा। अगर उसे कोई ग़ैर फ़ौजी देखता तो यही कहता कि वह शतरंज खेलने की मश्क कर रहा है। सेहरी खाने के लिए जब नक़्कारे बजे और उस की फ़ौज जाग उठी तो उसकी भी आंख खुली। दो ख़बरें इकठ्ठी मिलीं। एक यह कि कुमक पहुंच गयी है और दूसरी यह कि दुश्मन की अफ़वाज आठ दस कोस तक आ गयी हैं और शायद कल हमारे सर पर आ जायेंगी। यह देख भाल की किसी पार्टी का कमाण्डर था। उसने बताया कि दुश्मन की पेशकदमी तीन हिस्सो में हो रही है। एक हिस्सा आगे है दूसरा पीछे और तीसरा उससे पीछे।

सुल्तान अय्यूबी ने जो मालूममात लेनी थी लेलीं। उसने इत्तलाअें लाने वालों को भेज दिया और दरबान से कहा कि वह छापामार दस्तों के कमाण्डर और कुमक के आला कमाण्डरों को फ़ौरन बुलाये और उन्हें कहे कि वह सेहरी उसके साथ खायें। उसने जल्दी-जल्दी वज़ू किया और कुमक आ जाने पर शुकराने के नफ़िल पढ़े, फिर ख़ुदा से कामयाबी की इल्तिजा की....थोड़ी ही देर में छापामारों का कमाण्डर आ गया और उसके बाद कुमक के चार कमाण्डर आ गये। सेहरी का खाना भी आ गया। कुमक उसकी तवक्क़ो से कम थी लेकिन इन हालातों में यही काफ़ी थी। अलआदिल ने अस्लहा जो भेजा था उससे सुल्तान अय्यूबी मुत्मईन हो

गया। अस्लहा छोटी और बड़ी मिन्जनिकें ज़्यादा थीं और आतिशगीर मादा भी बहुत ज़्यादा था। कुमक नफ़री के लिहाज़ से थोड़ी थी लेकिन यह नफ़री चूंकि तजुर्बाकार थी इसलिए कारगर तसव्वुर की जाती थी। अलबत्ता यह दुश्वारी नज़र आ रही थी कि इस फ़ौज और घोड़ों को पहाड़ी लड़ाई का तजुर्बा नहीं था।

इतने में इन्टेलीजेंस का सरबराह हसन बिन अब्दुल्लाह आ गया। उसने बताया कि हलब से अपना एक जासूस आया है जिसने मालूमात दी हैं कि सलीबियों ने उस मुश्तर्का लश्कर को तीरों और कमानों का ज़ख़ीरा, आतिश गीर मादे के मटके और पांच सौ घोड़े भेजे हैं। जासूस ने यह भी बताया है कि वह पेशक़दमी के बाद आया है, इसलिए उस ने देखा है कि यह मटके ऊंटों पर लाद कर लाये गये हैं। यह काफ़िला अलग थलग फ़ौज के साथ है। मिन्जनिकें भी साथ हैं। इससे ज़ाहिर होता है कि दुश्मन मिन्जनिकों से आग के गोले फेंकेगा और फ़लीते वाले आतिशी तीर चलायेगा।

सुल्तान अय्यूबी ने छापामारा दस्तों के आला कमाण्डर से कहा– "तुम्हें सब कुछ बताया जा चुका है। अपना काम तुम जानते हो। अब पहले मंसूबे में यह तरमीम कर लो कि जब तक दुश्मन हम्ला न करे उस पर कहीं भी शबख़ून न मारना। इत्तलाअ के मुताबिक़ वह सीधा क़ूरूने हमात की तरफ़ आ रहा है। शबख़ून मरोगे तो उसकी रफ़्तार सुस्त हो जायेगी। हम्ले के बाद तुम्हें मालूम है कि मैं जवाबी हम्ला नहीं करूंगा। दुश्मन को मेरे हम्ले की तवक़्क़ो होगी जो मैं सामने से नहीं अक़्ब से करूंगा। तुम्हारा काम उस वक़्त शुरू होगा जब दुश्मन अक़्ब के हम्ले से घबराकर इधर उधर निकलने की कोशिश करेगा।

इन पहाड़ियों में से दुश्मन का एक भी सिपाही निकल कर न जाये। ज़्यादा से ज़्यादा क़ैदी पकड़ो। वह मुसलमान सिपाही हैं। तुम्हारे क़ैद मे आयेंगे तो हक़ और बातिल को समझ जायेंगे। यही मेरा मंशा है। हमारे मुक़ाबले में आकर हमारे तीरों से और हमारी तलवार से जो मरता है उसे मरते मैं रोक नहीं सकता.......

"तुम्हारे सामने यह इत्तलाअ आई है कि दुश्मन आतिश गीर मादे के मटके ला रहा है। होना तो यह चाहिए कि यह सही हालात में हमारे कब्ज़े में आ जायें लेकिन इन से तुम एक फ़ायदा उठा सकते हो। अपने किसी दस्ते के दस बारह मुन्तख़ब छापामारों को यह काम सौंपो कि वह हम्ले के दौरान शबख़ून मार कर उन मटको को तोड़ दें और आग लगा दें। दिन के वक़्त यह देख लें कि मटकों का क़ाफ़िला कहां है। सब से ज़्यादा ज़रूरी बात यह है कि दुश्मन अभी नदी तक नहीं पहुंचा। घोड़ों को पानी पिला लो और मश्कीज़े भर लो। मौसम सर्द है और यह सेहरा नहीं, प्यास से कोई मरेगा नहीं फिर भी यह जंग है और प्यास परेशान करेगी।"

उसे रुख़्सत करके उसने कुमक के कमाण्डरों से कहा– "तुम लोग सिर्फ़ यह ज़ेहन में रखना कि यह मिस्र का सेहरा नहीं पहाड़ी इलाक़ा है और ठंड है। धूप निकलेगी और भागो दौड़ोगे तो गर्मी आ जायेगी। यहां तुम्हें 'सिर्फ़ ज़रब लगाओ और किसी और तरफ़ निकल जाओ' का मौक़ा ज़रूर मिलेगा। तुम्हें उसकी तरबियत दी गयी है लेकिन यहां ख़्याल रखना

कि तुम्हारे लिए ज़मीन महदूद है। सेहरा में तो कई कई कोस का चक्कर काट कर दुश्मन के उपर आ सकते हो और तुम्हें अपनी चाल दुहराने के लिए लामहदूद मैदान मिल सकता है। यहां मैंने दुश्मन को जिस जगह घसीट कर लाने का बन्दोबस्त किया है वह मैदान ही है। लेकिन महदूद है। वक़्त नहीं है कि तुम्हें चट्टानों और टेकरियों से मुतअरूफ़ क.. .ा जाये, इसलिए अपनी अक़्ल इस्तेमाल करना। तीर अन्दाज़ों को चट्टानों पर रखना। घोड़ों को टेकरियों पर न ले जाना, जल्दी थक जायेंगे। हमारे घोड़े कुछ आदी हो गये हैं।"

उस ने कुमक को महफ़ूज़ के तौर पर रख लिया और कामण्डरों को अपनी आला कमान के सालारों के सुपुर्द कर दिया। इन सालारों को जंग का प्लान दिया जा चुका था।

❖

वादियों में सुबह की आज़ान की कई मुकद्दस आवाज़ें गूंज रही थीं। सुल्तान अय्यूबी ने गुस्ल किया। अपनी तलवार न्याम से निकाली। उसकी चमक और धार देखी और जज़्बात अचानक उबल पड़े। उसने तलवार दोनों हाथों पर रखी, किब्ला रू होकर हाथ उठाये। आखें बन्द करके उसने ख़ुदा को पुकारा– "ख़ुदाये अज़्ज़ोजल! तेरी ख़ुश्नूदी इसमें है कि मुझे शिकस्त दे तो मैं इस ज़िल्लत के लिए तैय्यार हूं। फ़तह दे तो तेरी ज़ात बारी का शुक्र आदा करूंगा। आज मैं तेरे रसूल सल्ल0 के नाम लेवाओं के ख़िलाफ़ लड़ रहा हूं। अगर यह गुनाह है तो मुझे इशारा दे कि मैं अपनी तलवार अपने पेट में उतार दूं। उन बच्चियों के पुकार पर आया हूं जिन की इस्मते सिर्फ़ इसलिए लूट गयी हैं कि वह तेरे रसूल सल्ल0 की उम्मत से थीं। मुझे तेरे वह बेबस बन्दे पुकार रहे हैं जो मुसलमान होने की वजह से कुफ़्फ़ार के ज़ुल्म व तशद्दुद का निशाना बने हुए हैं। तेरे अज़ीम मज़हब की अज़मत और इस्मत की हिफ़ाज़त के लिए सेहराओं, जंगलों और पहाड़ों में भटकता फिर रहा हूं। मेरे रसूल सल्ल0! मेरे रसूल मकुबूल! मेरे सच्चे रबे ज़ुलज़लाल! मैं आप के किब्ला अव्वल को आज़ाद कराने चला था। रसूल सल्ल0 की उम्मत मेरे रास्ते में आ गयी है। मुझे इशारा दो कि उन का ख़ून बहाना मुझ पर हलाल है या नहीं मैं गुमराह तो नहीं हूं? मुझे अपने नूर की रौशनी दिखाओ, अगर मैं हक पर हूं तो हिम्मत व इस्तकलाल अता फ़रमाओ।"

उसने सर झुका लिया और बहुत देर उसी हालत में खड़ा रहा। फिर अचानक तलवार न्याम में डाल ली और बाहर निकल गया। उसके कदमों में कुछ और ही शान थी। वह उस जगह चला जा रहा था जहां उसके मरकज़ और आला कमान के कमाण्डर और दिगर अफ़राद बा जमाअत नमाज़ पढ़ा करते थे। जमाअत खड़ी हो रही थी। वह पिछली सफ़ में खड़ा हो गया। उसके एक तरफ़ उसका बावर्ची और दूसरी तरफ़ उसके किसी कमाण्डर का अरदली खड़ा था।

❖

नमाज़ से फ़ारिग़ होकर सुल्तान अय्यूबी कूरूने हमात की तरफ़ रवाना हो गया। रास्ते में उसे बारी–बारी चार कासिद मिले और ज़ुबानी पैग़ाम दिये। यह देख भाल की पार्टियों के कासिद थे जो हरान, हलब और मुसिल की मुश्तर्का फ़ौजों की नकल वह हरकत और सरगर्मियों

की ख़बरें लाये थे। यह सिलसिला दिन रात चलता रहता था। सुल्तान अय्यूबी ने क़ासिदों को रुख़सत कर दिया। उस के साथ सालार शम्सुद्दीन था। उसके भाई शादबख़्त को उसने किसी और तरफ़ मुताईन कर दिया था।

दुश्मन के मुतअल्लिक जो ख़बरें मिल रही हैं उनके मुतअल्लिक आप का क्या ख़्याल है? शम्सुद्दीन ने पूछा– "क्या हम इतनी थोड़ी फ़ौज से इतने बड़े लश्कर का मुकाबला कर सकेंगे?"

"मेरे लिए यह कोई मसला नहीं कि दुश्मन कितनी फ़ौज लाया है और मेरे पास क्या है।" सुल्तान अय्यूबी ने जवाब दिया– "मैं परेशान इस पर हूं कि दुश्मन हम्ला क्यों नहीं करता। मेरे इन मुसलमान भाइयों के पास सलीबी जासूस हैं। क्या सलीबी इतने अनाड़ी हो गये हैं कि उन्हें यह भी मालूम नहीं हो सका कि मिस्र से मेरी कुमक आ रही है और मैं कुमक के बग़ैर नहीं लड़ सकता? अगर दुश्मन सरगर्म होता तो मेरे तमाम मसले हल हो जाते। दुश्मन का यूं आके बैठ जाना और मुझे इतना वक़्त दे देना कि मैं कुमक हासिल कर लूं, उसे ठिकाने भी लगा लूं, तमाम तर फौज के घोड़ों को पानी पीलाकर पानी का ज़ख़ीरा भी कर लूं, मेरे लिए परेशान कुन है। मुझे ख़दशा है कि दुश्मन कोई ऐसी चाल चलेगा जो कभी मेरे दिमाग़ में नहीं आई। यह लोग खेल तमाशे के लिए तो नहीं आये।"

"जहां तक मैं उन लोगों को जानता हूं।" शम्सुद्दीन ने कहा– "इनके पेशे नज़र कोई ऐसी चाल नहीं। मुझे अपने अल्लाह पर भरोसा है। ख़ुदा ने इनके दिमाग़ों पर मोहरे सब्त कर दी है क्योंकि वह बातिल की अंगेख़त और मदद से हक के ख़िलाफ़ लड़ने आये हैं। उनकी आखों पर पट्टी बंधी हुई है। मैं किसी गहरी और ख़तरनाक चाल का ख़द्शा महसूस कर रहा हूं।"

"शम्स भाई!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"मुझे भी अल्लाह पर भरोसा है लेकिन मैं जज़्बात और फलसफ़े की बजाये हक़ीक़त को देखा करता हूं। हक पर बातिल ने भी कई बार फ़तह पाई है क्योंकि हक वाले अल्लाह के भरोसे हाथ पर हाथ धरे बैठ गये थे। हक ख़ून और जान की कुर्बानी मांगता है। अगर हम यह कुर्बानी देने के लिए तैय्यार हैं तो हक की फतह होगी। बातिल में जो कुव्वत है उसका मुक़ाबला हमें मैदान में करना है। हमें हकाइक पर नज़र रखनी है। अपनी पूरी सलाहियतें और जिस्म की तमाम तर ताक़त इस्तेमाल करनी है। उसके बाद नताइज अल्लाह पर छोड़ दो। अपने आप को ख़ुशफ़हमियों में मुब्तला न करो।"

वह घोड़े से उतरा सालार शम्सुद्दीन, दो और मुशीर और मुहाफ़िज़ उसके साथ थे, घोड़ों से उतरे सुल्तान अय्यूबी, शम्सुद्दीन और दोनों मुशीरों को एक बुलन्द चट्टान पर ले गया। उनके सामने चट्टानों में घिरा हुआ वसीअ मैदान था जो सींगों की शकल की चट्टान से आगे फैलता चला गया था। इस तरफ़ जहां सुल्तान अय्यूबी खड़ा था दो चट्टानें आगे पीछे थीं। इनके दर्मियान वादी या गली थी जो मैदान में खुलती थी यह घूम फिर कर इस तरफ़ बाहर निकल जाती थी। मैदान में चट्टानों के साथ–साथ सैकड़ों छोटे बड़े ख़ेमें खड़े थे। एक तरफ़ उस फौज के घोड़े बंधे थे जो ख़ेमों में थी। सिपाही घूम फिर रहे थे। कुछ ऐसे

भी थे जो धूप में लेटे हुए या सोये हुए थे। उन्हें देखकर मालूम होता था जैसे उन्हें मालूम ही नहीं कि उन पर एक बहुत बड़ा लश्कर किसी भी वक़्त हम्ला करने के लिए उन के सर पर बैठा है। अगर वह जंगी तैय्यारी में होते तो उन के ख़ेमे खड़े रहने की बजाये लिपटे हुए कहीं रखे हुए होते और उन के घोड़ों पर ज़ीने कसी हुई होतीं।

"इन दस्तों के सालारों और कमाण्डरों को मैंने जो हिदायात दी हैं वह तुम तीनों एक बार फिर सुन लो।"

सुल्तान अय्यूबी ने कहा— "हो सकता है मैं तुम से पहले मारा जाऊं और जंग शुरू होते ही मारा जाऊं। मेरे बाद मैदान की ज़िम्मेदारियां तुम संम्भालोगे। मैंने उन्हें बताया है कि ख़ेमें लगे रहने दो। घोड़े ज़ीनों के बेग़ैर बंधे रहने दो। फ़रागत की हालत में घूमो फिरो और इधर उधर बैठे और लेटे रहो, लेकिन ख़ेमों में अपने हथियार और घोड़ों की ज़ीने तैय्यार रखो। दुश्मन के जासूस तुम्हें देख रहे हैं। उन्हें यह तास्सुर दो कि तुम्हें दुश्मन की कुछ ख़बर नहीं। जब दुश्मन का लश्कर आये तो घबराहट का मुज़ाहिरा करो। हथियार उठालो। ख़ेमें फिर भी खड़े रहने देना। आगे बढ़ कर मुक़ाबला न करना। दुश्मन ऊपर चढ़ आये तो लड़ते हुए इतनी तेज़ी से पीछे हटना कि दुश्मन के हम्लावर दस्ते तुम्हारे साथ ही इन चट्टानों के घेरे में आ जायें। दुश्मन को पस्पाई का तास्सुर दो।"

सुल्तान अय्यूबी ने दो मुतवाज़ी चट्टानों के दर्मियान गली की तरफ़ इशारा करके कहा— "मैं ने इन दस्तों को बता दिया है कि इस गली में आकर पीछे को निकल जायें। उन्हें जहां इकठ्ठा होना है वह जगह भी उन्हें बता दी है।" उस ने वह जगह रफ़ीक़ों को बताकर कहा— "उन दस्तों को दुश्मन के अक़ब में जाना होगा। इन चट्टानों पर मैं ने दुश्मन के इस्तकबाल का जो बन्दोबस्त कर रखा है वह तुम्हें मालूम है। याद रखो मेरे दोस्तों! हमें यहां कोई इलाक़ा और कोई किला फ़तह नहीं करना। हमें दुश्मन को बेबस और बेकार करना है ताकि वह हमारे रास्ते से हट जाये। मुझे अपने मुसलमान भाइयों को दुश्मन कहते हुए शर्म आती है मगर हालात का तक़ाज़ा यही है। मैं उन्हें हलाक नहीं करना चाहता। मैंने एहकाम जारी कर दिये हैं कि ज़्यादा अफ़राद को ज़िन्दा पकड़ो और जंगी क़ैदी बनाओ। मैं उन्हें तलवार से ज़ेर करके अख़्लाक़ से ज़ेहन नशीन कराऊंगा कि तुम मुसलमान सिपाही हो और तुम्हारे बादशाह तुम्हारे मज़हब के दुश्मन के हाथों में खेल रहे हैं।"

"किसी कौम को मारना हो तो उसमें ख़ब्ना जंगी करादो।" सालार शम्सुद्दीन ने कहा— "सलीबियों ने कामयाबी से यह हर्बा इस्तेमाल किया है।"

"मुसलमान कौम की मिसाल बारूद की सी है।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा— "यह कौम जज़्बाती होती चली जा रही है। बारूद के इस ढेर पर कहीं से भी चिन्गारी आ गिरे यह धमाके से फट जाता है। यह चिंगारी मस्जिद के इमाम से मिले या ऐश परस्त हुक्मरान से या दुश्मन हमारे ही भाइयों के हाथों यह चिंगारी फेंके, जज़्बात बारूद की तरह फटते हैं। अगर कौम की यह कमज़ोरी जड़ पकड़ गई तो कौम का अल्लाह ही हाफ़िज़ है। कौम अगर ज़िन्दा रही तो कुफ़्फ़ार उसे धड़ों में तक़सीम करके लड़ाते रहेंगे और कौम के सरबराह हुक्मरानी के नशे

और लालच में आपस में लड़ते रहेंगे। यह जो तीन फौजें अपनी ही कौम के ख़िलाफ़ यलग़ार करके आई हैं, उन के सरबराह इकट्ठे होते हुए एक दूसरे के दुश्मन हैं। वह एक दूसरे को धोखा फ़रेब देकर सल्तनते इस्लामिया के बादशाह बनना चाहते हैं। मैं उन लोगों के दिमाग़ों से बादशाही का कीड़ा निकाल कर क़ौम को राहे रास्त पर लाने की फ़िक्र में हूं। मेरे पेशे नज़र इस्लाम का तहफ़्फ़ुज़ और फ़रोग़ है।"

❖

कुरूने हमात से थोड़ी ही दूर हरान का किलादार गुमश्तगीन जिसने ख़ुद मुख़्तारी का एलान कर दिया था अपने सालारों और छोटे बड़े कमाण्डरों को इकट्ठा करके कह रहा था— "सलाहुद्दीन अय्यूबी सलीबियों को शिकस्त दे सकता है। वह जब तुम्हारे सामने आयेगा तो लोमड़ी की सारी चालें भूल जायेगा। वह हम में से नहीं, वह कुर्द है। तुम पक्के मुसलमान हो, दीनदार और परहेज़गार हो। वह सिर्फ़ नाम का मुसलमान है, मक्कार और अय्यार है। वह यहां अपनी सल्तनत क़ायम करके उस का बादशाह बनने की कोशिश में है। मैं तुम्हें उस की जंगी कैफ़ियत भी बता देता हूं। उसके पास फ़ौज बहुत थोड़ी है और वह पहाड़ियों में घिरा बैठा है। थोड़ी ही देर पहले जासूस ने मुझे इत्तलाअ दी है कि उसकी फौज ख़ेमों में आराम कर रही है और उसके घोड़े भी तैय्यारी की हालत में नहीं। उसकी वजुहात दो हो सकती हैं। एक यह कि उसे यक़ीन है कि उसे हम शिकस्त नहीं दे सकते। दूसरी यह कि उसे यह ख़ुशफ़हमी हो सकती है कि हम उस पर हम्ला नहीं करेंगे। वह शायद सुलह के लिए हमारे पास एल्ची भी भेजेगा। अब हम उसके साथ कोई सुलह या समझौता नहीं करेंगे। वह अब हमारा कैदी है। अगर ज़िन्दा हमारे हाथ न आया तो मैं तुम्हें उसकी लाश दिखाऊंगा। अपने सिपाहियों से कह दो कि सलाहुद्दीन अय्यूबी इमाम मेहदी या पैग़म्बर नहीं और उस की फ़ौज में कोई जिन्न भूत नहीं। हम उसकी फ़ौज को बे ख़बरी में जा पकड़ेंगे।"

अपने सामईन को इशतआल दिलाकर और उनका हौसला बढ़ाकर उसने उन्हें रुख़सत कर दिया और अपने उन ख़ेमों में चला गया जिन्हें जंगल में मंगल बना रखा था। उसका अपना ख़ेमा बहुत बड़ा था जिस के अन्दर कालीन बिछे हुए थे और बेशक़ीमत पलंग था। शराब की सुराही और निहायत दिलकश प्याले रखे थे। अन्दर से ख़ेमा किसी महल का कमरा मालूम होता था। उसके इर्द गिर्द कई और ख़ेमे थे जो फ़ौजी ख़ेमों से मुख़्तलिफ़ और ख़ूबसूरत थे।

इन मे हरम की लड़कियां और नाचने गाने वालियां रहती थीं। ख़ेमों से दूर—दूर पहरेदार खड़े थे। गुमश्तगीन के ख़ेमे के बाहर नौ आदमी उस के इन्तज़ार में खड़े थे। उन्हें देखकर गुमश्तगीन तेज़ चल पड़ा और क़रीब जाकर उन्हें अन्दर चलने को कहा। अन्दर जाते ही लड़कियों की एक क़तार हाथों मे तश्तरियां उठाये ख़ेमें में दाख़िल हुई। खाना चुन दिया गया और शराब की सुराहियां भी आ गयीं। गुमश्तगीन इन नौ आदमियों के साथ खाने पर बैठ गया।

यह नौ आदमी खाने पर टूट पड़े। उन्होंने भूने हुए गोश्त के बड़े—बड़े टुकड़े हाथों में

लेकर मुर्दाखोर दरिन्दों की तरह खाने शुरू कर दिये। साथ–साथ वह शराब पानी की तरह पी रहे थे। उनकी आंखें लाल सुर्ख़ थीं जिन से वह वहशी और ख़ूंखार लगते थे। तीन चार ख़ूबसूरत लड़कियां उनके प्याले शराब से भरती जा रही थीं और यह वहशी कभी किसी लड़की के बिखरे हुए बालों पर हाथ फेरते कभी उनके उरियां बाज़ूओं को पकड़ कर उन पर अपने गाल रगड़ते। खाना और छेड़ख़ानी चलती रही। गुमश्तगीन उन की हरकतें और खाने का अन्दाज़ देख कर मुस्कुराता रहा मगर उसकी मुस्कुराहट बताती थी कि वह ज़बरदस्ती मुस्कुरा रहा है और उसे यह लोग बिल्कुल पसन्द नहीं।

खाने पीने से फ़ारिग़ होकर गुमश्तगीन ने लड़कियों को बाहर भेज दिया और उन नौ आदमियों के साथ कुछ देर गपशप लगाकर कहा– "अब वक़्त आ गया है कि मैं तुम्हें सलाहुद्दीन की तरफ़ रूख़सत करूं। अब के वार ख़ाली नहीं जाना चाहिए।"

"अगर आप हमें रोक न लेते तो अब तक आप यह ख़ुशख़बरी सुन चुके होते कि सलाहुद्दीन अय्यूबी क़त्ल हो गया है और क़ातिल मालूम नहीं कौन थे।" एक आदमी ने कहा।

यह हसन बिन सबाह के वही नौ फ़िदाई थे जिन्हें उन के मुर्शिद शेख़ सन्नान ने त्रिपोली से सुल्तान अय्यूबी के क़त्ल के लिए भेजा था। यह मुन्तख़ब अफ़राद थे जो बज़ाहिर इन्सान थे लेकिन ख़स्लत के दरिन्दे थे। उन्होंने अपने –अपने दायें हाथ की दर्मियानी उंगली से ख़ून के दस क़तरे निकाल कर मुकद्दस प्याले में गिराये, उन पर शराब और हशिश डाली और तीनों चीज़ें मिलाकर हर एक ने एक एक घूंट पिया और अपने मख़सूस अल्फ़ाज़ में हलफ़ उठाया था कि वह सुल्तान अय्यूबी को क़त्ल करेंगे या ज़िन्दा नहीं रहेंगे। शेख़ सन्नान ने उन्हें तारूकुद्दुनिया सुफ़ियों के लिबास में हाथों में तसबीहें और गले में क़ुर्आन लटका कर इस हिदायत के साथ रवाना किया था कि वह सुल्तान अय्यूबी तक रसाई हासिल करें और उसके सामने यह मसला रखें कि मुसलमान को मुसलमान के ख़िलाफ़ नहीं लड़ना चाहिए, और वह सालिस बनकर आपस में टकराने वाले मुसलमान उमरा का सुलहनामा करायेंगे। इस तरह तन्हाई में यह सुल्तान अय्यूबी को क़त्ल कर देंगे।

शेख़ सन्नान ने तरीक़ा अच्छा सोचा था। सुल्तान अय्यूबी मज़हबी पेशवाओं को एहतराम से अपने पास बैठाने और उन की बात तवज्जोह से सुनने का आदी था। उसकी दूसरी कमज़ोरी यह थी कि वह चाहता ही यही था कि कोई दर्मियान में आकर मुख़ालेफ़िन के साथ उसका समझौता करादे ताकि मुसलमान मुसलमान के हाथों क़त्ल न हो वरना सलीबियों को जंगी तैयारियों का और हम्ला करके बहुत बड़ी कामयाबी का मौक़ा मिल जायेगा। उसने हलब वग़ैरह में अपने एल्ची भेजे भी थे, जो तौहीन आमेज़ जवाब लाये थे। अब नौ 'सूफ़ी मनुश' चुग़ों में ख़ंजर और तलवार छिपाये उसकी ख़्वाहिश पूरी करने का धोखा लेकर आये थे। वह उसे आसानी से क़त्ल कर सकते थे। त्रिपोली से वह रवाना हुए और हरान पहुंचे थे।

गुमश्तगीन को उसके सलीबी मुशीरों ने बताया था कि यह सुल्तान अय्यूबी को क़त्ल करने जा रहे हैं। उसने उन से क़त्ल का तरीक़ा सुना तो उसे मुसतर्द करके उन्हें अपने पास शाही मेहमानों की हैसियत से रोक लिया और सलीबी मुशीरों से कहा था कि वह सुल्तान

अय्यूबी पर हम्ला करने जा रहा है। उन नौ फिदाइयों को वह अपने साथ ले जायेगा और मौज़ूं मौके पर और किसी बेहतर तरीके से सुल्तान अय्यूबी को कत्ल करायेगा। चुनांचे वह उन्हें अपने साथ मुहाज़ पर ले आया था।

अब गुमश्तगीन ने मैदाने जंग में उनके लिए मौका पैदा कर लिया और उन का बहरूप भी तैय्यार कर लिया था। उस ने खाने से फ़ारिग़ होकर उन्हें कहा– आज मैं तुम्हें बताता हूं कि सलाहुद्दी अय्यूबी को कत्ल कराने का क्या तरीका सोंचा है। तुम ने सूफ़ियों का जो रूप धरा है वह शक पैदा कर सकता है। अय्यूबी की नज़र बड़ी गहरी है। उस पर पहले चार पांच कातिलाना हम्ले हो चुके हैं। वह और ज़्यादा मोहतात हो गया है। उसके साथ दो बड़े ही तजुर्बाकार सुराग़र्सा हैं, एक अली बिन सुफ़ियान और दूसरा हसन बिन अब्दुल्लाह। वह एक नज़र में इन्सान को भांप लेते हैं। हमारे जासूस की इत्तलाअ के मुताबिक इस वक़्त हसन बिन अब्दुल्लाह उसके साथ है और अली बिन सुफ़ियान काहिरा में है। सुल्तान अय्यूबी से कोई अजनबी मिलने जाता है तो दो तीन सालार और हसन बिन अब्दुल्लाह उसकी बड़ी गहरी छान बीन करते हैं। उन्हें शक हो तो उसकी तलाशी भी लेते हैं.....

"अय्यूबी या हसन बिन अब्दुल्लाह को यह ख़्याला आ सकता कि यह चपकलिश तो कई महीनों से चल रही है, तुम्हें सुलहनामें का ख़्याल आज कैसे आया है? अय्यूबी यह भी पूछ सकता है कि तुम कहां के मज़हबी पेशवा हो और वह कोई ऐसा सवाल पूछ सकता है जिस का तुम लोग जवाब न दे सको या ऐसा जवाब दो जो तुम्हें बेनकाब करदे। वह खुद आलिम है, मज़हब और तारीख़ का उसका गहरा मुतालआ है। इसके अलावा तुम्हारे चेहरों पर दाढ़ियों के सिवा सूफ़ियों वाली कोई निशानी नज़र नही आती तुम मे से चार की दाढ़ियां अभी छोटी हैं जिन से पता चलता है कि एक महीने से बढ़ाई गयी हैं। तुम्हारी आंखों में हशिश और शराब का नशा चढ़ा हुआ है। मुझे इन चेहरों पर पाकीज़गी का शायबा तक नज़र नहीं आता।"

इन नौ में से किसी ने भी बुरा न माना। उनके सरग़ना ने कहा– "मुझे आप की हर बात से इत्तफ़ाक है अगर सलाहुद्दीन अय्यूबी ने हमें सूफ़ी या इमाम समझ कर इज़्ज़त से अपने ख़ेमें में बैठा लिया और कुछ खाने पीने के लिए हमारे आगे रख दिया तो मेरे यह दोस्त टूट पड़ेंगे। हम में से किसी को भी इल्म नहीं कि इमाम और ख़तीब खाते किस तरह हैं। आप ने क्या तरीका सोंचा है?"

"निहायत सहल और बेख़बर।" गुमश्तगीन ने कहा– "मैं तुम्हें सलाहुद्दीन अय्यूबी के रज़ाकार मुहाफ़िज़ बना कर कोरूने हमात भेज रहा हूं। उसके मुहाफिज़ गहरी छान बीन के बाद मुन्तख़ब किये जाते हैं। उनके ख़ानदानों की भी जांच पड़ताल होती है, इसलिए यह नामुम्किन है कि तुम जाते ही उसके मुहाफ़िज़ दस्ते में शामिल हो जाओगे। मैंने एक तरीका सोंचा है जो मुझे उम्मीद है कामयाब होगा। जासूसों ने बताया है कि दमिश्क के लोगों में हमारे ख़िलाफ़ और सलाहुद्दीन अय्यूबी के हक में इतना जोश व ख़रोश और जज़्बा पाया जाता है कि वह रज़ाकाराना तौर पर मुहाज़ पर आ रहे हैं वहां जिसे देखो तेग़ज़नी और तीर अन्दाज़ी की मश्क कर रहा है। मुझे मालूम हुआ है कि अय्यूबी उन रज़ाकारों को बकायादा

फ़ौज में तो नहीं रखता, दूसरे कामों के लिए रख लेता है। मैं उस फ़िज़ा से फ़ायदा उठा रहा हूं।"

उसने अलग रखा लकड़ी का बॉक्स खोला। उसमें कपड़े थे। उसने फिदाइयों से कहा– "तुम यह लिबास पहन कर सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास जाओगे। यह उस के मुहाफ़िज़ दस्ते का मख़सूस लिबास है। तुम में से एक आदमी के हाथ में अय्यूबी का झंडा होगा। बाकी आठ की बरछियों के साथ उसके फ़ौज की झंडियां होंगी। तुम सीधे अय्यूबी के पास जाओगे। तुम्हें रोक लिया जायेगा। उस तक नहीं पहुंचने दिया जायेगा। तुम जोश और जज़्बात से कहना कि हम रज़ाकर हैं और दमिश्क से सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की हिफ़ाज़त के लिए आए हैं। यह भी कहना कि हमने बड़ी मोहब्बत से मुहाफ़िज़ दस्ते का लिबास सिलवाया और दिल में सुल्तान की अकीदत लेकर आयें हैं। हमें सुल्तान के इर्द गिर्द पहरे पर लगाया जाये या हमें जांबाज़ दस्तें में शामिल किया जाये। हम वापस नहीं जायेंगे.....तुम्हें सलाहुद्दीन तक जाने नहीं देंगे। तुम ज़िद करना और कहना कि हम इतनी दूर से अकीदत और जज़्बात से आये हैं, हम सुल्तान से मिले बग़ैर वापस नहीं जायेंगेम। मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि वह जज़्बे की बहुत कदर करता है, तुम से मिलेगा ज़रूर।

बरछियां तुम्हारे हाथों में होंगी। अगर वह बाहर हुआ तो घोड़ों से उतरना नहीं। करीब जाकर घोड़ों को ऐड़ लगा देना और उसका जिस्म बरछियों से छलनी करके निकलने की कोशिश करना। तुम सबने जान की बाज़ी लगाने का हलफ़ उठाया है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि तुम सब निकल आओगे। मुझे पूरी तवक्को है कि अपने सुल्तान को ज़ख्मी हालत में देख कर मुहाफ़िज़ों में अफ़रा तफ़री मच जायेगी। पेशतर इसके कि वह समझ पायें कि यह हुआ क्या है तुम उन के तीरों की ज़द से निकल आओगे। मैं तुम्हें अरब की उस नस्ल के घोड़े दे रहा हूं जिन के तआक्कुब में हवा भी नहीं पहुंच सकती।"

"तरीका बहुत अच्छा है।" फ़िदाई कातिलों के सरग़ना ने कहा– "हमारे वह साथी बदबख़्त, अनाड़ी और बुज़दिल थे जो उसे सोते वक़्त भी कत्ल न कर सके। उसी के हाथों मारे गये और जो ज़िन्दा रहे वह पकड़े गये। अब हम जा रहे हैं। अगर उसका सर काट कर न ला सके तो आप यह ख़बर ज़रूर सुनेंगे कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी कत्ल हो गया है।"

"और अगर हम उसे कत्ल कर आये तो? एक फिदाई ने हरम की लड़कियों के ख़ेमों की तरफ़ इशारा करके और शैतानी मुस्कुराहट से कहा–

गुमश्तगीन शैतान की मुस्कुराहटों को अच्छी तरह समझता था। उसने ऐसी ही मुस्कुराहट से कहा– "तुम में से जो ज़िन्दा आयेंगे और सलाहुद्दीन अय्यूबी को कत्ल करके आयेंगे उन्हें मैं एक–एक ख़ेमे में दाख़िल कर दूंगा। तुम्हें जो इनाम सलीबी देंगे उससे इतने ज़्यादा ज़र व जवाहरात मैं दूंगा जो तुमने कभी ख़्वाब में भी नहीं देखे और तुममें से जो आदमी सलाहुद्दीन अय्यूबी का सर काट कर लायेगा, उसे उसकी पसन्द की दो लड़कियां हमेशा के लिए दूंगा।"

फिदाइयों ने वहशियों की तरह चीख़–चीख़ कर कहकहे लगाने शुरू कर दिये। गुमश्तगीन ने बड़ी मुश्किल से उन्हे ख़मोश किया और कहा– "आओ तुम्हें वह रास्ता बतादूं जो दमिश्क

से कूरून की तरफ़ आता है। तुम यहां से दूर का चक्कर काट कर दमिश्क़ के रास्ते पर पहुंचोगे लेकिन ख़्याल रखना कि रास्ते में कोई भी पूछे कि तुम कौन हो और कहां से आये हो तो यही बताना कि तुम दमिश्क़ से आये हो और मुहाज़ पर जा रहे हो। रास्ते में तुम्हें सलाहुद्दीन अय्यूबी के जासूस और छापामार मिलेंगे। तुम्हें आज ही रात रवाना होना है।"

"आज ही रात?" एक फ़िदाई ने पूछा– "कल दिन को न जायें?"

"इतना वक़्त नहीं।" गुश्मतगीन ने जवाब दिया– "तुम्हारा चक्कर बहुत लम्बा है। दो दिनों बाद मन्ज़िल पर पहुंचोगे घोड़ों को आराम देते जाना वरना थके हुए घोड़ों से वहां से भाग निकलना दुश्वार हो जायेगा।"

गुमश्तगीन ने बॉक्स से कपड़े निकाल कर उन्हें कहा कि यहीं पहन लो। उसने दरबान से कहा कि वह नौ घोड़े ले आओ जो मैंने अलग करवा रखे हैं।

आधी रात के बाद नौ घोड़ सवार गुमश्तगीन के कैम्प से दूर उस सिम्त जा रहे थे जिधर दमिश्क़ से कूरूने हमात को रास्ता जाता था। अगले घोड़सवार के पास सुल्तान अय्यूबी का झंडा था और बाक़ी आठ की बरछियों की अन्नियों के साथ छोटी–छोटी झंडियां बंधी थीं।

❖

उसी रोज़ जिस वक़्त गुश्तगीन अपने सालारों और कमाण्डरों को इश्तेआलअंगेज़ तक़रीर से जोश दिला रहा था, सैफ़ुद्दीन और हलब की फ़ौजें भी ऐसी ही इश्तेआलअंगेज़ तक़रीरें सुन रही थीं। हलब का एक सालार घोड़े पर सवार अपनी फ़ौज से कह रहा था– "यह वही सलाहुद्दीन है जिसने हलब का मुहासिरा किया था। तुम ने उसी सलाहुद्दीन को उस की इसी फ़ौज को हलब से भगाया था। रब्बे काबा की क़सम! यह रिवायत झूठी है कि सलाहुद्दीन जिस क़िले और जिस शहर को मुहासिरे में लेता है उसे फतह करके दम लेता है। वह हलब के मुहासिरे में क्यों कामायब नही हुआ था? उसने मुहासिरा उठा क्यों लिया था? सिर्फ़ इस लिए कि तुम शेर हो। तुम जान पर खेल जाने वाले सरफ़रोश हो। तुमने शहर से निकल निकल कर उस पर जो हम्ले किये थे उन्हें वह बर्दाश्त न कर सका। फ़तह उसकी होती है जिसपर ख़ुदा ख़ुश होता है। ख़ुदाये ज़ुलजलाल की ख़ुश्नूदी तुम्हें हासिल है। सलाहुद्दीन अय्यूबी पर ख़ुदा क्यों ख़ुश होगा। वह लूटेरा है। उसने दमिश्क़ पर कब्ज़ा कर लिया और उस शहर के लोगों की उस ने जो हालत की है वह वहां जाकर देखो। किसी औरत की इज़्ज़त महफ़ूज़ नही रही। हमें दमिश्क़ छोड़कर हलब आना पड़ा। हमें वहां वापस जाना है। हमें सलाहुद्दीन अय्यूबी से इन्तक़ाम लेना है......और अल्लाह के सिपहियों! यह न सोंचना कि तुम मुसलमान होकर मुसलमान फ़ौज के ख़िलाफ़ लड़ने जा रहे हो। वह मुसलमान काफ़िर से भी बदतर है जो मुसलमानों के शहरों को फ़तह करता फ़िर रहा है। तुम पर ऐसे मुसलमान का क़त्ल ख़ुदा ने फ़र्ज़ कर दिया है......

"ख़िलाफ़त के मुहाफ़िज़ों! तुम्हारे दुश्मन सलीबी नहीं सलाहुद्दीन अय्यूबी और उसकी फ़ौज है। सलीबियों को दुश्मन उस शख़्स ने बनाया है। नुरुद्दीन ज़ंगी ने क़ौम पर सबसे बड़ा ज़ुल्म यह किया है कि सलाहुद्दीन को मिस्र की इमारत दे दी वरना यह शख़्स छोटे से

एक जैश की कमान करने के भी काबिल न था। मैं उसे अपनी फ़ौज में सिपाही की हैसियत से भी न रखूं। अब उस शख़्स की मौत उसे इन चट्टानों में ले आई है। अब उस के सामने तुम्हारी तलवारें, तुम्हारी बरछियां और तुम्हारे घोड़े होंगे और उसके पीछे चट्टान और पहाड़ियां होंगी। तुम उसे और उसकी फ़ौज को पीस कर रख दोगे। तुम्हें हलब की तौहीन और बर्बादी का इन्तक़ाम लेना है। अगर तुम ने सलाहुद्दीन को यहां, इन्हीं पहाड़ियों में ख़त्म न किया तो वह सीधा हलब पर आयेगा। उसकी नज़रें हलब पर लगीं हुई हैं। वह तुम्हें अपना ग़ुलाम बनाना चाहता है। तुम्हारी बहने और बेटियां उसके सालारों के हरम की जीनत बनेंगी। अगर मैं झूठा हूं तो नुरूद्दी ज़ंगी का बेटा झूठा नहीं हो सकता। सैफ़ुद्दीन वालिये मुसिल झूठा नहीं हो सकता। गुमश्तगीन झूठा नहीं हो सकता। अगर इतने उमरा झूठे नहीं हैं तो अकेला सलाहुद्दीन अय्यूबी झूठा है। यही वजह है कि इस्लाम की तीन फ़ौजें उसे कुचलने के लिए आई हैं। तुम सब सच्चे हो। ग़ैरत और हमीयत वाले हो। सबित कर दो कि ग़ैरत और हमीयत की ख़ातिर तुम अपने भाई का भी ख़ून बहा सकते हो।"

फ़ौज बज़ाहिर ख़ामोशी से सुन रही थी लेकिन उस के अन्दर इश्तेआल ने तूफ़ान बपा कर रखा था। सालार ने हकाइक़ पर पर्दा डाल कर फ़ौज के जज़्बात को मुश्तअिल कर दिया और फ़ौज नारे लगाने लगी। "हम ग़ुलाम नहीं बनेंगे। सलाहुद्दीन ज़िन्दा नहीं रहेगा।" एक शोर था जो ज़मीन और आसमान को हिला रहा था।

सैफ़ुद्दीन के कैम्प की भी कैफ़ियत जज़्बाती थी। वह भी अपनी फ़ौज के जज़्बात को भड़का रहा था। उसने सिपाहियों के लिए यह सहूलत भी पैदा कर दी थी कि दो उल्मा से यह फ़तवा ले लिया था कि मैदाने जंग में रोज़ा फ़र्ज़ नहीं। तमाम फ़ौज ख़ुश थी। सैफ़ुद्दीन ने कहा कि हम उस वक़्त हम्ला करेंगे जब सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज का दम ख़म टूट चुका होगा। फिर हमारी मन्ज़िल दमिश्क़ होगी। दमिश्क़ में बेअन्दाज़ दौलत है जो तुम्हारी होगी।

❖

उधर लश्करों और फ़ौजों की बातें हो रही थीं। इधर सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के कैम्प में छःछः, आठ--आठ दस--दस छापामारों के हिसाब से स्कीमें बन रही थीं। सुल्तान अय्यूबी ने अपनी फ़ौज से कोई ख़िताब नहीं किया, कोई जोशीली तक़रीरें नहीं की। उसकी नज़र उस ज़मीन पर थी जिस पर उसे लड़ना था। उस ज़मीन के ख़दोख़ाल से वह ज़्यादा से ज़्यादा जंगी फ़ायदा उठाना चाहता था। उसने जो भी बात अपने सीनियर और जूनियर कमाण्डरों से की और वह भी हक़ीक़त की बात की। कभी--कभी वह इस वजह से जज़्बाती हो जाता था कि उसके मुसलमान भाई फ़िलिस्तीन के रास्तें में हाइल हो गये हैं और मुसलमान मुसलमान के हाथों क़त्ल होंगे। इसका उसके पास कोइ इलाज नहीं था। वह सुलह और अमन के लिए एल्ची भेज कर अपनी तौहीन करा चुका था। अब वह तसादुम के लिए पूरी तरह तैय्यार था। उसने मिस्र से आई हुई कुमक को अपनी स्कीम के मुताबिक़ तक़सीम कर दिया था और दुश्मन के इन्तज़ार में बेचैन हो रहा था। उसने अपने मुशीरों से इस ख़्याल का इज़हार भी किया था कि दुश्मन शायद यह चाहता है कि पहाड़ियों से निकल कर उस पर

हम्ला किया जाये। सुल्तान अय्यूबी चट्टानों से निकालने से गुरीज़ कर रहा था। वह दुश्मन को पहल करने का मौका दे रहा था। वह अगर चाहता तो अपने छापामारों से दुश्मन के कैम्पों में तबाही मचा सकता था। यह उस का खुसूसी तरीकए जंग था लेकिन उसने छापामारों को भी इस्तेमाल न किया। वह दुश्मन की चाल और हरकत को देख रहा था।

दमिश्क में नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम की बेवा ने अपना एक और मुहाज़ खोल रखा था। जब से सुल्तान अय्यूबी दमिश्क से निकला था, उस अज़ीम औरत ने लड़कियों की एक रज़ाकार फौज तैय्यार करनी शुरू कर दी थी। लड़कियों को ज़ख्मियों को मैदाने जंग से उठाने, और ख़ून रोकने और इब्तेदाई मरहम पट्टी की तरबियत दी जाती थी लेकिन ज़ंगी की बेवा उन्हें तेग़ज़नी, नेज़ाबाज़ी और तीर अन्दाज़ी की तरबियत भी दे रही थी। उस मकसद के लिए उसने चन्द एक तजुर्बाकार मर्द अपने साथ रखे हुए थे। उसे मालूम था कि सुल्तान अय्यूबी मुहाज़ पर औरत की मौजूदगी को पसन्द नहीं करता, और यह तो सोंचा भी नहीं जा सकता था कि वह लड़कियों को फ़ौज में शामिल करेगा। उसके बावजूद ज़ंगी की बेवा लड़कियों को जंगी तरबियत दे रही थी। वहां कैफ़ियत यह थी कि किसी को यह कहने की ज़रूरत ही महसूस नहीं होती थी कि वह अपनी बेटी को मरहम पट्टी वग़ैरह की तरबियत के लिए भेजा करे। लोग अपनी बेटियों को तरबियत के लिए भेज कर फख्र महसूस करते थे। दस बारह साल की उम्र के बच्चे अपने तौर पर लकड़ी की तलवारें बनाकर तेग़ज़नी करते रहते थे

ज़ंगी की बेवा की फ़ौज में चार लड़कियों का इज़ाफ़ा हुआ। उनमें एक तो फ़ातमा थी जिसे सुल्तान अय्यूबी का एक छापामार जासूस हरान से बल्कि गुमश्तगीन के हरम से निकाल लाया था। दूसरी मुसिल के ख़तीब इब्ने अल मख़्दूम की बेटी साएका थी। आप पढ़ चुके हैं कि उसे अपने बाप के साथ किस तरह मुसिल से निकाला गया था। बाकी दो वह लड़कियां थीं जिन्हें हलब से गुमश्तगीन के पास तोहफ़े के तौर पर भेजा गया था। उन्हें सालार शम्सुद्दीन और सालार शादबख़्त ने हरान के क़ाज़ी को क़त्ल करके वहां से निकाला था। यह हमीरा और सेहर थीं। यह सुल्तान अय्यूबी के पास मुहाज़ पर पहुंची थीं जहां से उन्हें दमिश्क भेज दिया गया था। ऐसी बे ठिकाना लड़कियों को नूरूद्दीन ज़ंगी की बेवा के सपुर्द कर दिया जाता था यह चारों उसके पास पहुंची तो उन्होंने वहां लड़कियों को तरबियत हासिल करते देखा। यही उन की ख़्वाहिश थी जो फ़ौरी तौर पर पूरी हो गयी।

उन्होंने ज़ंगी की बेवा को अपनी अपनी आपबीती सुनाई। वह उन्हें उन लड़कियों के सामने ले गयी और उन्हें कहा कि वह तमाम लड़कियों को तफ़सील से सुनायें कि दुश्मन के कब्ज़े में उन पर क्या गुज़री है। चारों ने अपनी–अपनी कहानियां सुनाई। ख़तीब की बेटी साएका ज़ेहनी तौर पर ज़्याद मुस्तैद और होशियार थी। उसने लड़कियों से कहा– "औरत कौम की आबरू होती है। दुश्मन जब किसी शहर पर कब्ज़ा करता है तो उसकी फौज सब से पहले औरतों पर हल्ला बोलती है। तुमने उन दो लड़कियों (हमीरा और सेहर) से सुन लिया है कि जो इलाके सलीबियों के कब्ज़े में हैं वहां सलीबी मुसलमानों के साथ कितना हौलानाक सलूक कर रहे हैं। वहां किसी मुसलमान लड़की की इज़्ज़त महफ़ूज़ नहीं। ख़ुदानख़्वास्ता

दमिश्क भी उन के कब्ज़े में आ गया तो तुम्हारा भी वह हश्र होगा। अगर हम ने ख़ून की कुर्बानी देने से गुरीज़ किया तो सलीबी हमारे आका बन कर रहेंगे। उन्होंने हमारे बहुत से उमरा को ख़रीद लिया है। अब सलीबी भी तुम्हारे दुश्मन और मुसलमान उमरा भी तुम्हारे दुश्मन हैं। अगर तुम फतह हासिल करना चाहती हो तो इन्तकाम के जज़्बे को ज़िन्दा व पाइंदा रखो। मेरे मोहतरम वालिद कहा करते हैं कि जो कौम उन मासूमों को फ़रामोश कर देती है जो कुफ़्फ़ार की बरबरियल का शिकार हुए थे वह ज़्यादा देर जिन्दा नहीं रह सकती....

मेरी बहनों! मैं मोहतरम सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की मुरीद हूं। उनके नाम पर सूली पर चढ़ने को तैय्यार हूं लेकिन मुझे उनका यह उसूल पसन्द नहीं कि औरत मुहाज़ पर न जाये। उन्होंने जो सोचा है ठीक ही सोचा है लेकिन औरत को कमज़ोर समझा जा रहा है। नौजवान और ख़ुबसूरत लड़कियों को हरमों में ठूंस दिया जाता है। हमें मर्द की तफ़रीह का ज़रिया बना दिया गया है। इस तरह कौम की आधी ताकत बेकार होकर रह गयी है। दुश्मन लश्कर लेकर आता है। उसके मुकाबले हमारी फ़ौज आधी भी नहीं होती। हम मर्दों के दोश बदोश लड़ेंगी और फ़ौज की कमी पूरी करेंगी। मैं मुसिल में जासूसों के गिरोह में रही हूं। मैं इस मुहाज़ पर लड़कर आई हूं। यह मेरे वालिद की ग़ल्ती थी कि उन्होनें जज़्बात में आ कर वालिये मुसिल पर अपने असल ख़्यालात का इज़हार कर दिया। अगर वह पकड़े न जाते तो वहां हमारे इरादे कुछ और थे। हम वहां तबाह कारी न कर सके और हमें वहां से निकलना पड़ा।"

उन चारों लड़कियों की आपबीती और साएका की बातों ने लड़कियों के जज़्बे की शिद्दत में इज़ाफ़ा कर दिया। उनमें से चार सौ लड़कियां तरबियत हासिल करके तैय्यार हो चुकी थीं। उन्हें मुहाज़ के लिए रवाना किया जाने लगा। चारों लड़कियों ने चन्द दिनों में कुछ तरबियत हासिल कर ली थी। उन्हें रोक लिया गया लेकिन उनमें इन्तकाम का जज़्बा इतना ज़्यादा था कि वह इसी जैश के साथ मुहाज़ पर जाने की ज़िद करने लगीं। फ़ातमा, हमीरा और सेहर की ज़िद इतनी सख़्त थी कि तीनों रो पड़ीं। उनकी आंखों में ख़ून उतरा हुआ था। ज़ंगी की बेवा ने उन्हें भी चार सौ के इस जैश में शामिल कर लिया। उनके साथ एक सौ मर्दों को भेजा गया। यह रज़ाकार थे। उन्होंने लड़ने की तरबियत हासिल कर ली थी। उनका कमाण्डर हुज्जाज अबु वकास था।

नुरूद्दीन ज़ंगी की बेवा ने हुजाज अबू वकास को एक तहरीरी पैग़ाम देकर कहा– "यह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को दे देना। मैंने सब कुछ लिख दिया है। तुम उन्हें यह बताना कि यह लड़कियां ज़ख़्मियों की देखभाल के लिए तैय्यार की गयी हैं। तुम एक बार फिर सुन लो। इन लड़कियों और रज़ाकार मुहाफ़िज़ों को अपने साथ रखना। सब को शबख़ून मारने की तरबियत दी गयी है और लड़कियां भी लड़ सकती हैं। ज़ख़्मियों को संम्भालने के बहाने तुम सब लड़ोगे। फ़ौज के सामने रूकावट न बन जाना। जहां मौका मिले दुश्मन को कमज़ोर करो। मैंने लड़कियों को बता दिया है कि वह दुश्मन के हाथ ज़िन्दा न आयें। वह ख़ुद कहती हैं कि पकड़े जाने का ख़तरा हुआ तो वह अपनी तलवार से अपने आप को ख़त्म कर देंगी।"

चार सौ लड़कियों और एक सौ रज़ाकार मर्दों का यह दस्ता घोड़ों पर सवार दमिश्क से रवाना हुआ तो सारा शहर उमड़ कर बाहर आ गया। लोगों ने जाने वालों पर फूल बरसाये। इस किस्म की सदायें बुलन्द हो रहीं थीं– "वापस न आना आगे जाना..... सलाहुद्दीन अय्यूबी से कहना कि दमिश्क की तमाम औरतें आयेंगी.....अल्लाह तुम्हें फ़तह देगा.....इस्लाम का कोई दुश्मन ज़िन्दा न रहे।" शहर के बहुत से आदमी घोड़ों और ऊंटों पर सवार दूर तक इस जैश के साथ गये।

❖

रमज़ान का महीना था। रास्ते में एक रात पड़ाव करना था। अफ़तारी के वक़्त कुछ देर पहले काफ़िला एक जगह रूक गया। लड़कियां खाने की तैयारियों में मस्रूफ़ हो गयीं और मर्द ख़ेमें नस्ब करने लगे। अप्रैल का महीना था। रातें सर्द हो जाती थीं। घोड़ों के इस क़ाफ़िले के साथ ऊंट भी थे जिन पर ख़ेमें लदे हुए थे लेकिन ख़ेमों में बरछियां,तलवारें और तीर व कमान लिपटे हुए थे। सूरज ग़ुरूब होने से ज़रा देर पहले बारह घोड़ सवार आ गये। यह सुल्तान अय्यूबी के छापामार थे, जो दमिश्क से मुहाज़ पर जाने वाले रास्ते की हिफ़ाज़त में घूम फिर कर रहे थे। उन्होंने लड़कियों और रज़ाकारों के क़ाफ़िले को देख लिया था।

इनमें से आठ सवारों को अपनी तरफ़ आता देख कर मीरे कारवां हुज्जाज अबु वक़ास आगे बढ़ा। छापामारों का कमाण्डर अन्तानून था। उसने अबु वक़ास से पूछा कि वह कौन हैं और कहां जा रहे हैं। अबु वक़ास ने उसे मुकम्मल जवाब दिया और उसे मुत्मईन कर दिया। छापामारों को देखकर बहुत सी लड़कियां दौड़ गयीं और उनके गिर्द जमा हो गयीं। सबका यही एक सवाल था कि मुहाज़ की क्या ख़बर है। अन्तानून ने उन्हें बताया कि जंग अभी शुरू नहीं हुई है, और कुछ कहा नहीं जा सकता कि किस वक़्त शुरू हो जाये।

अन्तानून बोलते बोलते चुप हो गया और उसकी नज़रें एक लड़की पर जम गयीं। उसने हैरान सा होकर पूछा– "फ़ातमा तुम कैसे आ गयी हो?"

फ़ातमा बेताबी से आगे बढ़ी और अन्तानून का हाथ पकड़ लिया। अन्तानून ने फ़ातमा को गुमश्तगीन के हरम से निकाला था। अबू वक़ास ने अन्तानून से कहा वह अफ़तारी उनके साथ करें और खाना भी उन्हीं के साथ खायें। सब बिखर गये। हर कोई किसी न किसी काम में मस्रूफ़ था। अन्तानून और फ़ातमा ने इतना सा मौक़ा पैदा कर लिया कि अन्तानून ने उसे रात को मिलने की एक जगह बता दी। दमिश्क से दूर उस वीराने में आज़ान की सदाये मुक़द्दस गूंजी। सब ने रोज़ा अफ़तार किया। नमाज़ पढ़ी और खाना खाया। सब दिन भरके थके हुए थे। जिन्हें सोना था वह सो गये। लड़कियों ने टोलियों में बट कर गीत गाने शुरू कर दिये। छापामारों ने उनसे कुछ दूर अपना डेरा जमा लिया। अन्तानूम अपनी पार्टी को यह कह कर चला गया कि वह इधर उधर देख भाल करने के लिए जा रहा है।

फ़ातमा चुपके से लड़कियों में से ग़ायब हो गयी। वह ख़ेमागाह से दूर एक जगह खड़ी अन्तानून का इन्तजार कर रही थीं। अन्तानून भी आ गया। फ़ातमा के साथ उसकी पहली मुलाक़ात हरान में हुई थी। उस वक़्त अन्तानून सुल्तान अय्यूबी का जासूस था। उसने उस

लड़की को सिर्फ़ इसलिए फांसा था कि वह हरान के हुक्मरान और सुल्तान अय्यूबी के दुश्मन गुमश्तगीन के हरम की लड़की थी। उसे वह अपनी जासूसी के लिए इस्तेमाल करना चाहता था। हालात कुछ ऐसे हुए कि फातमा ने एक सलीबी मुशीर को कत्ल कर दिया और अन्तानून गिरफ़्तार हो कर फरार हुआ और फातमा को साथ ले आया। सुल्तान अय्यूबी ने फातमा को दमिश्क भेज दिया था और अन्तानून अपनी दरख़्वास्त पर छापामार दस्ते मे शामिल हो गया था। अब इतने दिनो बाद फातमा उसे अचानक मिल गयी थी तो अन्तानून ने बड़ी शिद्दत से महसूस किया कि इस लड़की के बग़ैर उसकी जिन्दगी रूखी फीकी हो गयी है और यह लड़की उसके दिल में उतर गयी है। यह तअल्लुक सिर्फ़ इतना ही नहीं था कि लड़की को जासूसी के लिए इस्तेमाल करना था। कुछ ऐसी ही कैफ़ियत फातमा की थी।

उनकी मुलाकात जज़्बाती थी। वह अपने–अपने काबू में नही रहे थे लेकिन अन्तानून ने उसके बाज़ूओं से निकल कर कहा– "फातमा! हमारा फ़र्ज़ अभी पूरा नहीं हुआ। मैं हरान में भी अपना फर्ज़ पूरा नहीं कर सका था। तुम्हें वहां से निकाल लाना कोई कारनामा नहीं था और यह मेरे फराईज़ में शामिल नहीं था। मैं सुल्तान के आगे शर्मसार हूं और मैं अपनी कौम के आगे भी शर्मसार हूं। मै। छापामार दस्ते में इसलिए शामिल हुआ हूं कि फ़र्ज़ पूरा न कर सकने के गुनाह का कफ़्फारा अदा कर सकूं। सुल्ताने मोहतरम ने मुझ पर ज़िम्मेदारी आयद कर दी है कि इन सात छापामारों की कमान और कयादत मुझे दे दी है। अब एक बार फिर तुम मेरे रास्ते में न आ जाना। मुझे तुम से मोहब्बत है लेकिन मुझे पहले फ़र्ज़ अदा करने दो।"

"मैं भी फ़र्ज़ अदा करने आई हूं।" फातमा ने कहा– "मैं गुमश्तगीन को कत्ल करने आई हूं।"

"नामुम्किन है अन्तानून ने कहा–"मोहतरम सुल्तान औरत को मुहाज़ से बहुत दूर रखते हैं। वह शायद तुम सब को वापस भेज देंगे।"

"मैं वापस नजीं जाऊंगी।" फातमा ने ग़ुस्से से कहा– "मैं साबित करूंगी कि औरत हरम के लिए नहीं जिहाद के लिए पैदा की गयी है......अन्तानून, मेरी यह ख़्वाहिश पूरी करो कि मुझे अपने साथ ले चलो। मुझे मर्दाना कपड़े पहना कर अपने साथ रखो।"

"ऐसा हो नहीं सकता।" अन्तानून ने कहा– "अगर मैं तुम्हें अपने साथ रख भी लूं तो मेरी तवज्जह तुम पर लगी रहेगी। मैं अपना काम नहीं कर सकूंगा, और अगर मैं पकड़ा गया तो मुझे इस जुर्म में कैद ख़ाने में डाल देंगे कि मैंने एक लड़की अपने साथ रखी हुई थी। मेरी और तुम्हारी नीयत कितनी ही नेक क्यों न हो यह जुर्म मामूली नहीं....फातमा! जंग जज़्बात से नहीं लड़ी जाती। अपने आप को काबू में रखो। तुम जिधर जा रही हो उधर जाओ। हो सकता है सुल्तान तुम सब को ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी के लिए अपने साथ रख ले।"

"तुम फिर मिल सकोगे?" फातमा ने पूछा।

"शायद कहीं ज़िन्दा या मुर्दा मिल जाऊं।" अन्तानून ने जवाब दिया। छापामार अपने मुतअल्लिक बता नहीं सकता था कि वह किस वक़्त कहां होगा और उसकी लाश कहां से मिलेगी। छापामार की लाशें मिला नहीं करती। वह दुश्मन की जमीयत में जाकर मरा करते

हैं। ज़िन्दा रहा तो सीधा तुम्हारे पास आऊंगा।"

"हो सके तुम ज़ख़्मी हो जाओ तो मैं तुम्हारी मरहम पट्टी करूं।" फ़ातमा ने कहा।

"छापामारों की मरहम पट्टी दुश्मन किया करता है।" अन्तानून ने जवाब दिया– "फ़ातमा जज़्बात में न आओ। हमें जज़्बात को भी और एक दूसरे को भी कुर्बान करना पड़ेगा। अगर तुम यह चाहती हो कि तुम जैसी लड़कियां हरमों में न जायें और वह सलीबियों के वहशी पन से बची रहें तो मेरा ख़्याल दिल से निकाल दो। मैदाने जंग में तुम्हें जो फ़र्ज़ सौंपा जाये सिर्फ़ उसे दिल में रखना। तुम गुमश्तगीन को क़त्ल नहीं कर सकोगी। यह इरादा भी दिल से निकाल दो।"

वह बोझल दिल से जुदा हुए। फ़ातमा पर अन्तानून की किसी बात का असर न हुआ। उसके दिल से गुमश्तगीन के क़त्ल का इरादा भी न निकला और अन्तानून की मोहब्बत भी न निकली।

❖

सुल्तान अय्यूबी की सरगर्मियां दो ही थीं। मैदाने जंग का नक़्शा देखता और उसकी लकीरों में खोया रहता या घोड़े पर सवार अपनी फ़ौज की मोर्चा बन्दियां देखता रहता था। वह कुछ देर के लिए या मौज़ूं वक़्त तक के लिए दिफ़ाई जंग लड़ने का फ़ैसला कर चुका था। वह असल जंग कूरून के अन्दर लड़ना चाहता था जिस की उसने स्कीम बना रखी थी लेकिन एक पहलू उसे परेशान कर रहा था कि बायें पहलू पर तो चट्टानें और उनके पीछे पहाड़ियां थीं लेकिन दायें पहलू पर चट्टाने ज़्यादा नहीं थीं उनके पीछे खुला मैदान था। दुश्मन उस तरफ़ पेशक़दमी करके या हल्ला बोल कर आगे निकल सकता था। उससे सुल्तान अय्यूबी का सारा प्लान तबाह होने का ख़तरा था। उसके पास इतनी फ़ौज नहीं थी कि उस मैदान में सवारों और प्यादों की दिवार खड़ी कर सकता था। क़रीबी चट्टान पर उसने तीर अन्दाज़ बैठा दिए थे लेकिन यह इन्तज़ाम काफ़ी नहीं था। मैदान के लिए उसने दो दस्ते सवार और प्यादा तैय्यार कर लिये थे लेकिन उन्हें अभी छिपा कर रखा हुआ था। सुल्तान अय्यूबी को यह मैदान परेशान कर रहा था। उन दो दस्तों के अलावा उसने एक मुन्तख़ब दस्ता अपने पास रख लिया था। वह एक चट्टान पर खड़ा इधर उधर देख रहा था कि दूर उफ़क़ से उसे गर्द उड़ती नज़र आई। ऐसी गर्द फ़ौजी अच्छी तरह पहचानते थे। वह कोई सवार फ़ौज आ रही थी। गर्द के फैलाव से पता चलता था कि घोड़े एक सफ में नहीं चार चार या छःछः की तरतीब में एक दूसरे के पीछे आ रहे हैं। दुश्मन के सिवा और कौन हो सकता था। सुल्तान अय्यूबी ने गुस्से से पूछा– "क्या उस रास्ते पर अपना एक भी आदमी नहीं था? तैय्यारी का हुक्म दो।"

तैय्यारी के नक्कारे बज उठे। फ़ौज को जिस तरह दिफ़ाअ के लिए तैय्यारी की मश्क़ कराई गयी थी वह उसी तरह तैय्यार हो गयी। ज़रा सी देर बाद घोड़े नज़र आने लगे। उनकी चाल दुश्मन वाली या हम्ले वाली नहीं थी। सुल्तान अय्यूबी ने हुक्म दिया कि दो चार सवार दौड़ाओ, देखो यह कौन लोग हैं.......सवार दौड़ा दिये गये और जब वापस आये तो दूर से चिल्लाने लगे– "दमिश्क़ से रज़ाकार आये हैं। साथ औरतों की फ़ौज है।"

14
—
3

"औरत की फौज?" सुल्तान अय्यूबी ने हैरान होकर पूछा– "औरत की फ़ौज?" उसने ज़रा तवक़्क़ुफ़ से सकून की आह लेकर कहा– " यह फौज मेरी बेवा बहन ने तैय्यार करके भेजी होगी। जंगी मरहूम की बेवा ही यह काम कर सकती है। सुल्तान अय्यूबी ने हंसना शुरू कर दिया। ऐनी शाहिदों का बयान है कि वह इतना कभी नहीं हंसा था। हंसते–हंसते वह संजीदा हो गया, और अपने पास खड़े सालारों से कहने लगा– "मेरी कौम की बच्चियां तुम्हें फतहयाब करके ही दम लेंगी। हम क्यों न मर मिटें इन बच्चियों की आबरू पर.....लेकिन मैं उन्हें वापस भेज दूंगा। अगर एक भी लड़की दुश्मन के हाथ चढ़ गयी तो मैं मर कर भी चैन हासिल नहीं कर सकूंगा।"

वह चट्टान से उतर कर आगे चला गया। लड़कियों और रज़ाकारों की फ़ौज क़रीब आ गयी। उसका कमाण्डर अबू वकास घोड़े से उतर कर सुल्तान अय्यूबी के पास आया। सलाम के बाद नुरूद्दीन ज़गी की बेवा का तहरीरी पैग़ाम दिया। उसने ने लिखा था– "मेरे भाई! अल्लाह तुम्हारा हामी व नासिर हो। मेरा शौहर ज़िन्दा होता तो इतने सारे दुश्मनों के सामने अकेले न होते। मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकती। जो मुझ से हो सकता था वह पेश कर रही हूं। उन लड़कियों को मैंने ज़ख़्मियों के संभालने के और ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी करने की तरबियत दिलाई है। दवाइयों का ज़ख़ीरा भी भेज रही हूं। एक सौ रज़ाकर भी साथ हैं। बूढ़े फ़ौजियों ने उन्हें जंगी तरबियत दी है। तकरीबन तमाम को शबखून मारने की मश्क़ भी कराई है। यह सब जोश और जज़्बे वाले हैं। मैं जानती हूं कि इन लड़कियों को तुम मुहाज़ पर रखना पसन्द नहीं करोगे। मैं तुम्हारे ख़्यालात से आगाह हूं, लेकिन यह ख़्याल रखना कि तुमने उन्हें वापस भेज दिया तो दमिश्क़ वालों का दिल टूट जायेगा। तुम नही जानते कि इस शहर में लोगों में क्या जज़्बा है। मर्द तो मुहाज़ पर जाने के लिए तैय्यार हैं, औरतें भी तुम्हारी कयादत में लड़ने को बेताब हैं। इस जैश को सारे शहर ने अक़ीदत और वलवले से रूख़सत किया है। यहां तो बच्चे भी फ़ौजी तरबियत हासिल कर रहे हैं। तुम्हें फौज की कमी महसूस नहीं होगी।"?

पैग़ाम पढ़कर सुल्तान अय्यूबी के आंसू निकल आये। उसने लड़कियों की तरफ़ देखा। वह थी तो लड़कियां लेकिन घोड़ों पर वह सिपाही लगती थीं। सुल्तान अय्यूबी ने सबको घोड़ों से उतार कर अपने सामने खड़ा कर लिया। उसने कहा– "मैं तुम सबको मैदाने जंग में ख़ुश आमदीद कहता हूं। तुम्हारे जज़्बे का सिला मैं नहीं दे सकता, ख़ुदा देगा। मैंने कभी सोंचा भी नहीं था कि लड़कियों को मुहाज़ पर बुलाऊंगा। मैं डरता हूं कि तारीख़ कहेगी कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने अपनी बेटियों को लड़ाया था। मैं तुम्हारे जज़्बात को मजरूह भी नहीं कर सकता। तुम्हें अपने पास रखने से पहले मैं तुम्हें मौका देना चाहता हूं कि सोंच लो। तुममें अगर कोई ऐसी लड़की है जो अपनी मर्ज़ी से नहीं आई तो वह अलग हो जाये, और वह लड़कियां भी अलग हो जायें जिनके दिल में ज़रा भी शक और ख़ौफ़ है।"

कोई एक भी लड़की अलग नहीं हुई। सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मैं तुम्हें पीछे महफ़ूज़ जगह रखूंगा। जंग के दौरान तुम्हें आगे नहीं जाने दूंगा। फिर भी यह इलाका ऐसा है कि तुम

दुश्मन की ज़द में आ सकती हो। हो सकता है तुममें से कई तीरों से मारी जाएं और यह भी हो सकता है कि तुममें से कोई दुश्मन के हाथ न चढ़ जाये। यह भी सुन लो कि बरछी और तलवार का ज़ख़्म बहुत गहरा और बड़ा ही भयानक होता है।"

एक लड़की की आवाज़ बुलन्द हुई– "आप तारीख़ से डरते हैं और हम भी तारीख़ से डरती हैं। हम वापस चली गयीं तो तारीख़ कहेगी कि कौम की बेटियों ने सलाहुद्दीन अय्यूबी को तन्हा छोड़ दिया और घरों में बैठी रही थीं।"

एक और लड़की ने कहा– "ख़ुदा सलाहुद्दी की तलवार में और ज़्यादा कुव्वत दे। हम हरमो के लिए पैदा नहीं हुयीं।"

तीसरी लड़की ने कहा– "तीन चांद पहले मेरा ब्याह हुआ था। अगर आपने मुझे वापस भेज दिया तो मैं अपने ख़ाविन्द को अपने ऊपर हराम समझूंगी।"

"तुम्हारा ख़ाविन्द क्यों नहीं आया?" सुल्तान अय्यूबी ने पूछा– "उसने अपनी दुल्हन को क्यों भेज दिया है।"

"वह आप के फ़ौज में है।" लड़की ने जवाब दिया।

फिर तमाम लड़कियों ने चिल्लाना शुरू कर दिया। इसके सिवा कुछ पता नहीं चलता था कि वह अपने जोश और जज़्बे का मुज़ाहिरा कर रही हैं। यह शोर ज़रा थमा तो किसी लड़की की आवाज़ सुनाई दी– "मोहतरम सुल्तान! हमें लड़ने का मौक़ा दें। हम आपको मायूस नहीं करेंगी।"

"यह भूल जाओ कि मैं तुम्हें लड़ाई में शरीक होने दूंगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "तुम्हें छोटे छोटे गिरोहों में तक़सीम कर दूंगा।"

उसने उसी रोज़ लड़कियों को चार–चार की टोलियों में तक़सीम कर दिया। हर टोली के साथ एक–एक रज़ाकार लगा दिया। रज़ाकारों के मुतअल्लिक़ कहा गया था कि उनको बक़ायदा जंगी ट्रेनिंग दी गयी है। लेकिन सुल्तान अय्यूबी ने उन्हें जख़्मियों की मरहम पट्टी का काम दिया क्योंकि वह बक़ायदा फ़ौज के सिपाही नहीं थे। उन्हें फ़ौज के साथ मिलकर लड़ने का तजुर्बा नहीं था। लड़कियों और रज़ाकारों की ख़ेमागाह कूरून से दूर बनायी गयी। उन्हें उन सिपाहियों के हवाले कर दिया गया जो जख़्मियों और लाशों को उठाने और जख़्मियों की मरहम पट्टी का काम करते थे। उन सिपाहियों ने लड़कियों और रज़कारों को ट्रेनिंग देनी शुरू कर दी।

❖

फ़ातमा, साएका, हमीरा और सेहर एक टोली में आ गयीं। उन का एक टोली में इकठ्ठा हो जाना कुदरती अमर था क्योंकि वह इकठ्ठी दमिश्क़ से पहुंचीं और उन के दिलों में एक ही जैसी ख़्वाहिश और वलवला था। उन के साथ आज़र बिन अब्बास नाम का एक रज़ाकार था। उसका छोटा सा ख़ेमा अलग था। और उकसे क़रीब ही चारों लड़कियों के लिए बड़ा ख़ेमा नस्ब किया गया था। इन लड़कियों में ख़तीब की बेटी साएका, जिस्मानी और दिमाग़ी लिहाज़ से तेज़ और होशियार थी। शाम से कुछ देर पहले उस ने देखा कि उनका साथी रज़ाकार एक

चट्टान पर चढ़ता जा रहा है। वह ऊपर चला गया और इधर उधर देखने लगा। साएका भी ऊपर चली गयी। उसने इधर उधर देखा। वादियों में और ढलानों पर सिपाही नज़र आ रहे थे। आज़र ने साएका से कहा– "आओ आगे चलें।" वह उसके साथ चली गयी। आज़र कुदरती मनाज़िर और पहाड़ी इलाके की तारीफ़ें करता रहा।

आज़र जो खुबरू जवान था। उसकी बातों में ज़िन्दादिली थी और चाशनी भी। उसने साएका के साथ बड़ी शगुफ़्ता सी बातें शुरू कर दीं। सायका ने भी उसमें दिलचस्पी लेनी शुरू करदी। वह सूरज गुरूब होने से ज़रा पहले वापस आये। इतने से वक़्त में आज़र साएका के दिल में उतर चुका था। अफ़तारी के बाद लड़कियां अपने ख़ेमें में बैठी खाना खा रही थीं। फ़ौज के किसी कमाण्डर ने ख़ेमें में झांक कर देखा और लड़कियों से पूछा कि उन्हें कोई तकलीफ़ तो नहीं? लड़कियों ने आराम और इत्मीनान का इज़हार किया तो कमाण्डर ख़ेमे से हट गया। बाहर आज़र खड़ा था। उसने कमाण्डर को बातों में लगा लिया। वह बहुत देर बाहर खड़े बातें करते रहे। साएका उनकी बातें सुन रही थी। आज़र ने कमाण्डर से पूछा कि इतनी थोड़ी फ़ौज से वह तीन फ़ौजों का मुकाबला किस तरह करेंगे।

"दुश्मन के लिए फंदा तैय्यार है।" कमाण्डर ने कहा– "जंग उस मैदान में नहीं होगी। जहां दुश्मन को तवक्को है। हम उसे उस जगह घसीट लायेंगे जहां हमने वसीअ पैमाने पर घात तैय्यार रखी है।" उस कमाण्डर ने आज़र की जज़्बाती और जोशीली बातों से मुतास्सिर होकर तफ़सील से बता दिया कि सुल्तान अय्यूबी ने अपनी फ़ौज को किस तरह तक़सीम किया है और वह क्या करेगा। मिस्र के कुमक के मुतअल्लिक भी बता दिया।

उसी रात का वाकिआ है। आधी रात के लगभग साएका की आंख खुल गयी। उसे आज़र बिन अब्बास के ख़ेमें से बातें सुनाई दीं। वह समझी कि आज़र का कोई दोस्त होगा। लेकिन उसे यह अल्फाज़ सुनाई दिये– "तुम अभी निकल जाओ। कुछ बातें तुमने खुद मालूम कर ली हैं। बाकी मैंने बता दी हैं। मेरे लिए यहां से निकलना मुम्किन नहीं था। अच्छा हुआ तुम आ गये। अब रास्ता समझ लो।" उस आदमी ने आज़र को बताया कि वह किस तरफ़ से निकले। उसे सारा रास्ता समझा कर कहा– "तुम पैदल जा रहे हो। पैदल ही जाना चाहिए। सुबह से पहले पहुंच जाओगे। जल्दी पहुंचने की कोशिश करना, कहीं ऐसा न हो कि वह कल ही अंधाधुंध हम्ला कर दें। फंदा तैय्यार है और मज़बूत है। कूरून के अन्दर न आयें। खुदा हाफ़िज़!"

साएका को उस आदमी के क़दमों की आहट सुनाई दी। वह चला गया था। साएका ने ख़ेमें का पर्दा ज़रा सा हटा कर बाहर देखा। आज़र अपने ख़ेमें से बाहर खड़ा था। वह एक तरफ़ चल पड़ा। सायका ने अपने ख़ेमें की किसी लड़की को जगाये बग़ैर अपने सामान से ख़ंजर निकाला और बाहर निकल गयी।

❖

आसमान पर हल्के–हल्के बादल थे जिन की वजह से चांदनी बहुत ही धुंधली थी। साएका को आज़र साये की तरह नज़र आ रहा था। कुछ फ़ासिला रख कर और ओट में हो कर उसने

आज़र का तआक्कुब किया। आज़र एक चट्टान के दामन में हो गया और चलता गया। साएका भी उसी रास्ते पर हो गयी। रास्तें में कोई संतरी या कोई फ़ौजी इधर उधर आता जाता नज़र न आया। इससे साएका समझ गयी कि लड़कियों और रज़ाकारों के ख़ेमें अगले मोर्चों से बहुत पीछे लगाये गये हैं और उसके पीछे कोई फौज नहीं। साएका को मालूम नहीं था। वहां कई जगहों पर फौज मौजूद थी लेकिन जो आदमी आज़र के पास आया था वह उसे ऐसा रास्ता बता गया था जो उसे फौज की नज़र से बचा सकता था। और एक कटी हुई चट्टान के अन्दर चला गया। मंसूरा रूकी। ज़रा देर बाद वह भी चट्टान के कटाव में दाख़िल हो गयी।

आगे वादी थी जिस में दरख़्त भी थे। आज़र किसी दरख़्त के पीछे रूक जाता, इधर उधर देखता और चल पड़ता। साएका के भी चलने, और छिपने का अन्दाज़ यही था। कुछ दूर ऊंची पहाड़ी का दामन आ गया। आज़र चला जा रहा था और साएका उसके पीछे—पीछे थी। उस पहाड़ी के अन्दर तंग सा दर्रा था। आज़र उस में दाख़िल हो गया। साएका भी उसमें दाख़िल हुई तो यख़ हवा के तेज़ व तुन्द झोंके ने उसके पांव उखाड़ दिये और उसका जिस्म सुन्न होने लगा। आज़र ने किसी शक के बिना पर पीछे देखा और रूक गया। मंसूर बड़े से एक पत्थर के पीछे बैठ गयी। आज़र आगे को चल पड़ी। साएका उठी और जिस तरफ़ पहाड़ी का साया था उस तरफ़ हो गयी।

दर्रे से बाहर निकले तो खुला मैदान था। आज़र तेज़ चल पड़ा। साएका ने भी रफ़्तार तेज़ कर दी लेकिन वह औरत थी, बहुत सा फ़ासिला तय कर चुकी थी। ठंड भी थी और नीचे पत्थर थे। वह थक गयी। यह तो उसका जज़्बा था जो तआक्कुब में चलाये जा रहा था। अब वह इस सोंच में पड़ गयी कि इस तअक्कुब का अन्जाम क्या होगा। अगर आज़र दौड़ पड़ा तो वह उस तक नहीं पहुंच सकेगी। वह जिस शक पर उसके तअक्कुब में गयी थी वह यकीन में बदल चुका था। आज़र दुश्मन की तरफ़ जा रहा था। साएका ने तअक्कुब का यह पहलू तो सोंचा ही नहीं था कि वह उसे पकड़े या पकड़वायेगी कैसे। अब तो वह बहुत तेज़ चल पड़ा था। अगर उसे पकड़ना ही था तो यह दू बदो मुकाबला था। सायका के पास ख़ंजर था। उसने ख़ज़र ज़नी की तरबियत मुसिल में अपने बाप से ली थी लेकिन वह सिर्फ़ तरबियत थी। दुश्मन से कभी मुक़ाबला नहीं हुआ था। यह दुश्मन तन्नूमन्द और मर्द था। क्या साएका उसे ज़ेर करके पकड़ लेगी?"

वह सोंचती गयी और तेज़ चलती गयी। आज़र अचानक रूक गया और उस ने पीछे देखा। साएका के करीब एक दरख़्त था वह फुर्ती से दरख़्त की ओट में हो गयी। दरख़्त के साथ जगह ज़रा बुलन्द थी और वहां पत्थर थे। साएका का पांव पत्थरों पर फिसला और वह गिर पड़ी। रात के सकूत में पत्थरों की आवाज़ बहुत ऊंची सुनाई दी। आज़र पीछे को आया। साएका ने उसे आते देख लिया। वह उठी नहीं, दरख़्त के पीछे बैठ गई और आज़र को देखती रही। उसने ख़ंजर निकाल लिया। आज़र दरख़्त के बिल्कुल करीब आ गया तो सायका ने देखा कि उसके हाथ में नंगी तलवार थी। आज़र दरख़्त से ज़रा आगे हुआ तो साएका ने

उसके पांव पर झपटा मारा और उस के दोनों टख़्नें पकड़ लिए। वह अब पेट के बल थी। उसने पूरी ताक़त से आज़र के टख़्ने पीछे को खींचे। वह मुंह के बल गिरा। दूसरे लम्हें साएका उसकी पीठ पर घुटने रख चुकी थी और उसके ख़ंजर का नोक आज़र की गिर्दन पर थी। यह अमल दो तीन सेकेण्ड में मुकम्मल हो गया।

एक लड़की एक हटे कट्ठे जवान को अपने घुटनों और जिस्म के तमाम तर वज़न से बेबस नहीं कर सकती थी लेकिन गर्दन पर ख़ंजर की नोक ने आज़र को हरकत न करने दी। उसकी तलवार उसके हाथ से छुट कर परे जा पड़ी थी।

"कौन हो तुम?" आज़र ने पेट के बल बेबस पड़े हुए पूछा–

"जिसके हाथों से तुम बच के नहीं जा सकोगे।" साएका ने जवाब दिया।

"तुम औरत हो।"

"हां।" साएका ने जवाब दिया– "मैं औरत हूं जिसे तुम अच्छी तरह जानते हो। मेरा नाम साएका है।"

"ओह, पागल लड़की! आज़र ने हंस कर कहा– "तुमने क्या मज़ाक़ किया है? मैं तो डर ही गया था। हटो, उतरो, अपना ख़ंजर हटालो, मेरी खाल में उतर रहा है।"

"यह मज़ाक़ नहीं आज़र.......तुम कहां जा रहे हो?"

"ख़ुदा की क़सम मैं किसी और लड़की के पीछे तो नहीं जा रहा।" आज़र ने दोस्ताना लहजे में कहा– "तुम से ज़्यादा अच्छी कोई लड़की है ही नहीं। मैं तुम्हें धोखा नहीं दे रहा।"

"मुझे नहीं तुम मेरी क़ौम को धोखा देने जा रहे थे।" साएका ने कहा– "तुम मुझे सबसे ज़्यादा अच्छी लड़की समझते थे, और मैंने तुम्हें सबसे ज़्यादा अच्छा मर्द समझा था मगर अब न मैं तुम्हारे लिए अच्छी हूं न तुम मेरे लिए अच्छे हो। फ़र्ज़ ने जज़्बात पर मुहर सब्त कर दी है। तुम अपना फ़र्ज़ अदा करने चले थे, मैं अपना फ़र्ज़ अदा कर रही हूं। अगर तुम मेरे ख़ाविन्द होते, मेरे जिस्म और रूह के मालिक और मेरे बच्चों के बाप होते तो भी मेरा ख़ंजर तुम्हारी गर्दन पर होता।"

"तुम ने मुझे क्या समझ कर गिरा लिया है।" आज़र ने पूछा।

"नाकाम मुसलमान और सलीबियों का जासूस।" साएका ने कहा– "तुम सलीबियों के दोस्तों को बताने जा रहे हो कि एहतियात से हम्ला करना और कूरून के अन्दर न आना।"

"तुम कुंवारी लड़की क्या जानों जासूस किसे कहते हैं।" आज़र ने कहा– "मैं दुश्मन को देखने जा रहा था।"

"मैं जानती हूं जासूस कैसे होते हैं।" साएका ने कहा– "मैं बहुत बड़े जासूस की बेटी हूं। इब्ने अलमख़्दूम का नाम कभी सुना है? वह मुसिल के ख़तीब थे। मैं उनके गिरोह की जासूस हूं। मैंने अपने बाप को मुसिल के क़ैदख़ाने के तहख़ाने से निकलवाकर फ़रार कराया और ख़ुद उनके साथ मुसिल से फ़रार होकर आई हूं। तुम अनाड़ी जासूस हो। तजुर्बाकार जासूस दूर जाकर बातें किया करते हैं। तुम रज़ाकार बन कर आये थे। यहां क्या कर रहे हो?"

मेरे ऊपर से उठो।" आज़र ने कहा– "ख़ंजर हटाओ, मैं एक ज़रूरी बात करना चाहता

हूं।"

"तुम्हारी ज़ुबान आज़ाद है।" साएका ने कहा–"कहो, ज़रूरी बात कहो, मैं सुन रही हूं।"

आज़र ख़ामोश हो गया। उसका जिस्म बेहिस हो गया। उसने माथा ज़मीन से लगा दिया। साएका के सामने अब यह मसला आ गया कि उसे बांधे कैसे और वहां से किस तरह ले जाये। अगर उसे क़त्ल करना होता तो उसके लिए मुश्किल नहीं था। वह उसे ज़िन्दा सुल्तान अय्यूबी के पास ले जाना चाहती थी। चूंकि वह ख़ुद जासूस के गिरोह के साथ रह चुकी थी, इसलिए जानती थी कि जासूसों को ज़िन्दा पकड़ा जाता है। उसे यह ख़्याल आया कि इर्द गिर्द कहीं अपने सिपाही होंगे। उसने बड़ी ही बुलन्द आवाज़ से कहा– "कोई है तो पहुंचो। आओ–आओ–आओ।" आहो हा आहो।" की आवाज़ बुलन्द की।

आज़र जो बेहिस हो गया था अचानक इतनी ज़ोर से उछला कि साएका जो उसकी पीठ पर घुटने दबा कर बैठी हुई थी, लुढ़क कर एक तरफ जा पड़ी। आज़र तलवार की तरफ़ लपका। सायका ने बिजली की तेज़ी से उठ कर आज़र को पीछे से इतनी जोर से धक्का दिया कि वह आगे को गिरा। साएका ने तलवार उठा ली। आज़र दौड़ पड़ा। उसके लिए मुकाबला करने की बजाये निकल भागना ज़्यादा ज़रूरी था। सायका शोर मचाती उसके पीछे दौड़ी। उसके पांव में बला की तेज़ी आ गयी थी। दूर कहीं गश्ती सिपाही संतरी गश्त कर रहे थे। उन्हें साएका की आवाज़ सुनाई दी तो दौड़े आये। आगे नदी थी। आज़र को रुकना पड़ा। साएका पहुंच गयी और दो संतरी भी पहुंच गये। आज़र ने नदी में छलांग लगा दी। साएका चिल्लाई– "जाने न देना जासूस है। जिन्दा पकड़ो।"

संतरी भी नदी में कूद गये और आज़र पकड़ा गया। उसे बाहर लाये लेकिन एक लड़की को देखकर वह ग़लतफ़हमी में मुब्तला हो गये। वह समझे कि यह कोई और गड़बड़ है। उनके पूछने पर सायका नें उन्हें बताया कि वह कौम है और मुहाज़ पर किस तरह पहुंची है और यह आदमी रज़ाकार बनके आया है लेकिन मुश्तबह है। उसे सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास ले चलो

"सुनो मेरे दोस्तों!" आज़र ने संतरियों से कहा– "तुम्हें यहां क्या मिलता है? चन्द सिक्कों और दो वक़्त की रोटी की ख़ातिर मरने आये हो। मेरे साथ चलो। शहज़ादे बना दूंगा। इस जैसी लड़कियों के साथ शादी कराऊंगा। दौलत से मालामाल कर दूंगा।

हम तुम्हारे साथ चलेंगे।" एक संतरी ने कहा– "पहले तुम हमारे साथ चलो। तुम भी चलो लड़की। वहां जाकर देखेंगे कि यह जासूस है या तुम भी जासूस हो या दोनों इधर बदमाशी के लिए आये थे।"

❖

सुल्तान अय्यूबी के ख़ेमें से थोड़ी ही दूर हसन बिन अब्दुल्लाह का ख़ेमा था। संतरी, आज़र और साएका को अपने कमाण्डर के पास ले गये। कमाण्डर उन्हें हसन बिन अब्दुल्लाह के पास ले गया। उसे जगाया और आज़र को उसके हवाले कर दिया। साएका ने हसन बिन अब्दुल्लाह को तमाम तर वारदात सुनाई। तआक्कुब की तफ़सील भी सुनाई। हसन बिन

अब्दुल्लाह ने साएका को ग़ौर से देखकर पूछा– "तुम्हारा चेहरा मेरे लिए अजनबी नहीं। तुम शायद मुसिल से फ़रार होकर आई थी। तुम्हारे साथ मुसिल के ख़तीब इब्ने अल मख़्दूम भी थे?"

"मैं उनकी बेटी हूं।" साएका ने कहा।

"तुमने मेरी हैरत ख़त्म कर दी है।" हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा–"हमारी लड़कियां तुम से ज़्यादा दिलेर हो सकती हैं, लेकिन यह ज़ेहानत कम ही पाई जाती है जिसका मुज़ाहिरा तुम ने किया है।"

"मुझे मोहतरम वालिद ने तरबियत दी है।" सायएका ने कहा– "मेरे कानों में सिर्फ़ दो जुम्ले पड़े और मैं समझ गयी कि यह मामिला क्या है।"

आज़र की जामा तलाशी ली गयी। उससे कागज बरामद हुए। उन पर निशान लगे हुए थे जो सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज की पोज़ीशन ज़ाहिर करते थे। कागज़ों पर टेढ़ी टेढ़ी लकीरें थीं। यह कूरूने हमात का ख़ाका था। साफ़ मालूम होता था कि सुल्तान अय्यूबी का मुकम्मल दिफ़ाई प्लान दुश्मन के पास जा रहा था।

"आज़र भाई!" हसन बिन अब्दुल्लाह ने आज़र को कागजात दिखाते हुए कहा– "इनके बाद किसी शक की गुन्जाईश रह गयी है तो बता दो, फिर मैं तुम्हें आज़ाद कर दूंगा। अगर बेगुनाह हो तो बोलो। मुझे यकीन दिलाओ....तुम मुसलमान हो?"

"ख़ुदाये ज़ुलजलाल की क़सम!"

हसन बिन अब्दुल्लाह ने उसके मुंह पर सीधा घूंसा इस क़दर ज़ोर से मारा कि आज़र कई क़दम पीछे पीठ के बल गिरा। हसन ने धीमी मगर कहर आलूदा आवाज़ में कहा– "जासूसी काफ़िरों के लिए करते हो और कसम हमारे ख़ुदा की खाते हो।

मैं तुमसे यह नहीं पूछ रहा कि तुम जासूस हो या नहीं। मैं यह पूछ रहा हूं कि यहां तुम्हारे जितने साथी हैं उनके नाम बताओ कि वह कहां कहां हैं।"

"मैं मुसलमान हूं।" आज़र ने इल्तिजा की– "सब कुछ बता दूंगा। मुझे बख़्श दो। मैं अगली सफ़ में लड़ूंगा।"

"पहले मेरे सवाल का जवाब दो।" हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा– "अब मुझ पर अपनी कोई शर्त नहीं ठूंस सकते।"

वह हठ का पक्का मालूम होता था। बोला–"मैं अकेला हूं।"

"इस लड़की ने तुम्हारे ख़ेमें में जिस दूसरे आदमी की बातें सुनी थीं वह कौन था?"

"मैंने उसे पहचाना नहीं था" आज़र ने कहा– "वह अंधेरे में आया और अंधेरे में चला गया था।"

हसन बिन अब्दुल्लाह ने अपने दो आदमियों को बुलाया और कहा– "इसे ले जाओ और पूछो कि उसके साथी कौन हैं और कहां हैं।" उसने साएका से कहा– "तुम जाकर सो जाओ। फज्र नमाज़ की बाद तुम्हें बुलायेंगे।"

❖

सुल्तान अय्यूबी जब फ़ज्र की नमाज़ पढ़ कर आया तो हसन बिन अब्दुल्लाह उसके साथ था। उसने सुल्तान अय्यूबी को बताया कि ख़तीब इब्ने अलमख़्दूम की बेटी ने रात एक जासूस को पकड़ा है। उसने सारा वाक़िआ सुना तो सुल्तान ने कहा– "इस्लाम की बेटियों का यही किरदार था। अगर हम ने अपने कलमा गो के दुश्मनों को ख़ून से लिखा हुआ सबक़ न पढ़ाया तो वह क़ौम की बेटियों का किरदार ख़त्म कर देंगे..... वह जासूस कहां है?"

अभी उसे न देखें।" हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा– "मैं उसका सीना खाली कर लूंगा तो आपके पास लेकर आऊंगा। ख़ुबरू जवान है। अपने आप को दमिश्क़ का बाशिन्दा कहता है। यहां रज़ाकार बनकर आया था।"

उस वक़्त आज़र एक दरख़्त की टेहनी के साथ उलटा लटका हुआ था। उसका सर ज़मीन से गज़ ढेड़ गज़ ऊपर था। नीचे अंगारे दहक रहे थे। एक सिपाही थोड़ी थोड़ी देर बाद आग में कुछ फेंकता था जिस के धुंओं से आज़र तड़पता और खांसता था। हसन बिन अब्दुल्लाह ने उसे नीचे उतरवाया। उसकी आंखें सूज गयी थीं। सारा ख़ून चेहरे पर आ गया था। वह खड़ा न रह सका। थोड़ी देर ग़शी की हालत में ज़मीन पर पड़ा रहा। उसके मुंह में पानी टपकाया गया। उस ने आखें खोलीं तो हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा– "यह बिस्मिल्लाह है। नहीं बोलोगे तो तुम्हारा एक–एक जोड़ अलग किया जायेगा।"

उसने पानी मांगा। हसन बिन अब्दुल्लाह ने कहा– "दूध पिलाऊंगा। मेरे सवाल का जवाब दो।" और उसने एक सिपाही से कहा– "दूध ले आओ, और घोड़ा और एक रस्सा भी ले आओ। रस्सा उसके पांव के साथ बांध कर घोड़े के साथ बांध दो।"

आज़र ने दो नाम बता दिये। यह दोनों रज़ाकार थे। इन में रात वाला आदमी भी था। उसने दमिश्क़ के अड्डे की भी निशानदेही कर दी। हसन बिन अब्दुल्लाह ने उसी वक़्त दोनों रज़ाकारों को पकड़ने का हुक्म दे दिया और आज़र को सुल्तान अय्यूबी के पास ले गया।

"कहां के रहने वाले हो?" सुल्तान अय्यूबी ने पूछा।

"दमिश्क़ का।"

"किसके बेटे हो?"

आज़र ने एक जागरीरदार का नाम बताया।

"मैं शायद जानता हूं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "वह दमिश्क़ में है?"

"जब अल्मलकुस्सालेह की फ़ौज दमिश्क़ से भागी थी तो वह भी हलब चला गया था।"

"और तुम्हें जासूसी के लिए पीछे छोड़ गया था।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा।

"मैं ख़ुद ही दमिश्क़ में रह गया था।" आज़र ने कहा–" मेरे बाप ने एक आदमी के हाथ हलब से पैग़ाम भेजा था कि मैं जासूसी करूं। मुझे पूरी हिदायात मिली थीं।" उसने हाथ जोड़कर सुल्तान अय्यूबी से इल्तिजा की– "मैं मुसलमान हूं, मुझे बाप ने गुमराह किया था। मुझे अपने साथ रख लें। मैं इस गुनाह का कफ़्फ़ारा अदा करूंगा।"

"अल्लाह तुम्हारे गुनाह मांफ करे।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मैं अल्लाह के कानून में दख़ल नहीं दे सकता।

मैं सिर्फ़ यह देखना चाहता था कि वह कौन सा मुसलमान मर्द है जिसके हाथ से एक औरत ने तलवार गिराई और उसे पकड़ लिया है....तुमने यहां क्या–क्या देखा है?"

"मैंने यहां बहुत कूछ देख लिया था।" आज़र ने कहा– "बाकी मालुमात मेरे उन दो साथियों ने दी थीं जो यहां पहले से मौजूद थे। मुझे कहा गया था कि यह देखो कि मिन्जनिकें और तीर अन्दाज़ कहां है। मैंने यह देख लिये थे।"

"तुम से पहले तुम्हारा कोई साथी यह मालूमात लेकर यहां से गया है?" सुल्तान अय्यूबी ने पूछा।

"नहीं।" आज़र ने जवाब दिया– "हम तीनों के सिवा यहां और कोई नहीं।"

"तुम्हें एहसास है कि तुम कितने ख़ुबरू और वजीह जवान हो?" सुल्तान अय्यूबी ने पूछा– " और क्या तुम जानते हो एक लड़की ने तुम्हें किस तरह गिरा लिया था?"

"अगर वह पीछे से मेरे दोनों टख़्ने न पकड़ लेती तो मैं न गिरता।"

"तुम फ़िर भी गिर पड़ते।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "जिन का ईमान फ़रोख़्त हो चुका होता है वह बड़ी आसानी से गिरा करते हैं और तुम्हारी तरह मुंह के बल गिरा करते हैं। तुम हक वालों और इमान वालों के साथ होते तो दस काफ़िर मिल कर भी तुम्हें न गिरा सकते। असल कुव्वत बाज़ू और तलवार की नहीं ईमान की होती है।"

"मुझे एक मौका दें।" आज़र ने कहा।

"इसका फ़ैसला दमिश्क़ का काज़ी करेगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मैं तुम्हारे साथ यह बातें इस लिए कर रहा हूं कि तुम मुसलमान के बेटे हो। तुम्हें हमारे साथ होना चाहिए था मगर तुम उधर चले गये। मैं जानता हूं कि दमिश्क़ की दो चार लड़कियां तुम्हारी मोहब्बत का दम भरती होंगी। चेहरे और जिस्म के लिहाज़ से तुम इस काबिल हो कि लड़कियां तुम्हें पसन्द करें लेकिन अब वह लड़कियां तुम्हारे मुंह पर थूकेंगी। ख़ुदा ने भी तुम से नज़रें फेर ली हैं...... मैं कुछ कह नहीं सकता कि दमिश्क़ के क़ाज़ी मोहतरम तुम्हें क्या सज़ा देंगे। अगर वह सज़ाये मौत दें तो जितनी देर ज़िन्दा हो अल्लाह से गुनाहों की बख़्शिश मांगते रहना। कम अज़कम मरने से पहले मुसलमान हो जाना।"

"मेरे बाप को कौन सज़ा देगा?" आज़र ने ग़ुस्से से कहा– "इस गुनाह की तरग़ीब मुझे बाप ने दी थी। उसी ने मेरे दिल में दौलत का लालच डाला था। उसी ने मेरे दिल से ईमान निकाला था।"

"अल्लाह का क़ानून उसे नहीं बख़्शेगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "दौलत का नशा आरज़ी होता है। ईमान की कुव्वत मर कर भी ख़त्म नहीं होती।"

"मेरी एक अर्ज़ सुन लें।" आज़र ने कहा– "मेरा बाप कोई दौलत मन्द इन्सान नहीं था। दौलत का परस्तार था। मेरी दो बहनें जवान हुई तो उसने दोनों को दो उमरा के हवाले कर दिया और दरबार में जगह हासिल करली। उसने अपनी बेटियों की बहुत ज़्यादा कीमत वसूल की। फिर वह मुख़्बिरी और ग़ीबत करने लगा। मुझे भी उसने उसी काम पर लगाया और मेरे दिल में दौलत का लालच पैदा कर दिया। नुरूद्दीन ज़ंगी के वफ़ात के बाद मेरे बाप

ने और ज़्यादा ऊंची हैसियत हासिल कर ली। वह अब तजुर्बाकार साज़िशी और जोड़ तोड़ का माहिर हो गया था। उस वक़्त तक वह ख़ासी जागीर हासिल कर चुका था। आप की फौज आई तो अल्मलकुस्सालेह और उस के दरबारी उमरा और जागीरदार दमिश्क़ से भाग गये। उनमें मेरा बाप भी था। मैं किसी इरादे के बेग़ैर ही दमिश्क़ में रह गया था। कुछ दिनों बाद हलब से एक आदमी आया। मेरे बाप का यह पैग़ाम लाया कि मैं जासूसी का काम शुरू कर दूं। वह आदमी मुझे दमिश्क़ मे ही उस अड्डे पर ले गया जिनकी मैं ने निशानदेही की है। वहां मुझें बहुत सी रकम दी गयी और दो तीन दिनों में बता दिया गया कि मुझे क्या करना है और किस तरह करना है। मैं उस गिरोह मे शामिल हो गया। ख़ूब ऐश व ईशरत की। एक रोज़ हमारे सरग़ना ने हमें कहा कि मुहाज़ पर रज़ाकार जा रहे हैं।

तीन चार आदमी उनमें शामिल हो जाओ। हम तीन आदमी शामिल हो गये। दो पहले ही यहां आ गये थे। फिर मुझे हुक्म मिला कि मैं भी यहा आऊं और आप की फौज की कैफ़ियत देखकर तमाम मालूमात मुश्तर्का कमान तक पहुंचाऊं। मैं आ गया मे : साथी यहां का नक़्शा तैय्यार कर चुके थे। उन्होंने यह भी मालूम कर लिया था कि आप अपने दुश्मन की फौज को उस जगह लाकर खड़ा करना चाहते हैं जो चट्टानों में घिरी हुई है। मैंने चट्टानों पर छिपे हुए आप के तीर अन्दाज़ और मिन्ज़निकें भी देख ली थीं।"

उसके आंसू बहने लगे। उसने कहा-- "मैं पकड़ा गया हूं तो महसूस किया है कि मैं गुनाह कर रहा था। आप की बातों ने मेरे अन्दर ईमान की हरारत बेदार कर दी है। अगर मेरा बाप अपनी बेटियों को बेचकर दौलत मन्द न बनता तो मेरा ईमान क़ायम रहता। यह गुनाह मेरे बाप का है। सुल्तान! आप का इक़बाल बुलन्द हो। मुझे गुनाह का कफ़्फ़ारा अदा करने का मौक़ा दो।"

सुल्तान अय्यूबी ने हसन बिन अब्दुल्लाह को इशारा किया तो आज़र को ख़ेमे से बाहर ले गये।

❖

उसी रोज़ आज़र को दमिश्क़ रवाना कर दिया गया। उसके साथ दो मुहाफ़िज़ थे। तीनो घोंड़ो पर सवार थे। आज़र के हाथ रस्सी से बंधे हुए थे। सूरज ग़ुरूब होने से ज़रा पहले वह आधा रास्ता तय कर चुके थे। रात के लिए रूकना था। रास्ते में दोनों मुहाफ़िज़ उससे सुनते रहे थे कि उसका जुर्म क्या है। आज़र ने उनके साथ जज़्बाती सी बातें करके उन्हें मुतास्सिर कर लिया था। शाम के वक़्त आज़र ने उन्हें कहा कि थोड़ी सी देर के लिए वह उसके हाथ खोल दें। मुहाफ़िज़ों ने इस ख़्याल से उसके हाथ खोल दिये कि यह निहत्था है। भाग कर कहां जायेगा। उन्हों ने दूसरी एहतियात यह की कि उसे घोड़े से उतार दिया। वह पैदल तो भाग नहीं सकता था। वह बैठ गये और उनके पास खाने के लिए जो कुछ था खाने लगे।

आज़र ने मौक़ा देख लिया और अचानक उठकर बहुत तेज़ी से दौड़ा। घोड़े क़रीब ही खड़े थे। आज़र एक सानिए में घोड़े पर सवार हो गया। मुहाफ़िज़ पहुंच तो गये लेकिन आज़र ने घोड़े को ऐड़ लगा कर रूख़ उनकी तरफ़ कर दिया। वह दोनों इधर उधर हो गये और

अपने घोड़ों तक बरवक़्त न पहुंच सके। जितनी देर में वह घोड़ों पर सवार हुए इतनी देर में आज़र बहुत सा फ़ासिला तय कर चुका था। मुहाफ़िज़ों ने घोड़े भगाये लेकिन अब तआक़्क़ुब बेसूद था। शाम गहरी होने लगी थी। ज़मीन ऊंची नीची थी। कहीं कहीं टीले और चट्टानें भी थीं। मुहाफ़िज़ दूर तक गये मगर आज़र ग़ायब हो चुका था।

दूसरे दिन दोनों मुहाफ़िज़ सर झुकाये हुए, शिकस्त ख़ुर्दा और बुरी तरह थके हुए हसन बिन अब्दुल्लाह के पास पहुंचे। एक ने कहा– "हमें गिरफ़्तार कर लीजिए। क़ैदी भाग गया है।" उन्होंने यह भी बता दिया कि क़ैदी के कहने पर उन्होंने उसके हाथ खोल दिए थे। हसन बिन अब्दुल्लाह ने उन्हें हिरासत में ले लिया लेकिन घबराहट से उसका पसीना निकल आया क्योंकि आज़र मामूली क़िस्म का क़ैदी नहीं था। वह सुल्तान अय्यूबी का सारा प्लान अपने साथ ले गया था। फ़तह व शिकस्त का दारोमदार उस प्लान पर था। हसन बिन अब्दुल्लाह सुल्तान अय्यूबी को बताने से डर रहा था कि पकड़ा हुआ जासूस हाथ से निकल गया है और अपने सारे मंसूबे बेकार हो गये हैं। छिपाना भी ठीक नहीं था।

सुल्तान अय्यूबी को जब हसन बिन अब्दुल्लाह ने बताया कि क़ैदी भाग गया है तो सुल्तान के चेहरे का रंग बदल गया। कितनी ही देर उसकी ज़ुबान से एक लफ़्ज़ न निकला। उठ कर ख़ेमें में टहलने लगा। उस दौर का एक वक़ाअ निगार असदुलअसदी लिखता है– "सलाहुद्दीन अय्यूबी इन्तेहाई ख़तरनाक सूरत हाल में भी नहीं घबराता था लेकिन उस जासूस के भाग जाने की ख़बर सुनकर उसके चेहरे से ख़ून ग़ायब और आंखें बेनूर हो गयीं.........ख़ेमें में टहलते टहलते वह रुक गया, और आसामन की तरफ़ देखकर बोला– "ख़ुदाए ज़ुलजलाल! क्या यह इशारा है कि मैं यहां से वापस चला जाऊं? क्या तेरी ज़ात बारी ने मेरे गुनाह बख़्शे नहीं? मैंने कभी हथियार नही डाले थे। कभी पस्पा नहीं हुआ था, फिर उस की आवाज़ रुंध गयी। उसे शायद ग़ैब से कोई इशारा मिल जायाकरता था जो उस मौक़ा परभी मिला। उसने हसन बिन अब्दुल्लाह से कहा– उन दोनों सिपाहियों को ज़्यादा सज़ा न देना। सज़ा से बचने के लिए वह मफ़रूर हो सकते थे लेकिन वह तुम्हारे पास आ गये उन्हें ग़लती की सज़ा ज़रूर देना, नेक नीयती और सच बोलने का सिला भी ज़रूर देना.....सालारों को बुलाओ, उसके चेहरे पर रौनक़ और आंखों में चमक ऊद कर आई।"

तीन सालार आ गये। सुल्तान अय्यूबी ने उनसे कहा– "वह जासूस भाग गया है जिसके पास दिफ़ाई मंसूबा था। उसने जो नक़्शे बनाये थे वह हमारे पास रह गये हैं। उसने अपनी आंखों से बहुत कुछ देख लिया था और उसे यह भी मालूम हो गया था कि हम दुश्मन को कहां लाकर लड़ाना चाहते हैं। भागने वाले के दो साथी अभी हमारे पास हैं। हसन बिन अब्दुल्लाह उन्हें अभी यहीं रखना चाहता था। अब हमारे लिए सूरत यह पैदा हो गयी है कि हमने दुश्मन के लिए जो फंदा तैय्यार किया था वह बेकार हो गया है। वह अब करून के अन्दर नहीं आयेगा। हो सकता है कि हमें मुहासिरे में लेले और हमारी रस्द का रास्ता रोक ले। मुझे मश्वरा दो कि हम अपना मंसूबा बदल दें या उसी पर कायम रहें।"

तीनों सालारों ने अपने–अपने मश्वरे दिए जो एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ थे। सिर्फ़ इस बात

पर तीनो मुत्फिक थे कि प्लान बदल दिया जाए। सुल्तान अय्यूबी ने इत्तफ़ाक न किया और कहा कि प्लान बदलने के लिए वक़्त चाहिए। ख़तरा यह है कि इस दौरान दुश्मन ने हम्ला कर दिया तो हमारे लिए मुश्किल पैदा हो जाएगी। खुली जंग लड़ने के लिए फ़ौज कम थी। लिहाज़ा यह फ़ैसला हुआ कि प्लान में कोई तबदीली न की जाए। उसके बजाए छापामारों को हुक्म दिया गया कि वह वसीअ पैमाने पर शबख़ून मारें और दुश्मन की मुशतर्का कमान के मरकज़ और तीनों फ़ौजों के मरकज़ों पर ज़्यादा शबख़ून मारें। रस्द के रास्ते को और ज़्यादा महफ़ूज़ कर लिया जाए। उसने छापामारों के सालार से कहा कि वह अपने उस दस्ते को ले आए जिसे मटके तोड़ने का काम सौंपा गया है।

सालार नये एहकाम लेकर चले गये। सुल्तान अय्यूबी ने यह एहकाम खुद एअतमादी से दिए थे लेकिन वह बहुत परेशान था। उसे पूरा यक़ीन था कि भागने वाले जासूस ने उसका सारा प्लान तबाह कर दिया है और अब मालूम नहीं क्या होगा।

कुछ देर बाद बारह छापामारों का एक जैश उसके सामने लाया गया। सलीबियों ने हलब वालों को आतिशगीर मादे के जो मटके भेजे थे वह मैदाने जंग में लाये गये थे। सुल्तान अय्यूबी के जासूसों ने यह ज़ख़ीरा देख लिया थां। उसने कहा था कि जब दुश्मन हम्ला करे तो यह ज़ख़ीरा तबाह कर दिया जाए। उसके लिए बारह जांबाज़ और जुनूनी क़िस्म के छापामार मुन्तख़ब किये गये और उन्हें सुल्तान अय्यूबी के सामने लाया गया। उसने देखा और एक छापामार को देखकर मुस्कुराया। बोला– "अन्तानून! तुम इस जैश में आ गये हो?"

"मुझे इसी जैश में आना चाहिए था।" अन्तानून ने कहा– "मैंने आप से कहा था कि मैं अपने गुनाह का कफ़्फ़ारा अदा करूंगा।"

"मेरे अज़ीज़ दोस्तों!" सुल्तान अय्यूबी ने छापामारों से कहा– "तुम ने कहां कहां कुर्बानियां नहीं दीं लेकिन अब मज़हब और मिल्लत की आबरू तुम से बहुत बड़ी कुर्बानी मांग रही है। तुम जंग का पांसा पलट सकते हो। तुम्हें हदफ़ बता दिया गया है। अगर तुम ने उसे तबाह कर दिया तो आने वाली नस्लें भी तुम्हें याद रखेंगी। तुम देख रहे हो कि अपनी फ़ौज थोड़ी है और दुश्मन की तीन लश्कर है। उस से अपनी फौज को तुम बचा सकते हो।"

हम मज़हब और मिल्लत को मायूस नहीं करेंगे।" छापामारों के कमाण्डर ने कहा।

उन्हें चन्द और हिदायात देकर रूख़्सत कर दिया गया।

❖

अगली सुबह एक सवार सरपट घोड़ा दौड़ाता आया। सुल्तान अय्यूबी अभी अपने ख़ेमे में था। सवार ने इत्तलाअ दी कि दुश्मन आ रहा है। फ़ासिला एक मील रह गया था। रूख़ कूरून की तरफ़ था। इतने में एक और सवार आ गया। उसने इत्तलाअ दी कि दायें तरफ़ से भी दुश्मन की फ़ौज आ रही है। उस फ़ौज के रूख़ से सुल्तान अय्यूबी ने अन्दाज़ा लगाया कि दायें पहलू पर आ रही है। उस पहलू के मुतअल्लिक़ सुल्तान अय्यूबी को परेशानी थी। वह अब और परेशान हो गया। उसके असाब पर आज़र जासूस सवार था। जो निहायत क़ीमती राज़ लेकर चला गया था। उसने अन्दाज़ा लगाया कि यह जासूस गुज़िश्ता रात पहुंचा होगा और

उसकी मालूमात पर दुश्मन ने हम्ला कर दिया है। सुल्तान अय्यूबी ने तैय्यारी का हुक्म दे दिया। उसके क़ासिद इधर–उधर दौड़ पड़े। कूरून के दर्मियान ख़ेमे लगे रहे। सिपाही ख़ेमों में रहे या इधर–उधर घूमते फिरते रहे ताकि दुश्मन यह समझे कि वह तैय्यार नहीं चट्टानों पर तीर अन्दाज़ तैय्यार हो गये।

दुश्मन की रफ़तार तेज़ थी। उसके हरावल ने देखा कि ख़ेमें अभी तक खड़े हैं तो हरावल इस ख़्याल से कि उन्होंने सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज को बेख़बरी में आ लिया है पीछे ख़बर दे दी कि रफ़तार तेज़ करो। सुल्तान अय्यूबी एक बुलन्द चट्टान पर चला गया जहां से सारा मंज़र और दायें तरफ़ का मैदान भी नज़र आ रहा था। यह देखकर वह हैरान रह गया कि गुमश्तगीन की फ़ौज सीधी कूरून की तरफ़ आ रही है। सुल्तान अय्यूबी के सिपाहियों ने हिदायात के मुताबिक़ अपने घोड़ों पर ज़ीने उस वक़्त डालीं जब दुश्मन बिल्कुल क़रीब आ गया था। प्यादों ने आगे बढ़कर चन्द एक तीर चलाये। उधर से ललकार सुनाई देने लगी– "कुचल दो। किसी को जिन्दा न छोड़ो। सलाहुद्दीन अय्यूबी को जिन्दा पकड़ो। सर काट लो।"

सुल्तान अय्यूबी के सवार आगे बढ़े मगर पीछे को आ गये। प्यादों और सवारों ने हम्ले की अगली सफ़ का मुक़ाबला किया और लड़ते लड़ते पीछे हटते आये, हत्ता कि तमाम हम्लावर दस्ते कूरून के अन्दर उसी फंदे में आ गये जहां उन्हें सुल्तान अय्यूबी लाना चाहता था। चट्टानों से उस पर तीरों का मेंह बरसने लगा। दुश्मन के घोड़े तीर खाकर बिदकते, मुह ज़ोर होते और अपने प्यादों को कुचलते फिरते थे। दुश्मन के कमाण्डर समझ न सके कि यहां ख़ेमों में जो फ़ौज थी वह कहां ग़ायब हो गयी है। उन्हें मालूम नहीं था कि आगे चट्टानों में एक कटाव है जो एक वादी में चला जाता है और सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज उस में ला पता होती जा रही है। मैदान में ख़ेमे खड़े थे जिन की रस्सियां रुकावट पैदा कर रही थीं।

थोड़ी देर बाद फलीतों वाले आतिशी तीर आने लगे जो ख़ेमों पर चलाये जा रहे थे। उन्होंने ख़ेमों को आग लगा दी और मैदाने जंग से शोले उठने लगे। दुश्मन के कमाण्डरों के लिए बड़ी मुश्किल पैदा हो गयी। उनकी जमीअत बिखर गयी थी। दस्ते गडमड हो गये थे। घोड़ों के हिनहिनाने का, ज़ख़्मियों की चीख़ व पुकार का और कमाण्डरों के वाविले और ललकार का इतना ज़्यादा शोर था कि आवाज़ों को अलग करके समझना नामुम्किन था। कम व बेश दो घंटे दुश्मन के सिपाही अफ़रा तफ़री की कैफ़ियत में और उनके कमाण्डर उन्हें सम्भालने की कोशिश में सुल्तान अय्यूबी के तीर अन्दाज़ों से ज़ख़्मी और हलाक होते रहे। वह भी आख़िर मुसलमान सिपाही थे। अस्करी जज़्बा उन्हें पस्पा नहीं होने दे रहा था। उनमें से कई एक उन चट्टानों पर चढ़ने लगे जहां से तीर आ रहे थे। यह उनकी दिलेरी का मुज़ाहिरा था लेकिन उपर से आये हुए तीर उन्हें पत्थरों की तरह लुढ़का रहे थे।

बहुत ही मुश्किल से दस्तों को पीछे हटने का हुक्म दिया गया। उन्हें पीछे ही हटना था। पीछे हटे तो उन्हें पता चला कि अक़ब में सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज खड़ी है। एलान होने लगे– "हथियार डाल दो। तुम हमारे भाई हो हम तुम्हें हलाक नहीं करेंगे।" उन एलानात के साथ–साथ

घोड़े बढ़ते और फैलते आ रहे थे। गुमश्तगीन के घिरे हुए सिपाहियों में अब लड़ने का दम ख़म नहीं रहा था। उनमें से आधे मारे गये या जख़्मी हो गये थे, जो जिन्दा थे उन पर दहशत तारी हो गयी थी। वह कुछ और तवक्क़ो लेकर आये थे। उन्हें बताया गया था कि यह बड़ी सहल फ़तह होगी मगर उन के लिए मैदाने जंग जहन्नम बन गया। उन्होंने हथियार फेंकने शुरू कर दिये।

❖

सुल्तान अय्यूबी की यह चला तो कामयाब रही लेकिन दूसरी तरफ़ दुश्मन ने उसके लिए मुश्किल पैदा कर दी। यह दायें पहलू का वही मैदान था जिस के मुतअल्लिक़ उसे शुरू से ही फ़िक्र था। उस तरफ़ से सेहराई आंधी की तरह दुश्मन की फ़ौज आ रही थी। उसके मुक़ाबले में सुल्तान अय्यूबी के दो दस्ते थे। हम्लावर के झंडे नज़र आने लगे। यह हलब की फ़ौज थी। सुल्तान अय्यूबी ने हलब का मुहासिरा करके इस फ़ौज के जौहर देखे थे। उसे मालूम था कि यह फ़ौज गुमश्तगीन और सैफ़ुद्दीन की फ़ौज से मुख़्तलिफ़ है। फ़न्नी महारत और शुजाअत के लिहाज़ से यह फ़ौज यक़ीनन बरतर थी। सुल्तान अय्यूबी ने अपने आप को कभी ख़ुश फ़हमियों में मुब्तला नहीं किया था। वह फ़ौरन जान गया कि उसके यह दस्ते इस फ़ौज को नहीं रोक सकेंगे। वह अपने रिज़र्व को अभी इस्तेमाल नहीं करना चहाता था। उस ने दिमाग़ को हाज़िर रखा। अपने पास खड़े सालारों को उसने कोई हिदायात देकर भेज दिया।

उसने रिज़र्व ट्रोप्स के अलावा मुन्तख़ब सवारों का एक दस्ता अपने साथ रखा हुआ था। उस तरफ़ वाली चट्टान पर तीर अन्दाज़ थे उनके कमाण्डर को हुक्म भेजा कि कूरून से हट कर मुंह पीछे कर लें और उसी पोज़ीशन से नये हम्लावर को निशाना बनाए। उसने अपने मुन्तख़ब सवारों के कमाण्डर को हुक्म दिया कि दस्ता मैदान में लाओ, मैं ख़ुद कमान करूंगा। निहायत थोड़े वक़्त में वह चट्टान से उतरा। उसका दस्ता तैय्यार था। वह भी मैदान में आ गया। सुल्तान अय्यूबी मैदान जंग में अपना झंडा नहीं लहराया करता था ताकि दुश्मन को पता न चल सके कि वह कहां है लेकिन इस मौक़ा पर उसने बुलन्द आवाज़ से कहा-- "मेरा झंडा ऊंचा रखो।" क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद अपनी याददाश्तों में लिखता है-- "इस मार्के में अपना झंडा चढ़ा कर सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने दस्तों को बताना चाहता था कि उनकी कमान और क़यादत ख़ुद कर रहा है और वह हलब के हम्लावरों को बताना चाहता था कि उनका मुक़ाबला सलाहुद्दीन के साथ है।"

सुल्तान अय्यूबी ने इशारे और अल्फ़ाज़ मुक़र्रर कर रखे थे। उसने निहायत तेज़ी से सवारों को इस तरतीब में कर लिया कि दो घोड़े आगे, चार पीछे, उनके पीछे छः, उनके पीछे आठ और बाक़ी तमाम आठ आठ की तरतीब में रहे लेकिन उसने तरतीब कहीं खड़े होकर नहीं बनाई बल्कि तीन चार सफ़ों में दौड़ते घोड़सवारों को उस तरतीब में होने का हुक्म दिया था। सामने से दुश्मन सफ़ दर सफ़ फैला हुआ आ रहा था। क़रीब जाकर सुल्तान,अय्यूबी के सवार उस तरतीब में हो गये। तसादुम इस तरह हुआ कि यह घोड़ सवार एक कील की तरह दुश्मन के लश्कर में दाख़िल हो गये। सुल्तान अय्यूबी उस तरतीब के दर्मियान में था। दुश्मन

के घोड़े दायें बायें से आगे निकल गये। रास्ते में जो आया उसे बरछियों से मजरूह करते गये।

दुश्मन के सवारों के पीछे प्यादा दस्ते थे। सुल्तान अय्यूबी ने दूर आगे जाकर सवारों को पीछे मोड़ा, और फ़ौरन सफ़ों की तरतीब में लाकर पूरी रफ़्तार से प्यादा दस्तों पर हम्ला किया। प्यादों ने मुकाबला तो बहुत किया लेकिन घोड़े और सवार उन्हें रौंदते और काटते आगे निकल गये। सुल्तान अय्यूबी के प्यादा दस्ते सामने थे। उन्होंने दुश्मन के सवारों का मुकाबला किया। अक़्ब से सुल्तान अय्यूबी ने हल्ला बोल दिया। करीबी चट्टानों से तीर अन्दाज़ों ने तीर बरसाने शुरू कर दिए लेकिन हलब की फ़ौज का हौसला न टूटा। सुल्तान अय्यूबी ने अपनी कमान न बिखरने दी। मार्का बड़ी ख़ूंरेज़ था और बड़ी शदीद। तमाम मोअर्रिख़ीन लिखते हैं कि अगर सुल्तान अय्यूबी उस मार्के की कमान ख़ुद न लेता तो उसका सारा प्लान इस पहलू से तबाह हो जाता।

काज़ी बहाउद्दी शद्दाद ने मोअर्रिख़ीन से कुछ इख़्तिलाफ़ किया है। उकसी याददाश्तों से ज़ाहिर होता है कि हम्लावर फ़ौज हलब की नहीं मुसिल की थी और उस की कमान सालार मुज़फ़रूद्दीन बिन ज़ैनुद्दीन कर रहा था, और यह कमान इतनी दानिश्मंदाना थी मुज़फ़रूद्दीन सुल्तान अय्यूबी के साथ सालार रह चुका था और उसने यह फ़न सुल्तान अय्यूबी से ही सीखाथा। नफ़री ज़्यादा होने के अलावा मुज़फ़रूद्दीन को यह फ़ायदा भी हासिल था कि वह सुल्तान अय्यूबी की चालों को अच्छी तरह समझता था।

सुल्तान अय्यूबी ने कासिदों को अपने साथ रखा और उनके ज़रिए छोटे से छोटे जैश के साथ राब्ता कायम रखा। उसने ऐसी चाल चली कि दुश्मन को उस चट्टान के क़रीब ले गया जिस पर तीर अन्दाज़ तैय्यार थे। उन्होंने बहुत काम किया। सुल्तान अय्यूबी ने अपनी नफ़री में इतनी कमी महसूस की कि उसे इब्तेदाई प्लान बदलना पड़ा। उसने रिज़र्व ट्रोप्स को भी बुलाने का फ़ैसला कर लिया लेकिन ऐन वक़्त एक क़ासिद ने उसे बताया कि एक तरफ़ से चार पांच सौ सवार आ रहे हैं। सुल्तान अय्यूबी ने गुस्से से पूछा कि वह कौन सा दस्ता है और क्यों आया है? वह मैदाने जंग में डिसीप्लीन का ज़्यादा पाबन्द हो जाता था, हालांकि उसे इस मैदान में कुमक की शदीद ज़रूरत थी, लेकिन उस की इजाज़त और हिदायत के बग़ैर किसी की हरकत उसे पसन्द न आई। उसने क़ासिद को दौड़ाया कि ख़बर लाये कि यह कौन हैं।

क़ासिद जो ख़बर लाया उसने सुल्तान अय्यूबी को सुन्न कर दिया। ख़बर यह थी कि यह चार सौ लड़कियां और एक सौ रज़कार हैं। उनकी क़यादात हुज्जाज अबू वक़ास कर रहा है और वह सालार शम्सुद्दीन की इजाज़त से आये हैं। सुल्तान अय्यूबी उन्हें रोक सकता था लेकिन जिस अन्दाज़ से यह पांच सौ सवार आये उस से सुल्तान अय्यूबी समझ गया कि कमान वाक़ई शम्सुद्दीन कर रहा है। यह सवार दुश्मन को चट्टान की तरफ़ धकेल रहे थे। उस मार्के में पयादे घोड़ों तले कुचले जा रहे थे। दुश्मन की पेश क़दमी रोक ली गयी थी। वह आगे निकलने की कोशिश कर रहा था मगर उसे वहीं उलझा लिया गया।

मुसलमान, मुसलमान के हाथों कट रहा था। अल्लाहु अकबर के नारे अल्लाहो अकबर के

नारों से टकरा रहे थे। ज़मीन कांप रही थी। आसमान ख़ामोश था। सलीबी तमाशा देख रहे थे। तारीख़ दम बखुद थी। लड़कियां अपने भाइयों और बापों के दोश बदोश भाईयों और बापों के खिलाफ़ लड़ रहीं थीं। लहुलुहान हो रही थीं। कौम की अज़मत घोड़ों के सुम्मों तले रौंदी जा रही थी, और ख़ुदा देख रहा था।

दिन भर के मार्के का अन्जाम यह हुआ कि दुश्मन का हौसला ख़त्म हो गया। उस के सिपाहियों ने हथियार डालने शुरू कर दिये। वह नीम मुहासिरे मे आ गये थे। सालार निकल गये। रात ज़ख़्मियों के वाविले से लरज़ती रही। दिन भर की थकी हुई लड़कियां रात को ज़ख़्मियों को उठाती रहीं। सुबह हुई तो उस मैदान का मंज़र भयानक और हौलनाक था। दूर दूर तक लाशें बिखरी हुई थीं। घोड़े मरे पड़े थे। जंगी कैदियों को दूर परे ले गये थे। उन लाशों में लड़कियों की जो लाशें थीं वह उठा ली गयी थीं।

"बादशाही का नशा इन्सान को इस सतह पर भी ले आता है जहां एक इन्सान अपनी कौम को दो धड़ों में काट कर उन्हें आपस में लड़ा देता है।" सुल्तान अय्यूबी ने मैदाने जंग का मंज़र देखकर कहा— "अपने भाई अपनी बहनों की इस्मतदरी करते हैं। अगर हमने बादशाही के रुजहान को ख़त्म न किया तो कुफ़्फ़ार इस कौम को कौम के सरबराहों के हाथों आपस में लड़ा लड़ा कर ख़त्म कर देंगे।"

❖

कूरूने हमात और उसके पहलू का मार्का ख़त्म हो गया था, जंग अभी जारी थी। मार्के की रात छापा मार हलब की फ़ौज के उस ज़ख़ीरे तक पहुंच चुके थे जहां आतिशगीर मादे के मटके रखे हुएथे। रात के वक़्त मटके खोल कर उससे कपड़े भींगोये जा रहे थे जिन के गोले बनाकर मिन्जनिकों से फेंकने थे। हांडियां भी भर कर सरबमुहर की जा रही थीं। अभी एक फ़ौज रिज़र्व में थी। उसे इत्तलाअ मिल गयी थी कि दोनों फ़ौजों के हम्ले नाकाम हो चुके हैं। लिहाज़ा यह फ़ौज आख़िरी हम्ले के लिए तैय्यार हो रही थी हम्ले की कमायाबी के लिए आग फेंकने का फ़ैसला किया गया था। सुल्तान अय्यूबी के बारह छापामारों ने अपना हदफ़ देख लिया। उन में से चार पांच के पास कमाने थीं और फ़लीते वाले तीर भी थे। वह घोड़ों से उतर कर आगे चले गये। फ़लीते जलाकर उन्होंने तीर चला दिए। यकलख़्त शोले बुलन्द हुए और वहां हुड़दंग बपा हो गयी।

छापामारों को बताया गया था कि मटके बेशुमार हैं। वहां भगदड़ मची तो छापामारों ने हल्ला बोल दिया। शोलों से वहां बहुत रौशनी हो गयी थीर। छापामारों को महफूज़ मटके भी नज़र आ गये। उन्होंने अपनी बरछियों के साथ हथौड़ियों की तरह लोहे के टुकड़े बांध रखे थे। दौड़ते घोड़ों से उन्होंने मटके तोड़ने शुरू कर दिए। उनमें से एक ने आग लगाने का इन्तज़ाम कर दिया। दुश्मन ने उन्हें घेरे में लेने की कोशिश की। यह एक ख़ुरेंज़ मार्का था। बारह जांबाज़ सैंकड़ों के नर्ग़े में लड़ रहे थे। शोले हर तरफ़ फैल गये थे। सारे कैम्प पर दहशत तारी हो गयी। घोड़े और ऊंट रस्सियां तुड़ा कर भागने लगे।

जहां सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज थी वहां एक चट्टान पर खड़े किसी आदमी ने चिल्ला कर

कहा– "आसमान जल रहा है। ख़ुदा का कहर नाज़िल हो रहा है।"

सुल्तान अय्यूबी को इत्तलाअ मिली तो वह दौड़ता हुआ एक चट्टान पर जा चढ़ा। उसे दुश्मन के कैम्प की तरफ आसामन लाल सूर्ख़ होता नज़र आया। उसके मुंह से बेसाख़्ता निकला– "आफ़रीन–आफ़रीन। अल्लाह तुम्हें सिला दे।"

मुसिल की फ़ौज फ़ौरी तौर पर जवाबी हम्ले के क़ाबिल न रही। सुल्तान अय्यूबी के छापामार सरगर्म हो गये। उन्होंने तीन रातें गुश्मतगीन, सैफ़ुद्दीन और अल्मलकुस्सालेह के कैम्पों में इतनी तबाही मचाई कि उनके मरकज़ भी हिल गये। आख़िर उन्होंने किसी और तरफ से हम्ले का फ़ैसला करें कूच का हुक्म दिया। तब उन्हें पता चला कि उनके अक़ब में सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज आ चुकी है। यहां सुल्तान अय्यूबी ने अपनी मख़्सूस चालों से दुश्मन को बेहाल कर दिया। वह मारता भी नहीं था छोड़ता भी नहीं था। यह जंग "ज़रब लगाओ और भागो" के उसूल पर लड़ी जा रही थी। दुश्मन की फौज बिखरती जा रही थी और उसके सिपाही बिखर–बिखर कर हथियार डालते जा रहे थे। यही सुल्तान अय्यूबी का मकसद था।

19 रमज़ानुल मुबारक 570 हि० अप्रैल 1175 ई० की सुबह सेहरी से फ़ारिग़ होते ही सुल्तान अय्यूबी ने अपने प्लान की आख़िरी कड़ी पर अमल किया जिसकी हिदायात वह एक रोज़ पहले जारी कर चुका था। उसने खुला हम्ला कर दिया। कोई क़ाबिले ज़िक्र मज़ाहमत न हुई। सुल्तान अय्यूबी वहां तक जा पहुंचा जहां गुमश्तगीन और सैफ़ुद्दीन की ख़ेमागाहें थीं मगर वह दोनों ग़ायब थे। वह ऐसी बुज़दिली से भागे कि अपनी ज़ाती ख़ेमागाह जिस से जंगल में मंगल बना हुआ था जूं का तूं छोड़ गये। हरम की लड़कियां, नाचने गाने वालियां और उनके साज़िन्दे वहीं थे। सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज गयी तो लड़कियां ख़ौफ़ से इधर उधर भागने लगीं। उन्हें पकड़कर सुल्तान अय्यूबी के सामने लाया गया। उसने उन तमाम को रिहा करके दमिश्क भेजने का इन्तज़ाम कर दिया। दिलचस्प ख़ेमा गाह वालिये मुसिल सैफ़ुद्दीन की थी। वहां लड़कियों के अलावा ख़ुश्नुमा पिंजरे भी थे जिनमें रंग बिरंगे परन्दे बन्द थे।

उस रात सुल्तान अय्यूबी के सामने एक और लड़की लायी गयी जो दुश्मन के उस कैम्प में लाशों को पहचानती फिर रही थी जिस पर सुल्तान अय्यूबी के छापामारों ने शबख़ून मारा और आतिशगीर मादे के मटके तबाह किए थे। सुल्तान अय्यूबी ने उसे पहचान लिया और कहा– "तुम मेरे एक जासूस अन्तानून के साथ हरान से आई थीं।"

"जी हां!" उसने कहा– "मेरा नाम फ़ातमा है। मैं लड़कियों की फ़ौज के साथ दमिश्क से आई हूं।" वह जख़्मी भी थी कहने लगी– "मुझे मालूम हो गया था कि अन्तानून यहां शबख़ून मारने आया था। उसकी लाश ढूंढ रही हूं।"

"न ढूंढो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा।

"वह भी कहता था कि छापामारों की लाशें मिला नहीं करती।" फ़ातमा ने उदास लहजे में कहा– "उसने मुझे कहा था कि आओ एक दूसरे को फ़र्ज़ पर कुर्बान कर दें। मुझे ख़ुशी है कि उसने गुनाह का कफ़्फ़ारा अदा कर दिया है। मेरा फ़र्ज़ अभी बाकी है। मैं गुमश्तगीन को

क़त्ल करने आई थी।"

इस लड़की की जज़्बाती हालत देखकर कोई भी अपने आंसू न रोक सका। सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "दमिश्क़ से जो लड़कियां आई हैं उन सब को वापस भेज दो। उन्होंने दुश्मन को शिकस्त देने में मेरी बहुत मदद की है। इस वक़्त मैं ही जानता हूं कि मुझे मदद की कितनी ज़रूरत थी। यह लड़कियां जैसे ग़ैब से आई थीं, लेकिन मैं उन्हें अपने साथ नहीं रख सकता।"

❖

लड़कियों के एहतिजाज और ग़ुस्से के बावजूद उन्हें दमिश्क़ भेज दिया गया। सुल्तान अय्यूबी अब कहीं रुकना नहीं चाहता था। उसने दुश्मन को जो शिकस्ते फ़ाश दी थी उससे वह पूरा फ़ायदा उठाना चाहता था। उसने हुक्म दे दिया कि तमाम फ़ौज को हलब की सिम्त कूच के लिए तैय्यार किया जाए। अपने सालारों को वह अगले प्लान के मुतअल्लिक़ बता रहा था। एक घोड़ सवार घोड़ा दौड़ाता आ रहा था। उसके हाथ में बरछी थी और बरछी में कोई चीज़ उड़सी हुई थी। वह क़रीब आया तो सुल्तान अय्यूबी के बॉडीगार्ड ने उसे रोक लिया। सुल्तान अय्यूबी ने देखा कि सवार ने किसी इन्सान का सर बरछी में उड़सा हुआ था। सुल्तान अय्यूबी ने उसे आगे आने की इजाज़त दे दी।

वह आज़र बिन अब्बास था। वही जासूस जो दमिश्क़ जाते हुए मुहाफ़िज़ों की हिरासत से भाग गया था। उसने घोड़े से उतर कर बरछी से सर उतारा और सुल्तान अय्यूबी के क़दमों में फ़ेंक कर कहा– "मैं आपका मफ़रूर क़ैदी हूं। मैंने कहा था कि मुझे बख़्श दें, मैं गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा करूंगा। आप ने मेरी अर्ज़ न मानी। मैंने रास्ते में सोंचा कि मुझे जासूस, बाप ने बनाया और मेरे दिल में दौलत का लालच पैदा किया है। मैं सिर्फ़ इस काम के लिए भागा था। मैं हलब गया। अपने बाप को क़त्ल किया और उसका सर काट कर ले आया हूं। अगर इस से मेरी गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा नहीं हुआ तो मुझे फिर क़ैद में कर लें और इसी तरह मेरा सर काट कर फ़ेंक दें।"

सुल्तान अय्यूबी ने उसे हसन बिन अब्दुल्लाह के हवाले कर दिया और कहा– "इसे अगर क़ाबिले एतमाद समझा जा सकता है तो उसके मुतअल्लिक़ कोई फ़ैसला किया जायेगा। इसने मेरे एक सवाल का जवाब दे दिया है। मैं आज तक सोंचता रहा हूं कि दुश्मन का जासूस पूरी मालूमात ले गया था, फिर भी दुश्मन मेरे फंदे में आ गया। अब मालूम हुआ है कि यह ख़बरें देने नहीं बल्कि अपने बाप को क़त्ल करने गया था।"

उससे अगले दिन सुल्तान अय्यूबी ख़ेमें में सोया हुआ था। बाहर बहुत आदमियों की बातों से उसकी आंख खुल गयी। बाहर कोई झगड़ा हो रहा था। सुल्तान अय्यूबी ने दरबान को अन्दर बुलाकर पूछा कि बाहर क्या हो रहा है। दरबान ने बताया कि नौ आदमी आपके मुहाफ़िज़ दस्ते की वर्दियां पहने और आपका झंडा उठाये आये हैं। कहते हैं कि वह दमिश्क़ से आये हैं। यह रज़ाकाराना आप के मुहाफ़िज़ दस्ते में शामिल होना चाहते हैं। उन्हें रोका है तो कहते हैं कि वह इतनी दूर से अक़ीदत और जज़्बे से आये हैं। वह आप से मिलना चाहते हैं।

यह शेख़ सन्नान और गुश्तगीन के भेजे हुए फ़िदाई क़ातिल (हशीशीन) थे। उनकी चाल कामयाब हो गयी। सुल्तान अय्यूबी ने दरबान से कह दिया कि उन्हें अन्दर भेज दो। उनसे बछियां बाहर रखवा ली गयीं। वह ख़ेमें में गये और फ़ौरन ही उन्होंने खंजर और तलवारें निकाल लीं। सुल्तान अय्यूबी के दो मुहाफ़िज़ भी उनके साथ अन्दर आ गये थे। एक फ़िदाई ने सुल्तान अय्यूबी पर हम्ला किया। सुल्तान ने फुर्ती से हम्ला रोक लिया और अपनी तलवार उठा ली। पहले ही वार से उसने हम्लावर का पेट चाक कर दिया। ख़ेमें में जगह थोड़ी थी। दूसरे फ़िदाइयों ने भी सुल्तान अय्यूबी पर हम्ले किए। दोनों मुहाफ़िज़ों ने जमकर मुक़ाबला किया। बाहर से दूसरे मुहाफ़िज़ भी आ गये।

ख़ेमे के अन्दर तलवारें और खंजर टकराने लगे। बॉडीगार्डों ने क़ातिलों को अपने साथ उलझा लिया। वह ख़ेमें से बाहर आ गये। सुल्तान अय्यूबी की लम्बी तलवार ने किसी को क़रीब न आने दिया। फ़िदाइयों में से पांच छः मारे गये बाक़ी भागने लगे। उन्हे जिन्दा पकड़ लिया गया। ख़ेमें के अन्दर से एक फ़िदाई निकला। उसके कपड़े ख़ून से लाल हो गये थे। सुल्तान अय्यूबी की उधर पीठ थी। ज़ख़्मी फिदाई ने पीछे से सुल्तान अय्यूबी पर हम्ला किया। एक बॉडीगार्ड ने बरवक़्त देख लिया। वह चिल्लाया– "सुल्तान नीचे।" और हम्लावर की तरफ़ दौड़ा। सुल्तान अय्यूबी फ़ौरन बैठ गया। क़ातिल की तलवार हवा को काटती सुल्तान के ऊपर से गुज़र गयी। बॉडीगार्ड ने फ़िदाई के पहलू में बरछी उतार दी। वह तो पहले ही ज़ख़्मों से मर रहा था। वह गिरा और मर गया।

सुल्तान अय्यूबी इस हम्ले से बाल–बाल बच गया।

बाज़ यूरोपी मोअर्रिख़ीन ने लिखा है कि सुल्तान अय्यूबी पर क़ातिलाना हम्ला करने वाले उसके अपने बॉडीगार्ड थे जो एक अर्से से उसके साथ थे, लेकिन उस दौर के वक़ाअ निगारों के तहरीरों से शकूक रफ़ा हो जाते हैं। बहाउद्दीन शद्दाद ने और एक मिस्री वक़ाअ निगार मोहम्मद फ़रीद अबू हदीद ने लिखा है कि यह शेख़ सन्नान के भेजे हुए नौ फ़िदाई थे जो हलफ़ उठाकर आये थे कि सुल्तान अय्यूबी को क़त्ल करेंगे वरना ज़िन्दा नहीं लौटेंगे। वह सुल्तान अय्यूबी को तो क़त्ल न कर सके अलबत्ता उनमें से जिन्दा कोई न लौटा। जो जिन्दा रहे उन्हें सज़ाए मौत दे दी गयी।

क़ौम की नज़रों से दूर

किसी सिपाही की बहादुरी का तज़्करा हो रहा था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का एक सालार खाने के बाद की महफ़िल में किसी मार्के की बातें कर रहा था। एक सिपाही की बहादुरी का ज़िक्र आ गया। सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "लेकिन तारीख़ में नाम आयेगा तो वह आप का और मेरा होगा। तारीख़ लिखने वालों की यह बेइन्साफ़ी है कि वह बादशाहों, सुल्तानों और सालारों से नीचे किसी की तरफ़ आंख उठा कर भी नहीं देखते। फ़तह और शिकस्त अल्लाह के हाथ में है लेकिन फ़तह का सेहरा हमेशा सिपाहियों के सर होता है। हमारे छापामार जांबाज़ दुश्मन के पास जाकर उसके दोस्त बन जायें तो हम उनका क्या बिगाड़ सकते हैं। मार्कों में सिपाही लड़ने की बजाये अपनी जान की फ़िक्र ज़्यादा करें तो आप फ़तह किस तरह हासिल कर सकते हैं? हक़ यह है कि तारीख में हमारे उन सिपाहियों का ज़िक्र ज़रूर आये जो अकेले–अकेले दस दस का मुक़ाबला करते हैं और अपने परचम का सर निगों नहीं होने देते। यह सिपाही जब कभी हारेंगे तो मेरी और आप की नालायक़ी की वजह से हारेंगे या उन्हें वह ग़द्दार और ईमान फ़रोश शिकस्त देंगे जो हमारी सफ़ों में मौजूद हैं।"

"ख़ुदा ने हमे किस गुनाह की सज़ा दी है कि हम में ग़द्दार पैदा कर दिए हैं।" महफ़िल में किसी ने झुंझला कर कहा– "मैं आलिम नहीं कि इस सवाल का जवाब दे सकूं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "शायद ख़ुदाए ज़ुलजलाल ने ग़द्दारों के सूरत में हम पर यह ख़तरा मुस्तक़िल तौर पर सवार कर दिया है कि हम हर लम्हा चौकस और चौकन्ने रहें और एक के बाद दूसरी फ़तह हासिल करते–करते मग़रूर न हो जाएं.....ख़ुदा की बातें ख़ुदा ही जाने मैं डरता हूं कि ईमान फ़रोशी किसी दौर में इस्लाम के वक़ार को ले डूबेगी। आप सलीबियों के उस अज़्म से बेख़र तो नहीं कि उनकी जंग आप के नहीं इस्लाम के ख़िलाफ़ है। वह कहते हैं कि जब तक सलीब जिन्दा है चांद सितारे के परचम के ख़िलाफ़ बरसरे पैकार रहेगी। वह अपनी आने वाली नस्लों के लिए यही अज़्म विरसे के तौर पर छोड़ जायेंगे। मैं चाहता हूं कि हम अपने उन सिपाहियों के कारनामें क़लमबन्द कर लें जो शुमाली मिस्र के सेहराओं में भी लड़े और हमात की बर्फ़ पोश वादियों में भी। उन छापामारों के भी तज़करे क़लमबन्द कर लें जो दुश्मन की सफ़ों की अक़ब मे चले जाते और इतनी तबाही मचाते हैं जो पूरी फ़ौज भी नहीं मचा सकती। उनमें से कितने ज़िन्दा वापस आते हैं?......दस में से एक। वह भी ज़ख़्मी।"

"हां सुल्ताने मोहतरम!" यह एक क़ीमत वरसा है जो आने वाली नस्लों के लिए छोड़ेंगे। क़ौमें शुजाअत की रिवायात से जिन्दा रहती हैं।"

"तुम शायद नहीं जानते कि हमारे बाज़ सिपाही मुल्क से दूर, क़ौम की नज़रों से दूर ऐसी

जंग लड़ते हैं जिनका उन्हें हमारी तरफ़ से हुक्म ही नहीं मिलता।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "उन लोगों पर अपने मज़हब के वकार का जुनून सवार होता है। उनकी अपनी कोई ज़िन्दगी नहीं होती कोई ज़ात नहीं होती। वह दुश्मन के कब्ज़े में होते हैं तो भी सरकश और आज़ाद रहते हैं। कौम को जब फतह हासिल होती है तो कौम उनसे नावाकिफ रहती है जो पर्दों के पीछे अजीब व ग़रीब तरीकों से जंग लड़ते और कौम का नाम रौशन करते हैं।"

उस दौर की ग़ैर मत्बूआ तहरीरों में ऐसे ही चन्द एक सिपाहियों का ज़िक्र मिलता है जिन का ज़िक्र सुल्तान अय्यूबी कर रहा था। एक का नाम उमरू दूरवेश था। वह सूडानी मुसलमान था। इस सिलसिले की कहानियों का जो आप को सुनाई जा चुकी हैं आपने पढ़ा होगा कि सुल्तान अय्यूबी के भाई तकीउद्दीन ने सूडान पर फौजकशी की थी मगर दुश्मन के धोखे में आकर सूडान के सेहरा में इतनी दूर निकल गया जहां तक रस्द का सिलसिला कायम रखना मुम्किन नहीं था। दुश्मन ने रस्द के रास्ते रोक लिए और तकीउद्दीन की फौज को सेहरा में बिखेर कर जमीअत और मरकज़ीयत को ख़त्म कर दी थी। इस्लामी फौज को बहुत नुकसान उठाना पड़ा था। पेशकदमी की तो उम्मीद ही ख़त्म हो गयी थी। पस्पाई भी मुम्किन नहीं रही थी। जंगी कैदी बहुत हुए थे। जिनमें तकीउद्दीन के दो तीन नायब सालार और कमानदार भी थे।

उन कैदियों में मिस्रियों और बग़दादियों की तादाद ज़्यादाथी। इनमें कुछ सूडानी मुसलमान थे। सुल्तान अय्यूबी ने अपनी जंगी सूझ बूझ और ग़ैरमामूली फहम व फिरास्त से काम लेते हुए तकीउद्दीन की बिखरी हुई फौज को सूडान से निकाला था। उसके बाद उसने सूडानियों के पास इस पैग़ाम के साथ एल्ची भेजे थे कि जंगी कैदियों को रिहा कर दिया जाए। सूडानियों ने इन्कार कर दिया था क्योंकि उनका कोई कैदी सुल्तान अय्यूबी की फौज के पास नहीं था। सूडानियों ने जंगी कैदियों के एवज़ मिस्र के कुछ इलाके का मुतालबा किया था। सुल्तान अय्यूबी ने जवाब दिया था– "तुम मुझे, मेरी बीवी और मेरे बच्चों को सूली पर खड़ा कर दो, मैं तुम्हें सल्तनते इस्लामिया की एक इन्च जगह नहीं दूंगा। मेरे सिपाही ग़ैरत वाले हैं। अपनी कौम के वकार के लिए जाने कुर्बान करना जानते हैं।"

इसके बाद सूडानी हुकूमत ने मिस्र पर हब्शियों से हम्ला कराया था जिन में से कोई एक भी वापस नहीं जा सका। जो जिन्दा रहे वह कैद में डाल दिए गये थे। तवक़्क़ो थी कि सूडानी उनकी रिहाई का मुतालबा करेंगे लेकिन उन्होंने कोई एल्ची न भेजा। वह उन हब्शियों को धोखे में मिस्र लाये थे। यह उनकी बकायदा फौज नहीं थी। सुल्तान अय्यूबी ने उन हब्शी कैदियों को मज़दूर फौज बना ली थी। मिस्र में उनसे खुदाई, बार बरदारी और उस किस्म के दूसरे काम लिए जाते थे।

सूडान वाले सुल्तान अय्यूबी की फौज के जंगी कैदियों को दरअसल इस वजह से नहीं छोड़ रहे थे कि उन्हें वह सूडानी फौज में शामिल होने की तरग़ीब दे रहे थे। सूडानियों के पास सलीबी मुशीर थे....वही सूडानियों को सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ इस्तेमाल कर रहे थे। यह मंसूबा उन्हीं का था कि मिस्री फौज के कैदियों को बहला फुसला कर सूडानी फौज में

शामिल कर लिया जाए। तारीख़ और उस दौर की तहरीरें यह बताने से क़ासिर हैं कि उन्होंने कितने मुसलमान सिपाहियों को अपनी फ़ौज में शामिल कर लिया था। अलबत्ता यह शहादत मिल गयी थी कि सूडानियों का प्यार और मोहब्बत का और अच्छे सलूक का हर्बा जिस पर भी नाकाम साबित हुआ उसे उन्होंने बेरहमी से अज़ीयतें देकर और तड़पा कर मारा।

उन क़ैदियों में इस्हाक़ नाम का एक ओहदेदार था जो सुल्तान अय्यूबी की फौज के किसी दस्ते का कमाण्डर था। वह सूडान का रहने वाला था और नौजवानी में मिस्री फौज में शामिल हुआ था। सूडान के एक पहाड़ी इलाक़े में वहां के मुसलमान आबाद थे जिनकी तादाद चार पांच हज़ार के दर्मियान थी। उनके मुख़्तलिफ़ क़बीले थे लेकिन इस्लाम ने उनमें इत्तेहाद पैदा कर रखा था। तमाम क़बीलों के सरदारों ने एक कमेटी बना रखी थी। तमाम क़बीले उसके एहकाम और फ़ैसलों की पाबन्दी करते थे। उन लोगों ने रिवायत बना रखी थी कि मिस्री फ़ौज में भर्ती हो जाते थे। सूडानी फ़ौज में शमुलियत से गुरेज़ करते थे। वह जंगजू भी थे और ख़ूंख़्वार भी। तीर अन्दाज़ी के माहिर थे। सूडानी फ़ौज और हुकूमत ने उन्हें बहुत लालच दिए थे। उन्हें जंग के ज़रिए ख़त्म करने की धमकी भी दी थी लेकिन उन मुसलमान क़बाइल को पहाड़ियों का फ़ायदा हासिल था। दो बार उन पर सूडानी फौज ने हम्ला किया लेकिन मुसलमान तीर अन्दाज़ों ने चट्टानों की चोटियों से वह तीर बरसाये कि सूडानियों के घोड़े तीर खाकर अपने प्यादा दस्तों सिपाहियों को कुचलते भाग गये।

तक़ीउद्दीन की जंगी लग़्जिश से सूडान वालों के हाथों जहां मिस्र की बहुत सी फ़ौज क़ैद हो गयी थी वहां एक कमानदार इस्हाक़ भी था। अपने क़बीलों पर उसका बहुत असर व रसूख़ था। जंगी क़ैद में सूडानियों ने उसे कहा कि अगर वह अपने मुसलमान क़बीलों को सूडान की फ़ौज में शामिल होने पर राज़ी कर ले तो उसे न सिर्फ़ रिहा कर दिया जायेगा बल्कि जिस पहाड़ी इलाक़े में मुसलमान आबाद हैं, उस तमाम इलाक़े की अलग रियासत बनाकर उसे उसका अमीर या सुल्तान बना दिया जायेगा।

"मैं उस रियासत का पहले ही सुल्तान हूं।" इस्हाक़ ने जवाब दिया– "यह हमारी आज़ाद रियासत है।"

"वह सूडान का इलाक़ा है।" उसे कहा गया– "हम किसी भी रोज़ वहां के लोगों को क़ैद कर लेंगे या तबाह कर देंगे।"

"तुम पहले उस इलाक़े पर क़ब्ज़ा करो।" इस्हाक़ ने कहा– "वहां के मुसलमानों को ताहे तेग़ करो। तुम उन्हें अपनी फ़ौज में शामिल नहीं कर सकोगे। उस इलाक़े में अपना झंडा ले जाकर दिखादो, फिर मैं उन्हें तुम्हारी फौज में शामिल होने पर राज़ी कर लूंगा।"

इस्हाक़ को क़ैदख़ाने में रखने की बजाय एक ख़ुशनुमा कमरे में रखा गया जो किसी शहज़ादे का महल मालूम होता था। एक सूडानी सालार ने उस कमरे में दाख़िल करके अपनी तलवार दोनों हाथों में लेकर और दो ज़ानू होकर उसे पेश की और कहा– "हम आप जैसे जंगजू की दिल से क़दर करते हैं। आप हमारे क़ैदी नहीं मेहमान हैं।"

"मैं आप की तलवार क़ुबूल नहीं करूंगा।" इस्हाक़ ने कहा– "मैं मेहमान नहीं क़ैदी हूं।

मैंने शिकस्त खाई है। मैं आप से तलवार उसी तरह लूंगा जिस तरह आप ने मुझ से ली है। तलवार, तलवार के ज़ोर से ली जाती है।"

"मगर हम आप के दुश्मन नहीं।" सूडानी सालार ने कहा।

"मैं आपका दुश्मन हूं।" इस्हाक़ ने कहा– "तलवारों का तबादला इतने खुबसूरत कमरे में नहीं मैदाने जंग में हुआ करता है। मैं आप का शुक्रिया अदा करता हूं कि आप ने मेरी इतनी इज़्ज़त की।"

"हम इससे ज़्यादा इज़्ज़त करेंगे।" सालार ने कहा– "आप की मैंस्नद ख़रतूम के तख़्त के साथ रखी जायेगी।"

"और रोज़े महशर में मेरी मस्नद दोज़ख़ के तहख़ाने में रखी जायेगी।" इस्हाक़ ने कहा– "क्योंकि मैंने दुनिया में मस्नद तख़्त के साथ रखी थी।"

"मैं दुनिया की बात कर रहा हूं।"

"मगर मुसलमान आख़िरत की बात किया करता है। जब हम सब अपने आमालनामे ख़ुदा के हुज़ूर पेश करेंगे।" इस्हाक़ ने कहा– "मुझे यह बता दें कि आप के बाद कौन आयेगा और क्या तोहफ़ा लायेगा।"

सूडानी सालार ने मुस्कुरा कर कहा– "अब कोई भी आये मुझे क्या। मैं सिपाही हूं। आप भी सिपाही हैं। मैंने आप का सिपाहाना शान की ख़िराजे अक़ीदत पेश किया था। आप ने मेरा दिल तोड़ दिया।"

"आपने मेरा सिपाहाना शान देखी ही कहां है?" इस्हाक़ ने कहा– "मुझे तो लड़ने का मौक़ा मिला ही नहीं। मेरा दस्ता सेहरा के एक ऐसे हिस्से में जा फंसा जहां पानी की बूंद नज़र नहीं आती थी। तीन चार दिनों में सेहरा ने मेरे प्यादों, सवारों और घोड़ों को हड्डियों में बदल दिया। सिपाही और सवार ज़ुबानें बाहर निकाले पानी ढूंढने लगे। आप के एक दस्ते ने हम्ला कर दिया और हम पकड़े गये। हमें सेहरा ने शिकस्त दी है। आप ने मेरी तलवार कहां देखी हैं कि मुझे ख़िराजे अक़ीदत पेश कर रहे हैं।"

"मुझे बताया गया है कि आप बहादुर हैं।" सालार ने कहा।

"सुनी सुनाई पर यक़ीन न करें।" इस्हाक़ ने कहा– "कल सुबह एक तलवार मुझे दें, एक आप लें और मेरे मुक़ाबिले में आयें। मुझे उम्मीद है कि मैं आपकी तलवार क़ुबूल कर लूंगा मगर उस वक़्त तक आप जिन्दा नहीं रहेंगे।"

सालार कुछ और कहने लगा था कि इस्हाक़ ने कहा– "ग़ौर से सुन लो मोहतरम सालार! मुझे तुम लोग कल जो क़ैदखाने में डाल दोगे, अभी डाल दो। मैं इतनी ख़ुबसूरत क़ैद से मख़्मूर होकर अपना ईमान नहीं बेचूंगा।"

"क़ैदखाने की ग़लाज़त की बजाये आप इस दिलनशीं माहौल में बेहतर तरीक़े से सोच सकेंगे।" सालार ने कहा– "मैं उम्मीद रखूंगा कि आप के सामने जो शर्त पेश की गयी है, उस पर आप ग़ौर करेंगे। मुझे एक सिपाही भाई समझ कर यह मश्वार क़ुबूल कर लें कि अपना मुस्तक़बिल तारीक न करें। ख़ुदा ने आप की क़िस्मत में बादशाही लिख दी है। उस पर

लकीरें न फेरें।"

"मेरे ख़ुदा ने मेरी क़िस्मत में जो कुछ लिखा है वह मैं अच्छी तरह जानता हूं।" इस्हाक़ ने कहा– "और तुम्हारे ख़ुदा ने जो कुछ लिखा है मैं उसे भी जानता हूं......तुम जाओ। मुझे सोंचने दो।"

सालार चला गया तो खाना आ गया। खाना लाने वाली तीन लड़कियां थीं। जवान और बहुत ही खुबसूरत। वह नीम उरियां भी थीं। खाने की इक़साम ऐसी जो उस ने कभी ख़्वाब में भी नहीं देखी थी। खाने के साथ ख़ुश्नूमा सुराहियों में शराब भी थी। इस्हाक़ ने ज़रूरत के मुताबिक़ खाया और पानी पी लिया। दस्तरख़्वान समेट लिया गया और एक लड़की उसके पास आ गयी। इस्हाक़ उसे देखता रहा और उसकी हंसी निकल गयी जिसमें तंज़ थी।

"क्या आप ने मुझे पसन्द नहीं किया?" लड़की ने पूछा।

"मैंने तुम जैसी बदसूरत लड़की पहली बार देखा है।" इस्हाक़ ने कहा।

लड़की के चेहरे का रंग बदल गया। वह तो बहुत ही ख़ुबसूरत थी। इस्हाक़ ने उस की हैरत भांपते हुए कहा– "हुस्न हया में होता है। औरत उरियां हो जाये तो उसकी कशिश ख़त्म हो जाती है। उरियानी ने तुम्हारा तिलिस्म तोड़ दिया है। मैं अब तुम्हारे क़ब्ज़े में नहीं आ सकूंगा।"

"क्या आप ने मुझे देखकर भी मेरी ज़रूरत महसूस नहीं की?" लड़की ने पूछा।

"मेरे जिस्म को तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं।" इस्हाक़ ने कहा– "मेरी रूह की एक ज़रूरत है जो तुम पूरी नहीं कर सकोगी। तुम जाओ।"

"लेकिन मेरे लिए हुक्म है कि आप के पास रहूं।" लड़की ने कहा– "अगर मैंने हुक्म के ख़िलाफ़ कोई काम किया तो मुझे सज़ा के तौर पर वहशी हब्शियों के हवाले कर दिया जायेगा।"

"देखो लड़की!" इस्हाक़ ने कहा– "मै मुसलमान हूं।" मेरा अक़ीदा कुछ और है। मैं तुम्हें इस कमरे में नहीं रख सकता। अगर तुम इस कमरे में रात बसर करने का हुक्म लेकर आई हो तो यहीं रहो और मैं बाहर सो जाऊंगा।"

"यह भी मेरा जुर्म होगा।" लड़की ने कहा– "आप मुझे इस कमरे में रहने दें। मुझ पर रहम करें।" लड़की ने देख लिया था कि यह शख़्स पत्थर है। उसने इस्हाक़ की मिन्नत समाजत शुरू कर दी।

"तुम्हारा नाम क्या है?" इस्हाक़ ने पूछा– "किस मक़सद के लिए तुम्हें मेरे पास भेजा गया है? मुझे अपना मक़सद बता दो तो इस कमरे में रहने दूंगा।"

"मेरा काम यह है कि मैं आप जेसे मर्दों को मोम कर दू।" लड़की ने जवाब दिया–"आप पहले मर्द हैं जिसने मुझे ठुकराया है। मैं ने मज़हब के शैदाइयों को अपना गरविदा बनाया और उन्हें सूडान के सांचे में ढाला है।" लड़की ने पूछा– "क्या वाक़ई आप ने मुझे बदसूरत समझा है या मज़ाक़ किया था?"

"तुम जिसे ख़ुश्बू कहती हो वह मेरे लिए बदबू है।" इस्हाक़ ने कहा– "मेरी नज़र में तुम

वाकई बदसूरत हो......जहां सोना चाहती हो सो जाओ। पलंग पर सो जाओ, मैं फ़र्श पर सो जाऊंगा।"

लड़की फ़र्श पर लेट गयी।

"तुम्हारा नाम क्या है?" इस्हाक़ ने पूछा।

"आशी।"

"और तुम्हारा मज़हब?"

"मेरा कोई मज़हब नहीं।"

"तुम्हारे मां बाप कहां रहते हैं?"

"मालूम नहीं।" लड़की ने कहा।

इस्हाक़ पर नींद का ग़ल्बा होने लगा और ज़रा सी देर में उसके ख़र्राटे सुनाई देने लगे।

❖

उस शख़्स के साथ आप वक़्त ज़ाया कर रहे हैं।" उस लड़की ने कहा जिसने रात इस्हाक़ को अपना नाम आशी बताया था। उसके सामने सूडानी फ़ौज के आला अफ़सर बैठे हुए थे। आशी ने कहा– "उस शख़्स के अन्दर जज़्बात नाम की कोई चीज़ नहीं। आप जानते हैं कि मैंने कैसे–कैसे पत्थर मोम किए हैं मगर उस जैसा कोई नहीं देखा।"

"मालूम होता है कि तुमने कोई कोताही की है।" एक अफ़सर ने कहा।

लड़की ने पूरी तफ़सील सुनाई कि उसने इस्हाक़ को कैसे–कैसे तरीक़ों से अपने जाल में फांसने की कोशिश की मगर वह हंस पड़ता था या उसे ख़ामोशी से देखता रहता था। ज़रा देर बाद सो जाता था।

चार पांच दिन सूडानी हुकाम इस्हाक़ को अपनी बात पर लाने की कोशिश करते रहे। रातों को उस पर बड़े–बड़े हसीन तिलिस्म तारी करने के जतन किए गए मगर इस्हाक़ ने बात यहीं पर ख़त्म की कि मैं मिस्र की फ़ौज के एक दस्ते का कमानदार हूं, मुसलमान हूं और क़ैदी हूं।

आख़िर उसे महल से निकाल कर क़ैदखाने में ले गये और एक तंग सी कोठरी में बन्द कर दिया। सलाख़ों वाले दरवाज़े पर क़ुफ़्ल चढ़ा दिया गया। कोठरी में ऐसी बदबू थी कि दिमाग़ फटा जा रहा था। रात का वक़्त था। एक सिपाही दीया ले आया जो उस ने सलाख़ों में से इस्हाक़ को दे दिया। इस्हाक़ ने दीया फ़र्श पर रखा तो उसे कोठरी में एक लाश पड़ी नज़र आई जो ख़राब हो रही थी। लाश का मुंह खुला हुआ था और आंखें भी खुली हुई थीं। लाश सूज गयी थी। इस्हाक़ ने क़ैदखाने के सिपाही को आवाज़ देकर बुलाया और पूछा कि यह किसकी लाश है।

तुम्हारा ही कोई दोस्त होगा।" सिपाही ने जवाब दिया–"कोई मिस्री था। जंग में पकड़ा गया था। उसे बहुत अज़ीयतें दी गयी थीं। पांच छः दिन हुए कोठरी में मर गया।"

"लाश यहां क्यों पड़ी है?" इस्हाक़ ने पूछा।

"तुम्हारे लिए।" सिपाही ने तन्ज़िया कहा– "उसे उठा लिया तो तुम अकेले रह जाओगे।"

सिपाही हंसता हुआ चला गया।

इस्हाक ने दीया ऊपर करके लाश को देखना शुरू कर दिया। कपड़ों से उस ने पहचान लिया कि मिस्री फौज का आदमी था। इस्हाक ने कोठरी में जो बदबू महसूस की थी। वह ग़ायब हो गयी। उस ने सूजी हुई लाश के चेहरे पर हाथ फेरा और कहा—"तुम्हारा जिस्म गल जायेगा, रूह ताज़ा रहेगी। तुमने ख़ुदा की राह में जान दी है। तुम मुझ से बरतर हो। तुम जिन्दा हो, ज़िन्दा रहोगे। सिपाही ठीक कह गया है। तुम न होते तो मैं अकेला रह जाता।"

वह बहुत देर उसके साथ बातें करता रहा और लाश के पास लेट गया। उसकी आंख लग गयी। सुबह उसे जगाया गया। उसने देखा कि वही सूडानी सालार खड़ा था जिसने उसे तलवार पेश की थी। सालार ने कहा— "किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो हाज़िर करूं।

"मैंने तुम्हारे लहजे को पहचान लिया है।" इस्हाक ने कहा— "मैं हारा हुआ हूं। तुम मुझे ताना दे सकते हो। अगर तुम वाकई मेरी कोई ज़रूरत पूरी करना चाहते हो तो मैदाने जंग से तुम्हें मिस्र के परचम भी मिले होंगे। एक परचम ला दो। मैं इस लाश पर डालना चाहता हूं।"

सालार ने कहकहा लगाकर कहा— "क्या तुम्हारे परचम को हमने सीने से लगाकर रखा होगा? हमने मिस्र के किसी झंडे को हाथ लगाना भी गवारा नहीं किया।" उसने सिपाही से कहा— "इसे बाहर निकालो और नीचे ले चलो। लाश यहीं रहने दो।"

इस्हाक को कैदखाने से तहख़ाने में ले गये। वहां ऐसी बदबू थी जैसे बेशुमार लाशें पड़ी हों। सूडानी सालार आगे—आगे थे। एक जगह छः सात मिस्री उल्टे लटके हुए थे और उन के बाज़ूओं के साथ वज़न बंधा हुआ था। आगे एक आदमी को बहुत बड़ी सलीब के साथ इस तरह लटकाया हुआ था कि उसकी हथेलियों में एक—एक कील गढ़ा हुआ था। ख़ून टपक रहा था। एक जगह एक चौड़ा और बहुत बड़ा पहिया था। उस पर एक आदमी पीठ के बल इस तरह बंधा था कि टख़्नों से ज़ंजीरें बंधी थीं जो फ़र्श में ठोंकी हुई थीं। बाज़ू उपर करके पहिए के साथ बंधे हुए थे। एक आदमी पहिए को ज़रा सा चलाता तो उस आदमी के बाज़ू और टांगे ऊपर नीचे को खींच जाती थीं। वह दर्द से चीख़ता था।

इस्हाक को तहखाने में घूमा फिरा कर दिखाया गया कि यहां कैसी—कैसी अज़ीयतें दी जा रही हैं। जगह—जगह ख़ून था। बाज़ कैदी कै करते थे और चन्द एक बेहोश पड़े थे। अज़ीयत का हर एक तरीक़ा दिखा कर सूडानी सालार ने इस्हाक से पूछा— "आप को जो तरीक़ा पसन्द हो वह बता दें। हम आप को वहां ले चलते हैं। अगर आप उस के बग़ैर ही हमारी बात मान जायें तो आपका ही भला होगा।"

"जहां जी चाहे ले चलो, कौम से ग़द्दारी नहीं करूंगा।" इस्हाक ने कहा।

"मैं एक बार फिर बता देता हूं कि हम तुम से क्या करवाना चाहते हैं।" सालार ने कहा—"तुम्हें कहा गया था कि तमाम मुसलमान कबीलों को सूडानी फौज में ले आओ। उस के एवज़ तुम्हें रिहा भी किया जायेगा और मुसलमान कबीलों के इलाके का अमीर बना दिया जायेगा। अब तुम अपना यह हक खो बैठे हो। अब हमारी शर्त यही है कि अगर तुम्हें यह इनाम दिया जायेगा कि कोई अज़ीयत नहीं दी जायेगी और तुम्हें सूडानी फौज में अच्छा ओहदा

दिया जायेगा।"

"ओहदे की बजाये मुझे किसी भी अज़ीयत में डाल दो।" इस्हाक़ ने कहा।

उसे इस तरह उल्टा लटका दिया गया कि टख़्नों से ज़ंज़ीरें डाल कर छत से बांध दिया गया। सालार ने सिपाहियों से कहा– "शाम तक इसे यहीं रहने दो। शाम के वक़्त उसे लाश वाले कोठरी में फेंक देना। मुझे उम्मीद है कि उसका दिमाग़ साफ़ हो जायेगा।"

❖

शाम तक वह बेहोश हो चुका था। होश में आया तो लाश के पास पड़ा पाया। एक कोने में थोड़ा सा पानी और कुछ खाना रखा था। उसने पानी पिया और खाना खाया। उसने लाश से कहा– "मैं तुम्हारी रूह के साथ धोखा नहीं करूंगा। मैं जल्दी तुम्हारे पास आ रहा हूं।" बाते करते–करते उसकी आंख लग गयी।

आधी रात के वक़्त उसे फिर जगा लिया गया और पहिये के साथ बांध दिया गया। सूडानी सालार मौजूद था। उसने कहा– "हज़ारों मुसलमान हमारे साथ हैं। तुम शायद पागल हो गये हो। तुम इस्लाम के लिएं कुर्बानी दे रहे हो लेकिन सलाहुद्दीन अय्यूबी अपनी बादशाही को आधी दुनिया पर फैलाने के लिए तुम जैसे पागलों को मरवा रहा है। वह बदबख़्त शराब भी पीता है और उसने परियों जैसी लड़कियों से हरम भर रखा है और तुम हो कि उसके नाम पर मरते हो।"

"सालारे मोहतरम!" इस्हाक़ ने कहा– "मैं तुम्हें अपने मज़हब के अमीर और सुल्तान के ख़िलाफ़ झूठ बोलने से रोक नहीं सकता, और तुम मुझे अपने अक़ीदे पर जान कुर्बान करने से रोक नहीं सकते। मेरी कौम के किसी भी क़बीले का कोई एक भी मुसलमान तुम्हारी फ़ौज में शामिल नहीं होगा। मुसलमान, मुसलमान के ख़िलाफ़ तलवार नहीं उठायेगा।"

"तुम शायद नहीं जानते कि अरब में मुसलमान मुसलमान का ख़ून बहा रहा है।" सूडानी सालार ने कहा– "सलीबी फ़िलिस्तीन में बैठे तमाशा देख रहे हैं। तमाम अमीरों और मुसलमान हुक्मरानों ने सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी है।"

"उन्होंने कर दी होगी।" इस्हाक़ ने कहा– "मैं नहीं करूंगा। जिन्होंने बग़ावत की है वह इस दुनिया में भी सज़ा भुगतेंगे, अगले जहान में भी.....तुम अपना वक़्त ज़ाया न करो। मेरे साथ जो सलूक करना चाहो करो और किसी दूसरे सूडानी मुसलमान को पकड़ो। शायद वह तुम्हारा काम कर दे।"

"हमें बताया गया है कि तुम सिर्फ़ इशारा कर दो तो तमाम मुसलमान हमारे साथ होंगे।" सलार ने कहा– "हम तुम से यह काम मुफ्त नहीं कराना चाहते। तुम्हारी किस्मत बदल देंगे।"

"मैं आख़िरी बार कहता हूं कि मैं अपनी कौम को बेचूंगा नहीं।" इस्हाक़ ने कहा।

वह पहिये के साथ बंधा हुआ था। नीचे टख़्ने फ़र्श के साथ, ऊपर कलाइयां पहिये के साथ। तीन चार हब्शी उस लम्बे खम्बे के साथ खड़े थे जिसे धकेलने से पहिया हरकत में आता था। सूडानी सालार ने इशारा किया तो हब्शियों ने खम्बे को एक क़दम धकेला। रहट की तरह पहिया चला। इस्हाक़ का जिस्म ऊपर और नीचे को खिंचने लगा। उसके बाज़ू कंधों

से और टांगे कुल्हों से अलग होने लगीं। उसके जिस्म से पसीना इस तरह फूटा जैसे किसी ने उस पर पानी उंड़ेल दिया हो।

"अब सोंचो और जवाब दो।" उसके कानों में सूडानी सालार की आवाज़ पड़ी।

"ईमान नहीं बेचूंगा।" इस्हाक़ ने कराहती आवाज़ में जवाब दिया।

पहिया और आगे चलाया गया। उसकी खाल फटने लगी।

"अब अच्छी तरह सोंच सकोगे।"

"मेरी लाश भी यही जवाब देगी। अपना ईमान नहीं बेचूंगा।" इस्हाक़ ने यह अल्फ़ाज़ बड़ी मुश्किल से मुंह से निकाले।

"इसे कुछ देर यहीं रहने दो।" सालार ने हुक्म दिया। "मान जायेगा।"

इस्हाक़ ने कुर्आन की आयात का विर्द शुरू कर दिया। सालार चला गया। इस्हाक़ के जिस्म के जोड़ खुल रहे थे। खाल जैसे उतरी जा रही थी। उसका मुंह आसमान की तरफ़ था। उसने तसव्वुर में ख़ुदा को अपने सामने देखा और कहा– "ख़ुदावन्दे दोआलम! मैं। गुनहगार हूं तो मुझे और ज़्यादा सज़ा दो। मैं आप की राह में सच्चा हूं तो मुझे सकून अता करो। मैं आप के हुज़ूर शर्मसार नहीं होना चाहता।" उसने आंखे बन्द करके आयात का विर्द शुरू कर दिया।

"तुम चीख़ते क्यों नहीं?" उसके पास कैदख़ाने का जो सिपाही खड़ा था उसने कहा– "ज़ोर–ज़ोर से चीख़ो। उससे तकलीफ़ ज़रा कम हो जाती है।"

"मैं तकलीफ़ में नहीं हूं।" इस्हाक़ ने कहा– "पहिया और आगे कर दो।"

क़ैदख़ाने के सिपाही दरिन्दे थे। उस सिपाही ने हब्शियों से कहा कि पहिया ज़रा और चलाएं। हब्शियों ने धक्का लगाया तो पहिया और आगे चला गया। इस्हाक़ के जिस्म से कड़ाक–कड़ाक की आवाज़े निकलीं। एक और सिपाही दौड़ता आया।

उसने अपने साथी से कहा– "तुम्हें किसने कहा है पहिया चलाओ। यह मर जायेगा। इसे अभी जिन्दा रखना है।" पहिया ज़रा नीचे कर दिया गया।

"यह कहता है मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हो रही।" सिपाही ने अपने साथी से कहा।

"तुम होश में हो?" सिपाही ने इस्हाक़ से पूछा– "तुम क्या बोल रहे हो?"

"बेहोशी में बोल रहा है।" दूसरे ने कहा– "तुमने चक्कर जहां तक पहुंचा दिया था वहां इन्सान मर जाता है। यह होश में नही हो सकता।"

"मैं होश में हूं दोस्तों!" इस्हाक़ की धीमी आवाज़ सुनाई दी– "मैं अपने ख़ुदा के साथ बातें कर रहा हूं।"

दोनों सिपाहियों ने एक दूसरे को हैरत से देखा। एक ने कहा– "यह इतना ताक़तवर तो नही लगता। इस हालत में तो भैंसों जैसे वहशी हब्शी बेहोश हो जाते हैं। यह कोई आलिम होगा। इसके पास ख़ुदा की ताक़त है।"

"हां। तुम ठीक कहते हो।" इस्हाक़ ने कहा– "मेरे पास ख़ुदा की ताक़त है। मैं ख़ुदा का कलाम पढ़ रहा हूं। पहिये को पूरा चक्कर देकर देखो। मेरा जिस्म दो हिस्सों में कट जायेगा।

दोनों हिस्सों से यही आवाज़ आयेगी जो तुम सुन रहे हो।"

वह गंगवार सिपाही थे। तौहुम परस्ती उनका मज़हब था। वह मुसलमान नहीं थे। पीर' फ़कीरों और मज्ज़ूबों को ख़ुदा समझते थे। बुतों की भी इबादत करते थे। उस पहियो को (जिसे चक्कर शिकन्जा कहते थे) वह अच्छी तरह जानते थे। उसके साथ बंधा हुआ इन्सान पहिये की ज़रा सी हरकत पर चीख़ उठता था और हर बात मान लेता था। ज़रा मज़ीद हरकत से बेहोश होता और कुछ देर बाद मर जाता था लेकिन इस्हाक़ पहिये के आख़िरी निशान तक ज़िन्दा ही न रहा, होश में रहा। सिपाही जान गये कि यह आदमी आम क़िस्म का इन्सान नहीं।

तुम आसमान का हाल जानते हो?" एक सिपाही ने पूछा।

"मेरा ख़ुदा जानता है।" इस्हाक़ ने कहा।

"तुम्हारा ख़ुदा कहां है?"

"मेरे दिल में।" इस्हाक़ ने जवाब दिया— "वह मुझे कोई तकलीफ़ नहीं होने देता।"

"हम ग़रीब लोग हैं।" एक सिपाही ने कहा— "यहां तुम जैसे इन्सानों की हड्डियां तोड़कर बाल बच्चों को रोटी खिलाते हैं तुम हमारी क़िस्मत बदल सकते हो?"

"बाहर जाकर।" इस्हाक़ ने कहा— "मैं जो कुछ पढ़ रहा हूं वह तुम्हें बता दूंगा। तुम्हारी क़िस्मत बदल जायेगी।"

"हम पहिया नीचे कर देते हैं।" एक सिपाही ने कहा— "सालार को आता देखेंगे तो ऊपर कर देंगे।"

"नहीं।" इस्हाक़ ने कहा— "मैं तुम्हें यह बदयानती नहीं करने दूंगा। यही मेरी ताकत है। इसे हम ईमान कहते हैं।"

"हम तुम्हारी मदद करेंगे।" एक सिपाही ने कहा— "जब कहोगे जो कहोगे हम करेंगे। अगर हो सके तो तुम्हें क़ैदख़ाने से निकाल देंगे।"

❖

सालार आ गया

"क्यों भाई?" उसने इस्हाक़ से पूछा— "होश में हो?"

"मेरे अल्लाह ने मुझे बेहोश नहीं होने दिया।" इस्हाक़ ने जवाब दिया।

सालार के इशारे पर पहिया और चलाया गया। इस्हाक़ ने साफ़ तौर पर महसूस किया कि उसका जिस्मस दो हिस्सों मे कट गया है और उसका आख़िरी वक़्त आ गया है। उसने कराहती हुई आवाज़ में कलाम पाक का विर्द और ज़्यादा बुलन्द आवाज़ से शुरू कर दिया। पहिया और आगे चला गया। उसके जिस्म से ऐसी आवाज़ें आईं जैसे जोड़ टूट रहे हों।

"ख़ुश न हो कि हम तुम्हें जान से मार देंगे।" सूडानी सालार ने कहा— "तुम ज़िन्दा रहोगे और तुम्हारे साथ हर रोज़ यही सलूक होगा। हम तुम्हारी जान लेकर तुम्हें अज़ीयत से आज़ाद नहीं करना चाहते।"

इस्हाक़ ने कोई जवाब न दिया। उसने विर्द जारी रखा।

सालार के इशारे पर पहिया ज़रा नीचे कर दिया गया। सालार के साथ फ़ौज का एक और

अफ़सर था। सालार उसे अलग ले गया और कहा– "बहुत सख़्त जान मालूम होता है। इतनी देर में यह बेहोश भी नहीं हुआ। हम ने ज़्यादती की तो मर जायेगा। उसे अभी ज़िन्दा रखना है। मैंने एक और तरीक़ा सोचा है। मालूम हुआ है कि उसकी एक बेटी की उम्र चौदह पन्द्रह साल है और उसकी बीवी भी है। उन दोनों को यह धोखा देकर यहां बुलाया जाये कि यह शख़्स क़ैदख़ाने में है और मर रहा है। तुम्हें इजाज़त दी जाती है कि उसे देख जाओ, और अगर यह मर गया तो उसकी लाश ले जाओ।"

"हां।" दूसरे अफ़सर ने कहा– "धोखे से ही बुलान पड़ेगा वरना वहां के मुसलमान हमारे किसी आदमी को अपने इलाके में दाख़िल नहीं होने देंगे।"

"उन दोनें को बुलाकर उसके सामने नंगा करके खड़ा कर देंगे।" सालार ने कहा– "फिर उसे कहेंगे कि हमारी शर्त मान लो वरना तुम्हारी कमसिन बेटी और बीवी को तुम्हारे सामने बेआबरू किया जायेगा।"

दोनों सिपाही जो सालार के ग़ैरहाज़िरी में इस्हाक़ के साथ बातें कर रहे थे करीब खड़े सुन रहे थे। सालार ने उन्हीं में से एक को भेज कर फ़ौज के कमाण्डर को बुलाया। उसे इस्हाक़ के गांव का रास्ता बता कर पैग़ाम दिया और यह भी बड़ी अच्छी तरह समझा दिया कि मकसद क्या है। उसे कहा गया कि वह मुसलमानों के साथ बहुत ही एहतराम से बात करे और सलाहुद्दीन अय्यूबी की तारीफ़ें भी करे वरना मुसलमान उसे ज़िन्दा नहीं निकलने देंगे।

कमाण्डर उसी वक़्त रवाना हो गया। इस्हाक़ को चक्कर शिकन्जे से उतार कर उसी कोठरी में फ़ेंक दिया गया जिस में किसी मिस्री सिपाही की लाश गल सड़ रही थी। इस्हाक़ से उठा नहीं जा रहा था। सारे जिस्म से दर्द की बेरहम टीस उठ रही थीं मगर उसने ध्यान ख़ुदा की तरफ़ लगा रखा था। इतने शदीद दर्द के बावजूद वह अपने आप में सकून महसूस कर रहा था। उसकी रूह मे कोई दर्द नहीं था। जिस्मानी दर्द के एहसास से वह बेनेयाज़ हो चुका था लेकिन उसे मालूम न था कि उसे ऐसी ज़िल्लत में डालने का इहतिमाम हो रहा जो उस की रूह को लहुलुहान कर देगा। उस की कमसिन बेटी और जवान बीवी को क़ैदख़ाने में लाने के लिए एक आदमी चला गया था।

वहां से उसका गांव जो पहाड़ी इलाके में था घोड़े पर पूरे दिन का मसाफ़त जितना दूर था। सुबह अभी–अभी तुलूअ हुई। सूडानी सालार अपने साथी अफ़सर के साथ चला गया। क़ैदख़ाने में दोनों सिपाहियों की ड्यूटी ख़त्म होने वाली थी।

दिन भर के लिए दूसरे सिपाही आ रहे थे। इन दोनों सिपाहियों ने आपस में बात की और एक फ़ैसला कर लिया। वह इस्हाक़ को बर्गुज़ीदा इन्सान समझ रहे थे जिस का तअल्लुक़ बराहे रास्त किसी ग़ैबी क़ुव्वत के साथ था। यह उनकी बर्दाश्त से बाहर था कि उस बर्गुज़ीदा शख़्स की बेटी और बीवी क़ो क़ैदख़ाने में बुलाकर ज़लील किया जाए। एक सिपाही ने इस ख़तरे का भी इज़हार किया कि इस शख़्स की बेटी और बीवी की तौहीन की गयी तो सब पर कहर नाज़िल होगा। इन दोनों को यह लालच भी था कि बाहर जाकर इस्हाक़ उन की किस्मत बदल देगा।

एक सिपाही ने कहा कि वह इस्हाक़ की बेटी और बीवी को यहां तक नहीं आने देगा।

❖

शाम हो चुकी थी जब पैग़ाम ले जाने वाला सूडानी कमाण्डर मुसलमानों के पहाड़ी इलाक़े में दाख़िल हुआ। पहले गांव में जाकर उसने पूछा कि इस्हाक़ नाम के एक सूडानी मुसलमान का गांव कहां है जो मिस्र की फ़ौज में ओहदेदार है। इस्हाक़ का तमाम इलाक़े पर असर व रसूख़ था। उसे हर कोई जानता था। कमाण्डर ने बताया कि वह ज़ख़्मी हालत में जंगी क़ैदी हुआ था। दूसरे क़ैदियों की तरह उसे भी क़ैदखानें में डाल दिया गया था। उसकी हालत बिगड़ रही है। उसने ख़्वाहिश ज़ाहिर की है कि उसे उसकी बेटी और उसकी बीवी से मिलाया जाए। मैं उन दोनों को लेने आया हूं।

एक आदमी उनके साथ हो गया। वादियों से गुज़रते, कुछ वक़्त बाद दोनों इस्हाक़ के गांव में दाख़िल हुए। फिर उसके घर जा पहुंचे। उसके बूढ़े बाप से मुलाक़ात हुई। सूडानी कमाण्डर ने झुक कर मुसाफ़हा किया और निहायत अच्छे अन्दाज़ से कहा– "आप का बेटा इतना बहादुर है कि हमारे सालार भी उसे सलाम करते हैं। वह बहादुरी से लड़ा मगर रेगिस्तान ने उसे प्यासा रख कर बे हाल कर दिया। वह जख़्मी हालत में पकड़ा गया। उसका इलाज इस तरह किया जा रहा है जिस तरह सूडानी सालारों और हुक्मरानों का किया जाता है। इनते अच्छे इलाज के बावजूद वह सेहतयाब नहीं हुआ। उसे बचाने की पूरी कोशिश की जा रही है। उसने ख़्वाहिश ज़ाहिर की है कि अपनी बेटी को और अपनी बीवी को आख़िरी बार देखना चाहता हूं।"

"अगर तुम लोग उसकी इतनी ज़्यादा इज़्ज़त करते हो तो उसे मेरे हवाले क्यों नहीं कर देते?" इस्हाक़ के बाप ने कहा– "हो सकता है हमारे जर्राह और तबीब उसे ठीक कर लें।"

"फ़रमानरवाये सूडान ने कहा है कि वह हमारा मेहमान है।" कमाण्डर ने कहा– "मेहमान को बीमारी की हालत में रूख़्सत करन मेज़बानी की बेइज़्ज़ती है। सेहतयाब होते ही उसे बाइज़्ज़त तरीक़े से रूख़्सत कर दिया जायेगा।"

"क्या यह नहीं हो सकता है उसकी बेटी और बीवी उसके पास रहें और उसकी तीमारदारी करें?" बूढ़े बाप ने पूछा।

"अगर यह दोनों वहां रहना चाहें तो उन्हें इज़्ज़त से रखा जायेगा।" कमाण्डर ने कहा– "हमारे हां बहादुरों की इज़्ज़त की जाती है। हमारे मज़हब अलग हैं लेकिन हम और आप सूडानी हैं। हम ज़मीन का एहतराम करते हैं। अगर इस्हाक़ सलाहुद्दीन अय्यूबी का सिपाही है तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। हम भाई हैं। सलाहुद्दीन अय्यूबी को हम बहुत बड़ा जंगजू मानते हैं। उसने सलीबियों को घुटनों बैठा दिया है।"

"फ़िर तुम उसे दुश्मन क्यों समझते हो?" बूढ़े बाप ने पूछा– "तुम सलीबियों को दोस्त क्यों मानते हो?"

"मोहतरम बुज़ुर्ग!" कमाण्डर ने कहा– "अगर मैं बातें करने बैठ गया तो यह मेरे फ़र्ज़ में कोताही होगी। मुझे आप की बच्ची और आप की बहू को लेकर सुबह से पहले आप के बेटे तक

पहुंचाना है। आप के बेटे की ख़्वाहिश की तकमील हमारा फ़र्ज़ है.....क्या आप की बेटी और बहू मेरे साथ अभी चलने को तैय्यार हैं?"

"पर्दे के पीछे से एक निस्वानी आवाज़ आई-- "हम तैय्यार हैं।"

"कोई साथ नहीं जा सकता?" बूढ़े ने पूछा-- "मैं भी तो अपने बेटे को देखना चाहता हूं।"

"सफ़र लम्बा है।" कमाण्डर ने कहा-- "आप इतनी लम्बी घोड़सवारी बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे। मुझे जो हुक्म मिला है वह बेटी और बीवी को लाने को कहा है।"

क़ैदखाने का सिपाही ड्यूटी से फ़ारिग़ होकर घर गया। बहुत जल्दी में उसने कपड़े बदले। सर को इस तरह ढांपा कि चेहरा छिप गया। उसने घोड़े के लिए चारा और पानी घोड़े के साथ बांधा और किसी को बताये बेग़ैर कि कहां जा रहा है रवाना हो गया। उसने वह रास्ता मालूम कर लिया था जो इस्हाक़ के गांव को जाता था। सालार जब पैग़ाम ले जाने वाले कमाण्डर को रास्ता बता रहा था यह सिपाही पास खड़ा सुन रहा था। उसके दिल में अक़ीदत थी। आबादी से निकल कर उसने घोड़े को ऐड़ लगा दी। कमाण्डर उस से बहुत पहले निकल गया था इसलिए यह मुम्किन नहीं था कि वह उससे पहले इस्हाक़ के घर पहुंच जाता। सूरज बहुत ऊपर आ चुका था।

❖

इस्हाक़ के बाप के पास दो घोड़े थे। उसने दोनों तैय्यार किये। इस्हाक़ की बेटी और बीवी जल्दी में तैय्यार होकर सवार हो गयीं। गांव के कुछ और लोग भी वहां आ गये थे। सब सूडानी कमाण्डर की बातों में आ गये और उन्होंने इस्हाक़ की बेटी और बीवी को कमाण्डर के साथ रुख़्सत कर दिया। रात का सफ़र था। रास्ते में कहीं रूकना नहीं था। दोनों मस्स्तूरात के दिलों में इस्हाक़ के मुतअल्लिक़ जो जज़्बात थे उनसे उनकी नींद उड़ गयी। उनके लिए घोड़े की सवारी कोई नयी या मुश्किल बात नहीं थी। यहां के मुसलमान अपने बच्चों को घोड़सवारी और तीर अन्दाज़ी बचपन में ही सिखा दिया करते थे।

तीनों घोड़े पहाड़ी इलाके से निकल गये। कमाण्डर ख़ुश था कि उसने कामयाबी से दोनों मस्तुरात को जाल में फांस लिया था। इस्हाक़ उस कोठरी में बैठा था जिस में गली सड़ी लाश पड़ी थी। यह लाश उसे परेशान करने के लिए वहां रखी गयी थी लेकिन इस्हाक़ ने अपने आप को जिस्मानी एहसासात से बेगाना कर लिया था। वह लाश के साथ इस तरह बातें करता था जैसे वह जिन्दा हो। उसे बदबू का ज़र्रा भर एहसास नहीं था। वह अब जिस्म नहीं रूह बन गया था। सारा दिन उसे कोठरी से बाहर न निकाला गया। शाम के बाद भी उसे किसी ने न छेड़ा। वह हैरान भी हुआ कि उसे क्यों आराम दिया जा रहा है। शायद सूडानी सालार उससे मायूस हो गया था?

कमाण्डर दोनों मस्तूरात के साथ पहाड़ी इलाके से निकल कर सेहरा में जा रहा था। वह इन दोनों को इस्हाक़ की बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुना रहा था दोनों पूरी दिलचस्पी से सुन रही थीं। सूडानी सालार अपने साथी से कह रहा था-- "अपनी बेटी और बीवी की बेइज़्ज़ती कौन बर्दाश्त कर सकता है। मुझे उम्मीद है कि कमाण्डर उन दोनों को लेआयेगा। मैं इस्हाक़

से कहूंगा कि जब तक तुम मुसलमान कबीलों को सूडानी फौज में शामिल करके सूडान का वफ़ादार नहीं बना देते तुम्हारी बेटी और बीवी को आज़ाद नहीं किया जायेगा।"

"सुबह तक हमारे कमाण्डर को आ जाना चाहिए।" सालार के साथी ने कहा।

"हो सकता है ज़रा पहले ही आ जाये।" सालार ने कहा– "आदमी होशियार है।"

कैदखाने का जो सिपाही कमाण्डर के पीछे रवाना हुआ था रेतीले टीलों के इलाके में से गुज़र रहा था। उसने आधे से ज़्यादा रास्ता तय कर लिया था। उस रात चांद नहीं था। सेहरा की फ़िज़ा रात को शफ़्फ़ाफ़ हो जाती है। सितारों की रौशनी भी मुसाफिरों को रास्ता दिखाती है। सिपाही को रात की खामोशी में किसी की बातें सुनाई दीं। बोलने वाला उसी की तरफ़ आ रहा था। टीले गूंज पैदा कर रहे थे। सिपाही एक टीले की ओट में रूक गया। बातें बुलन्द होती गयीं, और घोड़ों के पांव की आहटें भी सुनाई देने लगीं। थोड़ी सी देर बाद सिपाही ने टीले की ओट से तीन घोड़े गुज़रते देखे। उसने तलवार निकाल ली। उस वक़्त भी कमाण्डर इस्हाक़ की बातें कर रहा था। सिपाही को यकीन हो गया कि यह कमाण्डर है और उस के साथ इस्हाक़ की बेटी और बीवी है।

उसने घोड़ा बाहर निकाला और उन के पीछे गया। उसके घोड़े के क़दमों की आवाज़ ने कमाण्डर को चौंका दिया। वह तलवार सूंत कर पीछे को मुड़ा लेकिन सिपाही घोड़े को ऐड़ लगा चुका था। उसने दौड़ते घोड़े से कमाण्डर पर ऐसा वार किया कि उसका एक बाज़ू साफ़ काट दिया। घोड़ा रोककर कर वह पीछे मुड़ा। कमाण्डर लड़ने की हालत में नहीं था। उसने रहम के लिए पुकारा लेकिन सिपाही ने उसकी गर्दन पर वार करके उसे घोड़े से लुढ़का दिया।

दोनों मस्तूरात सुन्न हो गयीं। इस्हाक़ की बीवी ने अपने बेटी से कहा– "भागो। डाकू मालूम होते हैं।" उन्होंने घोड़े मोड़े। सिपाही ने अपना घोड़ा उनके रास्ते में कर लिया और कहा– "यहां कोई डाकू नहीं है। मुझ से न डरो। मैंने तुम्हें एक डाकू से बचाया है। मेरे साथ अपने गांव चलो मैं तुम्हें अपने साथ नहीं ले जा रहा, तुम्हारे साथ चल रहा हूं। मैं अकेला हूं।"

वह दोनों हैरान व परेशान थीं कि यह मामिला क्या है। सिपाही ने कमाण्डर के घोड़े की लगाम अपने घोड़े की ज़ीन के साथ बांधी और घोड़े को भी साथ ले चला। रास्ते में उसने दोनों को बताया कि इस्हाक़ कैदखाने में बन्द है। उसे कहा जा रहा है कि वह मुसलमान कबीलों को सूडानी फ़ौज में शामिल कर दे। इस्हाक़ नहीं मान रहा। सिपाही ने उन दोनों को यह न बताया कि इस्हाक़ के साथ क्या सलूक हो रहा है। उसने कहा कि तुम दोनों को उसके सामने उरियां हालत में खड़ा करके और तुम दोनों की बेइज़्ज़ती की धमकी देकर इस्हाक़ को अपनी बात पर लाने के लिए बुलाया गया है। यह आदमी जिसे मैंने क़त्ल किया है तुम दोनों को इसी नीयत से ले जाने आया था। मैं उस के पीछे चल पड़ा। मैंने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया है।"

"तुम कौन होम?" इस्हाक़ की बीवी ने पूछा– "मुसलामन हो?"

"मैं कैदखाने का सिपाही हूं।" उसने जवाब दिया– "मैं मुसलमान नहीं।"

"फिर तुम्हें हमारे साथ कैसे हमदर्दी पैदा हो गयी?"

"मैंने सुना था कि मुसलमानो के पैग़म्बर होते हैं।" सिपाही ने कहा– "तुम्हारा ख़ाविन्द पैग़म्बर मालूम होता है।"

इस्हाक़ की बीवी ने उससे पूछा कि वह उसके ख़ाविन्द को क्यों पैग़म्बर समझता है। सिपाही ने असल बात न बताई और कहा– "अब तो मैं उसे सच्चा पैग़म्बर समझता हूं। वह क़ैदख़ाने में क़ैद है। मुसलमान है। मैं मुसलमान नहीं हूं। उसे मालूम ही नहीं कि उसकी बेटी और बीवी को बेइज़्ज़ती करने का इन्तज़ाम कर दिया है। मेरे दिल में ख़्याल आ गया कि मैं तुम दोनों की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करूंगा। मैंने ऐसा काम किया जो मेरी हिम्मत से बाहर था। यह उसी की ग़ैबी कुव्वत है। मैं उसे पैग़म्बर समझता हूं।"

❖

सेहर के वक़्त इस्हाक़ के घर के सामने चार घोड़े रूके। दरवाज़े पर दस्तक हुई। इस्हाक़ का बाप इस्हाक़ की बीवी और बेटी के साथ एक और आदमी को देखकर बहुत हैरान हुआ। अन्दर जाकर सिपाही ने उसे तमाम हालात और वाक़िआत सुनाये लेकिन उसे भी न बताया कि इस्हाक़ के साथ क़ैदख़ाने में क्या सलूक हो रहा है।

इस्हाक़ के बाप ने उसी वक़्त अपने क़बीले के लोगों को इत्तलाअ देदी। लोग जमा हो गये। सिपाही ने उन्हें बताया कि इस्हाक़ को इस शर्त पर रिहाई देने का वादा किया जा रहा है कि वह तमाम मुसलमानों को सूडान की फ़ौज में शामिल कर दे और तमाम मुसलमान सूडान के वफ़ादार हो जाएं। सिपाहियों ने बताया कि इस्हाक़ कहता है कि मुझे जान से मार दो मैं अपनी क़ौम के साथ ग़द्दारी नहीं करूंगा।

तमाम लोग भड़क उठे। सूडान को भला बुरा कहने लगे। किसी ने कहा– "यहां सलाहुद्दीन अय्यूबी आयेगा। यह ख़ुदा की ज़मीन है।"

"हम क़ैदख़ाने पर हम्ला करके इस्हाक़ को रिहा करायेंगे।" एक आदमी ने कहा।

"तुम्हारे लिए यह काम आसान नहीं।" सिपाही ने कहा– "तहख़ाने में से तुम किसी को नहीं निकाल सकते।"

"तुम क़ैदख़ाने के सिपाही हो।" इस्हाक़ के बाप ने कहा– "तुम हमारी मदद कर सकते हो।"

"मैं ग़रीब और अदना सिपाही हूं।" उसने कहा– "मैं आप के बेटे को पैग़म्बर समझता हूं। मैंने उसे कहा था कि मेरी किस्मत बदल दो। उसने कहा था कि बाहर आकर बदल दूंगा। ज्यों–ज्यों वक़्त गुज़रता जा रहा है मैं उसका मुरीद होता जा रहा हूं। यह सब लोग उस पर जाने कुर्बान करने पर तैय्यार हैं। क्या मेरी जिन्दगी भी ऐसी हो सकती है जैसी तुम्हारी है?"

"मुसलमान हो जाओ और यहीं रहो।" इस्हाक़ के बाप ने कहा– "हम लोग जन्नत में रहते हैं। यहां पानी के चश्मे हैं और हरे भरे दरख़्त हैं। यहां की ज़मीन इतनी अनाज देती है कि जो काश्तकारी नहीं करता वह भी भूखा नहीं रहता। यह हमारे अल्लाह की शान है। तुम हमारे पास आ जाओ और अपनी किस्मत बदल लो। हम लोग आज़ाद हैं। यह पहाड़ियां

हमारा किला है जो हमारे अल्लाह ने हमारे लिए बनाया है।"

सिपाही ने वहीं रहने का फ़ैसला कर लिया। इस्हाक़ के बाप ने उसे हल्का बगोश इस्लाम करके अपने पास रख लिया।

सुबह तुलूअ हो चुकी थी। सूडानी सालार बेताबी से कमाण्डर का इन्तज़ार कर रहा था मगर उस का कहीं नाम व निशान न था। सूरज ऊपर उठता गया और सालार बेचैन होता गया। वह समझा कि कमाण्डर रास्ता भूल गया होगा। उसने एक और ओहदेदार को बुलाया और उसे वही बातें बताकर जो उसने पहले कमाण्डर को बताई थीं रवाना कर दिया।

इस्हाक़ कोठरी में बन्द रहा। यह दिन भी कोठरी में गुज़र गया। उसकी कोठरी में पड़ी लाश फ़टने लगी थी। क़ैदखाने के संतरी जो इन्सानों के जिस्म तोड़ने और तहख़ाने की बदबू के आदी थे वह भी इस्हाक़ की कोठरी के क़रीब आने से गुरीज़ करने लगे। बड़ी ही बुरी बदबू थी। एक संतरी ने नाक पर हाथ रख कर इस्हाक़ से पूछा– "ओए मरदूद! तुम इस बदबू को किस तरह बर्दाश्त कर रहे हो? यह लोग जो कुछ तुम से मनवाना चाहते हैं मान जाओ और यहां से रिहाई लो। इस मुर्दार की बदबू से पागल हो जाओगे।"

"मुझे कोई बदबू महसूस नहीं हो रही।" इस्हाक़ ने कहा– "यह मुर्दार नहीं शहीद है। मैं रात को इसके साथ लग कर सोता हूं।"

"तुम पागल हो चुके हो।" संतरी ने कहा– "लाश की बदबू का यही असर होता है।"

इस्हाक़ के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गयी और उसने लाश के पास बैठकर कुर्आन की एक आयत का विर्द शुरू कर दिया।

❖

यह रात भी गुज़र गयी। सुबह के धुंधलके में जिस दूसरे कमाण्डर को सालार ने भेजा था वापस आ गया। एक तो मुसलसल इतने तवील सफ़र से उसका रंग उड़ा हुआ था। उसके अलावा वह जो कुछ देख आया था उसे बयान करने से उसकी ज़ुबान हकला रही थी। उसने सालार को बताया कि रास्ते में कुछ इलाक़ा रेतीले टीलों और घाटियों का है। एक जगह गिद्ध मुर्दार खा रहे थे। उसने एक जगह तलवार पड़ी देखी। जूते और कपड़े भी देखे। उसने गिद्धों को उड़ाया तो पता चला कि वह किसी इन्सान को खा रहे थे। चेहरा भी ख़राब हो चुका था। उसे जो चीज़ें मसलन ख़ंजर, चमड़े का कमरबन्द मिलीं वह उठाकर ले गया। उसे यक़ीन हो गया कि यह सूडानी कमाण्डर की लाश थी।

उसने आगे जाकर ज़मीन देखी। घोड़ों के पांव के निशान थे। यह कमाण्डर पहाड़ी इलाक़े तक गया। घोड़ों के निशान वहां तक गये थे। कुछ कहा नहीं जा सकता था कि कमाण्डर मस्तूरात को साथ लाया था या नहीं और उसे किसने क़त्ल किया है। सूडानी सालार ने कहा कि मालूम हो जायेगा। मुसलमानों के उस इलाक़े में सूडानियों ने जासूस छोड़ रखे थे जो उन्हीं मुसलमानों में से थे। इन जासूसों का वहां और कोई बस नहीं चलता था। सिर्फ़ मुख़्बिरी करते थे। इस्हाक़ के मुतअल्लिक़ उन्हीं लोगों ने बताया था कि उस इलाक़े पर उसी का असर व रसूख़ है।

हुआ भी ऐसी ही। शाम के बाद दो जासूस पहुंच गये। उन्होंने सालार को पूरी ख़बर सुनाई कि कमाण्डर, इस्हाक़ की बीवी और बेटी को ले गया था और कैदखाने के एक सिपाही ने उसे रास्ते में ही क़त्ल कर दिया और मस्तूरात को वापस ले गया है। उन्होंने सिपाही का नाम भी बताया। सालार ने यह मसला सूडान के हुक्मरान के आगे रखा। उसने सलीबी मुशीरों को बताया। इन सलीबियों ने मश्वरा दिया कि ख़मोश हो जाओ। मुसलमानों पर फ़ौज कशी की हिमाकत न कर बैठना। उन्हें किसी अच्छे तरीक़े से दोस्त बनाने की कोशिश करो। ज़्यादा से ज़्यादा यह कार्रवाई करो कि उस सिपाही को ख़ुफ़िया तरीक़े से क़त्ल करा दो ताकि मुसलमानों को पता चल जाए कि हमारे हाथ हर जगह पहुंच सकते हैं। अगर इस्हाक़ तुम्हारी शर्त तस्लीम नहीं करता तो किसी और सूडानी मुसलमान कैदी को क़ायल करो। इस्हाक़ पर तशद्दुद जारी रखो।

इस्हाक़ को एक बार फिर तशद्दुद के शिकन्जे में जकड़ लिया गया। अब तो सालार उससे अपने कमाण्डर के क़त्ल का इन्तक़ाम भी लेना चाहता था। उसे इतनी दरिन्दीगी का तख़्ता मश्क बना दिया गया जितना इन्सानी तसव्वुर से बाहर था। रात के वक़्त वह बेहोश हो गया और उसे कोठरी में फेंक दिया गया। होश में आया तो कोठरी में अंधेरा था। बाहर एक मशाल जल रही थी। इस्हाक़ ने हाथ एक तरफ़ किया तो हाथ किसी के जिस्म पर लगा। उसे याद आ गया कि वही लाश है जो पहले दिन से उसके साथ पड़ी थी मगर उसे ऐसे लगा जैसे लाश सांस ले रही हो। यह उसके दिमाग़ की ख़राबी हो सकती थी। उसके जिस्म की हालत यह हो गयी थी कि उठने की क़ाबिल नहीं रहा था।

लाश ने हरकत की। इस्हाक़ ने चौंक कर देखा। चेहरे पर नज़र डाली। यह लाश नहीं थी। कोई जिन्दा इन्सान था और यह कोठरी कोई और थी। दूसरा आदमी भी शायद बेहोश था। वह आहिस्ता--आहिस्ता होश में आया और उसने आंखे खोल दीं। इस्हाक़ बड़ी मुश्किल से उठा और पूछा-- "तुम कौन हो?"

"उमरू दूरवेश।" उस आदमी ने मरी हुई आवाज़ में कहा।

"ओह!........,उमरू दूरवेश?" इस्हाक़ ने हैरान होकर कहा-- "मैं इस्हाक़ हूं।"

वह एक दूसरे को अच्छी तरह जानते थे। उमरू दूरवेश भी सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज के एक दस्ते का कमाण्डर था। वह भी उन्हीं मुसलमान क़बीलों में से था जो सूडानी होते हुए सूडान की फ़ौज में भर्ती नहीं होते थे। उमरू दूरवेश भी जंगी कैदी हो गया था। इस्हाक़ का नाम सुनकर उठ बैठा।

"तुम्हें क्या कहते हैं?" इस्हाक़ ने पूछा।

"कहते हैं कि आलिम के रूप में अपने इलाक़े में जाऊं।" उमरू दूरवेश ने जवाब दिया-- "और लोगों के दिलो में सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ दुश्मनी पैदा करूं। कहते हैं कि हम तुम्हें तरीक़े बतायेंगे और तुम्हें शहज़ादों की तरह रखेंगे और जिस लड़की को पसन्द करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगी।" उमरू दूरवेश ने पूछा-- "तुमसे क्या मनवाना चाहते हैं?"

"कहते हैं कि अपने तमाम क़बीलों को सूडान का वफ़ादार बना दूं।" इस्हाक़ ने जवाब

दिया– "उसके एवज़ मुझे मुसलमानों के इलाके का अमीर बनाने का वादा करते हैं। यह मुसलमानों की अलग फ़ौज बनाना चाहते हैं।"

"मुझे मालूम हो गया था कि तुम्हें बहुत तकलीफ़ें दे रहे हैं।" उमरू दूरवेश ने कहा– "मालूम नहीं हमें एक ही कोठरी में क्यों बन्द कर दिया है....शायद इसमें कोई बेहतरी होगी। मैं चाहता था कि तुम मुझे मिल जाओ। मैंने एक तरीका सोंचा है। इस पर अमल करने से पहले मैं तुम से इजाज़त लेना चाहता था। अच्छा हुआ तुम मिल गये।"

"क्या तरकी़ सोंचा है?"

"तुमने देख लिया है कि यह लोग हमें छोड़ेंगे नहीं।" उमरू दूरवेश ने कहा– "हम अज़ीयतें कब तक बर्दाश्त करेंगे। आज नहीं तो कल मर जायेंगे। यहां और कई मुसलमान कैद हैं। कोई न कोई उनके जाल में आ जाएगा। मैं डरता हूं कि हमारे चन्द साथियों को यह वरग़ला कर हमारी कौम में तफ़र्का डाल देंगे। एक सूरत यह है कि तुम इन की शर्त मान लो। इस बहाने आज़ाद हो जाओ और अपने इलाके में जाकर कुछ भी न करो। रात के अंधेरे में मिस्र को निकल जाओ। तुम्हें ज़िन्दा रहना चाहिए। दूससरी सूरत यह है कि मैं उनकी बात मान लूं। यह मुझे जो सबक पढ़ाना चाहते हैंवह पढ़ लूं। उनका बताया हुआ बहरूप धारलूं और अपने तमाम कबीलों को ख़बरदार कर दूं कि वह सूडानियों के किसी चक्कर में न आ जायें। अगर मैं इनका साथी बन गया तो मैं तुम्हें यहां से निकालने की कोशिश करूंगा।"

"यह भी हो सकता है कि सूडानी हमारे इलाके पर हम्ला कर दें।" इस्हाक़ ने कहा– "हमारे लोग इतनी जल्दी हथियार डालने वाले तो नहीं लेकिन फ़ौज की ताकत इतनी जल्दी ख़त्म नहीं होती। फ़ौज आख़िर फ़ौज है।"

"हमें कुर्बानी देनी पड़ेगी।" उमरू दूरवेश ने कहा– "हम मिस्र से छापामारों की मदद हासिल कर सकते हैं। फ़िलहाल ज़रूरत है कि हम दोनों में से एक आदमी बाहर निकल जाए। अगर हम दोनों इकठ्ठे उनकी शर्त मानकर निकल जाएं तो और ज़्यादा बेहतर है।"

"मैं यहीं रहूंगा।" इस्हाक़ ने कहा– "तुम उन्हें धोखा दो। अगर हमने इकठ्ठे उनकी बात मान ली तो उन्हें शक होगा। यह समझ जाएंगे कि हम ने रात एक कोठरी में रहकर कोई मंसूबा तैय्यार किया है। मै सख़्तियां बर्दाश्त करता रहूंगा। तुम निकल जाओ।"

❖

सुबह तुलूअ होते ही कोठरी का दरवाज़ा खुला। एक सिपाही ने इस्हाक़ को बरछी छुभोई और उसे उठा कर धक्के देता अपने साथ ले गया। कोठरी का दरवाज़ा फिर बन्द हो गया। थोड़ी देर बाद सूडानी फ़ौज का एक ओहदेदार आया। उसने सलाख़ों में से उमरू दूरवेश से पूछा– "अगर तुमने आज इन्कार किया तो तसव्वुर नहीं कर सकते कि तुम्हारे जिस्म का क्या हाल होगा। हम तुम्हें मरने नहीं देंगे। तुम इस दुनिया में दोज़ख देख लोगे। हर रोज़ मरोगे और हर रोज़ जियोगे।"

"मुझे किसी अच्छी जगह ले चलो।" उमरू दूरवेश ने कहा–"मेरे जिस्म को ज़रा सकून आने दो। यहां मैं कुछ भी नहीं सोंच सकता।"

"मैं तुम्हें जन्नत में बैठा सकता हूं।" सूडानी ओहदेदार ने कहा– "तुम्हें जन्नत की परियों में बैठा दूंगा और अगर वहां भी तुमने इन्कार किया तो जितने दिन ज़िन्दा रहोगे पछताते रहोगे। हमें रो रोकर कहोगे कि मैंने तुम्हारी शर्त मान ली है तो भी हम तुम पर एतबार नहीं करेंगे।"

वह कराह रहा था। उसकी आंख पूरी तरह खुलती नहीं थीं। उसने सरगोशी की– "ऐसा नहीं होगा। मुझे कहीं ले चलो और बताओ कि मुझे क्या करना है।"

उसे उसी वक़्त ले गये और वैसे ही खुश्नूमा कमरे में जा रखा जैसा इस्हाक़ को दिया गया था। थोड़ी देर बाद एक तबीब आ गया। उसने उसके जिस्म का मुआइना करके उसे दवाएं पिलायीं। उसे आला किस्म का खाना खिलाया गया। उस दौरान उसी सूडानी सालार ने जो इस्हाक़ का जिस्म तोड़ता रहता था उमरू दूरवेश से पूछा– "क्या तुमने हमारी बात मानने का फ़ैसला कर लिया है?"

उमरू दूरवेश ने सर हिलाकर रज़ामन्दी का इज़हार किया। खाना खाते ही वह लेटा और गहरी नींद सो गया। उस की जब आंख खुली तो रात भी गुज़र चुकी थी और अगला दिन आधा गुज़र गया था। वह बहुत दिनों से क़ैदखाने के तहखाने में अज़ीयतें बर्दाश्त कर रहा था। जिस्म बहुत हद तक सूख गया था। हड्डियां दुख रही थीं। इतने नर्म गुदाज़ बिस्तर पर इतनी लम्बी नींद से उसके जिस्म में सेहत के आसार नज़र आने लगे। उसे दवाइयां दी गयीं और उसे बादशाहों जैसा खाना खिलाया गया था। उसकी आंख खुली तो उसके सामने एक लड़की खड़ी मुस्कुरा रही थी। वह बहुत ही खुबसूरत लड़की थी। उसके बाल रेशमी थे और खुले हुए। उस के कंधे, बाज़ू और सीने का कुछ हिस्सा उरियां था। उमरू दूरवेश फ़ौजी था। जंगलों में पैदा हुआ और फ़ौज में उसकी उम्र मैदान जंग में गुज़री थी। उस लड़की को उसने ख़्वाब समझा लेकिन लड़की ने आगे होकर उसके सर पर हाथ फेरा तो उसे यक़ीन आया कि यह ख़्वाब नहीं।

लड़की बाहर चली गयी और तबीब को बुलाकर लाई। तबीब ने उसे देखा और दवा पिलाई। फ़ौरन बाद दो सलीबी आ गये।

वह सूडानी ज़ुबान रवानी से बोलते थे। तख़रीब कारी के माहिर मालूम होते थे। उन्होंने उमरू दूरवेश को इस मुहिम के लिए तैय्यार करना शुरू कर दिया वह अपने इलाके में जाकर यह नहीं बतायेगा कि वह क़ैदखाने में रहा है बल्कि यह बतायेगा कि मैदाने जंग में उसे एक बुज़ुर्ग मिले थे जिन्होंने उसे कहा था कि मिस्री फ़ौज का सूडान पर हम्ला मिस्र के लिए मंहगा साबित होगा। मुसलमानो के लिए बेहतर यह है कि सूडान का साथ दें वर्ना तबाह हो जायेंगे. सलीबियों ने उसे यह भी बताया कि वह मज्ज़ूब आलिम के भेस में मुसलमानों के दिलों में सलाहुद्दीन अय्यूबी और मिस्र की हुकूमत के ख़िलाफ़ नफ़रत पैदा करेगा।

उमरू दूरवेश ख़न्दा पेशानी से रज़ामन्द हो गया। उसी वक़्त उसकी ट्रेनिंग और रिहर्सल शुरू कर दी गयी। शाम के बाद उस के आगे लड़कियों ने खाना चुना। शराब भी रखी गयी जो उस ने कुबूल न की। खाने के बाद जब लड़कियां दस्तरख़्वान समेट कर ले गयीं तो एक और

लड़की शब ख़्वाबी के लिबास में आ गयी। उसका जिस्म नीम उरियां और चाल ढाल इश्तेआलअंगेज़ थी।

"तुम क्यों आई हो?" उमरू दूरवेश ने लड़की से पूछा।

"आपके लिए।" लड़की ने जवाब दिया– "मैं आप के पास रहूंगी।"

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"आशी!" लड़की ने जवाब दिया और उस पलंग पर बैठ गयी।

"आशी!" उमरू दूरवेश ने कहा– "मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं। तुम चली जाओ।"

"मैं हुक्म लेकर आई हूं कि मुझे आप के साथ रहना है।"

"मुझसे यह लोग जो बात मनवाना चाहते थे वह मैंने मान ली है।" उमरू दूरवेश ने कहा– "अब मुझे तुम जैसे हसीन फ़रेब की कोई ज़रूरत नहीं रही।"

"मैं जानती हूं।" आशी ने कहा– "आप के मुतल्लिक मुझे सब कुछ बता दिया गया है। मैं इनाम के तौर पर आई हूं। मुझे यह मालूम है कि आप को मेरी ज़रूरत है। सिपाही जब मैदान जंग से आते हैं तो उनकी रूह औरत की तलबगार होती है।"

"मैं हारा हुआ सिपाही हूं।" उमरू दूरवेश ने कहा– "मेरी रूह मर गयी है। मुझे अपने जिस्म से नफ़रत हो गयी है। मुझे इस की किसी भी ज़रूरत का एहसास नहीं रहा। कैदखाने में उबले हुए पत्ते खाता रहा तो भी मुत्मईन रहा। यहां इतने अच्छे खाने खाये तो भी मुत्मईन हूं लेकिन ख़ुश नहीं हूं। मैं शिकस्त ख़ुर्दा हूं।"

लड़की हंस पड़ी जैसे किसी ने जल तरंग छेड़ दिया हो।" शराब के दो चार घूंट आपको मुसर्रतों से मालामाल कर देंगे।" लड़की ने कहा– "हलक़ से उतर जाये तो मुझे देखना। मुझ में आपको फूलों का हुस्न नज़र आयेगा।"

"मेरी मजबूरी यह है कि मैं मुसलमान हूं।" उमरू दूरवेश ने कहा– "हम इस्मतों से खेला नहीं करते, इस्मतों की हिफ़ाज़त किया करते हैं।"

"सिर्फ़ मुसलमान लड़कियों की इस्मतों की हिफ़ाज़त करते होगे।" लड़की ने कहा– "मैं मुसलमान नहीं।"

"और तुम इस्मत वाली भी नहीं।" उमरू दूरवेश ने कहा– "फ़िर भी मेरा फ़र्ज़ है तुम्हारी इस्मत का ख़याल रखूं। लड़की मुसलमान हो या किसी और मज़हब से तअल्लुक रखती हो, अपनी कौम की हो या अपने दुश्मन की, मुसलमान अगर ईमान का पक्का है तो उसकी इस्मत की हिफ़ाज़त करेगा। तुम तमाम रात मेरे पास बैठी रहो, सुबह सब को बताती फिरोगी कि रात एक पत्थर के पास बैठकर गुज़ारी है।"

"क्या मैं ख़ुबसूरत नहीं?" लड़की ने पूछा।

"तुम जैसी भी हो मेरे किसी काम की नहीं।" उमरू दूरवेश ने कहा– "मैं तुम्हारे काम आ सकता हूं। अगर तुम इस ज़लील ज़िन्दगी से आज़ाद होना चाहो तो मैं तुम्हें जान पर खेल कर यहां से निकाल ले जाऊंगा और किसी शरीफ़ घराने में आबाद कर दूंगा।"

"आप से पहले भी एक यहां आया था।" आशी ने कहा– "वह भी आप की तरह बातें कर

रहा था। वह भी सूडानी मुसलमान था। मैं आप की यह बात नहीं मान सकती कि चूंकि आप मुसलमान हैं इसलिए आप औरत में दिलचस्पी नहीं लेते। मैंने मिस्र के कई मुसलमान देखें हैं। वह औरत को देखकर भूखे दरिन्दे बन जाते हैं। मैं तीन ऐसे मिस्री मुसलमान बता सकती हूं जिन्हें मैंने और शराब की इस सुराही ने गद्दार बनाया है। वह कैसे मुसलमान हैं?"

"वह ईमान फ़रोश हैं।" उमरू दूरवेश ने कहा– "तुम बातें कर रही हो तो मैं तुम्हारे चेहरे पर और तुम्हारी आंखों में तुम्हारे मां और तुम्हारे बाप की झलक देखने की कोशिश कर रहा हूं। वह कहां हैं? जिन्दा हैं?"

"मालूम नहीं।" आशी ने कहा– "आप से पहले जो यहां आया था उसने भी यही पूछा था कि तुम्हारे मां बाप जिन्दा हैं या मर गये हैं।" वह इस्हाक़ की बात कर रही थी। इस्हाक़ को जब इस कमरे में लाया गया था तो इसी लड़की को उस के कमरे में भेजा गया था। इसने उमरू दूरवेश से कहा– "उस सूडानी मुसलमान ने मुझ से मेरे मां बाप के मुतअल्लिक़ पूछ कर मुझे परेशान कर दिया था। ऐसा सवाल मुझ से कभी किसी ने नहीं पूछा था। वह पहला आदमी था जिसने पूछा तो मैं रात भर सोंचती रही कि मेरे मां बाप कौन थे और कैसे थे। थे ज़रूर मुझे याद आत था और ज़ेहन के अंधेरे में ग़ायब हो जाता था। मैंने अपने आप को उनकी याद से दूर रखने की कोशिश शुरू कर दी मगर कामयाब नहीं हे सकी। आज आप ने उनकी याद फिर ताज़ा कर दी है। मैं जब महसूस ही नहीं करती थी कि मेरे भी मां बाप होंगे तो मैं ख़ुश रहती थी। आप से पहले आने वाले सूडानी मुसलमान ने मेरे अन्दर ऐसे जज़्बात बेदार कर दिए हैं कि मेरी ख़ुशी पर अब उदासी का आसेब सवार रहने लगा है।"

"तुम्हारा कोई भाई भी नहीं था?"

"कुछ भी याद नहीं।" आशी ने कहा– "मैं ख़ून के रिश्तों को समझती ही नहीं कि क्या होते हैं।"

"तुम्हें नींद आ रही तो सो जाओ। उमरू दूरवेश ने कहा।

"आप को नींद आ रही हो तो मैं ख़ामोश हो जाती हूं।" आशी ने कहा– "जी चाहता है कि आप मेरे साथ बातें करते रहें। मुझे आप जैसे आदमी अच्छे लगते हैं। मैं जिस आदमी के साथ रात गुज़ारती हूं उससे मुझे नफ़रत सी हो जाती है। मुझे मुस्कुराना पड़ता है। वह सूडानी मुसलमान जो आपसे पहले यहां आया था, मुझे सारी उम्र याद रहेगा जिसे इस कमरे में लाया गया था। आप दूसरे आदमी हैं जिनकी मैं हमेंशा क़दर करूंगी। आपने मेरे अन्दर रूह और जज़्बात को बेदार कर दिया है। आप मुझे शायद रूह की नज़रों से देख रहे हैं। दूसरे मुझे जिस्म की भूखी नज़रों से देखते हैं।"

"मैं तुम्हें आबरू बाख़्ता लडकी समझता था लेकिन तुम अक्ल और फ़िरासत की बातें करती हो।" उमरू दूरवेश ने कहा।

"मैं हसीन और मीठा ज़हर हूं।" आशी ने कहा– "पत्थरों को मोम करने की मुझे तरबियत दी गयी है। मैं कोई सीधी सादी लड़की नहीं। जाबिर हुक्मरानों की तलवार अपने क़दमों में रखवा सकती हूं और आलिमों के मुंह फेर सकती हूं मगर अपने आप को मोम

समझने लगी हूं जो खुद ज़रा सी हरारत से पिघल जाता है किसी पत्थर को नहीं पिघला सकता।"

"यह मेरी बातों का असर नहीं।" उमरू दूरवेश ने कहा– "यह मेरे ईमान की हरारत है जिसने तुम्हें पिघला दिया है। मैंने तुम्हारे अन्दर खून के रिश्ते बेदार कर दिये हैं। तुम किसी की बेटी हो। तुम किसी की बहन हो। तुम किसी कौम की आबरू हो। मैं तुम्हें हर रंग मे देख रहा हूं।"

रात गुज़रती जा रही थी। नींद का खुमार और उमरू दूरवेश की बातें आशी पर ग़ालिब आती जा रही थीं। नींद से उसकी आंखें बन्द होने लगीं। वह पलंग की पांयती में बैठी हुई थी वहीं लुढ़क गयी......उसकी जब आंख खुली तो उस ने अपने आप को पलंग पर और उमरू दूरवेश को फ़र्श पर सोते देखा। उसने उमरू दूरवेश को जगाया नहीं। उसे देखती रही। उसके सीने में हलचल बपा हो गयी। उसने अपने गालों पर अपने आंसूओं की नमी महसूस की और हैरान हुई कि उसके जिस्म में आंसू भी हैं। उसके आंसू कभी नहीं निकले थे। उसने उमरू दूरवेश के पास दो ज़ानू होकर उसका हाथ उठाया और आखों से लगाया।

उमरू दूरवेश की आंख खुल गयी। आशी के होठों पर मुस्कुराहट न आई। उसने उसे यह भी न कहा कि तुम्हें फ़र्श पर नहीं सोना चाहिए था। वह खामोशी से बाहर निकल गयी। वापस आई तो उसके हाथ में पानी था जिससे उमरू दूरवेश ने वज़ू किया और नमाज़ पढ़ने लगा। आशी कमरे से चली गयी।

❖

नाश्ते के बाद सूडानी सालार दो सलीबियों के साथ आ गया।

"मेरी एक बात ग़ौर से सुन लें।" उमरू दूरवेश ने सालार से कहा– "मुझे किसी भी वक़्त इस्हाक़ की ज़रूरत महसूस हो सकती है। आप उसे परेशान करना छोड़ दें। उसे किसी खुली और आरामदह कोठरी में रखें। उसे तहखाने से निकाल कर ऊपर ले आयें। वह मेरा दोस्त है। मुझे जब उसकी ज़रूरत महसूस हुई तो मैं उसे मनालूंगा। उसे धोखा भी दे लूंगा। अगर वह न माना तो आप उसके साथ जो सलूक मुनासिब समझें करें।"

सूडानी सालार ने कहा कि ऐसा ही होगा सलीबी मुशीरों ने उमरू दूरवेश को ट्रेनिंग देनी शुरू कर दी। उसने खूबी से नक़ल की। उन्होंने उसे जो बात बताई वह भी उसने ज़ुबानी याद करनी शुरू कर दीं......चार पांच रोज़ उसकी तरबियत होती रही। दिन के दौरान सलीबी उसके साथ होते थे और रात को आशी उसके पास होती थी। यह लड़की उसकी मुरीद बन गयी थी। उस कमरे में जाकर वह अपने आप को पाकीज़ा लड़की समझने लगती थी।

छठे सातवें रोज़ उमरू दूरवेश एक दूरवेश के रूप में अपने इलाके में जाने के लिए तैय्यार हो गया। उसे दूरवेशों और मज्ज़ूबों आलिमों के कपड़े पहनाये गये। आशी ने उसे कहा था कि वह जब अपनी मुहिम पर रवाना हो तो उसे भी अपने साथ लेता चले। उसकी ख़्वाहिश पर उमरू दूरवेश ने सूडानी सालार से कहा कि वह उस लड़की को ईनाम के तौर पर अपने साथ रखना चाहता है। लड़की उसे दे दी गयी। उसके मस्तूर करने के लिए लड़की

को बुर्कानुमा लिबादा दे दिया गया। तीन ऊंट दिए गये। एक पर उमरू दूरवेश सवार हुआ, दूसरे पर आशी और तीसरे पर एक ख़ेमा और खाने पीने का सामान लाद दिया गया। सूडानी सालार ने उमरू दूरवेश को दो बातें बतायीं। एक यह कि इस्हाक़ को तहख़ाने से निकाल कर ऊपर खुले कमरे में भेजवा दिया गया है, और दूसरी यह कि मुसलमानों के इलाक़े में अपने आदमी मौजूद हैं जो उसे ख़ुद मिलेंगे और उस की मदद करेंगे।

उमरू दूरवेश आशी को साथ लेकर एक ख़तरनाक मुहिम पर रवाना हो गया।

सूडानी सालार उसके रवाना होते ही कमरे में गया। वहां छः आदमी बैठे हुए थे। वह सब सूडानी मुसलमान थे और मुसलमानों के इलाक़े के रहने वाले थे। उन्हें सूडान की हुकूमत से बहुत इनाम व इकराम मिलता था। अपने इलाक़े में वह पक्के मुसलमान बने रहते थे।

"वह जा चुका है।" सालार ने उन्हें कहा– "तुम दूसरे रास्ते से रवाना हो जाओ। अकेले–अकेले जाना। अपने इलाक़े में पहुंच जाओ और उस पर नज़र रखो। जहां तुम्हें शक हो कि यह शख़्स धोखा दे रहा है तो ऐसे तरीक़े से क़त्ल कर दो जिससे किसी को पता न चले। मैं और आदमी भेज रहा हूं। उन्हें अपने घरों में रख लेना।"

यह सब एक दूसरे के बाद रवाना हो गये। सूडानी सालार ने दो और आदमी बुलाये। वह सिर्फ़ सूडानी थे, मुसलमान नहीं थे। उन से सालार ने कहा– "इन मुसलमानों का कोई भरोसा नहीं। अपने इलाक़े में जाकर सब एका न कर लें। यह छः आदमी हमारे ही हैं लेकिन यह न भूलना कि मुसलमान हैं। वहां जाकर उनकी नीयत बदल सकती है। अगर उमरू दूरवेश ठीक रहा तो तुम्हें आतिशगीर मादे की ज़रूरत होगी। यह उन आदमियों ने घरों में छिपा रखा है। तुम जानते हो कि उसे कब और कहां इस्तेमाल करना है।

यह दोनों भी रवाना हो गये।

वह सिपाही जिसने इस्हाक़ की बेटी और उसकी बीवी को बचाया और कमाण्डर को क़त्ल किया था इस्हाक़ के घर रहता था। जिस रोज़ उमरू दूरवेश रवाना हुआ उस रोज़ सिपाही कहीं बाहर घूम फिर रहा था। एक तीर आया जो उसके जिस्म को छूता हुआ एक दरख़्त मे जा लगा। सिपाही दौड़ पड़ा और इस्हाक़ के घर जा पहुंचा। उसने इस्हाक़ के बाप को बताया कि उस पर किसी ने तीर चलाया है। कोई भी न समझ सका कि तीर किस ने चलाया है। किसी को मालूम न था कि सूडानियों ने उसे क़त्ल करने की पहली कोशिश की है।

❖

सुल्तान सलाहुद्दी अय्यूबी के मुहक्कमए जासूसी व सुराग़रसानी (इन्टेलीजेंस) का सरबराह अली बिन सुफ़ियान क़ाहिरा में था। उस वक़्त सुल्तान अय्यूबी सलीबियों के दोस्त उमरा सैफ़ुद्दीन और गुश्मतगीन को और अल्मलकुस्सालेह की फ़ौज को शिकस्त देकर उन मुख़ालेफ़ीन के मरकज़ी शहर हलब की तरफ़ बढ़ रहा था। उसके यह मुसलमान मुख़ालेफ़ीन ऐसी अफ़रा तफ़री और बौखलाहट में भागे थे कि कहीं भी क़दम जमा न सके। रास्ते में तीन चार अहम मुक़ाम थे जहां वह रूक जाते और अपनी बिखरी हुई फ़ौज को इकठ्ठा कर लेते

तो सुल्तान अय्यूबी का मुकाबला कर सकते थे लेकिन उन्होंने पस्पाई के ऐसे रास्ते इख़्तियार किये जो जंगी लिहाज़ से उनके लिए मज़ीद नुक़सान का बाइस बने। सुल्तान अय्यूबी ने पेशक़दमी जारी रखी और उन अहम मुकामात पर क़ब्ज़ा कर लिया। उसकी मन्ज़िल हलब थी।

उसे कुछ इल्म नहीं था कि मिस्र के हालात कैसी–कैसी करवटें ले रहे हैं। क़ासिद उसे पूरी रिपोर्ट देते रहते थे जिनसे पता चलता था कि तरह–तरह की साज़िशें सर उठा रही हैं। वह मैदाने जंग में कभी परेशान नहीं हुआ था, साज़िशें उसे परेशान कर दिया करती थीं, औरयह हक़ीकत उसके लिए ज़हर की तरह तल्ख़ थी कि उन साज़िशों और तख़रीबकारी के हिदायतकार सलीबी और आलाकार मुसलमान थे। अली बिन सुफ़ियान उसका दस्ते रास्त था बल्कि उस की आंखे और कान था। उसे सुल्तान अय्यूबी ने मिस्र से ग़ैरहाज़िरी के दौरान मिस्र में ही रहने दिया था और अपने साथ उसके मुआविन हसन बिन अब्दुल्लाह को रखा। मिस्र की हुकूमत सुल्तान अय्यूबी के भाई अल आदिल के हवाले थी। अपने भाई के ग़ैरहाज़िरी में अल आदिल रातों को सोता भी कम था। अली बिन सुफ़ियान को वह अपने साथ रखता था। इस तरह मिस्र का अमन व अमान और उस ख़ित्ते में इस्लाम की आबरू का तहफ़्फ़ुज़ उन दोनों की ज़िम्मेदारी थी।

उन्हें अच्छी तरह मालूम था कि सुल्तान अय्यूबी की ग़ैरहाज़िरी में मिस्र में तख़रीबकारी बढ़ रही है। उस के अलावा सूडान की तरफ़ से ख़तरा था। दो चार माह पहले अल आदिल ने सूडानियों के एक अजीब व ग़रीब और बड़े ही ख़तरनाक हम्ले को ग़ैर मामूली कामयाबी से तबाह कर दिया था लेकिन सूडानियों के अज़ाइम में कोई फ़र्क नहीं आया था, क्यों उनका यह हम्ला जो नाकाम हुआ था बाक़ायदा फ़ौज का हम्ला नहीं था। सूडान की बाक़ायदा फ़ौज नुक़सान के बेग़ैर तैय्यार खड़ी थी। इस फ़ौज को सलीबी तरबियत दे रहे थे और बाज़ दस्तों की कमान सलीबियों के हाथ थी।

सूडान के ख़तरे की पेशबन्दी यूं की गयी थी कि सरहद पर दस्तों की नफ़री में इज़ाफ़ा कर दिया गया। उनके अलावा अली बिन सुफ़ियान ने अपने शोबे के बेशुमार आदमियों को सरहद पर फैला दिया था। यह सब जासूस और मुख़्बिर थे। वह सेहराई मुसाफ़िरों और ख़ाना बदोशों के भेस में सरहद पर घूमते फिरते रहते थे। उनका राब्ता सरहदी चौकियों के साथ था। इन चौकियों पर उन के लिए घोड़े तैय्यार रहते थे। सरहदी दस्तों के गश्ती संतरी भी उनके साथ राब्ता रखते थे। एक इन्तज़ाम और भी था। अली बिन सुफ़ियान के चन्द एक माहिर जासूस ताजिरों के बहरूप में सूडान के साथ ग़ैर क़ानूनी तिजारत करते थे जिसे आज कल स्मगलिंग कहा जाता है। उन्हें माल देकर सरहद पार करा दी जाती थी। यह लोग सूडान जाकर यह ज़ाहिर करते थे कि यह मिस्र के सरहदी दस्तों की आंखों में धूल झोंक कर आये हैं। सूडान में बाज़ अज्नास की क़िल्लत थी जिस में अनाज ख़ास तौर पर क़लील था। सुल्तान अय्यूबी की हिदायत के तेहत मिस्र में ज़्यादा अनाज उगाया जाता था जिसका कुछ हिस्सा जासूसी के सिलसिले की स्मगलिंग के लिए अलग कर लिया जाता था।

सूडान के जो ताजिर मिस्री "ताजिरों" के साथ कारोबार करते थे उनमें ज़्यादा तर जासूस थे जो मिस्र के लिए काम करते थे। उन्हें जासूस म्रिसी जासूस (ताजिरों के रूप में) ने बनाया था। जासूसी का यह तरीक़ा कामयाब हुआ तो सुल्तान अय्यूबी ने हुक्म दे दिया था कि सूडान को अनाज और ज़्यादा सस्ता दो ताकि यह सिलसिला सारे सूडान में जाल की तरह फैल जाए। चुनांचे जाल फैला दिया गया और सूडानी फ़ौज और हुकूमत की हर एक नक़ल व हरकत क़ाहिरा में नज़र आने लगी। अली बिन सुफ़ियान ने सरहद के साथ अपने दो तीन हंगामी मरकज़ बना दिये थे। ज्योंहि कोई ख़बर उधर से आती सरहद के किसी मरकज़ को दे दी जाती जहां से बर्क़ रफ़्तार घोड़ों के ज़रिए क़ाहिरा पहुंचा दी जाती थी। इस मक़सद के लिए जो सवार रखे गये थे वह मुसलसल तमाम दिन और रात बग़ैर आराम किये सवारी करने की महारत रखते थे।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को मालूम था कि सूडान में एक वसीअ पहाड़ी इलाक़ा है जिसमें सिर्फ़ मुसलमान आबाद हैं और उन मुसलमानों की ज़्यादा तर तादाद मिस्री फ़ौज में है। उसे यह भी मालूम था कि यह मुसलमान सूडानी फ़ौज में भर्ती होना पसन्द नहीं करते। उसकी इब्तेदा इस तरह हुई थी कि सुल्तान अय्यूबी के दौरे इमारत से कुछ पहले मिस्री फौज में सूडानी हब्शी और सूडानी मुसलमान हुआ करते थे। इनका कमाण्डर भी सूडानी था। क़ारईन को याद होगा कि उस कमाण्डर कर नाम नाजी था। "दास्तान ईमान फरोशों की" के इस सिलसिले की पहली कहानी में उसी फौज और उसके सालार आला नाजी का तफ़सीली तज़्करा किया गया था। सुल्तान अय्यूबी से पहले नाजी मिस्र का मुख़्तार कुल था हालांकि यहां ख़िलाफ़त की गद्दी भी थी और यह बाक़ायदा इमारत थी। क्या ख़लीफ़ा और क्या अमीर सही मानों में बादशाह थे। सलीबियों ने मिस्र को सल्तनते इस्लामिया से काटने के लिए यहां तख़रीबकारी और साज़िशों के अड्डे क़ायम कर लिए थे। नाजी उनका इत्तेहादी बन गया था। उसने मिस्र की सूडानी फ़ौज को अप्ने क़ब्ज़े में ले रखा था। उस फ़ौज की तादाद पचास हज़ार थी।

सुल्तान अय्यूबी ने मिस्र की इमारत सम्भाली तो उसकी पहली टक्कर नाजी से हुई। सुल्तान अय्यूबी ने नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम से मुन्तख़ब और जांबाज़ दस्तों का कुमक मंगवाकर मिस्र की पचार हज़ार सूडानी फ़ौज तोड़ दी। इसके बाज़ सालारों को क़ैद में डाल दिया और नई फ़ौज तैय्यार कर ली। थोड़े ही अर्से बाद उसने हुक्मनामा जारी किया कि सूडान की इस माअज़ूल फौज के जो लोग हलफ़े वफ़ादारी के साथ ख़ुलूसे नीयत से मिस्री फ़ौज में शामिल होना चाहें तो उन्हें भर्ती कर लिया जाये। सूडान के वह तमाम मुसलमान जो इस फ़ौज में थे वापस आ गये। वह जान गये थे कि उन्हें ग़ैर मुस्लिम साज़िश का आलाकार बनाया गया था। सुल्तान अय्यूबी की फौज में शामिल होकर उन्होंने जब सलीबियों के ख़िलाफ़ दो तीन मार्के लड़े और सुल्तान अय्यूबी को उन्होंने क़रीब से देखा तो उनका ईमान ताज़ा हो गया। फ़ौजी ट्रनिंग के साथ–साथ उन्हें दीन व ईमान और मिल्ली वक़ार के वअज़ भी सुनाये जाते और उन्हें बताया जाता था कि उनका दुश्मन, उनके मज़हब का दुश्मन है जिसकी नज़र में इस्लाम

की बेटियों की कोई इज्ज़त और इस्मत नहीं। अब सुल्तान अय्यूबी की जो फौज अरब में लड़ रही थी उसमें ख़ासी नफ़री सूडानी मुसलमानों की थी।

काहिरा की इन्टेलिजेंस इस सूरते हाल से बेख़बर नहीं थी कि सूडान की हुकूमत वहां के मुसलमानों को कई एक तरीक़े से क़ायल करने की कोशिश कर रही है कि मिस्री फ़ौज में जाने के बजाये सूडान की फ़ौज में भर्ती हों। सूडानियों ने मुसलमानों पर तशद्दुद करके भी देख लिया था। उस के नतीजे में सूडान का एक आला फ़ौजी अफ़सर ख़ुफ़िया तरीक़े से क़त्ल हो गया था। सूडान ने इस इलाक़े में बाक़ायदा फ़ौज भेजी थी। मुसलमानों ने उसे पहाड़ियों और वादियों में बिखेर कर मार डाला या भगा दिया था। मुसलमानों को इलाक़े का फ़ायदा हासिल था। चट्टाने और पहाड़ियां उन्हें आड़ मुहईया करती और तहफ़्फ़ुज़ देती थीं। यह मुसलमान जंगजू भी थे।

सुल्तान अय्यूबी ने उनके साथ अली बिन सुफ़ियान के शोबे की विसातत से राब्ता क़ायम रखा हुआ था। मिस्री "ताजिरों" के काफ़िलों के ज़रिए उन मुसलमानों को इतना अस्लेहा दे दिया था कि जिस से वह साल भर के लिए मुहासिरे में लड़ सकते थे। उन्हें छोटी मिन्जनिकें और आतिशगीर मादे भी पहुंचा दिया गया था जो लोगों ने घरों में छिपा रखा था। सुल्तान अय्यूबी के मंसूबे में यह शामिल था कि जंगी कार्रवाई से या दिगर ज़राओ से उस इलाक़े को मिस्र में शामिल करना है ताकि यह मुसलमान सही मानों में आज़ाद हो जाएं। यह इलाक़ा सरहद से आधे दिन की मुसाफ़त पर था। अली बिन सुफ़ियान ने वहां अपने जासूस भेज रखे थे जो महज़ मुख़्बिर नहीं थे तजुर्बाकार लड़ाका और छापामार (कमाण्डो) थे।

यह मुसलमान अस्करी नौवइयत का ख़ज़ाना और बड़ी कार आमद जंगी कुव्वत थे हालांकि उनकी तादाद बमुश्किल पांच हज़ार थी। उन्हीं छोड़कर सूडान के पास हब्शी रह जाते थे जिनके हां कोई अस्करी तारीख़ और जंगी रिवायत नहीं थी। वह मुलाज़िमों की हैसियत से लड़ते थे। मैदाने जंग में उनका रवैया यह होता था कि उनके दुश्मन के पांव उखड़े तो शेर हो जाते थे और अगर दुश्मन का दबाव बढ़ जाये तो मोहतात होकर लड़ते और पीछे हटने लगते थे। उनकी ट्रेनिंग के लिए सलीबी पहुंच गये थे या मिस्री फौज के दो तीन ग़द्दार सालारा ज़र व जवाहरात के लालच में सूडान चले गये थे। सलीबियों और उन के मिस्री सालारों की बदौलत सूडान की फ़ौज में कुछ अहलियत पैदा हो गयी थी। यही वजह थी कि सूडानी हुकूमत मिस्र पर खुला हम्ला करने से घबराती नहीं थी, और यही वजह थी कि वह मुसलमानों को अपनी फ़ौज में शामिल करने की कोशिश कर रही थी। सलीबी मुशीर जानते थे कि पचास हज़ार हब्शियों की निस्बत पांच हज़ार मुसलमान काफ़ी हैं।

❖

अली बिन सुफ़ियान को इत्तलाअ मिली के सूडानी इलाके में यह वाक़िआ हुआ कि सूडान क़ैदखाने के एक सिपाही ने सूडानी फौज के कमाण्डर को क़त्ल कर दिया और मुसलमानों के इलाके में पनाह ले ली है। यह ख़बर लाने वाले जासूस ने अली बिन सुफ़ियान को पूरा वाक़िआ सुनाया। उसने उस सिपाही से तस्दीक़ कर लीथी। सिपाही से उसने यह

भी मालूम कर लिया था कि इस्हाक़ नाम का कमानदार कैदखाने में जिन्दा है और उसे इस मक़सद के लिए तैय्यार करने के लिए कैदखाने में अज़ीयतों का निशाना बनाया जा रहा है कि वह मुसलमानों को सूडान का वफ़ादार बना दे। जासूस ने यह भी बताया कि उस इलाके पर इस्हाक़ का असर व रसूख़ है।

"यह ज़रूरी मालूम होता है कि इस्हाक़ को कैदखाने से रिहा कराया जाए।" अली बिन सुफ़ियान ने जासूस से पूरी रिपोर्ट लेकर मिस्र के क़ायम मुक़ाम अमीर अल आदिल से कहा– "आप जानते हैं कि कैदखानों में कैसा–कैसा तशद्दुद किया जाता है। हम भी तशद्दुद करते हैं। पत्थर भी बोल पड़ते हैं। कहीं ऐसा न हो कि इस्हाक़ सूडानियों के रंग में रंगा जाये। यह भी मालूम हुआ है कि हमारे दो तीन और मुसलमान कमानदार कैदखाने में हैं। सब पर तशद्दुद किया जा रहा है। मैं तो यहां तक मश्वरा देने को तैय्यार हूं कि अपने कुछ छापामार मुसलमानों के इलाके में भेज दिए जाएं। मैं यह ख़द्शा देख रहा हूं कि अपने कमानदार के क़त्ल का इन्तक़ाम लेने के लिए सूडानी फ़ौज मुसलमानों पर हम्ला कर देगी।"

"दूसरे मुल्क में छापामार भेजने के लिए हमें हर पहलू पर ग़ौर करना पड़ेगा।" अल आदिल ने कहा– "उसका नतीजा खुली जंग भी हो सकता है।"

"हमारे पास ग़ौर करने के लिए वक़्त नहीं।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा–"हमें फ़ौरी तौर पर दो कार्रवाइयां करनी पड़ेंगी। किसी ज़हीन क़ासिद को पैग़ाम देकर मोहतरम सुल्तान की तरफ़ भेजा जाए और उनसे हुक्म लिया जाए और दूसरी यह कि मैं ख़ुद सूडान में दाख़िल होकर मुसलमानों के इलाके में चला जाऊं। वहां के हालात का जायज़ा लेना ज़रूरी है। सही ख़ाका सिर्फ़ मेरी आंख ही देख सकती है। हो सकता है वहां फ़ौज हम्ला न करे। वहां सलीबी मौजूद हैं। वह मुसलमानों को तौहुम परस्ती में मुब्तला करके उनके नज़रियात और अक़ीदत का रूख़ फेर सकते हैं। मस्जिदों में अपने मौलवी भेज कर लोगों को गुमराह कर सकते हैं। वह ऐसी चालें मिस्र के अन्दर आकर भी चल चुके हैं।यही डर है कि मुसलमान के अक़ीदे और मिल्ली जज़्बे पर हम्ला होगा। आप जानते हैं कि हमारी क़ौम में यह ख़ामी है कि दुश्मन की जज़्बाती बातों में जल्दी आ जाती है। दुश्मन ऐसे हथियार इस्तेमाल करता है कि मुसलमान को मैदाने जंग में मारना आसान नहीं। अक़ीदों और नज़रियों की मार्का आराई में दुश्मन ऐसे हथियार इस्तेमाल करता है कि मुसलमान ढेर हो जाते हैं। अगर आप इजाज़त दें तो मैं वहां चला जाऊं और आप अभी एक क़ासिद सुल्ताने मोहतरम की तरफ़ रवाना करदें।"

"आप की ग़ैरहाज़िरी में आप की ज़िम्मेदारी कौन सम्भालेगा?"

"ग़यास बलबीस" अली बिन सुफ़ियान ने जवाब दिया– "उसके साथ एक मेरा मुआविन ज़ाहेदान रहेगा। आपको मेरी ग़ैरहाज़िरी महसूस नहीं होगी।"

"बहुत बुरी तरह महसूस होगी।" अल आदिल ने कहा– "आप दुश्मन के मुल्क में जा रहे हैं। अगर वापस न आ सके तो मिस्र अंधा और बहरा हो जायेगा।"

"मैं न हुआ तो क़ौम मर नहीं जायेगी।" अली बिन सुफ़ियान ने मुस्कुराकर कहा– "अफ़राद क़ौमों की ख़ातिर मरते रहें तो क़ौमें जिन्दा रहती हैं। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी यह सोच

लें कि वह मारे गये तो कौम तबाह हो जायेगी तो वह घर बैठ जायें और सल्तनते इस्लामिया पर सलीबी हाथ साफ कर जाएं। मुझे सुल्तान का यह उसूल बहुत पसन्द है। वह कहा करते हैं कि दुश्मन का इन्तज़ार घर बैठकर न करो। उस पर नज़र रखो। वह तैय्यारी की हालत में हो तो उसके पहलू या अक़्ब में चले जाओ। मैं उसी उसूल पर सूडान जा रहा हूं। दुश्मन ने मुसलमानों के इलाके में कामयाबी हासिल करली तो हम अपने कौन से कारनामें पर फख़्र करेंगे।"

"आप चले जाएं।" आल आदिल ने कहा– "यह कहने की ज़रूरत नहीं कि एहतियात लाज़िमी है। मैं सुल्तान के नाम पैग़ाम लिखकर भेज देता हूं।"

अली बिन सुफ़ियान सूडान में दाख़िल होने की तैय्यारी करने चला गया। अलआदिल ने कातिब को बुलाया और सुल्तान अय्यूबी के नाम पैग़ाम लिखवाने लगा। उसने सूडान से मुसलमान के इलाके की इत्तलाअ तफ़सील से लिखवाई। यह भी लिखवाया कि यह पैग़ाम आप तक पहुंचने से पहले अली बिन सुफ़ियान सूडान में जा चुका होगा। अल आदिल ने अली बिन सुफ़ियान के मशवरे भी लिखवाये और सुल्तान अय्यूबी से पूछा कि क्या करना चाहिए। कासिद को पैग़ाम देकर अल आदिल ने उसे कहा कि उसे हर चौकी से घोड़ा बदलना है और घोड़े की रफ़्तार किसी भी हालत में सुस्त नहीं होगी। खाना पीना दौड़ते घोड़े पर खाना होगा। अगर रास्ते में दुश्मन के छापामारों का ख़तरा हो तो कासिद पैग़ाम ज़ाया कर देगा। इन हिदायात के साथ कासिद रवाना कर दिया गया।

❖

उमरू दूरवेश शहर से बहुत दूर निकल गया था। उसके इर्द गिर्द कोई आबादी नहीं थी। सूरज गुरूब हो रहा था। उमरू रात के कयाम के लिए कोई मौज़ूं जगह देख रहा था। दूर उसे दरख़्त नज़र आये जहां पानी हो सकता था लेकिन उसके पास पानी का ज़ख़ीरा मौजूद था। ऊंटो को पानी की ज़रूरत नहीं थी। वह नख़लिस्तान से दूर कयाम करना चाहता था। ताकि सेहराई डाकूओं से बचा रहे। उसके साथ आशी थी जो स्याह बुर्के में मस्तूर थी। यह कीमती लड़की थी। किसी डाकू की नज़र पड़ जाने से उसका बचना नामुम्किन था.......उसे एक जगह नज़र आ गयी। उसने ऊंट रोके और वहीं ख़ेमा गाड़ लिया।

उसे दो शुतर सवार अपनी तरफ़ आते नज़र आये। आशी को उसने ख़ेमे में भेजकर पर्दे गिरा दिए और ख़ुद बाहर खड़ा हो गया। उसके चुग़े में तलवार छुपी हुई थी। ख़ंजर भी था और ख़ेमे में दो कमाने और बहुत से तीर भी थे। शुतर सवारों को अपनी तरफ़ आता देख वह सोंचने लगा कि वह डाकू हुए तो क्या वह उनका मुकाबला कर सकेगा। उसे यह इत्मीनान था कि आशी सिर्फ़ दिल बहलाने वाली लड़की नहीं, वह लड़ भी सकती है, तीर अन्दाज़ी की भी उसे तरबियत हासिल थी। वह सलीबियों की तैय्यार की हुई तख़रीब कार लड़की थी। शुतर सवार आ रहे थे। उमरू दूरवेश ने मुंह उन्हीं की तरफ़ रखा और आशी से कहा– "कमान में तीर डाल लो। अगर यह डाकू निकले तो पर्दे के पीछे से तीर चला देना।"

शुतर सवार ख़ेमे के करीब आ कर रूके। एक ने ऊंट की पीठ से ही पूछा– "तुम कौन

हो? कहां जा रहे हो?।"

उमरू दूरवेश ने हाथ आसमान की तरफ़ करके झूमती हुई आवाज में कहा– "जिसके सीने में आसमान का पैग़ाम हो उसकी कोई मंज़िल नहीं होती। मैं कौन हूं?.....मुझे भी मालूम नहीं। कभी कुछ हुआ करता था। आसमान से एक पैग़ाम आया। मेरे सीने में उतर गया। ज़ेहन से यह निकल गया कि मैं कौन हूं। मैं कहां जा रहा हूं?....मेरे सीने में जो रौशनी उतर आई है, वह बता सकती है। उसमें मेरे इरादों का कोई दख़ल नहीं। मैं आगे जा रहा हूं। सुबह को पीछे को चल पडूंगा।"

दोनों ऊंटों से उतर आये। एक ने कहा– "आप तो कोई पीर पैग़म्बर मालूम होते हैं। हम दोनों मुसलमान हैं। क्या आप ग़ैब की ख़बर दे सकते हैं? हम गुनाहगारों को सीधा रास्ता दिखा सकते हैं?"

"मैं भी मुसलमान हूं।" उमरू दूरवेश ने वज्द सी कैफ़ियत में कहा– "तुम भी मुसलमान हो। मुझे तुम्हारी तबाही नज़र आ रही है। मैं भी तुम्हारी तरह पूछता था कि सीधा रास्ता कौन सा है। किसी को मालूम नहीं था। ख़ून में डूबी हुई लाशों मे मुझे सब्ज़ रंग का एक चुग़ा और उसमें सफ़ेद दाढ़ी वाला एक इन्सान खड़ा नज़र आया। उसने मुझे लाशों में से उठाया और सीधा रास्ता दिखाया। फिर वह लाशों के ख़ून में ग़ायब हो गये.....तुम पहाड़ियों में रहते हो तो सेहराओं में चले जाओ। मिस्र का नाम दिल से उतार दो। फिरऔनों का मुल्क है। वहां जो बादशाह आता है उसे मिस्र की मिट्टी और वहां की हवा फ़िरऔन बना देती है।"

"अब तो वहां का बादशाह सलाहुद्दीन अय्यूबी है।" एक शुतर सवार ने कहा– "वह पक्का मुसलमान है।"

"उसका नाम मुसलमानो जैसा है।" उमरू दूरवेश ने ऐसे लहजे में कहा कि जैसे ख़्वाब में बोल रहा हो। "वही तुम्हारी तबाही ला रहा है। तुम जिस मिट्टी से पैदा हुए हो उसकी इज़्ज़त पर ख़ून बहाओ। तुम सूडान के बेटे हो।"

"मगर सूडान का बादशाह काफ़िर है।" शुतर सवार ने कहा।

"वह मुसलमान हो जायेगा।" उमरू दूरवेश ने कहा– "वह मुसलमान की राह देख रहा है। उसकी फ़ौज काफ़िरों की फ़ौज है इसलिए वह इस्लाम का नाम नहीं लेता। तुम सब जाओ। तलवारें, बरछियां, तीर व कमान लेकर जाओ। ऊंटों और घोड़ों पर सवार होकर जाओ। उसे बताओ कि तुम उसके मुहाफ़िज़ हो। तुम सूडान के मुहाफ़िज़ हो।"

"उसने बुलन्द आवाज़ में कहा–"जाओ। उठो यहां से चले जाओ।"

दोनों ऊंटों पर सवार हुए और चले गये। कुछ दूर जाकर एक सवार ने दूसरे से कहा– "धोखा नहीं देगा।"

"मेरा भी यही ख़्याल है।" दूसरे ने कहा– "पक्का मालूम होता है। सबक भूला नहीं।"

"आशी जैसा ख़ुबसूरत इनाम हमें मिल जाए तो हम अपने मां बाप के भी ख़िलाफ़ हो जाएं।" शुतर सवार ने कहा– "वापस चलते हैं।" दूसरे ने कहा– "बतायेंगे कि सब ठीक है. .....लड़की शायद ख़ेमें में होगी।"

"आदमी होशियार मालूम होता है। उसने लड़की को छिपा दिया था।" उसने कहा– "मेरा ख़्याल है उन्हें हमारी हिफ़ाज़त की ज़रूरत नहीं।"

"नहीं होनी चाहिए।" दूसरे ने कहा– "सिपाही है, उसके पास हथियार भी हैं। तीर व कमान भी हैं। लड़की भी होशियार है।"

यह दोनों सूडानी जासूस थे। जिन्हें यह मालूम करने के लिए उमरू दूरवेश के पीछे भेजा गया था कि यह काम उन की हिदायत के मुताबिक़ कर रहा है या नही। उमरू दूरवेश ने बड़ी अच्छी अदाकारी की थी जिस से यह दोनों मुत्मईन होकर चले गये।

"यह डाकू नहीं थे।" उमरू दूरवेश ने ख़ेमे में जाकर आशी से कहा– "चले गये हैं।"

"यह डाकू से ज़्यादा ख़तरनाक थे।" आशी ने कहा– "यह तुम्हें देखने आये थे कि तुम उन्हें धोखा तो नहीं दे रहे।"

"तुम जानती हो उन्हें?"

"मैं उन्हीं के दरख़्त की एक टेहनी हूं।" आशी ने कहा– "उनसे कटकर गिर पड़ी तो सूख जाऊंगी।"

"मुझे तुमसे भी मोहतात रहना पड़ेगा।"

लड़की हंस कर बोली– "तुमने ख़ुद ही मुझे इनाम के तौर पर मांगा है।"

❖

रात वह ख़ेमे में गहरी नींद सोए हुए थे। आशी की आंख खुल गयी। बाहर भेड़िए गुर्रा रहे थे। ऊंट डर के मारे उठ खड़े हुए और अजीब तरीक़े से बोलने लगे। आशी ने उमरू दूरवेश को जगाया और उसे बताया कि वह ख़ौफ़ के मारे मर रही है। उमरू दूरवेश ने बाहर की आवाज़ें सुनी तो आशी से कहा– "यह भेड़िए हैं। करीब नहीं आएंगे। ऊंट उठ खड़े हुए हैं। कोई डर नहीं। भेड़िए उनसे डर के भाग जाएंगे।"

अचानक भेड़िए आपस में लड़ पड़े। ऐसी ख़ौफ़नाक आवाज़ें थीं कि आशी चीख़ मार कर उमरू दूरवेश पर जा पड़ी। वह बैठा हुआ था। उसने आशी को इस तरह अपनी आग़ोश और बाज़ूओं की पनाह में ले लिया जिस तरह मां डरे हुए बच्चे को छिपा लिया करती है। लड़की का सारा जिस्म कांप रहा था। उसके मुंह से बात नहीं निकल रही थी। भेड़िए लड़ते–लड़ते दूर चले गये थे।

उमरू दूरवेश लड़की को परे करने लगा और कहा– "वह चले गये हैं। सो जाओ।"

"नहीं।" आशी ने उसकी आग़ोश से सर न उठाया। धीमी सी आवाज़ में बोली– "ज़रा देर और यहीं पड़े रहने दो।"

उमरू दूरवेश को यह सूरत पसन्द नहीं थी। उसका ख़्याल था कि वह उसे अपने हसीन जाल में फांसने की कोशिश कर रही है। वह और ज़्यादा पत्थर बन गया। लड़की का जिस्म बड़ा गुदाज़ और बाल बहुत ही मुलायम थे। उसने इतनी हसीन लड़की को कभी छूकर भी नहीं देखा था। अब महसूस करने लगा कि लड़की उसके आग़ोश में पड़ी रही तो वह उस अंगेख़्त का मुकाबला नहीं कर सकेगा। वह आख़िर तनूमन्द मर्द था। उसने अपने नफ़्स का

मुकाबला शुरू कर दिया।

कुछ देर बार लड़की ने सर उठाया। तारीकी में उसके चेहरे के तास्सुरात नज़र नहीं आ रहे थे। उसने हाथों से उमरू दूरवेश का चेहरा टटोल कर दोनों हाथों में थाम लिया और कहा– "तुम ने एक रात मुझ से पूछा था कि तुम्हारें मां बाप कौन हैं और कहां हैं। यही सवाल तुम्हारे दूसरे साथी ने जो तुम से पहले उस कमरे में आया था मुझ से पूछा था। मुझे उनके मुतअल्लिक कुछ भी मालूम नहीं था मगर यह सवाल मुझे परेशान करता रहा और बहुत पुरानी यादें बेदार करता रहा मुझे कुछ याद आता था लेनिक ज़ेहन के अंधेरे में गुम हो जाता था। आज याद आ गया है। तुमने मुझे अपने बाज़ूओं में लेकर मुझे अपनी आग़ोश में छिपा लिया तो मेरे ज़ेहन में रौशनी सी चमकी। उसने मुझे बहुत ही पुराना वक़्त दिख दिया। मैं उस वक़्त बहुत छोटी थी। मुझे बाप ने इसी तरह सीने से लगा कर मुझे अपने बाज़ूओं में छिपा लिया था।"

वह चुप हो गयी। वह यादों की कड़ियां मिलाने की कोशिश में मसरूफ़ थी। अचानक बच्चों की सी शोख़ी से बोली –"हां वह मेरा बाप था। ऐसा ही रेगिस्तान था। मालूम नहीं रात थी या दिन था। हम एक क़ाफ़िले के साथ जा रहे थे। बहुत से घोड़सवार आये और क़ाफ़िले पर टूट पड़े। उन के पास तलवारें और बरछियां थीं। यह डरावना ख़्वाब है जो आज तुम्हारी आग़ोश और बाज़ूओं की गरमी से ज़ेहन में ज़िन्दा हो गया है। मुझे बाप ने तुम्हारी तरह पनाह में ले लिया था......यह भी याद आ गया है। मेरे बाप के बाज़ू ढीले पड़ गये थे और वह पीछे को गिर पड़ा था। उसने एक बार फिर मुझे बाज़ूओं में जकड़ लिया। मां भी याद आ गयी है। वह मेरे उपर गिरी थी शायद मुझे बचाने के लिए गिरी थी.....फिर याद आता है कि वह एक तरफ़ लुढ़क गयी थी। मुझे ख़ून भी याद आता है। किसी ने मुझे बाज़ू से पकड़ कर उठा लिया था और किसी ने कहा था– "ख़ालिस हीरा है। जवान हुई तो देखना।" मुझे अपनी चीख़ें भी याद आ गयी हैं। मैं आज रात की तरह चीख़ी थी।"

"दिमाग़ पर ज़्याद ज़ोर न दो।" उमरू दूरवेश ने उसके सर पर हाथ फेरते हुए कहा– "मैं सारी कहानी समझ गया हूं। तुम मुसलमान की औलाद हो। तुम अरब या फ़िलिस्तीन की रहने वाली हो। सलीबी मुसलमानों के क़ाफ़िलों को लूट लिया करते थे। अब भी जो इलाक़े उनके कब्ज़े में हैं वहां मुसलमानों के काफिलों को लूट लेते हैं। वह ज़र व जवाहरात और तुम जैसी ख़ुबसूरत बच्चियों को ले जाते हैं। मैं जान गया हूं तुम यहां तक कैसे पहुंची हो।"

"मैं जब कुछ सोंचने समझने लगी तो मैंने अपने जैसी बहुत सी बच्चियों को देखा।" आशी ने कहा– "हमें बहुत अच्छा खाना और बहुत ख़ुबसूरत कपड़े पहनाये जाते थे। गोरे–गोरे आदमी और औरतें हमसे बहुत प्यार करती थीं। उन्होंने मेरे ज़ेहन से सारी यादें मिटा दी थीं। वह योरूशलम था। लड़कपन से हमें बेहयाई के सबक़ मिलने लगे। शराब भी पिलायी जाती थी। अरबी ज़ुबान सिखाई गयी, फिर सूडानी ज़ुबान सिखाई गयी, मैं जब जवान हुई तो मुझे इस इस्तेमाल में लाया जाने लगा जिस में तुमने मुझे देखा है। तेग़ज़नी और तीर अन्दाज़ी की तो हमें बहुत मश्क करायी गयी थी...आज तुमने ख़ौफ़ज़दगी की हालत में पनाह में लिया तो

मुझे अचानक अपना बाप याद आ गया।

मेरे मुतअल्लिक उस के जज़्बात पाक थे और तुम्हारे जज़्बात भी पाक हैं। इसीलिए मैं ने तुम्हें कहा था कि मुझे कुछ देर और अपनी आग़ोश में पड़े रहने दो। मुझे अपने बाप की आग़ोश का लुत्फ़ आ रहा था। जब तक मैं जिन्दा हूं तुम्हारी गुलाम रहूंगी। मैं अब सूडानियों और सलीबियों के काम नहीं आ सकूंगी। यह तुम्हारी पाकीज़ा ख़्याली और नेक नीयती का करिश्मा है। मैं मुसलमान हूं। तुमने मेरी रगों में मुसलमान बाप का ख़ून गरमा दिया है। अब मैं तुम्हें यह काम नहीं करने दूंगी। जिसके लिये तुम जा रहे हो। तुम ने मेरे अन्दर ईमान की कंदील रौशन कर दी है।"

"चन्द दिन मुझे यह काम करना पड़ेगा।" उमरू दूरवेश ने कहा– "मैं किसी और मकसद के लिए जा रहा हूं।"

"और मैं तुम्हारी मदद करूंगी।"

तूर का जल्वा

उमरू दूरवेश जब ख़ेमा उखाड़ कर सूडानी मुसलमानों के पहाड़ी इलाके को रवाना होने की तैय्यारी कर रहा था तो उस हसीन व जमील लड़की के मुतअल्लिक सोंच रहा था जो उसकी हमसफ़र थी। लड़की मुसलमान थी। इस हैसियत की वजह से उमरू दूरवेश उसे सलीबियों का आलाकार बने रहने से बाज़ रखना चाहता था मगर वह चार पांच साल की उम्र से सलीबियों के हाथ लगी थी। उन्होंने बीस साल का अर्सा सर्फ़ करके उस पर जो रंग चढ़ा दिया था वह उतारना आसान नहीं था। बेशक लड़की ने अपने ज़ेहन में उस हकीकत को ख़ुद ही दर्याफ़्त कर लिया था कि वह मुसलमान मां बाप की बेटी है और उसने अपने दिल में सलीबी आकाओं के ख़िलाफ़ नफ़रत पैदा करके उमरू दूरवेश से कहा था कि मैं तुम्हारी मदद करूंगी मगर उमरू दूरवेश सोंच रहा था कि इस लड़की पर अतबार करे या न करे।

रात एक ही ख़ेमें में गुज़ार कर सुबह लड़की ने उमरू दूरवेश से पूछा— "मुझे शक है कि तुम मुझे अभी तक अपना दुश्मन समझ रहे हो।"

"औरत के जाल में उलझ कर मुसलमान कौम ने बहुत नुक़सान उठाया है आशी!" उमरू दूरवेश ने जवाब दिया— "तुम बहुत ही ख़ुबसूरत हो। तुम्हारी तरबियत ऐसी की गयी है कि तुम्हारी चाल ढाल बोल चाल और अन्दाज़ इन्सान के अन्दर हैवान को बेदार कर देता है। मै जवान हूं। कई साल मैदाने जंग में और कुछ अर्सा सूडान के कैदख़ाने में जंगी कैदी की हैसियत से गुज़ारा है। इतनी लम्बी मुद्दत से घर की चहार दिवारी नहीं देखी। रात ख़ेमे में तुम मेरे साथ तन्हा थीं। मैं रात भर ख़ुदाए ज़ुल्जलाल से मदद मांगता रहा हूं कि मैं हैवानियत का मुकाबला कर सकूं। मैं कामयाब रहा ख़ुदावन्द दोआलम ने मेरी बहुत मदद की। फिर मैं यह सोंचता रहा कि तुम्हें अपना दुश्मन समझूं या दोस्त। मैं अब भी यही सोंच रहा हूं। मैं अभी तुम्हारा यह शक रफ़ा नहीं कर सकता कि मैं तुम्हें अपना दुश्मन समझता हूं। तुम्हें साबित करना है कि तुम काबिले अतमाद हो।"

"मैं तुम्हें एक बार फिर कहती हूं कि तुम ने मेरे सीने में ईमान की शमा रौशन कर दी है।" आशी ने कहा— "और मैं तुम्हें बतादूं कि तुम अगर उस मुहिम में जिस पर तुम्हें सूडानियों ने भेजा है, सूडानियों को धोखा देना चाहोगे तो मैं तुम्हारा साथ दूंगी। मेरी जान भी चली जाए तो पीछे नहीं हटूंगी। यह मैं ने ही तुम्हें बताया था कि यह जो दो आदमी तुम्हारे मुरीद बन गये हैं दरअसल सूडानियों के जासूस हैं।"

"मुझे सोंचने दो आशी!" उमरू दूरवेश ने कहा— "मैं जान गया हूं कि मेरे इर्द गिरद जासूसों का जाल बिछा हुआ है। मैं तुम्हें भी इस जाल का एक हिस्सा समझता हूं। तुम अभी

उसी तरह करना जिस तरह तुम्हें बताया गया है। मैं भी उसी सबक़ और हिदायत पर अमल करूंगा जो मुझे दी गयी है। मैंने तुम्हें कहा था कि मैं किसी और मकसद के लिए जा रहा हूं मगर मैं इस मुहिम से इन्हेराफ़ भी नहीं कर सकता। मैं इन्हेराफ़ का नतीजा जानता हूं क्या होगा। दो तीन तीरों के रूख़ हर लम्हा मेरी तरफ़ रहते हैं। मैं उन्हें उस वक़्त देख सकूंगा जब यह मेरे सीने में उतर जायेंगे।"

"मैं हर हाल में तुम्हारा साथ दूंगी।" आशी ने कहा– "मैं साबित करूंगी कि मेरी रगों में मुसलमान बाप का ख़ून है।"

वह ऊंटों पर सवार मुसलमानों के इलाके की तरफ़ जा रहे थे। तीसरे ऊंट पर उनका ख़ेमा और दिगर सामान लदा हुआ था। आशी जो नीम उरियां रहती थी, स्याह कपड़ों में मलबूस और उसका चेहरा मस्तूर था। देखने वाला कह नहीं सकता था कि यह आबरू बाख़्ता लड़की सलीबियों का एक ख़ुबसूरत तीर है जो पत्थर जैसे इन्सान के दिल में उतर जाए तो वह मोम होकर सलीबियों के सांचे मे ढल जाता है। दूर एक घोड़सवार उसी सिम्त जा रहा था जिधर यह दोनों जा रहे थे। उमरू दूरवेश ने उस सवार को कई बार देखा था वह सोच रहा था कि यह सूडानियों के उन जासूसों में से ही होगा जो उसके साथ साये की तरह लगे हुए हैं। यह शक उसे परेशान कर रहा था कि यह सेहराई रहज़नों का कोई आदमी हुआ तो वह क्या करेगा।

"आशी!" उसने अपनी हमसफ़र से कहा– "उस सवार को देख रही हो जो उफ़क पर जा रहा है?'

"बहुत देर से देख रही हूं।"

"अगर वह रहज़नों के गिरोह का हुआ तो क्या हम मुकाबला कर सकेंगे?"

"हमारे पास हथियार हैं।" आशी ने दिलेराना जवाब दिया– "रात को सोते में हम पर आ पड़े तो मैं कुछ कह नहीं सकती। दिन के वक़्त हम उनका मुकाबला करेंगे। तुम्हारे साथ मैं ही एक दौलत हूं। वह मुझे ज़िन्दा नही ले जा सकेंगे।"

सेहरा के उन ख़तरों में वह चलते गये। सूरज ऊपर आकर मग़रिब की तरफ़ नीचे जा रहा था और उन्हें पहाड़ियां नज़र आने लगीं। बुलन्द पहाड़ियां तो दूर थीं, यह इलाका जहां से शुरू होता था वह जगह दूर नहीं थी। ऊंट चलते गये और वह इलाका आ गया जहां उमरू दूरवेश को अपनी मुहिम का अग़ाज़ करनाथा। मुसलमानों का पहला गांव थोड़ी ही दूर था। उमरू दूरवेश ख़ुद भी इस इलाके का रहने वाला था। घोड़सवार जो दूर–दूर जा रहा था, रूख़ बदल कर इधर आ गया और उसे आ मिला।

"तुम्हारा कयाम इस जगह होगा।" घोड़सवार ने उमरू दूरवेश से कहा– "तुम मुझे नहीं जानते, मैं तुम्हें जानता हूं।" उसे देखकर आशी ने चेहरे से नकाब उठा दिया था और वह मुस्कुरा रही थी। सवार ने उससे पूछा– "सफ़र अच्छा गुज़रा?"

"बहुत अच्छा।" आशी ने बेबाक मुस्कुराहट से जवाब दिया।

"तुम घबराना नहीं।" सवार ने उन्हें कहा– "तुम्हारे सफर के दौरान तुम्हारी हिफ़ाज़त

का ऐसा इन्तज़ाम साथ–साथ रहा है जिसे तुम दोनों देख नहीं सके, वरना इतनी ख़ूबसूरत लड़की यहां तक न पहुंच सकती।"

"तुम कौन हो?" उमरू दूरवेश ने उससे पूछा।

"सूडानी मुसलमान।" सवार ने जवाब दिया। उसने कहा– "अब यह न सोचो कि तुम कौन हो और मैं कौन हूं। तुम भी मेरी तरह इसी इलाके के मुसलमान हो। तुम अच्छी तरह जानते हो कि यहां ज़रा भी ग़लती हो गयी तो यहां के मुसलमान हमारी बोटियां उड़ा देंगे।" सवार ने आगे होकर राज़दारी से कहा– "और यह भी याद रखना तुमने अपने काम में कोई गड़बड़ी की तो बेग़ैर इत्तलाअ कत्ल हो जाओगे। तुम्हे अच्छी तरह मालूम है यहां तुम्हें क्या करना है। आज रात तुम आराम करोगे। कल तुम्हारे पास यहां के लोग आने लगेंगे। आशी को मालूम है कि उसे क्या करना है।"

उमरू दूरवेश को सब कुछ मालूम था। उसे इस इलाके के मुसलमानो को गुमराह करना था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ नफ़रत फैलानी थी और मुसलमानों को सूडान का वफ़ादार बना कर उन्हें सूडानी फौज में भर्ती होने के लिए तैय्यार करना था जिसे मिस्र पर हम्ला करने के लिए तैय्यार किया जा रहा था। सुल्तान अय्यूबी मिस्र से ग़ैर हाज़िर था। वह इस वक़्त .... बरसरे पैकार था। सलीबियों का यह मंसूबा था कि सूडानी फौज को तैय्यार करके मिस्र पर हम्ला किया जाये मगर सूडानी मुसलमान के जंगजू कबीले सूडान के बाशिन्दे होने के बावजूद सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुअतकिद और मुरीद थे। उमरू दूरवेश उन के अक़ीदों को तहस–नहस करने आया था।

सूरज ग़ुरूब हो गया था उमरू दूरवेश ने उस सवार की मदद से ख़ेमा गाड़ लिया। सवार ने जाने से पहले कहा– "कल शायद मुझे तुम्हारे साथ अलग बात करने का मौका न मिले। लोग सुबह सवेरे यहां आ जायेंगे।" उसने एक पहाड़ी की तरफ़ इशारा करके कहा– "शाम को धुंधलाहट में भी वह ऊपर तुम्हें छाते की तरह दरख़्त नज़र आ रहा होगा उसे याद रखना। कल रात तुम्हें उधर मशाल का इशारा करना है। कल जो कपड़ा तुम्हें इस्तेमाल करना है उसे सुबह तैय्यार कर लेना....मैं जा रहा हूं। अब ज़रा सी हरकत में भी एहतियात करना।"

वह लड़की को इशारे से बाहर ले गया और उसे कहा– "तुम्हें ज़्यादा एहतियात की ज़रूरत है। यहां के मुसलमान वहशी हैं। हम तुम्हारी हिफ़ाज़त के लिए मौजूद हैं लेकिन तुम्हें अपनी हिफ़ाज़त ख़ुद ज़्यादा करनी होगी। इस आदमी को अपने कब्ज़े में रखना।" उस ने लड़की के शानू पर बिखरे बालों को छेड़कर और होठों पर शैतानी मुस्कुराहट लाकर कहा– "इस हसीन जंज़ीरों में तुम तो शेर को भी जकड़ सकती हो।"

"तुम भी तो यहीं के मुसलमान हो।" आशी ने तन्ज़िया कहा– "तुम वहशी नहीं हो?"

"तुम्हें देखकर कौन वहशी नहीं हो जाता।" उसने कहा और घोड़े पर सवार होकर शाम के गहरे होते अंधेरे में ग़ायब हो गया।

❖

यह सवार उन मुसलमानों मे से था जिन्होंने ईमान बेच डाला था। वह दुश्मन के उस

ज़मीनदोज़ हम्ले की क़यादत कर रहा था जो सीधे सादे मुसलमानों के अकीदे पर किया जा रहा था। वह उसी इलाके के किसी गोशे का रहने वाला था। किसी को मालूम न था कि वह क़ौम की आस्तीन का सांप है। इस हम्ले में वह अकेला नहीं था यह आठ दस मुसलमानो का गिरोह था। वह घोड़े पर सवार एक गांव की तरफ़ चला जा रहा था। रास्ते में उसे एक और आदमी मिल गया। वह उसी की राह देख रहा था।

"सब ठीक है?", उसने सवार से पूछा।

"है तो सब ठीक।" सवार ने जवाब दिया— "किसी भी वक़्त मामिला चौपट हो सकता है। अगर सलीबियों ने मुझे पक्के सबक पढ़ाये हैं तो मैं कह सकता हूं कि लड़की के तेवर बदले हुए लगते हैं। वह कुछ बुझी–बुझी और ख़ामोश नज़र आती है।"

"आशी तो कहते हैं बहुत होशियार और तेज़ लड़की है।"

"शायद सफ़र की थकन से तेज़ी मांद पड़ गयी हो।" सवार ने कहा— "उमरू दूरवेश भी तो वहशी है।"

वह बातें करते गांव में दाख़िल हुए। एक जगह दो आदमी खड़े बातें कर रहे थे। सवार और साथी उनके पास रूक गये बताया कि वह सफ़र में हैं और अपने गांव जा रहे हैं। अपने गांव का नाम भी बताया और हैरतज़दा लहजे में कहा— "यहां से थोड़ी दूर एक बुज़ुर्ग उतरा हुआ है। सिर्फ़ ख़ुदा के साथ बातें करता है। दिन के वक़्त भी दायें और बायें दो मशालें जला कर रखता है। हम उसे देखकर उसके पास बैठ गये। वह क़ुर्आन पढ़ रहा था। ज़ुबानी पढ़ता है। उसने हमारी तरफ़ तवज्जो नहीं दी। हमने उसे बुलाया। वह नहीं बोला। उसके ख़ेमे के करीब से ज़मीन से धुंए का बादल उठा। बादल ऊपर जाकर ग़ायब हो गया और उस में से एक लड़की निकली जिसके हुस्न को हम बयान नहीं कर सकते। हम डर गये क्योंकि लड़की इन्सान नहीं जिन्न मालूम होती थी। उसने बुज़ुर्ग के आगे सज्दा किया। सज्दे से उठकर कान बुज़ुर्ग के मुंह के साथ लगाया। बुज़ुर्ग के होंठ हिले। लड़की हमारे सामने आ खड़ी हुई.....

हम डरकर भागने लगे लेकिन ज़मीन ने हमें पकड़ लिया, शायद लड़की की आंखों ने जकड़ लिया। उसने हमें कहा— "यह ख़ुदा का एल्ची है। तुम सब के लिए पैग़ाम लाया है। उसे परेशान न करो। यह इस वक़्त ख़ुदा के साथ बातें कर रहा है। कल आओ। अगर उसने तुम पर करम किया तो सबको नूर का जल्वा दिखायेगा। मैं अभी कोहेतूर से आई हूं। इसने बुलाया था। इसने मेरे कान में कहा है कि उनसे कहो कि तुम्हारी तकदीर बदल दूंगा। बेसब्र हो जाओगे तो कहीं और चला जाऊंगा' हम लड़की के साथ बात नहीं कर सके। हमारे जिस्म पर उसका कब्ज़ा हो गया था। हम कुछ भी नहीं बोल सके बुज़ुर्ग की तरफ़ देखा तो उसके सर पर नूर का हाला था। हम वहां से चले आए।"

उनका लहजा सनसनीखेज़ था। साफ़ पता चलता था कि उनपर हैरत और ख़ौफ तारी है। इन्सानी फ़ितरत की यह कमज़ोरी है कि हैरत अंगेज़ बात जज़्बात को हिला देती है। सनसनी सुरूर देती है। यही हाल उन दो सुनने वालों का हुआ। उन्होंने दो घरों के दरवाज़ों पर दस्तक देकर दो तीन आदमियों को बुला लिया और जो उन्होंने सुना था वह उन्हें सुना

दिया। सवार और उसके साथी ने दिल पसन्द और लज़ीज़ से इज़ाफ़े भी कर दिए। लड़की का हुस्न ऐसे अल्फ़ाज़ में बयान किया सुनने वाले ख़ुदा और कुर्आन की बजाये और उस बुज़ुर्ग की बजाये अपने दिमाग़ों पर लड़की को सवार करने लगे। उन आदमियों ने सवार और उसके साथी को मेहमान ठहरा लिया। दूसरे घरों के आदमी भी आ गये।

❖

अभी सूरज नहीं निकला था। जब उस गांव के तमाम आदमी सवार और उसके साथी की रहनुमाई में उस जगह को रवाना हो गये जहां उमरू दूरवेश और आशी ने ख़ेमा लगा रखा था। ख़ेमे के सामने छोटे से कालीन पर उमरू दूरवेश आलती पालती मारे बैठा था, आंखें बन्द किये कुछ बड़बड़ा रहा था। एक डंडा उसके दायें तरफ़ और एक बायें तरफ़ में गड़ा हुआ था। उनके ऊपर वाले सिरों पर तेल में भींगे हुए कपड़े लिपटे हुए थे जो जल रहे थे। यह मशालें थीं। जब गांव वाले वहां पहुंचे तो उमरू दूरवेश से आठ दस क़दम दूर तीन आदमी खड़े थे। गांव के लोग आये तो उन तीनों के पास रूक गये।

उन तीन में से एक ने कहा– "मैं आगे जाकर बुज़ुर्ग से बात करता हूं" वह तीन चार क़दम आगे गया तो यूं पीछे को पीठ के बल गिरा जैसे आगे से किसी ने धक्का दे दिया हो। वह उठ कर लोगों में जा खड़ा हुआ। ख़ौफ़ से वह कांप रहा था। उस ने ख़ौफ़ज़दा आवाज़ में कहा– "आगे न जाना। मुझे किसी ने आगे से धक्का दिया है। यह कोई जिन्न था जो मुझे नज़र नहीं आया।"

दूसरे ने कहा– "हम आगे जाते हैं। तुम डरकर गिर पड़े थे।" वह दोनों इकठ्ठे आगे गये। तीन चार क़दम गये तो दोनों भी पहले आदमी की तरह पीठ के बल गिरे। जल्दी से उठे। लोग डर गये। सबको यक़ीन हो गया कि उस बुज़ुर्ग ने पहरे पर जिन्नात खड़े कर रखे हैं जो किसी को आगे नहीं जाने देते।

ख़ेमे से एक लड़की निकली। यह आशी थी। उसने स्याह रेशमी लिबास पहन रखा था। थोढ़ी और मुंह बारीक पर्दे में थे। आंखें नंगी थीं। सर स्याह कपड़े से ढांप रखा था। बाल शानू से होते हुए सीने पर पड़े हुए थे। वह थी मस्तूर लेकिन लिबास ऐसा था कि नीम उरियां लगती थी। उस पहाड़ी इलाक़े के लोगों ने इस क़िस्म की लड़की पहले कभी नहीं देखी थी। वह उसे जिन्नात में से समझ रहे थे। उस की चाल भी निराली और दिलकश थी। आशी ने उमरू दूरवेश के आगे सज्दा किया। सज्दे से उठ कर कान उसके मुंह के साथ लगाया। उसके होंठ हिले। आशी उठ खड़ी हुई।

"तुम लोग वहीं खड़े रहो।" आशी ने लोगों से कहा– "कोई आदमी आगे आने की जुर्रत न करे। ख़ुदा के एल्ची ने पूछा है कि तुम यहां क्यों आये हो। तुम वहीं खड़े–खड़े बात कर सकते हो।"

उन तीन आदमियों में से जो आगे गये और गिर पड़े थे, एक आदमी बुलन्द आवाज़ से बोला–"ऐ ख़ुदा की तरफ़ से आने वाले! क्या तू आने वाले वक़्त की ख़बर दे सकता है?"

"पूछ क्या पूछता है?" उमरू दूरवेश ने मख़मूर सी आवाज़ में कहा।

"क्या हम इस ख़ित्ते को इस्लाम की रियासत बना सकेंगे जो सूडान की गुलाम न हो?" उस आदमी ने पूछा।

उमरू दूरवेश ने गुस्से से ज़मीन पर हाथ मारा। आशी दौड़कर उसके पास जा बैठी और कान उसके मुंह के साथ लगा दिया। उमरू दूरवेश के होंठ हिले। आशी उठकर लोगों से मुख़ातिब हुई।

"खुदा के एल्ची ने कहा है कि पानी को आग लग जाए तो इस ख़ित्ते को तुम इस्लामी रियासत बना लोगे जो सूडान की गुलाम नहीं होगी।" आशी ने कहा– "किसी के पास पानी हो तो उसे इस कपड़े पर उड़ेल दो।"

उमरू दूरवेश से ज़रा परे एक कपड़ा इस तरह पड़ा था जिस तरह किसी ने लिबास उतार कर गठरी की सूरत रख दिया हो। उन्हीं तीन आदमियों में से जो आगे बढ़े और गिर पड़े थे, एक आगे बढ़ा। उसके हाथ में चमड़े का छोटा सा मश्कीज़ा था। उसने कहा– "मेरे पास पानी है। मैं सफ़र में हूं इसलिए पानी साथ रखा है।" उसने आगे जाकर मश्कीज़े का मुंह खोला और कपड़े पर पानी का छिड़काव कर दिया।

आशी ने ज़मीन से मशाल उखाड़ कर उमरू दूरवेश के हाथ में दे दी। उमरू दूरवेश ने आसमान की तरफ़ मुंह करके होंठ हिलाए जैसे सरगोशी की हो, फिर उस ने मशाल का शोला कपड़े के साथ लगा दिया। किसी को तवक्क़ो नहीं थी कि पानी से भींगा हुआ कपड़ा जल उठेगा मगर हुआ यूं कि ज्योंहि मशाल का शोला कपड़े के क़रीब गया तो कपड़ा भड़क उठा और तमाम तर कपड़ा एक शोला बन गया। कई एक आदमियों के मुंह से हैरतज़दा आवाज़ें निकलीं। "अल्लाह" उनकी नज़रों के सामने पानी जल रहा था।

"खुदा के इशारे को समझ लो।" उमरू दूरवेश ने कहा– "और मुझे ग़ौर से देखो मैं कौन हूं। मैं तुम में से हूं।" उसने अपने गांव का नाम लेकर कहा– "मैं इसी इलाक़े के रहने वाले हाशिम दूरवेश का बेटा हूं। मैं नबी नहीं, मैं पैग़म्बर नहीं। खुदा अपना आख़िरी नबी भेज चुका है।" उसने अपनी उंगलियां चूम कर और आंखों से लगाकर कहा– "मैं भी तुम्हारी तरह खुदा के आख़िरी रसूल का परवाना हूं।" मुझे खुदा ने रौशनी दिखाई और हुक्म दिया है कि यह रौशनी उनके पास ले जाओ जो अंधेरे में हैं।"

वह ऐसे लहजे में बोल रहा था जैसे उस पर वज्द की कैफ़ियत तारी हो। उसने कहा– "मेरे गांव में जाकर पूछो। मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी का कमानदार हूं। मैं उस फ़ौज के साथ था जिस ने सूडान पर हम्ला किया था। उस फ़ौज का हम्ला नाकाम हुआ। तुम सबको अफ़सोस हुआ होगा लेकिन खुदाए ज़ुलजलाल ने मुझे मिस्र की फ़ौज की लाशों से उठाया और मुझे इशारा दिया कि सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज को क्यों शिकस्त हुई। मेरा अफ़सोस ख़ुशी में बदल गया। मैंने एक दरख़्त की शाख़ में खुदा का नूर देखा। यह एक रौशनी थी जैसे एक सितारा आसमान से उतर कर दरख़्त की शाख़ों में अटक गया हो। उस सितारे से आवाज़ आई– "आगे देख, पीछे देख, दायें देख, बायें देख.....

मैंने हर तरफ़ देखा। आवाज़ आई– "कोई इन्सान तुम्हें जिन्दा नजर आता है?" मुझे हर

तरफ़ लाशें नज़र आयीं। यह सब मेरे साथियों की लाशे थीं। हालत सब की बहुत बुरी थी। ज़ख़्मी बहुत कम थे। ज़्यादा सिपाही प्यास से मरे थे। यह सब लड़े थे। सितारे की रौशनी से आवाज़ आई– "क्या तूने देखा नहीं था कि तुम्हारी तलवारें कुन्द हो गयी थीं?....क्या तूने देखा नहीं था कि तुम्हारे तीरों की कोई रफ़्तार ही नहीं थी?......क्या तूने देखा नहीं था कि तुम्हारे घोड़ों के पांव ज़मीन में धंस गये थे?"....

"तब मुझे याद आया कि मैंने सब कुछ देखा जो रौशनी की सदा ने मुझे बताया था। मेरी तलवार की काट इतनी भी नहीं रही थी कि ख़राश भी डाल सकती। मैंने अपने तीर देखे थे जो हवा में यूं जाते थे जैसे हवा के झोंकों से घास के ख़ुश्क तिनके उड़ रहे हों। हमारे घोड़े चलते नहीं थे। रेगज़ार ने सूरज की सारी आग ले ली और मुझे और मेरे साथियों को भस्म कर दिया। मैं भी जली हुई लाश था। सितारे से एक शर्रारा आया। मेरी आंखों में उतरा और मेरे वजूद में उतर गया। आवाज़ आई– "हम ने तुझे दूसरी ज़िन्दगी अता की। हमसे पूछ हम ने यह क्यों क़िया?" मैंने पूछा। आवाज़ ने जवाब दिया– "हमें मुसलमानों से मोहब्बत है। मुलमान मेरे रसूल का कलमा पढ़ते हैं। हमारे हुज़ूर रूकूअ व सुजूद करते हैं। जिन की यह लाशे हैं, उन्हें हमने इबरत का सामान बनाया है कि यह भटक गये थे, और जो भटक रहे हैं उन्हें हम सीधा रास्ता दिखाना चाहते हैं। हमने तुझे मुन्तख़ब किया है कि तू हर सुबह कुर्आन की तिलावत करता है। जा हम ने तुझे रौशनी दी है। यह मेरे मुसलमान बन्दों को दिखा"....

"मैं अच्छी तरह नहीं समझा। मैंने कहा– "ऐ मेरे रब के नूर! मुझे पूरी बात बता और बता कि मेरी बात कौन मानेगा। किस तरह मानेगा। मुझे बताया गया कि हमारी तलवारें कुन्द क्यों हो गयी थीं? तीरों की रफ़्तार कहां गयी थी? रौशनी की आवाज़ ने कहा– "वह तलवार कुन्द हो जाती है। वह तीर ख़जूर का सूखा पत्ता बन जाता है जो अपनी मां के सीने पर चलाया जाता है। तू नहीं जानता कि मां कौन है। वह सरज़मीन जिसने तुझे जन्म दिया है। और जिस की मिट्टी में तू खेल कर जवान हुआ है। तेरी मां है। जा, सूडान के मुसलमानों से कह कि सूडान की ज़मीन तुम्हारी मां है। उससे मोहब्बत करो। उसकी मिट्टी में जन्नत है। इस जन्नत को फ़तह करने के लिए बाहर का कोई मुसलमान भी आयेगा तो वह दोज़ख़ में जायेगा। तूने दोज़ख़ देख लिया है जा, अपने कलमा गो सूडानी भाईयों को बता कि तुम्हारी मां, तुम्हारी जन्नत और तुम्हारा काबा सूडान है।"

"ऐ बर्गुज़ीदा हस्ती जिसका एहतराम हम सब पर फ़र्ज़ है".... एक आदमी ने कहा– "क्या तू यह कह रहा है कि हम सूडान के उस बादशाह के वफ़ादार हो जाएं जो हमारे रसूल को नहीं मानता?" यह आदमी उन तीनों में से था जो आगे बढ़े और गिर पड़े थे।

"ख़ुदा की आवाज़ ने कहा है कि यह बादशाह जो काफ़िर है मुसलमान हो जाएगा।" उमरू दूरवेश ने झूमती हुई असर अंगेज़ आवाज़ में कहा– "वह मुसलमानों की राह देख रहा है। उसकी फ़ौज काफ़िरों की है इसलिए वह ख़ुदा और रसूल का नाम नहीं लेता। तुम सब जाओ, तलवारें, बरछियां, तीर व कमान लेकर जाओ। ऊंटों और घोड़ों पर सवार होकर जाओ। उसे बताओ कि तुम उसके मुहाफ़िज़ हो। तुम सूडान के बेटे हो.....'मैंने ख़ुदा से कहा

कि मेरी ज़ुबान से यह बात कोई नहीं मानेगा। मेरे मुसलमान भाई मुझे कत्ल कर देंगे। ख़ुदा की आवाज़ जो दरख़्त के पत्तों में अटकी हुई रौशनी से आ रही थी, ने कहा– "हमारे सिवा पानी को कौन आग लगा सकता है। जा, हमने यह ताक़त तुझे उस शहादत के लिए दे दी कि लोग तेरी आवाज़ को हमारी आवाज़ समझेंगे। कोई इन्सान पानी को आग नहीं लगा सकता, ..फिर रौशनी से आवाज़ आई– 'अगर तेरी आवाज़ को लोग फिर भी बातिल जानें तो उन्हें रात को अपने पास बुला। मैं उन्हें वही जल्वा दिखाऊंगा जो मूसा को तूर पर दिखाया था'...

"क्या तूर का जल्वा देखकर हक़ की आवाज़ को मानोगे?" उमरू दूरवेश ने पूछा।

"हां, ऐ ख़ुदा के एल्ची!" उन तीन आदमियों में से एक ने कहा– "अगर तू हमें तूर का जल्वा दिखा दे तो हम तेरी आवाज़ को ख़ुदा की आवाज़ मान लेंगे।"

"जाओ।" उमरू दूरवेश ने ज़मीन पर गुस्से से हाथ मारकर कहा– "उस वक़्त आना जब सूरज अपने शोले पहाड़ों के पीछे ले जायेगा और आसमान पर सितारों की कंदीलें रौशन हो जाएंगी। जाओ।"

❖

लोग जब वापस गये तो उनके दिलों में कोई शक नहीं था। जाते–जाते वह चार–चार पांच–पांच की टोलियों में हो गये। इन्सानी फ़ितरत की कमज़ोरियां उभर आईं। अक़ीदे दब गये। जज़्बे सर्द हो गये। जज़्बात भड़क उठे। यह सीधे सादे पसमान्दा लोग थे। सनसनीख़ेज़ी ने उनकी अक्ल का रुख़ फेर दिया। उमरू दूरवेश के अल्फ़ाज़ में कुछ असर था या नहीं, लोगों ने उस असर को कुबूल किया और जो उस की आवाज़ में और उसके बोलने के अन्दाज़ में था। उन लोगों में से अगर किसी ने शक का इज़हार किया तो किसी न किसी ने कह दिया– "क्या तुम पानी को आग लगा सकते हो?" अभी रात को तूर का जल्वा देखना बाक़ी था। यह लोग आशी को जिन्न समझ रहे थे जिस का उन्होंने साफ़ अल्फ़ाज़ में इज़हार किया।

यह वह मुसलमान थे जिन्होंने सूडान की ग़ैर मुस्लिम शहंशाही को ख़ौफ़ज़दा कर रखा था। सूडान की फ़ौजों को उन्होंने उस पहाड़ी ख़ित्ते में बेबस करके पस्पा कर दिया था। वह ख़ुदा और रसूल के परस्तार और सलाहुद्दीन अय्यूबी के शैदाई थे। सूडान के बाशिन्दे होते हुए वह अपने कोहिस्तानी ख़ित्ते को आज़ाद इस्लामी रियासत कहते थे, मगर अल्फ़ाज़ की सनसनी, और चाश्नी और वज्द आफ़रीनी ने उन्हें राह से बेराह कर दिया और उनकी सोंचें भटकने लगीं। जिन्होंने फ़ौजों को पस्पा किया था उनके अक़ीदे पर सिर्फ़ एक इन्सान ने दिलकश वार किया तो उनके हथियार गिर पड़े। यह लोग जिधर गये अफ़वाहें फैलाते गये। उन्होंने जो देखा और जो सुना उसे और ज़्यादा दिलनशीं बनाने के लिए इज़ाफ़े करते गये।

"मुझे यह ख़द्शा परेशान कर रहा है कि सूडानी मुसलमान सनसनी ख़ेज़ तोहुमात के आगे हथियार डाल देंगे।" यह आवाज़ सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की थी जो सूडान से दूर, बहुत ही दूर फ़िलिस्तीन की दहलीज़ पर एक चट्टान के दामन में अपने मुशीरों और सालारों के दर्मियान बैठा था। अलआदिल का भेजा हुआ क़ासिद उसके पास पहुंच गया था। उसने अलआदिल का पैग़ाम पढ़ लिया था। मिस्र की इन्टेलीजेंस (शोबे जासूसी और सुराग़रसानी)

ने सूडानी मुसलमानों के मुतअल्लिक पूरी इत्तेलाअ मिस्र के कायम मुकाम अमीर अल आदिल को दी थी जो अलआदिल ने सुल्तान अय्यूबी के नाम एक पैग़ाम में लिख भेजी थी। उसमें यह भी लिखा था कि अली बिन सुफ़ियान ताजिरों के भेस में सूडान जा रहा है। पैग़ाम में अल आदिल ने सुल्तान अय्यूबी से पूछा था कि सूडानी मुसलमानों के पहाड़ी खित्ते में अपने छापामार भेजें जायें या नहीं।

उसने इस ख़दशे का इज़हार भी किया था कि हम छापामार चोरी छिपे भेजेंगे। अगर सूडानी हुकूमत को पता चल गया तो खुली जंग भी हो सकती है जब कि हमारी ज़्यादा तर फ़ौज अरब में लड़ रही है। पैग़ाम में तफ़सील से लिखा गया था कि सूडानी हुकूमत अपना वफ़ादार बनाने के लिए हमारे जंगी कैदियों को इस्तेमाल करने की कोशिश कर रही है।

सुल्तान अय्यूबी ने यह पैग़ाम पढ़ कर अपनी हाई कमाण्ड के सालारों और मुशीरों को सुनाया और कहा– "सूडान के यह मुसलमान सूडानी फौज के लिए कहरे इलाही हैं। तुम सब देख रहे हो कि उन में से जितने हमारी फ़ौज में हैं, वह किस बेजिगरी और जज़्बे से लड़ते हैं मगर दुश्मन जब उन्हें तिलिस्माती अल्फ़ाज़ में उलझाता और ज़ेहन को ख़्याली अय्याशी की तरफ़ मायल करता है तो वह रेत के बुत बन जाते हैं। अल आदिल ने लिखा तो नहीं कि सलीबी सूडान के मुसलमान इलाके में किरदार कुशी और ज़ेहनी तख़रीबकारी कर रहे हैं लेकिन तुम सब सलीबियों को जानते हो। वह इस फ़न के माहिर हैं। मुझे मालूम है कि सूडानियों के पास सलीबी मुशीर मौजूद हैं। वह ज़ेहनी तख़रीब कारी ज़रूर करेंगे।"

सुल्तान अय्यूबी ने अल आदिल के क़ासिद को खाने और आराम करने के लिए भेज दिया और कातिब को बुलाकर पैग़ाम का जवाब लिखवाने लगा। उसने लिखवाया:

"मेरे अज़ीज़ भाई अल आदिल!

खुदाए अज़्ज़ोवजल तुम्हारा हामी व नासिर है। तुम्हारे पैग़ाम ने सूडान के मुसलमानों के मुतअल्लिक सूरते हाल वाज़ेह कर दी है। तुम्हें हैरान नहीं होना चाहिए। तुम जानते हो कि कुफ़्फ़ार इस्लाम का ख़ातमा चाहते हैं। वह हर हरबा और हर हथकंडा इस्तेमाल कर रहे हैं। मैं इस इक़दाम की तारीफ़ करता हूं कि अली बिन सुफ़ियान गया है और तुमने उसे जाने की इजाज़त दे दी है। अल्लाह अली बिन सुफ़ियान की मदद करे। वह निहायत होशियार और मुस्तैद सुराग़रसां है। पत्थरों के अन्दर से भेद भी निकाल लाता है। वह वापस आकर तुम्हें बतायेगा कि वहां की सूरतेहाल क्या है और उसके मुताबिक क्या कार्रवाई करनी चाहिए.....

"तुम ने मुझसे पूछा है कि सूडान के मुसलमानों को छापामारों की मदद दी जाए या नहीं। तुमने इस ख़तरे का भी इज़हार किया है कि छापामार भेजे तो सूडानी जवाबी कार्रवाई करेंगे जो खुली जंग की भी सूरत इख़्तियार कर सकती है। तुमने अच्छा किया है कि मेरी इजाज़त ज़रूरी समझी है, लेकिन मैं तुम्हें ख़बरदार करना ज़रूरी समझता हूं कि अगर कभी हालात हंगामी हो जाएं तो मेरी इजाज़त लेने में वक़्त ज़ाया न करना तुम्हें यह मालूम हो गया था कि सूडान के क़ैदखाने के एक सिपाही ने सूडानी फ़ौज के दो कमानदारों को क़त्ल करके मुसलमानों के यहां पनाह ली और इस्लाम कुबूल कर लिया है, और तुम्हें मालूम हो गया था

कि सूडानी हमारे कैदियों को हमारे ख़िलाफ़ तैय्यार करने की कोशिश कर रहे हैं, और हमारे इस्हाक़ नामी एक कमानदार की बीवी और बेटी तक को उन्होंने धोखे से अग़्वा करने की कोशिश की है तो तुम्हें समझ जाना चाहिए था कि सूडानी मुसलमानों में कुछ ग़द्दार भी हैं। उन हालात में तुम्हें फौरी तौर पर छापामारों की कुछ नफ़री ताजिरों और मुसाफ़िरों के भेस में सूडानी सरहद में दाख़िल कर देनी चाहिए थी। ताहम अली बिन सुफ़ियान का चले जाना क़ाबिले तारीफ़ है.....

"मेरे अज़ीज़ भाई! यह अलग मसला है कि हमारे पास फ़ौज थोड़ी है और हम दूसरा मुहाज़ खोलने के काबिल नहीं लेकिन कुर्आन के उस फरमान से गुरीज़ न करो कि किसी भी ख़ित्ते में मुसलमानों पर कुफ़्फ़ार ज़ुल्म व तशद्दुद कर रहे हों या उन्हें लालच से या धोखे से अक़ीदों से गुमाराह कर रहे हों और उनका कौमी वक़ार और दीन व इमान ख़तरे में डाल दिया गया हो तो तमाम दुनिया के मुसलमानों पर जिहाद फ़र्ज़ हो जाता है। मैं कई बार कह चुका हूं कि सल्तनते इस्लामिया की कोई सरहद नहीं। इस्लाम के तहफ़्फ़ुज़ के लिए हम किसी मुल्क की सरहद में दाख़िल हो सकते हैं। तुम जानते हो कि हमने सूडानी मुसलमानों को अपने छापामार दे रखे हैं। जो उनके साथ काश्तकारों के रूप में रहते हैं। हम सूडानी मुसलमानों को जंगी सामान भी दे चुके हैं। अगर तुम ज़रूरत महसूस करो तो उन्हें और ज़्यादा मदद दो.......

"अगर सूडानी अपनी सरहद बन्द करने के लिए मिस्र पर फ़ौजकशी करें तो घबरा न जाना। थोड़ी सी फ़ौज से कई गुना फ़ौज का मुक़ाबला कर सकते हो। तुम उनका एक हम्ला तबाह कर चुके हो। दूसरा भी तबाह कर लोगे। सामने की टक्कर न लेना। दुश्मन को वहां घसीट लेना जहां तुम कम तादाद से ज़्यादा नुक़्सान कर सको। छापामारों का इस्तेमाल ज़्यादा करना और दुश्मन की रस्द काटने का इन्तज़ाम करना। तुम्हारी आधी जंग अली बिन सुफ़ियान के जासूस जीत लेंगे। लेकिन मुझे तवक्क़ो नहीं कि सूडानी हम्ले की हिमाक़त करेंगे। अगर उनके सलीबी मुशीरो ने अक़्ल से काम लिया तो वह हम्ले की बजाए अपने पहाड़ी इलाक़े के मुसलमानों को अपने साथ मिलाने की कोशिश करेंगे। अगर मुसलमान उनके वफ़ादार हो गये और उनकी फ़ौज में शामिल हो गये तो वह हर ख़तरा मोल ले सकते हैं, इसलिए तुम्हारी कोशिश होनी चाहिए कि मुसलमान उनकी ज़ेहनी तख़रीबकाकरी का शिकार न हों.....

"मैं वही बात दुहराऊंगा जो सौ बार कह चुका हूं। मुसलमान मैदाने जंग में शिकस्त दिया करता है, शिकस्त खाया नहीं करता, मगर उसके जज़्बात में जब हैवानी जज़्बा बेदार कर दिया जाता है तो वह तलवार उतार फेंकता है। मिल्लते इस्लामिया को जब भी ज़वाल आया इसी जज़्बे की बदौलत आयेगा। हमारा दुश्मन हमारी कौम मे यही आग भड़का रहा है। इस तरह हम बएक वक़्त दो मुहाज़ों पर लड़ रहे हैं। एक ज़मीन के ऊपर दूसरा ज़मीन के नीचे। हमारा दुश्मन हमें ज़हर में बुझे हुए तीरों से नहीं मार सका, वह अब हमें ज़ुबान की मिठास और अल्फ़ाज़ के जादू से बेकार और मफलूज कर रहा है। यह बड़ा ही ख़तरनाक

मुहाज़ है। होशियार रहना मेरे अज़ीज़ भाई!.......

"यहां के हालात साज़गार हैं। दुश्मन बुरी तरह बिखरा हुआ है। मैं उसे मरकज़ और इज्तमाअ की मुहलत नहीं दूंगा। अल्लाह की मदद मिलती रही तो मैं हलब ले लूंगा। मुकाबला शायद अभी सख़्त हो लेकिन मैंने कुछ और इन्तज़ामात कर लिए हैं। सलीबी सामने नहीं आये शायद अभी आयेंगे भी नही। वह भाईयों को आपस में लड़ाकर तमाशा देख रहे हैं। अगर उनका दुश्मन आपस में लड़ लड़ कर मर जाये तो उन्हें सामने आने की क्या ज़रूरत है.....

"अल्लाह तुम्हारी मदद करे। मुझे उम्मीद है कि तुम घबराओगे नहीं। ख़ुदा हाफिज़।"

❖

जिस वक़्त सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने यह पैग़ाम कासिद को देकर रवाना किया उस वक़्त उमरू दूरवेश के ख़ेमें में वह तीन आदमी बैठे हुए थे जो लोगों के हुजूम में आगे होकर उमरू दूरवेश की तरफ़ बढ़े थे मगर इस तरह पीछे को गिर पड़े थे जैसे किसी ने उन्हें आगे से धक्का दिया हो। लोग चले गये। उमरू दूरवेश बाहर से उठकर ख़ेमें के अन्दर चला गया था और तीन आदमी कुछ दूर तक लोगों के साथ गये और उनकी नज़र बचाकर एक–एक करके वापस आये और उमरू दूरवेश के ख़ेमें में चले गये थे। यह उसी के गिरोह के आदमी थे और वह उसी इलाके के मुसलमान थे। सूडानी हुकूमत से उन्हें बहुत इनाम मिलता था।

"मेरा ख़्याल था कि कपड़ा नहीं जलेगा।" उमरू दूरवेश ने कहा– "उसके नीचे आतिशगीर सय्याल कम रखा गया और ऊपर पानी ज़्यादा उंड़ेल दिया गया था।"

"तुम्हें अभी यह भी नहीं मालूम हुआ कि यह तेल पानी पर डाल दिय जाए तो जल उठता है।" उस आदमी ने कहा जिसने कपड़े पर मश्कीज़े से पानी झिड़का था– "हम पहले आज़मा चुके थे।"

"लोगों पर उसका असर क्या हुआ है?" उमरू दूरवेश ने पूछा।

"हम कुछ दूर तक उनके साथ गये थे।" एक ने जवाब दिया– "वह पानी को आग लगाने को तुम्हारा मुअज्ज़ि समझते हैं। कोई यकीन नहीं करता कि दुनिया का कोई इन्सान पानी को आग लगा सकता है। तुमने जिस अन्दाज़ से बातें की हैं वह उनके दिलों में उतर गया है। ख़ुदा की कसम!......"

"न दोस्त!" उमरू दूरवेश ने उसे टोक दिया और संजीदा लहजे में बोला– "ख़ुदा की कसम न खाओ। हम इस हक़ से महरूम हो गये हैं कि उस सच्चे ख़ुदा की कसम खाएं जिस के एहकाम की हम ख़िलाफ़ वरज़ी कर रहे हैं।"

"मालूम होता है अभी तुम्हारे दिल में सच्चा ख़ुदा मौजूद है।" एक आदमी ने कहा– "उमरू दूरवेश! तुम अपना ख़ुदा और अपना इमान फरोख़्त कर आए हो।"

दूसरे आदमी ने पास बैठी हुई आशी की रान पर हाथ फेर कर कहा– "और कीमत देखो कैसी मिली है। यह सलीब के बादशाहों का हीरा हे जो सूडान के हाकिमों ने तुम्हें दे दिया है।"

उमरू दूरवेश ने आशी की तरफ़ देखा तो आशी ने उसे गहरी नज़रों से देखते हुए आखें सिकोड़ीं। उसके माथे पर शिकन भी पैदा हुए। उमरू दूरवेश उस इशारे को समझ गया और

हंस कर बोला– "मुझे याद नहीं रहा। मैं इतनी ज़्यादा कीमत के क़ाबिल नहीं था....जाने दो उन बातों को आने वाली रात की बातें करो।"

"सब इन्तज़ाम तैय्यार है।" एक आदमी ने कहा– "तुमने हमारा कमाल देख लिया है। देखा हम किस तरह पीछे को गिरे थे? और तुम इसकी भी तारीफ़ करो कि हमने किसी और को बोलने नहीं दिया।"

"रात को तुम तूर का जल्वा दिखाओगे।" एक और आदमी ने कहा– "याद कर लो कि तुम्हें क्या करना है। हमारे आदमी तैय्यार हैं।"

"हमें चले जाना चाहिए।" तीसरे आदमी ने कहा– "अब ख़ेमे से बाहर न निकलना।" वह तीनों चले गये।

❖

सूरज ग़ुरूब होते ही लोग आना शुरू हो गये। दिन के वक़्त जो लोग उमरू दूरवेश की बातें सुन गये और पानी को आग लगने का मुअज्ज़िा देख गये थे उन्होंने जहां तक वह पहुंच सके "ख़ुदा के एल्ची" की तशहीर कर दी थी कि आज रात को उमरू दूरवेश कोहे तूर का जल्वा दिखायेगा जो ख़ुदा ने हज़रत मूसा को दिखाया था। सूडान के जासूस भी वहां मौजूद थे। उन्होंने अफ़वाहें फैलाने का काम जांफ़िशानी से किया। उसके नतीजे में शाम के बाद उमरू दूरवेश के ख़ेमे के सामने लोगों का हुजूम दिन की निस्बत ज़्यादा थी। ख़ेमे के अक़्ब में और दायें बाये किसी को खड़ा होने की इजाज़त न थी।

उमरू दूरवेश अभी ख़ेमें में था। बाहर दो मशाले जल रही थीं जिन के डंडे ज़मीन में गड़े हुए थे। लोग "ख़ुदा के एल्ची" को देखने के लिए बेचैन हो रहे थे। ख़ेमे के पर्दे को जुंम्बिश हुई। आशी सामने आई। उसका लिबास स्याह था। यह एक फ़राक सा था जो कंधो से पांव तक था। उस पर बर्क़ के ज़र्रे चिपके हुए थे जो मशालों की रौशनी में सितारों की तरह टिमटिमाते और चमकते थे। आशी के सर पर रेशम का बारीक रूमाल था। उसके बाल रेशम जैसे थे जो शानू पर इस अन्दाज़ से पड़े हुए थे कि उरियां शानू की सफ़ेदी उन में सितारों की तरह नज़र आती थी। वह ख़ूबसूरत तो थी ही, उसका बनाव सिंगार और सज धज ऐसी थी जिसमें तिलिस्माती सा तास्सुर था और जो हैवानी जज़्बे को उकसा रही थी।

पहाड़ियों और जंगलों में रहने वाले इन लोगों के लिए यह लड़की, उस की चाल और उसका लिबास अजूबे से कम न था। उनकी नज़रें गिरफ़तार हो गयीं और उन पर सेहर तारी हो गया। आशी के एक हाथ में गज़ डेढ गज़ लम्बे और उससे आधे चौड़े क़ालीन का एक टुकड़ा था जो उसने दोनों मशालों के दर्मियान बिछा दिया। उसने दोनों बाज़ूओं को फैलाए और आसमान की तरफ़ देखा। ख़ेमे का पर्दा हटा और उमरू दूरवेश मस्ताना चाल चलता क़ालीन पर खड़ा हो गया। उसने भी आशी की तरह बाज़ू दायें बायें फैलाए, आसमान की तरफ़ देखा और कुछ बड़बड़ाने लगा।

"ऐ ख़ुदा की बर्गुज़ीदा हस्ती जिसका एहतराम हम सब पर फ़र्ज़ है, हम तेरे हुज़ूर हाज़िर हुए हैं।" यह उन तीन आदमियों में से एक था जिनका ऊपर ज़िक्र हो चुका है। उसने कहा–

"तेरी दिन की बातें हमारे दिलों में उतर गयी है मगर एक शक है। हमें तूर का जल्वा दिखा जिसका तूने वादा किया था।"

"मिस्र फ़िरऔनों का मुल्क है।" उमरू दूरवेश ने बुलन्द आवाज़ से कहा– "फ़िरऔन मर गये मगर ख़ुदा ने मिस्र की बादशाही जिस को भी दी वह फ़िरऔन बना। यह मिस्र की ज़मीन की, पानी की और मिस्र की हवा का तासीर है। जो कलमए रसूल पढ़ते थे वह भी फ़िरऔन बने। हज़रते मूसा ने फ़िरऔनों की 'ख़ुदाई' को ललकारा और नील के पानी को काट कर दिखा दिया। अब मिस्र एक बार फ़िर फ़िरऔनों के कब्ज़े में आ गया है। वहां शराब की नहरें बहती हैं और पर्दा नशीन कुंवारियों की इस्मतों से खेला जाता है। ख़ुदाए ज़ुलजलाल ने हमारे इस ख़ित्ते को यह सआदत बख़्शी है कि मिस्र को फ़िरऔन से आज़ाद कराओ। ख़ुदावन्दे दोआलम ने तुम्हें कोहेतूर का जल्वा बख़्शा है।"

उमरू दूरवेश ने बाज़ू फैलाए और आसमान की तरफ़ देखकर जोशिली आवाज़ में कहा– "अपने भटके हुए बन्दों को अपना वही नूर दिखा जो तूने मूसा को दिखाया था।"

उसने लपक कर एक मशाल ज़मीन से उखाड़ी। रात तारीक हो चुकी थी। पहाड़ चट्टानें और दरख़्त अंधेरे की स्यही में रूपोश हो गये थे। रौशनी सिर्फ़ उन दो मशालों के शोलों की थी जिस में उमरू दूरवेश और आशी नज़र आ रहे थे। उमरू दूरवेश ने मशाल ऊपर की और एक सिम्त इशारा करके कहा– "उधर देखो। उधर एक पहाड़ी है। तुम उस पहाड़ी को नहीं देख सकते। उसका जल्वा देखो।"

उसने मशाल और ज़्यादा ऊपर करके दायें बायें लहराई। उसके साथ ही सामने पहाड़ी से एक शोला उठा और ज़रा सी देर में कम होते होते ख़त्म हो गया। लोगों के मुंह खुले के खुले रह गये। हैरतज़दगी ने उन की ज़ुबानें गूंग कर दीं।

"अगर तुमने ख़ुदा के इस जल्वे को भी अपने दिलों में न उतरा तो यह शोला जो तुम ने देखा है तुम्हारे इस सर सब्ज़ इलाके को रेगज़ार बना देगा।" उमरू दूरवेश ने कहा– "मैं उसे रोक नहीं सकता। उसे तुम ने दावत दी है।"

उमरू दूरवेश अपने ख़ेमें में चला गया। आशी ने लोगों को इशारा किया वह चले जाएं। लोग वहां से जाने लगे तो एक दूसरे के साथ बात करते हुए घबराते थे। उनके दिलों में कोई शक नहीं रहा था। वह जब ख़ेमे से दूर निकल गये तो एक आदमी जो उनके साथ था, दौड़ कर आगे हुआ और सब की तरफ़ मुंह करके रूक गया। सबने देखा वह एक गांव की मस्जिद का पेशइमाम था।

ज़रा रूक जाओ।" इमाम ने बाज़ू फैला कर कहा– "सब रूक गये तो उसने कहा– "अपने ईमान को क़ाबू में रखो, मुसलमानों! यह जादूगरी है। जो तुम देख आये हो यह शोअब्दाबाज़ी है। रसूले ख़ुदा के बाद न कोई पैग़म्बर आया है, न आयेगा। ख़ुदा ऐसे गुनहगारों को जल्वे और नूर नहीं दिखाया करता जो अपने साथ बेहया लड़कियां लिए फिरते हैं।"

"यह लड़की नहीं जिन्न है।" एक आदमी ने कहा।

"जिन्नात इन्सानों के रूप में नही आ सकते।" इमाम ने कहा– "जिन्नात किसी इन्सान

के गुलाम नहीं हो सकते। मुसलमानों! अपने अकीदे की हिफ़ाज़त करो। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी फ़िरऔन नहीं, वह ख़ुदा का सच्चा बन्दा है। उसने पैग़म्बरी का दावा नहीं किया। वह तुम्हारे मज़हब का पासबान और सलीब का दुश्मन है।"

"मोहरतम इमाम!" एक आदमी ने कहा— "क्या आप पानी को आग लगा सकते हैं?"

"इसकी न सुनो।" एक और आदमी ने कहा— "यह अपनी इमामत क़ायम रखना चाहता है।"

"हमने जो देखा है वह आप दिखादें।" एक और ने कहा— "फिर हम आप की इताअत कुबूल कर लेंगे।"

"मेरे साथ उस पहाड़ी पर चलो ज़हां से शोला उठा था।" इमाम ने कहा— "मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि यह क्या शोअब्दा है। अगर मैं ग़लत हुआ तो मुझे उसी जगह क़त्ल कर देना जहां शोला भड़का था।"

"हम ख़ुदा के कामों में दख़ल देने की जुर्रत नहीं करेंगे।" एक आदमी ने कहा।

दो तीन आदमी एक साथ बोल पड़े। वह भी इमाम के ख़िलाफ़ बोल रहे थे। उन्होंने लोगों को ऐसा इश्तेआल दिलाया कि सब चल पड़े और इमाम को धक्के देते आगे चलते गये। इमाम अकेला खड़ा रहा।

❖

कुछ देर वहां खड़ा रहकर इमाम उस पहाड़ी की तरफ़ चल पड़ा जिस पर शोला उठा था। वह बहुत ही तेज़ चला जा रहा था। एक पथरीले वीराने से गुज़र कर चट्टान के दामन में पहुंचा तो दो आदमी उससे कुछ दूर पीछे चले जा रहे थे।

इमाम चट्टान के साथ साथ चला जा रहा था। पीछे जाने वाले दोनो आदमी और तेज़ हो गये। उनकी क़दमों की आहटें सुन कर इमाम रुक गया। वह दोनों उसके क़रीब जा रुके। उनके चेहरे कपड़ों से छिपे हुए थे। इमाम ने उनसे पूछा कि वह कौन हैं। उन्होंने कोई जवाब न दिया। उनमें से एक इमाम के पीछे चला गया। इमाम उसकी तरफ़ मुड़ा तो दूसरे ने इमाम की गर्दन के गिर्द अपना बाज़ू लपेट लिया। इमाम ने कमरबन्द से ख़ंजर निकाला मगर उसका ख़ंजर वाला हाथ एक आदमी के हाथ के शिकन्जे में आ गया। उसकी गर्दन दूसरे आदमी के बाज़ू के शिकन्जे में थी जो इतना तंग और सख़्त हो गया था कि उसका सांस रुक रहा था।

उसने आज़ाद होने की आख़िरी कोशिश की। वह पूरी ताक़त से उछला। दोनों पांव जोड़कर सामने वाले के पेट में मारे। उसे पीछे से एक आदमी ने जकड़ रखा था। सामने वाला इमाम की लातों से पीछे को गिरा और उसके पीछे वाला धक्का बर्दाश्त न कर सका। वह भी पीछे को गिरा और इमाम की गर्दन पर उसकी बाज़ू की गिरफ़्त ढीली पड़ गयी। इमाम ने एक और झटका दिया और आज़ाद हो गया। वह अब एक ख़ुंरेज़ लड़ाई के लिए तैय्यार होकर उठा लेकिन वह दोनों आदमी भाग गये। उनके भागने की वजह ज़रूर यह हो सकती थी कि वह दोनों इसी इलाके के मुसलमान थे। उन्हें पहचाने जाने का ख़तरा था। इमाम ने उन्हें

पुकारा, ललकारा लेकिन वह ग़ायब हो गये थे। इमाम ने आगे जाना मुनासिब न समझा और वहीं से वापस चला गया।

उमरू दूरवेश के ख़ेमें में वही तीन आदमी बैठे थे जो दिन के वक़्त भी उसके पास आये थे। उन्होंने उमरू दूरवेश को बताया कि लोग वही तास्सुर लेकर गये हैं जो उनपर पैदा करने की कोशिश की गयी थी। उन्होंने उसे यह भी बताया कि कल रात उसे आगे एक और गांव के क़रीब जाना है और "नूर का जल्वा" एक और पहाड़ी पर दिखाना है। तीनों चले गये। आशी उमरू दूरवेश के साथ अकेली रह गयी।

"क्या तुम अपनी कामयाबी पर ख़ुश हो?" आशी ने कहा।

"आशी!" उमरू दूरवेश ने आह लेकर कहा– "मैं तुम्हें इस क़िस्म के सवालों का जवाब देने से डरता हूं।"

"क्या तुम यह चाहते हो कि मैं सलीबियों और सूडानियों के हाथों में खिलौना बनी रहूं?" आशी ने कहा– "तुमने मेरे अन्दर ईमान बेदार किया है और अब तुम मुझ पर अतबार नहीं करते।"

"मैं अतबार तुम्हारे अमल पर करूंगा।" उमरू दूरवेश ने कहा– "तुम्हारे अल्फ़ाज़ पर नहीं।"

"मुझे बताओ कि मैं क्या करूं।" आशी ने कहा– "जो तुम कहोगे वही करूंगी।"

"अभी यही करती रहो जो कर रही हो।" उमरू दूरवेश ने कहा–"वक़्त आने पर तुम्हें बताऊंगा कि क्या करना है।"

"हो सकता है तुम्हें यह बताने का वक़्त ही न मिले कि मुझे क्या करना है।" आशी ने कहा– "तुमने देख लिया है कि तुम्हारे इर्द गिर्द जासूस का जाल बिछा हुआ है। जहां तुमने ज़रा सी मश्कूक हरकत की यह जासूस तुम्हें ग़ायब या क़त्ल कर देंगे और मुझे अपने साथ ले जाएंगे। अगर तुम मुझे पहले ही बतादो कि तुम्हारा इरादा क्या है तो मैं तुम्हें बरवक़्त ख़बरदार कर सकूंगी। मुझे तो वह बहरहाल अपने गिरोह का फ़र्द समझते हैं।

"आशी के अन्दाज़ में कुछ ऐसी सादगी और ख़ुलूस था जिस से उमरू दूरवेश कायल हो गया कि यह लड़की उसे धोखा नहीं देगी। उसने कहा– "तुम्हारे कमालात देखता हूं तो डरता हूं कि तुम मुझे धोखा दोगी।"

"कमालात में तो तुम भी कम नहीं हो।" आशी ने कहा– "इसलिए तो मैं महसूस कर रही हूं कि तुमने अपनी क़ौम को धोखा देने का पुख़्ता इरादा कर लिया है।"

"मैं तुम्हें अपना इरादा बता देता हूं।" उमरू दूरवेश ने कहा– "और यह भी बता देता हूं कि तुमने अपना वादा पूरा न किया और मुझे फ़रेब दिया तो तुम ज़िन्दा नहीं रहोगी। मैं क़त्ल हो जाने से नहीं डरता और क़त्ल करने से भी नहीं डरूंगा। मैंने रास्ते में तुम्हें बताया था कि मैं किसी और मक़सद के लिए जा रहा हूं। मुझे उम्मीद थी कि मैं यहां अपने इलाक़े में आकर अपने ख़ुफ़िया मक़सद में आसानी से कामयाब हो जाऊंगा मगर यहां आकर देखा कि सूडानियों ने मुझे जासूसों के घेरे में ले रखा है। मुझे दूसरा ग़म यह हो रहा है कि मैंने अपनी क़ौम की

पीठ में खंजर उतार दिया है। मैं अपने असल मकसद की ख़ातिर अपने आप को पोशीदा रख रहा हूं मगर मेरी कारिस्तानी जिसे तुम कमाल कहती हो मेरी कौम के मज़हबी अकीदे को ज़हर की तरह मार रही है। मैंने अगर यह सवांग जारी रखा तो यह मुसलमान सूडानियों की गुलामी की ज़जीरों में बंध जाएंगे और उनका कौमी वकार हमेंशा के लिए ख़त्म हो जाएगा।"

"तुम क्या करना चाहते हो?" आशी ने पूछा।

"मैं इस्हाक के गांव तक पहुंचना चाहता हूं।" उमरू दूरवेश ने कहा– "तुम इस्हाक को जानती हो। वही कमानदार जो जंगी कैदी की हैसियत से कैदखाने में पड़ा है। उसे अपने रंग में रंगने के लिए तुम्हें भी एक रात उसके पास भेजा गया था।"

"उस शख़्स को तो मैं सारी उम्र नहीं भूल सकूंगी।" आशी ने कहा– "उसकी भी इतनी ही मुरीद हूं जितनी तुम्हारी हूं।"

"मैं उसके घर तक पहुंचना चाहता हूं।" उमरू दूरवेश ने कहा– "फिर मैं अपने गांव जाने का इरादा रखता हूं। यह सोंच कर आया था कि यहां आकर ग़ायब हो जाऊंगा और यहां के लोगों को बताऊंगा कि वह सूडानियों के हंथकंडों से बचें।"

"मालूम होता है तुमने कोई बकायदा मंसूबा नहीं बनाया था।" आशी ने कहा– "हमें जिस काम के लिए भेजा जाता है उसका हमे बड़ा वाज़ेह मंसूबा दिया जाता है।"

"मैं कैदखाने में ज़ालिमाना अज़ीयतें सह–सह कर निकला हूं।" उमरू दूरवेश ने कहा– "इतनी सी अक्ल रह गयी थी कैदखाने से निकलने का यह तरीका सोंच लिया था। यहां आकर हालात ऐसे हो गये कि अपने मकसद की कामयाबी नामुम्किन नज़र आती है।"

"अब मुझे सोंचने दो।" आशी ने कहा– "अगर हम ख़ुदा की राह में साबित कदम रहे तो तुम अपने मकसद में कामयाब हो जाओगे। कल हम आगे जा रहे हैं। कोई सूरत निकल आयेगी।"

"ज़रूरत यह है कि हमें वहां के किसी अक्लमंद आदमी के साथ मुलाकात का मौका मिल जाए।"

❖

इसी इलाके में उमरू दूरवेश के ख़ेमे से दो ढाई मील दूर मिस्री ताजिरों का एक काफ़िला आया। चार आदमी और छः ऊंट थे। काफ़िले का सरदार दाढ़ी वाला एक बुज़ुर्ग सीरत इन्सान था। जिस ने एक आंख पर सब्ज़ रंग के कपड़े का टुकड़ा लटका रखा था जैसे उसकी यह आंख ख़राब हो। यह काफ़िला दो रातें पहले सूडान की सरहद में दाख़िल हुआ था। पहले बताया जा चुका है कि सुल्तान अय्यूबी ने मिस्र से सूडान में अनाज स्मगलिंग करने की दरपर्दा इजाज़त दे रखी थी। दूसरी अज्नास भी स्मगल की जाती थीं। सूडान में इन अश्या की किल्लत थी। मिस्र के यह स्मगलर दरअसल सुल्तान अय्युबी की इन्टेलीजेंस के आदमी थे। उन्हें मिस्र के सरहदी दस्ते नहीं रोकते थे और सूडान की सरहद के पहरेदार भी उन्हें नज़रअन्दाज़ कर देते थे।

यह काफ़िला भी बिला रोक टोक सरहद पार करके सूडान में दाख़िल हो गया लेकिन

रात की तारीकी की वजह से सूडान के सरहदी पहरेदार यह न देख सके कि चार ताजिरों और छः ऊंटों का यह काफिला सूडान के किसी शहर की तरफ जाने की बजाए उस पहाड़ी इलाके के सिम्त चला गया है जहां मुसलमान आबाद थे। उधर ताजिरों के किसी काफिले को जाने की इजाज़त नहीं थी क्योंकि सूडान की हुकूमत मुसलमानों को अनाज और दिगर अज्नास से और तिजारत से महरूम रखना चाहती थी। यह काफिला रात भर चलता रहा। सुबह हुई तो ऊंटों को टीलों के इलाके में छिपा दिया गया। सरहद पीछे रह गयी थी। उन लोगों ने सारा दिन वहीं छिप कर गुज़रा।

रात तारीक हुई तो काफिला फिर चल पड़ा, और आधी रात के वक़्त पहाड़ी इलाके में दाख़िल हो गया। यही काफले की मंज़िल थी। सेहर के वक़्त काफला एक गांव में दाख़िल हुआ। मीरे कारवां एक मकान के सामने रुका दरवाज़े पर दस्तक दी। कुछ देर बाद दरवाज़ा खुला। एक आदमी हाथ में दीया लिए बाहर आया। मीरे कारवां ने उसके कान में कुछ कहा। दरवाज़ा खोलने वाले ने कहा– "ख़ुश आमदीद.....तुम सब फ़ौरन अन्दर चलो। ऊंटों को हम संभाल लेंगे।"

चारों ताजिर अन्दर चले गये। मेज़बान ने अपने घर वालों को और पड़ोस के दो तीन आदमियों को जगाया। सब ने ऊंटों को मुख़्तलिफ घरों के ऊंटों में बांट दिया। सामान उतार कर मेज़बान के घर में रख दिया गया। मीरे कारवां ने कहा कि सामान फ़ौरन खोलो और ग़ायब कर दो। सबने सामान खोला तो उसमें अनाज के बजाए तीरों का ज़ख़ीरा था। कमानें, तलवारें और ख़ंजर थे और तीन चार बोरियों में आतिशगीर मादे से भरी हुई हांडियां थीं। यह सामान ग़ायब कर दिया गया।

"क्या मैं अपने आप में आ जाऊं?" मीरे कारवां ने पूछा– "तंग आ गया हूं।"

"कोई ख़तरा नहीं।" मेज़बान ने कहा– "सब अपने लोग हैं।"

मीरे कारवां ने लम्बी दाढ़ी उतार दी और आंख से सब्ज़ कपड़ा भी उतार दिया। दाढ़ी नकली थी। उसकी असली दाढ़ी छोटी और सलीके से तराशी हुई थी। सामान इधर उधर छिपाकर जब आदमी मेहमानों के पास आए तो एक आदमी मीरे कारवां को देखकर ठीठक गया। मीरे कारवां मुस्कुराया और पूछा– "पहचाना नहीं था मुझे?"

"ओह मेरे दोस्त अली बिन सुफ़ियान!" उस आदमी ने कहा– "ख़ुदा की कसम मैंने नहीं पहचाना था।" उसने आह भरकर कहा– "हमारी ख़ुशनसीबी है कि आप ख़ुद आ गये हैं। यहां के हालात ठीक नहीं।"

"मुझे इत्तलाअ मिल गयी थी कि सूडान के कैदख़ाने के एक सिपाही ने सूडानी फ़ौज के दो कमानदारों को क़त्ल कर दिया है।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "और मुझे यह भी पता चला है कि सूडानी हमारे जंगी कैदियों को हमारे ख़िलाफ़ इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहे हैं।"

लम्बी दाढ़ी और आंख पर पट्टी और ताजिरों के चुग़े के बहरूप में सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का माहिर जासूस और सुराग़रसां अली बिन सुफ़ियान था जो यहां के हालात का

जायज़ा लेने आया था। उसे जासूसों ने काहिरा में जो जो ख़बर दी थी वह उनकी रौशनी में बातें कर रहा था, और वह जिस घर में बैठा था, वह उस के भेजे हुए जासूसों का मरकज़ था। उसका मेज़बान सूडानी बाशिन्दा था। यह सब लोग सुल्तान अय्यूबी के परस्तार थे। उन लोगों ने अली बिन सुफ़ियान को एक नयी बात सुनाई।

"अफ़वाह फैल रही है कि ख़ुदा का कोई एल्ची आया है जो पानी को आग लगाता है।" मेज़बान ने अली बिन सुफ़ियान को बताया।

"और वह लोगों को इस किस्म की बातें कहता कि ख़ुदा ने मुझे पैग़ाम देकर मुर्दों से उठाया है कि मुसलमानों से कहो कि सूडान के वफ़ादार हो जाएं क्योंकि यह ज़मीन तुम्हारी मां है।" उसने उमरू दूरवेश के मुतअल्लिक सारी बातें सुना दीं लेकिन उसे यह मालूम नहीं था कि उमरू दूरवेश रात को नूर का जल्वा दिखाकर लोगों के दिलों में बेहद ख़तरनाक शकूक पैदा कर चुका है।

"मुझे यह डर था कि दुश्मन अकीदों पर हम्ला करेगा।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "इसलिए मैं ख़ुद आया हूं। सलीबी तख़रीबकारी के माहिर हैं और हमारी कौम जज़्बाती है। सलीबी अल्फ़ाज़ का बड़ा ही दिलफ़रेब जाला तन देते हैं। हमारे भाई खिंचे हुए उसके हसीन तारों में उलझ जाते हैं.....मुझे फ़ौरी तौर पर इस फ़ित्ने के मुतअल्लिक ज़्यादा से ज़्यादा मालूमात मिलनी चाहिए। मेरा ख़्याल है कि उमरू दूरवेश को मैं जानता हूं। हमारी फ़ौज के एक दस्ते का कमानदार था।"

इस इलाके में मिस्री जासूस छापामार भी थे। अली बिन सुफ़ियान ने मेज़बान से कहा कि वह चन्द एक आदमियों को बुलाने का इन्तज़ाम करे ताकि इस तख़रीब कारी पर हम्ला किया जा सके।

❖

सूरज तुलूअ हो रहा था। जासूसों को बुलाने के लिए आदमी दौड़ा दिए गये। वह गये ही थे कि एक घोड़ा जो सरपट दौड़ता हुआ आ रहा था उस मकान के सामने आ रुका। सवार उतर कर अन्दर आया तो सब एहतराम के लिए उठे। यह इमाम था, और यह वही इमाम था जिसने उमरू दूरवेश के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई थी। लोग उसे धक्के देते चले गये थे, फिर रात उस पर दो नामालूम आदमियों ने कातिलाना हम्ला किया था। इमाम वहीं से वापस आ गयाथा। उसे मालूम था कि मुसलमानों ने इस गांव और इस घर को जासूसी और दिगर सरगर्मियों का ख़ुफ़िया मरकज़ बना रखा है। इमाम अपने घर गया और घोड़े पर सवार होकर इस गांव को रवाना हो गया। यह इमाम इस पर यकीन रखता था कि उमरू दूरवेश शोअब्दाबाज़ है। वह इस गांव में रिपोर्ट देने और शोअब्दाबाज़ी के ख़िलाफ़ कार्रवाई करने के लिए मदद लेने आया था। आगे अली बिन सुफ़ियान बैठा था।

इमाम अली बिन सुफ़ियान से वाक़िफ़ नहीं था। तआर्रुफ़ कराया गया तो इमाम ने तफ़सील से सुनाया कि उमरू दूरवेश ने क्या शोअब्दा दिखाया है और मुसलमान तमाशाइयों ने उसका किस तरह असर कुबूल कर लिया है।

"अगर हम ने यह सिलसिला न रोका तो मुसलमान अपने अक़ीदों से मुन्हरिफ़ हो जाएंगे।" इमाम ने कहा– "यह शख़्स जो अपना नाम उमरू दूरवेश बताता है आज रात अगले गांव को जा रहा है और यही शोअब्दा दिखायेगा।"

उन्होंने थोड़ी देर इस मस्ले पर ग़ौर किया। एक तरीक़ा यह सोंचा गया कि उमरू दूरवेश को क़त्ल कर दिया जाए। अली बिन सुफ़ियान ने इत्तफ़ाक़ न किया। उसने इस क़िस्म का इज़हार किया कि उसे यक़ीन है कि उमरू दूरवेश को क़त्ल के बग़ैर राहे रास्त पर लाया जा सकेगा और उसी की ज़ुबान से कहलवाया जाएगा कि उसने जो मुअज्ज़े दिखाये हैं वह शोअब्दाबाज़ी थी। क़त्ल के ख़िलाफ़ वह दलायल देते हुए कहा कि इस तरह लोग उसे और ज़्यादा बरहक़ मानने लगेंगे। अली बिन सुफ़ियान के साथ ताजिरों के भेस में जो तीन आदमी आयें थे वह मिस्री फ़ौज के ग़ैरमामूली तौर पर ज़हीन, अपने फ़न के माहिर और तजुर्बाकार लड़ाका जासूस थे। अली बिन सुफ़ियान ने उन्हें ताजिरों के भेस में साथ लिया, ख़ुद लम्बी दाढ़ी और एक आंख पर सब्ज़ पट्टी का बहरूप चढ़ाया। घोड़े मंगवाये। चन्द और आदमियों से कहा कि वह घोड़ों और ऊंटों पर सवार होकर उसके पीछे–पीछे आयें। उसने सब को हिदायत दीं और इमाम के साथ उस सिम्त रवाना हो गया जहां उमरू दूरवेश को ख़ेमाज़न होना था।

उमरू दूरवेश सुबह तुलूअ होते ही अगले मक़ाम के लिए रवाना हो गया था। उसके साथी उस इलाक़े के लोगों के लिबास में उसकी हिफ़ाज़त के लिए जा रहे थे। उसकी तशहीर दूर दूर तक हो गयी थी......वह एक और गांव से कुछ दूर रुक गया और ख़ेमा गाड़ दिया। थोड़ी सी देर में वह और आशी तैय्यार हो गये। ख़ेमे के सामने दो मशालें जला कर गाड़ दी गयीं। उसके साथियों ने गांव वालों को जो बताया कि उन्होंने ख़ुदा के एल्ची के मुअज्ज़े सुने हैं वह उनके गांव के बाहर ख़ेमाज़न है। लोग दौड़े गये। जिन लोगों ने एक रोज़ पहले उमरू दूरवेश को देखा था। वह भी दूर का फ़ासिला तय करके आ गये।

उमरू दूरवेश दोनों मशालों के दर्मियान छोटे से क़ालीन पर बैठ गया। आशी अपने उसी भड़कीले लिबास और तिलिस्माती बनाव सिंगार से आरास्ता थी। उमरू दूरवेश के सामने कपड़ा लिपटा पड़ा था। उसने वही अदाकारी शुरू कर दी जो वह पहले कर चुका था। एक आदमी ने वही सवाल पूछा जो पहले पूछा गया था। उमरू दूरवेश ने वही बातें उसी अन्दाज़ से दुहराकर कहा कि किसी के पास पानी हो तो कपड़े पर डाला जाए। अली बिन सुफ़ियान अपनी पार्टी के साथ पहुंच चुका था। और उसने उमरू दूरवेश को पहचान लिया था। उसे अच्छी तरह मालूम था कि यह शख़्स मिस्री फ़ौज के एक दस्ते का कमानदार है।

अली बिन सुफ़ियान को बताया गया कि उमरू दूरवेश पानी को आग लगाता है। अली बिन सुफ़ियान को एक शक था। यह तस्लीम नहीं किया जा सकता था कि पानी को आग लग सकती है। उसके दिमाग़ में जो शक पैदा हुआ था, उसके मुताबिक़ वह छोटे से मश्कीज़े में पानी अपने साथ ले गया था। ज्योंहि उमरू दूरवेश ने कहा कि किसी के पास पानी हो तो इस कपड़े पर डाले तो एक आदमी तेज़ी से आगे बढ़ा। उसके पास मश्कीज़ा था। उसने कुछ पानी

कपड़े पर उड़ेल दिया।

अली बिन सुफ़ियान आगे बढ़ा और मशाल ज़मीन से उखाड़ कर लोगों से कहा– "तुम में से कोई आदमी आगे आये।" एक आदमी जो अली बिन सुफ़ियान के साथ आया था आगे गया। अली बिन सुफ़ियान ने मशाल उस के हाथ में देकर कहा– "इस कपड़े पर शोला रखो।" वह आदमी हिचकिचाया। अली बिन सुफ़ियान ने लोगों से कहा– "तुम में से कोई भी आदमी इस पानी को आग लगा सकता है।"

उस आदमी ने मशाल का शोला कपड़े के क़रीब किया तो कपड़े से शोला भड़क उठा। एक आदमी जो उमरू दूरवेश का साथी था। बोला– "तुम कोई शोअब्दाबाज़ हो। पीछे हटो, वरना तुम पर ख़ुदा की इस बर्गुज़ीदा शख़्सियत का क़हर नाज़िल होगा।"

उमरू दूरवेश ख़ामोशी से और हैरत से अली बिन सुफ़ियान को देख रहा था। अली बिन सुफ़ियान ने अपना कमर बन्द खोल कर उमरू दूरवेश के आगे रख दिया और उसपर पानी उड़ेल कर कहा– "अगर तुम ख़ुदा के एल्वी हो तो इस कपड़े को आग लगाओ।" उसने मशाल उमरू दूरवेश के आगे कर दी मगर उमरू दूरवेश उसके मुंह की तरफ़ देखता रहा।

लोगों ने आपस में खुसुर फुसुर शुरू कर दी। अली बिन सुफ़ियान के साथ आए आदमियों ने उमरू दूरवेश के ख़िलाफ़ बोलना शुरू कर दिया। इमाम की आवाज़ सबसे ज़्यदा बुलन्द थी। उमरू दूरवेश के आदमियों ने उसकी हिमायत में बोलना शुरू कर दिया। दोनों तरफ़ से बोलने वाले जासूस थे। यह भी जंग थी। हक़ और बातिल मार्काआरा थे। अली बिन सुफ़ियान ने लोगों को उधर उलझा देखा तो उमरू दूरवेश के सामने बैठ गया।

"उमरू दूरवेश!" उसने धीमी आवाज़ में कहा– "इमान की कितनी क़ीमत मिली है?"

"तुम कौन हो?" उमरू दूरवेश ने पूछा।

"बहुत दूर से आया हूं।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "तुम्हारी शोहरत सरहद पार सुनी थी और तुम्हें देखने आया हूं।" उमरू दूरवेश ने बेचैनी से इधर उधर देखा और पूछा– "मैं तुम पर किस तरह एतबार कर लूं?"

"मेरी दाढ़ी पर हाथ फेरो।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "मस्नूई है। ईमान की जो क़ीमत वसूल की है उससे दुगुनी दूंगा। यह शोअब्दाबाज़ी ख़त्म करो। मैं तुम्हें साथ ले जाऊंगा।"

"मैं क़ातिलों के घेरे में हूं।" उमरू दूरवेश ने कहा।

"मेरी नहीं मानोगे तो भी क़त्ल हो जाओगे।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "तुम जानते हो कि यहां हमारे बहुत से आदमी मौजूद हैं......तुम्हारे साथ कितने आदमी हैं?"

"मुझे मालूम नहीं।" उमरू दूरवेश ने कहा और पूछा– "तुम्हार नाम क्या है?"

"बता नहीं सकता।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "मैं जो पूछता हूं वह बताओ.....तूर का जल्वा क्या है?..साफ़ बता दो। तुम्हारी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी लेता हूं।"

"जब उठोगे तो अपने दायें तरफ़ देखना।" उमरू दूरवेश ने कहा– "ऊंची पहाड़ी के आगे एक ऊंची चट्टान है। एक बहुत बड़ा दरख़्त है। शाम से ज़रा बाद वहां अपने आदमी

छिपा देना। जिस तरह पानी को आग लगने का भेद जान गये हो, तूर का जल्वा भी जान जाओगे। मुझे मौका दो कि यह तमाशा दिखाऊं। तुम वहां से शोलान उठने देना। मेरे फ़रार का और मेरी हिफ़ाज़त का फर्ज़ तुम पूरा करोगे। बस मेरी शोअब्दाबाज़ी यही होगी कि यहां से निकल भागूं। मुझे इस्हाक़ को कैदखाने से आज़ाद कराना है......उठो और एलान करो कि रात को तूर का जल्वा दिखाऊंगा।"

अली बिन सुफ़ियान की जगह कोई और आदमी होता तो वह उमरू दूरवेश की यह अधूरी सी बात न समझ सकता। अली बिन सुफ़ियान उसी मैदान का खिलाड़ी था। वह इशारे समझ लेता था। उसने उठकर एलान किया– "खुदा का यह बर्गुज़ीदा इन्सान रात को तूर का जल्वा दिखायेगा। मैंने उसकी बात समझ ली है। तुम सब चले जाओ। शाम के बाद आना।"

अली बिन सुफ़ियान उठ कर चला गया। लोगों ने उसे घेर लिया और पूछा कि उमरू दूरवेश के साथ उसकी क्या बातें हुई हैं। उसने बुलन्द आवाज़ से कहा– "इस बर्गुज़ीदा हस्ती के सीने में एक पैग़ाम और एक राज़ है। मैंने अपना शक रफ़ा कर लिया है। रात को उसका मुअज्ज़िा ज़रूर देखना।"

उमरू दूरवेश के आदमी उसके पास जा बैठे और पूछा कि उस आदमी के साथ क्या बातें हुई हैं। उमरू दूरवेश ने जवाब दिया– "मैंने उसे कायल कर लिया है।"

"लेकिन यह है कौन?" एक आदमी ने कहा– "उसे ज़रूर पता चल गया है कि कपड़े मे आतिशगीर सयाल है जो जल उठता है।"

"हम उसका पीछा करते हैं।" तीसरे आदमी ने कहा– "इसे नज़र में रखना ज़रूरी है।"

दो आदमी उठे और उन लोगों से जा मिले जो वापस जा रहे थे। उन दोनों ने अली बिन सुफ़ियान को ढूंढा मगर वह उनमें नहीं था। लोगों से पूछा तो कोई भी न बता सका कि वह आदमी कहां है जिस की दाढ़ी लम्बी और एक आंख पर सब्ज़ पट्टी बंधी थी।

अली बिन सुफ़ियान घोड़े पर सवार होकर दूर निकल गया था।

❖

उमरू दूरवेश ख़ेमें में आशी के साथ अकेले रह गया तो आशी ने उससे पूछा– "वह आदमी कौन था? उसने तुम्हारे साथ इस तरह बातें की थीं जैसे वह तुम से और तुम्हारे बहरूप से वाकिफ़ है।"

"सुनो आशी।" उमरू दूरवेश ने कहा– "आज रात कुछ होने वाला है। मैं बता नहीं सकता कि क्या होगा। इस आदमी को मैं पहचान नहीं सका। उसने बताया भी नहीं कि वह कौन है लेकिन यह कोई मामूली आदमी नहीं। मुझे उम्मीद नहीं कि आज रात हम फ़रार हो सकें, और यह तवक्क़ो भी है कि मैं कत्ल हो जाऊंगा आज रात तुम्हें साबित करना होगा कि तुम्हारी रगों में मुसलमान बाप का ख़ून है। अगर तुमने धोखा देने की कोशिश की तो मेरे हाथों क़त्ल होगी।"

"अगर तुम मुझे कुछ और बता दो कि क्या होगा और मुझे क्या करना है तो शायद मैं ज़्यादा अच्छे तरीक़े से तुम्हारी मदद कर सकूंगी।" आशी ने कहा– "मैं तुम्हारी ख़ातिर क़त्ल

होने के लिए तैय्यार हूं लेकिन इससे तुम्हारा मक़सद पूरा न हुआ तो मेरी जान रायंगा जायेगी।"

"तुम्हें यह करना है।" उमरू दूरवेश ने कहा– "कि अपने आदमियों की बातों में न आना। कोशिश करना कि उनका इरादा क़ब्ल अज़ वक़्त मालूम कर लो और मुझे ख़बरदार कर दो। मैं बता नहीं सकता कि आज रात क्या होगा। तुम तैय्यार रहना।"

"तुम कई बार कह चुके हो कि तुम्हें मुझ पर अतबार नहीं।" आशी ने कहा– "लेकिन मैंने तुम्हें एक बार भी नहीं कहा कि मुझे तुमपर अतबार नहीं। अगर यहां से आज़ाद हो गये तो क्या तुम मुझे भी अपने साथ ले जाओगे?"

"तुम वापस जाना पसन्द नहीं करोगी?"

"नहीं।" आशी ने रंजीदा मगर पुरअज़्म लहजे में कहा– "मर जाना पसन्द करूंगी।"

"तुम शहज़ादी हो आशी!" उमरू दूरवेश ने कहा– "मैंने यह तो सोंचा ही नहीं था कि तुम मेरे साथ चलोगी तो तुम्हारा मुस्तक़बिल क्या होगा। तुम इन जंगलों में रहना यक़ीनन पसन्द नहीं करोगी। मैं तुम्हें काहिरा ले जाऊंगा। वहां तुम्हारे मुतअल्लिक़ सोचने के लिए अच्छे दिमाग़ मौजूद हैं।"

"तुम मुझे अपने साथ नहीं रखोगे?" आशी ने पूछा– "मुझे अपनी बीवी नहीं बनाओगे?"

"अगर यह शर्त है तो मैं इसे क़ुबूल नहीं करूंगा।" उमरू दूरवेश ने कहा– "लोग कहेंगे कि मैंने अपना फ़र्ज़ तुम्हें हासिल करने के लिए अदा किया। मेरा घर जहां मेरी एक बीवी मौजूद है तुम्हारे क़ाबिल नहीं। आशी! मैं सिपाही हूं। मेरा घर मैदाने जंग है। मुझे अपनी बीवी की सूरत देखे तीन साल से ज़्यादा अर्सा गुज़र गया है। तुम अगर इस लिए मेरी बीवी बनना चाहती हो कि मैं तुमहारी पसन्द का मर्द हूं तो तुम मायूस होगी। तुम्हारी मोहब्बत और तुम्हारी दुआएं उस तीर को नहीं रोक सकेंगे जिसे मेरे सीने से पार होना है......तुम मुझे अपनी ख़्वाहिश बता दो।"

"मैं ज़िल्लत और ख़्वारी की इस ज़िन्दगी से आज़ाद होना चाहती हूं।" आशी ने कहा– "मुझे तुम्हारी मदद और सहारे की ज़रूरत है। बाद में जो होगा देखा जायेगा। मैं तुम्हारे रास्ते में नहीं आऊंगी।"

"अगर ज़िन्दा रहा तो तुम्हें पूरी मदद और सहारा दूंगा।"

"आख़िर वह गया कहां?" यह आवाज़ उन जासूसों में से एक की थी जो उमरू दूरवेश के साथ लगे हुए थे। वह उस वक़्त उमरू दूरवेश के ख़ेमे से कहीं दूर खड़े अली बिन सुफ़ियान के मुतअल्लिक़ सोंच रहे थे। उसने कहा– "यह भी हो सकता है कि उमरू दूरवेश उसके दिल को अपने क़ब्ज़े में लेने के बजाये। अपना दिल उसके क़ब्ज़े में दे चुका हो। हमें अब बहुत ही मोहतात होना पड़ेगा। हमें बताया था कि उमरू दूरवेश पर भरोसा न करना।"

"वह लम्बी दाढ़ी वाला आदमी आग का भेद जान गया है।" दूसरे आदमी ने कहा– "अब यह देखना है कि उमरू दूरवेश ने इस भेद पर पर्दा डाला है या उस आदमी पर।"

"आशी किस मर्ज़ की दवा है?" तीसरे आदमी ने कहा– "क्या वह उमरू दूरवेश के दिल

का हाल मालूम नहीं कर सकती? यह तो हो नहीं सकता कि यह लड़की भी उमरू दूरवेश की साज़िश में शरीक हो गयी हो।"

"अगर कोई साज़िश है और आशी भी उसमें शरीक है तो उसके मुतअल्लिक़ हुक्म साफ़ है कि क़त्ल कर दो।" एक ने कहा– "क्या तुम इतनी क़ीमती चीज़ यूं ज़ाया कर दोगे?" दूसरे आदमी ने कहा– "उसे उड़ा ले जायेंगे और किसी दौलत वाले को मुंह मांगे दामों यह हीरा दे देंगे। वहां यह बतायेंगे कि आशी को क़त्ल करके दफ़्न कर दिया है।"

तीनों ने एक दूसरे को ऐसी नज़रों से देखा जैसे उनमें इत्तफ़ाक़े राय हो गया हो। एक ने कहा– "आज रात हमें 'तूर का जल्वा' दिखाना है। देख लेंगे कि उमरू दूरवेश या उस आदमी की नीयत क्या है। रात को हम में से एक को आशी के साथ रहना होगा। कहीं ऐसा न हो कि लड़की हाथ से निकल जाए।"

उन्होंने तय कर लिया कि रात उमरू दूरवेश और आशी के साथ कौन होगा।

❖

चार आदमी काफी होंगे।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "मैं उमरू दूरवेश के साथ हूंगा। तुम सब ने उन तीन चार आदमियों को पहचान लिया है जो उमरू दूरवेश की हिमायत में बोल रहे थे। यह तुम्हारे इलाक़े के वह मुसल्मान हैं जो सूडानियों के लिए काम कर रहे हैं। उमरू दूरवेश ने मुझे उन्हीं के मुतअल्लिक़ बताया है कि वह क़ातिलों के घेरे में है। उन्हें नज़र में रखना। ज़रूरत पड़े तो ख़त्म कर देना लेकिन ज़िन्दा पकड़ना बेहतर होगा।"

उस वक़्त अली बिन सुफ़ियान एक मस्जिद में बैठा था। इमाम उसी मस्जिद का था। अली बिन सुफ़ियान ने अपना बहरूप उतार दिया था। उसने मस्जिद में ही रात के लिए अपने आदमियों को मुख़्तलिफ़ काम बांट दिए और कहा– "मुझे जो शक था वह सही साबित हुआ है। मुझे उम्मीद है कि रात को भी मुझे कामयाबी होगी।"

सूरज ग़ुरूब होने से ज़रा पहले उस पहाड़ी पर जो उमरू दूरवेश ने अली बिन सुफ़ियान को दिखाई थी एक आदमी चढ़ रहा था। वह इस एहतियात के साथ चढ़ रहा था कि कोई देख न ले। दूसरी तरफ़ से दो आदमी उसी की तरह झुके झुके उपर जा रहे थे और एक और आदमी किसी और तरफ़ से उपर जा रहा था। यह आदमी जब ऊपर चला गया तो रेंग कर एक बहुत बड़े दरख़्त तक पहुंचा। इधर उधर देखा और दरख़्त पर चढ़ने लगा। दो आदमी एक बहुत बड़े पत्थर के अक़्ब में बैठ गये। यह जगह दरख़्त से दूर नहीं थी। चौथा आदमी भी ऊपर चला गया और एक मौज़ू जगह छिप गया। जो आदमी दरख़्त पर चढ़ा था वह ऊपर एक मोटे टेहनी पर इस तरह बैठ गया कि टांगे ऊपर करके सिकोड़ लीं। शाख़ें और पत्ते इतने घने थे कि यह आदमी नीचे से नज़र नहीं आ सकता था। वह आहिस्ता से एक परिन्दे की तरह बोला। उसे परिन्दे की आवाज़ में तीन साथियों का जवाब मिला।

सूरज पहाड़ी के अक़्ब में उतर गया था और तीन अदमी इकट्ठे पहाड़ी पर चढ़ते जा रहे थे। उन के पास आग जलाने का सामान और मिट्टी के बर्तन में आतिशगीर मादा था। उनके पास लम्बे ख़ंजर भी थे। शाम का धुंधलका गहरा होता जा रहा था। उन तीन आदमियों का

अन्दाज़ ऐसा था जैसे उन्हें किसी भी तरफ से कोई ख़त्रा नहीं। वह बातें करते जा रहे थे। उनकी बातें चार आदमियों को सुनाई देने लगीं जो पहले से वहां छिपे बैठे थे। वह पूरी तरह छिप गये। वहां से दूर नीचे उमरू दूरवेश का ख़ेमा था जो शाम के अंधेरे मे नज़र नहीं आता था। ख़ेमे के बाहर गाड़ी हुई दो मशालों के शोले दिखाई दे रहे थे।

"ख़ुदा का एल्ची तैय्यार हो गया है।" उन तीन आदमियों में से एक ने हंस कर कहा जो बाद में ऊपर आये थे।

"सामान खोल कर तैय्यार कर लो।"

"आज़ मेरा दिल किसी और तरीके से धड़क रहा है।" दूसरे आदमी ने कहा– "उसके अन्दर कोई वहम बैठ गया है। क्या तुम महसूस नहीं कर रहे कि आज कुछ गड़बड़ है?"

"मैं भी कुछ गड़बड़ उस आदमी के वजह से महसूस कर रहा हूं जिस ने एक आंख पर सब्ज़ पट्टी बांध रखी थी।" उनमें से एक ने कहा– "घबराओ नहीं। हम तूर का जल्वा दिखकर सबके वहम दूर कर देंगे। अगर लोग मान गये तो उस एक आदमी की कोई परवाह नहीं करेगा। तुम अपना काम करो। वक़्त थोड़ा रह गया है। अंधेरा गहरा हो रहा है।"

एक आदमी ने मिट्टी के बर्तन का मुंह खोल कर तेल की तरह का सय्याल ज़मीन पर उड़ेंल दिया। जगह चूंकि पथरीली थी इसलिए यह मादा जज़्ब न हो सका। उससे ज़रा दूर हट कर एक आदमी ने छोटा सा दीया जला कर बड़े पत्थरों के दर्मियान रख दिया ताकि दूर से उसकी लौ नज़र न आ सके। उसकी रौशनी में तीनों आदमी नज़र आ रहे थे।

"अब उधर मशाल पर नज़र रखो।" एक ने कहा– "ज्योंहि मशाल उपर नीचे हरकत करे दीया तेल पर फैंक दो। लोगों को तूर का जल्वा नज़र आ जायेगा।"

यह इहतिमाम उस बड़े दरख़्त के नीचे किया गया था जिस पर एक आदमी बैठा हुआ था। नीचे तीनों आदमी इकट्ठे खड़े हो गये। उसने झिंगूरों की आवज़ पैदा की। एक बहुत बड़े पत्थर के पीछे से भी झींगूरों की आवाज़ सुनाई दी। तीनों आदमी बेपरवाह होके खड़े रहे। अचानक ऊपर से एक आदमी उन तीनों मे एक आदमी के कंधो पर गिरा। नीचे वाला आदमी उपर वाले के नीचे आ गया। दूसरे दो बुरी तरह घबरा गये और इधर उधर हुए। ज़रा सी देर में तीन आदमी मुख़्तलिफ़ अड्डों से उठे और उन दोनों पर झपट पड़े। उन्हें ख़ंजर निकालने की मुहलत न मिली। उनमें से जो आदमी ऊपर वाले के नीचे पड़ा था वह क़व्वी हैकल था। उसने ऊपर वाले को लुढ़का दिया। अली बिन सुफ़ियान ने कहा था कि उन्हें ज़िन्दा पकड़ना है मगर उस आदमी को हलाक करना जरूरी हो गया। जो आदमी उसके ऊपर गिरा था उसने ख़ंजर निकाला और उस क़व्वी हैकल आदमी के दिल में उतार दिया। दूसरे दो आदमियों को उन रस्सियों से बांध दिया गया जो उसी मक़सद के लिए साथ ले जाई गयी थीं।

❖

उमरू दूरवेश के ख़ेमे के बाहर लोग जमा हो गये थे। उनमें अली बिन सुफ़ियान भी था और उस के साथ मिस्री फ़ौज के छापामार भी ख़ासी तादाद में थे जो उस इलाके में मुख़्तलिफ़

बहरूपों में रहते थे। उन्हें दिन के दौरान इकठ्ठा कर लिया गया और बता दिया गया कि उनका मिशन क्या है। उनमें से चन्द एक घोड़ों पर सवार थे। उनके पास हथियार भी थे।

लोगों में उमरू दूरवेश पर नज़र रखने वाले और उसके मदद करने वाले सूडानी जासूस भी थे। उनकी तादाद पांच छः से ज़्यादा नहीं थी। अली बिन सुफ़ियान ने उन्हें पहचान लिया था। वह भी मरने मारने के लिए तैय्यार होकर आये थे लेकिन उन्हें यह अन्दाज़ा नहीं था कि उनके मद्दे मुकाबिल कितने आदमी हैं।

आशी अपने मख़्सूस तिलिस्माती लिबास और हुलिए में बाहर निकली। उसने अदाकारी की। दोनों मशालों के दर्मियान छोटा सा कालीन बिछाया। उमरू दूरवेश ख़ेमे से बाहर निकला और मस्ताना चाल चलता कालीन पर आ खड़ा हुआ। दोनों बाज़ू फैलाकर आसमान की तरफ़ किये और मुंह ऊपर करके कुछ बड़बड़ाने लगा। आशी ने उसके आगे सज्दा किया फिर उस के सामने दो ज़ानू बैठ गयी।

"ऐ ख़ुदा के मुकद्दस एल्ची! जिसका एहतराम हम सब पर फ़र्ज़ है।" आशी ने कहा– "इन्सानों का यह गिरोह तूर का जल्वा देखने आया है जो ख़ुदाये ज़ुलजलाल ने मूसा को दिखाया था, और जिन्नात भी जिनसे मैं हूं तूर का जल्वा देखने आये हुए हैं।"

"क्या उन सबको शक है कि मैं ख़ुदा का जो पैग़ाम लाया हूं वह बरहक़ नहीं?" उमरू दूरवेश ने पूछा।

"अगर गुस्ताख़ी हो तो मुझे बख़्श देना ऐ ख़ुदा के भेजे हुए पैग़म्बर! एक आदमी ने कहा– "तूर का जल्वा दिखाकर हम गुनाहगारों के दिलों से सारे शक निकाल दे।"

अली बिन सुफ़ियान ने उस आदमी को देखा। उसे वह पहचानता था। वह उमरू दूरवेश के साथ का आदमी था।

"हां मुकद्दस हस्ती!" अली बिन सुफ़ियान ने आगे आकर कहा– "हम शक में हैं। हमें तूर का जल्वा दिखा और अगर यह लड़की जिन्नात में से है तो उसे कह कि थोड़ी देर के लिए ग़ायब हो जाए, फिर हमारे शक ख़त्म हो जाएंगे।"

उमरू दूरवेश ने दरख़्त वाली पहाड़ी की तरफ़ इशारा करके कहा– उधर देखो। अंधेरे में तुम्हें कुछ भी नज़र नहीं आ रहा।" उसने ज़मीन से मशाल उखाड़ी और बुलन्द की। उसने ऊंची आवाज़ में कहा– "ख़ुदाए ज़ुलजलाल! तेरे सादा और जाहिल बन्दे शकूक के अंधेरों में भटक रहे हैं। उन्हें वही जल्वा दिखा जो तूने मूसा को दिखाया था और जिससे फ़िरऔनों के नशेमन को जलाया था।"

उसने मशाल दायें–बायें लहराए फिर ऊपर करके नीचे की मगर पहाड़ी पर कोई शोला नमूदार नहीं हुआ। उमरू दूरवेश ने एक बार फिर मशाल को ऊपर नीचे को लहराया मगर पहाड़ी पर छोटा सा शर्रारा भी न चमका। पहाड़ी पर उमरू दूरवेश का एक आदमी मरा पड़ा था और दो रस्सियों से बंधे हुए थे। वह अली बिन सुफ़ियान के चार आदमियों के कब्ज़े में थे। उन्हें वहां से उमरू दूरवेश की मशाल की हरकत नज़र आ रही थी। किसी ने कहा–"आज किसी को तूर का जल्वा नज़र नहीं आयेगा।" सबने कहकहा लगाया।

"आज़ तूर का जल्वा नज़र नहीं अयेगा।" अली बिन सुफ़ियान ने बुलन्द आवाज़ में कहा। वह उमरू दूरवेश से मुख़ातिब हुआ– "उमरू दूरवेश! अगर तू आज पहाड़ी से शोला उठा दे तो मैं ख़ुदा की बजाये तुम्हारी इबादत करूंगा।"

एक आदमी ने ख़ंजर निकाला और अली बिन सुफ़ियान की पीठ की तरफ़ से आगे गया। वह दो चार कदम आगे गया होगा कि पीछे से एक बाज़ू उसकी गर्दन के गिर्द लिपट गया। कोई भी न देख सका कि एक आदमी ख़ेमे के अक़ब से ख़ेमे के अन्दर चला गया है। उसने ख़ेमें में से आशी को पुकारा। आशी अन्दर गयी।

"फ़ौरन निकलो।" उस आदमी ने आशी से कहा– "हमार राज़ फाश हो चुका है। यह आदमी जिस ने कहा है कि आज तूर का जल्वा नज़र नहीं आयेगा य़ आदमी मालूम नहीं होता। यह मिस्र से आया है। हमारा एक साथी पकड़ा गया है। यहां के मुसलमान जंगली और वहशी हैं, हो सकता है यह उमरू दूरवेश को क़त्ल कर दें। हम तो निकल जाएंगे, तुम उन के हाथ आ गयी तो तुम्हारे साथ वहशियों जैसा सलूक करेंगे।"

"मैं नहीं जाऊंगी।" आशी ने मुस्कुरा कर कहा– "मुझे इन वहशियों से कोई ख़तरा नहीं।"

"क्या तुम पागल हो गयी हो?"

"मैं पागल थी।" आशी ने कहा– "अब दिमाग़ दुरूस्त हो गया है। अब वहां जाऊंगी जहां उमरू दूरवेश कहेगा।"

बाहर अली बिन सुफ़ियान और इमाम लोगों से कह रहे थे कि वह उन्हें वहां ले जाऐंगे जहां से तूर का जल्वा नज़र आना था। वहां उन्हें दिखाया जाऐगा कि उन्होंने एक रात पहले जो जल्वा देखा था उसकी हक़ीक़त क्या थी। अली बिन सुफ़ियान के छापामारों ने लोगों में से तीन आदमियों को इस तरह पकड़ लिया था कि किसी को पता न चल सका। उनके पहलुओं के साथ ख़ंज़रों की नोकें लगाकर उन्हें अलग अंधेरे में ले गये और उन पर क़ाबू पा लिया गया था। उमरू दूरवेश अभी वहीं खड़ा था।

❖

ख़ेमे के अन्दर एक सूडानी जासूस आशी को बचाने के लिए उसे अपने साथ ले जाना चाहता था, मगर आशी जाने से इन्कार कर रही थी। वह आदमी हैरान था कि लड़की इन्कार क्यों कर रही है। वह बार–बार यही कहता था कि मुसलमान जंगली और वहशी हैं। आशी ने कहा– "तुम भी मुसलमान हो, मैं भी मुसलमान हूं। मै अब अपनी कौम को छोड़ कर नहीं जाऊंगी।"

बाहर गुल ग़प्पाड़ा बढ़ता जा रहा था। उस आदमी ने लम्बा ख़ंजर निकाल लिया और आशी को धमकी देकर साथ चलने को कहा......आशी की तलवार ऐसी जगह रखी थी जहां से फ़ौरन निकाली जा सकती थी। उमरू दूरवेश ने उसे कह रखा था कि हथियार हर लम्हा तैय्यार रहने चाहिए। आशी ने लपक कर तलवार खींच ली और कहा– "हम दोनो में से कोई भी बाहर नहीं जाएगा।"

एक मर्द के लिए यह बहुत बड़ा चैलेंज था कि उसे एक औरत ललकारे। वह जान गया कि यह मामिला गड़बड़ है और इतनी कीमती लड़की हाथ से जा रही है। उसे कत्ल कर देना या उड़ा ले जाना ज़रूरी हो गया था। उसे तवक्क़ो नहीं थी कि आशी तेग़ज़नी की सूझ बूझ रखती है या नहीं। वह ख़ंजर से उस पर हम्लावर हुआ। आशी ने उसके ख़ंजर पर तलवार मारी। ख़ंजर उसके हाथ से छूट गया लेकिन ख़ेमा से टकरा कर उसके क़रीब आ गिरा। उसने ख़ंज़र उठा लिया। आशी ने उसपर तलवार का वार किया। वह तजुर्बाकार तेग़ज़न था। वार बचा गया। आशी ने कहा– "मेरा उस्ताद वही है जिसने तुम्हें तेग़ज़नी सिखाई है"

उसने आशी का एक और वार इस तरह रोका कि एक तरफ़ हुआ और आशी के संभलने तक उसके उपर आ गया उसने आशी की कलाई पकड़ ली और बोला– "मैं तुम्हें क़त्ल नहीं करूंगा आशी! होश में आओ।" आशी ने उसकी नाक पर टक्कर मारी। वह पीछे हटा तो वार उसके ख़ंज़र पर करके ख़ंज़र फिर गिरा दिया। वह वार बचाने के लिए पीछे हटा तो ख़ेमे ने उसे रोक लिया। अब तलवार की नोक उसकी शहे रग पर थी। आशी ने कहा– "मैं मुसलमान बाप की बेटी हूं।" उसने उसकी नोक उस आदमी की शहेरग पर दबाई और बोली– "बैठ जाओ। हाथ पीछे कर लो। मेरी ताक़त मेरा ईमान है। मै। अब खिलौना नहीं।"

बाहर अब यह आलम था कि एक मशाल अली बिन सुफ़ियान ने उठाली थी और दूसरा इमाम ने। चार पांच छापामारों ने उमरू दूरवेश को अपने घेरे में ले लिया था। उसे उन्होंने मुज्रिम की हैसियत से हिरासत में नहीं लिया था बल्कि हिफ़ाज़त के लिए उसे अपनी पनाह में ले लिया था। ख़तरा यह था कि जो सूडानी जासूस उसके साथ लगे हुए थे वह उसे क़त्ल कर सकते थे लेकिन मालूम होता था कि उनमें से कोई भी आज़ाद नहीं था। यह हिदायत अली बिन सुफ़ियान ने दी थी कि ज्योंहि हंगामा हो उमरू दूरवेश को पनाह में ले लिया जाए।

उमरू दूरवेश ने एक छापामार से कहा–"ख़ेमे में लड़की है, उसे भी साथ ले चलना है। वह मुसलमान है।"

ख़ेमे में गये तो वहां कुछ और ही मंज़र था। आशी ने तलवार की नोक पर एक आदमी को बैठा रखा था। उस आदमी को पकड़ लिया गया। उमरू दूरवेश से अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "मुझे यक़ीन है कि मेरे आदमी इस पहाड़ी पर पहुंच गये हैं, इसी लिए वहां से शोला नहीं उठा। बेहतर यह है कि लोगों को अभी वहां ले जाकर दिखाया जाए कि शोला कैसे पैदा किया जाता है ताकि जो उस शोअब्दाबाज़ी के झांसे में आ गये हैं, उनके ज़ेहन साफ़ हो जाएं।"

"एक मसला और है जिस की तरफ़ फ़ौरी तवज्जो की ज़रूरत है।" उमरू दूरवेश ने कहा– "इस्हाक़ को क़ैदखाने से रिहा कराना है। इस इलाके में सूडानियों के बहुत से जासूस हैं। उनमें से कोई न कोई यहां के हालात की अचानक और ग़ैर मुतवक़्क़ा तबदीली देखकर हुकूमत और फ़ौज को इत्तलाअ दे देगा। इसका नतीजा यह होगा कि इस्हाक़ को क़ैदखाने से तहखाने में डाल कर उसे अज़ीयत रसानी से मार दिया जाएगा। मैं सूडानी सालार को यह धोखा दे कर आया था कि मैं यहां के मुसलमानो के ज़ेहन बदल दूंगा। मैंने क़ैदखाने में

इस्हाक के साथ बात कर ली थी और उसे बता दिया था कि मैं सूडानियों की बात मान लेता हूं, और अपने इलाके में जाकर चन्द दिन उनकी मर्ज़ी के मुताबिक काम करूंगा। मेरा इरादा था कि यहां आकर लोगों को दरपर्दा बता दूंगा कि मेरा असल मक़सद क्या है। मेरा इरादा यह भी था कि क़ाहिरा भी इत्तलाअ भेजवादूंगा और इस्हाक़ को फ़रार कराने की भी कोई सूरत पैदा करूंगा......

"यहां आया तो पता चला कि बहुत से सूडानी जासूस जो इसी इलाके के मुसलमान हैं मेरे इर्द गिर्द फिर रहे हैं और मैं आज़ाद नहीं हूं। इत्तफ़ाक़ से यह लड़की मुसलमान निकली।" उसने आशी के माज़ी के मुतअल्लिक सब को तफ़सील सुनाई और कहा– "मुझे उम्मीद नहीं थी कि मैं अपने मक़सद में कामयाब हो जाऊंगा। मै। बहुत परेशान हूं। हमारे मुसलमान भाई इस क़दर सादा और जज़्बाती हैं कि मेरी बातों और शोअब्दाबाज़ियों के कायल होते चले गये। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं। मैं हर लम्हा सूडानी जासूसों की नज़र में रहता था। खुदा ने मेरी नीयत की क़दर की और आप को भेज दिया.......लम्बी बातें बाद मे सुनाऊंगा। मैं इस्हाक़ को आज़ाद कराना चाहता हूं। मुझे दो बहुत ही दिलेर और अक़लमन्द छापामार दे दें।"

उसने अली बिन सुफ़ियान को बताया कि उसने क्या सोंचा है। अली बिन सुफ़ियान ने उसकी स्कीम पर ग़ौर किया। कुछ रद्दो बदल की और उसे कहा कि वह दो छापामारों और आशी के साथ इसी वक़्त रवाना हो जाए और इस्हाक़ को रिहा कराये। अली बिन सुफ़ियान ने उसे बताया कि वह लोगों को उस पहाड़ी पर ले जाएगा और उन्हें बतायेगा कि तूर का जल्वे की हक़ीक़त क्या थी।

उमरू दूरवेश, दो छापामार और आशी उसी वक़्त घोड़ों पर रवाना हो गये।

❖

वह ख़ेमे के पिछली जानिब से चुपके से निकल गये थे। अली बिन सुफ़ियान ख़ेमे से बाहर निकला। लोग परेशान और हैरत के आलम में बाहर टोलियों में खड़े सरगोशियां कर रहे थे। अली बिन सुफ़ियान ने बुलन्द आवाज़ से कहा– "अगर तुम तूर के जल्वे की हक़ीक़त देखना चाहते हो तो हमारे साथ आओ। तुम सब जानते हो कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद पैग़म्बरी और नबूवत का सिलसिला ख़त्म हो गया है। उसके बाद खुदा ने न किसी को कभी जल्वा या मुअज्ज़ा दिखाया है न दिखायेगा।

उस आदमी को तुम्हारे अक़ीदे ख़राब करने के लिए भेजा गया था। तुमने ग़ौर नहीं किया कि यह शख़्स तुम्हें सिर्फ़ यह बात कहता रहा कि सूडानी फ़ौज को तुमने इस इलाके से हमेशा दूर रखा है। अब सूडानियों ने तुम्हारे दिलों पर कब्ज़ा करने के लिए यह हरबा इस्तेमाल किया है.....

ग़यूर मुसलमानों! दुश्मन जब इस क़िस्म के ओछे हरबों पर उतर आता है तो यह इस हक़ीक़त का सबूत होता है कि वह तुम्हारे मुकाबले में आने से डरता है। तुम हक़ पर हो। यह ख़ित्ता तुम्हारा है। यहां इस्लाम की हुकूमत होगी। कुफ़्फ़ार हमारे दिलों से क़ौम और मज़हब

का एहसास ख़त्म करने के जतन कर रहे हैं। आज तुम्हें नूर के जल्वे दिखाए जा रहे हैं। कल तुम्हें सलीबी लड़कियों के जल्वे दिखाकर तुम में बेहयाई पैदा की जायेगी। तुम्हें इन्सान से हैवान बनाया जाएगा फिर तुम महसूस भी नहीं करोगे कि तुम इज़्ज़त, ग़ैरत और वक़ार से महरूम हो गये हो। तुम कुफ़्फ़ार के ग़ुलाम होगे। सूडान का बादशाह मुसलमान नहीं है। वह काफ़िर है। इस्लाम का दुश्मन और सलीबियों का दोस्त है। क्या तुम पसन्द करोगे कि तुम्हारी बेटियां कुफ़्फ़ार की बेटियों की तरह मर्दों के साथ शराब पीयें और बदकारी करें? क्या तुम पसन्द करोगे कि मस्जिदें वीरान हो जाएं और क़ुर्आन के वरक़ ज़मीन पर रौंदे जाएं?"

"रब्बे काबा की क़सम! हम ऐसा नहीं चाहते।" एक आवाज़ आई– "उसे हमारे सामने लाओ जो अपने आप को ख़ुदा का एल्ची कहता है।"

"वह बेक़सूर है।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "वह तुममे से ही है। वह अब असली रूप में तुम्हारे सामने आयेगा और तुम्हें बतायेगा कि कुफ़्फ़ार किस तरह जड़ें खोखली कर रहे हैं। अभी तुम मेरी बाते सुनो। तुम मुसलमान हो। ख़ुदा ने तुम्हें बरतरी और फौक़ियत अता फ़रमाई है। कुफ़्फ़ार तुम्हें ख़ुदा की अता की हुई नेअमत से बेगाना करना चाहते हैं।"

"तुम कौन हो?" किसी ने बुलन्द आवाज़ से कहा– "तुम्हारी बातों में दानाई है। क्या तुम हमें दिखा सकते हो कि यह सब क्या था जो हमें दिखाया गया है?"

"मैं तुम्हें दिखाता हूं।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा–"ख़ेमे में से वह एक बर्तन उठा लाया जिस में तेल की क़िस्म का आतिशगीर सयाल था। उसने यह तेल एक कपड़े पर डाल कर ज़मीन पर रख दिया। उस पर पानी डाला। मशाल उठाकर उस का शोला कपड़े के क़रीब किया तो कपड़ा भड़क कर शोला बन गया। उसने सब को बताया कि जिस कपड़े पर पानी डाल कर उमरू दूरवेश आग लगाता था वह भी इसी तेल से भीगा हुआ होता था।

"अब मैं तुम्हें वह आदमी दिखाता हूं जो उसके साथी थे।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा। उसने किसी को आवाज़ देकर कहा– "उन्हें सामने ले आओ।"

लोगों के हुजूम से कुछ दूर अंधेरे में वह आदमी पकड़े खड़े थे जो उमरू दूरवेश के सवांग में शामिल थे। उन्हें छापामारों ने नर्ग़े में ले रखा था। अचानक शोर उठा। घोड़ा दौड़ाने की आवाज़े सुनाई दीं। किसी ने बुलन्द आवाज़ से कहा–"एक भाग गया।" एक जासूस निकल गया। दूसरों को सामने लाया गया। मशाल ऊपर करके उनके चेहरे सब को दिखाये गये।

"यह मुसलमान हैं।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा–"इसी इलाक़े के रहने वाले हैं। यह ईमान फ़रोश हैं।" अली बिन सुफ़ियान ने तफ़सील से बताया कि यह क्या करते हैं।

"इन्हें क़त्ल कर दो।" कई आवाज़ें उठीं– "संगसार कर दो।" लोग उन की तरफ़ बढ़े। मशालों की रौशनी में तलवारें चमकीं। "रूक जाओ।" अली बिन सुफ़ियान ने दर्मियान में आ कर कहा– "ख़ुदा का क़ानून अपने हाथ में न लो। इनकी सज़ा तुम्हारे बुज़ुर्ग मुक़र्रर करेंगे। इन्हें हिरासत में ले लो....और मेरे साथ आओ।"

सारे लोग अली बिन सुफ़ियान के पीछे चल पड़े। वह उन्हें उस पहाड़ी की तरफ़ ले जा रहा था जहां उसके छापामारों ने एक आदमी को हलाक कर दिया था और दो को रस्सियों से

बांध रखा था।

❖

उस वक़्त उमरू दूरवेश, आशी और दो छापामार दूर निकल गये थे। वह सूडान के दारूल हुकूमत की तरफ़ जा रहे थे।

"दोस्तों!" उमरू दूरवेश ने दौड़ते हुए घोड़े से कहा– "हमें बहुत जल्दी पहुंचना है..... आशी! अगर तुम सवारी से थक जाओ तो मेरे पीछे बैठ जाना। सफ़र बड़ा लम्बा है और वक़्त बहुत थोड़ा है। मुझे डर है कि कोई जासूस हमसे पहले न पहुंच जाए।"

जासूस भी दारूल हुकूमत को रवाना हो गया था। यह वही था जो अली बिन सुफ़ियान के आदमियों की हिरासत से भागा था। वह एक वादी में चला गया था क्योंकि उसे तअक्कुब का डर था। वह वादी से निकला और उसने दारूल हुकूमत का रूख़ करके बहुत दूर का चक्कर काटा। इतने में उमरू दूरवेश बहुत दूर निकल गया था। जासूस को यह ख़बर देनी थी कि उमरू दूरवेश का राज़ बेनक़ाब हो गया है। उसे उमरू दूरवेश पर शक का इज़हार करना था। उसका मतलब यह था कि उमरू दूरवेश को एक बार फिर क़ैदखाने में बन्द होना था। उमरू दूरवेश उससे पहले पहुंच कर सूडानी सालार को धोखा देना और इस्हाक़ को रिहा कराना चाहता था। आशी को इस स्कीम का इल्म था और वह गवाह की हैसियत से साथ जा रही थी।

लोग मशालों की रौशनी में पहाड़ी पर चढ़ते जा रहे थे। अली बिन सुफ़ियान आगे–आगे था। पहाड़ी की चोटी पर उसके आदमियों ने दो जासूसों को बांध रखा था। उन्हें मशालें ऊपर आती नज़र आ रही थीं एक आदमी ने दीया ऊपर कर दिया ताकि आने वालो को मालूम हो जाए कि उन्हें कहां आना है।

"हमारे साथ चलो।" रस्सियों से बंधे हुए एक आदमी ने कहा– "जो मांगोगे मिलेगा हमें छोड़ दो।"

"क्या तुम हर मुसलमान को इमान फरोश समझते हो?" उसे जवाब मिला– "दुनिया की दौलत और दोज़ख़ की आग में कोई फ़र्क नहीं। तुम अपनी क़ौम को धोखा दे रहे थे।"

"वह आ रहे हैं।" दूसरे क़ैदी ने कहा– "वह हमें संगसार कर देंगे। यह बड़ी अज़ीयतनाक मौत होगी.....कहो क्या लेते हो। हम दूसरी तरफ़ से भाग चलते हैं। सोना देंगे।"

ज्यों–ज्यों मशालें ऊपर आ रही थीं, दोनों क़ैदियों की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। एक ने कहा– "तुम्हारे पास तलवारें हैं। इनसे हमारी गर्दने काट दो। हमें उन लोगों से बचाओ।"

"अल्लाह से गुनाहों की बख़्शिश मांगो।"

मशालें उनके सर पर आ रूकी। अली बिन सुफ़ियान ने लोगों को दूर–दूर खड़ा कर दिया। दो आदमियों को रस्सियों में बंधा देखकर हैरान होने लगे।

"यह हैं तूर का जल्वा दिखाने वाले।" अली बिन सुफ़ियान ने लोगों से कहा और ज़मीन पर देखा। वहां आतिशगीर सयाल गिरा हुआ था। ज़रा परे बर्तन पड़ा था। उसने कहा– "इस बर्तन में वही तेल था जो मैंने कपड़े पर डाल कर दिखाया था। यह तेल यहां गिराया गया है।

मैंने चार आदमी शाम के वक़्त यहां छिपा दिए थे। उमरू दूरवेश की मशाल के इशारे पर इन दोनों ने इस दीये से इस तेल को आग लगानी थी और यह नूर का जल्वा था जो तुम लोग न देख सके क्योंकि मेरे आदमियों ने उन्हें आग लगाने से पहले ही पकड़ लिया था।"

"यह तीन थे।" एक आदमी ने कहा– "तीसरे ने हमारा मुकाबला किया। उसकी लाश दरख़्त के साथ पड़ी है।"

अली बिन सुफ़ियान ने मशाल का शोला तेल पर रखा तो तेल जल उठा। शोला उपर तक आया और आहिस्ता–आहिस्ता बुझने लगा। अली बिन सुफ़ियान ने कहा–"क्या इस के बाद भी किसी शक की गुन्जाईश रह जाती है कि ख़ुदा से तुम्हारा रिश्ता तोड़कर तुम्हें आतिश परस्त बनाया जा रहा था।" उसने उन दो आदमियों से जो रस्सियों से बंधे हुए थे पूछा– "क्या मैं झूठ बोल रहा हू?"

"मुझे बख़्श दो।" एक ने ख़ौफ़ज़दा आवाज़ में कहा– "तुमने जो कहा है सच कहा है।"

"क्या तुम इसी इलाके के मुसलमान नहीं हो?"

"हां।" दोनों ने सर हिलाये।

"क्या तुम्हें सलीबियों और सूडानी कुफ़्फ़ार ने इस काम की तरबियत नहीं दी?"

"उन्होंने ही दी है।"

"और तुम अपने कौम को धोखा देने और अपने मज़हब को तबाह करने का इनाम नहीं लेते?"

"हां!" एक ने जवाब दिया– "हम इसका ईनाम लेते हैं।"

"हमे बख़्श दो।" दूसरे ने कहा– "हम अपनी कौम के लिए जाने कुर्बान कर देंगे।"

पीछे से एक जोशिले मुसलमान ने इतनी तेज़ी से तलवार के दो वार किये कि दोनों के सर जिस्मों से जुदा होकर गिर पड़े।

अगर मैं क़ातिल हूं तो मुझे कत्ल कर दिया जाए।" तलवार चलाने वाले ने तलवार आगे फ़ेंक कर कहा।

ख़ुदा की कसम! यह शख़्स कातिल नहीं है।" इमाम ने कहा।

"यह कत्ल जायज़ था।" एक शोर उठा।

❖

उमरू दूरवेश ने सेहर के आग़ाज़ में घोड़े रोके। छापामारों और आशी से कहा कि ज़रा आराम कर लें....घोड़ों को भी आराम देना ज़रूरी है। दारूल हुकूमत की तरफ़ जाने वाला जासूस भी आधी रात तक चला एक जगह आराम करने के लिए रूक गया। उसे मालूम नहीं था कि उमरू दूरवेश आगे–आगे जा रहा है। वह लेटा और सो गया। सुबह तुलूअ होते ही उमरू दूरवेश ने अपने काफ़िले को घोड़ों पर सवार किया और रवाना हो गया। वह फ़ौजी था। छापामार भी सख़्तियां बर्दाश्त करने के आदी थे। आशी लड़की थी जो महलात में रहने की आदी थी। उसे ट्रेनिंग तो मिली थी लेकिन उसकी जिन्दगी ऐश व ईशरत में गुज़र रही थी।

"आशी!" उमरू दूरवेश ने उसे दौड़ते हुए घोड़े से कहा– "तुम्हारा चेहरा उतर गया है। तुम शब बेदारी की भी आदी नहीं। मेरे घोड़े पर आ जाओ।"

आशी मुस्कुराई मगर उसकी आंखें बन्द हो रही थीं। उमरू दूरवेश ने उसे एक बार फिर कहा कि वह अपना घोड़ा छोड़ दे। आशी ने इन्कार में सर हिलाया। घोड़े दौड़ते जा रहे थे। कुछ दूर आगे जाकर एक छापामार ने उमरू दूरवेश से कहा– "लड़की ऊंघ रही है गिर पड़ेगी।"

उमरू दूरवेश ने अपना घोड़ा आशी के करीब किया और बागें खींच ली। आशी बेदार हो गयी। उमरू दूरवेश ने उसे कहा कि वह उसके आगे सवार हो जाए।

"मैं सहारा लेना नहीं चाहती।" सहारा दूंगी। मुझे अपना अहद पूरा करना है। मुझे अपने मां बाप के कत्ल और अपनी इस्मत का इन्तकाम लेना है। मैं जागने की कोशिश कर रही हूं।"

घोड़े चले। बहुत आगे जाकर आशी नींद पर काबू न पा सकी। उमरू दूरवेश उसके करीब था। अगर वह न देख लेता तो आशी गिर पड़ती। उसने घोड़े रोक कर आशी से कोई बात किये बग़ैर उसे कमर से पकड़ कर अपने घोड़े पर आगे बैठा लिया। एक छापामार ने आशी के घोड़े की बागे अपनी ज़ीन के साथ बांध लीं और घोड़े दौड़ पड़े। आशी ने सर उमरू दूरवेश के सीने पर फेंक दिया और गहरी नींद सो गयी। उसके खुले बाल उमरू दूरवेश के चेहरे पर पड़ने लगे। ऐसे मुलायम और रेशमी बालों के लमस से वह आशना नहीं था मगर उन बालों ने उस पर वह असर न किया जो एक जवान मर्द पर होना चाहिए था। उसे आशी की बातें याद आने लगीं :

"तुम्हारी आग़ोश में मुझे अपने बाप की आग़ोश का सुरूर आया था।" आशी ने उसे उसी सेहरा में चन्द राते पहले कहा था– "मुझे तो यह भी याद नहीं था कि मेरे भी बाप मां थे। तुमने मेरा माज़ी मेरे आगे रख दिया है।" फिर उमरू दूरवेश को यूं महसूस होने लगा जैसे हवा के ज़न्नाटों से उसे आशी की सरगोशियां सुनाई दे रही हों– "मुझे अपने सीने और अपने बाज़ूओं की पनाह में लिए रखो। मैं मुसलमान की बच्ची हूं। मुझे सलीबियों के हवाले न कर देना.......ख़ून......ख़ून.....मुझे ख़ून नज़र आ रहा है। यह मेरे बाप का ख़ून है। यह मेरी मां का ख़ून है। दोनों ख़ून मिलकर बैतुल मुक़द्दस की रेते में जज़्ब हो गये हैं.......उमरू दूरवेश..... .तुम्हारी रगों में हाशिम दूरवेश का ख़ून दौड़ रहा है। तुम्हें इस लहू का ख़िराज वसूल करना है जो बैतुल मुक़द्दस के रेत में जज़्ब हो गया था। तुम्हें फ़िलिस्तीन की आबरू पुकार रही है। किब्ला अव्वल से दिल उतार न देना हाशिम के बेटे!"

छापामारों ने देखा कि उमरू दूरवेश ने घोड़े को ऐड़ लगा दी थी। छापामारों को भी अपने घोड़ों की रफ़तार तेज़ करनी पड़ी। आशी के बाल और ज़्यादा बिखर कर हवा के ज़नाटों से उसके चेहरे पर उड़ने लगे।"

"उमरू दूरवेश!" एक छापामार ने घोड़ा उसके करीब करके कहा– "घोड़े किसी चौकी से बदलने की तो उम्मीद नहीं, घोड़े को इस तरह न मारो। ज़रा आहिस्ता.....ज़रा आहिस्ता।"

उमरू दूरवेश ने छापामार की तरफ़ देखा और मुस्कुरा दिया। उसने घोड़े की रफ़तार

ज़रा कम कर दी और बोला– "ख़ुदाए ज़ुलजलाल हमारे साथ है। घोड़े थकेंगे नहीं।"

उसकी आवाज़ से आशी की आंख खुल गयी। उसने घबराकर पूछा– "मैं कितनी देर सोई रही? मेरा घोड़ा कहां है?"

"तुम सो गयी थी।" उमरू दूरवेश ने कहा– "लेकिन मेरे ईमान की जो रग सोई हुई थी वह जाग उठी है....उठो। अपने घोड़े पर सवार हो जाओ। हम शाम तक मंज़िल पर पहुंच जाएंगे।"

❖

अली बिन सुफ़ियान उस गांव में चला गया था जिसे मुसलमानों ने अपनी ज़मीन दोज़ सरगर्मियों का मरकज़ बना रखा था। उस ने अपने छापामारों और जासूसों के सुपुर्द यह काम किया कि तमाम इलाके में फैल कर उमरू दूरवेश की शोअब्दाबाज़ियों की हकीकत बता दें। उसने वहां के लीडरों को बताया कि वह लोगों को तैय्यार कर लें यह इलाका बहरहाल सूडान का था। जहां मुसलमानों को मनमानी करने की इजाज़त नहीं थी। सूडानी फ़ौज हम्ला करने का हक रखती थी। मुसलमानों ने अपने इलाके में अपना कानून राइज कर रखा था। उन्हों ने जिन जासूसों को गिरफ्तार किया था उन्हें अपने बनाये हुए कैदखाने में डाल दिया था। उन्हें सज़ा देनी थी जो सूडानी कानून के मुताबिक जुर्म था। इन मुज्रिमों ने जो कुछ किया सूडानी हुकूमत की बेहतरी के लिए किया था। अली बिन सुफ़ियान ने ख़तरा मोल ले लिया था। उसने छापामारों की दो पार्टियां तैय्यार कर लीं।

कैद ख़ाने में इस्हाक को एक अच्छे कमरे में रखा गया था। उसे निहायत अच्छा खाना बाइज़्ज़त तरीके से दिया जाता था। वह अच्छी तरह समझता था कि उसके साथ इतना अच्छा सलूक क्यों हो रहा है। उमरू दूरवेश उसे अपनी पूरी स्कीम बता कर गया था। इस्हाक तन्हाई में बैठा उसी के मुतअल्लिक सोंचता रहता था। उसे दो ख़तरे नज़र आ रहे थें एक यह कि उमरू दूरवेश ने कैदखाने की अज़ीयतों से तंग आकर सूडानियों के हाथों में खेलना शुरू कर दिया होगा। दूसरा ख़तरा यह कि उमरू दूरवेश कहीं अपने ही मंसूबे की नज़र न हो गया हो। इस्हाक अपने फ़रार के मुतअल्लिक भी सोंचता रहता था लेकिन उसे कोई सूरत नज़र नहीं आती थी। सूडानियों के लिए वह कीमती कैदी था जिस पर उन्होंने इज़ाफ़ी पहरे लगा रखे थे।

जब से उमरू दूरवेश उससे अलग हुआ उसे किसी ने नहीं कहा था कि वह अपनी कौम को सूडान का वफ़ादार बनाये......

सूडानी सालार जो उसके पीछे पड़ा रहता था उसके सामने भी नहीं आया था।

सूरज गुरुब हो चुका था। चार घोड़े सूडान के दारूलहुकूमत में दाख़िल हुए और सीधे फ़ौज के मरकज़ के सामने जा रूके। उमरू दूरवेश को मालूम था कि उसे कहां जाना है और किससे मिलना है। उसे ज़ेहनी तख़रीबकारी की तरबियत यहीं से मिली थी। उसने मुहाफ़िज़ दस्ते के कमाण्डर को उस सूडानी सालार का नाम बताया जिसने उसे इस काम के लिए तैय्यार किया था। उसे फ़ौरन सालार के घर पहुंचा दिया गया।

"नाकाम लौटे हो या कोई अच्छी ख़बर लाये हो?" सूडानी सालार ने देखते ही कहा।

"अच्छी ख़बर इससे सुनें।" उमरू दूरवेश ने आशी की तरफ़ इशारा करके कहा— "आप मुझ पर शायद अतबार न करें।"

आशी थकन से चूर पलंग पर गिर पड़ी। वह मुस्कुरा रही थी। उसने उमरू दूरवेश से कहा— "इन्हें सारी बात ख़ुद बताओ और ज़रा जल्दी करो। हमारे पास इतना वक़्त नहीं है।"

"हमारी मुहिम इतनी जल्दी कामयाब हुई है जिसकी मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी।" उमरू दूरवेश ने कहा और पूरी तफ़सील से सुनाया कि उसने किस तरह पानी को आग लगाई और तूर के जल्वे दिखाये हैं।

"और उसके बोलने का जो अन्दाज़ था उसने मुझे हैरान ही कर दिया था।" आशी ने उमरू दूरवेश के मुतअल्लिक़ कहा— "लोग उसके शोअब्दों से इतने मुतास्सिर नहीं हुए जितने इसकी ज़ुबान से।"

"क्या आपको अब तक कोई बताने नहीं आया कि वहां हमने किस हद तक कामयाबी हासिल कर ली है?" उमरू दूरवेश ने पूछा।

"कोई भी नहीं आया।" सूडानी सालार ने कहा— "मैं तुम दोनों के मुतअल्लिक़ परेशान था।"

उमरू दूरवेश को यह सुनकर इत्मीनान हुआ कि यहां अभी तक कोई जासूस नहीं पहुंचा। जासूस जो मुसलमानों के हिरासत से फ़रार होकर आ रहा था अभी दूर था। उसकी रफ़्तार वह नहीं थी जो उमरू दूरवेश की थी। उस रफ़्तार से उसे सुबह के वक़्त पहुंचना था। उमरू दूरवेश का धोखा उसी जासूस के ग़ैर हाज़िरी में चल सकता था। उस के पहुंचते ही असल सूरते हाल को बेनक़ाब होना और उमरू दूरवेश को क़ैदख़ाने में बन्द होना था।

"अब मुझे इस्हाक़ की ज़रूरत है।" उमरू दूरवेश ने कहा— "मैं आधे से ज़्यादा मुसलमानों के ज़ेहन साफ़ कर चुका हूं। मैंने उन्हें इस पर आमादा कर लिया है कि वह सूडान के वफ़ादार हो जायें। मैंने सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ नफ़रत और दुश्मनी पैदा कर दी है। मैंने साबित कर दिया है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी फ़िरऔनों का जानशीन है। अब मुसलमानों को अपना कोई क़ायद कह दे कि हमें सूडान का वफ़ादार होना चाहिए। उस इलाक़े की तमाम तर आबादी आप की होगी। मैं ने वहां मालूम किया है, और मैं ख़ुद जानता हूं कि यह क़ायद इस्हाक़ के सिवा और कोई नहीं हो सकता। उसे वहां के मुसलमान पीर और पैग़म्बर मानते हैं।"

"मगर इस्हाक़ से मनवाये कौन?" सूडानी सालार ने कहा— "मैं उसे इस ख़ित्ते की इमारत का लालच दे चुका हूं। उसे ऐसी-ऐसी अज़ीयतें दी हैं जो घोड़ा बर्दाश्त नहीं कर सकता। आशी भी नाकाम हो चुकी है।"

"अब मुझे कोशिश करने दें।" उमरू दूरवेश नेकहा— "उसे क़ैदख़ाने से निकाल कर उसी कमरे में भेज दें जहां आप ने उसे एक बार रखा था और मुझे भी रखा था। आप उसके दुश्मन हैं। मैं उसका साथी हूं।"

"क्या वहां आशी को एक बार फिर आज़माओगे?" सूडानी सालार ने पूछा।

"नहीं।" उमरू दूरवेश ने जवाब दिया– "अब मैं अपनी ज़ुबान का जादू आज़माऊंगा। उसे अगर अभी उस कमरे में ले जायें तो मुझे उम्मीद है कि सुबह तक मैं उसे अपने जाल में फांस लूंगा। मेरे पास ज़्यादा वक़्त नहीं। उस इलाक़े से मेरी ग़ैर हाज़िरी लम्बी नहीं होनी चाहिए। आप जानते हैं कि वहां मिस्री जासूस भी हैं। मैंने वहां जो जादू चलाया है उसे मिस्री जासूस मेरी ग़ैरहाज़िरी में बेकार कर सकते हैं।"

सूडानी सालार ने उन दो छापामारों के मुतअल्लिक़ पूछा जो उमरू दूरवेश के साथ थे। उसने बताया कि यह उस के मुहाफ़िज़ और मुरीद हैं, और उसके साथ रज़ाकाराना तौर पर आये हैं।

❖

वह एक इमारत का ख़ुश्नूमा कमरा था जिस में इसहाक़ को लाया गया। सालर ख़ुद इस्हाक़ को क़ैदखाने में से लाने के लिए गया था। उसने इस्हाक़ से कहा था– "मैं तुम्हारे क़ौमी जज़्बे और इमान का क़ायल हो गया हूं। तुम्हारा एक दोस्त उमरू दूरवेश तुम से मिलने का ख़्वाहिशमन्द है। मैं चाहता हूं कि तुम्हारी मुलाक़ात अच्छे माहौल में हो।"

"मुझे क़ैदखाने से ज़्यादा ग़लीज़ और जहन्नमी माहौल और तुम्हारे महलात से ज़्याद दिलफ़रेब माहौल अपनी राह से हटा नहीं सकते।" इस्हाक़ ने कहा– "मुझे तहख़ाने में ले चलो या बालाख़ाने में, मैं अपना इमान नही बेचूंगा।"

सूडानी सालार हंस पड़ा और उसे उस कमरे में ले गया जहां उमरू दूरवेश उस के इन्तज़ार में मौजूद था। सूडानी सालार भी कमरे में रहा।

तुम्हारा चेहरा बता रहा है कि तुमने इन काफ़िरों के साथ अपना इमान बेच डाला है।" इस्हाक़ ने उमरू दूरवेश से कहा– "तुम्हारे चेहरे की रौनक़ और आंखों की चमक बता रही है कि तुम बहुत दिनों से क़ैदखाने से बाहर घूम फिर रहे हो। मुझसे क्यों मिलना चाहते हो?"

"मैं तुम्हारे चेहरे पर भी यही रौनक अेर आंखों पर यह चमक देखना चाहता हूं। जो तुम मेरे चेहरे और आंखों में देख रहे हो।" उमरू दूरवेश ने कहा– "ज़रा मुझे मुहलत दो। ज़रा सी देर के लिए अपना दिल और अपना ज़ेहन मुझे दे दो। तहम्मुल और इत्मीनान से मेरी बात सुनो।"

सूडानी सालार पास खड़ा था। वह ख़तरा मोल नहीं लेना चाहता था। इस्हाक़ उसका निहायत अहम क़ैदी था, और उमरू दूरवेश भी क़ैदी था। यह उमरू दूरवेश का धोखा भी हो सकता था। वह इन दोनों को एक ऐसे कमरे में आज़ाद नहीं छोड़ सकता था जो क़ैदखाने का कमरा नहीं था। उसने चार संतरियों का इन्तज़ाम कर दिया था। दो कमरे के सामने खड़े थे और दो पिछले दरवाज़े के सामने। बरछियों और तलवारों के अलावा उन्हें तीर व कमान भी दिये गये थे ताकि फ़रार की कोशिश कामयाब न हो सके। उमरू दूरवेश चाहता था कि सलार वहां से चला जाये मगर सालार वहां से टलता नज़र नहीं आ रहा था। उसकी मौजूदगी में उमरू दूरवेश इस्हाक़ को बता नहीं सकता था कि उसका मंसूबा क्या है।

आशी को सूडानी सालार ने नहाने धोने और आराम करने के लिए उसी इमारत के एक कमरे में भेज दिया था। वह सूडानी सालार को उस कमरे से ले जा सकती थी मगर उस के इधर आने का कोई इम्कान नहीं था। सूडानी सालार अलग होकर बैठ गया। वह जासूस जो सही सूरते हाल बताने आ रहा था शहर से थोड़ी ही दूर रह गया था। वक़्त तेज़ी से गुज़र रहा था। उमरू दूरवेश के दोनों छापामार उसी इमारत के एक बरामदे में उमरू दूरवेश के इशारे का इन्तज़ार कर रहे थे। कुछ देर बाद आशी बाहर आई। वह नहा धोकर कपड़े बदल कर आई थी। उसका हुस्न निखर आया था। चेहरे से सफ़र की थकन भी धुल गयी थी। वह छापामारों के पास जा रूकी।

"सालार चला गया है?" आशी ने उनसे पूछा।

"नहीं।" एक छापामार ने जवाब दिया— "वह अन्दर है।"

"उसे चले जाना चाहिए।" आशी ने कहा और वह उस कमरे की तरफ़ चल पड़ी।

उमरू दूरवेश ने उसे कमरे में दाख़िल होते देखा तो उसे उम्मीद की किरन नज़र आई। सूडानी सालार ने उसे देखा तो उसके होंठों पर वही मुस्कुराहट आ गयी जो उस जैसे मर्दों के होंटों पर आशी जैसी दिलकश लड़की को देखकर आया करती हैं आशी पहले टहलते—टहलते सालार के पीछे चली गयी। उसने उमरू दूरवेश को गहरी नज़रों से देखा। उमरू दूरवेश को मौका मिल गया। उसने आशी को इशारा किया कि सालार को यहां से ग़ायब करो।

"इस्हाक़ भाई!" उमरू दूरवेश ने पूछा—"क्या हम सूडान के बेटे नहीं हैं?"

"मैं सबसे पहले इस्लाम का बेटा हूं।" इस्हाक ने जवाब दिया— "और मैं अब भी मिस्री फ़ौज का कमानदार और सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का वफ़ादार हूं। अगर सूडान की ज़मीन मेरी मां है तो मैं अपनी मां को इस्लाम के दुश्मनों के हवाले नहीं कर सकता। उमरू दूरवेश! मैं तुम्हारी तरह इस्लाम की अज़मत और अपनी ग़ैरत को फ़रोख़्त नहीं कर सकता।"

आशी ने पीछे से सूडानी सालार के कंधो पर दोनों बाज़ू रखे और मुंह उसके कान से लगाकर कहा—"चन्द दिनों में आप का दिल मर गया है?"

सूडानी सालार ने घूम कर देखा तो आशी के गाल और बिखरे हुए बाल सालार के गालों से टकरा गये। आशी मुस्कुरा रही थी। उसने मख़्मूर तिश्ना लहजे में कहा— "मैं इतनी ख़तरनाक और थकादेने वाली मुहिम से वापस आई हूं। कल फिर उन्हीं जंगलियों के पास चली जाऊंगी जिन के पास पीने को पानी के सिवा कुछ भी नहीं। मैं तो शराब की बू को तरस गयी हूं।"

"ओह!" सूडानी सालार ने चौंक कर कहा—"मैं इस क़िस्से में तुम्हें भूल ही गया था मैं किसी से कह देता हूं। तुम उसी कमरे में चलो।"

"ऊं!" आशी ने कहा— "अकेले क्या ख़ाक मज़ा आयेगा? आप भी चलिए। यहां कोई ख़तरा नहीं। दोनों तरफ़ संतरी खड़े हैं। कुछ देर बाद यहीं आ जाना।"

आशी इसी फन की उस्ताद थी। बचपन से अब तक उसे मर्दों को अपने जाल में फांसने

और उंगलियों पर नचाने की तरबियत दी गयी थी। उसने यही फन अपने आकाओं और उस्तादों के ख़िलाफ़ आज़माना शुरू कर दिया। सूडानी सालार उस की मुस्कुराहट के फरेब में आ गया और उसके साथ चला गया। आशी ने उसे अपने बाज़ूओं के घेरे में ले लिया था और ज़रा सी देर में बूढ़े साला पर जवान लड़की का तिलिस्म तारी हो गया। इतने में शराब आ गयी। आशी ने सालार को जाम पे जाम पिलाने शुरू कर दिये।

❖

"नीयत साफ होतो ख़ुदा भी मदद करता है।" उमरू दूरवेश ने इस्हाक़ से कहा– "मैंने जो सोचा था वह हर लिहाज़ से और हर पहलू से अमली शकल में आ गया है। सारी बात शहर से निकल कर सुनाऊंगा। दो छापामार साथ लाया हूं। दो संतरी इधर खड़े हैं दो उधर। हमें सिर्फ़ उस तरफ़ के संतरियों को ख़त्म करना है जिस तरफ़ से निकलना है। चार घोड़े तैय्यार हैं। चार घोड़े संतरियों के तैय्यार खड़े हैं ताकि फरार की सूरत में वह हमारा पीछा कर सके। अपने हां मिस्र के कुछ लोग आये हैं। एक आदमी बहुत ही दानिशमन्द मालूम होता है। उसने अपना नाम नहीं बताया। काहिरा भी इत्तलाअ पहुंच गयी है कि यहां क्या हुआ है। सालार को लड़की ले गयी है। मैं ज़रा बाहर का जायज़ा ले लूं। लड़की को भी साथले जाना है।"

"क्यों?" इस्हाक़ ने पूछा– "उस बदकार के साथ तुम्हारा क्या तअल्लुक है।"

"बाहर चल कर बताऊंगा।" उमरू दूरवेश ने कहा– "यह कोई ऐसा वैसा तअल्लुक नहीं। लड़की मुमसलान है।"

उमरू दूरवेश बाहर निकला। संतरियों ने उसे सूडानी सालार के साथ उस कमरे में आते देखा था, इसलिए उन्होंने इसे एहतराम की नज़रों से देखा। वह अपने छापामारों के पास गया और उन्हें बताया कि संतरियों को संभालने का वक़्त आ गया है। फिर उस ने उस कमरे का दरवाज़ा आहिस्ता से खोला। सालार के होश शराब में डूब चुके थे। उसने झूम कर पूछा– "कौन है?"

"मैं देखती हूं।" आशी ने कहा– "हवा से दरवाज़ा खुल गया है।" उसने सालार को साहरा देकर पलंग पर लिटा दिया। सालारने बाज़ू फैलाये लड़खड़ाती आवाज़ में कहा– "तुम भी आओ नशे को दुगुना कर दो।"

आशी बाहर निकल आई और आवाज़ पैदा किए बग़ैर दरवाज़ा बाहर से बन्द कर दिया। उमरू दूरवेश और आशी ने दोनों छापामारें को साथ लिया और इस्हाक वाले कमरे की तरफ गये। सूडानी जासूस शहर में दाख़िल हो चुका था। और वह जासूसी के मरकज़ की तरफ़ जा रहा था। उमरू दूरवेश ने दोनों संतरियों से कहा– "दोनों अन्दर चलो और कैदी को कैदखाने मे ले जाओ। सालार ने हुक्म दिया है कि हाथ बांध कर ले जाना।"

दोनों संतरी इकट्ठे अन्दर गये। उनके पीछे दरवाज़ा बन्द हो गया। दोनों छापामार बऐक वक़्त उन पर झपटे। दोनों की गर्दनें एक–एक छापामार के बाज़ू के शिकन्जे में आ गयीं। छापामारों ने ख़ंजर पहले ही निकाल लिए थे। उन्होंने संतरियों के दिलों पर वार किये

और उन्हें ख़त्म कर दिया। सूडानी जासूस अपने ठिकाने पर पहुंच गया था। और एक नायब सालार को सही रिपोर्ट दे रहा था। उमरू दूरवेश ने इस्हाक़ से कहा– "फ़ौरन निकलो।" बाहर चार घोड़े उमरू दूरवेश के खड़े थे और चार संतरियों के। दूसरी तरफ़ के संतरियों को मालूम ही न हो सका कि अन्दर क्या हो रहा है।

यह सब घोड़ों पर बैठे। रात ने फ़रार पर पर्दा डाले रखा। शहर गहरी नींद सोया हुआ था। फ़रार होने वालों ने घोड़ों को फ़ौरन एड़ न लगाई। आशी भी उन के साथ थी सूडानी. जासूस ने अपनी रिपोर्ट दी तो नाईब सालार इसे सूडानी सालार के पास ले गया। उन्हें बताया कि वह कहाँ है। वे दोनों इधर आए तो रासते में इन्हों ने पांच घोड़ सवार जाते देखे एक दुसरे के करीब से गुज़र गए अंधेरे की वज्ह से कोइ किसी को पहचान न सका।

नाईब सालार ने उस बरआमदे में जाकर इध उधर देखा जहाँ कुछ देर पहले दो संन्तरी खड़े थे। उस ने कमरे का दरवाज़ा खोला तो उसे दोनों संतरीयों की लाशें पड़ी नज़र आईं। खून बेह बेह कर हर तरफ़ फेल गया था। नाईब सालार ने अन्दर जा कर दूसरा दरवाज़ा खोला। उधर दो संन्तरी आराम से खड़े थे। भाग दोड़ शरू होगइ। एक कमरे में सालार पलंग पर पड़ा नशे में बद मस्त आशी को पुकार रहा था नाईब सालार ने उसे बुलाया और उठाया आशी ने उसे बहुत ही ज़्यादा पिलादी थी। उसे जब बताया गया कि दो संन्तरी कमरे में मरे पड़े हैं तो ज़रा हौश में आया अब वह बात सुन्ने और समझने की हालत में आया उस वक़्त ऊमर दुर्वेश, इस्हाक़, दो छापा मार और आशी शहर से बहुत दूर निकल गए थे। तआक्कब बेकार था सुब्ह के वक़्त उसे सही सूरते हाल का इल्म हूआ।

अगली रात आधी गुज़र गई थी जब ऊमरू दुर्वेश अपने काफ़ले के साथ अपने पहाडी इलाके में दाखिल हूआ। अली बिन सफ़्यान उनके इन्तेज़ार में बेताब हो रहा था। ज़रूरत यह थी कि इस्हाक़ और ऊमरू दर्वेश को फ़ौरन मिस्र भेज दिया जाए लेकिन एक ज़रूरत यह भी थी कि उन्हें इस इलाके में घुमाया फ़िराया जाए ताकि जिन लोगों ने सूडानियों की शोअब्दा बाज़ियां देखी हैं इन्हें असल हक़ीक़त मालूम होजाए अल्बत्ता फ़ौरी तौर पर यह इन्तेज़ाम कर दिया गया कि कुछ आदमियों को देखभाल के लिए मुक़र्र कर दिया गया ताकि सूडानी फ़ौज हमला करे तो क़ब्ल अज़ वक़्त इत्तेला मिल जाए। दूसरी ज़रूरत यह थी कि मिस्री फ़ौज के कुछ और छापा मार इस इलाके में बुलालिए जाऐं जो सूडानी फ़ौज के हमले की सूरत में अक़ब से शबखून मारेंगे और फ़ौज को इस इलाके से दूर रखें।

इस तरह ऊमरू दुर्वेश, अली बिन सफ़ियान और उस के छापा मारों ने वह मारका जीत लिया जो कमान्डरों बादशाहों और क़ौम की नज़रों से ओझल हो कर लड़ा गया था। यह एक इन्फ़रादी जंग थी जो इमान और क़ौमी जज़्बे की कुव्वत से लडी गई थी सुलतान सलाहुद्ददीन अय्यूबी ने इस दर परदा जंग पर हमैशा तवज्जह मरकूज़ रखी थी। इस का एन्टलीजन्स का निज़ाम बहूत होशियार था.

उस वक़्त जब सूडानी मुसलमानों ने यह मारका जीत लिया था सुल्तान अय्यूबी मूसलमान उमरा–गुमशतगीन, सैफ़द्ददीन और सुल्तान अय्यूबी अल्मलकुस्सालेह– की मुत्तहिदा अफ़वाज

को शिकस्तो फाश देकर उनके तअक्कुब मे जा रहा था। रास्ते में उसने चन्द एक अहम मुकामात और छोटे छोटे किलों पर कब्ज़ा कर लिया था। वह हलब की तरफ बढ़ रहा था जो एक अहम शहर और अल्मलकुस्सालेह की फौज का मरकज़ था। सुल्तान अय्यूबी उस शहर को मुहासिरे में लेकर मुहासिरा उठा चुका था। वहां के मुसलमानों ने उस का मुकाबला ऐसी बेजिगरी से किया था कि सुल्तान अय्यूबी ईश–ईश कर उठा था। मुहासिरा उठाने की वजह इससे पहले सुनाई जा चुकी है।

उसके बाद मुसलमान अफ़वाज की आपस में जो जंग हुई उसकी तफ़सीलात भी सुनाई जा चुकी हैं। सुल्तान अय्यूबी ने तीनों मुसलमान फौजों को बेतहाशा नुक़सान पहुंचाकर इस तरह पस्पा किया कि फौजें बिखर गयीं। सुल्तान अय्यूबी ने तआक्कुब जारी रखा। उसकी ज़्यादा तर तवज्जो हलब की फौज पर थी क्योंकि यह बहादुरी से लड़ने वाली फौज थी। यह हलब की सिम्त पस्पा हो रही थी। सुल्तान अय्यूबी उसे रास्ते में ही तबाह कर देना चाहता था क्योंकि वह हलब पर कब्ज़ा करने की पेश कदमी कर रहा था। उ ने लअक्कुब का अन्दाज़ यह न रखा कि अपनी फौज को उसके पीछे डाल दिया बल्कि उस ने अपने बर्क रफ़तार दस्ते किसी दूसरे रास्ते से आगे भेज दिये और कुछ छापामार दोनों पहलुओं पर भेज दिए।

हलब की फ़ौज अफ़रा तफ़री के आलम में हलब को जा रही थी। आगे जाकर उस के कमाण्डरों ने देखा कि सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज ने रास्ता रोक रखा है। हलब की फ़ौज रूक गयी। उसके सिपाहियों में लड़ने की हिम्मत नहीं रही थी। उनका साज़ो सामान भी कम रह गया था। रस्द और ख़ुराक की भी कमी थी। यह फौज रूकी तो पहलुओं पर सुल्तान अय्यूबी के छापामारों ने शबख़ून और छापे मारने शुरू कर दिए। सुल्तान अय्यूबी के कमाण्डरों ने एलान करने शुरू कर दिए– "हलब वालों हथियार डाल दो।"

सुल्तान अय्यूबी मुहाज़ से पीछे था। उसे इत्तलाऐं मिल रही थीं कि हलब की फ़ौज हथियार डालने की हालत में आ रही है। उसने कहा– "अगर यह फ़ौज सलीबियो की होती तो उसके एक भी सिपाही को ज़िन्दा न छोड़ता मगर यह मेरे अपने भाइयों की फ़ौज है। यह लोग हथियार डाल देंगे तो मैं उन्हें बख़्श दूंगा। मुझे ख़ुशी फिर भी नहीं होगी मरने के बाद मेरी रूह भी बेचैन रहेगी कि मेरे दौर में मुसलमानों की तलवारें आपस में टकराइ थीं। अगर हमारे भाई अब भी दोस्त और दुश्मन की पहचान कर लें तो इस शर्मनाक ग़लती का इज़ाला हो सकता है।"

दूसरे ही दिन ख़ुदा ने सुल्तान अय्यूबी की दुआ सुन ली। उसने दो घोड़ सवार अपने तरफ़ आते देखे। उन में से एक ने सफ़ेद झंडा उठा रखा था। उनके दायें बायें सुल्तान अय्यूबी की अपनी फौज के दो कमानदार थे। करीब आकर घोड़े रूक गये। एक कमानदार ने घोड़े से उतर कर सलाम किया और कहा– "हलब के हाकिम अल्मलकुस्सालहे ने सुलह का पैग़ाम भेजा है। यह दो एल्ची जंग बन्दी और सुलह का पैग़ाम लाये हैं।"

एक एल्ची ने पैग़ाम सुल्तान अय्यूबी के हाथ में दिया। सुल्तान अय्यूबी ने पैग़ाम पढ़कर कहा– "अल्मलकुस्सालेह से कहना सलाहुद्दीन अय्यूबी ने जब जंग से पहले सुलह का

पैग़ाम भेजा था तो तुमने फ़िरऔनों की तरह मेरे एल्ची की बेइज़्ज़ती करके मेरा पैग़ाम ठुकरा दिया था। आज ख़ुदाये ज़ुलजलाल ने मुझे यह ताकत बख़्शी और तुझे यह ज़िल्लत दी कि में तुम्हारी फ़ौज को इस तरह पीस सकता हूं जिस तरह दो पत्थरों के दर्मियान दाने पीसे जाते हैं लेकिन मेरे दुश्मन तुम नहीं। तुम उस बाप के बेटे हो जिसने सलीबियों को घुटनों बैठा रखा था, और तुम सलीबियों से दोस्ती गांठ कर अपने बाप की फ़ौज के ख़िलाफ़ लड़ने आये थे....उसे कहना कि मैंने तुम्हें मांफ किया। दुआ कर कि अल्लाह भी तुम्हें मांफ कर दे।"

सुल्तान अय्यूबी ने अपनी शर्त पर सुलह की पेशकश मंजूर कर ली। अल्मलकुस्सालेह को उस शर्त पर अपनी फ़ौज हलब को ले जाने की इजाज़त दे दी कि जब उसकी फ़ौज हलब आयें तो हलब की फ़ौज कोई मज़ाहमत न करे।

एक और दिलचस्प वाकिआ हुआ। अल्मलकुस्सालेह अपनी फ़ौज निकाल कर ले गया। सैफ़ुद्दीन भी पस्पा होकर मुसिल चला गया था और गुमश्तगीन ने अपने किले हरान में जाने की बजाये हलब का रूख़ किया। सुल्तान अय्यूबी अपनी फ़ौज को और आगे ले गया और एक मुकाम तुर्कमान को आरज़ी कैम्प बना लिया। एक रोज़ हलब का एक क़ासिद उसके पास आया और अल्मलकुस्सालेह का एक पैग़ाम सुल्तान अय्यूबी को दिया। सुल्तान ने पैग़ाम खोल कर पढ़ा तो चौंक उठा क्योंकि यह पैग़ाम उसके नाम नहीं बल्कि सैफ़ुद्दीन के नाम था। अल्मलकुस्सालेह ने सैफ़ुद्दीन को लिखा था।– "आप का ख़त मिल गया है जिस में आप ने इस पर ख़फ़गी का इज़हार किया है मैं ने सलाहुद्दीन के आगे हथियार डाल कर सुलह कर ली है। बेशक मैं ने ऐसा ही किया है लेकिन मेरे लिए और कोई रास्ता नहीं था। मेरी फ़ौज उसकी फ़ौज के घेरे में आ गयी थी। मेरे सिपाही थके हुए, डरे हुए और जख़्मी थे। मेरे सालारों ने मुझे मश्वरा दिया कि सलाहुद्दीन को सुलह का धोखा दिया जाये और अपनी फ़ौज को उस के चंगुल से निकाला जाये। मैंने यही बेहतर जाना और सलाहुद्दीन अय्यूबी को सुलह का पैग़ाम दे दिया.....

"मोहतरम ग़ाज़ी सैफ़ुद्दीन आप मुत्मईन रहें। मैं ने वक़्त हासिल करने के लिए सुलह की है। वरना मेरे पास आज एक भी सिपाही न होता। मैं अब हलब में अपनी फ़ौज की तन्ज़ीमें नौ करा रहा हूं। नई भर्ती शुरू करादी है। मैं ने सलाहुद्दीन अय्यूबी की यह शर्त तस्लीम कर ली है कि उसकी फ़ौज हलब में आयेगी तो हमारी फ़ौज मज़ाहमत नहीं करेगी, लेकिन वह जब यहां आयेगा तो उसकी फ़ौज को ऐसी मज़ाहमत मिलेगी जो उस के तसव्वुर में भी नहीं आ सकती। आप अपनी फ़ौज को अज़ सरे नौ तैय्यार कर लें। हमें सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ना और उसकी ताकत को ख़त्म करना है।"

इस पैग़ाम में और भी बहुत कुछ लिखा था। मोअर्रिख़ीन ने इस पर इत्तफ़ाक किया है कि अल्मलकुससालेह ने सुल्तान अय्यूबी को सुलह का धोखा दिया था और इस पर भी कि अल्मलकुस्सालेह ने सैफ़ुद्दीन के ख़त के जवाब में जो ख़त लिखा था वह ग़लती से सुल्तान अय्यूबी को मिल गया था या क़ासिद सुल्तान अय्यूबी का जासूस था। यूरोपी मोअर्रिख़ों ने लिखा है कि यह क़ासिद की ग़लती थी। दो ने लिखा है कि पैग़ाम बमुहर किया गया तो बाहर

ग़लती से सुल्तान अय्यूबी का नाम लिख दिया गया था। मुसलमान मोअर्रिख़ जिन में सिराजुद्दीन ख़ास तौर से क़ाबिले ज़िक्र है लिखता है कि सुल्तान अय्यूबी का निज़ामे जासूसी ऐसा बाकमाल था कि अल्मलकुस्सालेह का क़ासिद उसका जासूस था। वह अल्मलकुस्सालेह का इतना अहम पैग़ाम सुल्तान अय्यूबी के पास ले आया।

क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने अपनी यद दाश्तों में लिखा है कि उस पैग़ाम ने सुल्तान अय्यूबी को इस क़दर परेशान किया कि कई घंटे उसने किसी के साथ बात भी न की। ख़ेमें में अकेला पड़ा रहा। अलबत्ता उसे यह ख़ुशी ज़रूर हुई कि उसे दुश्मन के अज़ाइम का इल्म हो गया। उसने हुक्म दिया कि अलजज़ीरा, दयार और बक्र से फ़ौरन लोगों को भर्ती किया जाये। उसने अपने मुसलमान भाइयों के ख़िलाफ़ एक और ख़ुंरेज़ जंग की तैय्यारियां शुरू कर दीं।

❖❖

हमारी हिन्दी किताबें

क़ुरआन मजीद
बुख़ारी शरीफ़
तारीख़े इस्लाम
आफ़ताबे आलम
मारका-ए-करबला
फ़ज़ाईले आमाल
कससुल अंबिया
मरने के बाद क्या होगा?
सोलह सुरह शरीफ़
रसूलुल्लाह सल्ल॰ की दुआऐं
रसूलुल्लाह सल्ल॰ की नातें सलाम
मेरी नमाज़
मुसलमान बीवी
मुसलमान ख़ाविंद
सय्यदा का लाल
आमना का लाल
क़यामत कब आऐगी?
आमाले क़ुरआनी
बहिश्ती ज़ेवर
नक्शे सुलेमानी
हिदायतुल मुसलिमीन
मसनून व मक़बूल दुआऐं
तर्कीब नमाज़

छः बातें
औरतों की नमाज़
मर्द औरतों के मख़सुस मसाइल
मियां बीवी के हुक़ूक़
पन्ज सूरः शरीफ़
यासीन शरीफ़
दुआऐं गन्जुल अर्श
नूरानी रातें
मौत की याद
इस्लाम क्या है?
हिन्दी अरबी टीचर
आईन-ए नमाज़
आईन-ए अमलियात
रूहानी इलाज
अमलियात व तावीज़ात सुबहानी
वज़ाइफ़े व अमलियात हमानी
मिलादे अकबर
पारए अम्म मुर्तजम
जन्नत की कुन्जी
दौज़ख़ का खटका
सिरत ग़ौसुल आज़म
ख़ाब नामा फ़ाल नामा
हिन्दी उर्दू टीचर

क़ुरआन मजीद हिन्दी

तर्जुमा

मौलाना फ़तेह मुहम्मद ख़ाँ साहब जालंधरी

इस क़ुरआन मजीद की ख़ास बात यह है कि इसके एक तरफ़ अ़रबी आयात का हिन्दी तलफ़्फ़ुज़ (Pronunciation) किया गया है दूसरी तरफ़ इन आयात का आसान हिन्दी भाषा में तर्जुमा किया गया है।

बहुत उमदा चार रंग का टाईटिल और जिल्द भी उमदा है।

हदिया : रूपये

डाक खर्च मुफ़्त
सिर्फ़ क़ुरआन मजीद
के लिये।

प्रकाशक

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002